Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

MMYVV, Karoundi
* 4 6 7 *

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय ग्रंथालय
कटनी (म.प्र.)
क्र. 467

MMYVV, Karoundi
467

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय करौंदी, कटनी (म.प्र.)
क्र. 1487

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

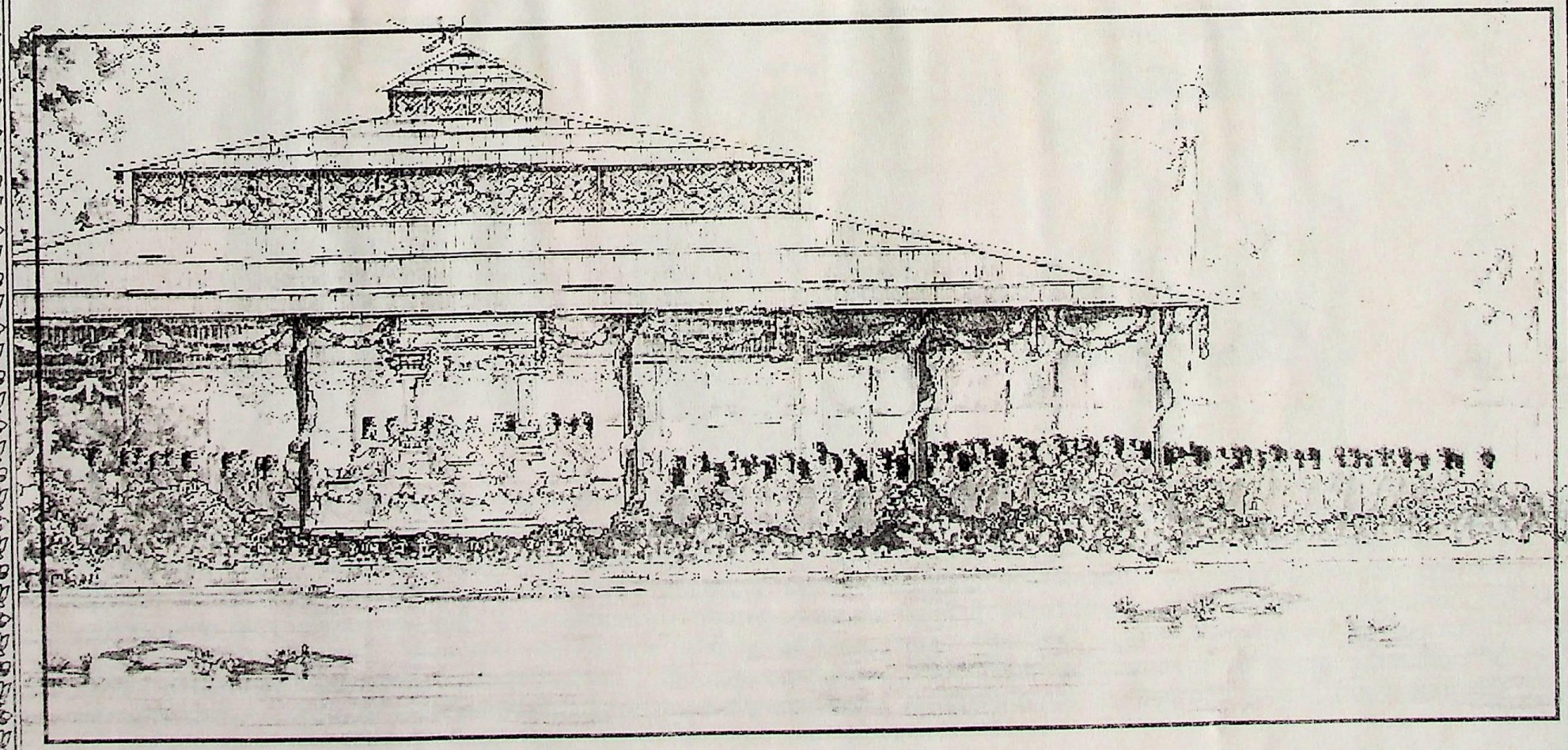

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

योग मूर्ति

ज्ञान मूर्ति

आचार्य मूर्ति

श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्यपदवाक्यप्रमाणपारावारपारीणायमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाध्यष्टाङ्गयोगानुष्ठाननिष्ठनपश्चर्य्याचरण-चक्रवर्त्यनादिगुरुपरम्पराप्राप्तवैदिकदर्शनमतस्थापनाचार्य्यसकलनिगमागमसारहृदयवैदिकमार्गप्रवर्तकसर्वतन्त्रस्वतन्त्र-चातुर्वर्ण्यशिक्षक-श्रीमन्महाराजाधिराजगुरुभूमण्डलाचार्य्यजगद्गुर्वनन्तश्रीविभूषितश्रीमदादिशङ्कराचार्य्याः भगवत्पादपद्मभृङ्गायमानाः श्रीमदनेकशासनतिरस्कृतान्तेवासि-जनमनस्तमस्स्तोमाः शश्वत्सार्वभौमविश्वजनीनसनातनधर्मसंरक्षणबद्धपरिकराः परापरविद्याविद्योतितान्तःकरणाः समस्तसम्प्रदायसमन्वयसाधनदत्त-चित्ताविविधविरुदावलिविराजमानमानोन्नताः अलकनन्दागङ्गातीरनिवास्युत्तराम्नाय श्रीमज्ज्योतिष्पीठाधीश्वराः विश्वप्रशासनस्य संविधानरूपे नित्यापौरुषेय-वैदिकवाङ्मयप्रतिष्ठापकाः, प्रत्येकव्यक्तीनामात्मचेतनासु नित्यापौरुषेयवैदिकवाङ्मयम् जागृतकर्तारः, आत्मैवेदं सर्वम्-सर्वं खल्विदं ब्रह्म-अहं ब्रह्मास्मीतिविकासस्यचरमसीमायाः सुगममार्गप्रकाशकाः, भावातीतध्यानप्रकाशकाः, समस्तऋषिमहर्षिज्ञानीविज्ञानीनांचाराध्यचरणाः, अखिलविश्व-ब्रह्माण्डप्रशासनस्यसंविधानस्वरूपेनित्यापौरुषेयवैदिकवाङ्मयम् इति प्रमाणितकर्तारः, बाल्यकालेस्वनामधन्याः, राजारामेति नामकाः, विश्वव्यापीराम-राज्यस्यप्रेरणाप्रदायकाः, परमगुरुदेवाः, श्रीमद्ब्रह्मानन्दसरस्वतीस्वामिवर्याः विजयन्तेतराम्।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

शान्ति का नाम	फल	मन्त्रः	विधान			पंडितों की संख्या	सामग्री	उद्धरण
			जप संख्या	आहुति संख्या	समय			
सोम सर्वाद्भुत शान्ति	नक्षत्र उल्का पात एवं पशु व्याधि निवारण	ॐ आप्यास्व समेतुते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य संगथे।। (ऋग्वेद १.९१.१६) आ.गृह्य सूत्रम् गृ.प.	कुल जप ८००० प्रतिदिन १६००	८००	५घंटे प्रतिदिन (६ दिन)	५+२	आज्य एवं चरु	आश्वलायन गृह्य सूत्रम् गृह्य परिशिष्टम् (ऋग्वेद १.९१.१६)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनुक्रमणिका

प्रथम दिन प्रथम प्रहर

भूशुद्धिः.....
देहशुद्धिः.....
आचमन मन्त्रः.....
पवित्रधारणम्
शिखावंधनम्.....
प्राणायाम्
करन्यास-अङ्गन्यास-हृदयादिन्यास.....
क्षेत्र देवता पूजनम्.....
गणेश प्रार्थना.....

नदी की ओर प्रस्थान,नदी पर पहुंचकर

देहशुद्धिः.....
आचमन मन्त्रः.....
पवित्रधारणम्
शिखावंधनम्.....
प्राणायाम्.....
महासंकल्प + हेमाद्रि संकल्प.....
गुरू प्रार्थना
गणपति प्रार्थना.....
तीर्थ पूजनम्.....
कलशेषु तीर्थपूजनम्.....
आसन शुदिः.....
भूतोच्चाटन मन्त्रः.....
देहशुद्धिः.....
आचमन मन्त्रः.....
पवित्रधारणम्
शिखा बन्धनम.....
प्राणायाम्.....
गणेश प्रार्थना.....
गुरू प्रार्थना.....
कलश पूजनम्.....
शंख पूजनम्.....
आत्माराधनम्.....
मंडप पूजनम्.....
गणपति पूजनम्.....
गणेश मंडल रचना.....
अङ्गन्यास करन्यास.....

प्रथम दिन द्वितीय प्रहर

देह शुद्धिः.....
आचमन् .....
पवित्रधारणम्
शिखा बन्धनम्.....
प्राणायाम्.....
पञ्चगव्य प्राशनम्.....
पञ्चगव्य मण्डल.....
पुण्याह प्रकरणम्.....
पुण्याह मण्डल.....
नान्दी श्राद्ध प्रकरणम् .....
मातृका पूजनम्.....
नान्दी श्राद्धः.....
देवनान्दी.....
ऋत्विग्वरणम्.....
मधुपर्कः.....

प्रथम दिन द्वितीय प्रहर सम्पन्न

द्वितीय दिन प्रथम प्रहर

देहशुद्धिः.....
आचमन मन्त्रः
आसन शुद्धिः.....
पवित्रधारणम्
शिखा बन्धनम्.....
प्राणायाम्
करन्यास-अङ्गन्यास-हृदयादिन्यास.....
महासंकल्प हेमाद्रि संकल्प.....
गुरू प्रार्थना.....
भूतोच्चाटन मन्त्रः.....
गणपति पंचोपचार पूजनं.....
त्रिवाक्येण पुण्याह वाचन .....
मातृका पूजनम्.....
आवाहित देवनान्दी पूजनम्.....
ब्राह्मण वन्दनम्.....

सर्वतोभद्र मण्डल में

पञ्चगव्य प्रोक्षण.....
जलकलश पूजन.....
शंख पूजन .....

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

आत्माराधनम्.....
मण्डप पूजनम्.....
अङ्गन्यास करन्यास.....
सर्वतोभद्र मण्डल पूजनम्.....
सर्वतोभद्रमण्डल में देवता आवाहन...
षोडशोपचार पूजनम्.....

द्वितीय दिन द्वितीय प्रहर

प्रधान देवता सोम पूजनम्.....
देह शुद्धिः.....
आचमन मन्त्र.....
पवित्रधारणम्
शिखा बन्धनम्.....
प्राणायाम्.....
आसनशुद्धिः.....
संकल्पः.....
गुरू प्रार्थना.....
भूतोच्छाटन मन्त्र.....
गणपति प्रार्थना.....
जलकलश पूजनम्.....
आत्माराधनम्.....
कलश स्थापना विधान.....
पञ्चभूत सृष्टिः.....
अङ्गन्यास.....
कलश प्रसङ्गे आत्माराधन.....
कलशे प्रधान देवता सोम आवाहन....
कलशे पञ्चामृत क्षेपः.....
कलशे पञ्चगव्य क्षेपण.....
कलशे औषध क्षेपण.....
कलशे कलाआवाहन.....
कलशे न्यास विधान.....
कलशे लिपिन्यासः.....
प्रतिमा शुद्धिः.....
कलशे सोम आवाहन.....
नवशक्ति पूजा.....
षोडशोपचार पूजन.....
पीठ पर नवग्रह पूजन.....
संकल्पः.....
पीठ पूजा.....
पीठ पर नवग्रहों की स्थापना.....
नवग्रह प्रतिमाओं का अग्न्युत्तारण....
कर्म साद्गुण्य देवता आवाहन.....
क्रतु संरक्षक देवता आवाहन.....
नवग्रह षोडशोपचार पूजनम्.....
नाम पूजां.....
कुशकण्डिका प्रकरण.....
स्थंडिल निर्माण विधान.....
स्थंडिल शुद्धिः.....
अग्नि प्रतिष्ठा विधान.....
अग्निमूर्ति ध्यान.....
अन्वाधान.....
परिसमूहन एवं पर्युक्षण विधान.....
ब्रह्मा वरण.....
उत्पवनम् शुद्धीकरणम्
स्रुवादि संस्कार.....
चरु शुद्धिः.....
आघार होमः.....
व्याहृति होमः.....
नवग्रह होमः.....
कर्म साद्गुण्य देवता होमः.....
क्रतु संरक्षक देवता होमः.....
प्रधान देवता सोम होमः.....
स्विष्टकृत होमः.....
ब्रह्म प्रायश्चित होमः.....
षोडशोपचार पूजन (कुण्ड में).....
पूर्णाहुतिः.....

द्वितीय दिन द्वितीय प्रहर सम्पन्न

तृतीय / चतुर्थ / पञ्चम दिन प्रथम प्रहर

देहशुद्धिः.....
आचमन मन्त्र
आसन शुद्धिः.....
पवित्रधारणम्
शिखा बन्धनम्.....
प्राणायामः
करन्यास-अङ्गन्यास-हृदयादिन्यास.....
आसन शुद्धिः.....
महासंकल्प.....
गुरू प्रार्थना.....
भूतोच्चाटन मन्त्र.....
गणपति पंचोपचार पूजन.....
त्रिवाक्येण पुण्याह वाचन.....
मातृका पूजनम्.....
आवाहित देवनान्दी पूजनम्.....
ब्राह्मण वन्दन.....
सर्वतोभद्र मण्डल में (षोडशोपचार पूजन)
प्रधान देवता सोम (षोडशोपचार पूजन)
नवग्रह षोडशोपचार पूजनम्.....

तृतीय / चतुर्थ / पञ्चम दिन द्वितीय प्रहर

देहशुद्धिः.....
आचमन मन्त्र.....
पवित्रधारणम्
शिखा बन्धनम्.....
प्राणायाम.....
आसन शुद्धिः.....
शिखा बन्धनम्.....

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऋग्वेदीय सोम सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

महासंकल्प.....
गुरु प्रार्थना.....
हवन कुण्ड में.....
स्थंडिल शुद्धिः.....
अग्नि प्रतिष्ठा.....
अग्निमूर्ति ध्यान.....
अन्वाधान.....
परिसमूहन एवं पर्यूक्षण.....

ब्रह्मा का आवाहन (कुशकण्डिका) ....
उत्पवनम् शुद्धिकरणम्.....
स्रुवादि संस्कार.....
चरु शुद्धिः.....
अग्नि उपस्थानम्.....
आघार होमः.....
नवग्रह होमः.....
कर्म साद्गुण्य देवता होमः.....
क्रतु संरक्षक देवता होमः.....
प्रधान देवता सोम होमः.....
स्विष्ट कृत होमः.....
ब्रह्म प्रायश्चित्त होमः.....
षोडशोपचार पूजनम् (कुण्ड में) ....
पूर्णाहुतिः (संक्षेप में) .....
तृतीय/चतुर्थ/पञ्चम दिन द्वितीय प्रहर

सम्पन्न
षष्ठ दिन प्रथम प्रहर
देह शुद्धिः.....
आचमन मन्त्र
आसन शुद्धिः.....
पवित्रधारणम्
शिखा बन्धनम्.....
प्राणायाम्
करन्यास-अङ्गन्यास-हृदयादिन्यास
हेमाद्रि संकल्प.....
गुरु प्रार्थना.....
भूतोच्चाटन मन्त्रः.....
गणपति पंचोपचार पूजन*.....
त्रिवाक्येण पुण्याह वाचन.....
मातृका पूजन.....
आवाहित देवनान्दी पूजन.....
ब्राह्मण वन्दन.....
सर्वतोभद्र मण्डल पूजन.....
षोडशोपचार पूजन.....
प्रधान देवता सोम पूजन.....
षोडशोपचार पूजन.....
नवग्रह षोडशोपचार पूजनम्.....
षष्ठ दिन द्वितीय प्रहर

देह शुद्धिः.....
आचमन मन्त्र.....
पवित्रधारणम्.....
प्राणायाम्.....
आसन शुद्धिः.....
शिखा बन्धनम्.....
हेमाद्रि संकल्प.....
गुरु प्रार्थना.....
हवन कुण्ड में.....
स्थंडिल शुद्धिः.....
अग्नि प्रतिष्ठा.....
अग्निमूर्ति ध्यान.....
अन्वाधान.....
परिसमूहन एवं पर्यूक्षण.....

ब्रह्मा का आवाहन.....
उत्पवनम् शुद्धीकरणम्.....
स्रुवादि संस्कार.....

चरु शुद्धिः.....
अग्नि उपस्थानम्.....
आघार होमः.....
नवग्रह होमः.....
कर्म साद्गुण्य देवता होमः.....
क्रतु संरक्षक देवता होमः.....
प्रधान देवता सोम होमः.....
स्विष्टकृत होमः.....
ब्रह्म प्रायश्चित्त होमः.....

षोडशोपचार पूजन (कुण्ड में).....
बलि प्रदान विधान.....
कर्म साद्गुण्य देवता बलिदान.....
नवग्रह बलिदान.....
क्रतु संरक्षक देवता बलिदान.....
प्रधान देवता सोम बलिदान (सपरिवार)
कूष्माण्ड बलिदान.....
पूर्ण फल होमः.....
पूर्णाहुति संकल्प.....
पूर्णाहुति.....
वसोर्धारा

कुण्ड में शोडषोचपार पूजनम्.....
कलश जल मार्जन विधान.....
प्रधान कलश दान.....
अग्नि पूजन.....
अग्नि विसर्जन.....
ब्रह्मार्पण.....
शोभायात्रा.....
षष्ठ दिन द्वितीय प्रहर सम्पन्न
परिशिष्ट.....

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

याज्ञिकों के लिए अनिवार्य कुछ विचार

प्रयोग सीखने के उपयोग—सभी यज्ञ कार्यों का प्रयोजन, देवताओं को प्रसन्नकर उनसे विश्व, राष्ट्र, प्रदेश, परिवार या स्वयं के लिए अपेक्षित फल प्राप्ति है। सामान्य पूजनादियों से सीमित फलप्राप्ति होती है। परन्तु यज्ञ सामूहिक, गहन एकाग्र विधान होने के कारण इसका फल भी अनन्त है। एक सफल शस्त्रचिकित्सक जिस प्रकार लगन से कठिन शारीरिक कष्ट को दूर करता है, उसी प्रकार एक सफल प्रयोगकर्ता अपने शास्त्रोक्त अनुभव सिद्ध (ऋषियों से) प्रयोग द्वारा वांछित फल दिलाने में समर्थ होता है। इसके अतिरिक्त प्रयोग सीखने का एक और भी उपयोग है, वह है देवताओं के क्रोध से अपने को बचाना। शास्त्रातिक्रमण कर यज्ञ कराने वाला आचार्य ''यज्ञकर्ता विनश्यति'' विनाश को प्राप्त होता है। अतः प्रयोग की शुद्धता अत्यन्त अपेक्षित है।

प्रयोग सीखने के लिए अर्हता—प्रयोग में जिन वैदिक मन्त्रों का उपयोग होता है उन सभी मन्त्रों का गुरुमुख से उच्चारण अनिवार्य है। प्रयोग कर्ता निष्पाप हो इसलिए त्रिकाल सन्ध्यावन्दन करने वाला हो। आडम्बर की ओर महत्व न देकर शास्त्राधारित सामग्रियों के प्रयोग में निष्ठा रखने वाला हो अधिक समय तक बैठने एवं समय-समय पर स्नानादि कर्म करने की क्षमता हो। प्रयोग कर्ता निरन्तर त्रिकालसन्ध्यादि से शुद्ध हो एवं जिस देवता सम्बन्धी यज्ञ करते है, उस देवता विषयक मन्त्र, जप आदियों से उस देवता के निकट हो एवं शक्तिमान भी हो।

प्रयोगकर्ता की दिनचर्या—दिनचर्या का अत्यधिक महत्व है। दिनचर्या शुद्ध होने से प्रयोगकर्ता निष्पाप एवं शक्तिसंपन्न होता है। सुबह उठते ही प्रातः स्मरण स्वपरम्परानुसार करना चाहिये।

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती। करमूले स्थिता गौरी प्रभाते करदर्शनम्॥
समुद्रवसने देवि पर्वतस्तन मण्डले। विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे॥ *(पौराणिक,संग्रह स्मृति)*

प्रातः स्मरण के बाद शौच, दन्त धावनादि से निवृत्त होकर स्नान के लिए चलना चाहिये। शौच के समय यज्ञोपवीत दक्षिण कर्ण में लपेटना चाहिये,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कारण दक्षिण कर्ण में गङ्गादि सभी तीर्थ वास करते हैं। उसके संसर्ग से यज्ञोपवीत पवित्र रहता है।

स्नान विधि—वारुणेनैव विप्रस्तु स्नातस्सर्वत्र शस्यते। अशिरस्कं भवेत् स्नानं स्नानाशक्तौ विधीयते॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

नदी जल में ब्राह्मणों को स्नान करना श्रेष्ठ है। यदि शरीर स्नान में आरोग्य न रहे तो कण्ठ तक के भाग का स्नान करना चाहिये।

स्नानं तु द्विविधं प्रोक्तं गौणं मुख्य प्रभेदतः। तयोस्तु वारूणं मुख्यं तत् पुनः षड्विधं स्मृतम्॥ *(स्मृतिमुक्तावली शंखः)*

स्नान के दो भेद हैं, एक गौण और दूसरा मुख्य। इसमें नदी स्नान मुख्य है। उसके छः भेद है।

नित्यं नैमित्तिकं काम्यं क्रियाङ्गं मलकर्षणम्। क्रियास्नानं तथा षष्ठं षोढाः स्नानं प्रकीर्तितम्॥ *(स्मृतिमुक्तावली शंखः)*

१. नित्य स्नान — प्रतिदिन करने वाला स्नान।
२. नैमित्तिक — विशेष पूजन आदि से पूर्व करने वाला स्नान।
३. काम्यं — इच्छापूर्ति के लिए तीर्थ स्नान।
४. क्रियाङ्ग स्नानं — विशेष कार्य के अङ्गभूत दुबारा स्नान।
५. मलकर्षणम् — शरीर अशुद्धि निवारण के लिए।
६. क्रिया स्नानं — अवभृथ स्नान आदि।

शीतमुष्णोदकात् पुण्यं अपारव्यं परोदकात्। भूमिष्ठमुधृतात् पुण्यं ततः प्रस्त्रवणोदकम्॥ *(निर्णय सिन्धौ मार्कण्डेयः)*

गरम पानी से ठण्डा पानी श्रेष्ठ है। दूसरे के कुओं आदि के जल से अपने घर का जल श्रेष्ठ है। कुऐं से खींचे गये पानी से भूमि पर स्थित जल में स्नान श्रेष्ठ है।

ततोऽपि सारसं पुण्यं ततः पुण्यं नदी जलम्। तीर्थतोयं ततः पुण्यं महानद्यम्बु पावनम्॥ *(निर्णय सिन्धौ मार्कण्डेयः)*

उससे सरोवर का जल पुण्यकर है, उससे नदी जल पुण्य है, उससे तीर्थ जल (पुष्करादि) पवित्र है, उससे भी श्रेष्ठ महानदियों का जल है। (जो नदियाँ समुद्रो में जाती हैं वे महानदियाँ हैं। उदाहरण—गङ्गा-कावेरी आदि।) सिर डुबोकर किया स्नान श्रेष्ठ है, अनिवार्य में कण्ठ तक का स्नान कर सकते

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हैं। स्नान के समय अघमर्षण मन्त्रों का पाठ कर सकते हैं।

वस्त्र धारण विधिः—याज्ञिकों के लिए, प्रयोग कर्त्ताओं के लिए वस्त्र के नियम भी हैं।

वस्त्र विधिः—स्वयं धौतेन कर्तव्याः क्रियाधर्म्याः विपश्चिता। न तु नेजक धौतेन नाहतेन न कुत्रचित्॥ *(स्मृतिमुक्तावल्यां पुलस्त्यः)*

अपने धुले वस्त्र क्रियाओं में श्रेष्ठ माना गया है। धोबी द्वारा धुला वस्त्र एवं नाहत वस्त्र का प्रयोग नहीं करना चाहिये। (नाहत वस्त्र का विवरण आगे है)

क्षौमं वासः प्रशंसन्ति तर्पणो सदृशं तथा। काषाय धौतवस्त्रं च नोल्बणं तत्र कर्हिचित्॥ *(स्मृति संग्रह)*

पूजन एवं तर्पण कार्यों में रेशम के मडी वस्त्र, एवं आँचल युक्त गेरुए रंग के धुले वस्त्र, नीले वस्त्र श्रेष्ठ है, आँखों को चुंधियाने वाले रंग के वस्त्र निषिद्ध हैं।

आहतं वस्त्रम्—ईषाद् धौतं नवं श्वेतं सदृशं यन्न धारितम्। आहतं तद् विजानीयात् सर्व कर्मसुपावनम्॥ *(याजुष प्रयोगरत्ने कपर्दि)*

एक बार धुला हुआ नया सफेद वस्त्र, आँचल वाला, जो कभी न पहना हो ऐसे वस्त्र आहत वस्त्र कहलाता है सभी कर्मों में यह वस्त्र श्रेष्ठ हैं।

अलाभे धौतवस्त्रस्य शाणाक्षौमाविकानि च। *(स्मृति मुक्तावत्यां वस्त्र धारण प्रकरण)*

धुले वस्त्र के प्राप्ति न होने पर बोरे के धागों से बना वस्त्र, रेशम का वस्त्र अथवा ऊनी वस्त्र पहन सकते हैं।

होम देवार्चनाद्यासु क्रियासु पठने तथा। नैक वस्त्रः प्रवर्तेत द्विजो नाचमने जपे॥ *(स्मृति मुक्तावत्यां वस्त्र धारण प्रकरण)*

होम, देवतापूजन, यज्ञादि, अध्ययन में, आचमन करते समय एवं जप करते समय पण्डित को दो वस्त्र धारण करना चाहिये एक अधोवस्त्र एक उत्तरीय, शीतप्रदेश में उत्तरीय, के ऊपर ऊनी वस्त्र ओढ़ सकते हैं।

आचमन विधिः—आचमन किसी भी क्रिया से पूर्व आत्म शुद्धि के लिए किया जाता है। १. श्रौताचमन, २. स्मार्त्ताचमन, ३. पौराणिकाचमन। स्मार्ताचमन

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एवं पौराणिकाचमन अधिक प्रचलित है।

विप्रस्य दक्षिणे पाणौ मूलेङ्गुष्ठस्य नित्यदा। स्याद् ब्रह्मतीर्थ मध्ये च आग्नेय मघनाशनम्॥ *(अश्वलायन स्मृति)*

ब्राह्मणों के दाहिने हाथ के अङ्गुष्ठ के नीचे मणि बन्ध के ऊपर सर्वदा ब्रह्मतीर्थ रहता है। दाहिने हाथ के बीच में पापों को नाश करने वाला आग्नेय तीर्थ है। (अग्निका)

मध्ये चाङ्गुष्ठ तर्जन्योः पैत्रं तीर्थं द्विजस्य तु। आर्षं कनिष्ठिकामूले दैवमग्राङ्गुलीषु वै॥ *(अश्वलायन स्मृति)*

दाहिने हाथ के अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी के बीच में पितृ तीर्थ है। पितरों को जल यहाँ से देते हैं। कनिष्ठिका के नीचे ऋषि तीर्थ है। ऋषियों को गुरुओं को जल इसी से दिया जाता है। सभी अङ्गुलियों के अग्र भाग से देवताओं को जल देते हैं। वहाँ देव तीर्थ है।

प्रपिबेत् ब्रह्मतीर्थेन जलेनाचमनं चरन्। पीत्वान्येन जलं पाप्मा तीर्थेनेति मतिर्मम॥ *(अश्वलायन स्मृति)*

आचमन करने वाले पण्डित को ब्रह्मतीर्थ से ही आचमन करना चाहिये, दूसरे तीर्थ से आचमन करने पर पण्डित पापभाजन होता है। कुछ लोग आचमन करते समय अग्नि तीर्थ का जल पीते हैं। यह सर्वथा उचित नहीं है। आचमन का जल हृदय तक पहुँचे इतना होना चाहिये। आचमन में स्वाहा से अन्त होने वाले मन्त्रों से जल पीया जाता है। नमः शब्द से अन्त होने वाले मन्त्रों से जल छोड़ा जाता है।

आसनम्—आस्यते यस्मिन् इति आसनम्।

सन्ध्यादि नित्य कर्मों के लिये, पूजन, यज्ञादि कर्मों के लिए प्रयोगकर्ता के बैठने का आसन का भी शास्त्रोक्त महत्व है।

श्रेष्ठ आसन—चैलाजिन कुशोत्तरम्।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पहले कुशासन, उसके ऊपर कृष्णाजिन (काले हिरण का चर्म), उसके ऊपर वस्त्र। अगर ये आसन उपलब्ध न हो तो—

कौशेयं कंबलं वापि अजिनं पट्टमेव च। दारुजं तालपत्रं च आसनं षड्विधं स्मृतम्॥ *(ब्रह्मकर्मसमुच्चय)*

१. कुश से बना दर्भासन, २. कम्बल, ३. हिरण का चर्म, ४. रेशम का वस्त्र,

५. लकड़ी का आसन, ६. ताडपत्र का आसन इनमें किसी का भी उपयोग कर सकते हैं।

आसनारूढ पादस्तु प्रौढपादस्स उच्यते। प्रौढपादैः कृतं कर्म सर्वं तत् निष्फलं भवेत्॥ *(वीरमित्रोदयपरिभाषा)*

आसन के ऊपर किसी भी स्थिति में चरण स्पर्श नहीं होना चाहिये। चरण स्पर्श होने पर संपूर्ण कर्म निष्फल हो जायेगा। बैठने पर चरण आसन से बाहर होना चाहिये। पांव रखने के लिए अलग से चौकी रख सकते हैं। पूर्णाहुति आदि के समय एवं सन्ध्या में खड़े रहते समय भी आसन पर पैर नहीं रखना चाहिये। पूजन के समय, सन्ध्या के समय एवं यज्ञों में इसका विशेष रूप से पालन करना चाहिये।

प्राणायाम—यह शरीर एवं मन की शुद्धि के लिए हैं।

सव्याहृतिं सप्रणावां सावित्रीं शिरसा सह। त्रिःपठेदायत प्राणः प्राणायामस्स उच्यते॥ *(अश्वलायन स्मृति-४-८५)*

इसके दो भेद और तीन अङ्ग है।

१. समन्त्रक प्राणायामः—यह केवल सन्ध्यावन्दन करने वाले द्विजों के लिए है। इसमें सप्तव्याहृति, प्रणव, गायत्री एवं शिरस् मिलाकर प्राणायाम करते हैं। (आगे गणेश पूजन में इसका मन्त्र है।)

२. अमन्त्रक प्राणायामः—और सभी के लिए मन्त्र रहित यह प्राणायाम है।

इसके पूरक, कुम्भक, एवं रेचक अङ्ग है। अशौच में समन्त्रक प्राणायाम पण्डित के लिए निषिद्ध है। प्राणायाम मन्त्रों की आवृत्ति एक ही स्थिति में होनी

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चाहिये। रेचक एवं पूरक में कठिन होने के कारण कुम्भक में (जब श्वास रुका रहता है) आवृत्ति करना उचित है। सम्भव हो तो शेष अवस्थाओं में भी कर सकते हैं। एक मन्त्र को दो अवस्थाओं की सन्धि में नहीं जपना चाहिये।

सन्ध्या वन्दनः—सन्ध्याहीनोऽशुचिर्नित्यं अनर्हः सर्वकर्मसु। *(अश्वलायन स्मृति-४-१४५)*

त्रिकाल सन्ध्या न करने वाला अशुचि है। सभी कार्यों के लिए अनर्ह है। ऐसे व्यक्ति द्वारा किये गये अश्वमेधादि यज्ञ भी निरर्थक होते हैं। स्व स्वशाखानुसार सन्ध्यावन्दन करना चाहिये। उसमें कुछ ज्ञातव्य विषय—

कृताञ्जलिर्जपेद् देवीं सावित्रीं वाग्यतः स्थितः। *(अश्वलायन स्मृति ४-१४५)*

स्नाने दाने जपे होमे विवाहे भोजने बुधः। *(अश्वलायन स्मृति ४-८६)*

विरमूत्रोत्सर्जनेऽर्चाया मौनी स्यात् दन्तधावने॥ *(याजुष प्रयोग रत्नाकर-प्रयोग प्राणवल्लभे)*

मौन भाव से अञ्जली बाँधकर सावित्री का स्मरण करना चाहिये, स्नान, दान, जप, होम, भोजन, शौच, पूजा एवं दन्तधावन में मौन रहना चाहिये।

निषण्णो यो जपेत् प्रातः प्रलपन् प्रह्वानपि। तत्काले नान्य मन्त्रांश्च तस्य निष्फलतामियात्॥ *(अश्वलायन स्मृति ४-१००)*

प्रातः जो पण्डित बैठकर, परस्पर बात करते हुए, झुककर, बीच-बीच में दूसरे मन्त्र जपते हुए जो गायत्री जप करते है उनका सम्पूर्ण कर्म निरर्थक हो जाता है।

आपन्नश्चाशुचिः काले तिष्ठन्नपि जपेद् दश। नक्षत्रास्तमये प्रातः सावित्रीं मनसा सकृत्॥ *(अश्वलायन स्मृति ४-१०१)*

जब कोई आपत्ति हो तब भी खड़े रहकर दस गायत्री करना चाहिये। नक्षत्र अस्त हो गये हो ऐसी स्थिति में भी कम से कम एक बार सावित्री को आपद्ग्रस्त द्वारा स्मरण अवश्य करना चाहिये।

न प्रावृतः शयानश्च नोष्णीषी न च पादुकी। शूद्राद्यैः प्रेक्षितश्चेक्षन् नान्तरिक्षं जपेन् मनुम्। *(अश्वलायन स्मृति ४-१०३)*

गायत्री जाप करते समय न तो मुँह ढकना चाहये, न हि लेटे हुए जप करना चाहिये, न पगडी बाँधकर जप करना चाहिये, शूद्रादियों को देखते हुए जप

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नहीं करना चाहिये।

उत्तमा तारकोपेता मध्यमाऽव्यक्त तारका। अधमा सूर्यसहिता प्रातः सन्ध्या त्रिधा मता॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-सन्ध्या प्रकरण)*

नक्षत्र युक्त समय प्रातः उत्तम है, नक्षत्र लुप्त होने पर मध्यम एवं सूर्य उदित होने पर की गयी संध्या अधम है।

उत्तमा सूर्यसहिता मध्यमाऽव्यक्ततारका। अधमा तारकोपेता सायं सन्ध्या त्रिधा मता॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-सन्ध्या प्रकरण)*

सूर्य के रहते की गयी सायं सन्ध्या उत्तम है, नक्षत्र प्रकट होने से पूर्व की गयी सन्ध्या मध्यम है। नक्षत्रों के रहने पर की गयी सन्ध्या अधम है।

सन्ध्या में जप विधान एवं जप संख्या—

जपेद् द्विजः सदा मौनी पवित्रःस्यात्तु जापकः। ऋजुर्नैश्चल्यवान् तिष्ठन् जपेत् प्रातः कृताञ्जलिः॥ *(अश्वलायन स्मृति ४-९६)*

जप करते समय हमेशा मौन रहना चाहिये। पवित्र रहना चाहिये, सीधे रहकर निश्चल स्थिति में स्थिर रहकर, हाथ जोड़कर खड़े होकर प्रातः काल में जप करना चाहिये।

सहस्त्रं वा तदर्धं वा शक्त्यात्वष्टोत्तरं शतम्। एकपादेन वा तिष्ठन् एकाङ्गुष्ठेन वा जपन्॥ *(अश्वलायन स्मृति ४-९७)*

एक हजार जप, पाँच सौ जप, शक्ति कम रहने पर १०८ जप खडे रहकर अथवा एक पैर पर खडे रहकर या अङ्गुठे के आधार पर खड़े होकर जप करना चाहिये।

भस्मादि धारणम्—

ललाटे मूर्ध्नि कण्ठे च विलिखेत् गोपिचन्दनम्। भस्मना वा त्रिपुण्ड्रं च मुद्रिश्चैवोर्ध्वपुण्ड्रकम्॥ *(अश्वलायन स्मृति ७-१५५)*

माध्व सम्प्रदाय वाले मस्तक में सिर के दाहिने ओर एवं कण्ठ में गोपि चन्दन से मुद्रा धारण करना चाहिये। यजुर्वेदियों के लिये भी "मानस्तोके" आदि मन्त्रों से अभिमन्त्रितकर धारण करें। स्मार्त सम्प्रदाय वाले को तिर्यक् त्रिपुण्ड्र धारण करना चाहिये। मानस्तोके आदि मन्त्रों से भस्म को अभिमन्त्रित कर धारण करना चाहिये। श्रीवैष्णव सम्प्रदाय वाले तिरुमण (पवित्र मिट्टी) से उर्ध्व पुण्ड्र लगाना चाहिये।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपवित्रेन यज्जप्तं अस्नातेन कृतं हुतम्। यच्च शून्य ललाटेन तदत्यल्प फलं भवेत्॥ *(अश्वलायन स्मृति १०-१२५)*

अपवित्र व्यक्ति द्वारा किया गया जप, स्नान न किये व्यक्ति द्वारा किया होम, मस्तक में स्वसम्प्रदाय चिह्न से रहित व्यक्ति द्वारा किये गये सभी पूजन अत्यल्प फल देने वाले होते हैं।

सदोपवीतिना भाव्यं सदा बद्ध शिखेन च। विशिखो व्युपवीतश्च यत्करोति न तत् कृतम्॥ *(अश्वलायन स्मृति)*

प्रयोगकर्ता को सर्वदा यज्ञोपवीत एवं शिखा धारण करना चाहिये। ऐसा न करने पर जो कर्म किया गया वह न करने के बराबर अर्थात् व्यर्थ है।

यज्ञोपवीते द्वे धार्ये श्रौते स्मार्ते च कर्मणि। तृतीयमुत्तरीयार्थे वस्त्राभावे चतुर्थकम्॥ *(स्मृतिमुक्तावल्यां पुलस्त्यः)*

श्रौत-स्मार्त कर्म करने वाले ब्रह्मचारियों को एक यज्ञोपवीत और गृहस्थों को दो यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये। उत्तरीय के न रहने पर उत्तरीय के बदले तीसरा यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये।

दैवकर्म उपवीति, पितृकर्म प्राचीनावीति। ऋषिकर्म मानुषे कर्म निवीतिः॥ *(वचन)*

दैवकर्म करते समय यज्ञोपवीत बायें भुजापर, पितृकर्म करने पर यज्ञोपवीत दाहिने भुजा पर एवं ऋषि मनुष्य कर्म में निवीति याने हार जैसे डालना चाहिये।

जप माला—अङ्गुलीभिः प्रजपतस्त्वेकस्यैक गुणं भवेत्। ब्रह्मैरानन्त्यमाप्नोति रौद्रैश्च मणिभिर्द्विजः॥ *(अश्वलायन स्मृति ४-६४)*

अङ्गुलियों से जप करने पर एक जप का एक फल मिलता है। ब्राह्मै एवं रुद्र मणियों से जपने पर अनन्त फल मिलता है।

ब्राह्मः कुशमयो रौद्रो रुद्राक्षः पापनाशनः। सावित्र्यास्तु जपस्ताभ्यां मेकस्त्वानन्त्यमृच्छति॥ *(अश्वलायन स्मृति ४-६५)*

कुश से बनी माला ब्राह्म कहलाता है, रुद्राक्ष से बनी माला रौद्र कहलाता है। इन दो मालाओं से किया गया गायत्री जप अनन्त फल देता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रथम दिन

पवित्र नदी, जलाशय या तीर्थ से जल भरने जाने से पहले यज्ञ मण्डप में—भू-शुद्धि,देह शुद्धि, आचमन, पवित्र धारण, प्राणायाम, क्षेत्र देवता प्रार्थना, गणपति प्रार्थना, नदी की ओर प्रस्थान नदी पर पहुँचकर: देह शुद्धि, आचमन, पवित्र धारण, प्राणायाम, शिखाबन्धन, संकल्प, गुरु प्रार्थना, गणपति प्रार्थना, नदी में पूजन, षोडशोपचार पूजन (श्रीसूक्त विधान से) ध्यान, आवाहन, आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, यज्ञोपवीत, आभरण, गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, नीराजन, मन्त्र पुष्प, नमस्कार, प्रसन्नार्घ्य, प्रार्थना, सर्वोपचार पूजा, इसके पश्चात नदी से कलश में जल भरना है। उस कलश में वरुण का आवाहन, उसके बाद शान्ति पाठ करते हुए मण्डप प्रवेश।

भू-शुद्धि—ॐ स्योना पृथिवि भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथः।' *(१५ मन्त्र-२२ सूक्त-प्रथम मण्डल)* इस मन्त्र से जल प्रोक्षण करने से भूमि शुद्ध होती है।

देह शुद्धि—येभ्यो मातेत्यस्य गयःप्लात ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। जगतीछन्दः। एवापित्रेत्यस्य वामदेव ऋषिः। बृहस्पतिर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। मनुष्य गन्ध निवारणे विनियोगः।

ॐ येभ्यो मातामधुमत् पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः।

उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनुमदास्वस्तये॥ *(ऋक्वेद १०.६३.३)*

ॐ एवापित्रे विश्वदेवाय वृष्णे यज्ञैर्विधेम नमसा हविर्भिः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बृहस्पते सुप्रजा वीरवन्तो वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥ (ऋक्वेद ४.५०.६)

आचमन मन्त्र—ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।)

अथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुराणेभ्यो नमः। अग्नये नमः। वायवे नमः। प्राणाय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै नमः। अन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारणम्—पवित्रन्त इत्यनयोः आङ्गीरसः पवित्र ऋषिः। पवमानः सोमो देवता। जगतीछन्दः। पवित्राभिमंत्रणे, धारणे विनियोगः।

ॐ पवित्रन्ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः।
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुतेशृतास इद्वहन्तस्तत् समाशत॥ (ऋग्वेद ९.८३.१)
ॐ तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदे शोचन्तो अस्य तन्तवो व्यस्थिरन्।
अवन्त्यस्य पवीतारं माशवो दिवस्पृष्ठमधितिष्ठन्ति चेतसा॥ (ऋग्वेद ९.८३.२)

ॐ भूर्भुवः स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये आसन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।)

प्राणायाम—प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्राणायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्वरोम्। (ऋग्वेद ३.६२.१०)

करन्यासः ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ तर्जनीभ्यां नमः। ॐ मध्यमाभ्यां नमः। ॐ अनामिकाभ्यां नमः। ॐ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यास-हृदयादिन्यास ॐ हृदयाय नमः। ॐ शिरसे स्वाहा। ॐ शिखायै वषट्। ॐ कवचाय हुम् ।ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अस्त्राय फट्।

ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्षेत्र देवता पूजनम्

परिवार में या सामूहिक रूप में जो भी शुभकार्य किया जाता है, वह निर्विघ्नतया समाप्त हो उसके लिए क्षेत्र देवता पूजन सबसे पहले करना चाहिये। प्रत्येक क्षेत्र के प्रधान देवता अलग है। अतः उस क्षेत्र के जो देवता है उनका प्रथम पूजन आवश्यक है। उस क्षेत्र के अर्चक स्वतः पूजन करते हैं, अतः हमें केवल फल समर्पण कर प्रार्थना करनी चाहिये। **पूर्ण फल में**—दो नारियल, दो केले, पुष्प एवं दक्षिणा, मङ्गलद्रव्य। **अर्पण मन्त्र**—याः फलिनीरित्यस्य मन्त्रस्य आथर्वणो भिषक् ओषधयोऽनुष्टुप् फल समर्पणे विनियोगः।

ॐ याः फ॒लिनी॒र्या अ॑फ॒ला अ॑पु॒ष्पायाश्च॑ पु॒ष्पिणीः। बृह॒स्पति॑ प्रसूता॒ स्तानो॑मुञ्चत्वं ह॑सः॥ *(ऋग्वेद १०.९७.१५)*

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेद् जन्मनि जन्मनि॥ *(प्रयोग संग्रह)*

ॐ स्थान देवताभ्यो नमः। पूर्णफलं समर्पयामि।

तीर्थ गमन से पहले इसे संपन्न करना चाहिये। किसी भी स्थिति में इसका निराकरण नहीं करना चाहिये।

गणेश प्रार्थना—सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्नराजो विनायकः॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेत् श्रृणुयादपि॥

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। सङ्ग्रामे संकटेचैव विघ्नस्तस्य न जायते॥

शुक्लांबरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यातेत्सर्व विघ्नोपशान्तये॥ *(याजुषपूर्वप्रयोगरप्राकर)*

गणानान्त्वा इति मन्त्रस्य गृत्समदऋषिः। गणपतिर्देवता। जगती छन्दः। गणपति प्रार्थने विनियोगः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ गणानान्त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमं।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन्नूतिभिः सीदसादनम्॥ (ऋग्वेद २.२३.१)

(इन मन्त्रों से गणपति प्रार्थना कर पुष्पाक्षत छोड़ना चाहिये।)

नदी की ओर प्रस्थान, नदी पर पहुँचकर-देह शुद्धि—येभ्यो मातेत्यस्य गयःप्लात ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। जगतीछन्दः। एवापित्रेत्यस्य वामदेव ऋषिः। बृहस्पतिर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। मनुष्य गन्ध निवारणे विनियोगः।

ॐ येभ्यो मातामधुमत् पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः।
उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनुमदास्वस्तये॥ (ऋग्वेद १०.६३.३)
ॐ एवापित्रे विश्वदेवाय वृष्णो यज्ञैर्विधेम नमसा हविर्भिः।
बृहस्पते सुप्रजा वीरवन्तो वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥ (ऋग्वेद ४.५०.६)

(इन मन्त्रों से देहशुद्ध कर आगे आचमन से गणेश पूजन प्रारम्भ करें।)

आचमन मन्त्र—ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।)

अथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुराणेभ्यो नमः। अग्नये नमः। अग्नये नमः। वायवे नमः। प्राणाय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै नमः। पृथिव्यै नमः। अन्तरिक्षाय नमः। अन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारणम्—पवित्रन्त इत्यनयोः आङ्गीरसः पवित्र ऋषिः। पवमानः सोमो देवता। जगतीछन्दः। पवित्राभिमंत्रणे, धारणे विनियोगः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ प॒वित्र॑न्ते॒ वित॑तं ब्रह्मणस्पते प्र॒भुर्गात्रा॑णि॒ पर्ये॑षि वि॒श्वतः॑।
अत॑प्ततनूर्न तदा॒मो अ॑श्नुतेशृ॒ता स॒इद्वह॑न्त॒स्तत् समा॑शत॥ (ऋग्वेद ९.८३.१)
ॐ तपो॑ष्प॒वित्रं॒ वित॑तं दि॒वस्प॒दे शोच॑न्तो अस्य॒ तन्त॑वो॒ व्य॑स्थिरन्।
अव॑न्त्यस्य पवी॒तारं॑ मा॒शवो॑ दि॒वस्पृ॒ष्ठमधि॑तिष्ठन्ति॒ चेत॑सा॥ (ऋग्वेद ९.८३.२)

ॐभूर्भुवः स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये आसन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।)

प्राणायाम—प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्राणायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्स॑वि॒तुर्वरे॑ण्यं॒ भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि।
धियो॒ यो नः॑ प्रचो॒दया॑त्। ॐ आपो॒ ज्योती॒रसो॒मृतं॒ ब्रह्म॒ भूर्भुव॑स्व॒रोम्। (ऋग्वेद ३.६२.१०)

(रेखङ्कित मन्त्र को तीन बार कुम्भक में जप करना चाहिये।)

शिखाबन्धनम्—

ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणित भक्षणे। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुण्डे ह्यपराजिते॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

(इस मन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

महासंकल्प—हेमाद्रि संकल्प

ॐस्वस्ति श्री समस्तजगदुत्पत्तिस्थितिलयकारणस्य रक्षा-शिक्षा-विचक्षणस्य प्रणतपारिजातस्य अशेषपराक्रमस्य श्रीमदनन्तवीर्यस्यादि नारायणस्य अचिन्त्यापरिमितिशक्त्या ध्रियमाणानां महाजलौघमध्ये परिभ्रमताम् अनेक कोटि ब्रह्माण्डानाम् एकतमे अव्यक्त- महादहंकार - पृथिव्यप्तेजो वाय्वाकाशाद्याव

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रणैरावृते अस्मिन् महति ब्रह्माण्डखण्डे आधारशक्तिश्रीमदादि- वाराह-दंष्ट्राग्र- विराजिते कूर्मानन्त- वासुकि-तक्षक-कुलिक - कर्कोटक -पद्म - महापद्म - शंखाद्यष्टमहानागैध्रियमाणे ऐरावत-पुण्डरीक-वामन-कुमुद-अञ्जन-पुष्पदन्त-सार्वभौम-सुप्रतीकाष्टदिग्गजोपरिप्रतिष्ठितानाम् अतल-वितल-सुतल-तलातल-रसातल--महातल-पाताल-लोकनामुपरिभागे भुवर्लोक-स्वर्लोक-महर्लोक -जनोलोक - तपोलोक -- सत्यलोकाख्य षड्लोकानामधोभागे भूर्लोके चक्रवाल शैल - महावलयनागमध्यवर्तिनो महाकाल महाफणि राजशेषस्य सहस्रफणामणिमण्डल मण्डिते दिग्दन्तिशुण्डादण्डोद्दण्डितेअमरावत्यशोकवती भोगवती - सिद्धवती- गान्धर्ववती - काशी- काञ्ची - अवन्ती अलकावती यशोवतीतिपुण्यपुरीप्रतिष्ठिते लोकालोकाचलवलयिते लवणेक्षु- सुरा सर्पि - दधक्षीरोदकार्णवपरिवृते जम्बू-प्लक्ष-कुश-क्रौञ्च - शाक शाल्मलिपुष्कराख्यसप्तद्वीपयुते इन्द्र-कांस्य-ताम्र-गभस्ति-नाग-सौम्य-गन्धर्व-चारणभारतेतिनव-खण्डमण्डिते सुवर्णगिरिकार्णिकोपेत महासरोरुहाकार पञ्चाशत् कोटि योजनविस्तीर्णभूमण्डले अयोध्या मधुरा-माया-काशी-काञ्ची-अवन्तिकापुरी द्वारावतीतिमोक्षदायिकसप्तपुरीप्रतिष्ठिते सुमेरु निषधत्रिकूट-रजतकूटाम्रकूट-चित्रकूट-हिमवद्विन्ध्याचलानां महापर्वत प्रतिष्ठिते हरिवर्ष किंपुरुषयोश्च दक्षिणे नवसहस्रयोजन विस्तीर्णे मलयाचल-सह्याचल विन्ध्याचलानामुत्तरे स्वर्णप्रस्थ-चण्डप्रस्थ-चान्द्र-सूक्तावान्तक-रमणक महारमणक-पाञ्चजन्य-सिंहल लंङ्केति-नवखण्डमण्डिते गंगा-भागीरथी-गोदावरी- क्षिप्रा-यमुना- सरस्वती-नर्मदा-ताप्ती-चन्द्रभागा-कावेरी-पयोष्णी-कृष्णावेणी-भीमरथी-तुंगभद्रा-ताम्रपर्णी- विशालाक्षी- चर्मण्वती-वेत्रवती- कौशिकी-गण्डकी- विश्वामित्रीसरयूकरतोया- ब्रह्मानन्दामहीत्यनेक पुण्यनदी विराजिते भारतवर्षे भरतखण्डे जम्बूद्वीपे कूर्मभूमौ साम्बवती कुरुक्षेत्रादि समभूमौ आर्यावर्तान्तरगते ब्रह्मावर्तैकदेशे गंगायमुनयोर्मध्यभागे योजनव्यापिविस्तीर्णेक्षेत्रे,ज्ञानयुगप्रवर्तकानां महर्षि महेशयोगिवर्याणां परमाराध्यगुरुदेवै : अनन्तश्रीविभूषितैः ज्योतिष्पीठाधीश्वरैः जगद्गुरु श्री मच्छङ्कराचार्य ब्रह्मानन्दसरस्वतीमहाभागैः सम्पादितशतमखकोटि होम महायज्ञपावितायां भूमौ..... सकलजगत्स्रष्टुः परार्धद्वय जीविनो ब्रह्मणः द्वितीये परार्धे एकपञ्चाशत्तमे वर्षे प्रथम मासे प्रथम पक्षे प्रथम दिवसे अह्नस्तृतीये यामे तृतीये मुहूर्ते रथन्तरादिद्वात्रिंशत्कल्पानांमध्ये अष्टमे श्वेतवाराहकल्पे स्वायंभुवादि मन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कृत त्रेताद्वापरकलिसंज्ञकानां चतुर्णां युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमपादे प्रभवादि षष्ठि सम्वत्सराणां मध्ये..... .....संवत्सरे.....अयने.....ऋतौ .....मासे .....पक्षे ..... तिथौ ..... वासरे ..... नक्षत्रे ..... योगे ..... करणे .....राशि स्थिते श्रीसूर्ये ..... राशि स्थिते श्रीचन्द्रे..... राशि स्थिते श्रीकुजे..... राशि स्थिते श्रीबुधे ..... राशि स्थिते श्रीदेवगुरौ ..... राशि स्थिते श्रीशुक्रे..... राशि स्थिते श्रीशनौ..... राशि स्थिते श्रीराहौ..... राशि स्थिते श्रीकेतौ.....एवं गुण विशेषण विशिष्टायां पुण्यायाम् महापुण्य शुभ तिथौ.....

गुरू प्रार्थना —

नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः॥ *(श्रृङ्गेरी मठीय आचार्य प्रार्थनम्)*

श्री गुरु परमगुरु परमेष्ठी गुरु सद्गुरु पादुकाभ्यो नमो नमः। हम लोग ब्रह्मानन्दं गुरु तं नमानि। गुरु परम्परा को भी बोल सकते हैं। कर सकते हैं। हरौ रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन॥ ईश्वर के रुष्ट होने पर गुरुजी रक्षा करते हैं एवं गुरुजी के कुपित होने पर कोई भी रक्षक नहीं है।

भूतोच्चाटन मन्त्र—

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुविसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारः ते गच्छन्तु शिवाज्ञया॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*
ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्। सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*
ॐ तीक्ष्णदंष्ट्रमहाकाय कल्पान्ते दहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इति भैरवं नमस्कृत्य। (इन मन्त्रों से भूतोच्चाटन कर भैरव जी से यज्ञ रक्षा की प्रार्थना करते हैं।)

गणानान्त्वा इति मन्त्रस्य गृत्समदऋषिः। गणपतिर्देवता। जगती छन्दः। गणपति प्रार्थने विनियोगः।

ॐ गणानान्त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमं।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन्नूतिभिः सीदसादनम्॥ (ऋग्वेद २.२३.१)

(इन मन्त्रों से गणपति प्रार्थना कर पुष्पाक्षत छोड़ना चाहिये।)

तदनन्तरं तीर्थपूजनम्—तत्वायामीत्यस्य शुनः शेपः ऋषिः। वरुणो देवता त्रिष्टुप् छन्दः कावेरी तीर्थे वरुणावाहने विनियोगः।

ॐ तत् त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस् तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्र मोषीः॥ (ऋग्वेद १०.२४)
अस्मिन् कावेरी तीर्थे ॐ भूः वरुणामावाहयामि। ॐ भुवः वरुणामावाहयामि।
ॐ स्वः वरुणामावाहयामि। ॐ भूर्भुवस्वः वरुणामावाह यामि। श्री वरुण मूर्तये नमः।
ध्यायामि-''इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं सचता परुष्णया।
असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयाऽऽर्जीकीये शृणुह्या सुषोमया॥ (ऋग्वेद १०.७५.५)
ध्यानं समर्पयामि। श्री वरुण मूर्तये नमः।

हिरण्यवर्णामिति पञ्चदशर्चस्य सूक्तस्य, आनन्द कर्दम चिक्लीतेन्दिरासुता ऋषयः। श्रीरग्निश्च देवते। सूक्तेस्मिन् आद्याः तिस्रोनुष्टुभः, कां सोस्मीति चतुर्थी बृहती, चन्द्रां प्रभासां, आदित्यवर्णे इति पञ्चमी षष्ठ्यौ त्रिष्टुभौ, ततोष्टावनुष्टुभः, तां म आवह जातवेद इति पञ्चदशी प्रस्तार पंक्तिश्छन्दस्का, हिरण्यवर्णामिति

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बीजं, कां सोस्मितामिति शक्तिः, तां म आवह जातवेद इति कीलकम् कावेरी तीर्थपूजने विनियोगः।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्ठम्)*

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः आवाहयामि।

ॐ तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्ठम्)*

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः। आसनं कल्पयामि।

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्ठम्)*

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः। पादारविन्दयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

ॐ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम्॥

(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्ठम्)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः। हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणमहंप्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्ठम्)*

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथबिल्वः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः। (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

श्रीवरुणाश्रित कावेर्यै नमः, शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

श्री वरुणाश्रित कावर्यै नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, उपवीतं समर्पयामि। वस्त्रोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि। हिरण्य रूप इत्यस्य शौनको गृत्समद ऋषिः। अपान्नपात् देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। आभरणार्पणे विनियोगः।

ॐ हिरण्यरूपः स हिरण्य संदृगपां नपात् सेदु हिरण्यवर्णः। हिरण्ययात् परि योनेर्निषद्या हिरण्यदाददत्यन्नमस्मै॥

(ऋग्वेद २.३५.१६)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, आभरणं समर्पयामि।

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्व भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, गन्धं समर्पयामि।

हारिद्रवेव इति मन्त्रस्य आत्रेय श्यावाश्व ऋषिः। अश्विनौ देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। हरिद्रार्पणे विनियोगः।

ॐ हारि द्रवेव पततो वनेदुप सोमं सुतं महिषेवाव गच्छथः। सजोषसा उषसा सूर्येण च त्रिर्वर्तिर्यात मश्विना॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(ऋग्वेद ८.३५.७)

श्री वरुणाश्रित कावैर्यै नमः, हरिद्राचूर्णं समर्पयामि। या गुङ्गूरिति मन्त्रस्य शौनको गृत्समद ऋषिः। सिनीवाली देवता। अनुष्टुप्छन्दः। कुंकुमार्पणे विनियोगः।

ॐ या गुङ्गूर्या सिनीवाली या राका या सरस्वती। इन्द्राणीमह्व ऊतये वरुणानीं स्वस्तये॥ (ऋग्वेद २.३२.८)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, कुंकुमचूर्णं समर्पयामि। अर्चतेति मन्त्रस्य प्रियमेधा ऋषिः। इन्द्रो देवता। अनुष्टुप् छन्दः। अक्षतार्पणे विनियोगः।

ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरन्न धृष्णवर्चत॥ (ऋग्वेद ८.६९.८)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्री श्रयतां यशः॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्ठम्)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, पुष्पाणि समर्पयामि। गङ्गायै नमः। यमुनायै नमः। गोदावर्यै नमः। सरस्वत्यै नमः नर्मदायै नमः। सिन्धवे नमः। कावेर्यै नमः। श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः। नामपूजां समर्पयामि।

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्ठम्)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, धूपमाध्रापयामि।

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। निच देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्ठम्)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, दीपं दर्शयामि। धूप दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि। निवेदनार्थे, गाथिनो विश्वमित्र ऋषिः। सविता देवता। गायत्री छन्दः। निवेदने विनियोगः। चतुरस्त्र मण्डल करके उसके ऊपर नैवेद्य रखें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो योनः प्रचोदयात्॥ (ऋग्वेद ३.६२.१०)

ॐ सत्यंत्वर्तेन परिषिञ्चामि। श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः। कदलीफल नैवेद्यं निरीक्षस्व। सुरभिमुद्रां प्रदर्श्य। अमृतोपस्तरण मसि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ देवेभ्यः स्वाहा।

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, कदलीफल नैवेद्यं निवेदयामि। अमृतापिधानमसि। उत्तरापोशनार्थे जलं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गण्डूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

पूगीफल समायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्। चूर्णं कर्पूरसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, ताम्बूलं समर्पयामि।

मङ्गल नीराजनम्—

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ श्रिये जातः श्रिय आनिरियाय श्रियं वयो जरितृभ्यो दधाति।
श्रियं वसाना अमृतत्वमायन् भवन्ति सत्या समिथामितद्रौ॥ (ऋग्वेद ६.६४.४)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, मङ्गल नीराजनम् समर्पयामि।

मन्त्रपुष्पम्—जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥ (ऋग्वेद १.९९.१)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः मन्त्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा—ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्ठम्)*

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः। प्रदक्षिणां समर्पयामि।

ॐ यः शुचि प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्य मन्वहम्। सूक्तंपंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्ठम्)*

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः। नमस्कारान् समर्पयामि।

ॐ जल बिम्बाय विद्महे, नील पुरुषाय धीमहि। तन्नस्त्वम्बु प्रचोदयात्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्ठम्)*

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः। इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, प्रसन्नार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थना—ॐ याः प्रवतोनिवत उद्वत उदन्वतीं रनुदकाश्च याः।
या अस्मभ्यं पयसा पिन्वमानाः शिवा देवी रशिपदा भवन्तु सर्वा नद्यो अशिमिदा भवन्तु॥ *(ऋग्वेद ७.५०.४)*

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, प्रार्थनां समर्पयामि। पुनः पूजां करिष्ये। छत्रं धारयामि। चामरेण बीजयामि। गीतं नाट्यं नटामि। आन्दोलिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्तराजोपचार देवोपचार वेदोपचार पुजां समर्पयामि। अनया पूजया श्री वरुणाश्रित कावेरी प्रीयताम्। लोपदोष प्रायश्चित्तार्थं नामत्रय मन्त्रजपमहं करिष्ये। ॐअच्युताय नमः। ॐअनन्ताय नमः। ॐगोविन्दाय नमः। त्रिवारं जपित्वा। तद् विष्णोरिति मन्त्रस्य काण्वो मेधातिथिः ऋषिः। विष्णुर्देवता। गायत्री छन्दः। पूजान्ते विष्णुस्मरणे विनियोगः।

ॐ तद् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तद्विप्रासोविपन्यवो जागृवांसः समिन्धते। विष्णोर्यत् परमं पदम्॥ (ऋग्वेद १.२२.२०-२१)

ॐ स्वस्ति। यहाँ पर तीर्थ पूजन संपन्न हुआ। समयाभाव में श्री सूक्त मन्त्रों के बिना भी कर सकते हैं। कावेरी के स्थान पर गङ्गादि नदियों का नाम उन-उन प्रदेशों में जोड़ना चाहिये।

कलेशेषु तीर्थजल पूजनम्—यज्ञशाला में कलशों में भरने के लिए जितनी तीर्थ जल की आवश्यकता है, एवं पूजन के लिए जितना जल अपेक्षित है, पण्डितों के आचमन के लिए जितना जल अपेक्षित है उतना जल कुम्भों में भरकर लाना चाहिये। तीर्थ जल पूजन के पश्चात् जल भरने की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है। कलशों को पहले स्वच्छ कर लेना चाहिये। पहले तीर्थ की स्तुति करनी चाहिये। उदाहरण कावेरी—

कवेरकन्यकेगस्त्ये जाये देवी सरिद्वरे। ब्रह्मकुण्ड समुद्भूते लोपामुद्रे नामोस्तु ते॥
सह्यशैल समुद्भूते रंगक्षेत्र निवासिनि। त्वामहं प्रार्थये देवि कावेरि प्रणामाम्यहम्॥ (स्मृति संग्रह)

कावेर राज की पुत्री, महर्षि अगस्त जी की पत्नी लोपामुद्रा नाम वाली तुम लोककल्याण के लिए ब्रह्मकुण्ड से कावेरी नदी के रूप में परिवर्तित होकर रंगनाथ जी के क्षेत्र में बहती हो ऐसे तम्हें नमस्कार है। अन्य नदियों में जल भरते समय उनकी स्तुति करनी चाहिये। निम्नलिखित मन्त्रों से धीरे-धीरे शुद्ध जल भरना चाहिए। प्रसुव इति नवर्चस्य सूक्तस्य सिन्धुक्षित् प्रैयमेधो ऋषिः। नद्यो देवताः। जगती छन्दः। उदकपूरणे विनियोगः।

प्रसुवं आपो महिमानमुत्तमं कारुर्वोचाति सदने विवस्वतः।
प्रसप्तसप्त त्रेधा हि चक्रमुः प्र सृत्वरीणामति सिन्धु रोजसा॥
प्रतेऽरदद्वरुणो यातवे पथः सिन्धो यद्वाजँ अभ्यद्रवस्त्वं।
भूम्या अधि प्रवता यासि सानुना यदेषामग्रं जगतामिरज्यसि॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दिवि स्वनो यतते भूम्योपर्यनन्तं शुष्ममुदियर्ति भानुना।
अभ्रादिव प्रस्तनयन्ति वृष्टयः सिन्धुर्यदेति वृषभो न रोरुवत्॥
अभित्वा सिन्धो शिशुमिन्न मातरो वाश्रा अर्षन्ति पयसेव धेनवः।
राजेव युध्वा नयसि त्वमित् सिचौ यदासामग्रं प्रवतामिनक्षसि॥
इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं सचता परुष्ण्या।
असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयाऽऽर्जीकीये शृणुह्या सुषोमया॥
सितासिते सरिते यत्र सङ्गथे तत्राप्लुतासो दिवमुत्पतन्ति।
येवैं तन्वश्विसृजन्ति धीरास्ते जनोसो अमृतत्वं भजन्ते।
तृष्टामया प्रथमं यातवे सजूः सुसत्वार्सयाश्वेत्यात्या।
त्वं सिन्धो कुभया गोमतीं क्रुमुं मेहत्वा सरथं याभिरीयसे॥
ऋजीत्येनी रुशती महित्वा परिज्रयांसि भरते रजांसि।
अदब्धा सिन्धुरपसामपस्तमाऽश्वा न चित्रा वपुषीव दर्शता॥
स्वश्वा सिन्धुः सुरथा सुवासा हिरण्ययीसुकृता वाजिनीवती।
ऊर्णावती युवतिः सीलमावत्युताधि वस्ते सुभगा मधुवृधम्॥
सुखं रथं युयजे सिन्धुरश्विनं तेन वाजं सनिषदस्मिन्नाजौ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महान् ह्यस्य महिमापनस्यतेऽदब्धस्य स्वयशसो विरप्शिनः ॥ *(ऋग्वेद १०.७५ सम्पूर्ण सुक्त)*

इन दस मन्त्रों से जल भरकर कलशों का संक्षेप पूजन करना चाहिये। एषु कलशेषु वरुणावाहने विनियोगः। तत्वायामीत्यस्य शुनः शेपः ऋषिः। वरुणो देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। कलशेषु वरुणावाहने विनियोगः।

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस् तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशं समान आयुः प्र मोषीः ॥ *(ऋग्वेद १.२४.११)*

ऐषु कलशेषु। ॐभूः वरुणमावाहयामि। ॐभुवः वरुणमावाहयामि। ॐस्वः वरुणमावाहयामि। ॐभूर्भुवस्वः वरुणमावाहयामि। श्री वरुणमूर्तये नमः। ॐलं पृथिव्यात्मने गन्धं कल्पयामि। ॐहं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐयं वायुवात्मने धूपं कल्पयामि। ॐरं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐवं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐपं. परमात्मने पञ्चोपचारपूजां समर्पयामि।

यह पञ्चोपचार पूजन जहाँ भी समय कम हो वहाँ कर सकते हैं। इसके पश्चात् पण्डित जी के द्वारा सिर पर कुम्भ धारण कर यज्ञशाला तक शान्ति सूक्तों का पाठ करते हुए यात्रा के रूप में चलना चाहिये। शान्तिसूक्त ब्रह्मकर्म समुच्चय में है।

नदी से कलशों में जल शान्तिसूक्तों का पठन करते हुए पूजा स्थल में लाये। पूर्व दिशा के पवित्र जगह पर सभी कलशों को रखना चाहिये। गणपति मण्डल एवं गुरु मण्डल की रचना करनी चाहिये। जिसका विवरण तीसरे अध्याय में है। गुरुमण्डल पर गुं गुरवे नमः कहकर पुष्प माला चढ़ायें। गणेश मण्डल पर गं गणपतये नमः कहकर पुष्पाक्षत चढायें।

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव। विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेंऽघ्रियुगं स्मरामि ॥
ॐ देवीं वाचमजनयन्त देवा स्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति। सानोमन्द्रेष मूर्जं दुहाना धेनुर्वा गस्मानुपसुष्टुतैतु ॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(ऋग्वेद ८.१००.११)

ॐ ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ (ऋग्वेद १०.१७३.५)

सुमुहूर्तोस्तु। सुप्रतिष्ठितमस्तु। (ऊपर के मन्त्रों से मुहूर्त में जो भी दोष हैं उनके निवारण की प्रार्थना है।)

आसन शुद्धि—ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः सुतलं छन्दः आदि कूर्मो देवता आसन शुद्ध्यर्थे जपे विनियोगः

ॐ पृथ्वित्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

(ब्रह्मकर्म समुच्चये-संकल्प प्रकरणे)

भूतोच्चाटन मन्त्र—

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुविसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारः ते गच्छन्तु शिवाज्ञया॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)

ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्। सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्रमहाकाय कल्पान्ते दहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

इति भैरवं नमस्कृत्य। (इन मन्त्रों से भूतोच्चाटन कर भैरव जी से यज्ञ रक्षा की प्रार्थना करते हैं।)

शिखाबन्धनम्—

ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणित भक्षणे। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुण्डे ह्यपराजिते॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

(इस मन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

देह शुद्धि—येभ्यो मातेत्यस्य गयःप्लात ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। जगतीछन्दः। एवापित्रेत्यस्य वामदेव ऋषिः। बृहस्पतिर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। मनुष्य

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गन्ध निवारणे विनियोगः।

ॐ येभ्यो मातामधुमत् पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः।
उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनुमदास्वस्तये॥ (ऋग्वेद १०.६३.३)
ॐ एवापित्रे विश्वदेवाय वृष्णो यज्ञैर्विधेम नमसा हविर्भिः।
बृहस्पते सुप्रजा वीरवन्तो वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥ (ऋग्वेद ४.५०.६)

(इन मन्त्रों से देहशुद्ध कर आगे आचमन से गणेश पूजन प्रारम्भ करें।)

आचमन मन्त्र—ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।) अथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुराणेभ्यो नमः। अग्नये नमः। अग्नये नमः। वायवे नमः। प्राणाय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै नमः। पृथिव्यै नमः। अन्तरिक्षाय नमः। अन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारणम्—पवित्रन्त इत्यनयोः आङ्गीरसः पवित्र ऋषिः। पवमानः सोमो देवता। जगतीछन्दः। पवित्राभिमंत्रणे, धारणे विनियोगः।

ॐ पवित्रन्ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः।
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुतेशृतास इद्वहन्तस्तत् समाशत॥ (ऋग्वेद ९.८३.१)
ॐ तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदे शोचन्तो अस्य तन्तवो व्यस्थिरन्।
अवन्त्यस्य पवीतारं माशवो दिवस्पृष्ठमधितिष्ठन्ति चेतसा॥ (ऋग्वेद ९.८३.२)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ भूर्भुवः स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये आसन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।)

प्राणायाम—प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्राणायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्स॑वि॒तुर्वरे॑ण्यं॒ भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि।
धियो॒ यो नः॑ प्रचो॒दया॑त्। ॐ आपो॒ ज्योती॒रसो॒मृतं॒ ब्रह्म भूर्भुव॑स्व॒रोम्। *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

(रेखङ्कित मन्त्र को तीन बार कुम्भक में जप करना चाहिये।)

गणेश प्रार्थना—सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्नराजो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेत् श्रृणुयादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। सङ्ग्रामे संकटेचैव विघ्नस्तस्य न जायते॥
शुक्लांबरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यातेत्सर्व विघ्नोपशान्तये॥ *(याजुषपूर्वप्रयोगरप्राकर)*

गणानान्त्वा इति मन्त्रस्य गृत्समदऋषिः। गणपतिर्देवता। जगती छन्दः। गणपति प्रार्थने विनियोगः।

ॐ ग॒णाना॑न्त्वा ग॒णप॑तिं हवामहे क॒विं क॑वी॒नामु॑प॒मश्र॑वस्तमं।
ज्ये॒ष्ठराजं॒ ब्रह्म॑णां ब्रह्मणस्पत॒ आन॑ः शृण्वन्नू॒तिभिः॑ सीद॒साद॑नम्॥ *(ऋग्वेद २.२३.१)*

(इन मन्त्रों से गणपति प्रार्थना कर पुष्पाक्षत छोड़ना चाहिये।)

गुरू प्रार्थना —

नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः ॥ (शृङ्गेरी मठीय आचार्य प्रार्थनम्)

श्री गुरु परमगुरु परमेष्ठी गुरु सद्गुरु पादुकाभ्यो नमो नमः।

कलश पूजनम्—कलश में पूर्ण जल भरकर रखना चाहिये। फिर उसमें गन्ध अक्षत पुष्प कलश के अन्दर डालना चाहिये एवं बाहर भी चारों ओर लगाना चाहिये। गायत्री मन्त्र से तीन बार कलश छूकर जप करना चाहिये।

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रूद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥
कुक्षौ तु सागराःसर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदस्सामवेदोह्यथर्वणः ॥
अङ्गैश्चसहितास्सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः। अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ॥
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः। सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः ॥
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिंकुरु ॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय-देवपूजा प्रकरण)

ॐ इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं सचता परुष्ण्या।
असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयाऽऽर्जीकीये शृणुह्या सुषोमया ॥
सितासिते सरिते यत्र संगथे तत्राप्लुतासो दिव मुत्पतन्ति।
येवै तन्वं विसृजन्ति धीरास्ते जनासो अमृतत्वं भजन्ते ॥ (ऋग्वेद १०.७५.७)
ॐ याः प्रवतो निवत उद्वत उदन्वतीरनुदकाश्चयाः। ता अस्मभ्यं पयसा
पिन्वमानाः शिवा देवी रशिपदा भवन्तु सर्वा नद्यो अशिमिदा भवन्तु ॥ (ऋग्वेद ७.५०.४)

(इन मन्त्रों को कलश छूकर पाठ करना चाहिये।)

सितमकरनिषण्णां शुभ्रवर्णां त्रिनेत्रां करधृत कलशोद्यत्पंकजाभीत्यभीष्टाम्।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विधि हरिहररूपां सेन्दुकोटीरचूडां भसितसितदुकूलां जाह्नवीं तां नमामि॥ *(स्मृति संग्रह)*

(इस मन्त्र से कलश में गङ्गाजी का ध्यान करना चाहिये।)

शङ्खपूजन—शंख को पहले धोकर, उसमें जल भरकर, शंख को गन्ध पुष्प अक्षत लगाकर पीठ के ऊपर रखना चाहिये। गायत्री मन्त्र से तीन बार शंख छूकर जप करना चाहिये।

ॐ शङ्खं चन्द्रार्कदैवत्यं वारुणाञ्चाधि दैवतम्। पृष्ठे प्रजापतिं विद्यात् अग्रे गङ्गा सरस्वती॥
त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया। शङ्खेतिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्माच्छंखं प्रपूजयेत्॥
विलयं यान्ति पापानि हिमवत् भास्करोदये। दर्शनादेव शङ्खस्य किं पुनः स्पर्शने भवेत्॥
पाञ्चजन्यं महात्मानं पापघ्नं तु पवित्रकम्। शंखमध्यस्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपरि॥
अङ्गलग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यायुतं दहेत्। गर्भादेवादि नारीणां विशीर्यन्ते सहस्त्रधा॥
तव नादेन पाताले पाञ्चजन्य नमोस्तुते॥ ॐ पाञ्चजन्याय विद्महे, पद्मगर्भाय धीमहि। तन्नः शङ्खः प्रचोदयात्॥

(ब्रह्मकर्म समुच्चय-देवपूहा प्रकरण)

ॐपवनायै नमः ॐपाञ्चजन्यायै नमः। ॐपर्जन्यायै नमः ॐअम्बुराजायै नमः। ॐकम्बु राजायै नमः। ॐपद्मबान्धवायै नमः। ॐधवलाय नमः। ॐनिस्स्वनाय नमः। ॐदिव्य भोगदाय नमः।

ॐ शङ्खमूले परब्रह्मा शङ्खाग्रे तु सरस्वती। यः स्नापयति गोविन्दं तस्य पुण्यमनन्तकम्॥ *(स्मृतिमुक्तावल्यां शङ्खपूजा प्रकरण)*

(इतना कहकर शंख को नमस्कार करना चाहिये।) शंख के जल को कलश में डालना चाहिये। पुनः शंख में कुछ जल लेकर भगवान् के सिर पर तीन बार प्रोक्षण करना चाहिये। यज्ञशाला या पूजास्थल का प्रोक्षण करें। पूजा की सामग्रियों का सिञ्चन करें। पूजा में प्रयुक्त सभी वस्तुओं का प्रोक्षण करें। शेष

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जल नीचे छोड़ दे। शंख को धोकर पुनः पानी भरकर यथा स्थान रख देना चाहिये।

आत्माराधनम्—हृदि स्थितं पंकजमष्टपत्रं सकेसरं कर्णिकमध्यनाळम्।
अङ्गुष्ठमात्रं मुनयो वदन्ति ध्यायेत् च विष्णुं पुरुषं पुराणम्।
हृदयकमल मध्ये सूर्य बिम्बासनस्थं सकल भुवन बीजं सृष्टिसंहारहेतुम्।
निरतिशयसुखात्मज्योतिषं हंसरूपं परमपुरुषमाद्यं चिन्तयेदात्ममूर्तिम्॥
आराधयामि मणि सन्निभमात्मलिङ्गं मायापुरी हृदय पंकजसन्निविष्टम्।
श्रद्धा नदी विमलचित्त जलाभिषेकै र्नित्यं समाधि कुसुमैर्न पुनर्भवाय॥
देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो हंसः सदाशिवः। त्यजेदज्ञान निर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥
स्वामिन् सर्व जगन्नाथ यावत्पूजावसानकम्। तावत् त्वं प्रीति भावेन कुम्भेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥ (देवपूजा)

ॐ आत्मने नमः। ॐ अन्तरात्मने नमः। ॐ परमात्मने नमः। (इससे आत्मशुद्धि होती है। इन मन्त्रों को कहकर अपने सिर पर अक्षत डालना चाहिये।)

मण्डप पूजनम्—उत्तप्तोज्वल काञ्चनेन रचितं तुङ्गाङ्गरंगस्थलम्। शुद्धस्फाटिक भित्तिकाविरचितै स्तम्भैश्च हैमैः शुभैः॥
द्वारैश्चामर रत्नराजखचितैः शोभावहैर्मण्डपैः। तत्रान्यै रपिचित्र शङ्खधवलैः प्रभ्राजितं स्वस्तिकैः॥
मुक्ताजाल विलम्बिमण्डपयुतैर्वज्रैश्च सोपानकैः। नानारत्न विनिर्मितैश्च कलशैरत्यन्त शोभावहम्॥
माणिक्योज्वल दीपदीप्तिखचितं लक्ष्मीविलासास्पदम्। ध्यायेन् मण्डपमर्चनेषु सकलेष्वेवं विधं साधकः॥

(अनुष्ठान पद्धति-मण्डप संस्कारे)

नवरत्नखचित श्री सौभाग्य मण्डपाय नमः। मण्डपपूजां समर्पयामि। (उपरोक्त चार मन्त्र कहते हुए मण्डप का पूजन करना चाहिये।)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गणपति पूजनम्

गणेश मण्डल रचना—भूमि के शुद्ध होने पर उस पवित्र भूमि पर गणेश मण्डल का निर्माण करना चाहिये। दक्षिण में भूमि पर रंगोली से रेखाओं को खींचकर उसमें रंग (निर्दिष्ठ) भरते हैं। उत्तर में पीठ (चौकी) पर सफेद वस्त्र बिछाकर हल्दी कुंकुम मिश्रित जल से रेखाओं को खींचकर चावलों को रंगकर सुखाकर भरते हैं। भूमि पर बने मण्डल प्रतिदिन विसर्जित स्वयं होता है। अगले दिन फिर से बनाना पड़ता है। चौकी पर बने मण्डल यज्ञ की समाप्ति पर्यन्त रहता है। इस मण्डल में लकीरों को निर्दिष्ट दिशा में ही खींचना चाहिये।

शक्रासुरानिलहुताशन वारुणेश। भागाश्रितं परिलिखेत् रसकोणमन्तः॥ *(प्रयोग दीपिका)*

पहले शक्र (इन्द्र) की दिशा पूर्व से, असुर (नैऋत्य) नैऋत्य दिशा की ओर वहाँ से अनिल (वायव्य) दिशा की ओर वहाँ से पूर्व मिलाना चाहिये (पहला त्रिकोण) दूसरा त्रिकोण हुताशन अर्थात् अग्नेय से प्रारम्भ कर वरुण अर्थात् पश्चिम दिशा तक एवं वहाँ से ईश (ईशान) तक खीचें। पुनः आग्नेय में मिलायें यह षट्कोण हुआ।

पाशीश पावक दिशाभ्युदितं त्रिकोणम्। विघ्नार्चनेषु रचितं नवकोण चक्रम्॥ *(प्रयोग दीपिका)*

पहले बने षट्कोण के अन्दर एक त्रिकोण बनाना चाहिये। इस प्रकार नवकोण चक्र बनता है, त्रिकोण पाशी (वरुण) पश्चिम से प्रारम्भ कर, ईश (ईशान्य) तक खीचें पुनः ईशान्य से पावक आग्नेय तक खीचें।

प्रादेश प्रमितियुतं गणेश बिम्बं। षट्कोणाकृति वर्तुलत्रिराढ्यम्॥ *(प्रयोग दीपिका)*
तद् बाह्यं चतुरस्त्रमण्डलं लिखित्वा। तन्मध्ये यजतु गणेश्वरं विपश्चित्॥ *(प्रयोग दीपिका)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नवकोण गणेश मण्डल (पद्मायुतं)

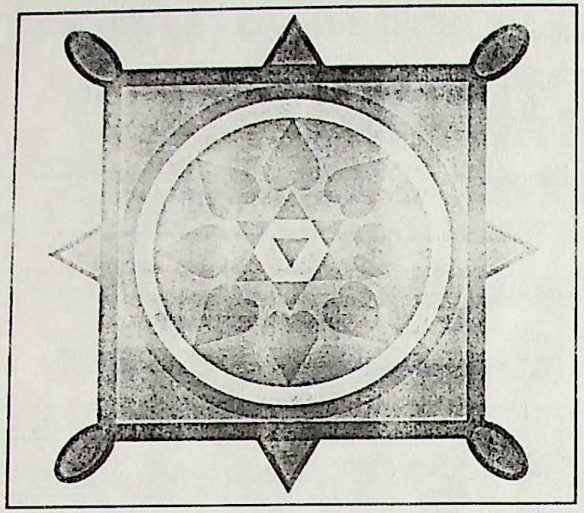

नवकोण गणेश मण्डल

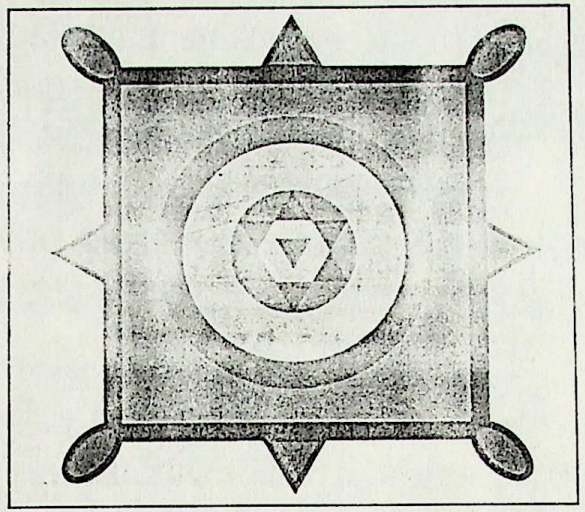

गणपति मण्डल रचना

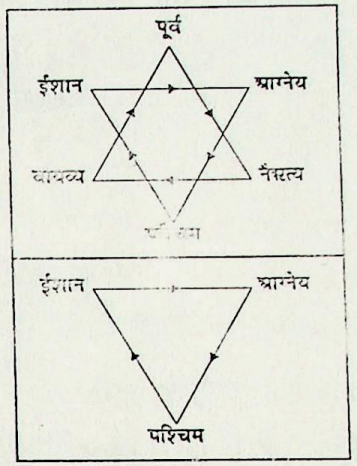

लकीर खींचते समय दक्षिण से कोई लकीर खींचना प्रारम्भ न करें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नवकोण चक्र बनाकर तीन वर्तुल; तवनदकद्ध लगाकर उसके बाहर दो चौकाकार बनायें, पीठ बनायें, इन सबका सम्मिलित मण्डल अगले पन्ने में उल्लिखित है। उसमें भरने योग्य रंगों का निरूपण भी उसी पन्ने में है।

इस प्रकार मण्डल बनाकर उसमें गणेश जी का पूजन करना चाहिये। दो प्रकार के मण्डलों का चित्र प्रेषित है। इन दोनों में किसी एक का प्रयोग कर सकते हैं।

अङ्गन्यास-करन्यास—शरीर में गणपति का आवाहन करने से पूर्व न्यास करना चाहिये। गणकऋषिः। निचृद् गायत्री छन्दः। गणपतिर्देवता। न्यासे विनियोगः। ॐ गां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ गीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ गूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ गैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ गौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ गः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। ॐ गां हृदयाय नमः। ॐ गीं शिरसे स्वाहा। ॐ गूं शिखायै वषट्। ॐ गैं कवचाय हुम्। ॐ गौं नैत्रत्रयाय वौषट्। ॐ गः अस्त्राय फट्। हाथों में पुष्प लेकर अपने शरीर में विद्यमान गणेश जी को निःश्वास द्वारा पुष्पो में कल्पित करके ध्यान मन्त्र से ध्यान कर उन फूलों को मण्डल में या मूर्ति के चरणों में अर्पण करना चाहिये।

ध्यान मन्त्र—गजवदनमचिन्त्यं तीक्ष्णदंष्ट्रं त्रिनेत्रं, बृहदुदरमशेषं भूतिरूपं पुराणं।
अमरवर सुपूज्यं रक्तवर्णं पुराणं। पशुपति सुतमीशं विघ्नराजं नमामि॥ *(स्मृति संग्रह)*
ॐ गणानान्त्वा गणपतिं हवामहे कविकविनामुपमश्रवस्तमं।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनःशृण्वन्नूतिभिःसीदसादनम्॥ *(ऋग्वेद २.२३.१)*

गं गणपतये नमः। ध्यायामि, ध्यानं समर्पयामि।

आवाहनम्—ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतोवृत्वात्यतिष्ठिद् दशाङ्गुलम्॥ *(ऋग्वेद १०.९०)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

गङ्गापतये नमः। आवाहयामि। आवाहनं समर्पयामि।

द्वारपाल पूजनम्—ॐपूर्वद्वारे द्वारश्रियै नमः। धात्रे नमः विधात्रे नमः। ॐदक्षिणद्वारे द्वारश्रियै नमः। जयाय नमः। विजयाय नमः। ॐपश्चिमद्वारे द्वारश्रियै नमः। ॐचण्डाय नमः। ॐप्रचण्डाय नमः। ॐउत्तरद्वारे द्वारश्रियै नमः। ॐशङ्खनिधये नमः। ॐपुष्पनिधयेनमः। ॐऊर्ध्व द्वारश्रियै नमः। ॐआकाशाय नमः। ॐअन्तरिक्षाय नमः। ॐअधोद्वारे द्वारश्रियै नमः। ॐभूम्यै नमः। ॐपातालाय नमः। ॐपूर्व समुद्राय नमः। ॐदक्षिणसमुद्राय नमः। ॐपश्चिम समुद्राय नमः। ॐउत्तर समुद्राय नमः। ॐऋग्वेदाय नमः। ॐयजुर्वेदाय नमः। ॐसामवेदाय नमः। ॐअथर्ववेदाय नमः। ॐकृतयुगाय नमः। ॐत्रेतायुगाय नमः। ॐद्वापरयुगाय नमः। ॐकलियुगायनमः। इति द्वारपालपूजां समर्पयामि। (इन मन्त्रों से मण्डप के द्वारों की पूजा होती है।)

गणपति पीठ पूजनम्—गुं गुरुभ्यो नमः। गं गणपतये नमः। आधारशक्त्यै नमः। मूलप्रकृत्यै नमः। आदि कूर्माय नमः। अनन्ताय नमः। पृथिव्यै नमः। धर्माय नमः। ज्ञानाय नमः। वैराग्याय नमः। ऐश्वर्याय नमः। अधर्माय नमः। अज्ञानाय नमः। अवैराग्याय नमः। अनैश्वर्याय नमः। सं सत्वाय नमः। रं रजसे नमः। तं तमसे नमः। मं मायायै नमः। विं विद्यायै नमः। पं पद्माय नमः। अं अर्क मण्डलाय नमः। उं सोममण्डलाय नमः। मं वह्निमण्डलाय नमः। अं आत्मने नमः। उं अन्तरात्मने नमः। पं परमात्मने नमः। ॐषीं ज्ञानात्मने नमः। (इन मन्त्रों से गणपति मण्डल की पूजा करना चाहिये।)

नवशक्ति पूजा—तीव्रायै नमः। ज्वालिन्यै नमः। नन्दायै नमः। भोगदायै नमः। कामरूपिण्यै नमः। उग्रायै नमः। तेजोवत्यै नमः। सत्यायै नमः। विघ्ननाशिन्यै नमः। ॐषीं गं सर्वशक्तियुक्त कमलासनाय नमः। (इन मन्त्रों से गणपति मण्डल में विद्यमान नौ शक्तियों का पूजन करना चाहिये।)

स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्य गणनायक। अरण्यामिव हव्याशं मूर्तौ (बिम्बे, कुम्भे) आवाहयाम्यहम्॥ *(देवपूजा)*

मण्डल में या मूर्ति में या कुम्भ में गणेश जी का आवाहन कर उसमें प्राणाप्रतिष्ठा मन्त्रों से प्राणाप्रतिष्ठा करनी चाहिये। उद्भव या प्रतिष्ठापित मूर्तियों में भी प्राणप्रतिष्ठा कर सकते हैं। इससे उन मूर्तियों की शक्ति बढ़ती है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्राणप्रतिष्ठा

अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठा महामन्त्रस्य ब्रह्म विष्णुरुद्राऋषयः। गायत्र्युष्णिक् बृहती छन्दांसि प्राणशक्तिः परा देवता आं बीजं ह्रीं शक्ति क्रों कीलकं। श्रीमहागणेश्वर प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

ध्यानम्— **रक्तांबोधिस्थपोतोल्लसदरुणा सरोजाधिरूढा कराब्जैः पाशं कोदण्ड मिक्षूद्भवमथ गुणमप्यंकुशं पञ्चबाणान्॥ विभ्राणासृक्कपालं त्रिनयन लसिता पीनवक्षोरुहाढ्या देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्ति परानः॥** *(स्मृति संग्रह)*

ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः महागणेश्वर प्राणाः इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः महागणेश्वर जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः महागणेश्वरस्य सर्वेन्द्रियाणि वाक् मनः चक्षुः श्रोत्र घ्राण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ॐ असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नो धेहि भोगं। ज्योक्पश्येम सूर्यमुच्चरन्त मनुमते मृळयानः स्वस्ति॥

(ऋग्वेद १०.५९.६)

ॐ पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्तरिक्षम्। पुनर्नः सोमस्तन्वं ददातु पुनः पूषा पथ्यां ३या स्वस्ति॥

(ऋग्वेद १०.५९.७)

सशक्ति साङ्ग सायुध सवाहन सपरिवार श्री महागणेश्वर भगवन् अत्रैवागछागच्छ आवाहयिष्ये। आवाहयामि। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अव कुण्ठितो भव। अमृती कृतो भव व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्॥ गणक ऋषिः निचृद् गायत्री छन्दः गणपतिर्देवता ॐ गां हृदयाय नमः। ॐ गीं शिरसे स्वाहा। ॐ गूं शिखायै वषट्। ॐ गैं क व चा य हुं। ॐ गौं ने त्र त्र या

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

य बौ ष ट् ॐ गः अस्त्राय फट्। भूर्भुवः स्वरोम् इति दिग्बन्धः। (इन मन्त्रों से गणपति जी को छूकर उनमें प्राणप्रतिष्ठा की कल्पना करनी चाहिये।)

ध्यान— ॐ रक्तो रक्ताङ्गरागांशुककुसुमयुतस्तुन्दिलः चन्द्रमौळि। नेत्रैर्युक्तस्त्रिभिर्वामन करचरणो बीजपूरात्तनासः॥
हस्ताग्राक्लृप्तपाशांकुशरद वरदो नागवक्त्रोऽहिभूषो। देवः पद्मासनो नो भवतु नतसुरो भूतये विघ्नराजः॥ *(स्मृति संग्रह)*

ॐगं गणपनये नमः। ध्यानं सपर्मयामि। (लाल रंग वाले, लाल अङ्गरागधारण करने वाले, लाल वस्त्र वाले, लाल पुष्पवाले, मोटे पेट वाले, चन्द्र को सिर पर धरे, त्रिनेत्र वाले, सूंढ में बीजपूरफल धारण करने वाले हाथों में पाश अंकुश दान्त वरमुद्रा धारण करने वाले। हाथि मुखवाले, सर्पभूषण पद्मासन में बैठकर देवताओं से स्तुति कराने वाले गणेश जी हमारा मङ्गल करें।) ॐगं गणपतये नमः। (इस मूल मन्त्र को आठ बार जप करें एवं संक्षेप में पञ्चोपचार पूजन करें।) ॐ लं पृथिव्यात्मने गन्धं कल्पयामि। ॐहं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐयं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐरं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐवं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐपं. परमात्मने पञ्चोपचारपूजां समर्पयामि।

आसनम्—ॐ पुरुषं एवेदं सर्वं यद् भूतं यच्च भव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेना तिरोहति॥ *(ऋग्वेद १०.९०)*
ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐगं गणपतये नमः। आसनं समर्पयामि।

द्रव्याभावेतु पूजायां पुष्पैरपि समर्पयेत्। पुष्पाभावेतु तोयेन तोयाभावे तु चेतसा॥ *(तन्त्र संग्रहे)*

पूजन करते समय जब किसी द्रव्य की कमी होती है, तो उसके स्थान पर पुष्पों से पूजन कर सकते हैं, अगर पुष्प भी नहीं है तो जल से पूजन करना चाहिये। पानी भी न हो तो मन से पूजा की कल्पना करनी चाहिये। द्रव्याभावे अक्षतान् समर्पयामि यह गलत परम्परा है। इसे नहीं करना चाहिये।

उद्वाहावाहने नस्तः स्थिरायामुद्भवार्चने। अस्थिरायां विकल्पः स्यात् तण्डुलेतु भवेद् द्वयम्॥ *(लक्षण संहिता)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रतिष्ठित एवं उद्भव मूर्तियों के पूजन मे आवाहन विसर्जन दोनों की आवश्यकता नहीं है। अस्थिर मूर्ति आदि में दोनों कर सकते हैं। परन्तु धरती पर बने मण्डलों में नित्य आवाहन विसर्जन करना चाहिये। ताकि वे दूषित न हो। उपरोक्त दो श्लोक पूजा के नहीं है। केवल प्रयोग विधान है। अपवृत्ते कर्मणि लौकिकः सम्पद्यते। इस सूत्र से पूजा समाप्ति के बाद स्वतः देवता विसर्जन हो जाता है।

पाद्यम्— ॐ एतावानस्य महिमाऽतो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ *(ऋग्वेद १०.९०)*

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ गं गणपतये नमः। पादारविन्दयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि। (दो पैर होने के कारण पाद्यं-पाद्यं कहकर दो बार पाँव धोने के लिये जल दिया जाता है।) पर्वत की मिट्टी, दूर्वा, सरसो, तिल, पानी का मिश्रण पाद्य कहलाता है।

अर्घ्यं— ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत् साशनानशने अभि॥ *(ऋग्वेद १०.९०)*

ॐ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां। ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्॥

(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ गं गणपतये नमः। हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि। (दहि-पानी, दूध-अक्षत, गोधूम, तिल, सरसूँ एवं कुश का अग्रभाग ये अष्टाङ्ग मिलकर अर्घ्य जल होता है।)

आचमन—ॐ तस्मात् विराळजायत विराजो अधिपूरुषः। सजातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथोपुरः॥ *(ऋग्वेद १०.९०)*

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टमुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणो॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ गं गणपतये नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि। (जाफल, लौंग, तक्कोला इन्हें आचमन जल में डालना चाहिये।)

पञ्चामृत स्नान—साधन उपलब्ध हो गणेश जी प्रधान देवता हो तो इसे कर सकते हैं। (पञ्चामृत स्नान से पहले मूर्ति को शुद्ध कर लें।)

१. पयः (दूध)—ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यं। भवा वाजस्य संगथे॥ *(ऋग्वेद १.९१.१६)*

ॐ गं गणपतये नमः। क्षीर स्नानं समर्पयामि। पय स्नान के बाद शुद्धोदक से स्नान।

ॐ गणानान्त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन्नूतिभिस्सीदसादनम्॥ *(ऋग्वेद २.२३.१)* ॐ गं गणपतये नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

२. दधि (दही)—ॐ दधिक्रव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखा करत्प्रण आयूंषि तारिषत्॥ *(ऋग्वेद ४.३९.६)*

ॐ गं गणपतये नमः दधि स्नानं सपर्मयामि। दधि स्नान के बाद शुद्धोदक से स्नान

ॐ निषुसीद गणपते गणेषु त्वामाहुर्विप्रतमं कवीनां। न ऋते त्वत् क्रियते किंचनारे महामर्कं मघवन् चित्रमर्च॥

(ऋग्वेद १०.११२.९)

ॐ गणपतये नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्पयामि।

३. घृत (घी)—ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभवक्षि हव्यम्॥ *(ऋग्वेद २.३.११)*

ॐ गं गणपतये नमः। घृतस्नानं समर्पयामि। घी से स्नान कराने के बाद शुद्ध जल से स्नान।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ अभिख्यानो मघवन्नाधमानान्त्सखे बोधि वसुपते सखीनाम्।
रणं कृधि रणकृत् सत्यशुष्माऽभक्ते चिदाभजाराये अस्मान्॥ (ऋग्वेद १०.११२.१०) ॐ गं गणपतये नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

४. मधु (शहद)—ॐ मधुवाता ऋताय ते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥
मधुनक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ (ऋग्वेद १.९०.६-७-८)

ॐ गं गणपतये नमः, मधु स्नानं समर्पयामि। शहद के स्नान कराने के बाद शुद्ध जल से स्नान।

ॐ आतूनं इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभंसंगृभाय। महाहस्ती दक्षिणोन॥ (ऋग्वेद ८.८१.१) ॐ गं गणपतये नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

५. शर्करा (शक्कर)—ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिन्द्राय सुहवीतु नाम्ने।
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमाँ अदाभ्यः॥ (ऋग्वेद ९.८५.६)

ॐ गं गणपतये नमः शर्करा स्नानं समर्पयामि। शर्करा स्नान के पश्चात् शुद्ध जल से स्नान कराये।

ॐ विद्याहित्वा तुविकूर्मिं तुवि देष्णं तुवीमघं। तुविमात्र मवोभिः॥ (ऋग्वेद ८.८१.२)

ॐ गं गणपतये नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

फलम्—ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वं हसः॥ (ऋग्वेद १०.९७.१५)

ॐ गं गणपतये नमः फल स्नानं समर्पयामि। फल स्नान के बाद शुद्ध जल से स्नान करायें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ आपो॒हिष्ठा मयो॒भुवः॒स्तान॑ ऊ॒र्जे द॑धातन। म॒हेरणा॑य॒ चक्ष॑से॥
यो वः॑ शि॒वत॑मो॒रस॒स्तस्य॑ भाजयते॒ हनः॑। उ॒श॒तीरि॑व मा॒तरः॑॥
तस्मा॒अरं॑ङ्गमाम वो॒ यस्य॒ क्षया॑य॒ जिन्व॑थ। आपो॑ ज॒नय॑थाच नः॥ (ऋग्वेद १०.९.१-२-३)
ॐ यत्पुरु॑षेणा ह॒विषा॑ दे॒वा य॒ज्ञमत॑न्वत। व॒स॒न्तो अ॑स्यासी॒दाज्यं॑ ग्री॒ष्म इ॒ध्मः श॒रद्ध॒विः॥ (ऋग्वेद १०.९०)
ॐ आ॒दि॒त्यव॑र्णो॒ तप॒सोऽधि॑जा॒तो वन॒स्पति॒स्तव॑ वृ॒क्षोऽथ बि॒ल्वः।
तस्य॒ फला॑नि॒ तप॒सा नु॑दन्तु मा॒ यान्त॑रा॒ याश्च॑ बा॒ह्या अ॑ल॒क्ष्मीः॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

(अगर गणेश जी का ही होम या पूजा हो तो अथर्वशीर्ष एवं गणेश सूक्त के मन्त्रों से अभिषेक करना चाहिये।)

ॐ तच्छं॒य्योरावृ॑णीमहे। गा॒तुं य॒ज्ञाय॑ गा॒तुं य॒ज्ञप॑तये। दैवी॑ स्व॒स्तिर॑स्तु नः स्व॒स्तिर्मानु॑षेभ्यः॥
ऊ॒र्ध्वं जि॑गातु भेष॒जम् शंनो॑ अ॒स्तु द्वि॒पदे॒ शं चतु॑ष्पदे॥ (ऋग्वेद परिशिष्ट १० मण्डल) ॐ गं गणपतये नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि॥

वस्त्रम्— ॐ युवं वस्त्रा॑णि पीव॒सावं॑साथे युवोरच्छि॑द्रा॒ मन्त॑वोह॒सर्गाः॑।
अवा॑तिरत॒मनृ॑तानि॒ विश्व॑ ऋ॒तेन॑ मित्रा वरुणा सचेथे॥ (ऋग्वेद १.१५२.१)
ॐ तं य॒ज्ञं ब॒र्हिषि॒ प्रौक्षन् पुरु॑षं जा॒तम॑ग्र॒तः। तेन॑ दे॒वा अ॑यजन्त सा॒ध्या ऋष॑यश्च ये॥ (ऋग्वेद १०.९०)
ॐ उपैतु॒ मां दे॑वस॒खः की॒र्तिश्च॒ मणि॑ना स॒ह। प्रा॒दुर्भू॒तोऽस्मि॑ राष्ट्रे॒ऽस्मिन्की॒र्तिमृ॑द्धिं द॒दातु॑ मे॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ गं गणपतये नमः वस्त्रं समर्पयामि। (रूई का वस्त प्रतिदिन बदलना चाहिये। पीताम्बर, रेशम या मडि वस्त्र पूजा में रखने पर दूसरे दिन भी उसे झाडकर पुनः गायत्री मन्त्र से प्रोक्षण कर दुबारा उस उपयोग में ला सकते हैं।)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यज्ञोपवीतम्—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)
ॐ तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशून्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान् ग्राम्याश्च ये॥ (ऋग्वेद १०.९०)
ॐ क्षुत् पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वा निर्णुद मे गृहात्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ गं गणपतये नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि। दो यज्ञोपवीत। वस्त्र एवं यज्ञोपवीत। देने के बाद आचमनम्। ॐ गं गणपतये नमः आचमनं समर्पयामि।

आभरणम्—ॐ हिरण्यरूपः स हिरण्य सन्दृगपान्नपात् सेदु हिरण्य वर्णाः।
हिरण्ययात् परियोनेर्निषद्या हिरण्य दा ददुन्यन्नमस्मै॥ (ऋग्वेद २.३५.१०) ॐ गं गणपतये नमः। आभरणं समर्पयामि।

गन्धम्— ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीं। ईश्वरीं सर्वभुतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)
ॐ तस्माद् यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत॥ (ऋग्वेद १०.९०)
ॐ गं गणपतये नमः गन्धं समर्पयामि।

अक्षताः—ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उतपुरन्न धृष्णवर्चत॥ (ऋग्वेद ८.६९.८)
ॐ गं गणपतये नमः अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि—ॐ आयने ते परायणे दूर्वारोहन्तुपुष्पिणीः। हृदाश्च पुण्डरीकाणि समुद्रस्य गृहा इमे॥ (ऋग्वेद १०.१४२.८)
ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावोहजज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजावयः॥ (ऋग्वेद १०.९०)
ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐगं गणपतये नमः पुष्पाणि समर्पयामि। इसके पश्चात् गणेश मण्डल के अङ्गपूजा

प्रथमावरण पूजनम्—(पुष्प चढ़ायें)—आग्नेय में—ॐ गां हृदयाय नमः। ईशान में—ॐ गीं शिरसे स्वाहा नमः। नैर्ऋत्य में—ॐ गूं शिखायै वषट् नमः। वायव्य में— ॐगैं कवचाय हुं नमः। अग्नेय में ॐ गौं नेत्रत्रयाय वौषट् नमः। ॐ गः अस्त्राय फट् नमः। गङ्गणपतये नमः। प्रथमावरणपूजां समर्पयामि।

सूत्र—पूज्य पूजकयोर्मध्ये या सा प्राची प्रकीर्तिता। प्रतिष्ठित देवता जिस भी दिशा को देख रहे हैं। शास्त्रों के अनुसार वही पूर्व दिशा मान्य है। इसी के आधार पर शेष दिशाओं का निर्धारण करना चाहिये। जहाँ देवता पूर्वाभिमुख है वहाँ दिशाये यथावत् रहेंगे।

द्वितीयावरण पूजा—ॐगं गणंजयाय नमः—(पूर्व में)। ॐगिं विघ्नेशाय नमः—(आग्नेय में)। ॐगुं एकदंष्ट्रय नमः—(दक्षिण में)। ॐगृं वीराय नमः—(नैर्ऋत्य में)। ॐगलृं गजवक्त्राय नमः—(पश्चिम में)। ॐगें लम्बोदराय नमः—(वायव्य में)। ॐगों वरदाय नमः—(उत्तर में)। ॐगं भक्तप्रियाय नमः—(ईशान में)। ॐगं गणपतये नमः। द्वितीयावरणपूजां समर्पयामि।

तृतीयावरण पूजा—इस पूजन के समय दिक्पाल अपनी-अपनी दिशा में ही रहते है। अतः वास्तव दिशाओं में ही इनका पूजन करना चाहिये।

तृतीयावरण पूजा—पूर्वे इन्द्रं—ॐलं इन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्णाय शची समेनाथ वज्रहस्ताय ऐरावतवाहनाय सशक्तिकाय साङ्गाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सर्वालंकार भूषिताय गणेश मूर्ति पार्षदाय नमः। आग्नेये अग्निं—ॐरं अग्नये तेजोधिपतये पिङ्गल वर्णाय स्वाहा समेताय शक्तिहस्ताय मेषवाहनाय सशक्तिकाय साङ्गाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सर्वालंकार भूषिताय गणेशमूर्ति पार्षदाय नमः। दक्षिणे यमं—ॐडं यमाय प्रेताधिपयते श्यामला समेताय, कृष्णवर्णाय, दण्डहस्ताय, महिषवाहनाय सशक्तिकाय साङ्गाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सर्वालंकार भूषिताय गणेशमूर्ति पाषर्दाय नमः। नैर्ऋत्ये, निर्ऋतिं—ॐक्षं निर्ऋतये रक्षोधिपतये रक्षा समेताय, रक्तवर्णाय खड्गहस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय, साङ्गाय, सायुधाय, सवाहनाय, सपरिवाराय सर्वलंकार भूषिताय गणेशमूर्मि पार्षदाय नमः।

पश्चिमें वरुणाम्—ॐवं वरुणाय जलाधिपतये सिद्धा समेताय, शुभ्रवर्णाय, पाशहस्ताय, मकरवाहनाय सशक्तिकाय साङ्गाय सायुधाय सवाहनाय

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सपरिवाराय सर्वालंकार भूषिताय गणेशमूर्ति पार्षदाय नमः। **वायव्ये वायुं**—ॐ यं वायवे प्राणाधिपतये, धूम्रवर्णाय अंजना समेताय, अङ्कुशहस्तायय वाहनाय सशक्तिकाय साङ्गाय, सायुधाय, सवाहनाय, सपरिवाराय, सर्वालंकार भूषिताय गणेशमूर्ति पार्षदाय नमः। **उत्तरे सोमं**—ॐ सोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्णाय गदाहस्ताय रोहिणी समेताय अश्ववाहनाय सशक्तिकाय, साङ्गाय, सायुधाय, सवाहनाय, सपरिवाराय, सर्वालंकार भूषिताय गणेशमूर्ति पार्षदाय नमः। **ईशाने ईश्वरं**—ॐ हं ईशानाय विद्याधिपतये पार्वती समेताय, स्फटिकवर्णाय, त्रिशूलहस्ताय, वृषभं वाहनाय सशक्तिकाय साङ्गाय सायुधाय स वाहनाय सपरिवाराय सर्वालंकार भुषिताय गणेशमूर्ति पार्षदाय नमः। **आकाशे ब्रह्माणं**—ॐ यं ब्रह्मणे लोकाधिपतये सरस्वतीसमेताय शुभ्रवर्णाय पाशहस्ताय हंस वाहनाय सशक्तिकाय साङ्गाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सर्वालंकार भूषिताय गणेशमूर्ति पार्षदाय नमः। **पाताले अनन्तं (विष्णुं)**—ॐ ऐं अनन्ताय नागाधिपतये क्षीरवर्णाय चक्रहस्ताय लक्ष्मी समेताय गरुडवाहनाय सशक्तिकाय साङ्गाय सायुधाय स वाहनाय सपरिवाराय सर्वालंकार भूषिताय गणेशमूर्ति पार्षदाय नमः। तृतीयावरण पूजां सर्मपयामि।

चतुर्थावरण पूजनम्—ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्तये नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अंकुशाय नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐ चक्राय नमः। ॐ पाषाय नमः। ईशाने ब्रह्माणं नैर्ऋत्ये अनन्तं पूजयेत्। अग्रे—कुम्मोदराय नमः। (कुम्मोदर गणेश जी के नैमलिय धारण करने के अधिकारी है। उत्तर ईशान के बीच इनका वास है।) *(गणेश जी के पूजन प्रधान होने पर यहाँ फूलों से या दूर्वा से सहस्त्रनामादि कर सकते हैं।)*

धूपम्— **वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढ्यः सुमनो हरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥** *(प्रयोगरत्नाकर)*

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरु पादा उच्येते॥ *(ऋग्वेद ४.१०.९०)*

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि संम्भव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ गं गणपतये नमः धूपं आघ्रापयामि।

दीपम्— **साज्यं चिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह॥** *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत। (ऋग्वेद ४.१०.९०)
ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐगं गणपतये नमः। दीपं दर्शयामि। धूपं दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि।

नैवैद्यम्—नैवेद्य रखने के स्थल पर मण्डल बनायें। **विश्वामित्र ऋषिः। देवी गायत्री छन्दः। सविता देवता। निवेदने विनियोगः।** एक बार गायत्री मन्त्र से नैवेद्य पर प्रोक्षण करें। **सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि,** इन मन्त्र से दिन में, एवं **ऋतं त्वासत्येन परिषिञ्चामि,** इन मन्त्र से रात्रि में परिषिञ्चन करें। **यथा सम्भव नैवेद्यं निरीक्षस्व,** कहकर प्रार्थना करें। **अमृतोपस्तरणमसि** मन्त्र से जल छोडें। बायें हाथ में ग्रास मुद्रा (जैसे बछड़े को घास खिलाते हैं) एवं दाहिने हाथ से निम्न मुद्राओं से देवता को नैवेद्य अर्पण करें। मन में कल्पना करें कि भगवान् को खिला रहे हैं।

प्राणाय स्वाहा—अङ्गुष्ठ एवं कनिष्ठिका मिलाकर, **अपानाय स्वाहा**—अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर **व्यानाय स्वाहा**—अङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर, **उदानाय स्वाहा**—अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर, **समानाय स्वाहा**—सभी अङ्गुलियों को मिलाकर

ताम्बूल के पश्चात् नीराजन (आरती)

ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्णवर्चत॥ (ऋग्वेद ८.६९.८)
ॐ ध्रुवाद्यौर्ध्रुवा पृथिवीध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्॥
ॐ ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ (ऋग्वेद १०.१७३.४-६)

ॐगं गणपतये नमः। मङ्गल नीराजनं दर्शयामि। कुर्यादारार्तिकं पञ्चवर्तिका मनुसंख्यया पादयोश्च चतुर्वारं द्विः कृत्वोनाभि मण्डले। एककृत्वो मुखे सप्त कृत्वः सर्वाङ्ग एव हि॥ नीराजन में पाँच बाती हो पादो को चार बार नाभि मण्डल में दो बार, मुख को एक बार एवं सम्पूर्ण शरीर को सात बार आरती करनी चाहिये।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मन्त्र पुष्पम्—ॐ गणानान्त्वा गणापतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन्नूतिभिस्सीदसादनम्॥ (ऋग्वेद २.२३.१)
ॐ निषुसीद गणापते गणेषुत्वामाहुर्विप्रतमं कवीनां।
न ऋते त्वत्क्रियते किंचनारे महामर्कं मघवन् चित्र मर्च॥ (ऋग्वेद १०.१४.६)
ॐ अभिख्यानो मघवन् नाधमानान् त्सखे बोधि वसुपते सखीनाम्।
रणकृधि रणकृत् सत्यशुष्माऽभक्ते चिदाभजा राये अस्मान्॥ (ऋग्वेद १०.१४.१०)
ॐ विद्माहित्वा तुवि कूर्मिं तुवि देष्णं तुवीमघम्। तुविमात्र मवोभिः॥ (ऋग्वेद ८.८१.२)
ॐ आतू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभं संगृभाय। महाहस्ती दक्षिणेन॥ (ऋग्वेद ८.८१.१)
ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात् तथा लोकाँ अकल्पयन्॥ (ऋग्वेद १०.६०)
ॐ आद्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ गं गणपतये नमः। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। (इन मन्त्रों से गणेश जी पर फूल चढायें।)

प्रदक्षिणा नमस्कार—यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे-पदे॥ (स्मृति संग्रह)
ॐ सप्तास्या सन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुं॥ (ऋग्वेद १०.६०)
ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्॥ (स्मृति संग्रह)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(इन मन्त्रों से प्रदक्षिणा करनी चाहिये।) ॐ गं गणपतये नमः। प्रदक्षिणानमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्यं—ॐ एकदन्तायं विद्महेवक्रतुण्डायं धीमहि। तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्॥ *(स्मृति संग्रह)*

इदमर्घ्यम्, इदमर्घ्यम्, इदमर्घ्यम्॥ (इस पूरी प्रक्रिया को तीन बार करना चाहिये, जल छोड़ना चाहिये।)

उत्तरपूजनम्—ॐ छत्रं समर्पयामि, चामरेणवीजयामि, गीतं गायामि, नाट्यं नटामि, आन्दोळिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्तराजोपचार देवोपचार पूजां समर्पयामि।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेह नाकं महिमानः सचन्तयत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ *(ऋग्वेद १०.९०)*
ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्य मन्वहम्। सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ गं गणपतये नमः सर्वोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना—ॐ वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्य समप्रभ। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥ *(याजुपपूर्व प्रयोग रत्नाकर)*
कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥ *(स्मृति संग्रह)*
ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥ *(भगवद्गीता)*

ॐ गं गणपतये नमः अनेन कृत पूजनेन महागणपतिः प्रीयताम्। (यहाँ पर गणेश पूजन संपन्न हुआ।)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रथम दिन द्वितीय प्रहर

पञ्चगव्य मण्डल (प्रथम विधान)

१-पूर्व में गोमूत्र

२-पश्चिम में दूध

३-दक्षिण में गोमय

४-उत्तर में दहि

५-आग्नेय में घी

६-वायव्य में कुशोदक

७-प्रधान पात्र मध्य में

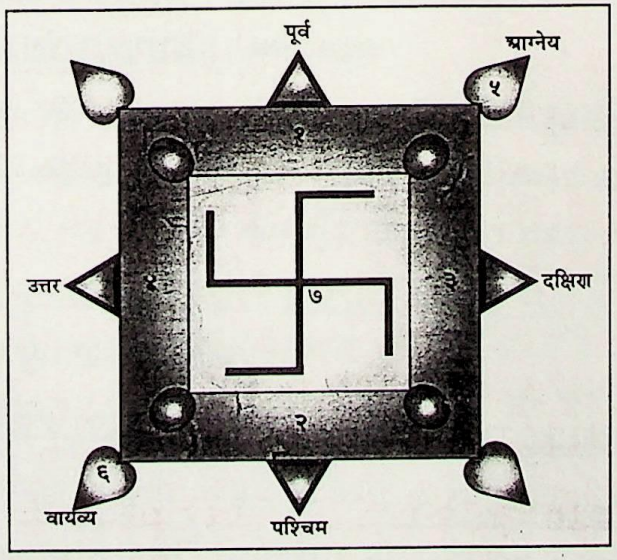

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पञ्चगव्य प्राशन—

मङ्गलार्थं शुभार्थं च आरम्भे पुण्यकर्मणाम्। निर्विघ्नेन फलावाप्त्यै पुण्याहं कथ्यते बुधैः॥ *(लक्षण संहिता)*

मङ्गल के लिए, शुभ के लिए, निर्विघ्नता से फल प्राप्ति के लिए, सभी पुण्य कार्यों के आरम्भ में पुण्याह करना आवश्यक है।

पञ्चगव्य विधनस्य लक्षणं कथ्यतेऽधुना। शैवे च वैष्णवे चैव साधारणामतः परम्॥ *(लक्षण संहिता)*

शैव एवं वैष्णव सभी संप्रदायों में समान पञ्चगव्य विधान बता रहे हैं।

स्वस्तिके व्रीहिसंपूर्णे न्यस्त्वा पात्रमधोमुखम्। मन्थानं चोपरि न्यस्य सकूर्चं फलपुष्पकम्॥ *(लक्षण संहिता)*

स्वस्तिक मण्डल में चालों को एक केले के पत्ते में रखें। पात्र को नीचे मूँह करके रखें। मथनी को उसके ऊपर रखें। कूर्च एवं फल पुष्प को भी उस उल्टे किये बर्तन पर रखें। स्वस्तिक मण्डल अलग पन्ने में लिखा है। चार दिशाओं में एवं आग्नेय वायव्य में छः कटोरे उल्टा कर रखें। करशुद्धिं पुराकृत्य प्राणायाम त्रयं चरेत्। पहले हाथें को धोकर उसके बाद तीन बार प्राणायाम करें। (प्राणायाम विधान गणेश पूजन में है।)

स्ववामाग्रे गुरुं पूज्य दक्षिणे गणनायकम्। *(लक्षण संहिता)*

(पहले हि गुरु गणेश पूजन हुआ है। अतः ॐ गुं गुरवे नमः कहकर गुरुमण्डल पर एवं ॐ गं गणपतये नमः कहकर गणेश जी पर फूल चढ़ायें।)

अस्त्रेण प्रोक्ष्य पात्रं तदुपरि विशदानक्षतान् क्षिप्य। तारेणास्मिन् मूलेन पुष्पं पृथगारिमनुना धूपदीपौ प्रदर्श्य॥
उत्तानीकृत्य पुष्पाक्षतमपि विधिना सोक्तमन्त्रैश्च गव्या।
नेकैकान् प्रोक्त संख्यान्यपि च करमनुक्षाल्य संपूजयेत् च॥ *(लक्षण संहिता)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पहले उल्टा किये सात बरतनों पर ॐ गः अस्त्राय फट् कहकर पानी छोड़े उसके ऊपर अक्षता डालें। फिर पुष्प धूप दीप का अर्पण करें। फिर एक-एक को उल्टा कर सही रूप में रखें। एवं उनका भी अक्षत पुष्प धूप दीप से पूजन करें।

गोमूत्रं स्थापयेत् पूर्वं गोमयं दक्षिणो स्मृतम्। क्षीरं तु पश्चिमे स्थाप्य उत्तरे दधि संस्मृतम्॥
आग्नेयान्तु घृतं प्रोक्तं वायव्यान्तु कुशोदकम्। *(स्मृति संग्रह)*

गोमूत्र के बरतन को पूर्व दिशा में रखें, गोमय बरतन को दक्षिण में रखें, दूध के बरतन को पश्चिम दिशा में, उत्तर में दहि के बरतन को आग्नेय दिशा में घी के बरतन एवं वायव्य दिशा में कुशोदक के बरतन को रखें।

पात्र में डालने योग्य पञ्चगव्यों का प्रमाण—

गोमूत्रमेकमानं स्यात् अर्धमानं तु गोमयम्। क्षीरं सप्तगुणं प्रोक्तं दधि त्रिगुणमुच्यते॥
सर्पिरेकगुणं तद्वत् कुशोदकमुदीरितम्। गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधिसर्पिः कुशोदकम्॥
द्रव्याणि क्रमशः प्रोक्त लक्षणानि च संग्रहेत्। रक्तगोमूत्रमुद्दिष्टं कृष्णागोर्गोमयं स्मृतम्।
पयः पल्लवयाम्राया: श्वेतगोर्दधि संग्रहेत्॥ कपिलाया घृतं ग्राह्यं कुशाग्राभ्यां कुशोदकम्॥ *(लक्षण संहिता)*

यहाँ पर प्रत्येक गव्य संग्रह के लिए निर्दिष्ट गाय बताये गये है सम्भव न होने पर देशी गायों से संग्रह कर सकते हैं।

रक्त वर्णीय गाय से संगृहीत गोमूत्र एक प्रमाण	—	५० ग्राम
काली गाय से संग्रहीत गोमय (गोबर) अर्घ प्रमाण	—	२५ ग्राम
पत्ते के साम्रवर्णीय गाय से संगृहीत दूध सात प्रमाण	—	३५० ग्राम

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सफेद गाय से संगृहीत दधि का तीन प्रमाण	—	१५० ग्राम
कपिला (सफेद रक्त वर्ण मिश्रित) गाय से संगृहीत घी एक प्रमाण	—	५० ग्राम
कुश के अग्रों के दो टुकड़े एक प्रमाण पानी मे	—	५० ग्राम
कुल	—	**६७५ ग्राम**

इस प्रमाण से वस्तुओं का सङ्ग्रह करें। एवं पहले पात्रों में इन द्रव्यों को भरें। प्रधान पात्र खाली रखें। एक-एक पात्र में देवताओं का आवाहन करें।

गोमूत्रे देवतादित्यः गोमये वायुरीरितः। सोमं तु क्षीरे ह्यावाह्य दध्नि शुक्रं समर्चयेत्॥
घृते त्वग्निं तु संस्थाप्य गंधर्वं तु कुशोदके। *(बोधायनीय प्रयोगमाला)*

गोमूत्र में सूर्य का आवाहन—ॐभूः गोमूत्रे आदित्याय नमः आदित्यं आवाहयामि। ॐभुवः आदित्याय नमः आदित्यं आवाहयामि। ॐस्वः आदित्याय नमः आदित्यं आवाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः आदित्याय नमः आदित्यं आवाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि।

गोमय मे वायु का आवाहन—ॐभूः वायवे नमः वायुं आवाहयामि। ॐभुवः वायवे नमः वायुं आवाहयामि। ॐस्वः वायवे नमः वायुं आवाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः वायवे नमः वायुं आवाहयामि। स्थापयामि पूजयामि।

गोदुग्ध में सोम का आवाहन—ॐभूः सोमाय नमः सोमं आवाहयामि। ॐभुवः सोमाय नमः सोमं आवाहयामि। ॐस्वः सोमाय नमः सोमं आवाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः सोमाय नमः सोममावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि।

दहि में शुक्र का आवाहन—ॐभूः शुक्राय नमः शुक्रमावाहयामि। ॐभुवः शुक्राय नमः शुकमावाहयामि। ॐस्वः शुक्राय नमः शुक्रमावाहयामि। ॐभूर्भुवस्वः शुक्राय नमः शुक्रमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

घी में अग्नि का आवाहन करें। ॐभूः अग्नये नमः अग्निमावाहयामि। ॐभुवः अग्नये नमः अग्निमावाहयामि। ॐस्वः अग्नये नमः अग्निमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः अग्नये नमः अग्निमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि।

कुशोदक में गन्धर्व का आवाहन करें। ॐभूः गन्धर्वाय नमः। गन्धर्वमावाहयामि। ॐभुवः गन्धर्वाय नमः। गन्धर्वमावाहयामि। ॐस्वः गन्धर्वाय नमः। गन्धर्वमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः गन्धर्वाय नमः। गन्धर्वमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। छ कटोरियों में देवताओं का आवाहन संपन्न हुआ।

अब संक्षेप में सब का पूजन करें। ॐआवाहित देवताभ्यो नमः। ॐलं पृथिव्यात्मना गन्धं कल्पयामि। ॐहं आकाशात्मना पुष्पं कल्पयामि। ॐयं वाय्वात्मना धूपं कल्पयामि। ॐरं अग्न्यात्मना दीपं कल्पयामि। ॐवं अंबात्मना नैवेद्यं कल्पयामि। ॐपं परमात्मना पञ्चोपचारपूजां समर्पयामि। इसके पश्चात् निम्न मन्त्रों से प्रधान पात्र में पूरण करें। भरें।

गोमूत्र पूरण मन्त्र—ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तुनः॥ *(ऋग्वेद १०.९.४)*

गोमय पूरण मन्त्र—ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

दूध भरने का मन्त्र—ॐ आप्यायस्व समेतुते विश्वतः सोमवृष्ण्यं। भवावाजस्य संगथे। *(ऋग्वेद १.९१.१६)*

दहि भरने का मन्त्र—ॐ दधि क्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखाकरत्प्रण आयूंषि तारिषत्॥ *(ऋग्वेद ४.३९.६)*

घी भरने का मन्त्र—ॐ शुक्रमसि ज्योतिरसि तेजोऽसि देवो वः सवितोत्पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण वसोः सुर्यस्य रश्मिभिः।

(यजुर्वेद १-काण्ड १-प्रश्न १० अनुवाक २०-मन्त्र)

वुशोदक भरने का मन्त्र—ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां॥ *(यजुर्वेद १-काण्ड १-प्रश्न ४ अनुवाक १०-मन्त्र)*

अब मन्त्रों से प्रधान पात्र में भरने के बाद निम्नमन्त्रों से मन्थन करें। (मथनी से)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां। ॐ मन्थता नरः कविमद्वयन्तं प्रचेतसममृतं सुप्रतीकं।
यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरस्तादग्निं नरो जनयता सुशेवम्॥ (ऋग्वेद ३.२९.५)

उपरोक्त मन्त्रों से मन्थन करना चाहिये। तदनन्तर प्रधान पात्र में आवाहन करें। इरावती वसिष्ठो विष्णुस्त्रिष्टुप्। पञ्चगव्यमध्ये विष्णवावाहने विनियोगः।

ॐ इरावती धेनुमती हि भूतं सूयवसिनी मनुषे दशस्या।
व्यस्तभ्ना रोदसी विष्णवे ते दाधर्थ पृथिवीमभितो मयूरखैः॥ (ऋग्वेद ७.९९.३)
ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूळहमस्यपांसुरे॥ (ऋग्वेद १.२२.१७)

ॐ विष्णवे नमः। ॐ भूः विष्णुमावाहयामि। ॐ भुवः विष्णुमावाहयामि। ॐ स्वः विष्णुमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णुमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

ॐ मानस्तोके तनये मान आयौ मानो गोषुमानो अश्वेषु रीरिषः।
वीरान्मानो रुद्रभामितो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥ (ऋग्वेद १.११४.८)

ॐ रुद्राय नमः। ॐ भूः रुद्रमावाहयामि। ॐ भुवः रुद्रमावाहयामि। ॐ स्वः रुद्रमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्रमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

ॐ शंवतीः पारयन्त्ये ते तं पृच्छन्ति वचो युजा। अभ्यारं तं यमाकेतुं य एवेदमिति ब्रवन्॥ (ऋग्वेद ७.३५ परिशिष्ट)

ॐ विश्वेदेवेभ्यो नमः। ॐ भूः विश्वेदेवमावाहयामि। ॐ भुवः विश्वेदेवमावाहयामि। ॐ स्वः विश्वेदेवमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वेदवमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। कलश छूकर आठ बार या एक सौ आठ बार गायत्री मन्त्र का जप करें। आवाहित देवताभ्यो नमः, षोडशोपचार पूजां समर्पयामि। (यहाँ पर संक्षेप में षोडशोपचार पूजन करना चाहिये—इसका विधान गणेश पूजन में है) इसके बाद निम्न मन्त्र से प्राशन (सेवन) करें।

ॐ यत्वगस्थि गतं पापं देहे तिष्ठति मामके।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्राशनं पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम्। *(स्मृति संग्रह)* यहाँ पर पञ्चगव्यप्राशन संपन्न हुआ।

इसके प्रमाण श्लोक—**शन्नो देवीति गोमूत्रं गन्धद्वारेति गोमयम्। आप्यायस्वेति चक्षीरंदधिक्राव्णो दधि क्रमात्॥**

आज्यं शुक्रमसीत्युक्तं देवस्यत्वा कुशोदकम्। पूरणो पञ्चगव्यानामिति मन्त्राः प्रकीर्तिताः॥

गाय त्र्यावाह्य पूजादि सर्वकर्म समाचरेत्। इरावती इदं विष्णुर्मानस्तोकेति शंवति॥ *(लक्षण संहिता)*

पुण्याह प्रकरणम्

मङ्गलार्थं शुभार्थं तदारम्भे पुण्यकर्मणाम्। निर्विघ्नेन फलावाप्त्यै पुण्याहः कथ्यते बुधैः॥ *(लक्षण संहिता)*

संपन्न किये जाने वाले कार्य मङ्गलमय हो, शुलफल देने वाला हो, एवं निर्विघ्नता से फल प्राप्ति हो इसलिए सभी कार्यों में पुण्याह वाचन अनिवार्य है।

अत्र हेमाद्रौ दानकाण्डे बह्वचपरिशिष्टत्वेनोक्तः

सकल साधारण शिष्टाचार प्राप्तश्च पुण्याह वाचन प्रयोगो लिख्यते। हेमाद्रि ग्रन्थ के दानकाण्ड में बहुत से ऋषियों के मत से कहा गया अधिक रूप से समाज में प्रचलित पुण्याहविधान बता रहे है। **कृतमङ्गलस्नानः** = पहले मङ्गल स्नान करें। **स्वलंकृतः** = मस्तक में सप्रदाय चिन्हों से अलंकृत हो। **संभृत मङ्गल संभारोः** = सभी मङ्गल द्रव्यों को एकत्र करें। **मङ्गलल रंगवल्ली मंडित शुद्ध स्थलेः** = मङ्गलमय रंगोली से सुशोभित पवित्र स्थल पर। **प्राङ्मुखो यजमानः** = यजमान पूर्व दिशा की ओर मूँह कर बैठें। **ऊर्णा वस्त्राद्याच्छादिते पीठे उपविश्यः** = ऊनी वस्त्रादि से आच्छादित पीठ पर बैठकर।

यदि गृहस्थ हो तो—पत्नीं स्वदक्षिणतः प्रांङ्मुखीमुपवेश्यत्न=दाहिनी ओर पूर्वाभिमुख पत्नी को बैठाकर। यह गृहस्थों के द्वारा करने वाले विवाहादि में—संस्कार्य च तथैवोपवेश्यः=उनका भी स्नानादि से शुद्धि हो।

तदनन्तर—बाह्मणैः = ब्राह्मणों के द्वारा ''यशस्करं बलवन्तं कनिकदज्जनुष'' आदि माङ्गल्य मन्त्रों से मङ्गल तिलक धारण करें। इसके बाद दो बार आचमन करें। एवं प्राणायाम करें। गणेश जीं की प्रार्थना करें। हाथ में पवित्र को धारण करें। स्थान देवता का पूजन करें। इसके पश्चात् गणेशपूजन करें। इतना हम पहले ही कर चुके हैं। पञ्चगव्य प्राशन (पुण्याहवाचन के बाद) (पञ्चगव्यपीना चाहिये)।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऋग्वेदीय पुण्याह मण्डल

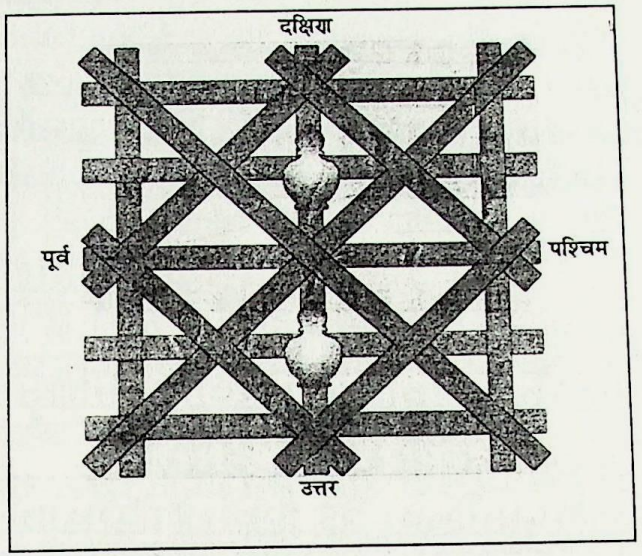

यहाँ से पुण्याहवाचन प्रारम्भ—कर्ता स्वपुरतः=पुण्याहवाचन करने वाले अपने आगे भूमि पर—

ॐ मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षतां। पिपृतां नो भरीमभिः॥ *(ऋग्वेद २२.१३)*

इस मन्त्र को पढकर भूमि को उत्तर एवं दक्षिण दिशा में स्पर्श करें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ ओषधयः संवदंते सोमेनसहराज्ञा। यस्मैकृणोति ब्राह्मणास्तं राजन्पारयामसि॥ (ऋग्वेद १०.९७.२२)

इस मन्त्र से पत्तल आदि बिछाकर दो चावल की राशी उत्तर एवं दक्षिण में बनाना याहिये।

ॐ आकलशेषु धावति पवित्रे परिषिच्यते। उक्थैर्यज्ञेषु वर्धते॥ (ऋग्वेद ९.१७.४)

इस मन्त्र को पढ़कर चावल पर दो कलशों को स्थापित करें।

ॐ इमं मे गङ्गेयमुने सरस्वतिशुतुद्रि स्तोमं सचतापरुष्णया।
असिक्न्या मरुद्वृधेवितस्तया जीकीये श्रणुह्यासुषोमया॥ (ऋग्वेद १०.९७.५)

इस मन्त्र से कलशों में तीर्थ जल भरें।

ॐ गंधद्वारांदुराधर्षांनित्यपुष्टांकरीषिणीं। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

इस मन्त्र से गंध (चन्दन) कलश में डालें।

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषः परि। ए वानो दूर्वे प्रतनुसहस्त्रेणाशतेन च॥ (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्)

इस मन्त्र से दूर्वा (दूब) कलश में डालें।

ॐ अश्वत्थेवोनिषदनं पर्णेवोवसतिष्कृता। गोभाज इत्किलासतयत्सनवथपूरुषं॥ (ऋग्वेद १०.९७.५)

इस मन्त्र से कलश पर अश्वत्थ, बरगद, आम, जामुन, कटहल के पत्तों को रखें। (पञ्च पल्लव)

ॐ याः फलिनी र्या अफला अपुष्पायाश्चपुष्पिणीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानोमुञ्चंत्वं हसः॥ (ऋग्वेद १०.९७.१५)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस मन्त्र से द्राक्षा आदि छोटे फलों को कलश में डालें।

ॐ सहिरत्नानिदाशुषे सुवातिसविताभगः। तं भागं चित्रमीमहे॥ *(ऋग्वेद ५.८२.३)*

इस मन्त्र से रत्नों को (पुष्प को) कलश में डालें।

ॐ हिरण्यरूपः सहिरण्यसंदृगपान्नपात्सेदुहिरण्यवर्णाः। हिरण्ययात्परियोनेर्निषद्याहिरण्यदाददत्यन्नमस्मै॥ *(ऋग्वेद २.३५.१०)*

इस मन्त्र से हिरण्य या सिक्का कलश में डाले।

ॐ युवासुवासाः परिवीत आगात्सउश्रेयान्भवति जायमानः। तं धीरासः कवय उन्नयंति स्वाध्यो३मनसा देवयंतः॥

(ऋग्वेद ३.८.४)

इस मंत्र से वस्त्र को कलश पर लपेटें या मौली से कलश पर बांधे।

कलशों को वस्त्र बाँधने का विधान-प्रमाण श्लोक—

कलशान् वेष्टयेत् सर्वान् सूत्रेनैकेन बुद्धिमान्। वर्धिनी सूत्रयुग्मेन शिवकुम्भान् त्रिसूत्रकैः॥ *(क्रियासार)*

सामान्यतः सभी कलशों को मौली से एक बार लपेटना चाहिये। वर्धिनी कलश जो कि अस्त्र कलश भी कहलाता है यह यज्ञ की रक्षा के लिए रखा जाता है इसे मौली से दो बार लपेटना चाहिये। शिवकुम्भ अर्थात प्रधान कलश को तीन बार मौली से लपेटना चाहिये।

ॐ पूर्णादर्विपरापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जंशतक्रतो॥ *(यजुर्वेद-१ काण्ड-८ प्रश्न-४ अनुवाक-२ मन्त्र)*

इस मन्त्र से चावल से भरे पात्र को कलश के मुख पर रखना चाहिये। उत्तरकलशे वरुणावाहने विनियोगः। उत्तर दिशा में जो कलश है उसमें नीचे लिखे

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मन्त्र से वरुण देवता का आवाहन करें।

ॐ तत्वांयामि ब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेळमानो वरुणेहबोध्युरुशंसमान आयुः प्रमोषीः॥ *(ऋग्वेद १.२४.११)*

कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि। (आवाहन करें)

ॐभूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। चन्दनं समर्पयामि। ॐभूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। पुष्पं समर्पयामि। ॐभूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। धूपं समर्पयामि। ॐभूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। दीपं समर्पयामि। ॐभूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। नैवेद्यं समर्पयामि। इन पञ्चोपचारों से पूजन करें।

ॐ तत्वांयामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेळमानो वरुणेहबोध्युरुशंसमान आयुः प्रमोषीः॥ *(ऋग्वेद १.२४.११)*

ॐभूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। अनेन पूजनेन वरुणाः प्रीयताम्। इसके पश्चात् कलश छूकर मन्त्र पाठ करें।

कलशस्य मुखेविष्णुः कंठेरुद्रः समाश्रितः। मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथयजुर्वेदः सामवेदोह्यथर्वणाः॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः॥
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा। आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षय कारकाः॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्च-देवपूजा प्रकरण)*

उत्तर कलश में अक्षत डालें। मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्य देवो भव। अतिथिदेवो भव। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमो नमः। इसके बाद घुटने टेककर बैठें, अंजलि में उत्तर दिशा के कलश को ग्रहण करें। ब्राह्मणों से आशीर्वाद की प्रार्थना करें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ब्राह्मण—सत्या आशिष सन्तु *(आपकी इच्छा पूर्ण हो)*। दीर्घानागानद्योगिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च तेनायुः प्रमाणेन पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु *(आपको दीर्घायुष्य प्राप्त हो) (यजमान ब्राह्मणो के हाथ में जल देते हैं)*। ब्राह्मणहस्ते शिवा आपः सन्तु। ब्राह्मण कहते हैं—सौमनस्यमस्तु *(आपका मन स्वस्थ हो)*। अक्षतं चारिष्टं चास्तु *(दिये गये अक्षतों से अरिष्ट निवारण हो)*। गंधाः पान्तु *(कहकर गन्ध देवे)*। सौमंगल्यं चास्तु *(आपको मङ्गल हो)*। अक्षताः पान्तु *(कहकर अक्षत देवे)*। आयुष्यमस्तु *(आपको दीर्घायुष्य हो)*। पुष्पाणि पान्तु *(कहकर फूल देवें)*। सौश्रियमस्तु *(उत्तम संपत् प्राप्त हो)*। तांबूलानि पान्तु *(कहकर ताम्बुल देवें)*। ऐश्वर्यमस्तु *(ऐश्वर्य प्राप्त हो)*। दक्षिणाः पान्तु *(कहकर दक्षिणा सिक्का दें)*। बहुदेयं चास्तु *(भगवान् आपको बहुत देने योग्य बनायें)*। दीर्घमायुः श्रेयः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु *(आपको दीर्घायुष्य, श्रेय, शान्ति, पुष्टि एवं सन्तोष प्राप्त हो)*।

श्रीर्यशोविद्याविनयोवित्तं बहुपुत्रं चायुष्यं चास्तु।

यं कृत्वा सर्ववेद यज्ञ क्रिया करणकर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोंकारमादिंकृत्वा ऋग्यजुः सामाशीर्वचन बह्वृषिमतं सं विज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिव्ये। (ब्राह्मण यजमान से कहते हैं जिसके करने से सभी वेदों का यज्ञ कार्यों का आरम्भ शुभ होता है ऐसे ॐकार से प्रारम्भ कर बहुत से ऋषियों के द्वारा अच्छी तरह से विचार कर ऋग्वेद यजुर्वेद एवं सामवेदोक्त आशीर्वाद मन्त्रों से (हम-ब्राह्मण) आपका पुण्याह करना चाहते हैं।

यजमान कहते हैं—विप्राः ओं वाच्यतां।

ॐ भद्रं कर्णेभिःशृणुयामदेवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमदेवहितं यदायुः। *(ऋग्वेद १.८९.८)*
ॐ द्रविणोदा द्रविणसस्तुरस्य द्रविणोदाः सनरस्य प्रयसत्।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्रविणोदावीरवंतीमिषंनोद्रविणोदारासतेदीर्घमायुः ॥ (ऋग्वेद १.९६.८)

ॐ सविताप्रश्चातात्सवितापुरस्तात्सवितोत्तरात्तात्सविता धरात्तात्।

सवितानः पवतु सर्वतातिं सवितानोरासतां दीर्घमायुः ॥ (ऋग्वेद १०.३६.१४)

ॐ नवो नव [illegible] पव[illegible] [illegible]गायमानोहंकेतुरु[illegible]मेत्यग्नम्।

भागं देवेभ्य विदंध[illegible]गाय [illegible]वंन्[illegible]स्मिन्[illegible] दीर्घमायुः ॥ (ऋग्वेद १०.८५.१९)

ॐ [illegible]च्चादिति दक्षिणावंतो अस्थुर्येअंश्वदाः सहतेसूर्येण।

हिरण्यदा अमृतत्वं भजंतेवासोदाः सोमप्रतिरन्त आयुः ॥ (ऋग्वेद ६.६५.६)

ॐ आपउंदंतु जीव सें दीर्घायुत्वाय वर्चसे।

यस्त्वाहृदा कीरिणामन्यमानो मंर्त्य मर्त्योजोहंवीमि ॥ (यजुर्वेद १ काण्ड-२ प्रश्न-१ अनुवाक-१ मन्त्र)

ॐ जातवेदोयशो अस्मासु धेहि प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमंश्याम्। यस्मैत्वं सुकृतें जातवेद उलोकमंग्ने कृणावंस्योनम्।
अश्विनं सपुत्रिणां वीरवंतं गोमंतंरयिंनंशते स्वस्ति। संत्वां सिञ्चामि यजुंषा प्रजामायुर्धनं च ॥

(यजुर्वेद १ काण्ड-६ प्रश्न-१ अनुवाक-१ मन्त्र)

व्रतनियम तपः स्वाध्याय क्रतुदमदान विशिष्टानां ब्राह्मणानां मत्तः समाधीयताम् (यह वाक्य यजमान कहते है कि ब्राह्मणों का मन स्थिर हो)। विप्राः-समाहित

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मनसः स्मः *(हम स्वस्थ मनवाले हैं)*। यजमानः-प्रसीदन्तु भवन्तः *(आप प्रसन्न हो)*। **विप्राः-** प्रसन्नाः स्मः *(हम प्रसन्न हैं)*। यहाँ से प्रत्येक पंक्ति के बाद उत्तर कलश के जल को बड़े बरतन छोड़े। शान्ति रस्तु *(शान्ति हो)*। पुष्टिरस्तु *(पुष्टि हो)*। तुष्टिरस्तु *(तुष्टि हो)*। वृद्धिरस्तु *(वृद्धि हो)*। अविघ्नमस्तु *(निर्विघ्न हो)*। आयुष्यमस्तु *(आयुष्य हो)*। आरोग्यमस्तु *(आरोग्य हो)*। शिवं कर्मास्तु *(कर्म में मङ्गल हो)*। कर्म समृद्धिरस्तु *(कर्म में समृद्धि हो)*। धर्म समृद्धिरस्तु *(धर्म में समृद्धि हो)*। वेदासमृद्धिरस्तु *(वेद समृद्ध हो)*। शास्त्रसमृद्धिरस्तु *(शास्त्रसमृद्धि हो)*। पुत्र समृद्धिरस्तु *(पुत्र समृद्धि हो)*। धनधान्य समृद्धिरस्तु *(धन एवं धान्य की समृद्धि हो)*। इष्ट संपदस्तु *(इच्छित ऐश्वर्य मिलें)*।

ऐशान्यां बहिर्देशे सर्वारिष्टनिरसन मस्तु *(बाहर देश में सभी प्रकार के अरिष्टों का निवारण हो)*। यत्पापं तत् प्रतिहतमस्तु *(जो भी पाप है वह दूर हो)*। यच्छ्रेयः तदस्तु *(जो श्रेयस्कर हो वह मिले)*। उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः संपद्यंताम् *(आगे-आगे करने वाले कार्य शुभ एवं सुन्दर हो)*। इष्टाः कामाः संपद्यंताम् *(इच्छित कामनाऐं पूर्ण हो)*। तिथिकरणमुहूर्त नक्षत्र संपदस्तु *(तिथि, करण, मुहूर्त एवं नक्षत्र संपत्ति हो—अर्थात् ये सब श्रेष्ठ हो)*।

तिथिकरणमुहूर्त नक्षत्र ग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम् *(तिथिकरण मुहूर्त एवं नक्षत्र ग्रहों के सहित एवं देवताओं के सहित प्रसन्न हों)*। दुर्गा पाञ्चाल्यौ प्रीयेताम् *(दुर्गा एवं पाञ्चाली प्रसन्न हो)*। अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयंताम् *(अग्नि के साथ विद्यमान विश्वेदेव प्रसन्न हो)*। इन्द्र पुरोगाः मरुद्गणाः प्रीयंताम् *(इन्द्रपुरोगाः मरुद्गण प्रसन्न हो)*। ब्रह्मपुरोगाः सर्वेवेदाः प्रीयन्ताम् *(ब्रह्मा जी के साथ विद्यमान सभी वेद प्रसन्न हो)*।

विष्णुपुरोगाः सर्वेदेवाः प्रीयन्ताम् *(विष्णु के साथ विद्यमान सभी देवता प्रसन्न हो)*। माहेश्वरी पुरोगा उमामातरः प्रीयंताम् *(माहेश्वरी देवी के साथ विद्यमान उमामातर प्रसन्न हो)*। वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयंताम् *(वसिष्ठ जी के साथ विद्यमान ऋषिगण प्रसन्न हों)*। अरुंधतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयंताम् *(अरुन्धती के साथ विद्यमान एकपत्नी देवियाँ प्रसन्न हो)*। ऋषयश्छंदास्याचार्यावेदादेवायज्ञाश्च प्रीयंताम् *(ऋषिगण, छन्द, आचार्य, वेद, देवता एवं यज्ञ प्रसन्न हो)*। ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(ब्रह्मा एवं ब्राह्मण प्रसन्न हो)। श्री सरस्वत्यौ प्रीयेताम् *(लक्ष्मी एवं सरस्वती प्रसन्न हो)*। श्रद्धामेधे प्रीयेताम् *(श्रद्धा एवं मेधा देवी प्रसन्न हो)*। भगवती कात्यायनी प्रीयताम् *(भगवती कात्यायनी देवी प्रसन्न हो)*। भगवती माहेश्वरी प्रीयताम् *(भगवती माहेश्वरी प्रसन्न हो)*। भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम् **भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्** ।

भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम् *(भगवती ऐश्वर्यदेनेवाली प्रसन्न हो)*। भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम् *(भगवती वृद्धि करने वाली प्रसन्न हो)*। भगवंतौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम् *(भगवान् विघ्नेश एवं विनायक प्रसन्न हो)*। भगवान् स्वामी महासेनः सपत्नीकः स सुतः सपार्षदः सर्वस्थानगतः प्रीयताम् *(भगवान् कार्तिकेय सपरिवार प्रसन्न हो)*। हरि हर हिरण्यगर्भाः प्रीयंताम् *(विष्णु, शिव, ब्रह्मा जी प्रसन्न हो)*।

सर्वाः ग्रामदेवताः प्रीयताम् *(सभी ग्राम देवता प्रसन्न हो)*। सर्वाः कुलदेवताः प्रीयताम् *(सभी कुल देवता प्रसन्न हो)*। सर्वाः वास्तुदेवताः प्रीयताम् *(सभी वास्तु देवता प्रसन्न हो)*। बहिरपः *(नैऋत्य में बड़े बरतन से बाहर कलश जल छोडें)*। हताब्रह्मद्विषः *(ब्रह्मद्वेषियों का नाश हो)*। हताः परिपन्थिनः *(शत्रुओं का नाश हो)*। हता अस्य कर्मणोविघ्नकर्तारः *(इस कर्म के विघ्न करने वाले का नाश हो)*। शत्रवः पराभवं यातु *(शत्रु पराजित हो)*।

शाम्यन्तु घोराणि *(सभी घोर शान्त हो)*। शाम्यन्तु पापानि *(सभी पाप शान्त हो)*। शांम्यंत्वीयतः *(सभी उत्पातों की शान्ती हो)*। (अंतः) शुभानिवर्धताम् *(मङ्गल अभिवृद्धि हो)*। शिवा आपः सन्तु *(जल मङ्गलमय हो)*। शिवाऋतवः सन्तु *(ऋतुऐं मङ्गलमय हो)*। शिवा अग्नयः सन्तु *(अग्नियां मङ्गलमय हो)*। शिवा आहुतयः सन्तु *(आहुतियां मङ्गलमय हो)*। शिवा ओषधयः सन्तु *(औषधियां मङ्गलमय हो)*। शिवा वनस्पतयः सन्तु *(वनस्पतियां मङ्गलमय हो)*। शिवा अतिथयः सन्तु *(आगन्तुक मङ्गलमय हो)*।

अहोरात्रे शिवेस्याताम् *(रातदिन मङ्गल हो)*। निकामेनिकामेनः पर्जन्यो वर्षतु *(समय पर बारीश होवे)*। फलिन्यो न ओषधयः पच्यंताम्।

योगक्षेमो नः कल्पताम् *(हमारा योगक्षेम हो)*। शुक्राङ्गारकबुधबृहस्पतिशनैश्चर राहुकेतु सोम सहिताः आदित्य पुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयंताम् *(सूर्यादि शुक्र,*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुज, बुध, गुरु, शनि, राहु, केतु, चन्द्र ग्रह प्रसन्न हों)। भगवान्नारायणः प्रीयताम् *(भगवान् नारायण प्रसन्न हो)*। भगवान् पर्जन्यः प्रीयताम् *(भगवान पर्जन्य प्रसन्न हो)*। प्रीयतां भगवान् स्वामी महासेनः *(भगवान सुब्रह्मण्य प्रसन्न हो)*। पुण्याहकालान्वाचयिष्ये। वाच्यतां इति विप्राः ब्राह्मण कहते हैं—पढें।

ॐ उद्गातेवशकुनेसामगायसि ब्रह्मपुत्र इव सवनेषु शंससि।
वृषेव वाजीशिशुमतीरपीत्या सर्वतोनः शकुनेभद्रमावद विश्वतोनः शकुनेपुण्य मावद॥ *(ऋग्वेद २.४२.२)*
याज्यया याजतिप्रत्तिर्वैयाज्यापुण्यैवलक्ष्मीः पुण्यामेवतल्लक्ष्मीं संभावयति पुण्यां लक्ष्मीं संस्कुरुते॥
यत्पुण्यं नक्षत्रं। तद्वट्कुर्वी तोपव्युषं। यदावैसूर्य उदेति। अथ नक्षत्रंनैति। यावति तत्र सूर्यो गच्छेत्।
यत्र जघन्यं पश्येत्। तावतिकुर्वीतयत्कारीस्यात्। पुण्याह एव कुरुते। तानि वा एतानि यमनक्षत्राणि।
यान्येव देवनक्षत्राणि। तेषु कुर्वीत यत्कारीस्यात्। पुण्याह एव कुरुते। *(यजुर्वेद - ब्राह्मण)*

सर्वेषांमहाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्यकरिष्यमाणासोमाद्भुतशान्त्याख्याय कर्मणः पुण्याहं भवंतो ब्रुवंत्विति त्रिर्वदेत्।

(यजमान अपने सकुटुम्ब प्रणाम करते हुए आज संपन्न होने वाले कर्म के लिए पुण्याह की याचना करते हुए तीन बार कहते हैं। जिसका प्रत्युत्तर ब्राह्मण तीन बार देते हैं।)

१. ॐपुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐअस्तु पुण्याहम्। २. ॐपुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐअस्तु पुण्याहम्। ३. ॐपुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐअस्तु पुण्याहम्।

ॐ स्वस्तये वायुमुपब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः।
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्या सो भवन्तु नः॥ *(ऋग्वेद ५.५१.१२)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आदित्य उदयनीयः पथ्यैवेतः स्वस्त्याप्रयंतिपथ्यांस्वस्तिमभ्युद्यंतिस्वस्त्येवेतः प्रयंतिस्वस्त्युद्यंति स्वस्त्युद्यंति॥ *(स्मृति संग्रह)*

ॐ स्वस्तिन इन्द्रोवृद्धश्रवाःस्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।

स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिःस्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु। *(ऋग्वेद १.८८.६)*

ॐ अष्टौ देवा वसवः सोम्यासः॥ चतस्त्रोदेवीरजराश्रविष्ठाः।

ते यज्ञं पांतु रजसः परस्तात्। संवत्सरीणममृतं स्वस्ति। *(यजुर्वेद - ब्राह्मण)*

इसके बाद नीचे लिखा वाक्य का तीन बार यजमान कहें। एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायसोमाद्भुतशान्त्याख्याय कर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मण कहते हैं)—ॐआयुष्मते स्वत्ति। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बाद पुनः पहले जैसे उत्तर कलश से जल नीचे रखे बड़े पात्र में थोड़ा-थोड़ा कर गिराते हुए मंत्रपाठ करें।

ॐ ऋध्यामस्तोमं सनुयामवाजमानो मंत्रं सरथे होपयांतं।

यशोनपक्कं मधुगोष्वंतराभूतांशो अश्विनोः काममप्राः॥ *(ऋग्वेद १०.१०६.११)*

सर्वामृद्धिमृध्नुयामितितं वैतेजसैवपुरस्तात् पर्यभवच्छन्दोभिर्मध्यतोक्षर

रुपरिष्टाद्गायत्र्या सर्वतो द्वादशाहंपरिभूयसर्वामृद्धिमार्ध्नोत्सर्वामृद्धिमृध्नोति य एवं वेद॥

ऋध्यास्महव्यैर्नमसोपसद्यं॥ मित्रं देवं मित्रधेयंनो अस्तु॥ अनूराधान् हविषावर्धयंतः।

शतंजीवेमशरदः सवीराः। त्रीणि-त्रीणि वै देवानामृद्धानि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्रीणिच्छन्दांः सित्रीणि सवंनानि त्रयं इमे लोकाः। ऋध्यामेवतद्वीर्यं एषु लोकेषु प्रतितिष्ठति॥ (यजुर्वेद - ब्राह्मण)

इसके बाद पुनः नीचे लिखे वाक्यों को तीन बार यजमान कहें। एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। सर्वेषांमहाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्य करिष्यमाण सोमाद्भुतशान्त्याख्याय कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

(ब्राह्मण कहते हैं)—ॐऋध्यतां। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बाद मन्त्र पाठ करते हुए कलश से नीचे रखे पात्र में जल छोड़ना चाहिये।

ॐ श्रिये जातः श्रियऽआनिरियाय श्रियंवयोजरितृभ्योदधाति।
श्रियं वसाना अमृतत्वमायन् भवंतिसत्यासमिथामितद्रौ॥ (ऋग्वेद ६.६४.४)
श्रिय एवैनं तच्छ्रियामादधाति संततमृचा वषट् कृत्यं संतत्यैसंधीयते प्रजया पशुभिर्यएवं वेद।
यस्मिन्ब्रह्माभ्यजंय त्सर्वंमेतत्॥ अमुञ्चंलोकमिद्मूंचसर्वं॥ तन्नो नक्षंत्रमभिजिद्विजित्यं॥
श्रियं दधात्वहंणीयमानं॥ अहें बुध्नियं मंत्रंमे गोपाय। यमृषंयस्त्रयीविदाविदुः॥
ऋचः सामानि यजूँषि। सा हि श्रीरमृतांसतां। (यजुर्वेद - ब्राह्मण)

इसके बाद पुनः नीचे लिखे वाक्यों को तीन बार यजमान कहें एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायसोमाद्भुत शान्त्याख्याय कर्मणः श्रीरस्त्विति भवंतो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मण कहते हैं)—ॐअस्तु श्रीः। इन वाक्यों को तीन बार कहना चाहियें। वर्षशतं परि पूर्णमस्तु। गोत्राभिवृद्धिरस्तु। कर्माङ्ग देवता प्रीयताम्। (ब्राह्मण आशीर्वाद देते हैं—सौ साल पूर्ण हो। आप की वंश वृद्धि हो। कर्माङ्ग देवता आप पर प्रसन्न हो।)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ शुक्रेभिरंगैरजं आततन्वान् क्रतुं पुनानः कविभिः पवित्रैः।
शोचिर्वसानः पर्यायुरपां श्रियोमिमीते बृहतीरनूनाः॥ (ऋग्वेद ३.१.५)
तदप्येषः श्लोकोभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे॥ आविक्षितस्य कामप्रे विश्वेदेवाः सभासद इति॥

इसके पश्चात् उत्तरकलश को दाहिने हाथ में एवं दक्षिण दिशा में रखे कलश को बायें हाथ में लेकर दोनों की धाराओं को मिलाकर नीचे रखें पात्र में मन्त्रोच्चारण करते हुए छोड़ना चाहिये। वास्तोष्पत इति चतसृणां वसिष्टो वास्तोष्पति स्त्रिष्टुबंत्यागायत्री उदकसेचने विनियोगः।

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवो भवानः।
यत्त्वेमहे प्रतितन्नोजुषस्वशंनोभवद्विपदेशं चतुष्पदे॥ (ऋग्वेद ७.५४.१)
ॐ वास्तोष्पते प्रतरणोन एधिगय स्फानोगोभिरश्वेभिरिंदो।
अजरासस्ते सख्ये स्यामपितेवं पुत्रान् प्रतिनो जुषस्व॥ (ऋग्वेद ७.५४.२)
ॐ वास्तोष्पते शग्मयां संसदातेसक्षीमहिरण्वयागातुमत्या।
पाहिक्षेमउतयोगेवरंनोयूयंपातस्वस्तिभिः सदानः॥ (ऋग्वेद ७.५४.३)
ॐ अमीवहा वास्तोष्पते विश्वारूपाण्यावेशन्। सखासुशेवएधिनः॥ शिवं शिवं शिवं॥ (ऋग्वेद ७.५५.१)

इसके पश्चात् पात्र में स्थित जल से यजमान का अभिषिञ्चन नीचे लिखे मन्त्रों से करना चाहिये।

समुद्रज्येष्ठा इति चतसृणां वसिष्ठ आपस्त्रिष्टुप्। त्रायंतामिति तिसृणां विश्वमित्र जमदग्निवसिष्ठा आपोनुष्टुप्। इमा आप इति तिसृणामैतरेय आपोनुष्टुब्जगत्यनुष्टुभः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देवस्यत्वेत्यस्यैतरेयः सविताश्विनो पूषाच यजुः। समस्त व्याहृतीनां परमष्टी प्रजापतिः प्रजापतिर्बृहती। अभिषेके विनियोगः।

ॐ समुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य मध्यात्पुनानायन्त्यनिं विशमानाः।
इद्रोया वज्री वृषभोराददुता आपो देवीरिहमामवंतु॥ (ऋग्वेद ७.४९.१)
ॐ या आपो दिव्या उतवास्त्रवंति खनित्रिमा उतवायाः स्वंयंजाः।
समुद्रार्थायाः शुचयः पावकास्ता आपो देवीरिहमामवंतु॥
ॐ यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यं जनानाम्।
मधुश्चुतः शुचयो याः पावकास्ता आपो देवीरिहमामवंतु॥
ॐ यासां राजा वरुणो यासु सोमो विश्वेदेवायासूर्जं मदंति।
वैश्वानरोयास्वग्निः प्रविष्टस्ता आपो देवीरिहमामवंतु॥ (ऋग्वेद ७.४९.२-३-४)
ॐ त्रायंतामिहदेवास्त्रायंतां मरुतां गणाः। त्रायंतां विश्वाभूतानि यथायमरपा असत्॥
ॐ आप इद्वा उभेषजीरापो अमीवचातनीः। आपः सर्वस्य भेषजीस्तास्तेकृण्वन्तु भेषजम्॥
ॐ हस्ताभ्यां दशशाखाभ्यां जिह्वावाचः पुरोगवी। अनामयित्नुभ्यांत्वाताभ्यांत्वोपस्पृशामसि॥ (ऋग्वेद १०.१३७.५-६-७)
ॐ इमा आपः शिवतमा इमाः सर्वस्य भेषजीः। इमा राष्ट्रस्य वर्धनीरिमाराष्टभृतोमृताः॥
ॐ याभिरिन्द्रमभ्यषिंचत्प्रजापतिः सोमंराजानं वरुणं यमं मनुं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ताभिरद्भिरभिषिञ्चामि त्वामहं राज्ञां त्वमधि राजो भवेह ॥
ॐ महांतंत्वामहीनांसम्राजंचर्षणीनां देवीजनित्र जीजनद्भद्राजनित्र्यजीजनत् ॥
ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्यामग्नेस्तेजसा
सूर्यस्य वर्चसेन्द्रस्येन्द्रियेणाभिषिंचामि ॥ *(यजुर्वेद १ काण्ड-१ प्रश्न-४ अनुवाक-१० मन्त्र)*

बलायश्रियैयशसेन्नाद्याय। ॐभूर्भुवः स्वः अमृताभिषेकोअस्तु ॥ शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु। इसके बाद दो बार आचमन करें। पुण्याह वाचन पवित्रता के लिए किया जाता है। इसके चार विभाग कर सकते हैं (प्रयोग की दृष्टि से)—

१. मण्डलरचना—कलशस्थापन।

२. ब्राह्मणों को द्रव्यादि दान—खडे होकर उत्तर कलश से जल छोड़ते हुए मन्त्र पठन।

३. दोनों कलशों को दोनों हाथों मे लेकर उन्हे नीचे रखे पात्र में छोड़ते हुए करने वाले मन्त्र पठन।

४. पात्र में स्थित जल से यजमान, उपस्थित ब्राह्मण, यज्ञस्थल एवं सामग्रियों पर प्रोक्षण विशेषतः यजमान का अभिषिञ्चन।

इसके ४-५ प्रकार प्रचलित है। परन्तु उपरिलिखित विधान वैदिकों में अधिक मान्यता प्राप्त है।

पुण्याह वाचन प्रकरण समाप्त

पुण्याह बाचन में **कर्माङ्ग देवता प्रीयतां** कहना पड़ता है। विवाह में पुण्याह करने पर कर्माङ्ग देवता—**अग्निः प्रीयताम्**। औपासन होम में पुण्याह करने पर कर्माङ्ग देवता—**अग्नि सूर्य प्रजापतयः प्रीयंताम्**। स्थालीपाक होम में पुण्याह करने पर **कर्माङ्ग देवता अग्निः प्रीयताम्**। गर्भाधान संस्कार में

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुण्याहकरने पर **कर्माङ्ग देवता ब्रह्मा प्रीयताम्।** पुंसवन संस्कार में पुण्याह करने पर **कर्माङ्ग देवता प्रजापतिः प्रीयताम्।** सीमांत संस्कार में पुण्याह करने पर **कर्माङ्ग देवता धाता प्रीयताम्।** जातकर्म संस्कार में पुण्याह करने पर **कर्माङ्ग देवता मृत्युः प्रीयताम्।** नामकरण, निष्क्रमण (बच्चे को घर से पहली बार बाहर लाना) अन्न प्राशन संस्कार में पुण्याह करने पर **कर्माङ्ग देवता सविता प्रीयताम्।** चौल संस्कार में पुण्याह करने पर **कर्माङ्ग देवता केशिनः प्रीयताम्।** उपनयन संस्कार में पुण्याह करने पर **कर्माङ्ग देवता इन्द्रः श्रद्धा मेधाः प्रीयंताम्।** मेधाजनन (उपनयन के चौथे दिन) पुण्याह करने पर **कर्माङ्गदेवता सुश्रवाः प्रीयताम्।** पुनरुपनयन (प्रायश्चित) संस्कार में पुण्याह करने पर **कर्माङ्ग देवता अग्निः प्रीयताम्।** समावर्तन संस्कार में पुण्याह करने पर कर्माङ्ग देवता **इन्द्रः प्रीयताम्।** उपाकर्म, महानाम्नि, महाव्रत, उपनिषत्, गोदान इन कर्मो में पुण्याह करने पर कर्माङ्गदेवता—**सविता प्रीयताम्।** वास्तुहोम में दो बार पुण्याह होता हैं—पहले बार कर्माङ्ग देवता-**वास्तोष्पतिः प्रीयताम्।** दूसरी बार पुण्याह के कर्माङ्ग देवता-**प्रजापतिः प्रीयताम्।** आग्रयण (नूतन धान्य खाने से पूर्व करने वाला) संस्कार में कर्माङ्गदेवता-**आग्रयण देवताः प्रीयताम्।** सर्पबलि संस्कार में पुण्याह करने पर कर्माङ्गदेवता **सर्पाः प्रीयंताम्।** तडागादि (तालाब आदि निर्माण में) पुण्याह करने पर कर्माङ्ग देवता **(वरुणाः प्रीयताम्।)** ग्रह यज्ञ में पुण्याह करने पर कर्माङ्ग देवता **नवग्रहाः प्रीयंताम्।** कूष्मांड होम, चान्द्रयण एवं अग्न्याधान में पुण्याह करने पर कर्माङ्ग देवता-**अग्न्यादयः प्रीयंताम्।** (दक्षिणाग्नि आर्हपत्य आहवनीय तीन अग्नियों को अग्निमन्थन से अग्नि को प्रज्वलित कर विधि पूर्वक स्थापित करने का विधान अग्न्याधान कहलाता है। अग्निष्टोम (सोमयाग) में पुण्याह करने पर कर्माङ्ग देवता **अग्निः प्रीयताम्।** शेष सभी काम्य कर्म वाले यज्ञों में पुण्याह करने पर कर्माङ्ग देवता-**प्रजापतिः प्रीयताम्।**

उदाहरण—सर्वाद्भुत शान्ति में कर्माङ्गदेवता-**प्रजापतिः प्रीयताम्।**

पुण्याह प्रकरण समाप्त

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नान्दि श्राद्ध प्रकरण

देव कार्य करने से पूर्व पितृ कार्य करना आवश्यक है। अतः सभी यज्ञों में एवं सभी संस्कारों में जहाँ भी पुण्याह वाचन होता है वहाँ नान्दी श्राद्ध आवश्यक है।

कुर्याच्च कर्ता स्वयमेव तत्र नान्दीमुख श्राद्धमथोपचारैः।
उद्दिश्य देवान् पितृभिः समेतानावाह्य विप्रद्वितये यथोक्तान्॥
अर्चासनावाहन सार्घ्यतोय गन्धाक्षतैः पुष्पसपाद्यधूपैः।
दीपांजनाच्छादन नत्युपेतैः कराम्बुधारान्तरितैर्ययावत्॥ *(लक्षण संहिता)*

यजमान सभी कर्मों के प्रारम्भ में पितरों से युक्त देवताओं को लक्ष्य करके स्वयं नान्दी श्राद्ध करना चाहिये।

इसमें कनिष्ट दो ब्राह्मणों को आसन, आवाहन, अर्घ्य, आचमन, गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, अंजन, आच्छादन, नमस्कारों से पूजन करना चाहिये। बीच-बीच में जल देते हुए करना चाहिये।

पितृणां च गणाः सप्त त्रिषु लोकेषु विश्रुताः। अमूर्ताश्च समूर्ताश्च द्विधा भिन्नाः प्रकीर्तिताः॥
अग्नि ष्वात्ताबर्हिषदः आज्यपाः सोमपा इति। अमूर्तास्तेषु चत्वारः पितरश्च पितामहाः॥
प्रपितामहास्तथा प्रोक्ता समूर्तास्तेष्वितित्रयः। अमूर्ता देवकार्येषु समूर्ताः पितृकर्मसु॥
अग्निजिह्वा विप्रजिह्वा विश्वेदेवा द्विधा स्मृताः। नान्दीमुखे सत्यवसू काम्यके धुरिलोचनौ॥
क्रतुदक्षावुत्सवे तु पार्वणे च पुरूरवौ। सपिण्डीकरण श्राद्धे अष्टकायां तथैव च॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विश्वेदेवाः कालकामौ विप्रजिह्वा दशस्मृताः। अग्निजिह्वास्त्रयः प्रोक्ता वह्निस्थास्ते त्रयः स्मृताः॥ *(लक्षण संहिता)*

इत्येते तद्विशेषज्ञैर्विश्वेदेवास्त्रयोदश। तीनों लोको में सात पितृगण (समूह) प्रसिद्ध है। उनमे दो भाग है एक-अमूर्त (शरीर हीन) दूसरा-समूर्त (आकार युक्त)। उनमें—**अमूर्त के चार भाग है।** १. अग्निष्वात्ता (अग्नि में वास करने वाले), २. बर्हिषदः (कुश में रहने वाले), ३. आज्यपाः (घी पीने वाले), ४. सोमपाः (सोमपान करने वाले)

पिता-पितामह एवं प्रपितामह समूर्त वर्ग में आते हैं। देवकार्य में (यज्ञ यागादियों में) अमूर्त पितरों का पूजन करना चाहिये। पितृकार्यों में समूर्तो को (पिता-पितामह-प्रपितामह) पूजन करना चाहिये। विश्वेदेवों का दो भाग है। ये हमेशा पितरों के साथ रहते है। उनके रक्षक देवता है। इनके दो भाग है—

१. **अग्निजिह्वा**—अग्नि द्वारा हविस् स्वीकार करने वाले विश्वदेव। ये तीन हैं। ये अग्नि में वास करते हैं। इनहें **अग्निजिह्वा** नाम से ही जाना जाता है।

२. **विप्रजिह्वा**—ब्राह्मणों के मुख (जिह्वा) द्वारा आहर स्वीकार करने वाले विश्वदेव। इनके दस देवता हैं। नान्दीमुख में सत्य एवं वसु, काम्य श्राद्ध मे धूरि एवं लोचन, रथोत्सव आदियो में क्रतु एवं दक्ष, पार्वण (विशेष समय पर-मासिक आदि) पुरु एवं रव, सपिण्डीकरण श्राद्ध में काल एवं कामयेदस विश्वेदेवता विप्रजिह्व कहलाते हैं।

दत्वा तण्डुलपूर्णपात्रयुगले संकल्प्य भुक्तिं तयोः। ताम्बूलादि सुदक्षिणान्तिकमनुज्ञातः समुद्वाहयेत्॥ *(लक्षण संहिता)*

चावल से भरे दो पात्रों मे उनके भोजन का संकल्प करके ताम्बूल दक्षिणादि सभी देकर अन्त में विसर्जन करना चाहिये। (इनमें आहार के बदले कच्चा पदार्थ अर्थात् चालव, सब्जी, दाल आदि कच्चे पदार्थ ब्राह्मणों को संकल्प करके दिया जाता है।) **प्रयोग आगे है। यह मात्र विषय की जानकारी है। नान्दि श्राद्ध के दो प्रकार है—**

१. **स्वार्थ**—अपने लिए जब करते हैं। तब समूर्त पितरों का श्राद्ध अर्थात् पिता-पितामह-प्रपितामह माता-पितामहि-प्रपितामहि सपत्नीक मातामह-

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सपत्नीक मातृपितामह, सपत्नीक मातृप्रपितामह (इन नौ पितरों को पूजना चाहिये)।

२. विश्वकल्याणार्थ या परार्थ, उत्सवादि में अमूर्त पितरों का पूजन—

१. अग्निष्वात्ता, २. बर्हिषदः, ३. आज्यपाः, ४. सोमपा इन पितरों का पूजन करना चाहिये।

संकल्प—देशकालौ संकीर्त्य (देश काल को बताकर)करिष्यमाण मंगलकार्याङ्गभूतं मातृकापूजनं नान्दीश्राद्धं च करिष्ये। (मातृका पूजन एवं नान्दी श्राद्ध करना है)। पुण्याह कलश के दक्षिण में नान्दी दो मण्डल दो पात्रों में भोजन के लिए आवश्यक चावल, सब्जी, दाल, मेवा दक्षिणा रखें।

मातृका पूजनम्—पान सुपारी दक्षिणा के ऊपर कूर्च (कुश से बना) रखकर उसमें मातृका आवाहन करके उनमें मातृका पूजन करना चाहिये। नान्दी मण्डल के आगे मातृका पूजन करना चाहिये।

ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा। वाराही तथेन्द्राणी चामुण्डाः सप्तमातरः॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

सात मातृकायें।

गौरीपद्मा शचीमेधासावित्रीविजयाजया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः
धृतिः पुष्टिस्तथातुष्टिरात्मनः कुलदेवताः (गौर्यादि षोडश मातृकायें)॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

ब्राह्म्यादि सप्त मातृः गौर्यादि षोडश मातृः आवाहयामि। विनायकं आवाहयामि। दुर्गा आवाहयामि। क्षेत्रपालं आवाहयामि। गणपतिं आवाहयामि। मातृस्वसारं आवाहयामि। पितृस्वसारं आवाहयामि। एताभ्यो देवताभ्यो नमः। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। इनका षोडशोपचार पूजन करना याहिये। **उदाहरण**—आवाहित देवताभ्यो नमः। आसनं समर्पयामि आदि। षोडशोपचार पूजन संक्षेप में करें। (गणेश पूजन में है।)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अन्त में पुष्पांजलि मन्त्र— ॐ गौरीर्मिमाय सलिलानितक्षत्येकपदीद्विपदी सा चतुष्पदी।
अष्टापदी नवपदीबभूवुषी सहस्त्राक्षरापरमेव्योमन्॥ (ऋग्वेद १.१६४.४१)

ॐभूर्भुवः स्वः आवाहित देवताभ्यो नमः। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि।

तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने शं योरस्मभ्यमिदमस्तुशस्तं। अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठां नमोदिवे बृहते सादनाय॥ (ऋग्वेद ५.४७.७)

गृहावै प्रतिष्ठासूक्तंतत्प्रतिष्ठि ततमयावाचाशंस्तव्यं तस्माद्यद्यपिदूर इव पशूँल्लभते गृहानेवैनानाजिगमिषति गृहाहिपशूनां प्रतिष्ठाप्रतिष्ठा। इन मन्त्रों को पढकर पुष्पाक्षत चढ़ायें।

मातृका पूजन समाप्तम्

नान्दी श्राद्ध— ॐ आनो भद्राः क्रतवो यंतुविश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः।
देवानो यथासदमिद्धृधे असन्नप्रायुवोरक्षितारो दिवेदिवे॥ (ऋग्वेद १.८९.१)

ॐसत्यवसुसंज्ञकाविश्वेदेवाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। ॐभूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः।
इससे दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। सोमयाग, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्त, आधान इन कर्मो के अङ्गभूत नान्दी श्राद्ध में क्रतु दक्ष संज्ञक विश्वेदेव अन्य सभी संस्कारों में सत्यवसु संज्ञक विश्वेदेव कहना चाहिये। मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। ॐभूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ मे रखकर उस पर से जल छोडें। पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। ॐभूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोड़ें। सपत्नीक मातामह मातृपितामह मातृप्रपितामहाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। ॐभूर्भुवः स्वः इयं च

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

होकर उपस्थान करें।

ॐ उपास्मै गायतानरः पवमानायेन्दवे। अभिदेवाँऽइयक्षते॥
ॐ अभिते मधुनापयोथर्वाणो अशिश्रयुः। देवं देवाय देवयु॥
ॐ सनः पवस्व शंगवे शंजनायशमर्वते। शंराजन्नोषधीभ्यः॥
ॐ ब्रम्रवेनुस्वतवसे रुशायदिविस्पृशे। सोमाय गाथमर्चत॥ (ऋग्वेद ९.११.सम्पूर्ण सूक्त)
ॐ हस्तच्युतेभिरद्रिभिः सुतं सोमं पुनीतन। मधावाधावता मधु॥
ॐ अक्षन्नमीं मदन्तह्यवप्रिया अधूषत अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी॥ (ऋग्वेद १.८२.२)
ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्य न्यो विश्वाजातानि परिताबभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम्पतयोरयीणाम्॥ (ऋग्वेद १०.१२१.१०)

कृतस्य नान्दी श्राद्धस्य प्रतिष्ठाफलसिद्ध्यर्थं द्राक्षामलक निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये। कहकर हाथ में दक्षिणा लेकर उस पर जल छोड़कर नीचे रख दें।

प्रार्थना— मातापितामही चैव तथैव प्रपितामही। पितापितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः॥
मातामहस्तत्पिताच प्रमातामहकादयः। एतेभवन्तु सुप्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम्॥

कहकर जल छोड़े। अनेन नान्दीसमाराधनेन नान्दीमुखदेवताः प्रीयंतां। आचम्यमंगलाक्षतकुंकुमादि धारण करें।

विसर्जन—यज्ञ पर अन्तिम दिन में, उपनयन में व्रत समाप्ति पर विवाह में व्रतसमाप्ति पर प्रायः हर कर्म की समाप्ति पर विसर्जन निम्न मन्त्र से करना चाहिये।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोड़ें। सपत्नीक मातामह मातृपितामह मातृप्रपितामहाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। ॐभूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोड़ें।

सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, अक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोड़ें। मातृपितामही प्रपितामह्यः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। हाथ में गंध अक्षत पुष्प दूर्वा लेकर उस पर जल छोडें।

सपत्नीक माता मह मातृपितामह मातृपितामहाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचार कल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः।

हाथ में गंध अक्षतपुष्पदूर्वा लेकर उस पर जल छोडें।

ॐभूर्भुवः स्वः सत्यं त्वर्तेनपरिषिञ्चामि कहकर मण्डल पर रखें दोनो पात्रों को परिषेचनकर दक्षिण दिशा के पात्र को ''इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यः। उत्तर दिशा के पात्र को ''इदं नान्दीमुख पितृभ्यः। कहकर दान संकल्प कर—ब्राह्मणों को दे देवें।

सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिण पर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये।

मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः।

कहकर ताम्बूल दक्षिणा पर जल छोड़कर नीचे रखें। पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। सपत्नीक मातामह मातृपितामह मातृप्रपितामहाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बुलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणा पर जल छोडकर नीचे रखें। आगे लिखें मन्त्रों से खड़े

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ इळा॑मग्नेपुरु॒दसं॑स॒निंगोः श॑श्वत्त॒मं हव॑मानायसाध।

स्यान्नः॑ सू॒नुस्तन॑योवि॒जावाग्ने॒ सात॑ेसुम॒तिर्भू॑त्व॒स्मे॥ *(ऋग्वेद ३.१५.७)*

ॐ इळामुपह्वयतेपशवोवा इळापशूनेवतदुपह्वयते पशून्यजमानेदशातिदधाति। *(ऋग्वेद ब्राह्मण)*

यथाचारं हिरण्येन भाण्डवादनं। मन्त्र कहते हुए सिक्के से थाली के निचले भाग में शब्द करना चाहिये। (घण्टावादन के बदले)

ॐ उत्ति॑ष्ठब्रह्मणस्पते देवयन्त॑स्त्वेमहे। उप॒प्रय॑न्तु म॒रुतः॑ सु॒दान॑व इन्द्र॑प्रा॒शूर्भ॑वा॒सचा॑॥ *(ऋग्वेद १.४०.१)*

ॐ अ॒भ्या॒र॒मिदद्र॑यो॒ निषि॑क्तं॒ पुष्क॑रे॒ मधु॑। अ॒व॒तस्य॑ वि॒सर्जने॑। *(ऋग्वेद ८.७२.११)*

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादायमत्कृतां। इष्टकामार्थसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इन मन्त्रों से आवाहित देवताओं को उठाना चाहिये।

प्रमाण (विचार)—गौर्यादि मातृकापूजनं नान्दी श्राद्धाङ्गम्।

गौर्यादि मातृकापूजन नान्दी श्राद्ध के अङ्ग है, स्वतन्त्र नहीं। **यत्र नान्दी श्राद्धं न क्रियते तत्र मातृकापूजनमपि न कार्य** जहाँ नान्दी श्राद्धं नहीं करते हैं वहाँ मातृकापूजन भी न करें।

स्वार्थ नान्दी श्राद्ध करने वालों के कुछ नियम। ये यज्ञ में आवश्यक नहीं है अतः अर्थ नहीं लिखा है।

तत्रपूर्वं मातृपार्वणां ततः पितृपार्वणं ततः सपत्नीक मातामह. पार्वणं इति पार्वण त्रयात्मकं नान्दी श्राद्धं। मातृजीवने सपत्नमातृमरणेपि न मातृपार्वणं। एवं मातामहीजीवने मातामहीसपत्नीमरणेपि न मातामहादेः सपत्नीकत्वं। अत्र कर्तुजीवत्पितृकत्वे निर्णयः। जीवेन्तु यदि वर्गाद्यस्तंवर्गं तुपरित्यजेदितिन्यायेन

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जीवत्पितृकः स्वापत्संस्कारेषु मातृमातामहपार्वणायुतं नान्दी श्राद्धं कुर्यात्। मातारि जीवत्यां मातामहपार्वणमेकमेव। मातामहे जीवति मातृपार्वणमेकमेव॥

केवल मातृपार्वणे विश्वेदेवा न कार्याः। वर्गत्रयाद्योषु मातृपितृ मातामहेषु जीवस्तु नान्दी श्राद्ध लोप एव सुतसंस्कारेषूचितः।

द्वितीय विवाहाधानपुत्रेष्टि सोमयागादिषु स्व संस्कार कर्मसु येभ्य एव पितादद्यात्तेभ्योदद्यात्तुतस्सुतः। तथा च मृतमातृमातामह कोपिजीवत्पित्रृक स्वसंस्कारे पितुर्मातृपितामही प्रपितामह्यः पितुः पितृपितामहप्रपितामहाः पितुर्मातामहमातृपितामह मातृप्रपितामहा इत्येव पार्वण त्रयुमुद्दिश्यश्राद्धं कुर्यात्। न तु स्वमातृमाता मह पार्वणोद्देशः। पिररि पितामहे च जीवति स्वसंस्कारे पितामहस्य मातृपितामहीप्रपितामह्य इत्याद्युद्देशः। एवं प्रपितामहेपियोज्यं। पितुर्मात्रादि जीवने तत्पार्वण लोप एव। तथा च येभ्य एव पितादद्यादितिपक्षस्य वर्गाद्य जीवने तत्पार्वण लोप इति द्वारलोपपक्षस्य च स्वसंस्कार स्वापत्यसंस्कार भेदेन व्यवस्था सिद्धांतितेति ज्ञेयं। केचिन्तु पक्षद्वस्यस्यैच्छिकोविकल्पो न तु व्यवस्थित इत्याहुः। एवं मृत पितृकस्य जीवन्मातृमातामहस्य पितृपार्वणेनैव नांदी श्राद्धसिद्धिर्ज्ञेया। समावर्तनस्य माणवक कर्तृत्वेपितदंगभूत नान्दी श्राद्धे पितुस्तदभावे ज्येष्ठभ्रात्रा देरधिकार इति केचित्। तत्र पितापुत्र समावर्तने स्वपितृभ्यो नान्दी श्राद्धं कुर्यात्। पिताजीवत्पितृकश्चेत्सुत संस्कारत्वात् द्वारलोप पक्षेयुक्त इतिभाति।

माणवकपितुः प्रवासादिना असंनिधाने भ्रात्रादिर्माणवकस्य पितुर्मातृपितामहीप्रपितामह्य इत्याद्युच्चार्यश्राद्धंकुर्यात्। मृत पितृक माणवक समावर्तने पितृव्य भ्रात्रादिरस्य माणवकस्य मातृपितामहीत्याद्युच्चारयेत्। भ्रात्रादेरभावे स्वयमेव पितृभ्यो दद्यात्। एवं जीवत्पितृकोपिपितुरसन्निधाने भ्रात्रादेरभावे पितुः पितृभ्यः स्वयमेव नांदीमुखं कुर्यात्। उपनयनेनकर्माधिकारस्य जातत्वात्। एवं विवाहे पि द्रष्टव्यं।

मृत पितृकस्य चौलोपनयनादिकं पितृव्यमातुलादिः कुर्वन् अस्य संस्कार्यस्य पितृपितामहेत्याद्युच्चार्य श्राद्धं कुर्यात्। जीवतः पितुरसन्निधानेन कुर्वन् मातुलादिरस्य संस्कार्यस्य पितुर्जनकादीनुद्दिश्य कुर्यान्नतु संस्कार्यस्य मृतानपि मात्रादीनिति संक्षेपः।

नान्दी श्राद्ध प्रकरण समाप्त

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देवनान्दी—देवनान्दी में मातृका पूजन आवश्यक नहीं है। यज्ञ,(अतिरुद्र, सहस्रचण्डी) रथोत्सव आदि सार्वजनिक आचरणों में देवनान्दी ही करना चाहिये। **क्रतुदक्षावुत्सवे तु।** इस वाक्य से क्रतु एवं दक्ष नामक विश्वेदेव देवता हैं। देवनान्दी में पितृदेवता चार है। अमूर्त्य।

१. अग्निष्वात्ता, २. बर्हिषदः, ३. आज्यपाः, ४. सोमपाः

संकल्प—देशकालौ संकीर्त्य करिष्यमाण कर्माङ्ग भूतं नान्दीसमाराधनं करिष्ये। पहले दो मण्डल बनायें।

दत्वातण्डुलपूर्णपात्रयुगले संकल्प्य भुक्तिं तयोः।
ताम्बूलादि सुदक्षिणान्तिकमनुज्ञातः समुद्वाहयेत्॥ *(लक्षण संहिता)*

दो पात्रों में चावल, काजू किशमिश, फल, दाल, आदि दो मण्डलों पर रखें।

ॐ आनो॑ भ॒द्राः क्रत॑वो यंतु॒विश्वतोद॑ब्धसो॒ अप॑रीता स उ॒द्भिदः॑।
दे॒वानो॒ यथा॒सद॒मिद्वृधे असन्न प्रा॑युवोरक्षि॒तारो॑ दि॒वे दि॑वे। *(ऋग्वेद १.८९.१)*

ॐ क्रतुदक्षसंज्ञका विश्वेदेदेवाः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवस्वः इयं च वृद्धिः। इससे दुर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। अग्निष्वात्ताः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोड़ें।

बर्हिषदः पितृगणाः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। **आज्यपाः पितृगणाः**—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दुर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। **सोमपाः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पर से जल छोडें।

ॐ **क्रतुदक्ष संज्ञका** विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचार कल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें।ॐ **अग्निष्वात्ताः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदं आसनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। **बर्हिषदः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। **आज्यपाः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, अक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें।

सोमपाः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भूवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, अक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। ॐभूर्भुवः स्वः सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि कहकर मण्डल पर रखे दोनों पात्रों को परिषेचन कर दक्षिणादिशा के पात्र को ''इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यः'' उत्तरदिशा के पात्र को ''इदं नान्दीमुख पितृभ्यः'' कहकर दान संकल्प कर ब्राह्मणों को दे देवें।

क्रतुदक्षसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। **अग्निष्वात्ताः पितृगणाः** नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोडकर नीचे रखना चाहिये। **बर्हिषदः पितृगणाः** नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं दमनामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। **आज्यपाः पितृगणाः** नान्दीमुखा युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोडकर नीचे रखना चाहिये।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सोमपाः पितृगणाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणा पर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। आगे लिखे मन्त्रों से खड़े होकर उपस्थान करें।

ॐ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभिदेवाँऽइयक्षते। *(ऋग्वेद ९.११.१)*

ॐ अभिते मधुना पयोथर्वाणो अशिश्रयुः। देवं देवाय देवयु। *(ऋग्वेद ९.११.२)*

ॐ स नः पवस्व शंगवे शंजनायशमर्वते। शंराजन्नोषधीभ्यः। *(ऋग्वेद ९.११.३)*

ॐ बभ्रवेनु स्वतवसेरुणायं दिविस्पृशे। सोमाय गाथमर्चत॥ *(ऋग्वेद ९.११.४)*

ॐ हस्तच्युतेभिरद्रिभिः सुतं सोमं पुनीतन। मधावाधावता मधु॥ *(ऋग्वेद ९.११.५)*

ॐ अक्षन्नमीं मदन्तह्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती यो जान्विन्द्र ते हरी॥ *(ऋग्वेद १.८२.२)*

ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्यन्यो विश्वाजातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम्पतयोरयीणाम्॥

(ऋग्वेद १०.१२१.१०)

कृतस्य देवनान्दी समाराधनस्य प्रतिठाफलसिद्ध्यर्थं द्राक्षामलक निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे। कहकर हाथ में दक्षिणा लेकर उस पर जल छोडकर नीचे रख दें।

प्रार्थना—अग्निष्वात्वा बर्हिषदः आज्यपाः सोमपास्तथा। एते भवन्तु मे प्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम्॥ कहकर जल छोड़ें। **अनेन नान्दीसमाराधनेन नान्दीमुखदेवताः प्रीयंताम्। आचम्य**—मंगल तिलक रकें। **विसर्जन**—यज्ञ के अन्तिम दिन विसर्जन करें।

ॐ इळामग्नेपुरुदंसंसनिंगोः शश्वत्तमं हवमानायसाध। स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सातेसुमतिर्भूत्वस्मे॥ *(ऋग्वेद ३.१५.७)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ इळामुपह्वयते पशवो वा इळापशूनेवतदुपह्वयते। पशून्यजमानेदधाति दधाति ॥ *(ऋग्वेद ब्राह्मण)*

यथाचारं हिरण्येन भाण्डवादनं। मन्त्र कहते हुए सिक्के से थाली के निचले भाग में शब्द करना चाहिये। (घण्टा वादन के बदले)

१. सर्वाद्भुत शान्ति याग के लिए-१—आचाय, एक कुण्ड में १-ब्रह्मा, ईशान्य में १-कलश पूजन, होमाङ्ग पूजन दक्षिण में १-इतर पूजन, पश्चिम में १-तर्पण के लिए, परिचारक (कर्मचारी) १-एक ब्राह्मण-कुल ५ पंण्डित रहने पर

१५ पण्डित से संपन्न कर्म में—२-१५ पण्डित कर्म में (एक कुण्ड में), २-१५ पण्डित से संपन्न याग में—१ आचार्य, १ ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण पूजन, १-परिचारक ब्राह्मण, ९-ऋत्विज होम के लिए

३-५५ पण्डित से संपन्न याग में—१- आचार्य (५ कुण्ड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण के लिए, १-परिचारक ब्राह्मण, ४५-ऋत्विज होम के लिए, ४-अग्निमुख जानकार उप आचार्य (९×५)

४-१०० पण्डित से संपन्न या में—१-आचार्य (९ कुण्ड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण के लिए, ५-परिचारक ब्राह्मण, ८१-ऋत्विज होम के लिए, ९-अग्निमुख जानकार उपआचार्य (९×९), इसी अनुपात में अधिक संख्या में कर सकते हैं।

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उपप्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्रप्राशूर्भवा सचा ॥ *(ऋग्वेद १.४०.१)*

ॐ अभ्यारमिद द्रयो निषिक्तं पुष्करे मधु। अवतस्य विसर्जने ॥ *(ऋग्वेद ८.७२.११)*

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मत्कृताम्। इष्टकामार्थसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च ॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

(इन मन्त्रों से आवाहित देवताओं को उठाना चाहिये।)

देवनान्दी समाप्त

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

यथाज्ञानतः कर्म करिष्यामि।

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यथाज्ञानतः कर्म करिष्यामि।

ऋत्विग्वरराम्—ऋत्विजश्च यथा पूर्वं शक्रादीनां मखेऽभवन्। यूयं तथा मे भवत ऋत्विजोर्हथसत्तमाः॥ *(ब्रह्म कर्म समुच्चय)*

अमुक प्रवरान्वितः अमुक गोत्रः अमुक शर्माहं अमुक प्रवरान्वितं अमुक गोत्रोत्पन्नं अमुकवेदान्तर्गत अमुकशाखाध्यायिनं अमुकशर्माणं ऋत्विक्त्वेन त्वां वृणे। वृतोस्मि। यथा ज्ञानतः कर्म करिष्यामि। ऋत्विजो वृत्वा मधुपर्कमाहरेत्। ऋत्विग् वरण के पश्चात् मधुपर्क देना चाहिये।

मधुपर्क मे देय वस्तु (संग्रह)—पाद्यार्थं, अर्घ्यार्थं मंत्रवत्त्रिराचमनीयार्थं, शुद्ध अष्ट आचमनीयार्थं च जलपात्रचतुष्टयं, मधुपर्क कांस्यपात्रं गां, विष्टरं (आसन) च संपाद्य कर्ता आचम्य, प्राणानायम्य, देशकालौ स्मृत्वा, ऋत्विग्भ्यः मधुपर्क पूजां करिष्ये। विष्टरः पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं मधुपर्कः गौः इत्येतेषां त्रिः त्रि एकैकं वेदयन्ते। **विष्टरो विष्टरो विष्टरः**। प्रतिगृह्यतां। प्रतिगृण्हामि। (आसन, आसन, आसन) स्वीकार करता हूँ।

२५ दर्भाओं से बना आसन विष्टर कहलाता है। अहंवर्ष्मेत्यस्य वामदेवो विष्टरोनुष्टुप् विष्टरोपवेशने विनियोगः।

ॐ अहं वर्ष्म सजतानां विद्युतामिव सूर्यः। इदं तमधितिष्ठामियोमाकश्चाभिदासति॥ *(आश्वलायन गृह्य सूत्र)*

इति उदगग्रे विष्टर उपविशेत्। दर्भाग्र उत्तराभिमुख हो। उस पर बैठें। **पाद्यं पाद्यं पाद्यं**। प्रतिगृह्तां। प्रतिगृण्हामि। (पैरों के लिए जल) (स्वीकार करें)(स्वीकार करता हूँ।) दाहिने पाँव धोयें।

ॐ अस्मिन्राष्ट्रे श्रिय मावेंशयाम्यतों देवीः प्रतिंपश्याम्यापंः॥
दक्षिणां पादमवनें निजेऽस्मिन् राष्ट्र इन्द्रियं दंधामि॥ *(ऋग्वेद ऐतरेय ब्राह्मण)* **बायें पाँव धोये।**
ॐ सव्यं पादमवनें निजेऽस्मिन् राष्ट्र इंन्द्रियंवंर्धयामि॥ पूर्वमन्यमपंरमन्यं पादाववंनेनिजे॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऋत्विग्वरराम् (संकल्प लेकर)—देशकालौ संकीर्त्य करिष्यमाण कर्मणि आचार्यादि ऋत्विग्वरणं करिष्ये। ब्राह्मणं संपूज्य अमुक प्रवारान्वितं अमुक गोत्रोत्पन्नं अमुक वेदान्तर्गत अमुख शाखाध्यायिनं अमुक शर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् यज्ञे-

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः। तथा त्वं मम यागेस्मिन् आचार्यो भव सुव्रत॥ त्वां वृणो। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

विप्रः-वृतोस्मि (मैनें स्वीकार किया है) यथाज्ञानतः कर्म करिष्यामि (यथा ज्ञान कर्म करूँगा)

ब्रह्मवरण—यथा चतुर्मुखोब्रह्मा स्वर्गे लोके पितामहः। तथा त्वं मम यज्ञेस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

अमुकप्रवरान्वितः अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं अमुक प्रवरान्वितं अमुकगोत्रोत्पन्नं अमुक वेदान्तर्गत अमुक शाखाध्यायिनं अमुक शर्माणं ब्रह्माणं त्वां वृणो। वृतोस्मि। यथाज्ञानतः कर्म करिष्यामि॥

सदस्य वरराम्—त्वंनो गुरुः पितामातात्वं प्रभुस्त्वं परायणं। त्वत्प्रसादाच्चविप्रर्षे सर्वं मेस्यान्मनोगतम्॥
आपद्विमोक्षणार्थायकुरुयज्ञमतन्द्रितः। ऋत्विग्भिः सहितः शुद्धैः संयतैः सुसमाहितैः॥
आचार्येण च संयुक्तः कुरु कर्म यथोदितं॥ *(ब्रह्म कर्म समुच्चय)*

अमुकप्रवरान्वितः अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं अमुकप्रवरान्वितं अमुकगोत्रोत्पन्नं अमुकवेदान्तर्गत अमुकशाखाध्यायिनं अमुकशर्माणं सदस्यत्वेन त्वां वृणो। वृतोऽस्मि। यथाज्ञानतः कर्म करिष्यामि।

उपद्रष्टृवरण—भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मभृतांवर। विततेममयज्ञेस्मिन्नुपद्रष्टाभवद्विज॥ *(ब्रह्म कर्म समुच्चय)*

अमुकप्रवरान्वितः अमुक गोत्रः शर्माहं अमुकप्रवरान्वितं अमुकगोत्रत्पन्नं अमुकवेदान्तर्गत अमुकशाखाध्यायिनं अमुकशर्माणं उपद्रष्टृत्वेन त्वां वृणो। वृतोस्मि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ देवाराष्ट्रस्य गुप्त्या अभयस्यावरुद्धयै ॥ आपः पादावनेजनीर्द्विषंतं निर्दहन्तु मे ॥ *(ऋग्वेद ऐतरेय ब्राह्मण)*

इन मन्त्रों को पढ़कर यजमान जल डालकर हाथ से ऋत्विगों का चरण धोवें।

सकृदाचम्य—एक बार आचमन करके ॐऋग्वेदाय स्वाहा। ॐयजुर्वेदाय स्वाहा। ॐसामवेदाय स्वाहा। ॐअथर्व वेदाय नमः। (हाथ धोले) पुनः अर्घ्यमर्घ्यमर्घ्यं। प्रतिगृह्यतां। प्रतिगृह्णामि। (अर्घ्यजल स्वीकार करें) स्वीकार करता हूँ। अर्घ्य जल को ऋत्विक् अञ्जलि में स्वीकार करना चाहिये। आचमनीयं आचमनीयं आचमनीयं प्रतिगृह्यतां। प्रतिगृह्णामि। (आचमनीय जल पात्र देवें। स्वीकार करता हूँ।) आचमनीय पात्र को नीचे रखकर एक चमच जल **अमृतोपस्तरणमसि** कहकर पीना चाहिये। पुनः पहले वाले पात्र से एक बार आचमन करना चाहिये। **मधुपर्कमाषियमाणमीक्षयते** मधुपर्क लाते हुए देखना चाहिये। ॐमित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रतीक्षे॥ (मधुपर्क लाते हुए देखना चाहिये।) मधुपर्को मधुपर्को मधुपर्कः। प्रतिगृह्यतां। (मधुपर्क को स्वीकार करें।)

ॐ देवस्यत्वासवितुः प्रसवेंश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णो हस्ताभ्यां। प्रतिगृह्णामि। *(यजुर्वेद १ काण्ड-१ प्रश्न-४ अनुवाक-६ मन्त्र)*

(मधुपर्क स्वीकार करता हूँ कहकर दोनो हाथों की अञ्जली से मधुपर्क स्वीकार करना चाहिये।) मधुवाता इति तिसृणां राहूगणोगौतम ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। गायत्रीच्छन्दः। मधुपर्कावेक्षणे विनियोगः।

ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥
ॐ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता॥
ॐ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ *(ऋग्वेद १.९०.६-७-८)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इन मन्त्रों को कहते हुए मधुपर्क देखें। उस पात्र को बाये हाथ में रखकर अङ्गुली पर लगे मधुपर्क को "ॐवसवस्त्वा गायत्रेण छन्दसा भक्षयन्तु" कहकर उसे पूर्व की ओर उछालना चाहिये। ॐरुद्रास्त्वा त्रैष्टुभेन छन्दसा भक्षयन्तु कहकर उसे दक्षिण की ओर उछालना चाहिये। ॐआदित्यास्त्वा जागतेन छन्दसा भक्षयन्तु कहकर उसे पश्चिम दिशा में उछालना चाहिये। ॐविश्वेत्वादेवा आनुष्टुभेन छन्दसा भक्षयन्तु कहकर उत्तर दिशा में उछालना चाहिये। (एक बार लेकर चार दिशाओं में उछालाना चाहिये।) पुनः तीन बार उसी मुद्रा में लेकर (अंगुष्ठ अनामिका मिलाकर) तीन बार ॐभूतेभ्यस्त्वा, ॐभूतेभ्यस्त्वा, ॐभूतेभ्यस्त्वा कहकर तीन बार ऊपर उछालना चाहिये। मधुपर्क पात्रं भूमौ निधाय। (मधुपर्क पात्र को भूमि पर रखना चाहिये।) मधुपर्क के एक भाग को हाथ में लेवें।

ॐ विराजोदोहोसि कहकर उसका प्राशन करें। लौकिक उदक (सामान्य पात्र के जल से एक बार आचमन करें।) पुनः एक भाग मधुपर्क (एक चमच) को हाथ में लेवें। ॐविराजो दोहमशीय कहकर उसका प्राशन करें। लौकिक उदक सामान्य पात्र के जल से एक बार आचमन करें। पुनः एक भाग मधुपर्क को हाथ में लेवें। **ॐ मयि—दोहः पद्यायै विराजः** कहकर उसका प्राशन करें। लौकिक उदक (सामान्य पात्र के जल से) एक बार आचमन करें।

मधुपर्कशेषं उदगुपविष्टायब्राह्मणाय दद्यात् लोकवि द्विष्टत्वात् अप्सु वा क्षिपेत्।

मधुपर्कशेष को उत्तर में बैठे ब्राह्मण को देना चाहिये, नहीं तो उसे जल में छोड़ना चाहिये। मधुपर्क स्वादिष्ट होता है, फिर भी अल्प ही लेना चाहिये। ततः पूर्वनिवेदित आचमनीयैकदेशं–ॐअमृतापिधानमसि इति पीत्वा लौकिक उदकेन आचम्य आचमनीय जलशेषं सर्वं गृहीत्वा ॐसत्यं यशः श्री र्मयि श्रीः श्रयतां इति प्राश्य लौकिकेन उदकेन द्विराचमेत्।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इसमें मन्त्राचमन के लिए एक पात्र होता है, एवं लौकिक आचमन के लिए एक पात्र होता है। मन्त्राचमन तीन बार होता है। १. अमृतोपस्तरणमसि। २. अमृतापिधानमसि। ३. ॐसत्यं यशः श्री र्मयि श्रीः श्रयतां। इन तीन मन्त्रों से मन्त्राचमन होता है। आठ स्थल पर लौकिक आचमन इस प्रयोग में होता है। अनन्तर पहले बताये गये मन्त्राचमन के भाग—**ॐ अमृतापिधानमसि** कहकर पीना चाहिये, फिर लौकिक जल से आचमन करना चाहिये। फिर मन्त्राचमन पात्र में शेष सभी जल को हाथ में लेकर "ॐसत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां" कहकर पी लेना चाहिये। पुनः लौकिक जल से दो बार आचमन करना चाहिये।

ततः दात्रा गौः गौः गौः इति त्रिर्निवेदितां गां निष्क्रयं वा। इसके पश्चात् यजमान तीन बार गाय का नाम लेना चाहिये। गोमूल्य दान देना चाहिये। **उस समय कहने वाले मन्त्र**—मातारुद्राणामित्यस्य भार्गवो जमदग्निर्गोस्त्रिष्टुप्। गोरुत्सर्जनेविनियोगः।

ॐ मातारुद्राणांदुहितावसूनांस्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः।
प्रनुवोचंचिकितुषेजनायमागामनागामदितिं वधिष्ट॥ *(ऋग्वेद ८.१०१.१५)*

कहकर गो को छोड़ना चाहिये। (ॐउत्सृजत इति विसृजेत्) ततो दाता गंधमाल्यवस्त्र युगोपवीतयुगाभरणादिभिर्यथाविभवं ब्राह्मणान् पूजयेत्॥ अनन्तर दाता पं को देने वाले वस्त्रादि देकर गन्ध पुष्पों से ब्राह्मणों का पूजन करना चाहिये।

मधुपर्क बनाने का विधान—

मया संपूजितैरत्र दक्षिणाभिश्चतोषितैः। क्रियतां (इष्ट) यागो मे प्रार्थयामि प्रसीदत। *(अनुष्ठान पद्धति-क्रियासार)*

दधनिमध्वानीय सर्पिर्वा मध्वलाभे। दही में शहद मिलायें, शहद के अभाव में घी डालें दही न मिलने पर दूध एवं घी मिलाकर मधुपर्क तैयार करें। घी न

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मिलने पर दूध एवं गूड मिलाकर मधुपर्क तैयार करें। सभी दानों में यजमान पूर्वाभिमुख बैठें दान लेने वाले उत्तराभिमुख बैठें।

वरस्य या भवेच्छाखा तच्छाखागृह्यचोदितः। मधुपर्कः प्रदातव्यो ह्यन्यशाखेपि दातरि॥ *(अनुष्ठान पद्धति-क्रियासार)*

मधुपर्कः देते समय लेने वाले ब्राह्मण के शाखनुसार ही मन्त्रोच्चारण करें उस शाखा के मंत्र न आने पर यजमान की शाखा का मंत्रोच्चारण करें। तात्पर्य आचार्य को जिस शाखा के मन्त्र आते हैं उसी का प्रयोग कर सकते हैं।

पञ्चाशता भवेद्ब्रह्मातदर्धेन तु विष्टरः। ऊर्ध्वकेशो भवेद् ब्रह्मा लम्बकेशस्तु विष्टरः॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय टिप्पणी)*

दक्षिणावर्तको ब्रह्मा वामावर्तस्तु विष्टरः। ५० कुशाओं से ब्राह्मासन, २५ कुशाओं से विष्टर तैयार होता है। ब्रह्मासन में अग्रभाग ऊपर होना चाहिये, एवं प्रदक्षिणाकार में इसे लपेटना चाहिये। विष्टरासन में अग्रभाग नीचे होना चाहिये, एवं अप्रदक्षिणाकार में लपेटना चाहिये। ब्रह्मासन में अग्र दक्षिणाभिमुख होना चाहिये। विष्टरासन में अग्रभाग उत्तरभिमुख होना चाहिये। **यह आसन की प्राचीन परंपरा है।**

मधुपर्क प्रकरण समाप्त

प्रथम दिन द्वितीय प्रहर सम्पन्न

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्वितीय दिन प्रथम प्रहर

देह शुद्धि—येभ्यो मातेत्यस्य गयःप्लात ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। जगतीछन्दः। एवापित्रेत्यस्य वामदेव ऋषिः। बृहस्पतिर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। मनुष्य गन्ध निवारणे विनियोगः।

ॐ येभ्यो मातामधुमत् पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः।

उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनुमदास्वस्तये॥ *(ऋक्वेद १०.६३.३)*

ॐ एवापित्रे विश्वदेवाय वृष्णे यज्ञैर्विधेम नमसा हविर्भिः।

बृहस्पते सुप्रजा वीरवन्तो वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥ *(ऋक्वेद ४.५०.६)*

आचमन मन्त्र—ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।)

अथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुराणेभ्यो नमः। अग्नये नमः। वायवे नमः। प्राणाय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै नमः। अन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारणम्—पवित्रन्त इत्यनयोः आङ्गीरसः पवित्र ऋषिः। पवमानः सोमो देवता। जगतीछन्दः। पवित्राभिमंत्रणे, धारणे विनियोगः।

ॐ पवित्रन्ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः।
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुतेशृता सइद्वहन्तस्तत् समाशत॥ *(ऋग्वेद ९.८३.१)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदे शोचन्तो अस्य तन्तवो व्यस्थिरन्।
अवन्त्यस्य पवीतारं माशवो दिवस्पृष्ठमधितिष्ठन्ति चेतसा॥ *(ऋग्वेद ९.८३.२)*

ॐ भूर्भुवः स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये आसन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।)

प्राणायाम—प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्राणायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्वरोम्। *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

करन्यासः ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ तर्जनीभ्यां नमः। ॐ मध्यमाभ्यां नमः। ॐ अनामिकाभ्यां नमः। ॐ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यास-हृदयादिन्यास ॐ हृदयाय नमः। ॐ शिरसे स्वाहा। ॐ शिखायै वषट्। ॐ कवचाय हुम् ।ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अस्त्राय फट्।

ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः।

आसन शुद्धि—ॐ स्योना पृथिवि भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथः।' *(१५ मन्त्र-२२ सूक्त-प्रथम मण्डल)* इस मन्त्र से जल प्रोक्षण करने से भूमि शुद्ध होती है।

शिखाबन्धनम्—

ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणित भक्षणे। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुण्डे ह्यपराजिते॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

(इस मन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महासंकल्प—हेमाद्रि संकल्प

ॐस्वस्ति श्री समस्तजगदुत्पत्तिस्थितिलयकारणस्य रक्षा-शिक्षा-विचक्षणस्य प्रणतपारिजातस्य अशेषपराक्रमस्य श्रीमदनन्तवीर्यस्यादि नारायणस्य अचिन्त्यापरिमितिशक्त्या ध्रियमाणानां महाजलौघमध्ये परिभ्रमताम् अनेक कोटि ब्रह्माण्डानाम् एकतमे अव्यक्त- महादहंकार - पृथिव्यप्तेजो वाय्वाकाशाद्याव रणैरावृते अस्मिन् महति ब्रह्माण्डखण्डे आधारशक्तिश्रीमदादि- वाराह-दंष्ट्राग्र- विराजिते कूर्मानन्त- वासुकि-तक्षक-कुलिक - कर्कोटक -पद्म - महापद्म - शंखाद्यष्टमहानागैध्रियमाणे ऐरावत-पुण्डरीक-वामन-कुमुद-अञ्जन-पुष्पदन्त-सार्वभौम-सुप्रतीकाष्टदिग्गजोपरिप्रतिष्ठितानाम् अतल-वितल-सुतल-तलातल-रसातल-महातल-पाताल-लोकनामुपरिभागे भुवर्लोक-स्वर्लोक-महर्लोक -जनोलोक - तपोलोक - सत्यलोकाख्य षड्लोकानामधोभागे भूर्लोके चक्रवाल शैल - महावलयनागमध्यवर्तिनो महाकाल महाफणि राजशेषस्य सहस्रफणामणिमण्डल मण्डिते दिग्दन्तिशुण्डादण्डोद्दण्डितेअमरावत्यशोकवती भोगवती - सिद्धवती- गान्धर्ववती - काशी- काञ्ची - अवन्ती अलकावती यशोवतीतिपुण्यपुरीप्रतिष्ठिते लोकालोकाचलवलयिते लवणेक्षु- सुरा सर्पि - दधिक्षीरोदकार्णवपरिवृते जम्बू-प्लक्ष-कुश-क्रौञ्च - शाक शाल्मलिपुष्कराख्यसप्तद्वीपयुते इन्द्र-कांस्य-ताम्र-गभस्ति-नाग-सौम्य-गन्धर्व-चारणभारतेतिनव-खण्डमण्डिते सुवर्णगिरिकार्णिकोपेत महासरोरुहाकार पञ्चाशत् कोटि योजनविस्तीर्णभूमण्डले अयोध्या मथुरा-माया-काशी-काञ्ची-अवन्तिकापुरी द्वारा वतीतिमोक्षदायिकसप्तपुरीप्रतिष्ठिते सुमेरु निषधत्रिकूट-रजतकूटाम्रकूट-चित्रकूट-हिमवद्विन्ध्याचलानां महापर्वत प्रतिष्ठिते हरिवर्ष किंपुरुषयोश्च दक्षिणे नवसहस्रयोजन विस्तीर्णे मलयाचल-सह्याचल विन्ध्याचलानामुत्तरे स्वर्णप्रस्थ-चण्डप्रस्थ-चान्द्र-सूक्तावान्तक-रमणाक महारमणाक-पाञ्चजन्य-सिंहल लंङ्केति-नवखण्डमण्डिते गंगा-भागीरथी-गोदावरी- क्षिप्रा-यमुना- सरस्वती-नर्मदा-ताप्ती-चन्द्रभागा-कावेरी-पयोष्णी-कृष्णावेणी-भीमरथी-तुंगभद्रा-ताम्रपर्णी- विशालाक्षी- चर्मण्वती-वेत्रवती- कौशिकी-गण्डकी- विश्वामित्रीसरयूकरतोया- ब्रह्मानन्दामहीत्यनेक पुण्यनदी विराजिते भारतवर्षे भरतखण्डे जम्बूद्वीपे कूर्मभूमौ साम्बवती कुरुक्षेत्रादि समभूमौ आर्यावर्तान्तरगते ब्रह्मावर्तैकदेशे गंगायमुनयोर्मध्यभागे योजनव्यापिविस्तीर्णेक्षेत्रे,ज्ञानयुगप्रवर्तकानां महर्षि

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महेशयोगिवर्याणां परमाराध्यगुरुदेवै : अनन्तश्रीविभूषितैः ज्योतिष्पीठाधीश्वरैः जगद्गुरु श्री मच्छङ्कराचार्य ब्रह्मानन्दसरस्वतीमहाभागैः सम्पादितशतमखकोटि होम महायज्ञपावितायां भूमौ..... सकलजगत्स्रष्टुः परार्धद्वय जीविनो ब्रह्मणः द्वितीये परार्धे एकपञ्चाशत्तमे वर्षे प्रथम मासे प्रथम पक्षे प्रथम दिवसे ब्रह्मस्तृतीये याने तृतीये मुहूर्ते रथन्तरादिद्वात्रिंशत्कल्पानांमध्ये अष्टमे श्वेतवाराहकल्पे स्वायंभुवादि मन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृत त्रेताद्वापरकलिसंज्ञकानां चतुर्णां युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमपादे प्रभवादि षष्ठि सम्वत्सराणां मध्ये..... .....संवत्सरे.....अयने.....ऋतौ .....मासे .....पक्षे ..... तिथौ ..... वासरे ..... नक्षत्रे ..... योगे ..... करणे .....राशि स्थिते श्रीसूर्ये ..... राशि स्थिते श्रीचन्द्रे..... राशि स्थिते श्रीकुजे..... राशि स्थिते श्रीबुधे ..... राशि स्थिते श्रीदेवगुरौ ..... राशि स्थिते श्रीशुक्रे..... राशि स्थिते श्रीशनौ..... राशि स्थिते श्रीराहौ..... राशि स्थिते श्रीकेतौ.....एवं गुण विशेषण विशिष्टायां पुण्यायाम् महापुण्य शुभ तिथौ.....

गुरू प्रार्थना —

नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः॥ *(श्रृङ्गेरी मठीय आचार्य प्रार्थनम्)*

श्री गुरु परमगुरु परमेष्ठी गुरु सद्गुरु पादुकाभ्यो नमो नमः। हम लोग ब्रह्मानन्दं गुरु तं नमानि। गुरु परम्परा को भी बोल सकते हैं। कर सकते हैं। हरौ रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन॥ ईश्वर के रुष्ट होने पर गुरुजी रक्षा करते हैं एवं गुरुजी के कुपित होने पर कोई भी रक्षक नहीं है।

भूतोच्चाटन मन्त्र—

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुविसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारः ते गच्छन्तु शिवाज्ञया॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*

ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्। सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्रमहाकाय कल्पान्ते दहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इति भैरवं नमस्कृत्य। (इन मन्त्रों से भूतोच्चाटन कर भैरव जी से यज्ञ रक्षा की प्रार्थना करते हैं।)

गणपति प्रार्थना—गणानान्त्वा इति मन्त्रस्य गृत्समदऋषिः। गणपतिर्देवता। जगती छन्दः। गणपति प्रार्थने विनियोगः।

ॐ ग॒णानां॑त्वा ग॒णप॑तिं हवामहे क॒विं क॑वी॒नामु॑प॒मश्र॑वस्तमं।
ज्ये॒ष्ठराजं॒ ब्रह्म॑णां ब्रह्मणस्पत॒ आनः॑ शृ॒ण्वन्नू॒तिभिः॑ सीद॒सादन॑म्॥ *(ऋग्वेद २.२३.१)*

(इन मन्त्रों से गणपति प्रार्थना कर पुष्पाक्षत छोड़ना चाहिये।)

त्रिवाक्येण पुण्याह वाचन—

ॐ भ॒द्रं कर्णे॑भिः शृणुयामदेवा भ॒द्रं प॑श्येमा॒क्षभि॑र्यजत्राः।
स्थि॒रैरंगै॑स्तुष्टु॒वाँस॑स्त॒नूभि॒र्व्यशेमदे॒वहि॑तं॒ यदायुः॑। *(ऋग्वेद १.८९.८)*

ॐ द्र॒वि॒णो॒दा द्रवि॑णसस्तु॒रस्य॑ द्रविणो॒दाः सन॑रस्य॒ प्रय॑सत्।
द्र॒वि॒णो॒दावी॒रव॑ती॒मिषं॑नो द्रविणो॒दारा॑सतेदी॒र्घमायुः॑॥ *(ऋग्वेद १.९६.८)*

ॐ स॒वि॒ताप॒श्चाता॑त्सवि॒तापु॒रस्ता॑त्सवि॒तोत्त॒राता॑त्सवि॒ता ध॒राता॑त्।
स॒वि॒तानः॑ सुवतु स॒र्वता॑तिं सवि॒तानो॑रासतां दी॒र्घमायुः॑॥ *(ऋग्वेद १०.३६.१४)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ नवो नवो भवति जायमानोह्नांकेतुरुषसामेत्यग्रम्।
भागं देवेभ्यो विदधात्यायन्प्रचन्द्रमास्तिरते दीर्घमायुः॥ (ऋग्वेद १०.८५.१९)

ॐ उच्चादिवि दक्षिणावंतो अस्थुर्येअश्वदाः सहतेसूर्येण। हिरण्यदा अमृतत्वं भजंतेवासोदाः सोमप्रतिरन्त आयुः॥

(ऋग्वेद ६.६५.६)

ॐ आपउंदंतु जीव से दीर्घायुत्वाय वर्चसे। सस्त्वांहृदा कीरिणामन्यमानो मर्त्यं मर्त्योजोहवीमि॥

(यजुर्वेद १ काण्ड-२ प्रश्न-१ अनुवाक-१ मन्त्र)

ॐ जातवेदोयशो अस्मासु धेहि प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमश्याम्। यस्मैत्वं सुकृते जातवेद उलोकमग्ने कृणावस्योनम्।
अश्विनं सपुत्रिणं वीरवंतं गोमंतंरयिंनशते स्वस्ति। संत्वा सिञ्चामि यजुषा प्रजामायुर्धनं च॥

(यजुर्वेद १ काण्ड-६ प्रश्न-१ अनुवाक-१ मन्त्र)

ॐ उद्गातेवशकुनेसामगायसि ब्रह्मपुत्र इव सवनेषु शंससि।
वृषेव वाजीशिशुमतीरपीत्या सर्वतोनः शकुनेभद्रमावद विश्वतोनः शकुनेपुण्य मावद॥ (ऋग्वेद २.४२.२)
याज्ययायजतिप्रत्तिर्वैयाज्यापुण्यैवलक्ष्मीः पुण्यामेवतल्लक्ष्मीं संभावयति पुण्यां लक्ष्मीं संस्कुरुते॥
यत्पुण्यं नक्षत्रं। तद्वट्कुर्वी तोपव्युषं। यदावैसूर्य उदेति। अथ नक्षत्रंनैति। यावंति तत्र सूर्यो गच्छेत्।
यत्र जघन्यं पश्येत्। तावंतिकुर्वीतयत्कारीस्यात्। पुण्याह एव कुरुते। तानि वा एतानि यमनक्षत्राणि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यान्येव देवनक्षत्राणि। तेषु कुर्वीत यत्कारीस्यात्। पुण्याह एव कुरुते। *(यजुर्वेद - ब्राह्मण)*

सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्यकरिष्यमाणासोमाद्भुतशान्त्याख्यायकर्मणः पुण्याहं भवंतो ब्रुवंत्विति त्रिर्वदेत्।

(यजमान अपने सकुटुम्ब प्रणाम करते हुए आज संपन्न होने वाले कर्म के लिए पुण्याह की याचना करते हुए तीन बार कहते हैं। जिसका प्रत्युत्तर ब्राह्मण तीन बार देते हैं।)

१. ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुण्याहम्। २. ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुण्याहम्। ३. ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुण्याहम्

ॐ स्वस्तये वायुमुपब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः।
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्या सो भवन्तु नः॥ *(ऋग्वेद ५.५१.१२)*
आदित्य उदयनीयः पथ्यैवेतः स्वस्त्याप्रयंतिपथ्यांस्वस्तिमभ्युद्यंतिस्वस्त्येवेतः प्रयंतिस्वस्त्युद्यंति स्वस्त्युद्यंति॥ *(स्मृति संग्रह)*

ॐ स्वस्तिन इन्द्रोवृद्धश्रवाःस्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्ताक्ष्यो अरिष्टनेमिःस्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु। *(ऋग्वेद १.८८.६)*

ॐ अष्टौ देवा वसवः सोम्यासः॥ चतस्त्रोदेवीरम्रजराश्रविष्ठाः। ते यज्ञं पांतु रजसः परस्तात्। संवत्सरीणममृतं स्वस्ति। *(यजुर्वेद - ब्राह्मण)*

इसके बाद नीचे लिखा वाक्य का तीन बार यजमान कहें। एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्यकरिष्यमाण सोमाद्भुतशान्त्याख्याय कर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मण कहते हैं)—ॐ आयुष्मते स्वत्ति। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बाद पुनः पहले जैसे उत्तर कलश से जल नीचे रखे बड़े पात्र में थोड़ा-थोड़ा कर गिराते हुए मंत्रपाठ करें।

ॐ ऋध्यामस्तोमं सनुयामवाजमानो मंत्रं सरथे होपयांतं।
यशोनपक्कं मधुगोष्वंतराभूतांशो अश्विनोः काममप्राः॥ *(ऋग्वेद १०.१०६.११)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सर्वामृद्धिमृध्नुयामितितं वैतेजसैवपुरस्तात् पर्यभवच्छन्दोभिर्मध्यतोक्षरै
रुपरिष्टाद्गायत्र्या सर्वतो द्वादशाहंपरिभूयसर्वामृद्धिमार्ध्नोत्सर्वामृद्धिमृध्नोति य एवं वेद ॥
ऋध्यास्मंहव्यैर्नमंसोपसद्यं ॥ मित्रं देवं मित्रधेयंनो अस्तु ॥ अनूराधान् हविषांवर्धयंतः ।
शतंजीवेमशरदः सवीराः । त्रीणि-त्रीणि वै देवानामृद्धानि ।
त्रीणिच्छन्दाः सित्रीणि सवनानि त्रय इमे लोकाः । ऋध्यामेवतद्वीर्यं एषु लोकेषु प्रतितिष्ठति ॥ *(यजुर्वेद - ब्राह्मण)*

इसके बाद पुनः नीचे लिखे वाक्यों को तीन बार यजमान कहें। एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्य करिष्यमाणसोमाद्भुतशान्त्याख्याय अस्य कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

(ब्राह्मण कहते हैं)—ॐ ऋध्यतां। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बाद मन्त्र पाठ करते हुए उत्तरकलश से नीचे रखे पात्र में जल छोड़ना चाहिये।

ॐ श्रिये जातः श्रियऽआनिरियाय श्रियंवयोजरितृभ्योदधाति।
श्रियं वसाना अमृतत्वमायन् भवंतिसत्यासमिथामितद्रौ ॥ *(ऋग्वेद ६.६४.४)*
श्रिय एवैनं तच्छ्रियामादधाति संततमृचा वषट् कृत्यं संतत्यैसंधीयते प्रजया पशुभिर्यएवं वेद।
यस्मिन्ब्रह्माभ्यजय त्सर्वमेतत् ॥ अमुञ्चलोकमिद्मूचसर्वं ॥ तन्नो नक्षत्रमभिजिद्विजित्यं ॥
श्रियं दधात्वहणीयमानं ॥ अहे बुध्निय मंत्रमे गोपाय। यमृषयस्त्रयीविदाविदुः ॥
ऋचः सामानि यजूंषि। सा हि श्रीरमृतासतां। *(यजुर्वेद - ब्राह्मण)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इसके बाद पुनः नीचे लिखे वाक्यों को तीन बार यजमान कहें एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। सर्वेषां महाजनानामस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्य करिष्यमाण सोमाद्भुतशान्त्याख्याय कर्मणः श्रीरस्त्विति भवंतो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मण कहते हैं)—ॐ अस्तु श्रीः। इन वाक्यों को तीन बार कहना चाहियें। वर्षशतं परि पूर्णमस्तु। गोत्राभिवृद्धिरस्तु। कर्माङ्ग देवता प्रीयताम्। (ब्राह्मण आशीर्वाद देते हैं—सौ साल पूर्ण हो। आप की वंश वृद्धि हो। कर्माङ्ग देवता आप पर प्रसन्न हो।)

ॐ शुक्रेभिरंगैरजं आततन्वान् क्रतुं पुनानः कविभिः पवित्रैः।
शोचिर्वसानः पर्यायुरपां श्रियोमिमीते बृहतीरनूनाः॥ *(ऋग्वेद ३.१.५)*
तदप्येषः श्लोकोभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे॥ आविक्षितस्य कामप्रेः विश्वेदेवाः सभासद इति॥

पुण्याह वाचन फल समृद्धिरस्तु—पुण्याहे कर्माङ्ग देवताः प्रीयन्ताम्।

मातृका पूजनम्—पान सुपारी दक्षिणा के ऊपर कूर्च (कुश से बना) रखकर उसमें मातृका आवाहन करके उनमें मातृका पूजन करना चाहिये। नान्दी मण्डल के आगे मातृका पूजन करना चाहिये।

ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा। वाराही तथेन्द्राणी चामुण्डाः सप्तमातरः॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

सात मातृकायें।

गौरीपद्मा शचीमेधासावित्रीविजयाजया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धृतिः पुष्टिस्तथातुष्टिरात्मनः कुलदेवताः (गौर्यादि षोडश मातृकायें)। ब्राह्म्यादि सप्त मातृः गौर्यादि षोडश मातृः आवाहयामि। विनायकं आवाहयामि। दुर्गा आवाहयामि। क्षेत्रपालं आवाहयामि। गणपतिं आवाहयामि। मातृस्वसारं आवाहयामि। पितृस्वसारं आवाहयामि। एताभ्यो देवताभ्यो नमः। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। इनका षोडशोपचार पूजन करना याहिये। **उदाहरण**—आवाहित देवताभ्यो नमः। आसनं समर्पयामि आदि। षोडशोपचार पूजन संक्षेप में करें। (गणेश पूजन में है।)

अन्त में पुष्पांजलि मन्त्र—ॐ गौरीर्मिमाय सलिलानितक्षत्येकंपदीद्विपदी सा चतुष्पदी।
अष्टापदी नवपदीबभूवुषी सहस्राक्षरापरमेव्योमन्॥ *(ऋग्वेद १.१६४.४१)*

ॐभूर्भुवः स्वः आवाहित देवताभ्यो नमः। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि।

तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने शं योरस्मभ्यमिदमस्तुशस्तं। अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठां नमोदिवे बृहते सादनाय॥ *(ऋग्वेद ५.४७.७)*

गृहावै प्रतिष्ठासूक्तंतत्प्रतिष्ठि ततमयावाचाशंस्तव्यं तस्माद्यद्यपिदूर इव पशूँल्लभते गृहानेवैनानाजिगमिषति गृहाहिपशूनां प्रतिष्ठाप्रतिष्ठा। इन मन्त्रों को पढकर पुष्पाक्षत चढ़ायें।

मातृका पूजन समाप्तम्

आवाहित देवनान्दी पूजन—देवनान्दी में मातृका पूजन आवश्यक नहीं है। यज्ञ,(अतिरुद्र, सहस्रचण्डी) रथोत्सव आदि सार्वजनिक आचरणों में देवनान्दी ही करना चाहिये। **क्रतुदक्षावुत्सवे तु।** इस वाक्य से क्रतु एवं दक्ष नामक विश्वेदेव देवता हैं। देवनान्दी में पितृदेवता चार है। अमूर्त्य।

१. अग्निष्वात्ता, २. बर्हिषदः, ३. आज्यपाः, ४. सोमपाः

संकल्प—देशकालौ संकीर्त्य करिष्यमाण कर्माङ्ग भूतं नान्दीसमाराधनं करिष्ये। पहले दो मण्डल बनायें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दत्वातण्डुलपूर्णापात्रयुगले संकल्प्य भुक्तिं तयोः।
ताम्बूलादि सुदक्षिणान्तिकमनुज्ञातः समुद्वाहयेत्॥ *(लक्षण संहिता)*

दो पात्रों में चावल, काजू किशमिश, फल, दाल, आदि दो मण्डलों पर रखें।

ॐ आनो॑ भ॒द्राः क्रत॑वो यंतुवि॒श्वतोद॑ब्धसो॒ अप॑रीता स उ॒द्भिदः॑।
दे॒वानो॒ यथा॒सदु॒मिद्धृधे असन्न प्रा॑युवोरक्षि॒तारो॑ दि॒वे दि॑वे। *(ऋग्वेद १.८९.१)*

ॐ क्रतुदक्षसंज्ञका विश्वेदेवाः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवस्वः इयं च वृद्धिः। इससे दुर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। अग्निष्वात्ताः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोड़ें।

बर्हिषदः पितृगणाः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। **आज्यपाः पितृगणाः**—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दुर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। **सोमपाः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें।

ॐ क्रतुदक्ष संज्ञका विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचार कल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें।**ॐ अग्निष्वात्ताः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदं आसनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। **बर्हिषदः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। **आज्यपाः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, अक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें।

सोमपाः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, अक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। ॐ भूर्भुवः स्वः सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि कहकर मण्डल पर रखे दोनों पात्रों को परिषेचन कर दक्षिणादिशा के पात्र को ''इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यः'' उत्तरदिशा के पात्र को ''इदं नान्दीमुख पितृभ्यः'' कहकर दान संकल्प कर ब्राह्मणों को दे देवें।

क्रतुदक्षसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। **अग्निष्वात्ताः पितृगणाः** नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोडकर नीचे रखना चाहिये। **बर्हिषदः पितृगणाः** नान्दीमुखाः गुग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं दमनामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। **आज्यपाः पितृगणाः** नान्दीमुखा युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोडकर नीचे रखना चाहिये।

सोमपाः पितृगणाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणा पर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। आगे लिखे मन्त्रों से खड़े होकर उपस्थान करें।

ॐ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभिदेवाँऽइयक्षते। *(ऋग्वेद ९.११.१)*

ॐ अभिते मधुना पयोथर्वाणो अशिश्रयुः। देवं देवाय देवयु। *(ऋग्वेद ९.११.२)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ स नः पवस्व शंगवे शंजनायशमर्वते। शंराजन्नोषधीभ्यः। (ऋग्वेद ९.११.३)
ॐ बभ्रवेनु स्वतवसेरुणायं दिविस्पृशे। सोमाय गाथमर्चत॥ (ऋग्वेद ९.११.४)
ॐ हस्तच्युतेभिरद्रिभिः सुतं सोमं पुनीतन। मधावाधावता मधु॥ (ऋग्वेद ९.११.५)
ॐ अक्षन्नमीं मदन्तह्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती यो जान्विन्द्र ते हरी॥ (ऋग्वेद १.८२.२)
ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्यन्यो विश्वाजातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्यामपतयोरयीणाम्॥

(ऋग्वेद १०.१२१.१०)

कृतस्य देवनान्दी समाराधनस्य प्रतिठाफलसिद्ध्यर्थं द्राक्षामलक निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृये। कहकर हाथ में दक्षिणा लेकर उस पर जल छोडकर नीचे रख दें।

प्रार्थना—अग्निष्वात्वा बर्हिषदः आज्यपाः सोमपास्तथा। एते भवन्तु मे प्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम्॥ कहकर जल छोड़ें। **अनेन नान्दीसमाराधनेन नान्दीमुखदेवताः प्रीयंताम्। आचम्य**—मंगल तिलक रकें। **विसर्जन**—यज्ञ के अन्तिम दिन विसर्जन करें।

ॐ इळामग्नेपुरुदंसंसनिंगोः शश्वत्तमं हवमानायसाध। स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सातेसुमतिर्भूत्वस्मे॥ (ऋग्वेद ३.१५.७)
ॐ इळामुपह्वयते पशवो वा इळापशूनेवतदुपह्वयते। पशून्यजमानेदधाति दधाति॥ (ऋग्वेद ब्राह्मण)

यथाचारं हिरण्येन भाण्डवादनं। मन्त्र कहते हुए सिक्के से थाली के निचले भाग में शब्द करना चाहिये। (घण्टा वादन के बदले)

१. सर्वाद्भुत शान्ति याग के लिए-१—आचाय, एक कुण्ड में १-ब्रह्मा, ईशान्य में १-कलश पूजन, होमाङ्ग पूजन दक्षिण में १-इतर पूजन, पश्चिम में १-तर्पण के लिए, परिचारक (कर्मचारी) १-एक ब्राह्मण-कुल ५ पंण्डित रहने पर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१५ परिडत से संपन्न कर्म में—२-१५ परिडत कर्म में (एक कुराड में), २-१५ परिडत से संपन्न याग में—१ आचार्य, १ ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण पूजन, १-परिचारक ब्राह्मण, ९-ऋत्विज होम के लिए

३-५५ परिडत से संपन्न याग में—१- आचार्य (५ कुराड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण के लिए, १-परिचारक ब्राह्मण, ४५-ऋत्विज होम के लिए, ४-अग्निमुख जानकार उप आचार्य (९×५)

४-१०० परिडत से संपन्न या में—१-आचार्य (९ कुराड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण के लिए, ५-परिचारक ब्राह्मण, ८१-ऋत्विज होम के लिए, ९-अग्निमुख जानकार उपआचार्य (९×९), इसी अनुपात में अधिक संख्या में कर सकते हैं।

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उपप्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्रप्राशूर्भवा सचा॥ *(ऋग्वेद १.४०.१)*

ॐ अभ्यारमिद द्रयो निषिक्तं पुष्करे मधु। अवतस्य विसर्जने॥ *(ऋग्वेद ८.७२.११)*

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मत्कृताम्। इष्टकामार्थसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

(इन मन्त्रों से आवाहित देवताओं को उठाना चाहिये।)

देवनान्दी समाप्त

ब्राह्मण वन्दन— **ॐ नमो महद्भ्यो नमो अर्भकेभ्यो नमो युवभ्यो नम आशिनेभ्यः।**
यजाम देवान् यदि शक्नवाममाज्यायसः शंसमा वृक्षि देवाः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः॥ *(ऋग्वेद २७.१३)*

इस मन्त्र से ब्राह्मण पूजा करें। "करिष्यमाण कर्मणः आरम्भमुहूर्तः सुमुहुर्तो अस्तु इति अनुगृण्हन्तु"। यजमान पूछते है॥ "सुमुहूर्तमस्तु"।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सर्वतोभद्र मण्डल में—पञ्चगव्य प्रोक्षण—

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तुनः॥ *(ऋग्वेद १०.९.४)*

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ आप्यायस्व समेतुते विश्वतः सोमवृष्ण्यं। भवावाजस्य संगथे। *(ऋग्वेद १.९१.१६)*

ॐ दुधि क्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखाकरत्प्रण आयूंषि तारिषत्॥ *(ऋग्वेद ४.३९.६)*

ॐ शुक्रमसि ज्योतिरसि तेजोऽसि देवो वः सवितोत्पुना त्वच्छिद्रेण पवित्रेण वसोः सूर्यस्य रश्मिभिः।

(यजुर्वेद १-काण्ड १-प्रश्न १० अनुवाक २०-मन्त्र)

कुशोदक प्रोक्षण—ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां॥ *(यजुर्वेद १-काण्ड १-प्रश्न ४ अनुवाक १०-मन्त्र)*

ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां। ॐ मन्थता नरः कविमद्वयन्तं प्रचेतसममृतं सुप्रतीकं। यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरस्तादग्निं नरो जनयता सुशेवम्॥ *(ऋग्वेद ३.२९.५)*

जल कलश पूजन—कलश में पूर्ण जल भरकर रखना चाहिये। फिर उसमें गन्ध अक्षत पुष्प कलश के अन्दर डालना चाहिये एवं बाहर भी चारों ओर लगाना चाहिये। गायत्री मन्त्र से तीन बार कलश छूकर जप करना चाहिये।

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रूद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागरास्सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदस्सामवेदोह्यथर्वणः॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अङ्गैश्चसहितास्सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः। अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा॥
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः। सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः॥
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिंकुरु॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-देवपूजा प्रकरण)*
ॐ इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रिस्तोमं सचता परुष्णया।
असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयाऽऽर्जीकीये शृणुह्या सुषोमया॥
सितासिते सरिते यत्र संगथे तत्राप्लुतासो दिव मुत्पतन्ति।
येवै तन्वं२विसृजन्ति धीरास्ते जनासो अमृतत्वं भजन्ते॥ *(ऋग्वेद १०.७५.७)*
ॐ याः प्रवतो निवत उद्वत उदन्वतीं रनुदकाश्चयाः। ता अस्मभ्यं पयसा
पिन्वमानाः शिवा देवी रशिपदा भवन्तु सर्वा नद्यो अशिमिदा भवन्तु॥ *(ऋग्वेद ७.५०.४)*

(इन मन्त्रों को कलश छूकर पाठ करना चाहिये।)

सितमकरनिषण्णां शुभ्रवर्णां त्रिनेत्रां करधृत कलशोद्यत्पंकजाभीत्यभीष्टाम्।
विधि हरिहररूपां सेन्दुकोटीरचूडां भसितसितदुकूलां जाह्नवीं तां नमामि॥ *(स्मृति संग्रह)*

(इस मन्त्र से कलश में गङ्गाजी का ध्यान करना चाहिये।)

शङ्खपूजन—शंख को पहले धोकर, उसमें जल भरकर, शंख को गन्ध पुष्प अक्षत लगाकर पीठ के ऊपर रखना चाहिये। गायत्री मन्त्र से तीन बार शंख छूकर जप करना चाहिये।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ शङ्खं चन्द्रार्कदैवत्यं वारुणं चाधिदैवतम्। पृष्ठे प्रजापतिं विद्यात् अग्रे गङ्गा सरस्वती॥
त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया। शङ्खे तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्माच्छंखं प्रपूजयेत्॥
विलयं यान्ति पापानि हिमवत् भास्करोदये। दर्शनादेव शङ्खस्य किं पुनः स्पर्शने भवेत्॥
पाञ्चजन्यं महात्मानं पापघ्नं तु पवित्रकम्। शंखमध्यस्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपरि॥
अङ्गलग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यायुतं दहेत्॥ गर्भादेवारि नारीणां विशीर्यन्ते सहस्त्रधा।
तव नादेन पाताले पाञ्चजन्य नमोस्तुते॥ ॐ पाञ्चजन्याय विद्महे पद्मगर्भाय धीमहि। तन्नः शङ्खः प्रचोदयात्। *(देवपूजा)*

ॐ पवनायै नमः। ॐ पाञ्चजन्यायै नमः। ॐ पर्जन्यायै नमः। ॐ अम्बुराजायै नमः। ॐ कम्बुराजायै नमः। ॐ पषबान्धवायै नमः। ॐ धवलायै नमः। ॐ निःस्वनायै नमः। ॐ धृतिकलायै नमः। शङ्खनवशक्ति पूजां समर्पयामि।

अथ नामपूजा—ॐ पवनाय नमः। ॐ पाञ्चजन्याय नमः। ॐ पषगर्भाय नमः। ॐ अम्बुराजाय नमः ॐ कम्बुराजायै नमः। ॐ धवलाय नमः। ॐ निस्सवनाय नमः। ॐ दिव्यभोगदाय नमः।

शंखमूले परब्रह्मा शङ्खाग्रे तु सरस्वती। यः स्नापयति गोविन्दं तस्य पुण्यमनन्तकम्॥ *(स्मृति मुक्तावल्यां शङ्खपूजा प्रकरणम्)*

(इतना कहकर शंख को नमस्कार करना चाहिये।)

शंख के जल को कलश में डालना चाहिये। पुनः शंख के कुछ जल लेकर तीन बार प्रोक्षण करना चाहिये। यज्ञशाला एवं पूजास्थल का प्रोक्षण करें। पूजा के सामग्रियों का प्रोक्षण करें। एवं तदनन्तर अपने को प्रोक्षण करें। एवं ब्राह्मणों का भी प्रोक्षण करें। शेष जल नीचे छोड़ देवें। शंख को धोकर पुनः पानी भरकर यथा स्थान रख देना चाहिये।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आत्माराधनम्—हृदि स्थितं पंकजमष्टपत्रं सकेसरं कर्णिक मध्यनालं॥
अङ्गुष्ठमात्रं मुनयो वदन्ति ध्यायेत् च विष्णुं पुरुषं पुराणम्॥
हृदयकमलमध्ये सूर्यबिम्बासनस्थं सकलभुवनबीजं सृष्टिसंहारहेतुम्।
निरतिशयसुखात्म ज्योतिषं हंसरूपं परमपुरुषमाद्यं चिन्तयेदात्ममूर्तिम्॥
आराधयामि मणि सन्निभमात्मलिङ्गम्। मायापुरीरहृदय पंकज सन्निविष्टम्॥
श्रद्धा नदी विमलचित्त जलभिषेकै। र्नित्यं समाधि कुसुमैर्न पुनर्भवाय॥
देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो हंसः सदाशिवः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥
स्वामिन् सर्व जगन्नाथ यावत्पूजावसानकम्। तावत् त्वं प्रीति भावेन बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥ *(देवपूजा)*

ॐ आत्मने नमः। ॐ अन्तरात्मने नमः। ॐ परमात्मने नमः। ॐ ज्ञानात्मने नमः। आत्मपूजां समर्पयामि। इससे आत्मशुद्धि होती है। (इन मन्त्रों को कहकर अपने सिर पर अक्षत डाल लेवें।)

मण्डप पूजनम्—उत्तप्तोज्वल काञ्चनेन रचितं तुङ्गाङ्ग रंगस्थलं। शुद्धस्फाटिक भित्तिका विरचितैस्तम्भैश्च हैमैः शुभैः।
द्वारश्चामर रत्नराजखचितैः शोभावहैर्मण्ठपैः। तत्रान्यैरपि चित्र शंखधवलैः प्रभ्राजितं स्वस्तिकैः॥
मुक्ताजाल विलम्बिमण्टपयुतैर्वज्रैश्च सोपानकैः। नानारत्नविनिर्मितैश्च कलशैरत्यन्त शोभावहम्।
माणिक्योज्वल दीपदीप्तिखचितं लक्ष्मीविलासास्पदम्। ध्यायेत् मण्टपमर्चनेषु सकलेष्वेवं विधं साधकः॥

(स्मृति सङ्ग्रह - अनुष्ठान पद्धति)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नवरत्न खचित श्री सौभाग्य मण्टपाय नमः मण्टपपूजां समर्पयामि। (उपरोक्त मन्त्रों से सर्वतोभद्रमण्डल एवं नवग्रह मण्डल एवं प्रधान कलश रखने वाला मण्ठप का पूजन करना चाहिये।)

अङ्गन्यास करन्यास—(शरीर में शंकर जी का आवाहन करने से पूर्व में ये न्यास करना चाहिये।) वामदेवः ऋषिः पंक्तिश्छन्दः, सदाशिव रुद्रो देवता न्यासे विनियोगः।

१. ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
२. ॐ नं तर्जनीभ्यां नमः।
३. ॐ मं मध्यमाभ्यां नमः।
४. ॐ शिं अनामिकाभ्यां नमः।
५. ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः। वौषट्।
६. ॐ यः करतल करपृष्टाभ्यां नमः। अस्त्राय फट्।
७. ॐ हृदयाय नमः।
८. ॐ नं शिरसे स्वाहा।
९. ॐ मं शिखायै वषट्।
१०. ॐ शिं कवचाय हुम्।
११. ॐ वां नेत्रत्राय।
१२. ॐ यः।

इतना करने के पश्चात पहले सर्वतोभद्र मण्डल की पूजा करें।

***सर्वतोभद्र मण्डल पूजन*—आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्य करिष्यमाण सग्रहमख सर्वाद्भुतशान्ति होमाङ्गत्वेन ऐशान्यां कलशार्चनं करिष्ये।**

आचमन कर, प्राणायाम करें। देशकाल संकीर्तनपूर्वक ग्रहसहित सर्वाद्भुत शान्ति याग के अङ्ग के रूप में ईशान्य दिशा में कलशपूजन करुंगा कहकर संकल्प लेवें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वतः। स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥ १॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशं। सर्वेषां अविरोधेन यज्ञकर्म समारभे॥ २॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इति गौरसर्षपान् विकीर्य-इतना कहकर सफेद सरसूँ को चारों और कलशार्चन स्थल में बिखेरना चाहिये। शुचीवो हव्येति तिसृणां मैत्रावरुणिः वसिष्ठो मरुतस्त्रिष्टुप्। अग्निः शुचिव्रततम इति द्वयोराङ्गिरसो विरूपाग्निर्गायत्री एतोन्विन्द्रमिति तिसृणां आंगिरसः तिरश्चीन्द्रोनुष्टुप् भूमि प्रोक्षण विनियोगः।

ॐ शुचीवो हव्या मरुतः शुचीनां शुचिंहिनोम्यध्वरं शुचिंभ्यः।
ऋतेन सत्यमृतसापं आयन्छुचिजन्मानः शुचयः पावकाः॥ *(ऋग्वेद ७.५६.१२)*
अग्निः शुचिव्रततमः शुचिर्विप्रः शुचिः कविः। शुचीरोचत आहुतः॥
उदग्ने शुचयस्तव शुक्रा भ्राजन्त ईरते। तवज्ज्योतींष्यर्चयः॥ *(ऋग्वेद ८.४४.१७)*
एतोन्विन्द्रंस्तवाम शुद्धं शुद्धेन साम्ना। शुद्धैरुक्थैर्वावृध्वांसं शुद्ध आशीर्वान्ममत्तु॥
इन्द्रं शुद्धोनऽआगहि शुद्धः शुद्धाभिरूतिभिः। शुद्धोरयिं निधारयशुद्धोमंमद्धिसोम्यः॥ *(ऋग्वेद ८.९५.७-८)*
इन्द्रंशुद्धो हिनोरयिं शुद्धो रत्नानि दाशुषे। शुद्धो वृत्राणि जिघ्नसे शुद्धोवाजं सिषाससि॥ *(ऋग्वेद ८.९५.९)*

इन मन्त्रों से कुशों से प्रोक्षण करें। पञ्चगव्य से भूमि प्रोक्षण निम्नलिखित मन्त्र से करें। आपोहिष्ठेति सूचस्यांबरीषः सिंधुद्वीप आपो गायत्री भूमि प्रोक्षणो विनियोगः।

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन।
महेरणाय चक्षसोयोवः शिवतमोरसस्तस्य भाजयते हनः उशतीरिव मातरः॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तस्मा॒ अरं॑गमामवो॒ यस्य॒ क्षया॑य॒जिन्व॑थ। आपो॑ ज॒नय॑थाचनः॥ *(ऋग्वेद १०.९.१-२-३)*

कुशोदकेन च प्रोक्षेत्। कुश जल से प्रोक्षण करें।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

इतना कहकर हाथ जोड़कर खड़े हो। **इतना करने के बाद मण्डल रचना करें। दोनों मण्डल बनायें। पहले कलश पूजन करें।** (यहाँ भी कलश पूजन करना चाहिये।) कलश में पूर्ण जल भरकर रखना चाहिये। फिर उसमें गन्ध अक्षत पुष्प कलश के अन्दर डालना चाहिये। बाहर भी चारों ओर लगाना चाहिये। गायत्री मन्त्र से तीन बार कलश छूकर पज करना चाहिये।

सर्वतोभद्र मण्डल में देवता पूजनम्—मध्ये ब्रह्माणं, (मध्य में ब्रह्मा का आवाहन करें।) ब्रह्मजज्ञानं वामदेवो ब्रह्मात्रिष्टुप् ब्राह्मावाहने विनियोगः।

ॐ ब्रह्म॑ जज्ञा॒नं प्र॑थ॒मं पु॒रस्ता॒द्विसी॑म॒तः सु॒रुचो॑वे॒न आ॑वः।
सबु॒ध्निया॑ उप॒मा अ॑स्य वि॒ष्ठाः स॒तश्च॒योनि॒मस॑तश्च॒विवः॑॥ *(यजुर्वेद ४ काण्ड-२ प्रश्न-८ अनुवाक-४ मन्त्र)*

ॐभूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणमावाहयामि। भो ब्रह्मन् इहागच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **उत्तरे सोमं—**(उत्तर में सोम का आवाहन करें।) आप्यायस्व गोतमः सोमोगायत्री सोमावाहने विनियोगः।

ॐ आप्या॑यस्व॒ समे॑तुते वि॒श्वतः॑सोम॒वृष्ण्यं॑। भवा॒वाज॑स्यसङ्गथे॥ *(ऋग्वेद १.९१.१६)*

ॐभूर्भुवः स्वः सोमय नमः। सोमं आवाहयामि। भो सोम इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **ईशान्यं ईशानं—**(ईशान्य दिशा में ईशन का

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आवाहन करें।) अभित्वा शुनः शेप ईशानो गायत्री ईशानावाहने विनियोगः।

ॐ अभित्वा देव सवितरीशानं वार्याणां। सदावन्भागमीमहे॥ (ऋग्वेद १.२४.३)

ॐभूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः। ईशानमावाहयामि। भो ईशान इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजा गृहाण वरदो भव। **पूर्वे इन्द्रं**—(पूर्व में इन्द्र का आवाहन करें।) इन्द्र वो मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री इन्द्रावाहने विनियोगः।

ॐ इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः॥ (ऋग्वेद १.७.१०)

ॐभूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि। भो इन्द्र इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव॥ **आग्नेयामग्निं**—(आग्ने दिशा में अग्नि का आवाहन करें।) अग्निं दूतं मेधातिथिरग्निर्गायत्री अग्न्यावाहने विनियोगः।

ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्व वेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुं॥ (ऋग्वेद १.१२.१)

ॐभूर्भुवः स्वः। अग्नेय नमः। अग्निमावाहयामि। भो अग्ने इहा गच्छ इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरणो भव। **दक्षिणो यमं**—(दक्षिण दिशा में यम का आवाहन करें।) यमाय सोमं यमोयमोनुष्टुप् यमावाहने विनियोगः।

ॐ यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हविः। यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्नि दूतो अरंकृतः॥ (ऋग्वेद १०.१४.१३)

ॐभूर्भुवः स्वः यमाय नमः। यममावाहयामि। भो यम इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **नैऋत्यां निऋतिं**—(नैऋत्य दिशा में निऋति को।) मोषुणः कण्वो निऋतिर्गायत्री निऋत्या वाहने विनियोगः॥

ॐ मोषुणः परापरा निर्ऋतिर्दुर्हणावधीत्। पदीष्टतृष्णयासह॥ (ऋग्वेद १.३८.६)

ॐभूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिमावाहयामि। भो निऋति इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहाण। वरदो भव। **पश्चिमे वरुणं**—(पश्चिम दिशा में वरुण का

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आवाहन करें।) तत्वायामि शुनःशेपो वरुणस्त्रिष्टुप् वरुणावाहने विनियोगः।

ॐ तत्वा॑यामि॒ ब्रह्म॑णा॒ वन्द॑मान॒स्तदा शा॑स्ते॒ यज॑मानो ह॒विर्भिः।
अहे॑ळमानो वरुणे॒ह बो॒ध्युरु॑शं स॒मान॒ आयुः॒ प्रमो॑षीः॥ *(ऋग्वेद १.२४.११)*

ॐभूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। वरुणमावाहयामि। भो वरुण इहागच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **वायव्यां वायुं**—(वायव्य दिशा में वायु का आवाहन करें।) वायोशतं वामदेवो वायुरनुष्टुप् वाय्वावाहने विनियोगः।

ॐ वायो॑श॒तं हरी॑णां यु॒वस्व॒ पोष्या॑णां। उ॒तवा॑ते सह॒स्त्रिणो रथ॒आया॑तु॒पाज॑सा। *(ऋग्वेद ४.४८.५)*

ॐभूर्भुवः स्वः वायवे नमः। वायुमावाहयामि। भो वायो इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहाण। वरदो भव। **वायुसोममध्ये अष्टवसून्**—वायु एवं सोम के बीच में अष्ठ वसुओं को (वायव्य एवं उत्तर के बीच में) ज्मया अत्र वसिष्ठो वसवस्त्रिष्टुप् व स्वावाहने विनियोगः।

ॐ ज्म॒या अत्र॒ वस॑वो रन्तदे॒वाउ॒राव॒न्तरि॑क्षे मर्जयन्त शु॒भ्राः।
आर्वाक्पथ उ॑रुज्र॒यः कृ॒णुध्वं॒ श्रोता॑दू॒तस्य॑ज॒ग्मुषो॑नो अ॒स्य॥ *(ऋग्वेद ७.३९.३)*

ॐभूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो नमः। अष्टवसून् आवाहयामि। भो अष्टवसवः इहा गच्छ। इह तिष्ठतः। पूजां गृहाण। वरदो भवत। **सोमेशानयोर्मध्ये एकादशमरुद्रान्**—(सोमन एवं ईशान के बीच में एकादश रुद्रों का आवाहन करें।) (उत्तर एवं ईशान के बीच में) आरुद्रा सः श्यावाश्व एकादश रुद्रो जगती। एकादशरुद्रावाहने विनियोगः।

ॐ आरु॑द्रास॒इन्द्र॑वन्तः स॒जोष॑सो॒ हिर॑ण्यरथाः सुविताय॑गंतन।
इयं वो॑ अ॒स्मत्प्रति॑हर्यतेम॒तितृ॒ष्णाजे॒न दिवउत्सा॑उदु॒न्यवे॑। *(ऋग्वेद ५.५७.१)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐभूर्भुवः स्वः एकादशरुद्रेभ्यो नमः। एकादश रुद्रानावाहयामि। भो एकादशरुद्राः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृषीत। वरदा भवत। **ईशानेन्द्रयोर्मध्ये द्वादशादित्यान्**—(ईशान्य एवं पूर्व के बीच में द्वादशादित्यों का आवाहन करें।) त्यांनुमत्स्योमान्योवा द्वादशादित्यागायत्री द्वादशादित्या-वाहने विनियोगः।

ॐ त्यांनुक्षत्रियाँ अवं आदित्यान्याँचिषामहे। सुमृळीकाँअभिष्टये॥ *(यजुर्वेद-२ काण्ड-१ प्रश्न-११ अनुवाक-१८ मन्त्र)*

ॐभूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः। द्वादशादित्यानावाहयामि। भो द्वादशादित्याः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृह्णीत। वरदो भवत। **इन्द्राग्निमध्ये अश्विनौ**—(पूर्वा एवं आग्नेय के बीच में अश्विनी देवताओं को आवाहन करें।) अश्विनावर्तिर्गोतमोश्विनावुष्णिक् अश्व्यावाहने विनियोगः।

ॐ अश्विनावर्तिरस्मदागोमद्दस्राहिरण्यवत्। अर्वाग्रथंसमनसानियच्छतं॥ *(ऋग्वेद १.९२.१६)*

ॐभूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः। अश्विनौ आवाहयामि। भो अश्विनौ इहा गच्छतं। इह तिष्ठतं पूजां गृषीतं। वरदौ भवतं। **अग्नियम मध्ये विश्वेदेवान् सपैतृकान्**—(आग्नेय एवं दक्षिण के बीच में पितृसाहित विश्वेदेवों का आवाहन करें।) ओमासोमधुच्छंदाविश्वेदेवा गायत्री। विश्वेदेवावाहने विनियोगः।

ॐ ओमासश्चर्षणीधृतोविश्वेदेवा स आगत। दाश्वांसोदाशुषः सुतं॥ *(ऋग्वेद १.३.७)*

ॐभूर्भुवः स्वः विश्वेभ्योदेवेभ्यो नमः विश्वान् देवान् आवाहयामि। भो विश्वेदेवाः इहा गच्छत। इह तिष्ठंत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **यम निर्ऋतिमध्ये सप्तयक्षान्**—(दक्षिण एवं नैर्ऋत्य के बीच में सप्त यक्षों का आवाहन करें।) अभित्यं वामदेवः सप्तयक्षा अष्टी। सप्तयक्षावहने विनियोगः।

ॐ अभित्यं देवं सविताराम्रोयोः कविक्रतुर्चामि सत्यसवसं रत्नधामभिप्रियंमतिमूर्ध्वा यस्यामतिर्भा अदिद्युतत्सवीमनिहिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपासुवः॥ *(यजुर्वेद-१ काण्ड-२ प्रश्न-६ अनुवाक)*

ॐभूर्भुवः स्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः सप्तयक्षान् आवाहयामि। भो सप्तयक्षाः इहा गच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **निर्ऋति वरुण मध्ये भूतनागान्**—(नैर्ऋत्य एवं पश्चिम के बीच में भुतगण एवं नागों का आवाहन करें।) आयङ्गो सार्पराज्ञी सर्पा गायत्री। सर्पावाहने विनियोगः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आयं गौः पृश्निरक्रमीद सदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥ (ऋग्वेद १०.१८९.१)

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः। सर्पान् आवाहयामि। भो सर्पाः इहागच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **वरुणवायुमध्ये गंधर्वाप्सरसः**—(पश्चिम एवं वायव्य के बीच में गन्धर्व एवं अप्सराओं का आवाहन करें।) अप्सरसामृष्यशृङ्गोगंधर्वाप्सरसोनुष्टुप्। गन्धर्व अप्सरावाहने विनियोगः।

ॐ अप्सरसां गन्धर्वाणां मृगाणां चरणेचरन्। केशीकेतस्य विद्वान्त्सखास्वादुर्मदिन्तमः॥ (ऋग्वेद १.१६३.६)

ॐ भूर्भुवः स्वः गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः। गन्धर्वाप्सरस आवाहयामि। भो गन्धवाप्सरसः इहा गच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत।

ब्रह्म सोममध्ये स्कन्दं नन्दीश्वरं शूलं महाकालं च

(मध्ये में स्थित ब्रह्मा एवं सोम (उत्तर) के मध्य में स्कन्द नन्दीश्वर शूल एवं महाकाल का आवाहन करें।) यदक्रंदो दीर्घतमास्कंदस्त्रिष्टुप्। स्कंदावाहने विनियोगः।

ॐ यदक्रंदः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुतवा पुरीषात्।
श्येनस्यपक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महिजातंते अर्वन्॥ (ऋग्वेद १.१६३.१)

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः। स्कन्दमावाहयामि। भो स्कन्द इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव। ऋषभमृषभो नन्दीश्वरोनुष्टुप्। **नन्दीश्वरावाहने विनियोगः।**

ॐ ऋषभं मासमानानां सपत्नानां विषासहिं। हंतारं शत्रूणां कृधि विराजं गोपतिं गवां॥ (ऋग्वेद १०.१६६.१)

ॐ भूर्भुवः स्वः नन्दीश्वराय नमः नन्दीश्वरं आवाहयामि। भो नंदीश्वर इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव। कद्रुद्राय घौरः करवः शूलो गायत्री शूलावाहने विनियोगः।

ॐ कद्रुद्राय प्रचेतसेमीहळुष्टमायतव्यसे। वोचेमशतंमंहदे॥ (ऋग्वेद १.४३.१)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ भूर्भुवः स्वः शूलायनमः शूलमावाहयामि। भो शूल इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव। कुमारं माता कुमारी महाकालस्त्रिष्टुप्। **महाकालावाहने विनियोगः।**

ॐ कुमारं माता युवतिः समुब्धङ्गुहाबिभर्ति न ददातिपित्रे।
अनीकमस्य नमिनज्जनासः पुरः पश्यंति निहितमरतौ॥ *(ऋग्वेद ५.२.१)*

ॐ भूर्भुवः स्वः महाकालाय नमः। महाकालमावाहयामि। भो महाकाल इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूहां गृहाण। वरदो भव। **ब्रह्मेशानमध्ये दक्षं**—(बीच में विद्यमान ब्रह्मा एवं ईशान्य दिशा के बीच में दक्ष का आवाहन करें।) अदतिर्बृहस्पतिर्दक्षोनुष्टुप्। दक्षावाहने विनियोगः।

ॐ अदितिर्ह्यजनिष्टदक्षयादुहितातव। तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबंधवः॥ *(ऋग्वेद १०.७२.५)*

ॐ भूर्भुवः स्वः दक्षाय नमः। दक्षमावाहयामि। भो दक्ष इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव। ब्रह्मेन्द्रमध्ये दुर्गां विष्णुं च (ब्रह्मा एवं इन्द्र के बीच में अर्थात् बीच में स्थित ब्रह्मा एवं पूर्व के बीच में दुर्गा एवं विष्णु का आवाहन करें।) तामग्निवर्णां सौभरिदुर्गात्रिष्टुप्। दुर्गावाहने विनियोगः।

ॐ तामग्निवर्णां तपसाज्वलंतीं वैरोचनीं कर्मफलेषुजुष्टां।
दुर्गां देवीं शरणमहंप्रपद्ये सुतरसितरसे नमः॥ *(यजुर्वेद-दुर्गासूक्त)*

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः। दुर्गां आवाहयामि। भो दुर्गे इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदा भव। इदं विष्णुर्मेधातिथिर्विष्णुगायत्री। विष्णवावाहने विनियोगः।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदं। समूह्लमस्य पांसुरे॥ *(ऋग्वेद १.२२.१७)*

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवेनमः। विष्णुं आवाहयामि। भो विष्णो इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहाण। वरदो भव। ग्रह्माग्नि मध्ये स्वधां (बीच में स्थित ब्रह्मा एवं

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आग्नेय दिशा के बीच में स्वधा को) उदीरतां शंखः स्वधा त्रिष्टुप्। स्वधावाहने विनियोगः।

ॐ उदीरता मवरउत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुं य ईयुरवृकाऽऋतज्ञास्तेनोवंतु पितरो हवेषु॥

(ऋग्वेद १०.१५.१)

ॐभूर्भुवः वः स्वधायै नमः। स्वधामावाहयामि। भो स्वधे इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदा भव। **ब्रह्म यममध्ये मृत्युरोगान्**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं दक्षिण दिशा के बीच में मृत्यु एवं रोगों का आवाहन करें।) परं मृत्यो संकुसुकोमृत्युरोगास्त्रिष्टुप्। मृत्युरोगावाहने विनियोगः।

ॐ परं मृत्यो अनुपरेहिपंथांयस्तेस्व इतरोदेवयानात्। चक्षुष्मते शृण्वतेते ब्रवीमिमानः प्रजारीरिषोमोत वीरान्॥

(ऋग्वेद १०.१८.१)

ॐभूर्भुवः स्वः मृत्युरोगेभ्यो नमः। मृत्यरोगान् आवाहयामि। भो मृत्युरोगाः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृषीत। वरदा भवत। ब्रह्म निर्ऋतिमध्ये गणपतिं (बीच में स्थित ब्रह्मा एवं नैऋत्य दिशा के बीच में गणपति का आवाहन करें।) गणानान्त्वा शौनकोगृत्समदो गणपतिर्जगती। गणपत्या वाहने विनियोगः।

ॐ गणानांत्वागणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमं।
ज्येष्ठराजंब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन्नूतिभिः सीदसादनं॥ *(ऋग्वेद २.२३.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः गणपतये नमः। गणपतिमावाहयामि। भो गणपति इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **ब्रह्मवरुणमध्ये अपः**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं पश्चिम दिशा के बीच में जल का आवाहन करें।) शंनोदेवीः सिंधुद्वीप आपो गायत्री। अप् आवाहने विनियोगः।

ॐ शंनोदेवीरभिष्टय आपो भवंतु पीतये। शंयोरभिस्त्रवंतु नः॥ *(ऋग्वेद १०.९.४)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐभूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः। अपः आवाहयामि। भो आपः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **ब्रह्मवायुमध्ये मरुतः**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं वायव्य दिशा के बीच में मरुत् का आवाहन करें।) मरुतोयस्यगोतमो मरुतो गायत्री। मरुदावाहने विनियोगः

ॐ मरुतोयस्य हि क्षयेपाथा दिवोविमहसः। स सुगोपातमोजनः *(ऋग्वेद १.८६.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः मरुद्भ्यो नमः। मरुतः आवाहयामि। भो मरुतः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृहणीत। वरदा भवत। ब्रह्मणः पादमूले कर्णिकाधः पृथिवीं (बीच में स्थित ब्रह्मा जी के नीचे पादमूल में पृथिवी का आवाहन करें।) स्योना पृथिवी मेधातिथिर्भूमिर्गायत्री। भूम्यावाहने विनियोगः।

ॐ स्योना पृथिवि भवानृक्षरानिवेशनी। यच्छानः शर्म सप्रथः॥ *(ऋग्वेद १.२२.१५)*

ॐभूर्भुवः स्वः भूम्यै नमः। भूमिं आवाहयामि। भो भूमे इहा गच्छा। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदा भव। **तत्रैव गङ्गादिसर्वनद्यः**—(उसी स्थान पर अर्थात पृथिवी पर ही गङ्गादि सभी नदियों का आवाहन करें।) इमं मे गङ्गे सिंधुक्षित्प्रैयमेधानद्यो जगती। गङ्गादिनद्यावाहने विनियोगः।

ॐ इमं मे गङ्गेयमुनेसरस्वतिशुतुद्रिस्तोमं सचतापरुष्णया। असिक्न्यामं रुद्वधेवितस्तया जींकीयेशृणुह्या सुषोमया॥

(ऋग्वेद १०.७५.५)

ॐभूर्भुवः स्वः गङ्गादि नदीभ्यो नमः। गङ्गादि नदीः आवाहयामि। भो गङ्गादिनद्यः इहागच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृहणीतां। वरदा भवत। तत्रैव सप्तसागराः। (वहीं पर सात सागरों का आवाहन करें।) धाम्नो धाम्नो वामदेवः सप्तसागरा अष्टी। सप्त सागरावाहने विनियोगः।

ॐ धाम्नो धाम्नो राजन्नितो वरुणानोमुञ्च। यदापो अध्न्या इति वरुणोतिशपामहेततो वरुणानोमुञ्च।
मयिवापोमोषधीहिं सीरतो विश्वव्यंचा भूस्त्वेतो वरुणानो मुञ्च॥ *(यजुर्वेद-१ काण्ड-३ प्रश्न-११ अनुवाक-१५ मन्त्र)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐभूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः। सप्तसागरान् आवाहयामि। भो सप्तसागराः इहागच्छत। इह तिष्ठतः। पूहां गृहणीत। वरदा भवत। तदुपरि मेरवे नमः। मेरुं आवाहयामि। (उसके ऊपर मेरु पर्वत का आवाहन करें।) (भूमि पर) सोमसमीपे गदायै नमः। गदां आवाहयामि। (सोम के पास (उत्तर) गदा का आवाहन करें।) ईशान समीपेत्रिशूलाय नमः। त्रिशूलं आवाहयामि।। (ईशान के पास ईशान में त्रिशूल का आवाहन करें।) इन्द्रसमीपे वज्राय नमः। वज्रं आवाहयामि। (इन्द्र के पास पूर्व में वज्र का आवाहन करें।) अग्नि समीपे शक्तये नमः। शक्तिं आवाहयामि। (अग्नि के पास आग्नेय में शक्ति का आवाहन करें।) यम समीपे दण्डाय नमः। दण्ड आवाहयामि। (यम के पास दक्षिण में दण्ड का आवाहन करें।) निर्ऋति समीपे खड्गय नमः। खड्गमावाहयामि। (निर्ऋति के पास नैऋत्य के खड्ग का आवाहन करें।) वरुण समीपे पाशाय नमः। पाशं आवाहयामि। (वरुण के पास पश्चिम में पाश का आवाहन करें।) वायु समीपे अंकुशाय नमः। अंकुशं आवाहयामि। (वायु के पास वायव्य दिशा में अंकुश का आवाहन करें।)

तद्बाहये उत्तरादि क्रमेण (मण्डल के बाहर) गौतमाय नमः। गौतमं आवाहयामि। (उत्तर में गौतम जी का आवाहन करें।) भारद्वाजाय नमः। भरद्वाजं आवाहयामि। (ईशान में भरद्वाज जी का आवाहन करें।) विश्वामित्राय नमः। विश्वामित्रं आवाहयामि। (पूर्व में विश्वामित्र जी का आवाहन करें।) कश्यपाय नमः। कश्यपं आवाहयामि। (आग्नेय में अश्यप जी का आवाहन करें।) जमदग्नये नमः। जमदग्निं आवाहयामि। (दक्षिण में जमदग्नि जी का आवाहन करें।) वसिष्ठाय नमः। वसिष्ठं आवाहयामि। (नैर्ऋत्य में वसिष्ठ जी का आवाहन करें।) अत्रये नमः। अत्रिं आवाहयामि। (पश्चिम में अत्रि जी का आवाहन करें।) अरुंधत्यै नमः। अरुंधतीं आवाहयामि। (वायव्ये में अरुंधति जी का आवाहन करें।) ततः पूर्वादि क्रमेण मातृः। (पूर्वादि क्रम से मण्डल के बाहर मातृगणों का आवाहन करें।) ऐंद्र्यै नमः। ऐन्द्रीं आवाहयामि। (पूर्व में ऐन्द्री का आवाहन करें।) कौमार्यै नमः। कौमारीं आवाहयामि। (आग्नेय में कौमारी का आवाहन करें।) ब्राह्मै नमः। ब्राह्मीं आवाहयामि। (दक्षिण में ब्राह्मी का आवाहन करें।) वाराह्यै नमः। वाराहीं आवाहयामि। (नैर्ऋत्य में वाराही का आवाहन करें।) चामुण्डायै नमः। चामुण्डां आवाहयामि। (पश्चिम में चामुण्डा का आवाहन करें।) वैष्णव्यै नमः वैष्णवीं आवाहयामि। (वायव्य में वैष्णवी

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

का आवाहन करें।) वैनायक्यै नमः वैनायकीं आवाहयामि। (ईशान्य में वैनायकी का आवाहन करें।) इति सर्वतो भद्र देवताः। (यहाँ पर सर्वतोभद्रमण्डल में विद्यमान सभी देवताओं का आवाहन संपन्न हुआ।)

ॐ तदस्तु मित्रावरुणा तदग्नेशंयोरस्मभ्यमिदमस्तु शस्तं। अशीमहि गाधमुतप्रतिष्ठां नमो दिवे बृहते सादनाय॥ *(ऋग्वेद ५.४७.७)*

गृहावै प्रतिष्ठासूक्तं तत् प्रतिष्ठिततमया वाचाशंस्तव्यं तस्माद्यद्यपिदूर इव पशूँलभते गृहानेवै नानाजिगमिषति गृहाहिपशूनां प्रतिष्ठा प्रतिष्ठा॥

ॐ नर्यप्रजां मे गोपाय॥ अमृतत्वाय जीव से॥ जातां जनिष्यमाणां च॥ अमृते सत्वे प्रतिष्ठितां॥ *(यजुर्वेद-ब्राह्मण)*

एताः ब्रह्मादि देवताः सुप्रतिष्ठिताः सन्तु। (इन मन्त्रों को कहकर आवाहित ब्रह्मादि देवताओं का प्रतिष्ठा करें।)

ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः। सुबुध्नियां उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चविवः॥ *(यजुर्वेद-४ काण्ड-२ प्रश्न-८ अनुवाक-४ मन्त्र)*

अनेन मंत्रेण पूजयेत्। (इस मन्त्र से पूजन करें।) ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। स्वागतं समर्पयामी। पादारविन्दयोःपाद्यं पाद्यं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवः तानं ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥
यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयते हनः। उशतीरिव मातरः॥
तस्मा अरंगमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपोजनयथा च नः॥ *(ऋग्वेद १०.९.१)*

स्नानं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। स्नानाङ्ग आचमनं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ युवं वस्त्राणि पीवसा वसाथे युवोरच्छिद्रामन्तवोहसर्गाः। अवा तिरतमनृतानि विश्वं ऋतेन मित्रा वरुणा यचेथे॥ *(ऋग्वेद १.१५२.१)*

वस्त्रयुग्मं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥ *(ऋग्वेद)*

यज्ञोपवीतं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ हिरण्यरूपः स हिरण्य संदृगपान्नपात् सेदु हिरण्यवर्णाः। हिरण्ययात् परियोनेर्निषद्याहिरण्य दादद्दत्यन्नमस्मै॥ *(ऋग्वेद २.३५.१०)*

आभारणं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ गन्धं द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीं। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

गन्धं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उतपुरन्न धृष्णवर्चत॥ *(ऋग्वेद ८.६९.८)*

अक्षतान् समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ आयने ते परायणे दूर्वारोहन्तु पुष्पिणीः। ह्रदाश्च पुण्डरीकाणि समुद्रस्य गृहा इमे। पुष्पाणि समर्पयामि। *(ऋग्वेद १०.१४२.८)*

नाम पूजां करिष्ये—ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ सोमाय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नेय नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ अष्टवसुभ्यो नमः। ॐ एकादश रुद्रेभ्यो नमः। ॐ द्वादशादित्येभ्यो नमः। ॐ अश्विभ्यां नमः। ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सप्तयक्षेभ्यो नमः। ॐ भूतनागेभ्यो नमः। ॐ गंधर्वाप्सरोभ्यो नमः। ॐ स्कन्दाय नमः। ॐ नन्दीश्वराय नमः। ॐ शूलाय नमः। ॐ महाकालाय नमः। ॐ दुर्गायै नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ स्वधायै नमः। ॐ मृत्युरोगेभ्यो नमः। ॐ गणपतये नमः। ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ मरुद्भ्यो नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ गङ्गादि सर्वनदीभ्यो नमः। ॐ सप्त

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सागरेभ्यो नमः। ॐमेरवे नमः। ॐगदायै नमः। ॐत्रिशूलाय नमः। ॐवज्राय नमः। ॐशक्तये नमः। ॐदण्डाय नमः। ॐखड्गाय नमः। ॐपाशाय नमः। ॐअंकुशाय नमः। ॐगौतमाय नमः। ॐभरद्वाजाय नमः। ॐविश्वामित्राय नमः। ॐकश्यपाय नमः। ॐजमदग्नये नमः। ॐवसिष्ठाय नमः। ॐअत्रये नमः। ॐअरुन्धत्यै नमः। ॐऐन्द्र्यै नमः। ॐकौमार्यै नमः। ॐब्राह्मै नमः। ॐवाराह्यै नमः। ॐचामुण्डायै नमः। ॐवैष्णव्यै नमः। ॐमाहेश्वर्यै नमः। ॐवैनायक्यै नमः। (देवताओं के ५७ समूह।) नाम पूजां समर्पयामि। (ये सभी देवता सर्वतो भद्र मण्डल से आवाहित हैं।) ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढयः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥ धूपं आघ्रापयामि। *(प्रयोगरत्नाकर)*

ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

आज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

दीपं दर्शयामि धूपदीपानन्तरं आचमनं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। (नैवेद्य को गायत्री मन्त्र से प्रोक्षण करें नैवेद्य मण्डल पर रखें। **सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि।** इस मन्त्र से परिषिञ्चन करें।) **अमृतोपस्तरणमसि** कहकर जल छोड़ें। ॐप्राणाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं कनिष्ठिका मिलाकर) ॐअपानाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर) ॐव्यानाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर) ॐउदानाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर) ॐसमानाय स्वाहा (सभी अङ्गुलियों को मिलाकर) ॐदेवेभ्यः स्वाहा नैवेद्यं निवेदयामि। **अमृतापिधानमसि** कहकर जल छोड़ें। नैवेद्यं विसर्जयामि। हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। गण्डूषं समर्पयामि। पुनराचमनं समर्पयामि। (कहकर जल छोड़ें) ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

पूगीफल समायुक्तं नागवल्ल्यादलैर्युतम्। चूर्ण कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यतां। क्रमुक ताम्बूलं समर्पयामि।

(देवपूजा)

ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ अर्चंत प्रार्चंत प्रियमेधा सो अर्चंत। अर्चन्तु पुत्र का उत पुरं न धृष्णवर्चत। (ऋग्वेद ८.६९.८)
ॐ ध्रुवाद्यौ ध्रुवापृथिवीध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्॥
ॐ ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ (ऋग्वेद १०.१७३.५)

मङ्गलनीराजनं समर्पयामि। नीराजनान्ते परिमल पत्र पुष्पाणि समर्पयामि। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। प्रदक्षिणां समर्पयामि। नमस्कारान् समर्पयामि।

देवाराधनमण्डलं सुरगणावासं सदामङ्गलं। कुर्तुः दर्शनमात्रतः शुभकरं तत् पञ्च भूतात्मकं॥
अर्णाद्यक्षरसंयुतं भयहरं तद् याग पुण्यार्जितं। नानामन्त्रमयं समस्त फलदं ध्यायेन्मनोनन्दनं॥
अरिष्टानि बहून्यस्मिन् दुष्कृतानि शतानि च। मण्डलानि निरीक्षन्ते यथा युद्धेषु कातराः॥ (अनुष्ठान पद्धति)

(युद्ध भूमि में कायर जैसे देखते ही भीत हो जाते हैं, वैसे ही मण्डल को देखते ही सभी अरिष्ट दूर हो जाते हैं।) **अनया पूजया ब्रह्मादि मण्डल देवताः प्रीयन्तां** यहाँ पर सर्वतोभद्र मण्डल पूजन संपन्न हुआ।

द्वितीय दिन द्वितीय प्रहर

प्रधानदेवता सोम पूजनम्-

देह शुद्धि—येभ्यो मातेत्यस्य गयःप्लात ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। जगतीछन्दः। एवापित्रेत्यस्य वामदेव ऋषिः। बृहस्पतिर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। मनुष्य गन्ध निवारणे विनियोगः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ येभ्यो मातामधुमत् पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः।
उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनुमदास्वस्तये॥ (ऋक्वेद १०.६३.३)
ॐ एवापित्रे विश्वदेवाय वृष्णे यज्ञैर्विधेम नमसा हविर्भिः।
बृहस्पते सुप्रजा वीरवन्तो वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥ (ऋक्वेद ४.५०.६)

आचमन मन्त्र—ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।) अथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुराणेभ्यो नमः। अग्नये नमः। वायवे नमः। प्राणाय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै नमः। अन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारणम्—पवित्रन्त इत्यनयोः आङ्गीरसः पवित्र ऋषिः। पवमानः सोमो देवता। जगतीछन्दः। पवित्राभिमंत्रणे, धारणे विनियोगः।

ॐ पवित्रन्ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः।
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुतेशृता सइद्वहन्तस्तत् समाशत॥ (ऋग्वेद ९.८३.१)
ॐ तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदे शोचन्तो अस्य तन्तवो व्यस्थिरन्।
अवन्त्यस्य पवीतारं माशवो दिवस्पृष्ठमधितिष्ठन्ति चेतसा॥ (ऋग्वेद ९.८३.२)

ॐ भूर्भुवः स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये आसन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।)

प्राणायाम—प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्राणायामे विनियोगः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्सवि॒तुर्वरे॑ण्यं॒ भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि।
धियो॒ यो नः॑ प्रचो॒दया॑त्। ॐ आपो॒ ज्योती॒रसो॒मृतं॒ ब्रह्म॒ भूर्भुव॑स्व॒रोम्। *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

आसन शुद्धि— ॐ स्यो॒ना पृ॑थिवि भवानृक्ष॒रा नि॒वेश॑नी। यच्छा॑ नः॒ शर्म॑ स॒प्रथः॑।' *(१५ मन्त्र-२२ सूक्त-प्रथम मण्डल)* इस मन्त्र से जल प्रोक्षण करने से भूमि शुद्ध होती है।

शिखाबन्धनम्—

ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणित भक्षणे। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुण्डे ह्यपराजिते॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

(इस मन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

महा संकल्प —.....

गुरू प्रार्थना —

नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः॥ *(श्रृङ्गेरी मठीय आचार्य प्रार्थनम्)*

श्री गुरु परमगुरु परमेष्ठी गुरु सद्गुरु पादुकाभ्यो नमो नमः। हम लोग ब्रह्मानन्दं गुरु तं नमानि। गुरु परम्परा को भी बोल सकते हैं। कर सकते हैं। हरौ रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन॥ ईश्वर के रुष्ट होने पर गुरुजी रक्षा करते हैं एवं गुरुजी के कुपित होने पर कोई भी रक्षक नहीं है।

भूतोच्चाटन मन्त्र—

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुविसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारः ते गच्छन्तु शिवाज्ञया॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*

ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्। सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्रमहाकाय कल्पान्ते दहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इति भैरवं नमस्कृत्य। (इन मन्त्रों से भूतोच्चाटन कर भैरव जी से यज्ञ रक्षा की प्रार्थना करते हैं।)

गणपति प्रार्थना—गणानान्त्वा इति मन्त्रस्य गृत्समदऋषिः। गणपतिर्देवता। जगती छन्दः। गणपति प्रार्थने विनियोगः।

ॐ गणानान्त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमं।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन्नूतिभिः सीदसादनम्॥ *(ऋग्वेद २.२३.१)*

(इन मन्त्रों से गणपति प्रार्थना कर पुष्पाक्षत छोड़ना चाहिये।)

जल कलश पूजनम्—कलश में पूर्ण जल भरकर रखना चाहिये। फिर उसमें गन्ध अक्षत पुष्प कलश के अन्दर डालना चाहिये एवं बाहर भी चारों ओर लगाना चाहिये। गायत्री मन्त्र से तीन बार कलश छूकर जप करना चाहिये।

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रूद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागरास्सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदस्सामवेदोह्यथर्वणः॥
अङ्गैश्चसहितास्सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः। अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा॥
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः। सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानिजलदा नदाः॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिंकुरु॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-देवपूजा प्रकरण)*

ॐ इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रिस्तोमं सचता परुष्णया।
असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयाऽऽर्जीकीये शृणुह्या सुषोमया॥
सितासिते सरिते यत्र संगथे तत्राप्लुतासो दिव मुत्पतन्ति।
येवै तन्वंर्विसृजन्ति धीरास्ते जनासो अमृतत्वं भजन्ते॥ *(ऋग्वेद १०.७५.७)*
ॐ याः प्रवतो निवत उद्वत उदन्वती रनुदकाश्चयाः। ता अस्मभ्यं पयसा
पिन्वमानाः शिवा देवी रशिपदा भवन्तु सर्वा नद्यो अशिमिदा भवन्तु॥ *(ऋग्वेद ७.५०.४)*

(इन मन्त्रों को कलश छूकर पाठ करना चाहिये।)

सितमकरनिषण्णां शुभ्रवर्णां त्रिनेत्रां करधृत कलशोद्यत्पंकजाभीत्यभीष्टाम्।
विधि हरिहररूपां सेन्दुकोटीरचूडां भसितसितदुकूलां जाह्नवीं तां नमामि॥ *(स्मृति संग्रह)*

(इस मन्त्र से कलश में गङ्गाजी का ध्यान करना चाहिये।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आत्माराधनम्—हृदि स्थितं पंकजमष्टपत्रं सकेसरं कर्णिक मध्यनालं॥
अङ्गुष्ठमात्रं मुनयो वदन्ति ध्यायेत् च विष्णुं पुरुषं पुराणम्॥
हृदयकमलमध्ये सूर्यबिम्बासनस्थं सकलभुवनबीजं सृष्टिसंहारहेतुम्।
निरतिशयसुखात्म ज्योतिषं हंसरूपं परमपुरुषमाद्यं चिन्तयेदात्ममूर्तिम्॥
आराधयामि मणि सन्निभमात्मलिङ्गम्। मायापुरीरहृदय पंकज सन्निविष्टम्॥
श्रद्धा नदी विमलचित्त जलाभिषेकैः। नित्यं समाधि कुसुमैर्न पुनर्भवाय॥
देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो हंसः सदाशिवः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥
स्वामिन् सर्व जगन्नाथ यावत्पूजावसानकम्। तावत् त्वं प्रीति भावेन बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥ (देवपूजा)

ॐ आत्मने नमः। ॐ अन्तरात्मने नमः। ॐ परमात्मने नमः। ॐ ज्ञानात्मने नमः। आत्मपूजां समर्पयामि। इससे आत्मशुद्धि होती है। (इन मन्त्रों को कहकर अपने सिर पर अक्षत डाल लेवें।)

कलश स्थापन विधान—तत्र षोडश प्रस्थ परिमितान् शालीन् निक्षिप्य तदर्धं तण्डुलं तदर्धं तिलं तदर्धं सर्षपं इति वस्त्रान्तरितैः द्रव्यैः पीठं विरचय्य तस्मिन् कूर्च न्यस्य अन्यत्र उपकलशार्थं पीठान् विरचय्य तस्मिन् सौवर्णादि कुम्भान् अस्त्र मन्त्रेण जलैः क्षालयित्वा सूत्रवेष्टितान् आधोमुखान् न्यस्येत्।

सर्वतोभद्रमण्डल के ऊपर एक वस्त्र बिछाना चाहिये। उस पर १६ सेर धान, पुनः उस पर वस्त्र डालें ८ सेर चावल, पुनः उस पर वस्त्र डाले। उस पर ४ से तिल, पुनः वस्त्र डालें। उस पर २ सेर सफेद सरसों (अभाव में काला सरसों) उस पर दो कुश रखें (कुर्च) सोना चान्दी कॉच ताम्र पात्र (कलश)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रखें। **इसके ४ प्रकार हैं—**

१. सर्वतोभद्र मण्डल में देवताओं के ५७ आवाहन है। अतः ५७ कलश रख सकते हैं।

२. अष्टदिक्पालों के आठ एवं शेष के लिए एक प्रधान कलश-कुल ९

३. चार दिक्पालों के चार एवं शेष के लिए एक प्रधान कलश कलश कुल ५ कलश।

४. १ कलश (सभी देवताओं का एक ही पूजन।)

अस्त्र मन्त्रों से कलशो को धोना चाहिये। ॐ ह्रीं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर घोर घोर तर तनूरूप चट चट प्रचट प्रचट कर कह वम वम बन्ध बन्ध घातय घातय हुं फट्॥ इस मन्त्र को कहते हुए कलशों को स्वच्छ करें। उसे सूत्रों से बाँधकर, प्रधान कलश को तीन सूत्र से शेष कलशों को एक सूत्र से पंजर बाँधना चाहिये। (पंजर का अर्थ धागों से कलश के चारों ओर लपेटने का विधान) फिर कलशो को उलटा करके रखना चाहिये। दक्षिणभागे पुष्पचन्द क्षतादीन् न्यस्य आग्नेय भागे दीपादिकं न्सस्य, वामभागे स्वस्तिके वस्त्र गालितं जलं संस्थाप्य गुरुः नववस्त्रं संवेष्ट्य आचम्य उपवीतवत् उत्तरीयं वस्त्रं धृत्वा देवं संवंद्य प्रधान द्वारे मण्टपं प्रविश्य कलश समीपे स्वासने उपविश्य पवित्रपाणिः गुरून् गणपतिं च संवंद्य अस्त्रेण करशोधनं कृत्वा ताळत्रयादिग्बन्धन आग्निप्राकारांश्च कुर्यात्।

दाहिने ओर फूल चन्दन अक्षतादिकों को रखकर, आग्नेय भाग में दीप रखें। बायें भाग में स्वस्तिक चिन्ह लिखकर उस पर धान डालकर उस पर शुद्ध पात्र रखें। पात्र का मुख वस्त्र से बन्द रखें। उसमें जल भरें। आचार्य नवीन वस्त्र को धारण करें। उत्तरीय को यज्ञोपवीत के समान पहनें (ब्रह्म वस्त्र) भगवान का स्मरण अपने आसन पर बैठें। आचमन करें। पवित्र धारण करें। गुरु गणेश को नमस्कार करें। पहले लिखित "ॐ ह्रही स्फुर स्फुर-अस्त्र मन्त्र से हाथ धो लेवें। तीन बार ताल (हाथ) से हाथ मिलाने पर होन वाला)शब्द करें। फिर दिग्बन्ध अग्निप्राकार को करें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूक्ष्म मध्य महाशब्दाः दक्षसव्योभ्योद्भवाः। बोधासेचनिकोद्दीप्ति करा वह्नेस्त्रितालकाः॥ *(अनुष्ठान पद्धति-टिप्पणी)*

तीन प्रकार के ताळ (ताली) शब्द पहले सूक्ष्म, फिर मध्यम, एवं फिर अधिक शब्द का होना चाहिये। सूक्ष्म ताल दाहिने हाथ नीचे रखें उस पर बायें हाथ से ताली बजायें। इससे दाहिने हाथ में अग्नि उत्पन्न हुआ। मध्यम ताल में बायें हथेली नीचे उस पर दाहिने हाथ से ताल करें। तब दाहिने हाथ की अग्नि बायें हाथ में रखकर उसमें घी की हवन की कल्पना करनी चाहिये। फिर महाताल से दोनों हाथ को मिलाने से अग्नि प्रज्वलन की कल्पना करनी चाहिये। यह अग्नि का त्रिताल कहलाता है।

इसके पश्चात् दश दिशाओं का दिग्बन्धन करें ताकि कोई असुर यज्ञ में बाधा न पहुँचा सके। जहाँ बैठे हैं हवीं पर अस्त्र मन्त्र को पढते हुए चिटकी बजाकर दस दिशाओं का दिग्बन्धन करें। ''ॐ ह्रीं स्फुर स्फुर मन्त्र को पढकर अन्त में **प्राचीं दिशं बध्नामि** कहकर चिटकी बजायें। **फिर ॐ ह्रीं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर घोर घोर तरतनूरूप चट चट प्रचट प्रचट कह कह वम वम बन्ध बन्ध घातय घातय हुँ फट्''** आग्नेयीं दिशं बध्नामि कहकर चिटकी बजायें*(प्रपञ्चसार)*। **फिर** याम्यां दिशं बध्नामि। नैर्ऋतीं दिशं बध्नामि। वारुणीं दिशं बध्नामि। वायवीं दिशं बाध्नामि। साम्यं दिशं बध्नामि। ऐशानीं दिशं बध्नामि। ऊर्ध्वा दिशं बध्नामि। अधरां दिशं बध्नामि। प्रत्येक दिशा में इन मन्त्रों में पहले अस्त्र मन्त्र पढें एवं दिशं बध्नामि कहकर उस-उस दिशा में चिटकी बजायें। करयोः उद्दीप्त अग्निं दशदिक्षु विकिरेत्। हथ में उत्पन्न अग्नि को चारों ओर फेंकना चाहिय। (इसकी कल्पना करनी चाहिये) इससे यज्ञ एवं यज्ञशाला की रक्षा संपन्न हुआ।

अब अपने शरीर शुद्धि के लिए **नाडी शोधन करें।** इसके लिए द्वादशवारं प्रणवं संजप्य प्राणायामान् कृत्वा स्वस्य विराड्रूपं संकल्प्य अं इति त्रिवारमुच्चार्य पिङ्गलया वायु विमुच्य षडवारेण पिङ्गलया प्रपूर्य द्वादशवारेण परिकुम्भ्य इडया तं वायुं विमुञ्चेत् पुनः उं इति त्रिवारमुच्चार्य इडया वायुं विमुच्य षड्वारेण वायुं इडया प्रपूर्य द्वादशवारेण इडां प्रकुम्भ्य तं वायुं पिङ्गलया मुञ्चेत्। पुनः तद् वायुं सुषुम्ना मुखे आकृष्य मं इति षड्वारं प्रजप्य अं उं इति षड्वारं प्रजाय

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पिङ्गलया इडया च प्रपूर्य पुनः सुषुम्नां आपूर्य द्वादशवारं प्रजप्य सुषुम्नां परिकुम्भ्य तद्वायुं व्यत्यस्य बहिस्त्यजेत्।

इति नाडी शुद्धि प्रकारः।

१२ बार ॐकार का जप करें। प्राणायाम (संमंत्रक) करें। यहाँ मन्त्र केवल ॐकार। अपने को विराट पुरुष की कल्पना करें। अं को तीन बार कहते हुए पिङ्गला से (नाक के दाहिने छिद्र) अन्दर के कश्मल पूरित वायु को बाहर छोडें। फिर पिङ्गला से (नाक के दाहिने छिद्र से) ६ बार अं कहते हुए वायु को अन्दर लेना चाहिये। १२ बार अं कहते हुए उस वायु का कुम्भक (स्तम्भन) करें। इडा से (बायें नाक के छिद्र से) बाहर छोडें। फिर उं का तीन बार कहते हुए इडा से (नाक के बायें छेद से) वायुं को छोडें। फिर ६ बार उं कहते हुए इडा से वायु को अन्दर लेना चाहिये। १२ बार उं कहते हुए उस वायु का कुम्भक (स्तम्भन) करें। उस वायु को पिङ्गल से (नाक के दाहिने छिद्र से)बाहर करें। फिर अं उं कहकर छः बार पिङ्गल एवं इडा दोनों नाक के छिद्रों से वायु को खीच, फिर उस वायु को ब्रह्मरन्ध्र के सुषुम्ना में खींचकर अर्थात् मस्तिष्क नाडि से वायु को भरें। १२ बार मं का जप करते हुए सुषुम्ना में कुम्भक (स्तम्भन करें) उस वायु को उलटी नाक से। दाहिने नाक से खीचे वायु को बाये छिद्र से एवं बायें छिद्र से खीचें वायु को दाहिने छिद्र से छोडें।

यहाँ पर नाडि शोधन संपन्न हुआ। इससे शरीर शुद्धि होती है। जब तक शरीर शुद्धि नहीं होती है तब तक शरीर में देवता नहीं आते हैं। कर्म सफल नहीं होता है। अतः नाडी शोधन आवश्यक हैं। अभ्यास से यह क्रिया बहुत सरल है। **प्रणवेन षोडशवारं प्राणायामं कृत्वा पिङ्गलया वायुं विमुच्य द्वात्रिंशद्वारं प्राणायामं कृत्वा इडया वायुं प्रपूर्य चतुःषष्टिवारेण सुषुम्ना नाड्यां कुम्भकं कुर्यात्॥**

इति रेचक पूरक कुम्भक प्रकारः

ॐकार से १६ बार कहते हुए पिङ्गल। (नाक से दाहिने छिद्र से) वायु को बाहर छोडे। ३२ बार ॐकार कहते हुए इडा से नाक के बायें छिद्र से ..वायु

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

को अन्दर भर लेवें। ६४ बार ॐकार कहते हुए सुषुम्ना नाडि में (ब्रह्मरन्ध्र मस्तिष्क में) कुम्भक (स्तम्भन) करें। साधना करने से यह सम्भव है। अनेन अत्यन्त दुरितनिवृत्तिः स्यात्। इसके अत्यधिक पापों का निवारण होता है।

एवं रेचकादिना जीवपरमात्मनोः ऐक्यं मनसा ध्यात्वा पुनः ॐ ह्रीं हं सः इत्यनेन मूलाधारस्थं जीवं, सुषुम्ना मार्गेण द्वादशांतस्थ परमात्मनि संयोज्य लं इति पादाग्रं वं इति नाभिं रं इति हृदयं यं इति कण्ठं हं इति तालुदेशं संस्पृश्य क्रमेण पृथ्वी अप् तेज वायु आकाशानां मण्डलानि संकल्प्य ह्लां इति पञ्चविंशति संख्यं पञ्चप्राणायामान् कृत्वा ह्लां हुँ फट् इति पादागादि नाभ्यन्तं व्याप्य पृथिवीं अप्सु संहरामि। पुनः ह्वीं इति पञ्चविंशति संख्य चतुर्वारं प्राणायामान् कृत्वा ह्वीं हुं फट् इति नाभ्यादि हृदयान्तं व्याप्य अपः अग्नौ संहरामि। पुनः ह्रूं इति पञ्चविंशति संख्यं त्रिवारं प्राणायामान् कृत्वा ह्रूं हुं फट् इति हृदयादि कण्ठां व्याप्य अग्निं वायौ संहरामि। पुनः ह्यौं इति पञ्चविंशति संख्यं द्विवारं प्राणायामं कृत्वा ह्यौं हुं फट् इति कण्ठादि ताल्वन्तं व्याप्य वायुं आकाशे संहरामि। पुनः हौं इति पञ्चविंशति संख्यं सकृत् प्राणायामं कृत्वा ह्यौं हुं फट् इति ताल्वादि द्वादशान्तं व्याप्य आकाशं परमात्मनि संहरामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

इति भूत संहारः

यह भूत संहार प्रक्रिया यह महत्व पूर्ण अङ्ग है। इसमें पञ्च महाभूतों का संहार कर उन्हें परमात्मा में लन करा देते हैं। तब शरीर में केवल परमात्मा का शुद्ध रूप मात्र रहता है। कोई कश्मल नहीं। रेचक पूरक कुम्भकों से जीव एवं परमात्मा की एकता का चिन्तन करना चाहिये। फिर ॐ ह्रीं हं सः कहते हुए मूलाधार .. शरीर के नीचले हिस्से में विद्यमान जीव को सुषुम्ना मार्ग से ब्रह्मरन्ध्र में स्थित परमात्मा में मिलाना चाहिये। लं कहकर पैर के अग्र भाग को, वं कहकर नाभि को, रं कहकर हृदय को, यं कहकर कण्ठ को एवं हं कहकर तालु प्रदेश को स्पर्श करें। फिर मन में पृथ्वी, जल, तेज, वायु एवं

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आकाश मण्डलों का चिन्तन करें।

२५ बार ह्लां कहते हुए ५ प्राणायाम करते हुए ह्लां हुं फट् कहते हुए पैर से नाभि तक हाथ फिराते हुए वायु तत्व को नाभि में स्थित जल तत्व में मिलाने का संकल्प करना चाहिये। २५ बार ह्लीं करते हुए ४ प्राणायाम करते हुए ह्लीं हुं फट् कहते हुए नाभि से हृदय तक हाथ फिराते हुए जल तत्व को हृदय स्थित अग्नितत्व में मिलाने का संकल्प करना चाहिये। फिर २५ बार ह्लीं कहते हुए ३ प्राणायाम करते हुए ह्लूं हुं फट् कहते हुए हृदय से कण्ठ तक हाथ फिराते हुए अग्नितत्व को वायु तत्व में (कण्ठ में स्थित) मिलाने का संकल्प करना चाहिये। फिर २५ बार हौं कहते हुए दो प्राणायाम करते हुए हौं हुं फट् कहते हुए कण्ठ से तालु प्रदेश तक हाथ फिराते हुए वायु तत्व को तालु स्थित आकाश तत्व में मिलाने का संकल्प करना चाहिये। फिर २५ वा हौं कहते हुए एक प्राणायाम करते हुए हौं हुं फट् कहते हुए तालु प्रदेश से ब्रह्मरन्ध्र तक फिराते हुए आकाश तत्व को ब्रह्मन्ध्र स्थित परमात्म तत्व में लीन करना चाहिये। अब मात्र निर्विकार परमात्मा शरीर में है।

शोषण विधान—इस विधान से शरीर में विद्यमान सभी कल्मशों का शोषण होता है।

यं इति वायु बीजेन षोडशवारं प्राणायामं कृत्वा वायुं इडया विमुच्य इडामुखे नाभिपषे च षड् बिन्दु सहितं धम्रं वायुमण्डलं तस्मिन् धुम्रं यं बीजं च ध्यात्वा, तद् बीजेन द्वात्रिंशद्वारं प्राणायामं कृत्वा इडया तद् वायुमण्डलेन सह वायुमापूर्य मण्डल द्वयं एकीकृतं ध्यात्वा, चतुःषष्टि वारं प्राणायामं कृत्वा परिकुम्भ्य एकीकृत वायुमण्डलात् संजातेन वायुना देहं संशोषितं ध्यात्वा तद् वायुं पिङ्गलया मुञ्चेत। *(अनुष्ठान पद्धति)*

इति शोषणं

यं नामक वायुतत्व के बीच मन्त्र को १६ बार कहते हुए इडा (नाक के बायें छिद्र) से साँस छोड़ते हुए प्राणायाम करें। बायें नाक के छेद में एवं नाभि

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

के नंध्र में छः बिन्दु युक्त वायुमण्डल को एवं उसमें धूम्र वर्ण के यं बीच का ध्यान करें उस बीजमन्त्र को ३२ बार कहते हुए प्राणायाम करें। इडा (बायें नाक के छेद) से वायु को भरकर दोनों मण्डलों का एकीकृत मानकर इडा मण्डल यानि बायें नाक के छिद्र में स्थित मण्डल एवं नाभिप) यानि नाभि में स्थित मण्डल) फिर ६४ बार बीज मन्त्र को जपते हुए कुम्भक (स्तम्भन) करते हुए एकीकृत वायुमण्डल से उत्पन्न वायु से देह सूख गया है समझकर उस वायु को पिङ्गला (दाहिने नाक के छिद्र) से छोडना चाहिये। इससे शरीर में विद्यमान समस्त कश्मलों का शोषण होता है।

दाहन—इस विधान से शरीर में शोषित (सुखाये गये) सभी कश्मलों का दहन हो जाता है।

पुनरग्निबीजेन षोडशवारं प्राणायामं विधाय पिङ्गलया वायुं विमुच्य पिङ्गलामुखे हृदिपषे च स्वस्तिकसहितं त्रिकोणं रक्तं अग्निमण्डलं तन्मध्ये रक्तं रं इति च ध्यात्वा, तद् बीजेन द्वात्रिंशद्वारं प्राणायामं कृत्वा पिङ्गलया तद् अग्निमण्डलेन सह वायुमापूर्य मण्डलद्वयं एकीकृतं ध्यात्वा, चतुःषष्टिवारं प्राणायामं कृत्वा परिकुम्भ्य एकीकृत अग्निमण्डलात् संजातेन अग्निना देहं दग्धं ध्यात्वा तद् वांयु इडया विमुञ्चेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

इति दाहानं

पिर रं नामक अग्नि बीज मन्त्र को १६ बार जपते हुए पिङ्गला से (नाक के दाहिने छिद्र) साँस छोड़ते हुए प्राणायाम करें। नाक के दक्षिण छिद्र में एवं हृदय प.. में स्वस्तिक सहित त्रिकोणाकार रक्तवर्णीया अग्निमण्डल को एवं उसमें रक्त वर्णीय रं बीज मन्त्र का ध्यान रकें। उस बीज मन्त्र का ३२ बार जप करते हुए प्राणायाम करें। पिङ्गला से वायु को भरकर दोनों मण्डलों को एकीकृत मानकर (पिङ्गला मण्डल यानि दाहिने नाक के छिद्र का मण्डल एवं हृदि पद्म यादि हृदय में स्थित मण्डल, फिर ६४ बार बीज मन्त्र को जपते हुए, कुम्भक (स्तम्भन) करते हुए, एकीकृत अग्निमण्डल से उत्पन्न अग्नि से देह जल गया है समझकर उस वायु को इडा नाक के बायें छिद्र से छोडना चाहिये। इससे शरीर में विद्यमान समस्त कल्मश जो पहले सूख गये थे अब जल गये है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्लावन—इस विधान में शरीर में दग्ध (जलायें गये सभी कल्मशों का) निराकरण हो गया है। साथ ही शरीर भी जल गया है। फिर से कश्मल रहित शरीर का निर्माण करने का विधान है।

वं इति अमृतबीजेन षोडशवारं प्राणायामं कृत्वा इडया वायुं विमुच्य इडामुखे द्वादशांतपद्मे च पद्म सहितं अधचन्द्रात्मकं सितं आप्यं मण्डलं तन्मध्ये शुभ्र वं इति च ध्यात्वा, तद् बीजेन द्वात्रिंशद्वारं प्राणायामं कृत्वा इडया तद् अमृतमण्डलेन सह वायुमापूर्य मण्डलद्वयं एकीकृतं ध्यात्वा, चतुःषष्टिवारं प्राणायामं कृत्वा परिकुम्भ्य एकीकृत अमृतमण्डलात् संजातेन अमृतेन देहं द्वादशांतपश्चात् गलितैः परचैतन्यामृतजलैः प्रपञ्चैकीकृतं आप्लावितं ध्यायेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

वं नामक अमृत तत्व के बीज मन्त्र को १६ बार जपते हुए इडा से साँस छोडते हुए प्राणायाम करें। इडा में एवं द्रादशान्त पद्म (ब्रह्मरन्ध्र) में पद्म सहित अर्धचन्द्रकार शुक्ल (सफेद) रंग का अमृत मण्डल को, एवं उसके बीच में शुक्ल वर्ण के वं बीज मन्त्र का ध्यान रकें। फिर उस बीज से ३२ बार जपते हुए इडा एवं अमृत मण्डल से वायु को भरकर प्राणायाम करते हुए, दोनों मण्डलों को एकीकृत मानकर (इडा मण्डल एवं पद्म सहित अर्धचन्द्रकार अमृत मण्डल) फिर ६४ बार वं बीजाक्षर को जपते हुए कुम्भक (स्तम्भन) करें। एकीकृत अमृत मण्डल से उत्पन्न अमृत से देह को, द्वादशान्त (सहस्रार) पद्म से गिर रहे परमात्म वस्तु अमृत जल से आप्लावित शरीर अमृतमय हो गया है। इस प्रकार पहले कश्मलों का विनाश होकर फिर अमृतमय शरीर की प्राप्ति हो गयी।

यहाँ पर अमृतमय शरीर प्राप्त हुआ

आगे पञ्चभूतसृष्टि—लं इति पृथ्वी बीजेन बुद्बुदाभं ब्रह्माण्डं संकल्प्य हं इति सुरीकरणंकृत्वा सोहं इति द्वादशान्तपश्चात् जीवं स्वहृदये संयोज्य, ह्रौं इति पञ्चविंशति संख्यं सकृत प्राणायामं कृत्वा, ह्रौं नमः इति द्वादशान्तादि ताल्वन्तं व्याप्य आत्मनः आकाशं सृजामि, पुनः ह्रौं इति पञ्चविंशति संख्यं द्विवारं प्राणायामं कृत्वा ह्रौं नमः इति ताल्वादि कण्ठान्तं

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

व्याप्य आकाशात् वायुं सृजामि, पुनः ॠं इति पञ्चविंशति संख्यं त्रिवारं प्राणायामं कृत्वा ॠं इति पञ्चविंशति संख्यं चतुर्वारं प्राणायामं कृत्वा ह्रीं नमः इति हृदयामि नाभ्यन्तं व्याप्य अग्नेः अपः सृजामि, पुनः ह्लां इति पञ्चविंशति संख्यं पञ्च प्राणायामान् कृत्वा ह्लां नम इति नाभ्यादि पादान्तं व्याप्य अद्भ्यः पृथिवीं सृजामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

इस प्रक्रिया में नष्ट हुए शरीर की पञ्चभूत सृष्टि विधान है। लं नामक पृथ्वी बीज से बद्बुदाकार के ब्रह्माण्ड सृष्टि का चिन्तन करें। हं नामक आकाश बीज का स्मरण करते हुए उसमें आकाश का चिन्तन करें। मैं परमात्मा हूँ मानते हुए सहस्रार से (ब्रह्मरन्ध्र) जीव को हृदय पद्म में स्थपित करें। हौं आकाश बीज का २५ बार जप करते हुए एक प्राणायाम करें। हौं नमः कहकर ब्रह्मरन्ध्र से तालु पर्यन्त हाथ फेरते हुए परमात्मा से आकाश सृष्टि की कल्पना करें। फिर ह्रौं नमः वायु बीज का २५ बार जप करते हुए दो प्राणायाम करें। ह्रौं नमः कहकर तालू से कण्ड तक हाथ फेरते हुए आकाश से वायु सृष्टि का चिन्तन करें। फिर ह्रूं अग्नि बीज का २५ बार जप करते हुए तीन प्राणायाम करें। ॠं नमः कहकर कण्ठ से हृदय तक हाथ फेरते हुए वायु से अग्नि सृष्टि का चिन्तन करें। फिर ह्रीं जल बीज का २५ बार जप करते हुए चार प्राणायाम करें। ह्रीं नमः कहकर हृदय से नाभितक हाथ फेरते हुए अग्नि से जल सृष्टि का चिन्तन करें। फिर ह्लां पृथ्वी बीज का २५ बार जप करते हुए पाञ्च प्राणायाम करें। ह्लां नमः कहकर नाभि से पॉव तक हाथ फेरते हुए जल से पृथ्वी सृष्टि का चिन्तन करें।

पुनः षष्टयुत्तर त्रिशत प्रणव प्राणायामं कृत्वा, संवत्सरोषितं संकल्प्य फडन्त प्रणवेन अण्ड भेदं कृत्वा तत् शकले द्यावापृथिव्यौ ध्यात्वा तदन्तर्वर्तिनं जीवं विराड्रूपं ध्यात्वा पुनः लिपि प्राणायामं कृत्वा पीठन्यासं कृत्वा स्वहृदये लिपि आवाह्य तत्रैव सकलीकृत्य मानसपूजां विधय पुनः प्राणायामं कृत्वा लिप्या करन्यासं कृत्वा देहे व्याप्य लिपिन्यासं कृत्वा अङ्गन्यासं कृत्वा ऋषिछन्दोदेवताः न्यस्य यथाशक्ति लिपिं संजप्य व्याप्य लयाङ्गं कृत्वा गणानान्त्वेति गणपति

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मन्त्रं दुर्गा मन्त्रं च जप्त्वा पुनः मन्त्रोदयं कुर्यात्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

३६० बार ॐकार का जप करते हुए प्राणायाम करें एक वर्ष बीता है समझकर (ब्रह्माण्ड सृष्टि का) ॐफट् कहते हुए ब्रह्माण्ड भेदन की कल्पना कर उन दो टुकडो को भूमि एवं आकाश मानते हुए उसके बीच में स्थित जीव को विराट् स्वरूप मानते हुए **लिपि प्राणायाम** को करें। "अं आं इं ई उं ऊं ऋं ॠं लं लृं एं ऐं ओं औं अं अः। कं खं गं घं ङं। चं छं ज झं ञं। टं ठं ड ढं णं। तं थं दं धं नं। पं फं ब भं मं। यं र लं वं शं षं सं हं ळं क्षं" यह लिपि प्राणायाम मन्त्र है। फिर पीठ न्यास करें। गुं गुरवे नमः—इति मूर्धनि (मस्तक में) गं गणपतये नमः-इति मूलाधार में (मूल में)

आधारशक्त्यै नमः। मूल प्रकृत्यै नमः। आदि कूर्माय नमः। अनन्ताय नमः। पृथिव्यै नमः। कहते हुए मूलाधार से नाभितक न्यास करें।

धर्माय नमः-दक्षिण ऊरु (दाहिना जॉघ), ज्ञानाय नमः-दक्षिण अंसे (दाहिनी भुजा), वैराग्याय नमः-वाग अंसे (बायें भुजा), ऐश्वर्याय नमः-वाम ऊरु (बायें जॉघ), अधर्माय मनः-नाभि मूले (नाभि के मूल में), अज्ञानाय नमः-दक्षिण पार्श्वे (दाहिने पार्श्व में), अवैराग्याय नमः-मुखे (मुख में), अनैश्वर्याय नमः-वाम पार्श्वे (बायें पार्श्व में), सं सत्वाय नमः-मध्ये सूत्ररूपेण (बीच में धागे के रूप में नाभि के पास), रं रजसे नमः-मध्ये सूत्ररूपेण (बीच में धागे के रूप में नाभि के पास), तं तमसे नमः-मध्ये सूत्ररूपेण (बीच में धागे के रूप में नाभि के पास), मां मायायै नमः-वितान रूपेण (छत के रूप मे सिर के ऊपर), विं विद्यायै नमः-वितान रूपेण (छत के रूप मे सिर के ऊपर), पं पद्माय नमः-हृदय (हृदय में), अं अर्कमण्डलाय नमः-हृदय (हृदय में), उं सोममण्डलाय नमः-हृदय (हृदय में), मं वह्निमण्डलाय नमः-हृदय (हृदय में), अं आत्मने नमः-(हृदय में), उं अन्तरात्मने नमः-(हृदय में), मं परमात्मने नमः-(हृदय में), ॐवामायै नमः। हृदय पद्म के आठ दलों में, ॐज्येष्ठायै नमः। हृदय पद्म के आठ दलों में, ॐरौद्र्यै नमः। हृदय पद्म के आठ दलों में, ॐकाल्यै नमः। हृदय पद्म के आठ दलों में, ॐकलविकलिन्यै नमः। हृदय पद्म के आठ दलों में, ॐबल विकलिन्यै नमः। हृदय पद्म के आठ दलों में, ॐबल प्रमथिन्यै नमः। हृदय पद्म के आठ दलों में, ॐसर्व भूत दमन्यै नमः। हृदय पद्म के आठ दलों में, (हृदय पद्म के बीच में।, ॐमनोन्मन्यै

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नमः (हृदय पद्म कर्णिकायां), ॐनमो भगवते सकल गुणात्म शक्ति युक्ताय अनन्ताय योगपीठात्मने नमः। *(अनुष्ठान पद्धति)*

पीठ न्यास पूरा हुआ

अपने हृदय में अकारादि सभी लिपियों का आवाहन करें। वहीं पर सभी का मानस पूजा करें। उससे पूर्व **सकलीकरण न्यास** कर लें।

ॐहृदयाय नमः। ॐशिरसे स्वाहा। ॐशिखायै वषट्। ॐकवचाय हुम्। ॐनेत्रत्रयाय वौषट्। ॐअस्त्रायफट्। न्यास के बाद आत्मा का मानस पूजन करें। ॐलं पृथिव्यात्मने गन्धं कल्पयामि। ॐहं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐयं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐरं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐवं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐमं परमात्मने सर्वोपचार पूजां कल्पयामि। फिर प्राणायाम करें। पिपि से करन्यास करें

ॐअं कं खं गं घं ङं आं-अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐइं चं छं जं झं ञं ईं-तर्जनीभ्यां नमः। ॐउं टं ठं डं ढं णं ऊं- मध्यमाभ्यां नमः। ॐएं तं थं दं धं नं ऐं-अनामिकाभ्यां नमः। ॐओं पं फं बं भं मं औं - कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐअं यं रं लं वं शं षं हं ळं क्षं अः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। फिर पिपि को देह में व्याप्य करें।

अंनमः आं नमः इं नमः ईं नमः उं नमः ऊं नमः करतलपृष्ठपार्श्वेषु न्यासं कुर्यात्। ऋं नमः-दाहिना अङ्गुष्ठा, ॠं नमः-दाहिना तर्जनी, लृं नमः- दाहिना मध्यमा, लॄं नमः- दाहिना अनामिका, एं नमः-दाहिना कनिष्ठिका *(अनुष्ठान पद्धति)*, ऐं नमः-वाम कनिष्ठिका, ओं नमः-वाम अनामिका, औं नमः-वाम मध्यमा, अं नमः- वाम तर्जनी, आं नमः-वाम अङ्गुष्ठ, कं नः-दाहिने हाथ के तर्जनी मूल से अग्र तक (पर्व सन्धियों के अग्र में।), खं नमः-दाहिने हाथ के तर्जनी मूल से अग्र तक (पर्व सन्धियों के अग्र में।), गं नमः-दाहिने हाथ के तर्जनी मूल से अग्र तक (पर्व सन्धियों के अग्र में।), घं नमः-दाहिने हाथ के तर्जनी मूल से अग्र तक (पर्व सन्धियों के अग्र में।), ङं नमः-दाहिने हाथ के मध्यमा मूल से अग्र तक, चं नमः-दाहिने हाथ के मध्यमा मूल से अग्र तक, छं नमः-दाहिने हाथ के मध्यमा मूल से अग्र तक, जं नमः-दाहिने हाथ के मध्यमा मूल से अग्र तक, झं नमः-दाहिने हाथ के अनामिका के मूल से अग्र

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तक, ॠं नमः-दाहिने हाथ के अनामिका के मूल से अग्र तक, टं नमः-दाहिने हाथ के अनामिका के मूल से अग्र तक, ठं नमः-दाहिने हाथ के अनामिका के मूल से अग्र तक, डं नमः-दाहिने हाथ के कनिष्ठिका मूल से अग्र तक, ढं नमः-दाहिने हाथ के कनिष्ठिका मूल से अग्र तक, णं नमः-दाहिने हाथ के कनिष्ठिका मूल से अग्र तक, तं नमः-दाहिने हाथ के कनिष्ठिका मूल से अग्र तक, थं नमः-बाये हाथ के कनिष्ठिका मूल से अग्र तक, दं नमः-बाये हाथ के कनिष्ठिका मूल से अग्र तक, धं नमः-बाये हाथ के कनिष्ठिका मूल से अग्र तक, नं नमः-बाये हाथ के कनिष्ठिका मूल से अग्र तक, पं नमः-बाये हाथ के अनामिका मूल से अग्र तक, फं नमः-बाये हाथ के अनामिका मूल से अग्र तक, बं नमः-बाये हाथ के अनामिका मूल से अग्र तक, भं नमः-बाये हाथ के अनामिका मूल से अग्र तक, मं नमः- बाये हाथ के मध्यमा के मूल से अग्र तक, यं नमः-बाये हाथ के मध्यमा के मूल से अग्र तक, रं नमः-बाये हाथ के मध्यमा के मूल से अग्र तक, लं नमः-बाये हाथ के मध्यमा के मूल से अग्र तक, वं नमः- बाये हाथ के तर्जनी के मूल से अग्र तक, शं नमः-बाये हाथ के तर्जनी के मूल से अग्र तक, षं नमः-बाये हाथ के तर्जनी के मूल से अग्र तक, सं नमः-बाये हाथ के तर्जनी के मूल से अग्र तक, हं नमः-अङ्गुष्ठ के मूल, (दोनों हाथ), ळं नमः-अङ्गुष्ठ के मध्य, (दोनों हाथ), क्षं नमः-अङ्गुष्ठ के अग्र, (दोनों हाथ)

अङ्गन्यास—ॐ अं कं खं गं घं ङं आं - हृदयाय नमः, ॐ इं चं छं जं झं ञां ईं-शिरसे स्वाहा, ॐ उं टं ठं डं ढं णं ऊं-शिखायै वषट्, ॐ ऐं तं थं दं धं नं ऐं-कवचाय हुम्, ॐ ओं पं फं बं भं मं औं -नैत्रत्रयाय वौषट्, ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः-अस्त्रायट्

ऋषि छन्द देवता न्यास—शब्द ब्रह्म ऋषिः गायत्री छन्दः मातृका सरस्वती देवता शिरसि ऋषिः, मुखे छन्दः, हृदये देवता का स्मरण कर लेवे। ऋषि देवता छन्द न्यास करने के बाद यथा शक्ति लिपि का पजकर उसे समस्त शरी में व्याप्तकर अङ्गन्यास का लयाङ्ग यानि उलटा करके न्यास करें।

ॐ अं यं रं लं वं षं षं सं हं ळं क्षं अः - अस्त्राय फुट्, ॐ ओं पं फं बं भं मं औं - नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ऐं तं थं दं धं नं ऐं - कवचाय हुम्, ॐ उं टं ठं डं ढं णं ऊं - शिखायै वषट् , ॐ इं चं छं जं झं ञां ईं - शिरसे स्वाहा, ॐ अं कं खं गं घं ङं आं-हृदयाय नमः *(अनुष्ठान पद्धति)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ ग॒णानां॑त्वा ग॒णपतिं हवामहे क॒विं क॑वी॒ना मु॑प॒मश्र॑वस्तमम्।
ज्ये॒ष्ठराजं॒ ब्रह्म॑णां ब्रह्मणस्पत॒ आनः॑ शृण्वन्नू॒तिभिः॑ सीद॒सादं॑नम्॥ (ऋग्वेद २.२३.१)

इस मन्त्र से गणपति की प्रार्थना करें।

ॐ जा॒तवे॑दसे सुनवाम॒ सोम॑मराति य॒तो निद॑हाति॒ वेदः॑। स नः॑ पर्ष॒दति॑ दु॒र्गाणि॒ विश्वा॑ ना॒वेव॒ सिन्धुं॑ दुरि॒तात्य॒ग्निः॥

(ऋग्वेद १.९९.१)

इस मन्त्र से दुर्गा देवी की प्रार्थना करें।

मन्त्रोदय विधान—ह ह ह इति प्रजप्य मूलाधारस्थं पीवंपरमात्मनि लाप्य तन्मंत्रात्मकं ध्यात्वा पुनः प्रणावसहित मूलमन्त्रं उक्त्वा हृदय प.. सुयोज्य मूल मंत्रेण पञ्चविशति संख्यं प्राणायाम त्रयं कृत्वा क्रमेण पर सूक्ष्म स्थूलात्मकं ध्यात्वा तस्य विराड्रूपस्य आधारार्थं पीठन्यासं कृत्वा स्वहृदये मूर्ति संकल्प्य आवाह्य सकलीकृत्य मानस पूजां विधाय पूज्य पूजकयोः ऐक्यं संभाव्य मूलेन पञ्च विंशति संख्यं प्राणायामं कृत्वा तेजः करां पिङ्गलया अंजलो निपात्य करन्यास कृतवा ताभ्यां हस्ताभ्यां मूलेन देहे त्रिवारं व्याप्य तत्वन्यासं कुर्यात्। (अनुष्ठान पद्धति)

ह ह ह इसका जप कर मूलाधार में स्थित जी को परमात्म में मिलाना चाहिये। अब जीव मन्त्रात्मक हो गया मानना चाहिये। फिर प्रणव सहित मूल मन्त्र का जप करें। ॐ घृणिः सूर्यआदित्यः। देवता को हृदय में स्थापित करें। फिर २५ बार मूल मन्त्र का जप करते हुए तीन बार प्राणायाम करें। पहले प्राणायाम से परब्रह्म रूपी, दूसरे प्राणायाम से जीव सूक्ष्मरूप, एवं तीसरे प्राणायाम से जीव स्थूल रूप को प्राप्त करता है। उस विराट् स्वरूप के जीव के आधार के लिए पीठ न्यास करें पं पद्माय नमः कहकर पीठन्यास करें। अपने हृदय मे सूर्य मूर्ति का चिन्तन करें, आवाहन करें "ॐ घृणिः सूर्यआदित्यः। सूर्यं

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आवाहयामि।'' सकलीकरण कर ॐ हृदयाय नमः। ॐ शिरसे स्वाहा। ॐ शिखायै वषट् ॐ कवचाय हुम् ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ अस्त्राय फट्।

मानस पूजां कृत्वा—ॐ लं पृथिव्यात्मने गन्धं कल्पयामि। ॐ आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐ वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ मं परमात्मने सर्वोपचार पूजां समर्पयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

पूजन करने वाला एवं पूजित देवता दोनों उपरोक्त क्रियाओं से एक हुए मानकर मूल मन्त्र ''ॐ घृणिः सूर्यआदित्यः'' इसे २५ बार जपते हुए प्राणायाम करें। तेज कणों को पिङ्गला से (नाक के दाहिने छिद्र से) अंजली में भरकर सूर्य मूल मन्त्र से करन्यास करें।

ॐ घृणिः सूर्यआदित्यः **अङ्गुष्ठाभ्यां नमः**। ॐ घृणिः सूर्यआदित्यः **तर्जनीभ्यां नमः**। ॐ घृणिः सूर्यआदित्यः **मध्यमाभ्यां नमः**। ॐ घृणिः सूर्यआदित्यः **अनामिकाभ्यां नमः**। ॐ घृणिः सूर्यआदित्यः **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**। ॐ घृणिः सूर्यआदित्यः **करतल करपृष्ठाभ्यां नमः**। दोनों हाथों से तीन बार देह पर हाथ फिराये तत्वन्यास को करें।

तत्वन्यास-कलाध्वा—ॐ ह्रौं नमः पराय शान्त्यतीत कलात्मने नमः मूर्धनि। ॐ ह्रौं नमः पराय शान्तिकलात्मने नमः मुखे। ॐ ह्रौं नमः पराय विद्या कलात्मने नमः हीदये। ॐ ह्रौं नमः पराय प्रतिष्ठा कलात्मने नमः गुह्ये। ॐ ह्लां नमः पराय निवृत्ति कलात्मने नमः पादयोः कहकर कला न्यास करें।

ॐ मं नमः पराय जीवात्मने नमः सर्वाङ्गे, ॐ भं नमः पराय प्राणात्मने नमः हृदये, ॐ बं नमः पराय बुध्यात्मने नमः हृदये, ॐ फं नमः पराय अहंकारात्मने नमः हृदये, ॐ पं नमः पराय मन आत्मने नमः हृदये, ॐ नं नमः पराय शब्दतन्मात्रात्मने नमः मूर्धनि, ॐ धं नमः पराय स्पर्शतन्मात्रात्मने नमः मुखे, ॐ दं नमः पराय रूप तन्मात्रात्मने नमः हृदये, ॐ थं नमः पराय रस तन्मात्रात्मने नमः गुह्ये, ॐ तं नमः पराय गन्ध तन्मात्रात्मने नमः पादयोः, ॐ णं नमः पराय श्रोत्रात्मने नमः श्रोत्रयोः

ॐ ढं नमः पराय त्वगात्मने नमः त्वचि। ॐ डं नमः पराय चक्षुरात्मने नमः चक्षुषि। ॐ ठं नमः पराय जिह्वात्मने नमः जिह्वायां। ॐ टं नमः पराय घ्राणात्मने

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नमः नासिकायोः। ॐ ॠं नमः पराय वागात्मने नमः वाचि। ॐ ऋं नमः पराय पाणयात्मने नमः हस्तयोः। ॐ जं नमः पराय पादात्मने नमः पादयोः। ॐ छं नमः पराय पाय्वात्मने नमः अपाने। ॐ चं नमः पराय उपस्थात्मने नमः गुह्ये। ॐ ड. नमः पराय आकाशात्मने नमः मूर्धनि। ॐ घं नमः पराय वाय्वात्मने नमः मुखे। ॐ गं नमः पाया तेज आत्मने नमः हृदये। ॐ खं नमः पराय अबात्मने नमः हुह्ये। ॐ कं नमः पराय पृथिव्यात्मने नमः पादयोः। ॐ शं नमः पराय हृत्पुण्डरीकात्मने नमः हृदये। ॐ हं नमः पराय सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः हृदये। ॐ सं नमः पराय सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः हृदये। ॐ रं नमः पराय वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः हृदये। ॐ हौं पराय शान्त्यतीतात्मने नमः मूर्धनि। ॐ ह्यौं नमः पराय शान्त्यात्मने नमः मुखे ॐ हं नमः पराय विद्यात्मने नमः हृदये। ॐ ह्रीं नमः पराय प्रतिष्ठात्मने नमः गुह्ये। ॐ ह्रां नमः पराय निवृत्यात्मने नमः पादयोः *(अनुष्ठान पद्धति)*। इति तत्व न्यासः।

शंखपूराणम्—अग्रतः गोमय जलेन चतुरस्त्र मण्डलं कृत्वा प्रणवेन तत्र गन्धपुष्पाक्षतान् न्यस्य अस्त्रेण शंखं शंखपादमपि प्रक्षाल्य वह्नि मण्डलेन शंखपादं, सूर्य मण्डलेन शंखं च न्यस्य हृदय मन्त्रेण शंखे गन्धपुष्पाक्षतान् न्यस्य शिरोमन्त्रेण शुद्धजलैः शंखमापूर्य गन्धपुष्पं निक्षिप्य वह्नि मण्डलेन शंखपादं सूर्यमण्डलेन शंखं, सोम मण्डलेन जलं संपूज्य, शिखा मन्त्रेण गालिनी मुद्रया जलस्य उत्पवनं कृत्वा आलोड्य आपूर्य गुरुड मुद्रया निर्विषीकृत्य, सुरभिमुद्रया अमृतीकृत्य, नेत्र मन्त्रेण जल निरीक्ष्य कवचमन्त्रेण हस्ताभ्यां अच्छाद्य, अस्त्र मन्त्रेण संरक्ष्य, गङ्गे इत्यादिना तीर्थमावाह्य किंचित् पीठं संपूज्य मूलेन स्वहृदयात् देवमावाह्य सकलीकृत्य निवेद्य मुद्रा प्रदर्श्य वारं मूलमन्त्रं प्रजप्य वर्धन्यां किंचित् परिषिच्य शिष्टजलेन प्रणवेन पूजा द्रव्याणि आत्मानं च त्रिः प्रोक्षेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

सामने गोमय जल से चतुरस्त्र मण्डल को बनाकर **ॐ कार** जपते हुए गन्ध पुष्प अक्षतों को डालकर **ॐ अस्त्राय फट्** करते हुए शंख को एवं खंख के आसन को धोवें। **ॐ रं वह्निमण्डलाय दश कलात्मने नमः** कहकर शंख पाद को

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मण्डल पर रखें। **ॐ हं सूर्यमण्डलाय द्वादश कलात्मने नमः** ''कहकर शंख को मण्डल पर रखें।

ॐ हृदयाय नमः कहते हुए शंख पर गन्ध पुष्प एवं अक्षत चडाये। **ॐ शिरसे स्वाहा** कहते हुए शुद्ध जल से शंख में जल भरें। उसमें गन्ध पुष्प डालें। **ॐ रं वह्निमण्डलाय नमः** कहकर शंखपाद का पूजन करें। **ॐ हं सूर्यमण्डलाय नमः** कहकर शंख का पूजन करें। **ॐ सं सोममण्डलाय नमः** कहकर जल का पूजन करें। **ॐ शिखायै वषट्** कहकर गालिनी मुद्रा से जल का उत्पवन (शुद्धीकरण करना) कर, हिलाकर, भरकर, गरुड मुद्रा से जल के विष का निवारण कर, सुरभिमुद्रा से अमृत बनाकर। **ॐ नेत्रायाय वौषट्** कहकर जल को देखें। **ॐ कवचाय हुम्** कहकर दोनों हाथों से उसे ढककर **ॐ अस्त्राय फट्** कहकर उसकी रक्षा की कल्पना करें। ॐगङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन् सन्निधिं कुरु। *(अनुष्ठान पद्धति)* कहकर जल में तीर्थ का आवाहन करें। **पं पद्माय नमः** कहकर पीठ का पूजन करें।

शंख तीर्थ में अपने हृदय से सोम देवता का आवाहन कर **ॐ हृदयाय नमः। ॐ शिरसे स्वाहा। ॐ शिखाये वषट्। ॐ कवचाय हुम्। ॐ नेत्रात्रयास वौषट् ॐ अस्त्राय फट् कहकर सकलीकरण कर** नैवेद्य मुद्रा को दिखाकर **ॐचं चंद्राय नमः** इस मूल मन्त्र को ८ बार जपने हुए कलश जल में किचित् शंख जल को डालें शेष जल से तीन बार पूजा सामग्रियों को एवं अपने को ॐकार कहते हुए प्रोक्षण करें।

कलश प्रसङ्गे आत्माराधनम्—हृदये पीठं संपूज्य प्रणावाक्षरैः मूलाधार हृदय द्वादशान्त स्थित तेजांसि संपूज्य प्रणावेद तानि हृदयपद्मे नियोज्य मूलेन प्राणायामं कृत्वा व्याप्य आसनमिदं स्वागतमिदं पाद्यमिद, अर्ध्यमिदं आचमनमिदं स्नानमिदं वस्त्रमिदं आभारणमिदं इत्यादि उपहारान् दत्वा जलगन्धाभ्यां आत्मानं संपूज्य सद्योजातादि पञ्च ब्रह्मभिः ललाट कण्ठ अंसद्वय हृदय उदरेषु अष्टगंधेन तिर्यग् पुण्ड्राणि विलिप्य स्थाणु मंत्रण मूर्ध्नि पञ्चवारं पुष्पांजलि विधाय अं अर्कद्वयं कल्पयामि, इति पादाग्रदिनाभ्यन्तं कंलल्प्य पुष्पाजलिं कुर्यात्। ॐ करवीर द्वयं कल्पयामि इति नाभ्यादि

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हृदयान्तं संकल्प्य पुष्पांजलिं कुर्यात्। ॐ षट् कुसुमानि कल्पयामि इतिशिरसि। शेष कुसुमानि कल्पयामि इति सर्वाङ्गे च पुष्पांजलिं कुर्यात्। धूपं मुद्रां दीप मुद्रां प्रदर्श्य नैवेद्य काले अर्घ्यं दत्वा प्रसन्न पूजां विधाय पूजां समापयेत्। इति आत्मपूजा। *(अनुष्ठान पद्धति)*

हृदय में पी पूजा करें। **पं पद्माय नमः** इस मन्त्र से पीठ पूजा करें। प्रणवाक्षर अं उं मं इसी क्रम से मूलाधार हृदय एवं द्वादशान्त पत्र के तेज का पूजन करें। ॐकार से तीनों को मिलायें। **ॐ चं चंद्राय नमः** इस मूल मन्त्र से प्राणायाम करके आसनं समर्पयामि। स्वागतं समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि। पाद्यं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि। स्नानं समर्पयामि। वस्त्रं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि। आभरणं समर्पयामि। गन्धं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पाणि समर्पयामि। धूपं समर्पयामि। दीपं दर्शयामि। इतना कहने के बाद जल एवं गन्ध से अपना पूजन करें।

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवेभवेनातिं भवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः। *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषद्)*

कहकर ललाट में गन्ध धारण करें।

ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुदाय नमः कालायनमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः। *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषद्)*

कहकर कण्ठ में तिर्यक् त्रिपुण्ड्र गन्ध धारण करें।

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषद्)*

कहकर दोनों भुजाओं पर गन्ध धारण करें।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्। *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषद्)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कहकर हृदय में गन्ध धारण करें।

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वं भूतानां ब्रह्माधिपतिं ब्रह्मणोधिं पतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोऽम्।

(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषद्)

कहकर उदर में अष्टगन्ध धारण करें। स्थाणु मन्त्र से **पाँच बार पुष्पांजलि सिर पर डाल लेवे।**

स्थाणुमन्त्र—नमोस्तु स्थाणु भूताय ज्योतिर्लिगावृतात्मने चतुर्मूर्तिवपुच्छाया भासिताङ्गाय शंभवे॥ *(क्रियासार)*

ॐ अं अर्क द्वयं कल्पयामि कहकर पैरों के तले से नाभिपर्यन्त कल्पना कर सि पर पुष्पांजलि डाल लेवें। **ॐ उं करवीर द्वयं कल्पयामि** कहकर नाभि से हृदय पर्यन्त कल्पना करें सिर पर पुष्पांजलि डाल लेवें। **ॐ मं पद्मद्वयं कल्पयामि** कहकर हृदय से भ्रू मध्य तक कल्पना करें सिर पर पुष्पांजलि डाल लेवें। **ॐ षट् कुसुमानि कल्पयामि** कहकर पुष्पांजलि करें। **शेष कुसुमानि कल्पयामि** कहकर सिर पर एवं सभी अंङ्गों पर पुष्पांजलि करें। **धूप मुद्रा**-(अङ्गुष्ठाग्र एवं अनामिकाग्र मिलाने से दीप मुद्रा) इन्हें दिखाकर। नैवेद्य के बदले अर्ध्य देवें। **प्रसन्न पूजां समर्पयामि** कहकर आत्मापूजा को संपन्न करें। इसके बाद संकल्प करें (प्रमाण श्लोक)

फलभिसंधानबुद्धिस्थिरीकरणासिद्धये। संकल्पस्तु पुराकार्यः श्रोते स्मार्ते च कर्मणि॥ *(प्रयोगरत्नाकरः)*

श्रौत स्मार्त कर्म करने से पहलें फल सिद्धि की स्थिर भावना की प्राप्ति के लिए कर्म से पहले संकल्प करना चाहिये।

संकल्प्यैव च कर्तव्यं स्नानदान व्रतादिकम्। अन्यथा पुण्यकर्माणि निष्फलानि भवन्ति हि॥ *(प्रयोगरत्नाकरः)*

स्नान दान कर्मादियों को संकल्प लेकर ही करना चाहिये। नहीं तो पुण्यकर्म फल रहित हो जाते हैं। मास पक्ष तिथीनां च निमित्तानां च सर्वशः। उल्लेखन कुर्वाणो न तस्य फलभाग् भवेत्॥ सभी कर्मो में महिना,पक्ष,तिथि, एवं किस लिए कर रहे हैं (निमित) इसका जो उल्लेख नहीं करते हैं वे फल को प्राप्त

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नहीं करते हैं।

संकल्प—देशकालौ संकीर्त्य विश्वशान्त्यर्थं सर्वाद्भुत उत्पात जनित दोष परिहारार्थं आदित्यादि नवानां ग्रहाणां शुभ एकादश स्थान फलावाप्त्यर्थ कलशस्थापनं नवग्रहाराधनं यथाशक्ति कल्पोक्त षोडशोपचार पूजां करिष्ये।

गुरु पूजन—गुं गुरुभ्यो नमः। लं पृथिव्यात्मने गन्धं कल्पयामि। हं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। यं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। रं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। वं अमृतात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। पं परमात्मने सर्वोपचार पूजां समर्पयामि। गुं गुरवे नमः सुवर्ण दक्षिणां समर्पयामि।

गणेश पूजन—गं गणपतये नमः। ॐ लं पृथिव्यात्मने गन्धं कल्पयामि। ॐ हं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐ वं अमृतात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मने सर्वोपचार पूजां समर्पयामि। गं गणपतये नमः सुवर्णपुष्पं समर्पयामि।

ॐ गणानान्त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीना मुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन्नूतिभिः सीदसादनम्। *(ऋग्वेद २.२३.१)*

वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्य समप्रभ। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा गं गणपतये नमः प्रार्थयामि। नमस्करोमि।

दीपाराधनम्—ॐ अग्निदूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसं। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम॥ *(ऋग्वेद १.१२.१)*

ॐ रं नमः इति दीपमाराधयामि। कहकर पुष्प से दीप का पूजन करें।

पीठपूजनम्—ॐ आधार शक्त्यै नमः। ॐ अज्ञानाय नमः। ॐ मूल प्रकृत्यै नमः। ॐ अवैराग्याय नमः। ॐ आदिकूर्माय नमः। ॐ अनैश्वर्याय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ सं सत्वाय नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ रं रजसे नमः। ॐ धर्माय नमः। ॐ तं तमसे नमः। ॐ ज्ञानाय नमः। ॐ मं मायायै नमः। ॐ वैराग्याय नमः। ॐ विं विद्यायै नमः। ॐ ऐश्वर्याय नमः। ॐ पं पद्माय नमः। ॐ अधर्माय नमः। ॐ वामायै नमः। ॐ ज्येष्ठायै नमः। ॐ अं अर्कमण्डलाय नमः। ॐ रौद्र्यै नमः। ॐ उं

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सोममण्डलाय नमः। ॐ कालयै नमः। ॐ रं वह्निमण्डलाय नमः। ॐ बल विकलिन्यै नमः। ॐ अं आत्मने नमः। ॐ कलविकलिन्यै नमः। ॐ उं अन्तरात्मने नमः। ॐ बल प्रमथिन्यै नमः। ॐ मं परमात्मने नमः। ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः। ॐ ॠं ज्ञानात्मने नमः। ॐ मनोन्मन्यै नमः।

ॐ नमो भगवते सकलगुणात्म शक्तियुक्ताय अनन्तंताय योगपीठात्मने नमः। *(अनुष्ठान पद्धति)*

यहाँ पर कलश रखने वाला पीठ का पूजन पुष्पों से अक्षतों से करें।

भुवनेश्वरी पूजन (पीठ मध्ये)—ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूँ शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्। ॐ लं पृथिव्यात्मने गन्धं कल्पयामि। ॐ हं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐ वं अमृतात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मने सर्वोपचार पूजां समर्पयामि। ॐ ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः सुवर्णपुष्पं समर्पयामि। ॐ ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः प्रसन्नार्घ्यं समर्पयामि। वरांकुशौ पाशमभीतिमुद्रां करैर्वहन्तीं कमलासनस्थां। बालार्क कोटिप्रतिमां त्रिनेत्रां भजेहमाद्यां जगदीश्वरीं तां॥ पुष्पांजलि समर्पयामि। नमस्करोमि।

पद्मपुद्रां पदर्श्य, कलशं सङ्गृह्य, अस्त्रेण संक्षाल्य कवचेन त्रिगुणीकृत सूत्रेण वेष्टयित्वा मूलमन्त्रेण अष्टागन्धेन लेपयित्वा प्रणावेन धूपयित्वा मूलेन पीठे अधोमुखं न्यसेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

पद्मुद्रा (कमलाकार) को दिखाकर, प्रधान एवं शेष कलशों को हाथ में लेवें। **ॐ अस्त्राय फट्** कहते हुए तीन धागों वाले सूत्र से उसे लपेटना चाहिये। ॐ **चं चंद्राय नमः** इस मूल मन्त्र से अष्टगंध से लेपन करें। ॐ कहते हुए धूप दिखायें। **ॐ चं चंद्राय नमः** कहते हुए उस कलश को पीठ पर उल्टा करके रखें।

शोषण दाहन प्लावन काठिन्य सुषरीकरणानि कृत्वा—यं बीजमन्त्र को षोडश बार जपकर शोषण की कल्पना करें। **रं** बीजमन्त्र से षोषश (१६) बार

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जपकर दाहन की कल्पना करें। रं बीजमन्त्र से षोडश बार जपकर प्लावन की कल्पना करें। **लं** बीजमन्त्र से षोडश बार जपकर काठिन्य की कल्पना करें। **हं** बीजमन्त्र से षौडश बार जपकर सुषरीकरण की कल्पना करें। (सुषरीकरण यानि ब्रह्माण्ड के बीज में जगह बनाना।) इन सभी क्रियाओं को कुशों से कलशों का छूकर करना चाहिये। **हौं नमः पराय शान्त्यतीतात्मने नमः।**

इति दर्भ विन्यासं

जहाँ प्रधान कलश रखना है वहाँ उपरोक्त मन्त्र कहकर दो कुशा बिछायें। अन्य कलशों **के पास भी कुश बिछायें। ह्यौं नमः पराय शान्त्यात्मने नमः।** इति अष्टगंध प्रोक्षणं कहकर कुशों पर अष्टगंध का प्रोक्षण करें। ह्रूं नमः पराय विद्यात्मने नमः इति अक्षतं विकीर्य कहकर कुशों पर अक्षात डालें। ॐ ह्रीं वैश्रवणाय नमः कहकर कलशों की पुष्पाक्षतों से पूजन करें। ॐ ह्रीं नमः पराय प्रतिष्ठात्मने नमः। कहकर कलशों को उठायें। **ॐ ह्रां नमः पराय निवृत्यात्मने नमः ॐ ह्रीं नमः शिवाय** कहकर कलशों को पीठ पर कुशों के ऊपर रखें। **प्रणवेन घट मुखं प्रोक्ष्य**

ॐकारसे कलशों के मुख को प्रोक्षण करें। **कुम्भस्य मूले दश वह्निकलाः न्यस्य ऋचा च व्यापयेत्।** ॐ ह्रीं यं धूम्रार्चिषे नमः। ॐ ह्रीं रं ऊष्मायै नमः। ॐ ह्रीं लं ज्वलिन्यै नमः। ॐ ह्रीं वं ज्वालिन्यै नमः। ॐ ह्रीं शं विष्फुलिंगिन्यै नमः। ॐ ह्रीं षं सुश्रियै नमः। ॐ ह्रीं सं सुरूपायै नमः। ॐ ह्रीं हं कपिलायै नमः। ॐ ह्रीं ळं हव्यवाहायै नमः। ॐ ह्रीं क्षं कव्यवाहायै नमः। इन्हे कहते हुए कुशों से कुभ के चारों ओर छूकर वह्निकलाओं की कलश के मूल में स्थापना की कल्पना करें।

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः।
स नः पर्षदति दुर्गाणिविश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥ *(ऋग्वेद १.९९.१)*

कहते हुए कलश के मूल को कुशा से छूऐं। **ॐ मं वह्निमण्डलाय दश धर्मप्रद कलात्मने नमः।** कहकर समष्टि व्यापन यानि कुशों से कलश के चारों

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओर छूना चाहिये। कुम्भस्य मध्ये द्वादशदफं पद्मं संकल्प्य प्रागादि दलेषु सूर्यकलाः न्यस्य तत् ऋचा समष्ट्या च व्यापयेत्।

कलश के बीच में द्वादशदल पद्म की कल्पना कर पूर्व दिशा से प्रारम्भकर द्वादश दलों में १२ सूर्य कलाओं को रखने की कल्पना करें। ॐ ह्रीं कं भं तपिन्यै नमः। ॐ ह्रीं खं बं तापिन्यै नमः। ॐ ह्रीं गं फं धूम्रायै नमः। ॐ ह्रीं घं पं मरीच्यै नमः। ॐ ह्रीं ङं नं ज्वालिन्यै नमः। ॐ ह्रीं चं धं रुच्यै नमः। ॐ ह्रीं छं दं सुषुम्नायै नमः। ॐ ह्रीं जं थं भोगदायै नमः। ॐ ह्रीं झं तं विश्वायै नमः। ॐ ह्रीं ञं णं बोधिन्यै नमः। ॐ ह्रीं टं ढं धरिण्यै नमः। ॐ ह्रीं ठं डं क्षमायै नमः।

ॐ तत्सवि॒तुर्वरे॑ण्यं॒ भर्गो॑देव॒स्य धीमहि। धियो॒ यो नः॑ प्रचो॒दया॑त्। *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

कहते हुए कलशों के मध्य में कुशा से छुऐं।

ॐ अं सूर्यमण्डलाय वसुप्रद कलात्मने नमः।

कहकर समष्टि व्यापन यानि कुशों से कलश के चारों ओर छूना चाहिये।

कुम्भस्य मुखे षोडशदलं पद्म संकल्प्य प्रागादि दलेषु षोडश सोमकलाः न्यस्य तत् ऋचा समष्ट्या व्यापयेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

कुम्भो के मुख में षोडशदल पद्म की कल्पना करें पूर्वादि क्रम से दलों में सोलह सोमकलाओं को रखने की कल्पना करें। फिर ऋक् एवं समष्टि से व्याप्त करें। ॐ ह्रीं अं अमृतायै नमः। ॐ ह्रीं आं मानदायै न मः। ॐ ह्रीं इं पूषायै नमः। ॐ ह्रीं ईं तुष्टयै नमः। ॐ ह्रीं ऊँ रत्यै नमः। ॐ ह्रीं ऋं धृत्यै नमः। ॐ ह्रीं ॠं शशिन्यै नमः। ॐ ह्रीं लृं चन्द्रिकायै नमः। ॐ ह्रीं लॄं कान्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ऐं ज्योत्स्नायै नमः। ॐ ह्रीं ऐं श्रियै नमः। ॐ ह्रीं ओं प्रीत्यै नमः। ॐ ह्रीं औं अङ्गदायै नमः। ॐ ह्रीं अं पूर्णायै नमः। ॐ ह्रीं अः पूर्णामृतायै नमः।

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥ *(ऋग्वेद ७.५९.१२)*

कहते हुए कलशों के मुख में कुश से छूऐं। **ॐ उं सोममण्डलाय षोडश का मप्रद कलात्मने नमः।** कहकर समष्टि व्यापन यानि कुशों से कलश के चारों

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओर छूना चाहिये। **ॐ ह्रीं हं सः इति मन्त्रेण कुम्भावाहनं कृत्वा।** इस मन्त्र से कुम्भा का आवाहन कर षडंग न्यास करें। ॐ ह्रां हृदयाय नमः ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूँ शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्रः अस्त्राय फट्। कहकर कलश को न्यास करें। **कुम्भस्य मुखे**—कुम्भ के मुख में पाञ्च कलाओं का आवाहन करें। ॐ ह्रीं शं पीतायै नमः। ॐ ह्रीं सं श्वेतायै नमः। ॐ ह्रीं हं अरुणायै नमः। ॐ ह्रीं ळं असितायै नमः। ॐ ह्रीं क्षं नन्तायै नमः।

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

कलशों के मुख में कुशों से छूकर बोलें।

कुम्भमुद्रां प्रदर्श्य कुम्भं जगदण्डं ध्यात्वा पञ्चविंशति दर्भैः कुर्चं बध्वा तस्य शोषण, दाहन प्लावनानि कृत्वा अष्टगंधं विलिप्य अष्टवारं प्रणावं संजप्य कूर्च कुम्भे न्यस्य प्रणावेन संपूज्य नवरत्नादि द्रव्यं ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा इति कुम्भे न्यस्य संपूज्य मानस पूरणं कुर्यात्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

कुम्भमुद्रा (पद्मपुद्रा) को दिखाकर कुम्भ को ब्रह्माण्ड मानें। २५ कुशाओं से कूर्च बनायें।

उस कूर्च को—यं बीच मन्त्र को सोलह बार जप करते हुए शोषण की कल्पना करें। रं बीज मन्त्र से १६ बार जप करते हुए दाहन की कल्पना करें। वं बीज मन्त्र से १६ बार जपकर प्लावन की कल्पना करें। कूर्च को कुम्भ में डालें फिर ॐकार से पूजन करें। नवरत्नादियों को "ॐ ह्री हं सः सोहं स्वाहा" कहकर उन्हें कुम्भ में डालकर पूजा करें। फिर मानस पूरण करें। (मन में-कलश भरने की कल्पना करें।)

करे अमृत बीजं विलिख्य तेन करेण कुम्भ मुखमाच्छाद्य कूर्चमूलस्थित चैतन्यं द्वादशान्त पद्म स्थित परमात्मनि विलाप्य प्रणावं शिरोमन्त्रं च उक्त्वा द्वादशान्त पद्म स्थित परमात्मनः परचैतन्यरूपं अमृतजलं कुम्भे पातयेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

दाहिने हाथ में वं बीज मन्त्र को लिखकर उसी दाहिने हाथ से कलशों के मुख को ढक देवें। कूर्च के मूल में स्थित चैतन्य को द्वादशान्त पद्म (ब्रह्मरन्ध्र)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

में स्थित पामात्मा में मिलाने की कल्पना करें। ॐ शिरसे स्वाहा कहकर-(प्रणव-ॐ शिरोमन्त्र-शिरसे स्वाहा) द्वादशान्तपद्मस्थित परमात्मा के परचैतन्य रूप अमृत जल को कुम्भ में गिराने की कल्पना करें।

यत् किंचित् पत्रेण कुम्भमुखमाच्छाद्य अन्यस्मिन् पात्रे स्वस्तिकोपरि गालितजलं उत्तरभगे न्यस्य जलस्य शोषण दाहन प्लावनानि कृत्वा पीठं संपूज्य तत्र वरुणामावाह्य संपूज्य मूलेन च आवाह्य सकलीकृत्य संपूज्य नैवेद्य काले अर्घ्यं दत्वा पुष्पांजलिं कृत्वा पञ्चवारुणं प्रजप्य तज्जलं शंखे आदाय अष्टगंधं विलिप्य पञ्चमूर्ति च संकल्प्य मूलेन स्वहृदयात् आवाह्य किंचित् संपूज्यतज्जलं कुम्भे निषिच्य शेष जलैः कुम्भं अर्धोत्तरं परिपूर्य लिपि पंकजं पूजयेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

यज्ञीय वृक्ष के पत्ते से कलशों के मुख को ढकें ताकि कलश में विद्यमान अमृत बाहर न जा सकें। उत्तर दिशा में एक स्वस्तिक मण्डल बनायें। उस पर एक ताम्र पात्र रखें। उसका मुख वस्त्र से बांधें। उसमें तीर्थ जल भरें।

ताम्र पात्र मे स्थत जल का शोषण दाहन प्लावन करें। यं बीजमन्त्र को १६ बार जपकर शोषण की कल्पना करें। रं बीजमन्त्र को १६ बार जप कर दाहन की कल्पना करें। वं बीज मन्त्र को १६ बार जपकर प्लावन की कल्पना करें। पं पद्माय नमः कहकर ताम्रपात्र के पीठ का पूजन करें। ॐ वं वरुणाय नमः कहकर वरुण देव का ताम्रपात्र में आवाहन करें। **ॐ चं चंद्राय नमः** कहकर प्रधान देवता रुद्र का मूल मन्त्र से आवाहन करें। सकली करण कर ॐ हृदयाय नमः। ॐ शिरसे स्वाहा। ॐ शिखायैं वषट्। ॐ कवचाय हुम्। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अस्त्राय फट्। पूजन करें। लं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। हं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। यं वाय्वात्मनो धूपं कल्पयामि। रं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। वं अमृतात्मने नैवेद्य काले अर्घ्यं समर्पयामि। पं परमात्मने सर्वोपचार पूजां कल्पयामि। ॐ वं वरुणाय नमः। **ॐ चं चंद्राय नमः**पुष्पांजलिं समर्पयामि। कहकर पुष्पांजलि देवें। पात्र को छूकर मन्त्रों को (वारुण) पढें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ उदुत्तमं मुमुग्धि नो विपाशं मध्यमं चृत। अवाधमानि जीवसे॥ (ऋग्वेद १.२५.२१)
ॐ अवते हेळोवरुणानमोभि रवं यज्ञेभिरीमहे हविर्भिः।
क्षयन्नस्मभ्यमसुर प्रचेता राजन्नेनांसि शिश्रथः कृतानि। (ऋग्वेद १.२४.१४)
ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय। त्वामवस्युराचके॥ (ऋग्वेद १.२५.१९)
ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशं समान आयुः प्रमोषीः॥ (ऋग्वेद १.२४.११)
ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेळोऽव यासिसीष्ठाः।
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्॥ (ऋग्वेद ४.१.४)

इमा आपः शिवाः सन्तु शुभाः शुद्धाश्च निर्मलाः। पावन नाः शीलताश्चैव पूताः सूर्यस्य रश्मिभिः। इससे पात्र जल शुद्ध हुआ। उस पात्र जल को शंख में भर लेवें। अष्टगंध डालें। पं पद्माय नमः। कहकर पद्मका पूजन करें। ॐ **चं चंद्राय नमः**। कहकर सोम मूर्ति का पूजन करें। ॐ **चं चंद्राय नमः**। कहकर अपने हृदय में स्थित प्रधान देवता को जल में स्थापित करें। ॐ पं परमात्मने नमः। सर्वोपचार पूजां कल्पयामि। कहकर शंख जल को कलशों में भरें फिर कलशों में मन्त्रोंच्चार पूर्वक जल भरें।

ॐ प्रसुवं आपो महिमानमुत्तमं कारुर्वोचाति सदने विवस्वतः।
प्रसप्तसप्त त्रेधा हि चक्रमुः प्रसृत्वरीणा मति सिन्धु रोजसा॥
प्रतेऽरदद्वरुणो यातवे पथः सिन्धोः यद्वाजाँ अभ्यद्र वस्त्वं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भूम्या॒ अधि॑ प्र॒वता॑ यासि॒ सानु॑ना॒ यदे॑षा॒मग्रं॑ जग॑तामिर॒ज्यसि॑ ॥
दि॒वि स्व॒नो य॑तते॒ भूम्यो॒पर्य॑न॒न्तं शुष्म॒मुदि॑यर्ति भा॒नुना॑ ।
अभ्रादि॑व॒ प्रस्त॑नयन्ति वृ॒ष्टय॒ः सिन्धु॒र्यदेति॑ वृष॒भो न रोरु॑वत् ॥
अ॒भित्वा॑ सिन्धो॒ शिशु॒मिन्न मा॒तरो॑ वा॒श्रा अ॑र्षन्ति॒पय॑सेव धे॒नवः॑ ।
राजे॑व॒ युध्वा॑ न यसि॒ त्वमित् सिचौ॒ चदा॑सा॒मग्रं॑ प्र॒वता॒मिन॑क्षसि ॥
इ॒मं मे॑ गङ्गे॒ यमुने सरस्वति॒ शुतु॑द्रि॒ स्तोमं॑ सचता॒ पर॒ष्ण्या ।
अ॒सि॒क्न्या म॑रुद्वृधे वि॒तस्त॒याऽऽर्जी॑कीये शृणु॒ह्या सु॒षोम॑या ॥
सि॒तासि॒ते स॒रिते॒ यत्र॑ सङ्ग॒थे तत्रा॑प्लु॒तासो॒ दिव॒मुत्प॑तन्ति ।
एवै॑ त॒न्वं१॒॑ विसृ॑जन्ति॒ धीरा॒स्ते जना॑सो अमृत॒त्वं भ॑जन्ते ॥
तृ॒ष्टा म॑या प्रथ॒मं यात॑वे स॒जूः सु॒सर्त्वा॑ र॒सया॑ श्वे॒त्यात्या ।
त्वं सि॑न्धो॒ कुभ॑या गोम॒तीं क्रुमुं॑ मे हृ॒त्न्वा स॒रथं॒ याभि॒रीय॑से ॥
ऋजी॒त्येनी॒ रुश॑ती महि॒त्वा परि॒ज्रया॑ंसि भरते॒ रजां॑सि ।
अद॑ब्धा॒ सिन्धु॑र॒पसा॑म॒पस्त॒माऽश्वा॒न चि॒त्रा वपु॑षीव दर्श॒ता ॥
स्वश्वा॒ सिन्धुः॑ सु॒रथा॑ सु॒वासा॑ हिर॒ण्ययी॒ सुकृ॑ता वा॒जिनी॑वती ।
ऊर्णा॑वती युव॒तिः सी॒लमा॑वत्यु॒ताधि॑ वस्ते सु॒भगा॑ मधु॒वृध॑म् ॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुखं रथं युयुजे सिन्धुरश्विनं तेन वाजं सनिषदस्मिन्नाजौ।
महान ह्यस्य महिमापनस्यतेऽदब्धस्य स्वयंशसो विरप्शिनः॥ *(ऋग्वेद १०.७५ सम्पूर्ण सूक्त)*

कलशों में जल भरने के बाद लिपि पंकज यानि अक्षरों से बने कमल की कल्पना कर कलश का पूजन करें। ॐक्षं नमः पराय मूर्त्यात्मने नमः। ॐळं नमः पराय शिफात्मने नमः। ॐहं नमः पराय नाळात्मने नमः। ॐसं नमः पराय सर आत्मने नमः। ॐषं नमः पराय कण्टकात्मने नमः। ॐशं नमः पराय रंध्रात्मने नमः। ॐवं नमः पराय धर्माय आग्नेय ग्रन्थ्यात्मने नमः। ॐलं नमः पराय ज्ञानाय नैर्ऋत्य ग्रन्थ्यात्मने नमः। ॐरं नमः पराय वैराग्याय वायव्य ग्रन्थ्यात्मने नमः। ॐयं नमः पराय ऐश्वर्याय ऐश ग्रन्थ्यात्मने नमः। ॐॠं नमः पराय अज्ञानाय दक्षिण ग्रन्थ्यात्मने नमः। ॐलृं नमः पराय अवैराग्याय वारुण ग्रन्थ्यात्मने नमः। ॐलॄं नमः पराय अनैश्वर्याय सौम्य ग्रन्थ्यात्मने नमः। ॐकं खं गं नमः पराय पूर्वपत्रात्मने नमः। ॐघं ङं च नमः पराय आग्नेय पत्रात्मने नमः। ॐछं जं झं नमः पराय याम्य पत्रात्मने नमः। ॐञां टं ठं नमः पराय वारुण पत्रात्मने नमः। ॐडं ढं णं नमः पराय वारुण पत्रात्मने नमः। ॐतं थं दं नमः पराय वायव्य पत्रात्मने नमः। ॐफं बं भं नमः पराय ऐश पत्रात्मने नमः। ॐमं नमः पराय कर्णिकात्मने नमः। ॐअः आं नमः पराय पूर्वकेसरात्मने नमः। ॐइः ईं नमः पराय आग्नेय केसरात्मने नमः। ॐउः ऊं नमः पराय याम्य केसरात्मने नमः। ॐऋं नमः पराय नैर्ऋतय केसरात्मने नमः। ॐलृः लॄं नमः पराय वारुण केसरात्मने नमः। ॐऐः ऐं नमः पराय वायव्य केसरात्मने नमः। ॐओः औं नमः पराय सौम्य केसरात्मने नमः। ॐअः अं नमः पराय ऐश केसरात्मने नमः। ॐअं नमः पराय आत्मतत्वात्मने नमः। ॐउं नमः पराय विद्यातत्वात्मने नमः। ॐमं नमः पराय विद्यातत्वात्मने नमः। ॐसं नमः पराय बिन्द्वात्मने नमः। ॐहं नमः पराय नादात्मने नमः। ॐॠीं नमः पराय शक्त्यात्मने नमः। ॐनमः पराय शान्त्यात्मने नमः। *(अनुष्ठान पद्धति)*

इति लिपि पंकजम्

वैदिक परम्परा में पिपियों का अत्यधिक महत्व है। लिपियों में ही सभी मन्त्र एवं सभी वेद है। उनमें सभी देवता भी विद्यमान है। कलश में लिपि पद्म की

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कल्पना कर उसमें सभी मन्त्रों का, सभी वेदों का एवं सभी देवताओं का पूजन होता है। लिपि का अत्यधिक महत्व होने के कारण पिपिन्यास विस्तार से किया जाता है। बड़े यज्ञों में इनका करना अनिवार्य है। पहले दिन ये सभी करते हैं। दूसरे दिन से पूजन कुछ कम होता है। बड़े यज्ञों में कलश पूजन के लिए एक पंडित अलग रहते हैं। अतः शेष कार्य में विलम्ब नहीं होता है। अभ्याय हो जाने पर इन सभी को करने में अधिक समय नहीं लगता है।

कलशे प्रधान देवता सोम आवाहन—**ॐ चं चंद्राय नमः**। श्री सोम मूर्तये नमः। ॐ भूः सोम मूर्तिमावाहयामि। ॐ भुवः सोम मूर्तिमावाहयामि। ॐ स्वः सोम मूर्तिमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः सोम मूर्मिावाहयामि। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अवगुंठितो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। इतना कहकर विविभन्न मुद्राओं से प्रधान देवता का आवाहन करें। **मूलाक्षराणि न्यस्य**। मूलक्षरों से न्यास करें। ॐ ऊं नमः। ॐ श्रीं नमः। ॐ वैं नमः। ॐ श्रं नमः। ॐ वं नमः। ॐ णां नमः। ॐ यं नमः। ॐ नं नमः। ॐ मं नमः। **ॐ चं चंद्राय नमः**। कहकर पुष्पों से पूजन करें। **ॐ चं चंद्राय नमः**। इदं प्रसन्नार्घ्यं समर्पयामि। कहकर प्रसन्नार्घ्य जल छोडें। **ॐ चं चंद्राय नमः**। पुष्पांजलिं समर्पयामि। कहकर पुष्पांजलि देवें।

कलशे पञ्चामृत क्षेपः—कलश में पञ्चामृत डाले।

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यं। भवा वाजस्य सङ्गथे॥ *(ऋग्वेद १.९१.१६)* कहकर कलशों में दूध डालें।

ॐ दधि क्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखा कर्त्प्रण आयूंषि तारिषत्॥ *(ऋग्वेद ४.३९.६)* कहकर दहि डालें।

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतं वस्य धाम।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्॥ *(ऋग्वेद २.३.११)* कहकर घी डालें।

ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिंधवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥
मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वी र्गावो भवन्तु नः॥ (ऋग्वेद १.९०.६-७-८) कहकर शहद डालें।

ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिंद्रायसुहवीतुनाम्ने।

स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायव बृहस्पतये मधुमाँ अदाभ्यः॥ (ऋग्वेद ९.८२.६) कहकर शक्कर डालें।

कलशे पञ्चगव्य क्षेपण—

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ (ऋग्वेद ३.६२.१०) कहकर कलशों में गोमूत्र डालें।

ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।

ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) कहकर गोमय डालें।

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यं। भवा वाजस्य सङ्गथे॥ (ऋग्वेद १.९१.१६) कहकर कलशों में दूध डालें।

ॐ दधि क्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।

सुरभिनो मुखाकरत्प्रण आयूं षितारिषत्॥ (ऋग्वेद १४.३९.६) कहकर दहि डालें।

ॐ शुक्रमसि ज्योतिरसि तेजोसि देवो वः सवितोत्पुनात्वच्छिद्रेण

पवित्रेण वसोः सूर्यस्य रश्मिभिः॥ (यजुर्वेद १ काण्ड-१० अनुवाक-१ प्रश्न) कहकर घी डालें।

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो पूष्णो हस्ताभ्यां॥ (यजुर्वेद १ काण्ड-४ अनुवाक-१ प्रश्न) कहकर कुशोदक डालें।

कलशे ओषध क्षेपः—ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषःपरि।

एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥ (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक) कहकर – दूर्वा तुलसी, बिल्वपत्र, आदि डालें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा।
मनैनु बभ्रूणामहंशतं धामानि सप्त च॥ *(ऋग्वेद १०.९७.१)* कहकर **दूर्वा, तुलसी, बिल्वपत्र** आदि डालें।
ॐ रुवति भीमो वृषभस्त विश्यया श्रृङ्गे शिशानो हरिणी विचक्षणाः।
आ योनिं सोमः सुकृतनिषीदति गव्ययी त्वग्भवति निर्णिगव्ययी॥ *(ऋग्वेद ९.७०.७)* कहकर **दुर्वा, तुलसी, बिल्वपत्र** आदि डालें।
ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ *(पञ्चम परिशिष्टम्)*
कहकर **पवित्र मृत्तिका** (मिट्टी) **गन्ध, इलायची**, लौंग, पच्चकर्पूर, केसर आदि सुगंध द्रव्य डालें।

कलशे कलावाहन—कलश में प्रधान देवता सूर्य कलावाहन करें। प्रधान देवता के ९६ कलायें हैं। इन कलाओं को शंख में आवाहन करना चाहिये।

शंख प्रक्षाल्य शंखे जलमापूर्य हृदय मन्त्रेण अष्टगंधं विलोड्य प्रणवाक्षरैः प्रणवेन च संपूज्य तत्र कलाः पृथक् आवाहयेत्। पहले शंख को धो लेवें, शंख में जल भरें, ॐ घृणिः सूर्यआदित्यः कहकर अष्टगंध को जल में मिलाकर अं नमः। उं नमः। मं नमः। ॐ नमः। कहकर शंख में स्थित जल का पूजन करें। फिर उस जल में कलाओं का अलग-अलग आवाहन करें।

ॐ ह्रीं आं अमृतायै कलाशक्त्यै नमः। अमृतकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं आं मानदायै कलाशक्त्यै नमः। मानदा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं इं पूषायै कलाशक्त्यै नमः। पूषा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ई तुष्ट्यै कलायै कलाशक्त्यै नमः। तुष्टिकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं उं पुष्टयै कलाशक्त्यै नमः। पुष्टिकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ऊं रत्यै कलाशक्त्यै नमः। रतिकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ऋं धृत्यै कलाशक्त्यै नमः। धृतिकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ॠं शशिन्यै कलाशक्त्यै नमः। शशिनी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं लृं चन्द्रिकायै कलाशक्त्यै नमः। चन्द्रिका कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं लॄं कान्त्यै कलाशक्त्यै नमः। कान्तिकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ऐं ज्योत्स्नायै कलाशक्त्यै नमः। ज्योतस्ना कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ऐं श्रियै कलाशक्त्यै नमः। श्रीकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ओं प्रीत्यै कलाशक्त्यै नमः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रीतिकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं हौं अङ्गदायै कलाशक्त्यै नमः। अङ्गदा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं अं पूर्णायै कलाशक्त्यै नमः पूर्णा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं अः पूर्णामृतायै कलाशक्त्यै नमः पूर्णामृत कला आवाहयामि *(अनुष्ठान पद्धति)*। यहाँ तक सोमकलाओं का आवाहन हुआ।

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥ *(ऋग्वेद ७.५९.१२)*

उं सोममण्डलाय षोडश कामप्रद कलात्मने नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः सोम कलानां प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य ल व श ष स हों सं हंसः सोम कलानां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सं: सोम कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्र घ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। इति प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा।

यहाँ पर सोमकलाओं की प्राणप्रतिष्ठा हुई। ॐ ह्रीं कं भं तपिन्यै कलाशक्त्यै नमः। तपिनी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं खं बं तापिन्यै कलाशक्त्यै नमः। तापिनी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं गं फं धूम्रायै कलाशक्त्यैनमः। धूम्रा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं घं पं मरीच्यै कलाशक्त्यै नमः। मरीचिकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ङ. नं ज्वालिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ज्वालिनी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं चं धं रुच्यै कलाशक्त्यै नमः। रुचि कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं छं दं सुषुम्नायै कलाशक्त्यै नमः। सुषुम्ना कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं जं थं भोगदायै कलाशक्त्यै नमः। भोगदा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं झं तं विश्वायै कलाशक्त्यै नमः। विश्वा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ञं णं बोधिन्यै कलाशक्त्यै नमः बोधिनी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं टं ढं धारिण्यै कलाशक्त्यै नमः। धारिणी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ठं डं क्षमायै कलाशक्त्यै नमः। क्षमा कला आवाहयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

ॐ अं **सूर्यमण्डलाय** द्वादश वसुप्रद कलात्मने नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स होसं हंसः सूर्य कलानां प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हो सं हं सः सूर्यकलानां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः सूर्यकलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्र घ्राणप्राणाः

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा इति प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा यहाँ पर १२ सूर्य कलाओं का आवाहन प्राणाप्रतिष्ठा संपन्न हुआ।

ॐ ह्रीं यं धूम्रार्चिषे कलाशक्त्यै नमः। धूम्रर्चिः कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं रं ऊष्मायै कलाशक्त्यै नमः। ऊष्माकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं लं ज्वलिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ज्वलिनी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं वं ज्वालिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ज्वालिनी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं शं विष्फुलिंगिन्यै कलाशक्त्यै नमः। विष्फुलिङ्गिनी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं षं सुश्रियै कलाशक्त्यै नमः। सुश्रियै कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं सं सुरूपायै कलाशक्त्यै नमः सुरूपा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं हं कपिलायै कलाशक्त्यै नमः। कपिला कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ळं हव्यवाहायै कलाशक्त्यै नमः। कव्यावाह कला आवाहयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। सनः पर्षदति दुर्गाणिविश्वा नावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः॥

(ऋग्वेद १.९९.१)

ॐ मं वह्निमण्डलाय दश धर्मप्रद कलात्मने नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः वह्नि कलानां प्राणा इह प्राणः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः वह्नि कलानां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों च र ल व श ष स हों सं हं सः वह्निकलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रध्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। इति प्राणाप्रतिष्ठां कृत्वा।

यहाँ पर १० वह्नि कलाओं का आवाहन प्राणप्रतिष्ठा संपन्न हुआ। ॐ ह्रीं अं निवृत्यै कलाशक्त्यै नमः। निवृत्ति कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं आं प्रतिष्ठायै कलाशक्त्यै नमः। प्रतिष्ठा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं इं विद्यायै कलाशक्त्यै नमः। विद्या कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ई शान्त्यै कलाशक्त्यै नमः। शन्ति कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं उं इन्धिकायै कलाशक्त्यै नमः। इं धिका कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ऊं दीपिकायै कलाशक्त्यै नमः। दीपिका कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ऋं रेचिकायै कलाशक्त्यै नमः। मोचिका कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं लृं परायै कलाशक्त्यै नमः। परा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं लृं सूक्ष्मायै कलाशक्त्यै नमः। सूक्ष्मा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ऐं सूक्ष्मामृतायै कलाशक्त्यै नमः। सूक्ष्मामृता कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ऐं ज्ञानमृतायै कलाशक्त्यै नमः। ज्ञानामृता कला

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आवाहयामि। ॐ ह्रीं ओं आप्यायिन्यै कलाशक्त्यै नमः। आप्यायिनी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं औं व्यापिन्यै कलाशक्त्यै नमः। व्यापिनी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं अं व्योमरूपायै कलाशक्त्यै नमः। व्योमरूपा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं अः अनन्तायै कलाशक्त्यै नमः। अनन्ता कला आवाहयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

ॐ विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु। आसिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते॥ *(ऋग्वेद १०.१८४.१)*

ॐ सदाशिवाय नमः। ॐ आकाशात्मने नमः। ॐ शब्द तन्मात्रात्मने नमः। ॐ श्रोत्रात्मने नमः। ॐ वाग् वचनात्मने नमः। ॐ अनुग्रहात्मने नमः। ॐ शान्त्यतीतात्मने नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः नादकलानां प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः नादकलानां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः नादकलानां सर्वेंद्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। इति प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा।

यहाँ पर **१६ नादकलाओं** का आवाहन प्राण प्रतिष्ठा (ॐकार की ध्वनि) संपन्न हुआ। ॐ ह्रीं षं पीतायै कलाशक्त्यै नमः।पीताकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं सं श्वेतायै कलाशक्त्यै नमः। श्वेता कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं हं अरुणायै कलाशक्त्यै नमः। अरुणा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ळं असितायै कलाशक्त्यै नमः। असिता कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं क्षं अनन्तायै कलाशक्त्यै नमः। अनंता कला आवाहयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

ॐ ईश्वराय नमः। ॐ वाय्वात्मने नमः। ॐ स्पर्शतन्मात्रात्मने नमः। ॐ त्वगात्मने नमः। ॐ पाणयादानात्मने नमः। ॐ तिरोभवात्मने नमः। ॐ शान्त्यात्मने नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंस बिन्दुकलानां प्राणाः इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः बिन्दुकलानां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रां च र ल व श ष स हों सं हं सः बिन्दु कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। *(अनुष्ठान पद्धति)*

इति प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यहां पर ५ विन्दुकलाओं का आवाहन प्राणप्रतिष्ठा संपन्न हुआ। ये बिन्दुकलायें ॐकार के वर्ण (रंग) है। ॐ ह्रीं पं तीक्ष्णायै कलाशक्त्यै नमः। तीक्ष्णा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं फं रौद्र्यै कलाशक्त्यै नमः। रौद्री कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं बं भयायै लाशक्त्यै नमः। भया कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं भं निद्रायै कलाशक्त्यै नमः। निद्रा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं मं तन्द्रयै कलाशक्त्यै नमः। तन्द्री कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं यं क्षुधायै कलाशक्त्यै नमः। क्षुधा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं रं क्रोधिन्यै कलाशक्त्यै नमः। क्रोधिनी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं लं क्रियायै कलाशक्त्यै नमः। क्रिया कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं वं उत्कार्यै कलाशक्त्यै नमः। उत्कारी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं शं मृत्युरूपायै कलाशक्त्यै नमः। मृत्युरूपा कला आवाहयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥ *(ऋग्वेद ७.५९.१२)*

ॐ सूर्याय नमः। ॐ अग्न्यात्मने नमः। ॐ रूप तन्मात्रात्मने नमः। ॐ चक्षुरात्मने नमः। ॐ पाद गमनात्मने नमः। ॐ संहारात्मने नमः। ॐ विद्यात्मने नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष सं हो सं हं सः मकार कलानां प्राणा इय प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः मकार मलानां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः मकार कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिन्तु स्वाहा।

कहकर रुद्र कलाओं (मकार कला) का आवाहन प्रतिष्ठा करें। ॐ ह्रीं टं जरायै कलाशक्त्यै नमः। जरा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ठं पालिन्यै कलाशक्त्यै नमः। पालिनी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं डं शान्त्यै कलाशक्त्यै नमः। शांति कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ढं ऐश्वर्यै कलाशक्त्यै नमः। ऐश्वरी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं णं रत्यै कलाशक्त्यै नमः। रति कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं तं कामिकायै कलाशक्त्यै नमः। वरदाकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं थं वरदायै कलाशक्त्यै नमः वरदाकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं दं ह्लादिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ह्लादिनी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं धं प्रीत्यै कलाशक्त्यै नमः। प्रीतिकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं नं दीर्घायै कलाशक्त्यै नमः। दीर्घाकला आवाहयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

ॐ प्रतद्विष्णुस्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा॥ *(ऋग्वेद १.१५४.२)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐविष्णवे नमः। ॐअबात्मने नमः। ॐरसतन्मात्रात्मने नमः। ॐजिह्वात्मने नमः। ॐपायुविसर्गात्मने नमः। ॐस्थित्यात्मने नमः। ॐप्रतिष्ठात्मने नमः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः उकार कलानां प्राणा इह प्राणाः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः उकार कलानां जीव इह स्थितः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः उकार कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कहकर विष्णु कला (उकार कला) का आवाहन प्रतिष्ठा करें। ॐह्रीं कं सृष्ट्यै कलाशक्त्यै नमः। सृष्टिकला आवाहयामि। ॐह्रीं खं ऋध्यै कलाशक्त्यै नमः। ऋद्धिकला आवाहयामि। ॐह्रीं गं स्मृत्यै कलाशक्त्यै नमः। स्मृतिकला आवाहयाम। ॐह्रीं घं मेधायै कलाशक्त्यै नमः। मेधाकला आवाहयामि। ॐह्रीं ङ कान्तै कलाशक्त्यै नमः। कान्ति कला आवाहयामि। ॐह्रीं चं लक्ष्म्यै कलाशक्त्यै नमः। लक्ष्मीकला आवाहयामि। ॐह्रीं छं द्युत्यै कलाशक्त्यै नमः। द्युतिकला आवाहयामि। ॐह्रीं जं स्थिरायै कलाशक्त्यै नमः। स्थिराकला आवाहयामि। ॐह्रीं झं स्थित्यै कलाशक्त्यै नमः। स्थिति कला आवाहयामि। ॐह्रीं ञं सिद्ध्यै कलाशक्त्यै नमः। सिद्धिकला आवाहयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

ॐ हंसः शुचिषद्वसुरंतरिक्ष सद्धोतावेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।
नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतम्॥ *(ऋग्वेद ४.४०.५)*

ॐब्रह्मणे नमः। ॐपृथिव्यात्मने नमः। ॐगंध तन्मात्रात्मने नमः। ॐघ्राणात्मने नमः। ॐउपस्थानन्दात्मने नमः। ॐसृष्ट्यात्मने नमः। ॐनिवृत्यात्मने नमः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः अकार कलानां प्राणा इह प्राणाः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हो सं हं सः अकार कलानां जीव इह स्थितः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः अकारकलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुःश्रोत्र घ्राण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कहकर ब्रह्म कला को (अकार कला) का आवाहन प्रतिष्ठा करें। ॐह्रीं इच्छायै कलाशक्त्यै नमः। इच्छा कला आवाहयामि। ॐह्रीं ज्ञानायै कलाशक्त्यै नमः। ज्ञान कला आवाहयामि। ॐह्रीं क्रियायै कलाशक्त्यै नमः। क्रिया कला आवाहयामि। ॐशक्त्यात्मने नमः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सः शक्ति कलानां जीव इह स्थितः।

ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शक्ति कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघाण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा कहकर **शक्ति कलाओं** का आवाहन प्रतिष्ठा करें। ॐ ह्रीं चिदात्मने कलाशक्त्यै नमः। चित्कला आहयामि। ॐ ह्रीं सदात्मने कलाशक्त्यै नमः। सत् कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं आनंदात्मने कलाशक्त्यै नमः। आनंद कला आवाहयामि। ॐ शांत्यात्मने नमः। ॐ आं ह्रीं क्रो य र ल व श ष स हों सं हं सः शान्ति कलानां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शान्ति कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुःश्रोत्र घ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कहकर **शान्ति कलाओं** का आवाहन प्रतिष्ठा करें। ॐ घृणिः सूर्यआदित्यः। सूर्यमावाहयामि। ॐ लं पृथिव्यात्मने गन्धं कल्पयामि। ॐ हं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐ वं अमृतात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मने सर्वोपचार पूजां समर्पयामि। **कहकर शंख जल का पूजन करें।** ॐ घृणिः सूर्यआदित्यः। कहते हुए शंख जल को प्रधान कलशा में डालें। यहाँ पर कला आवाहन संपन्न हुआ। *(अनुष्ठान पद्धति)*

प्रमाण—कलावाहन के तीन प्रकार है। १. सृष्टि क्रम। २. स्थिति क्रम। ३. संहार क्रम

सृष्टि क्रम—नूतन विग्रह प्रतिष्ठा में। इसमें क्रम से। १ सोम कला। २. सूर्य कला। ३. अग्निकला। ४. नाद कला। ५. बिंदु कला ६. मकार कला। ७. उकार कला। ८. अकार कला। ९. शक्ति कला। १०. शान्ति कला। इस क्रम से कलावाहन करें।

स्थिति क्रम—उत्सवादिकों में, कुम्भाभिषेक आदि निश्चत् कार्यक्रमों में (नित्य कार्यों में)। १. सूर्य कला। २. सोम कला। ३. अग्निकला। ४. बिंदु कला। ५. नाद कला। ६. मकार कला। ७. उकार कला। ८. अकार कला। ९. शक्ति कला। १०. शान्ति कला इस क्रम से कला वाहन करें।

संहार क्रम—प्रायश्चित्त, दोषपरिहारादिकों में, १. अग्निकला। २. सूर्य कला। ३. सोमकला। ४. अकार कला। ५. उकार कला। ६. मकार कला। ७. बिन्दु

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कला। ८. नाद कला। ९. शक्ति कला। १०. शान्ति कला इस क्रम से कलावाहन करें।

तत्वकलावाहनम्—शंखं प्रक्षाल्य पूजितं जलं शंखे आदाय अष्ट गंधं विलोड्य किंचित् संपूज्य तत्र तत्व कलावाहनं कुर्यात्। शंख को धोकर ताम्र पात्र में स्थित जल से शंख को भरें, अष्टगंध मिलाएं फिर पुष्पाक्षत डालकर शंख में तत्वावाहन करें। ॐमं नमः पराय पीवात्मने नमः। जीव तत्वमावहयामि। ॐभं नमः नमः पराय प्राणात्मने नमः। प्राणतत्वमावाहयामि। ॐबं नमः पराय बुध्यात्मने नमः। बुद्धितत्वमावाहयामि। ॐफं नमः पराय अहंकारात्मने नमः। अहंकार तत्वमावाहयामि। ॐपं नमः पराय शब्द तन्मात्रात्मने नमः। शब्दतन्मात्र तत्वं अवाहयामि। ॐधं नमः पराय स्पर्श तन्मात्रात्मने नमः। स्पर्श तन्मात्र तत्वमावाहयामि। ॐदं नमः पराय रूप तन्मात्रात्मने नमः। रूप तन्मात्र तत्वमावाहयामि। ॐथं नमः पराय रस तन्मात्रात्मने नमः। रस तन्मात्र तत्वमावाहयामि। ॐतं नमः पराय गंध तन्मात्रात्मने नमः। गंध तन्मात्र तत्वमावाहयामि। ॐणं नमः पराय श्रोत्रात्मने नमः। श्रोत्रतत्वमावाहयामि। ॐढं नमः पराय त्वगात्मने नमः। त्वक्तत्वमावाहयामि। ॐडं नमः पराय चक्षुरात्मने नमः चक्षतत्वमावाहयामि। ॐठं नमः पराय जिह्वात्मने नमः। जिह्वातत्वमावाहयामि। ॐटं नमः पराय घ्राणात्मने नमः। घ्राणतत्वमावाहयामि। ॐऋं नमः पराय वागात्मने नमः। वाक् तत्व मावाहयामि। ॐझं नमः पराय पाणयात्मने नमः। पाणि तत्वमावाहयामि। ॐजं नमः पराय पादात्मने नमः। पादतत्वमावाहयामि। ॐछं नमः पराय पाय्वात्मने नमः। पायुतत्वमावाहयामि। ॐचं नमः पराय उपस्थात्मने नमः। उपस्थतत्वमावाहयामि। ॐॠं मः पराय आकाशात्मने नमः। आकाशतत्वमावाहयामि। ॐघं नमः पराय वाय्वात्मने नमः। वायु तत्व मावाहयामि। ॐगं नमः पराय तेज आत्मने नमः। तेजस्तत्वमावाहयामि। ॐखं नमः पराय अबात्मने नमः। अप्तत्वमावाहयामि। ॐकं नमः पराय पृथिव्यात्मने नमः। पृथिवी तत्वमावाहयामि। ॐहं नमः पराय सूर्यमण्डलाय द्वादश कलात्मने नमः। सूर्यमण्डलमावाहयामि। ॐसं नमः पराय सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः। सोममण्डलमावाहयामि। ॐरं नमः पराय वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः। वह्निमण्डलमावाहयामि। ॐहौं नमः पराय शान्त्यतीतात्मने नमः। शान्त्यतीततत्वमावाहयामि। ॐह्रौं नमः पराय शान्त्यात्मने नमः। शान्तित्वमावाहयामि। ॐॡं नमः पराय विद्यात्मने

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नमः। विद्यातत्वमावाहयामि। ॐ ह्लीं नमः पराय प्रतिष्ठात्मने नमः। प्रतिष्ठा तत्वमावाहयामि। ॐ ह्लां नमः पराय निवृत्यात्मने नमः। निवृत्ति कलामावाहयामि। इत्यावाह्य इतना कहकर शंख तें तत्वों का आवाहन करें। संक्षेप में पूजन करें। ॐ लं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। ॐ हं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐ वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मने पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि। शंखजलं कलशे निक्षिपेत्। **ॐ ह्लीं नमः शिवाय**। कहकर शंख जल को कलश में डालें। यहाँ पर तत्वकलावाहन संपन्न हुआ। *(अनुष्ठान पद्धति)*

कलशेन्यास विधानम्

अग्नि कला न्यास विधान—मूलाधारे दशदल पद्मं संकल्प्य अग्न्यादि दलेषु आग्नेय कलाः न्यस्य तत् स्थाने जातवेदस इति ऋचा मं वह्निमण्डलाय नमः इति समष्टिमन्त्रेण ॐ आं ह्लीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठामन्त्रेण च व्याप्य ऊर्वोः संस्पृश्य, त्रिवारं प्रणवं संजप्य हृदि संस्पृश्य ॐ ह्लीं हं सः सो हं स्वाहा इति त्रिवारं जप्त्वा हृदिस्थाः देवताः **सर्वा हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिताः॥** इति जपेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

कलश के मूलाधार में दशदल पद्म का संकल्प कर आग्नेयादि दलों में आग्नेय कलाओं का न्यास करके उस स्थान पर "**जातवेदसे** ऋक् से" एवं **मं वह्निमण्डलाय नमः** इस समष्टि मन्त्र से ॐ आं ह्लीं क्रों प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र से दोनों हाथों से व्यापन कर, कलश के निचले भाग को कुशाओं से छूकर, तीन बार प्रणव को जपकर **ॐ ह्लीं हं सः सो हं स्वाहा**, जपकर, **हृदिस्था** मन्त्र का जप करें।

अग्नि कला न्यास—ॐ ह्लीं यं धूम्रर्चिष कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्लीं रं ऊष्मायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्लीं लं ज्वलिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्लीं वं ज्वालिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्लीं शं विष्फुलिंगिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्लीं षं सुश्रियै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्लीं सं सुरूपायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्लीं हं कपिलायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्लीं ळं हव्यवाहायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्लीं क्षं कव्यवाहायै कलाशक्त्यै नमः।

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः॥ स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(ऋग्वेद १.६६.१)

ॐमं वह्निमण्डलायदश धर्मप्रद कलात्मने नमः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः। ॐमं वह्निकलानां प्राणा इह प्राणाः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः वह्निकलानां जीव इह स्थितः।

ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः वह्निकलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कुशों से कलश के निचले भाग को छूते हुए बोले फिर ॐॐॐ कहें। हृदय को छूकर (कलश के मध्य भाग को ॐह्रीं हं सः सोहं स्वाहा कहें।

हृदिस्था देवताः सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिताः। *(अनुष्ठान पद्धति)*

कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

सूर्यकला न्यास विधान—हृदये द्वादशदल पभं संकल्प्य पूर्वादि दलेषु सूर्यकलाः न्यस्य तत् स्थाने गायत्री ऋचा ॐ सूर्य मण्डलाय नमः इति समष्टिमन्त्रण ॐ आं ह्रीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रेण च व्याप्य ऊर्वोः संस्पृश्य त्रिवारं प्रणवं संजप्य हृदि संस्पृश्य ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा इति त्रिवारं जप्त्वा "हृदिस्था देवताः सर्वा हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिता॥ *(अनुष्ठान पद्धति) इति जपेत्।*

कलश के मध्य (हृदय भाग) में द्वादश दल पद्म की संकल्प करें। पूर्वादि दलों से सूर्य कलाओं को न्यास करके, उस स्थान पर **गायत्री मन्त्र** से एवं ॐ सूर्यमण्डलाय नमः इस समष्टि मन्त्र से ॐआं ह्रीं क्रों प्राणप्रतिष्ठामन्त्र से दोनों हाथों से व्यापन कर, कलश के निचले भाग को कुशाओं से छूकर तीन बार ॐकार का जपकर। ॐह्रीं हं सः सो हं स्वाहा तीन बार जपकर हृदिस्था मन्त्र से प्रार्थना करें।

सूर्यकला न्यास—ॐह्रीं कं भं तपिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं खं बं तापिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं गं फं धूम्रायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्री घं पं मरीच्यै

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ड. नं ज्वालिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं चं धं रुच्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं छं दं सुषुम्नायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं जं थं भोगदायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं झं तं विश्वायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ञां णं बोधिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं टं ढं धरिण्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ठं डं क्षमायै कलाशक्त्यै नमः।

ॐ ह्रीं तत्सवि॒तुर्वरे॑ण्यं॒ भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि। धियो॒ यो नः॑ प्रचो॒दया॑त्। *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

ॐ अं सूर्यमण्डलाय द्वादश वसुप्रद कलात्मने नमः ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः सूर्यकलानां प्राण इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः सूर्यकलानां जीवइहास्थितः ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः सूर्यकलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षु श्रोत्र घ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कुशों से कलश के निचल भाग को छूते हुए बोलें। फिर ॐ ॐ ॐ कहें। हृदय को छूकर (कलश के मध्य को) **ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा तीन बार कहें।**

हृदिस्था देवताः सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिताः॥ कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

सोमकला न्यास विधान—द्वादशान्ते षोडश दल पद्मं संकल्प्य दलेषु सोमकलाः न्यस्य तत् स्थाने त्र्यंबक ऋचा व्याप्य उं सोममण्डलाय नमः इति समष्टि मन्त्रेण ॐ आं ह्रीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठामन्त्रेण च व्याप्य ऊर्वोः संम्पृश्य त्रिवारं प्रणवं संजप्य हृदि सम्पश्य ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा इति त्रिवारं जप्त्वा

हृदिस्था देवताः सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिताः॥ *(अनुष्ठान पद्धति) इति जपेत्।*

कलश के मुख (द्वादशान्त) में १६ दल के पद्म की संकल्प करें। उसमें सोमकलाओं का न्यास करके उस स्थान पर त्र्यंबकं यजामहे मन्त्र से एवं उं सोम मण्डलाय नमः इस समष्टि मन्त्र से एवं ॐ आं ह्रीं क्रों प्राण प्रतिष्ठा मन्त्र से दोनों हाथों से व्यापन कर कलश के निचले भाग को कुशाओं से छूकर तीन बार

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ कार का जप करें। ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा तीन बार कहकर हृदिस्था मन्त्र से प्रार्थना करें।

ॐ ह्रीं अं अमृतायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं आं मानदायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं इं पूषायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ई तुष्टयै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं उं पुष्ट्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ऊं रत्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ऋं धृत्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ॠं शशिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं लृं चन्द्रिकायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं लॄं कान्त्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ऐं ज्योत्स्नायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ऐं श्रियै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ओं प्रीत्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं औं अंगदाये कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं अं पूर्णायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं अः पूर्णामृतायै कलाशक्त्यै नमः।

ॐ त्र्यंबकं याजमहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यो र्मुक्षीयमामृतात्। *(ऋग्वेद ७.५९.१२)*

ॐ सोममण्डलाय षोडश काम प्रद कलात्मने नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः सोमकलानां प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः सोमकलानां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः सोमकलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा *(अनुष्ठान पद्धति)*। कुशों से कलश के निचले भाग को छूते हुए बोलें। फिर ॐ ॐ ॐ कहें। कलश के मध्य भाग को छूकर तीन बार **'ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा'** कहें।

हृदिस्थ देवता सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्वं समर्पयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिताः॥ कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

अकार कला न्यास—पादयोः संध्यग्रेषु अकार कलान्यस्य तत् स्थाने हंसः शुचिष इत्यादि ऋचा व्याप्य ॐ ब्रह्मणो नमः इत्यादि समष्टि मन्त्रेण ॐ आं ह्रीं क्रों इति प्राण प्रतिष्ठा मन्त्रेण च व्याप्य ऊर्वोः संस्पृश्य त्रिवारं प्रणवं संजप्य हृदि संस्पृश्य ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा इति त्रिवारं जप्त्वा 'हृदिस्था'' इति जपेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

कलश के पाद में अकार कला का न्यास करें। उस स्थान पर हंसः शुचिष इति ऋक् से, ॐ ब्रह्मणो नमः इत्यादि समष्टि मन्त्रों से, एवं ॐ आं ह्रीं क्रों

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र से दोनों हाथों से व्यापन कर कलश के निचले भाग को कुशाओं से छूकर तीन बार ॐकारं का जप करें। ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा तीन बार कहकर हृदिस्था मन्त्र से प्रार्थना करें।

ॐ ह्रीं कं सृष्ट्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं खं ऋध्यै कलशशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं गं स्मृत्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं घं मेधायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ङ कान्त्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं चं लक्ष्म्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं छं धृत्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं जं स्थिरायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं झं स्थित्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ञं सिद्ध्यै कलाशक्त्यै नमः।

ॐ हंसः शुचिषद्वसुरंत रिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।
नृषवरसदृत सद्व्यो मसदब्जागोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतम्॥ *(ऋग्वेद ४.४०.५)*

ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ पृथिव्यात्मने नमः। ॐ गंधतन्मात्रात्मने नमः। ॐ सृष्ट्यात्मने नमः। ॐ निवृत्यात्मने नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः अकार कलानां प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः अकार कलानां जीव इह स्थितः।

ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः अकार कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्र घ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कुशों से कलश के निचले भाग को छूते हुए बोलें। फिर ॐ ॐ ॐ कहें। कलश के मध्य भाग को छूकर तीन बार **ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा** कहें।

हृदिस्था देवता सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिताः॥ कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

अकार कला न्यास—हस्तयोः संध्यग्रेषु उकार कलाः न्यस्य तत् स्थाने ॐ प्रतद्विष्णु इति ऋचा व्याप्य ॐ विष्णवे नमः इत्यादि समष्टिमन्त्रेण ॐ आं ह्रीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रेण च व्याप्य ऊर्वोः संस्पृश्य त्रिवारं प्रणवं संजप्य "ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा" इति त्रिवारं जप्त्वा हृदिस्था"। *(अनुष्ठान पद्धति) इति जपेत्*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कलश के मूल में उकार कला का न्यास करें। उस स्थान पर प्रतद्विष्णु इस ऋक् से ॐ विष्णवे नमः इत्यादि समष्टि मन्त्रों से एवं ॐ ऋां ह्रीं क्रों आदि प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रों से व्यापन करें। कलश के निचले भाग को कुशाओं से छूकर तीन बार ॐकार का जप करें। ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा तीन बार कहकर हृदिस्था मन्त्र से प्रार्थना करें।

ॐ ह्रीं टं जरायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ठं पालिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं डं शान्त्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ढं ऐश्वर्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं णं रत्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं तं कामिकायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं थं वरदायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं दं ह्लादिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं धं प्रीत्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं नं दीर्घायै कलाशक्त्यै नमः।

ॐ प्रतद्विष्णुस्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा॥ *(ऋग्वेद १.१५४.२)*

ॐ विष्णवे नमः। ॐ आत्मने नमः। ॐ रसतन्मात्रात्मने नमः। ॐ जिह्वात्मने नमः। ॐ पायुविसर्गात्मने नमः। ॐ प्रतिष्ठात्मने नमः। ॐ ऋां ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः उकार कलानां प्राणा इह प्राणाः। ॐ ऋां ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः उकार कलानां जीव इह स्थितः। ॐ ऋां ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः उकार कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्र घ्राण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कुशों से कलश के निचले भाग को छूते हुए **ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा** तीन बार कहें।

हृदिस्था देवताः सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिताः॥ कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

मकार कला न्यास—पायू वृषण ऋन्धुनाभि कुक्षि हृदय पार्श्वद्वय पृष्ठ ककुत्सु मकार कलाः न्यस्य तत् स्थाने त्र्यंबकं इति ऋचा ॐ सूर्याय नमः इत्यादि समष्टि मंत्रेण ॐ ऋां ह्रीं क्रां इति प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रेण च व्याप्य ऊर्वोः संस्पृश्य त्रिवारं प्रणवं संजप्य हृदि संस्पृश्य 'ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा' इति त्रिवारं जप्त्वा हृदिस्था इति जपेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कलश के मध्य में मकार कला का न्यास करें। उस स्थान पर त्र्यंबकं इस त्रकृ से ॐसूर्याय नमः इत्यादि समष्टि मंत्रों से एवं ॐआं ह्रीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रों से व्यापन करें। कलश के मूल को छूकर तीन बार ॐ ॐ ॐ का जप करें। ॐह्रीं हं सः सोहं स्वाहा'' इसे तीन बार जपकर। ''हृदिस्था'' कहकर प्रार्थना करें।

ॐह्रीं पं तीक्ष्णायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं फं रौद्र्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं बं भयायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं भं निद्रायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं मं तन्द्र्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं यं क्षुधायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं रं क्रोधिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं लं क्रियायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं वं उत्कार्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं शं मृत्युरूपायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारु कमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥ ॐसूर्याय नमः। ॐह्रीं अग्न्यात्मने नमः। ॐरूप तन्मात्रात्मने नमः। ॐचक्षुरात्मने नमः। ॐपाद गमनात्मने नमः। ॐसंहारात्मने नमः। ॐविद्यात्मने नमः। *(अनुष्ठान पद्धति)*

ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः कुमार कलानां प्राणा इह प्राणाः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः मकार कलानां जीव इह स्थितः। ॐआं ह्रीं क्रां य र ल व श ष स हों सं हं सः मकार कलानां सर्वेन्द्रियाणि वङ्मनः चक्षुश्रोत्र घ्राण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कुशों से कलश के मध्य भाग को छूते हुए बोलें। फिर ॐ ॐ ॐ कहें। कलश के मध्य को छूकर ''ॐह्रीं हं सः सोहं स्वाहा'' तीन बार कहें।

हृदिस्था देवता सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिताः॥ कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

कण्ठास्य भ्रूद्वय मूर्धसु बिन्दुकलाः न्यस्य तत् स्थाने तत्सवितुरिति ऋचा ॐईश्वराय नमः इत्यादि समष्टि मंत्रेण ॐआं ह्रीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठामंत्रेण च व्याप्य ऊर्वोः संस्पृश्य त्रिवारं प्रणवं संजप्य हृदि संस्पृश्य ॐह्रीं हंसः सोहं स्वाहा इति त्रिवारं जप्त्वा हृदिस्था इति जपेत्।

कलश के मुख में बिंदु कला का न्यास करें। उस स्थान पर तत्सवितुः इस ऋक् से ॐईश्वराय नमः इत्यादि समष्टि मंत्र से ॐआं ह्रीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठा मंत्र से व्यापन करें। ॐह्रीं हं सः सोहं स्वाहा इसे तीन बार जपकर ''हृदिस्था'' कहकर प्रार्थना करें। ॐह्रीं षं पीतायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं सं श्वेतायै

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं हं ॠरुणायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ळं ॠसितायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं क्षं ॠनंतायै कलाशक्त्यै नमः।

ॐ तत्सवि॒तुर्वरे॑ण्यं॒ भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि। धियो॒ यो नः॑ प्रचो॒दया॑त्॥ *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

ॐ ईश्वराय नमः। ॐ वाग्वात्मने नमः। ॐ स्पर्शतन्मात्रात्मने नमः। ॐ त्वगात्मने नमः। ॐ पाण्यादानात्मने नमः। ॐ तिरोभवात्मने नमः। ॐ शान्त्यात्मने नमः। ॐ ॠं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः बिन्दुकलानां प्राणा इह प्राणाः। ॐ ॠं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः बिन्दुकलानां जीव इह स्थितः। ॐ ॠं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः बिन्दुकलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कुशों से कलश के मुख भाग को छूते हुए बोलें फिर ॐ ॐ ॐ कहें। कलश के मध्य को छूकर **"ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा"** तीन बार कहें।

हृदिस्था देवता सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व सपर्मयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिताः॥ कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

नाद कला न्यास—प्रतिलोम स्वरस्थानेषु नादकलान्यस्य तत् स्थाने विष्णुर्यो निमिति ॠचा ॐ ह्रीं सदाशिवाय नमः इत्यादि समष्टि मंत्रेण ॐ ॠं ह्रीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठा मंत्रेण च व्याप्य ऊर्वोः संस्पृश्य त्रिवारं प्रणवं संजप्य हृदि संस्पृश्य "ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा इति त्रिवारं जप्त्वा हृदिस्था इति जपेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

संपूर्ण कलश को कुशाओं से छूते हुए नाद कलाओं का न्यास करें। उस स्थान पर विष्णुर्योनीति ॠक् से ॐ सदाशिवाय नमः इत्यादि समष्टिमंत्रों से ॐ ॠं ह्रीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठामंत्र से व्यापन करके कलश के मूल को छूकर ॐ ॐ ॐ कहें। कलश के मध्य को छूकर "ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा" इसे तीन बार जप करें। कलश के मध्य को छूकर हृदिस्था कहकर प्रार्थना करें। ॐ ह्रीं ॠं निवृत्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ॠं प्रतिष्ठायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ॡं विद्यायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ॡं शांत्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं उं इन्धिकायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ऊं दीपिकायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ॠं रेचिकायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ॠं मोचिकायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं लृं परायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं लृं सूक्ष्मायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ऐं सूक्ष्मामृतायै

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ऐं ज्ञानामृतायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ओं आप्यायिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं औं व्यापिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं अं व्योमरूपायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं अः अनन्तायै कलाशक्त्यै नमः।

ॐ विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु। आसिंञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते॥ *(ऋग्वेद १०.१८४.१)*

ॐ सदाशिवाय नमः। ॐ आकाशात्मने नमः। ॐ शब्दतन्मात्रात्मने नमः। ॐ श्रोत्रात्मने नमः। ॐ वाग् वचनात्मने नमः। ॐ अनुग्रहात्मने नमः। ॐ शान्त्यतीतात्मने नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः नादकलानां प्राणा इह प्राणः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः नादकलानां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः नादकलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राणप्राणाः। इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वहा। *(अनुष्ठान पद्धति)* कुशों से कलश के सर्वाङ्ग को छूकर बोलें। फिर ॐ ॐ ॐ कहें। कलश के मध्य को छूकर "ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा" तीन बार कहें

हृदिस्था देवता सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिताः॥ कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

शक्ति कला न्यास—मूलाधार हृदय मूर्धसु शक्तिकला न्यस्य ॐ शक्त्यात्मने नमः इति समष्टि मन्त्रेण ॐ आं ह्रीं क्रों इति प्राण प्रतिष्ठामंत्रेण च व्याप्य ऊर्वोः संस्पृश्य त्रिवारं प्रणवं संजप्य हृदिसंस्पृश्य ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा इति त्रिवारं जप्त्वा "हृदिस्था" इति जपेत्। कलश के सर्वाङ्ग को कुशों से छूकर न्यास करें। **ॐ शक्त्यात्मने नमः**। इस समष्टिमंत्र से ॐ आं ह्रीं क्रों इत्यादि प्राणप्रतिष्ठा मंत्र से व्यापन करें। कलश के मूल को कुशों से छूकर तीन बार ॐ ॐ ॐ का जप करें। ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा" इसे तीन बार जपकर

हृदिस्था देवता सर्वाः हृदये नित्य संश्रिता। हृदि सर्वं समर्पयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिताः॥

कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें। ॐ ह्रीं इच्छायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ज्ञानायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं क्रियायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ शक्त्यात्मने नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शक्ति कलानां प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शक्ति कलानां जीव

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शक्ति कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राण प्राणाः। *(अनुष्ठान पद्धति)* इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा कुशों से कलश के सर्वाङ्ग को छूकर बोलें। फिर ॐ ॐ ॐ कहे। कलश के मूल को छूकर **"ॐ ह्रीं हं सः सोहं"** स्वाहा तीन बार कहें॥

हृदिस्था देवता सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिताः॥ कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

शान्ति कला न्यास—हृदये शान्तकलाः न्यस्य ॐ शान्त्यात्मने नमः समष्टि मन्त्रेण ॐ आं ह्रीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठामंत्रेण च व्याप्य ऊर्वोः संस्पृश्य त्रिवारं प्रणवं संजप्य हृदि संस्पृश्य ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा इति त्रिवारं जप्त्वा हृदिस्था इति जपेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

कलश के मध्य में कुशों से छूकर न्यास करें। "ॐ शान्त्यात्मने नमः" समष्टि मंत्र से ॐ ह्रीं क्रों इत्यादि प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र से व्यापन करें। कलश के मूल को कुशों से छूकर तीन बार ॐ ॐ ॐ का जप करें। **"ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा"** इसे तीन बार कहकर हृदिस्था इससे प्रार्थना करें।

ॐ ह्रीं चिदात्मने कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं सदात्मने कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं आनंदात्मने कलाशक्त्यै नमः। ॐ शांत्यात्मने नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शान्ति कलानां प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शांति कलानां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शान्ति कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षु श्रोत घ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा। कुशों से कलश के सर्वाङ्ग को छूकर बोलें। फिर ॐ ॐ ॐ कहें। कलश के मूल को छूकर **"ॐ ह्रीं हं सः सोहं"** स्वाहा तीन बार कहें।

हृदिस्था देवताः सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्प्यादि हृदि प्राणोः प्रतिष्ठिताः॥ *(अनुष्ठान पद्धति)*

कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

कलशे लिपि न्यासः— ॐ अं नमः। ॐ आं नमः। ॐ इं नमः। ॐ ईं नमः। ॐ उं नमः। ॐ ऊं नमः। ॐ ऋं नमः। ॐ ॠं नमः। ॐ लृं नमः। ॐ पं नमः। ॐ पें

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नमः। ॐ ओं नमः। ॐ औं नमः। ॐ अं नमः। ॐ अः नमः। ॐ कं नमः। ॐ खं नमः। ॐ गं नमः। ॐ घं नमः। ॐ ङं नमः। ॐ चं नमः। ॐ छं नमः। ॐ जं नमः। ॐ झं नमः। ॐ ञं नमः। ॐ टं नमः। ॐ ठं नमः। ॐ डं नमः। ॐ ढं नमः। ॐ णं नमः। ॐ तं नमः। ॐ थं नमः। ॐ दं नमः। ॐ धं नमः। ॐ नं नमः। ॐ पं नमः। ॐ फं नमः। ॐ बं नमः। ॐ भं नमः। ॐ मं नमः। ॐ यं नमः। ॐ रं नमः। ॐ लं नमः। ॐ वं नमः। ॐ शं नमः। ॐ षं नमः। ॐ सं नमः। ॐ हं नमः। ॐ ळं नमः। ॐ क्षं नमः। कलश को कुशों से छूकर न्यास करें। *(अनुष्ठान पद्धति)*

कलशे तत्व न्यासः—ॐ मं नमः पराय जीवात्मने नमः। ॐ भं नमः पराय प्राणात्मने नमः। ॐ बं नमः पराय बुध्यात्मने नमः। ॐ फं नमः पराय अहंकारात्मने नमः। ॐ पं नमः पराय मन आत्मने नमः। ॐ नं नमः पराय शब्द तन्मात्रात्मने नमः। ॐ घं नमः पराय स्पर्श तन्मात्रात्मने नमः। ॐ दं नमः पराय रूप तन्मात्रात्मने नमः। ॐ थं नमः पराय रस तन्मात्रात्मने नमः। ॐ तं नमः पराय गंध तन्मात्रात्मने नमः। ॐ णं नमः पराय श्रोत्रात्मने नमः। ॐ ढं नमः पराय त्वगात्मने नमः। ॐ डं नमः पराय चक्षुरात्मने नमः। ॐ ठं नमः पराय जिह्वात्मने नमः। ॐ टं नमः पराय घ्राणात्मने नमः। ॐ ञं नमः परय वागात्मने नमः। ॐ झं नमः पराय पाणयात्मने नमः। ॐ जं नमः पराय पादात्मने नमः। ॐ छं नमः पराय पाय्वात्मने नमः। ॐ चं नमः पराय उपस्थात्मने नमः। ॐ ङं नमः पराय आकाशात्मने नमः। ॐ घं नमः पराय वाय्वात्मने नमः। ॐ गं नमः पराय तेज आत्मने नमः। ॐ खं नमः पराय अपात्मने नमः। ॐ कं नमः पराय पृथिव्यात्मने नमः। ॐ शं नमः पराय हृत्पुण्डरीकात्मने नमः। ॐ हं नमः पराय सूर्यमण्डलाय द्वादश कलात्मने नमः। ॐ सं नमः पराय सोममण्डलाय षोडश कलात्मने नमः। ॐ रं नमः पराय वह्निमण्डलाय दशकालात्मने नमः। ॐ हौं नमः परात्र शान्त्यतीतात्मने नमः। ॐ ह्यौं नमः पराय शान्त्यात्मने नमः। ॐ ह्रूं नमः पराय विद्यात्मने नमः। ॐ ह्रीं नमः पराय प्रतिष्ठात्मने नमः। ॐ ह्रां नमः पराय निवृत्यात्मने नमः। *(अनुष्ठान पद्धति)* कहकर कुशों से कलश को छूकर न्यास करें।

ॐ चं चंद्राय नमः। सोममूर्तिमावाहयामि। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अवगुण्ठितो भव। अमृतीकृतो भव। व्यासो भव। सुप्रसन्नो भव। कहकर मुद्राओं का प्रदर्शन करें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ पूर्णा दर्वि परापतसुपूर्णापुनरापत। वस्नेववविक्रीणावहाइषमूर्जं शतक्रतो॥ *(यजुर्वेद-१ काण्ड-८ प्रश्न-४ अनुवाक-२ मन्त्र)*

अनेन कलशे शेषं संपूर्य। (उपरोक्त मन्त्र को कहकर कलश में जल भरें। ॐ अस्त्राय फट् इति।)

ॐ प्रवो यज्ञेषु देवयन्तो अर्चन् द्यावा नमोभिः पृथिवी इषध्यै।
येषां ब्रह्माण्यसमानि विप्रा विष्वंग्वियन्तिवनिनो न शाखाः॥ *(ऋग्वेद ७.४३.१)*

इति पल्लवादिकं न्यस्य (कहकर कलश में पल्लव आम, पीपल, पलाश के पते रखें।) पूर्णपात्रे शुक्लतण्डुलान् प्रपूर्य कलशे स्थाप्य (पूर्णपात्र में) (बड़ी कटोरी) में सफेद चावलों को भरकर कलश के ऊपर रखें।

प्रतिमा शुद्धि विधान *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*—इसमें पूजन में रखने वाला प्रतिमा का शुद्धीकरण होता है।

देशकालौ संकीर्त्य अस्याः प्रतिमायाः अंग प्रत्यंग संधि समुत्पन्न वास्यग्नि कुद्दालाग्नि टंकाग्न्यातप निरासार्थे अग्न्युत्तारणं करिष्ये इति संकल्प्य

देशकालों का स्मरण कर इस प्रतिमा के अंग प्रत्यंगों के जोड में बनाते समय लगे विभिन्न उपकरणों के चोट से एवं बनाते समय तपाने से एवं धूप में सूखाने से उत्पन्न सभी दोषों के निवारण के लिए शुद्धि करने का संकल्प लेवें।

अग्निः सप्तिमिति वर्गेण अग्निपदत्यागेन पठितेन पुनः अग्निपदसहितेन पठितेनैक मार्वतनं भवति एवं अष्टशतवारं अष्टविंशतिवारं वा पठित्वा संततं जल धारां कुर्यात्। अग्निः सप्ति इस वर्ग से (सात मंत्र) पहले अग्निपद छोडकर पढें फिर उन मन्त्रों को अग्नि पद जोडकर पढें। तब एक आवर्तन हुआ। ऐसे १०८ आवर्तन या २८ आवर्तन करें आगे मन्त्र लिखा है वह आवर्तन का है। अग्नि सप्तिमिति सप्तर्चस्य सूक्तस्य सौचिको वैश्वानर स्त्रिष्टुप्। अग्न्युत्तारणो विनियोगः।

ॐ सप्तिंवाजं भरंददाति वीरं श्रुत्यं कर्मनिष्ठाम्। रोदसीविचरत्समंजन्नारींवीर कुक्षिं पुरंधिं॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ अप्रंसः समिदंस्तु भद्रामही रोदंसी आविंवेश। एकं चोदयत्समत्सुंवृत्राणिंदयते पुरूणिं॥
ॐ हत्यं जरंतः कर्णामावादभ्योनिरंदहज्जरूंथं। अत्रिं धर्मउंरुष्य दुंतर्नृमेधं प्रजयां सृजत्सं॥
ॐ द्वाद्रविंणां वीरपेंशा ऋषिं यः सहस्त्रां सनोतिं। दिविहव्यमातंतान धामांनिविभृंता पुरुत्रा॥
ॐ उक्थैर्ऋषंयोविह्वयंते नरोयामंनि बाधितासंः। वयों अंतरिंक्षे पतंतः सहस्त्रा परियातिगोनां॥
ॐ विशंईळते मानुंषीर्यामनुंषोन हुंषोविजाताः। गांधर्वीं पथ्यांमृतस्य गव्यूंति घृत आनिषंत्ता॥
ॐ ब्रह्मं ऋभवंस्ततक्षुर्महामंवो चामासुवृक्तिं। प्रावंजरितारंय विष्ठ महिद्रविंणामायंजस्व॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-अग्न्युत्तारण विधान)*

यहाँ पर अग्निपद रहित सूक्त संपन्न हुए आगे अग्नि पद सहित सूक्त—

ॐ अग्निः सप्तिं वाजं भरं ददात्यग्नि वीरं श्रुत्यं कर्मनिष्ठां। अग्नेरोदंसी विचंरत्समजन्नग्निर्नारीं वीर कुंक्षिं पुरंधिं॥
ॐ अग्नेरप्रंस समिदंस्तु भद्राग्निर्महीरोदंसी आविंवेश। अग्निरेकं चोदयत्समत्स्वग्नि वृत्राणिंदयते पुरूणिं॥
ॐ अग्निर्हत्यं जरंतः कर्णामावाग्निरद्भ्योनिरंदहज्जरूंथं। अग्निरत्रिं घर्म उंरुष्यदुंत रग्निर्नृमेधं प्रजयां सृजत्सं॥
ॐ अग्निर्द्वा द्रविंणां वीरपेंशा अग्निर्ऋषिं यः सहस्त्रां सनोतिं। अग्निर्दिविहव्यमातंतानाग्ने धामांनिविभृंता पुरुत्रा॥
ॐ अग्निमुक्थैर्ऋ षंयोविह्वयंतेग्निं नरोयामंनिबाधितासंः।अग्निं वयों अंतरिंक्षे पतंतोऽग्निः सहस्त्रा परियातिगोनां॥
ॐ अग्निंविशंईळते मानुंषीर्याअग्निंमनुंषोन हुंषोविजाताः। अग्निर्गांधर्वीं पथ्यांमृतस्या ग्नेर्गव्यूंति घृत आनिषंत्ता॥
ॐ अग्नये ब्रह्मं ऋभववंस्ततक्षुरग्निं महामंवोचामासुवृक्तिं।
अग्ने प्रावंजरितारंयविष्ठाग्नेमहिद्रविंणामायंजस्व॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-अग्न्युत्तारण विधान)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इन अग्न्युत्तारण सूक्तों से प्रतिमा पर सतत जल धारा करने से प्रतिमा की शुद्धि होती है। उस प्रतिमा को चावल से भरे पूर्ण पात्र में रखें।

याः फलिनीर्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानो मुञ्चंत्वं हसः॥ *(ऋग्वेद १०.९७.१५)*

कहकर चावल से भरे पात्र में प्रतिमा के ऊपर नारियल रखें। ॐ अस्त्राय फट्। ॐ कवचाय हुम्।

ॐ युवं वस्त्राणि पीवसावसाथे युवोरच्छिद्रामंतवोहसर्गाः। अवातिरतमनृतानि विश्व ऋतेन मित्रावरुणासचेथे॥ *(ऋग्वेद १.१५२.१)*

कहकर दो वस्त्रों से लपेटें सभी कलशों को वस्त्र लपेटें।

ॐ गंधं द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

गंधं समर्पयामि। कहकर चन्दन चढायें।

ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उतपुरन्नघृष्णवर्चत॥ *(ऋग्वेद ८.६९.८)*

अक्षतान् समर्पयामि। कहकर अक्षत से पूजन करें।

ॐ आयनेते परायणे दूर्वारोहंतु पुष्पिणीः। ह्रदाश्च पुण्डरीकाणि समुद्रस्य गृहा इमे॥ *(ऋग्वेद १०.१४२.८)*

पुष्पाणि समर्पयामि। **कहकर फूल चढायें।**

ॐ पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषिविश्वतः। अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद्वहन्तस्तत् समाशत॥ *(ऋग्वेद ९.८३.१)*

पवित्रं समर्पयामि। **कहकर दो कुशा को बाँधकर रखें। ॐ चं चंद्राय नमः।** सोममूर्तिमावाहयामि। आवाहितो भव संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अवगुंठितो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव।

ॐ अत्रिपुत्राय विद्महे। अमृतोद्भवाय धीमहि। तन्नः सोमः प्रचोदयात्॥ *गौतम ऋषिः सोमो देवता गायत्री छन्दः।*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ आप्यायस्व हृदयाय नमः। ॐ समेतु ते शिरसे स्वाहा। ॐ विश्वतः शिखायै वषट्। ॐ सोमवृष्णियं कवचाय हुम्। ॐ संगथे अस्त्राय फट्। ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः।

ध्यान—आत्रेयं यमुनाप्रभुं ग्रहगणास्याग्नेय भागस्थितं। श्वेतं श्वेतसुगंधमाल्यवसनं श्वेतांबुजोद्यत् करं।
श्वेतच्छत्रविभूषणां ध्वजरथच्छत्रश्रिया शोभितं। मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे शीतलम्।

ॐ चं चंद्राय नमः। इस मूल मंत्र को आठ बार जप करें। ॐ लं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। अंगुष्ठाग्र कनिष्ठिका मूल। ॐ हं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। अंगुष्ठ अग्र तर्जनी मूल मध्यमा। ॐ रं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। अंगुष्ठा अग्र मध्यमा ॐ वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। अंगुष्ठ अग्र अनामिका मूल ॐ पं परमात्मने पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रथमावरण पूजनम्—ॐ हृदयाय नमः। ॐ शिरसे स्वाहा नमः। ॐ शिखायै वषट् नमः। ॐ कवचाय हुम् नमः। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् नमः। ॐ अस्त्राय फट् । *(अनुष्ठान पद्धति)*

द्वितीयावरण पूजनम्—ॐ ब्राह्मयै नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ कौमार्यै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ इन्द्राण्यै नमः। ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ गिरिजायै नमः। *(अनुष्ठान पद्धति)*

तृतीयावरण पूजनम्—ॐ इन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्णाय वज्रहस्ताय ऐरावत वाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवारायश्री सोममूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ अग्नये तेजोधिपतये पिंगलवर्णाय शाक्ति हस्ताय मेष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय स वाहनाय स परिवाराय श्री सोममूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ यमाय प्रेताधिपतये कृष्णवर्णाय दण्ड हस्ताय महिष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सोममूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ निर्ऋतये रक्षोधिपतये रक्तवर्णाय खड्ग हस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सोममूर्ति पार्षदाय नमः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐवरुणाय जलाधितये कुंदवर्णाय पाशहस्ताय मकरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सोममूर्ति पार्षदाय नमः। ॐवायवे प्राणाधिपतये धूम्रवर्णाय अंकुश हस्ताय हरिणवाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सोममूर्ति पार्षदाय नमः। ॐसोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्णाय गदा हस्ताय अश्व वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सोममूर्ति पार्षदाय नमः। ॐईशानाय विद्याधिपतये स्फटिकवर्णाय त्रिशूल हस्ताय वृषभ वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सोममूर्ति पार्षदाय नमः। ॐअनंताय नागाधिपतये क्षीरवर्णाय चक्रहस्ताय गरुड वाहनाय स शक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सोममूर्ति पार्षदाय नमः। नैर्ऋत्यं एवं पश्चिम दिशा के बीच में अनन्त का पूजन करें। ॐब्रह्मणो लोकाधिपतये कंजवर्णाय पाशहस्ताय हंसवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सोममूर्ति पार्षदाय नमः। पूर्व एवं ईशान दिशा के बीच में ब्रह्मा जी का पूजन करें। *(अनुष्ठान पद्धति)*

चतुर्थावरणपूजनम्---ॐवज्राय नमः। (पूर्व में) ॐशक्त्यै नमः। (आग्नेय में) ॐदण्डाय नमः। (दक्षिण में) ॐखड्गाय नमः। (नैर्ऋत्य) ॐपाशाय नमः। (पश्चिम में) ॐअंकुशाय नमः। (वायव्य में) ॐगदायै नमः। (उत्तर में) ॐत्रिशूलाय नमः। (ईशान में) ॐचक्राय न मः। (पश्चिम नैर्ऋत्य के बीच में) ॐपद्माय नमः। (पूर्व ईशान के बीच में) *(अनुष्ठान पद्धति)*

कलशे सोम आवाहनम्-आप्यायस्व गोतमः सोमो गायत्री सोमावाहने विनियोगः।

ॐ आप्यायस्व समेतुते विश्वतः सोमवृष्णयं। भवाजस्य संगथे॥ *(ऋग्वेद १.९१.१६)* आ.गृ.सूत्रम्

ॐ सोमाय नमः। ॐभूःसोममावाहयामि। ॐभुवःसोममावाहयामि। स्वःसोममावाहयामि। भूर्भुवःस्वःसोममावाहयामि। ॐनक्षत्राधिपतये नमः। ॐनक्षत्राधिपतिमावाहयामि। ॐशीतपाणये नमः। ॐशीतपाणिमावाहयामि। ॐईश्वराय नमः। ॐईश्वरमावाहयामि। ॐसर्वोत्पातशमनाय नमः। ॐसर्वोत्पातशमनं आवाहयामि। **अथ कल्पोक्त षोडशोपचार पूजां करिष्ये** *(यहाँ से मण्डल में एवं कलश में आवाहित देवताओं का पूजन प्रारंभ।)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नवशक्ति पूजन

ॐराकायै नमः। ॐकुमुद्वत्यै नमः। ॐनंदायै नमः। ॐसंध्यायै नमः। ॐसंजीविन्यै नमः। ॐक्षमायै नमः। ॐज्योत्स्नायै नमः। ॐनित्यायै नमः। ॐप्रभायै नमः। ॐनमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनंताययोगपीठात्मने नमः। सुवर्णा पीठं कल्पयामि। स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्य परमेश्वर। अरण्यामिव हव्याशं कुम्भे आवाहयाम्यहम्॥ ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः सोमस्य प्राणाइह प्राणाः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः सोमस्य जीवइहस्थितः ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः सोमस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङमनः चक्षुश्रोत्र घ्राण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा। *(अनुष्ठान पद्धति)*

ॐ असुंनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नो धेहि भोगं। ज्योक्पश्येम सूर्यमुच्चरन्त मनुमते मृळयानः स्वस्ति। *(ऋग्वेद १०.५९.६)*

ॐ पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्तरिक्षम्। पुनर्नः सोमस्तन्वं ददातु पुनः पूषा पथ्यांइ या स्वस्तिः। *(ऋग्वेद १०.५९.७)*

सशक्ति सांग सायुध सवाहन सपरिवार श्रीसोम भगवन् अत्रैवागच्छागच्छ आवाहयिष्ये। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अवगुण्ठितो भवः। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। **ॐ अत्रिपुत्राय विद्महे। अमृतोद्भवाय धीमहि। तन्नः सोमः प्रचोदयात्॥** गौतम ऋषिः सोमो देवता गायत्री छन्दः। ॐआप्यायस्व हृदयाय नमः। ॐसमेतु ते शिरसे स्वाहा। ॐविश्वतः शिखायै वषट्। ॐसोमवृष्णियं कवचाय हुम्। ॐसंगथे अस्त्राय फट्। ॐभूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः।

षोडशोपचार पूजनम्—

ध्यान—आत्रेयं यमुनाप्रभुं ग्रहगणास्याग्रेय भागस्थितं। श्वेतं श्वेतसुगंधमाल्यवसनं श्वेतांबुजोद्यत् करं।
श्वेतच्छत्रविभूषणं ध्वजरथच्छत्रश्रिया शोभितं। मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे शीतलम्। ॐ चं चंद्रायनमः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आवाहन-ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतोवृत्वात्यं तिष्ठद् दशांगुलम्॥ (ऋग्वेद १०.९०.१)
ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजत स्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। आवाहयामि। आवाहनं समर्पयामि।

आसनम्—ॐ पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेना तिरोहं ति॥ (ऋग्वेद १०.९०.२)
ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। आसनं समर्पयामि।

पाद्यम्— ॐ एतावानस्य महिमाऽतो ज्यायाँश्च पुरुषः। पादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ (ऋग्वेद १०.९०.३)
ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं— ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः। ततो विश्वं व्यक्रामत् साशनानशने अभि॥ (ऋग्वेद १०.९०.४)
ॐ कां सोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहो पह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) सपरिवार श्रीसोमाय नमः। हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—ॐ तस्माद्विराळजायत विराजो अधिपूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथोपुरः। (ऋग्वेद १०.९०.५)
ॐ चंद्रां प्रभासां यशसा ज्वलंतीं श्रियं लोके देवजुष्टा मुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणो॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् (दूध)— ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यं। भवा वाजस्य संगथे। *(ऋग्वेद १०.९१.१६)*

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। पयः स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवेनाति भवे भवस्वमाम् भवोद्भवाय नमः॥

(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत् आरण्यक)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि

दहि— ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखा करत्प्रण आयूंषितारिषत्॥ *(ऋग्वेद ४.३९.६)*

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। दधि स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमश्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमःकलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमस्सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः। *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)*

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्मयामि।

घी— ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्ययोनिर्घृते श्रितो घृतं वस्य धामं।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभवक्षि हव्यम्॥ *(ऋग्वेद २.३.११)* सपरिवार श्रीसोमाय नमः। घृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोर तरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

मधु (शहद)—ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरंति सिंधवः। माध्वीर्नः संत्वोषधीः॥ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रजः।
मधुद्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवंतु नः॥ (ऋग्वेद १.९०.६) सपरिवार श्रीसोमाय नमः। मधु स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्पयामि।

शर्करा (शक्कर)—ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिंद्राय सुहवीतु नाम्ने।
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमाँ अदाभ्यः॥ (ऋग्वेद ९.८५.६)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। शर्करा स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जन—ॐ ईशानस्सर्वविद्यानामीश्वरस्सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽ
धिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोऽम्॥ (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

फल— ॐ याः फलिनी र्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वं हसः॥ (ऋग्वेद १०.९७.१५)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। फल स्नानं समर्पयामि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शुद्धोदक—ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तानऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥ यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयते हनः।
उशतीरिव मातरः॥ तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः। (ऋग्वेद १०.९.१-२-३)
ॐ कद्रुद्राय प्रचेतसे मीळहुष्टमाय तव्यसे। वोचेम शंतमं हृदे॥ (ऋग्वेद १.४३.१)
ॐ यथा नो अदितिः करत्पश्वे नृभ्यो यथा गवे। यथा तोकाय रुद्रियम्॥ (ऋग्वेद १.४३.२)
ॐ यथा नो मित्रो वरुणो यथा रुद्रश्चिकेतति। यथा विश्वे सजोषसः।
ॐ गाथपतिं मेधपतिं रुद्रं जलाषभेषजम्। तच्छं योः सुम्नमीमहे॥
ॐ यः शुक्र इव सूर्यो हिरण्यमिव रोचते। श्रेष्ठो देवानां वसुः।
ॐ शं नः करत्यर्वते सुगं मेषाय मेष्ये। नृभ्यो नारिभ्यो गवे॥
ॐ अस्मे सोम श्रियमधि नि धेहि शतस्य नृणाम्। महिश्रवस्तुविनृम्णाम्॥
ॐ मानः सोमपरिबाधो मारातयो जुहुरंत। आ न इंदो वाजे भज॥
ॐ यास्ते प्रजा अमृतस्य परस्मिन्धामन्नृतस्य। मूर्धा नाभा सोमवेन आ भूषंतीः सोम वेदः॥ (ऋग्वेद १.४३.३-४-५-६-७-८-९)

ॐ नमः सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च नमः शंगाय च पशुपतये च नम उग्राय च भीमाय च नमो अग्रेवधाय च दूरेवधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय नमः शंभवे च मयोभवे च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च नम स्तीर्थ्यायच कूल्याय च नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नम आतार्याय चालाद्याय च नमशष्प्याय च फेन्याय च नमःसिकत्याय च प्रवाह्याय

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

च। (यजुर्वेद-४ काण्ड-५ प्रश्ने-८ अनुवाक)

ॐ तच्छंयोरावृणीमहे। गातुं यज्ञाय। गातुं यज्ञ पतये। दैवीः स्वस्तिरस्तु नः। स्वस्तिर्मानुषेभ्यः।
ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम्। शं नो अस्तु द्विपदे। शं चतुष्पदे। ॐ शांतिः शांतिः। शांतिः॥ (यजुर्वेद-आरण्यक)
ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसंतो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ (ऋग्वेद १०.९०.६)
ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदंतु मायांतरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः। (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

वस्त्र— ॐ युवं वस्त्राणि पीवसावसाथे युवोरच्छिद्रा मंतवो हसर्गाः।
अवातिरममनृतानि विश्वं ऋतेन मित्रा वरुणा सचेथे॥ (ऋग्वेद १.१५२.१)
ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजंत साध्या ऋषयश्च ये॥ (ऋग्वेद १०.९०.७)
ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥

(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतं—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरास्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशून्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान् ग्राम्याश्च ये॥ (ऋग्वेद १०.९०.८)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ क्षुत् पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

आभरण—ॐ हिरण्यरूपः स हिरण्य संदृगपान्नपात् सेदु हिरण्यवर्णः। हिरण्ययात् परियोनेर्निषद्या हिरण्यदा ददत्यन्नमस्मै॥ (ऋग्वेद २.३५.१०)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। आभरणं समर्पयामि।

गन्ध— ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)
ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्य जुस्तस्मादजायत॥ (ऋग्वेद १०.९०.९)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। गन्धं समर्पयामि।

अक्षत—ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उतपुरंन्न धृष्णवर्चत॥ (ऋग्वेद ८.६९.८)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि—ॐ आयने ते परायणे दूर्वारोहंतु पुष्पिणीः। हृदाश्च पुण्डरीकाणि समुद्रस्य गृहा इमे॥ (ऋग्वेद १०.१४२.८)
ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावोहजज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजावयः॥ (ऋग्वेद १०.९०.१०)
ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। पुष्पाणि समर्पयामि।

प्रथमावरण पूजनम्—ॐ हृदयाय नमः। आग्नेय दिशि। ॐ शिरसे स्वाहा नमः। ऐशान्यां दिशि। ॐ शिखायै वषट् नमः। नैर्ऋत्यां दिशि। ॐ कवचाय हुम् नमः। वायव्यां दिशि। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् नमः। अग्रे ॐ अस्त्राय फट् नमः। आग्नेयादि कोणेषु पूजयेत् *(अनुष्ठान पद्धति)*। पूजन करे।

द्वितीयावरण पूजनम्—ॐ ब्राह्मयै नमः। पूर्वे ॐ माहेश्वर्यै नमः। आग्नेय दिशि। ॐ कौमार्यै नमः। दक्षिण दिशि। ॐ वैष्णव्यै नमः। नैर्ऋत्यां दिशि। ॐ वाराह्यै नमः पश्चिम दिशि। ॐ इन्द्राणयै नमः। वायव्यां दिशि। ॐ चामुण्डायै नमः। उत्तरस्यां दिशि। ॐ गिरिजायै नमः ऐशान्यां दिशि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

तृतीयावरण पूजनम्—ॐ इन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्णाय वज्रहस्ताय ऐरावत वाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवारायश्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ अग्नये तेजोधिपतये पिंगलवर्णाय शाक्ति हस्ताय मेष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय स वाहनाय स परिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ यमाय प्रेताधिपतये कृष्णावर्णाय दण्ड हस्ताय महिष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ निर्ऋतये रक्षोधिपतये रक्तवर्णाय खड्ग हस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ वरुणाय जलाधितये कुंदवर्णाय पाशहस्ताय मकरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ वायवे प्राणाधिपतये धूम्रवर्णाय अंकुश हस्ताय हरिणवाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ सोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्णाय गदा हस्ताय अश्व वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ ईशानाय विद्याधिपतये स्फटिकवर्णाय त्रिशूल हस्ताय वृषभ वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ अनंताय नागाधिपतये क्षीरवर्णाय चक्रहस्ताय गरुड वाहनाय स शक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। नैर्ऋत्यं एवं पश्चिम दिशा के बीच में अनन्त का पूजन करें। ॐ ब्रह्मणे लोकाधिपतये कंजवर्णाय पाशहस्ताय हंसवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पार्षदाय नमः। पूर्व एवं ईशान दिशा के बीच में ब्रह्मा जी का पूजन करें। *(अनुष्ठान पद्धति)*

चतुर्थावरणपूजनम्—ॐ वज्राय नमः। (पूर्व में) ॐ शक्त्यै नमः। (आग्नेय में) ॐ दण्डाय नमः। (दक्षिण में) ॐ खड्गाय नमः। (नैर्ऋत्य) ॐ पाशाय नमः। (पश्चिम में) ॐ अंकुशाय नमः। (वायव्य में) ॐ गदायै नमः। (उत्तर में) ॐ त्रिशूलाय नमः। (ईशान में) ॐ चक्राय न मः। (पश्चिम नैर्ऋत्य के बीच में) ॐ पद्माय नमः। (पूर्व ईशान के बीच में) *(अनुष्ठान पद्धति)*

सोम अष्टोत्तर शतनाम पूजा

ॐ श्रीमते नमः। ॐ शशिधराय नमः। ॐ चन्द्राय नमः। ॐ ताराधीशाय नमः। ॐ निशाकराय नमः। ॐ सुधानिधये नमः। ॐ सदाराध्याय नमः। ॐ सत्पतये नमः। ॐ साधुपूजिताय नमः। ॐ जितेन्द्रियाय नमः। ॐ जयोत्योगाय नमः। ॐ ज्योतिश्चक्र प्रर्वत्तकाय नमः। ॐ विकर्त्तनानुजाय नमः। ॐ वीराय नमः। ॐ विश्वेशाय नमः। ॐ विदुषांपतये नमः। ॐ दोषाकरये नमः। ॐ दुष्टदूराय नमः। ॐ पुष्टिमते नमः। ॐ शिष्टपालकाय नमः। ॐ अष्टमूर्ति प्रियाय नमः ॐ अनन्ताय नमः। ॐ कष्टदारुकुठारकाय नमः ॐ स्वप्रकाशाय नमः । ॐ प्रकाशात्मने नमः। ॐ द्यु चराय नमः। ॐ देव भेजनाय नमः। ॐ कलाधराय नमः। ॐ कालहेतवे नमः। ॐ कामकृते नमः। ॐ कामदायकाय नमः। ॐ मृत्यु संहारकाय नमः। ॐ अमर्त्याय नमः। ॐ नित्यानुष्ठानदायकाय नमः। ॐ क्षपा कराय नमः। ॐ क्षीणपापाय नमः। ॐ क्षयवृद्धि समन्विताय नमः। ॐ जैवातृकाय नमः। ॐ शुचये नमः। ॐ शुभ्राय नमः। ॐ जयिने नमः। ॐ जयफल प्रदाय नमः। ॐ सुधामयाय नमः। ॐ सुरस्वामिने नमः। ॐ भक्तानामिष्टदायकाय नमः। ॐ भुक्तिदाय नमः। ॐ मुक्तिदाय नमः। ॐ भद्राय नमः। ॐ भक्तदारिद्र्य भञ्जनाय नमः। ॐ सामगानप्रियाय नमः। ॐ सर्वरक्षकाय नमः। ॐ सागरोत्भवाय नमः। ॐ भयान्तकृते नमः। ॐ भक्तिगम्याय नमः। ॐ भवबन्ध विमोचकाय नमः। ॐ जगत्प्रकाशकिरणाय नमः। ॐ जगदानन्द कारणाय नमः। ॐ निस्सपत्नाय नमः। ॐ निराहाराय नमः। ॐ निर्विकाराय नमः। ॐ निरामयाय नमः। ॐ भूच्छायाच्छादिताय नमः। ॐ भव्याय

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नमः। ॐभुवनप्रतिपालकाय नमः। ॐसजलार्त्तिहराय नमः। ॐसौम्य जनकाय नमः। ॐसाधुनन्दिताय नमः। ॐसर्वागमज्ञाय नमः। ॐसर्वज्ञाय नमः। ॐसनकादिमुनिस्तुताय नमः। ॐसितच्छत्रध्वजोपेताय नमः। ॐसितांगाय नमः। ॐसितभूषणाय नमः। ॐश्वेतमाल्यांबरधराय नमः। ॐश्वेतगन्धात्मलेपनाय नमः। ॐदशाश्वरथसंरूढाय नमः। ॐदण्डपाणये नमः। ॐधनुर्धराय नमः। ॐ कुन्दपुष्पोज्वलाकाराय नमः। ॐनयनाब्ज समुद्भवाय नमः। ॐआत्रेयगोत्रजाय नमः। ॐ अत्यन्त विनयाय नमः। ॐप्रिय दायकाय नमः। ॐकरुणारस संपूर्णाय नमः। ॐ कर्कट प्रभवे नमः। ॐअव्ययाय नमः ॐचतुरश्रासनारूढाय नमः। ॐचतुराय नमः। ॐदिव्यवाहनाय नमः। ॐविवस्वन्मण्डलाज्ञेयवासाय नमः। ॐवसुसमृद्धिधाय नमः। ॐमहेश्वरप्रियाय नमः। ॐदान्ताय नमः। ॐमेरुगोत्रप्रदक्षिणाय नमः। ॐग्रहमण्डलमध्यस्थाय नमः। ॐग्रसितार्क्काय नमः। ॐग्रहाधिपाय नमः। ॐद्विजराजाय नमः। ॐद्युतिलगाय नमः। ॐ द्विभुजाय नमः। ॐद्विजपूजिताय नमः। ॐऔदुंबरनगावासाय नमः। ॐउदाराय नमः। ॐरोहिणीपतये नमः। ॐनित्योदयाय नमः। ॐमुनिस्तुत्याय नमः। ॐनित्यानन्दफलप्रदाय नमः। ॐसकलाह्लादनकराय नमः। ॐपलाशेत्मप्रियाय नमः। अष्टोत्तर शतनाम पूजां समर्पयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

धूपम्—ॐवनस्पति रसोत्पन्नो गंधाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते॥ *(ऋग्वेद १०.९०.११)*

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। धूपं आघ्रापयामि।

दीपम्— **आज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मंगलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह॥** *(स्मृति संग्रह)*

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासी बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१२)*

ॐ आपः सृजंतु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। दीपं दर्शयामि। धूप दीपानंतरं आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यम्—देवस्याग्रे स्थलं संशोध्य गोमयेन मण्डलं कृत्वा तत्र शुद्धं पात्रं न्यस्य अभिघार्य निर्मलं हवि तदुपरि न्यस्य आज्येन द्रवीभूतं कृत्वा "ॐ भू र्भुवः स्वः इति गायत्र्या च प्रोक्ष्य वायु बीजं जप्त्वा निवेद्यान्नं संशोध्य इक्षिणहस्ते अग्निबीजं विलिख्य तेन हस्तेन संदह्यवामहस्ते अमृतबीजं विलिख्य तेत हस्तेन हविराप्लाव्य मूलमंत्रमष्टवारं संजप्य मंत्रामृतमयं संकल्प्य सुरभिमुद्रां बध्वा अमृतमयं भावयित्वा मल धातु रसांशं विभज्य देवस्य निवेद्य ग्रहणोच्छां कुर्यात्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

"सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि" इत्यनेन

परिषिच्य हस्ताभ्यां पुष्पैः "देवस्य जिह्वार्चीरुचि निवेद्ये निपात्य निवेदयामि भवते जुषाणेदं हविर्विभो" इति वामहस्तेन ग्रासमुद्रा प्रदर्श्य दक्षिण हस्तेन प्राणादि मुद्राः प्रदर्शयेत्। अन्नात् मलांशं धात्वंशं च परित्यज्य रसांशं देवस्य वदनार्चिषि समर्पयेत्। वं अबात्मने इति नैवेद्य मुद्रां प्रदर्शयेत्। नैवेद्य सारं रससमर्पणात् जातं सुधांशं देवे समर्प्य अंललिमुद्रां बध्वा नैवेद्यसार रससमर्पित जातामृतमय सुधांशुना पुनः पुनः वर्धितं देवं हृन्मूर्ति देवं ध्यायन् स्व स्व मूलमन्त्रं यथा शक्ति जप्त्वा। कलश के आगे स्थल शुद्धिकर गोमय से शुद्धिकर चतुरस्त्र मण्डल को बनाकर उस पर शुद्ध पात्र को रखें। पात्र में थोडा सा घी डालें। उस पात्र में निर्मल हविस् (नैवेद्य पदार्थ को) को घी पर रखें उस हविस् को घी से भिगोयें। गायत्री मंत्र से नैवेद्य का प्रोक्षण करें। यंयं यं" इस वायु बीज को जपकर हविस् को शुद्ध करें। दाहिने हाथ में (रं) अग्नि बीज को लिखकर उस अग्नि से हविस् में विद्यमान कश्मलों को लजायें। (कल्पना करें) बायें हाथ में अमृत बीज (वं) को लिखकर उस हाथ से हविस् को शुद्ध करें। धोने की कल्पना करें। **ॐ चं चंद्राय नमः**। इस मन्त्र का आठ बार जप करें। हविस् को मत्रमय एवं अमृतमय होने की कल्पना करें। सुरभि मुद्रा से अमृतमय हुआ है मानकर मलांश, धातु अंश एवं रसांश को अलग-अलग करने की कल्पना करें। देवता को नैवेद्य ग्रहण करने की इच्छा उत्पन्न करनी चाहिये। "सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि" इससे परिषिञ्चन करें। दोनों हाथों में

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुष्प लेकर देवता का जीभ नैवेद्य तक पहुँचने का चिन्तन करें। ''निवेदयामि भवते जुषाण हविर्विभो'' कहकर नैवेद्य स्वीकार करने की प्रार्थना करते हुए बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछडे को घास देते हैं) को दिखाकर दाहिने हाथ से—

प्राणाय स्वाहा–अङ्गुष्ठ कनिष्ठिका मिलाकर, **अपानाय स्वाहा**–अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर, **व्यानाय स्वाहा**–अङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर, **उदानाय स्वाहा**–अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर, **समानाय स्वाहा**। सभी अङ्गुलियों को लिकर। अन्न से मलांश एवं धातु के अंश को अलग कर केवल रसांश को अर्पित करने की कल्पना करें। ''वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि'' कहकर नैवेद्य मुद्रा का प्रदर्शन करें। अंगुष्ट एवं अनामिका मिलाने से नैवेद्य मुद्रा। नैवेद्य का सार जो रसांश था उसका भी सार अमृत का जो अंश है उसे देवता को समर्पित कर, हाथ जोडकर, नैवेद्य के सार अमृत से भगवान् को बढते हुए मानकर उसे हृदय में स्थित मानकर यथाशक्ति ॐ चं चंद्राय नमः। '' इस मूल मंत्र का जप करें।

ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिन्द्राय सुहवीतुनाम्ने।
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमाँ अदाभ्यः॥ *(ऋग्वेद ९.८५.६)*
ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१३)*
ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

यथा संभव नैवेद्यं निवेदयामि। अमृतापिधानमसि कहकर उत्तरापोशन देवें। हस्ताप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गण्डूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूल—पूगीफल समायुक्तं नागवल्या दलैर्युतं। चूर्णं कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ *(स्मृति संग्रह-देवपूजा)*

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। क्रमुक तांबूलं समर्पयामि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नीराजन (आरति)—ॐ अर्चंत प्रार्चंत प्रियंमेधा सो अर्चंत। अर्चंतु पुत्रका उत पुरं न धृष्णवर्चत। (ऋग्वेद ८.६९.८)

ॐ ध्रुवाद्यौ ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्॥

ॐ ध्रुवं ते राजा वरूणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ (ऋग्वेद १०.१७३.४)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। मंगल नीराजनंसमर्पयामि।

मंत्रपुष्प—ॐ आप्यायस्व समेतुते विश्वतः सोमवृष्णयं। भावाजस्य संगथे॥ (ऋग्वेद १.९१.१६) आ.गृ.सूत्रम्

ॐ नाभ्या आसीदंतरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्। (ऋग्वेद-१०.९०.१४)

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) सपरिवार श्रीसोमाय नमः। मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा नमस्कार—यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानि च। तानि तानि प्रणाश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे॥ (देवपूजा-स्मृति संग्रह)

ॐ सप्तास्या सन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुं॥ (ऋग्वेद १०.९०.१५)

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।

यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावोदास्योऽश्वान् विंदेयं पुरुषानहम्॥ (ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। प्रदक्षिणा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्य—ॐ अत्रिपुत्राय विद्महे। अमृतोद्भवाय धीमहि। तन्नः सोमः प्रचोदयात्॥ इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यम् (कहकर तीन बार पुष्पमिश्रित जल छोडें।)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सर्वोपचार पूजनम्—ॐ छत्रं समर्पयामि। चामरेण वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। आंदोळिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्य राजोपचार देवोपचार पूजां समर्पयामि।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१६)*
ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥ *(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। सवोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना—आत्रेयं यमुनाप्रभुं ग्रहगणास्याग्रेय भागस्थितं। श्वेतं श्वेतसुगंधमाल्यवसनं श्वेतांबुजोद्यत् करं।
श्वेतच्छत्रविभूषणं ध्वजरथच्छत्रश्रिया शोभितं। मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे शीतलम्।

ॐ कायेन वाचा मनसे न्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥ *(पौराणिकम्)*
ॐ ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥ *(श्री भगवद्गीते)*

सपरिवार श्रीसोमाय नमः। अनेन पूजनेन सपरिवारः श्री सोमः प्रीयताम्।

पीठ पर नवग्रह पूजन्

प्रमाण— वर्तुलं चतुरस्त्रं च त्रिकोणं बाण एव च। सुदीर्घ चतुरस्त्रं च पञ्चकोणं धनुस्तथा।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शूर्पाकारं ध्वजाकारं भान्वादीनां तु मण्डलम्। मध्ये तु भास्करं विद्यात् शशिनं पर्व दक्षिणे॥
दक्षिणे लोहितं विद्यात् बुद्धां पूर्वोत्तरेण तु। उत्तरेण गुरं विद्यात् पूर्वेणैव तु भार्गवम्॥
पश्चिमे तु शनिं विद्यात् राहुं दक्षिण पश्चिमे। पश्चिमोत्तरतः केतुः स्थापनीयाः प्रयत्नतः॥ *(स्कान्दंमूलं प्रयोगरत्नाकर)*

नवग्रह मण्डल वर्तुलाकार पष के जैसे रहता है। उसके आठ दल होते हैं। मध्य भग कर्णिका कहताला है। मध्य कर्णिका वर्तुलाकार मण्डल में सूर्य को मानना चाहिये। आग्नेय दिशा में चतुरस्त्र मण्डल में चन्द्र देवता को मानें। दक्षिण पषदल के त्रिकोणमण्डल में अंगारक को मानें। ऐशान्य दिशा में बाण की चिह्न में बुध को मानें। उत्तर दिशा में दीर्घ चतुरस्त्र मण्डल में गुरु को मानें। पूर्व दिशा में पञ्चकोण मण्डल में शुक्र को मानें। पश्चिम दल में धनुष आकार मण्डल में शनि को मानें। नैऋत्य दिशा में शूर्पाकार मण्डल में राहु को माने। वायव्य दिशा में ध्वजाकार मण्डल में केतु को मानें। एवं ग्रहों की इसी क्रम सें स्थापना करें।

सूर्यः सोमो महीपुत्रः सोमपुत्रो बृहस्पतिः। शुक्रः शनैश्चरो राहुः केतुश्चेति ग्रहा स्मृताः॥ उपरोक्त नौ ग्रह कहलाते हैं।
ताम्रेण कारयेद् भानुं रजतेन निशाकरम्। कुजज्ञ जीवरूपाणि सुवर्णो प्रकल्पयेत्॥
रजतेन ततः शुक्रं कृष्णालोहेने सूर्यजम्। सीसेन कारयेत् राहुं केतुं कांस्येन कारयेत्॥ *(ग्रहमख पद्धति)*

सूर्य की प्रतिमा ताम्र से, चाँदी से चन्द्र की प्रतिमा को, कुज, बुध एवं गुरु की प्रतिमा को सेने से, शुक्र की प्रतिमा चाँदी से, शनि की प्रतिमा काले लोहे से, राहु की प्रतिमा सीस से एवं केतु की प्रतिमा काञ्च से बनाना चाहिये।

स्वांगुलेनोच्छ्रितास्सर्वे ग्रहाः कार्या विधानतः। अथवा स्वर्णमात्रेण कारयेत् प्रतिमाः सुधीः॥
सर्वे किरीटिनः कार्या ग्रहा लोकहितावहाः॥ *(ग्रहमख पद्धति)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सभी ग्रहों को एक अंगुल (लगभग एक इञ्च) से कम ऊँचे न बनाये। उन लोहों से या साने से शास्त्र विधि के अनुसार बनायें। सभी को किरीट अवश्य रहना चाहिये।

आदित्यांगाराकौ रक्तौ बुध जीवौ च पीतकौ। सोमशुक्रौ विदुः श्वेतौ कृष्णौ राहु शरीश्वरौ॥
धूम्रः के तुगणाश्चैषां वस्त्राणयाभरणानि च। ग्रहवर्णानि गृह्णीयात् गंधं पुष्पं तथैव च॥ *(ग्रहमख पद्धति)*

सूर्य एवं अंगारक लाल रंग के है। बुध एवं गुरु दोनों पीले रंग के हैं। चन्द्र एवं शुक्र सफेद रंग के हैं। राहु एवं शनी काले रंग के हैं। केतु गणों का रंगा धूम्र है। इनके वस्त्र एवं आभारण, गंध एवं पुष्प भी उनके रंग के समान होने चाहिये।

गोधूमास्तण्डुलाश्चैव ह्याढकाः कुद्गकास्तथा। चणाकाश्चैव निष्पावाः तिलमाष कुळित्थकाः॥
ग्रहाणां धान्य जातानि कीर्तितानि मनीषिभिः। *(स्मृति संग्रह)*

सूर्य के लिए गेंहु, चन्द्र के लिए चावल, कुज के लिए अरहर दाल, बुध के लिए साबूत मूँग, गुरु के लिए चना, शुक्र के लिए सफेद राजमा, शनि के लिए तिल, राहु के लिए उडद दाल, केतु के लिए कुळित्थ धान्य।

अर्कः पलाशखदिरावंपामार्गोऽथ पिप्लः। उदुंबरः शमी दूर्वा कुशाश्च समिधः स्मृताः॥ *(प्रयोगरत्नाकर)*

सूर्य के लिए अर्क समित्, चन्द्र के लिए पलाश समित्, कुज के लिए खदिर समित्, बुध के लिए अपामार्ग समित्, गुरु के लिए पीपल का समित्, शुक्र के लिए ऊदुम्बर समित्, शनि के लिए शमी समित्, राहु के लिए दूर्वा समित्, केतु के लिए कुशा समित् हैं।

गुडोदनं पायसान्नं संयावं क्षीरपिकम्। दध्योदनं घृतान्नं च कृसरं मांसचित्रितम्॥ *(स्मृति संग्रह)*

सूर्य के लिए गूड का चावल, चन्द्र के लिए खीर, सेवई खीर कुज के लिए, बुध के लिए पेढा, गुरु के लिए दही चावल, शुक्र के लिए घी चावल, शनि

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

के लिए दही चावल, राहु के लिए उडद का चावल, केतु के लिए चित्रा (खिचडी) नैत्रद्य है। धेनुः शंख्स्तथाऽनड्वान् हेम वासो हयः क्रकात्। कृष्णागौ रायससेसः एतावै दक्षिणाः क्रमात्॥ सूर्य के लिए गोदान, चन्द्र के लिए शख दान, कुज के लिए बैल, बुध के लिए सोना, गुरु के लिए पीला वस्त्र, शुक्र के लिए घोडा, शनि के लिए कायीगाय, राहु के लिए लोहा एवं केतु के लिए सीसा का दान करें।

संकल्प—देशकालौ संकीर्त्य सर्वेषां महाजनानां जन्मनक्षत्रे जन्मादि द्वादश भावेषु ये ये ग्रहाः अरिष्टस्थान स्थिताः तेषा ग्रहाणा शुभ एकादशफलावाप्त्यर्थ दुःस्थान स्थित ग्रहात् सुस्थान फलावाप्त्यर्थ, सुस्थान स्थित ग्रहात् अतिशय शुभफलावाप्त्यर्थ, महादशा अन्तर्दशा अन्तरन्तरर्दशा सूक्ष्मदशा प्राणदशासु तत्रागत अप मृत्यु व्याळमृत्यु घोरमृत्यु क्षुद्र मृत्यु पैशाच मृत्यु समस्त मृत्यु पीडा परिहारार्थं परैः कृत कारयिष्यमाण मन्त्र तन्त्र विषचूर्णादि आभिचार कृत्रिमादि सर्वोपद्रव शान्त्यर्थ रुद्र सर्वाद्भुत शान्तियागाङ्गत्वेन आदित्यादि नवग्रहाराधनं करिष्ये। *(प्रयोगरत्नकार)*

त्दंगत्वेन कलश पूजां करिष्ये। जल पूरित कलश को बायें ओर रख लोवें। कलश को गंध पुष्पादिकों से पूजन करें।

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वो सप्तद्वीपा वसुंधरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणाः॥
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समश्रिताः। अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा॥
आयान्तु कर्म सिद्धयर्थ दुरितक्षयकारकाः। सर्वे समुद्रा सरितः तीर्थानि जलदा नदाः॥
गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिंधु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥
कलशोदकं गृहीत्वा देवताः प्रोक्ष्य, पूजा द्रव्याणि प्रोक्ष्य, आत्मनं प्रोक्षयेत्। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-देवपूजा प्रकरण)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उस कलश जल से देवताओं को प्रोक्षण करें। पूजा द्रव्यों का एवं अपना भी प्रोक्षण करें।

ईशान्यं शुक्लतण्डुलैः सकर्णिकं अष्टदलं अंबुजं उल्लिख्य कर्णिकायां दलेषु च वर्तुलादि तत् तत् ग्रहपीठानि कुर्यात् यथा मध्ये रक्ताक्षतैः वर्तुलं आदित्याय, आग्नेय दले शुक्लाक्षतैः चतुरस्त्रंसोमाय, दक्षिणादले रक्ताक्षतैः त्रिकोणं मंगलाय ईशान दले हरिताक्षतैः बाणाकारं बुधाय, उत्तरदले पीताक्षतैः दीर्घ उचुरस्त्रं गुरवे, पूर्व दले शुक्लक्षतैः पञ्चकोणं शुक्राय, पश्चिमदलेकृष्णाक्षतैः चापाकारंशनैश्चराय, नैर्ऋत्यदलेकृष्णाक्ष तैः शूर्पाकारं राहवे, वायव्यदले चित्राक्षतैः ध्वजाकारं केतवे इति विलिख्यततः उदीचं रंगवल्लीपद्मे धान्येन कुंभ योग्यं पीठं प्रकल्प्य तत्र नवं औरणं तेजसं मृण्मयं वा अनुलिप्तं अक्षतपुष्पमालाद्यलंकृतं शुभ अभिषेक कुंभं स्थापयेत्। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

ईशान्य दिशा में सफेद चावलों से कर्णिका युक्त अष्टदलपद्म को लिखें। उसके कर्णिका (बीच वाला भाग) एवं दलों में उन उन ग्रहों का पीठ बनायें। जैसे कि लाल क्षतों से बीच में सूर्य का पीठ, आग्नेय दल में सफेद चावलों से चौकाकार पीठ चन्द्र के लिए, दक्षिणादल में लाल अक्षतों से मंगल के त्रिकोणाकार पीठ, ईशान्य ल में हरे अक्षतों से बाणाकार पीठ बुध के लिए, उत्तर दल में पीले चावलों से दीर्घ चौकाकार पीठ गुरु के लिए, पूर्वदल में सफेद अक्षताओं से पञ्च कोण पीठ शुक्र के लिए, पश्चिम दल में काले अक्षतों से धनुष के आकार वाला पीठ शनैश्चर के लिए, नैऋत्य दल में काले अक्षतों से शूर्पाकार पीठ राहु के लिए, वायव्य दल में रंगबिरंगे अक्षतों से ध्वजाकार पीठ केतु के लिए बनायें। इस मण्डल के उत्तर दिशा में रंगोली से बनाये प... के ऊपर धान्य से कलश रखने योग्य पीठ बनाकर, उस पर नया, शुद्ध, मिट्टी का या धातुओं से निर्मित बिना छिद्र के कलश को गंध पुष्पा-क्षतों से अलंकृत कर उस पवित्र अभिषेक कलश को रखें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पीठ पूजन

ॐ गुं गुरुभ्यो नमः। ॐ गं गणपतये नमः। ॐ आधार शक्त्यै नमः। ॐ मूल प्रकृत्यै नमः। ॐ आदि कूर्माय नमः। ॐ अनंताय नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ धर्माय नमः। ॐ ज्ञानाय नमः। ॐ वैराग्याय नमः। ॐ ऐश्वर्याय नमः। ॐ अधर्माय नमः। ॐ अज्ञानाय नमः। ॐ अवैराग्याय नमः। ॐ अनैश्वर्याय नमः। ॐ सं सत्वाय नमः। ॐ रं रजसे नमः। ॐ तं तमसे नमः। ॐ मं मायायै नमः। ॐ विं विद्यायै नमः। ॐ पं पद्माये नमः। ॐ अं कर्ममण्डलाय नमः। ॐ उं सोममण्डलाय नमः। ॐ मं वह्निमण्डलाय नमः। ॐ अं आत्मने नमः। ॐ उं अंतरात्मने नमः। ॐ मं परमात्मने नमः। अं ह्रीं ज्ञानात्मने नमः। कहकर पीठ का पूजन करें।

महीद्यौः काण्वोमेधातिथिर्भूमिर्गायत्री भूमि प्रार्थने विनियोगः।

ॐ म॒हीद्यौः पृ॑थि॒वी च॑ न इ॒मं य॒ज्ञं मि॑मिक्षतां। पि॒पृ॒तां नो॒ भरी॑मभिः॥ *(ऋग्वेद १.२२.१३)*

कहकर भूमि की प्रार्थना करें।

ओषधय इत्यस्य आथर्वणोभिषगोषधयोनुष्टुप् धान्य राशि करणे विनियोगः।

ॐ ओष॑धयः॒ संव॑दंते॒ सोमे॑न स॒हराज्ञा॑। यस्मै॑ कृ॒णोति॑ ब्राह्म॒णास्तं रा॑जन्पारयामसि॥ *(ऋग्वेद १०.९७.२२)*

कहकर वस्त्र बिछाकर उस पर धान की राशि फैलाऐं। आकलशेष्वित्यस्य काश्यपो देवलः पवमानः सोमो गायत्री कलश स्थापने विनियोगः।

ॐ त्वे॒षस्ते॑ धू॒म ऋ॑ण्वति दि॒वि षंच्छु॒क्र आत॑तः।
सूरो॒ न हि द्यु॒तात्वं कृ॒पापा॑वक॒ रोच॑से॥ *(ऋग्वेद ६.२.६)*

कहकर कलश को उल्टा कर धूप डालें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ तन्तुं तन्वन्रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथो रक्षधिया कृतान्।
अनुल्बणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्॥ *(ऋग्वेद १०.५३.६)*

कहकर कलश को धागों से लपेटें (मौली से)

ॐ आकलशेषु धावति पवित्रे परिषिच्यते। उक्थैर्यज्ञेषु वर्धते॥ *(ऋग्वेद ९.१४.४)*

कहकर धान्य राशि पर कलश को रखें। इमं मे गंगइत्यस्य सिंधुक्षित् प्रैयमेधोनद्यौजगती उदक पूरणे विनियोगः।

ॐ इमं मे गंगेयमुनेसरस्वतिशुतुद्रिस्तोमं सचतापरुष्णया।
असिक्न्यामरुद्धधे वितस्तयार्जीकीये शृणुह्या सुषोमया॥ *(ऋग्वेद १०.७५.५)*

कहकर कलश को तीर्थजल से भरें।

पञ्चगव्य क्षेप—गायत्र्या विश्वामित्रः सविता गायत्री गोमूत्र प्रक्षेपणे विनियोगः।

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

कहकर कलश में गोमूत्र डालें।

ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

कहकर कलश में गोमय डालें। आप्यायस्वेत्यस्य राहूगणोगोतमः सोमो गायत्री पयः क्षेपणे विनियोगः।

ॐ आप्यायस्वसमेतुते विश्वतः सोमवृष्ण्यं। भवावाजस्य संगथे। *(ऋग्वेद १.९१.१६)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कहकर कलश में गाय का दूध डालें। दधिक्राव्णा इत्यस्य गोतमो वामदेवो दधिक्रावानष्टुप् दधिक्षेपणे विनियोगः।

ॐ दधि क्राव्णो अकारिषंजिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनोमुखाकरत्प्रण आयूंषितारिषत्॥ (ऋग्वेद ४.३९.६)

कहकर कलश में दहि डालें।

शुक्रमसि ज्योतिरसि तेजोसि देवोवः सवितोत्पुनात्व च्छिद्रेण पवित्रेण वोः सूर्यस्य रश्मिभिः।

(यजुर्वेद-१ काण्ड-१ प्रश्न-१० अनुवाक) कहकर कलश में घी डालें।

कलश में पञ्चामृत निक्षेप—ॐ आप्यायस्व समेतुते विश्वतः सोमवृष्णयं। भवावाजस्य संगथे। (ऋग्वेद १.९१.१६)

कहकर कलश में दूध डाले।

ॐ दधि क्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नोमुखा करत्प्रण आयूं षितारिषत्॥ (ऋग्वेद ४.३९.६)

कहकर कलश में दहि डालें।

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतंवस्य धामं। अनुष्वदमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभवक्षि हव्यक्॥

(ऋग्वेद २.३.११)

कहकर कलश में घी डालें। मधुवाता इति तिसृणां राहूगणो गोतमोविश्वेदेवागायत्री मधुप्रक्षेपणे विनियोगः।

ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरंति सिंधवः। माध्वीर्नः संत्वोषधीः॥
मधुनक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता॥
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवंतु नः॥ (ऋग्वेद १.९०.६-७-८)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कहकर कलश में शहद डालें। स्वादुः पवस्व भार्गवोवेनः पवमानः सोमो जग ती शर्करा प्रक्षेपणो विनियोगः।

ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिन्द्राय सुहवीतु नाम्ने।
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमाँ अदाभ्यः॥ *(ऋग्वेद ९.८५.६)*

कहकर कलश में शक्कर डालें। हय गज वल्मीक मृद गोष्ठ राजद्वार चतुष्पद मृदः। (घोडा, हाथी, बल्मीक, खड्डा, गोशला, राजद्वार, चौराहे की मिट्टी) स्योनापृथिवि काण्वोमेधातिथिर्भूमिर्गायत्री मृत्क्षेपणो विनियोगः।

ॐ स्योनापृथिवि भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्मसप्रथः॥ *(ऋग्वेद १.२२.१५)*

कहकर कलश में मिट्टी डालें। रुवति भीम इत्यस्य वैश्वामित्रोरेणुः पवमान सोमो जगती। त्वक् क्षेपणो विनियोगः।

ॐ रुवति भीमो वृषभस्तं विष्यया श्रृंगेशिशानो हरिणीविचक्षणः।
आयोनिं सोमः सुकृतंनिषीदति गव्ययी त्वग्भवतिनिर्णिग्व्ययी। *(ऋग्वेद ९.७०.७)*

कहकर वट, पीपल, पलाश, जामून एवं आम के वृक्षों का त्वक् (छिलका) कलश में डालें। याः फलिनीरित्यास्या थर्वणो भिषगोषधयोनुष्टुप् पुष्प फलक्षेपणो विनियोगः।

ॐ याः फलिनीर्याअफला अपुष्पाया श्चपुष्पिणीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानो मुंचंत्वं हंसः॥ *(ऋग्वेद १०.९७.१५)*

कहकर कलश में पुष्प फल डालें। सहि रत्नानीत्यस्य श्यावाश्वः सविता गायत्री रत्नक्षेपणो विनियोगः।

ॐ स हि रत्नानि दाशुषे सुवाति सविता भगः। तं भाग चित्रमीमहे॥ *(ऋग्वेद ५.८२.३)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कहकर कलश में रत्न डालें। हिरण्य रूप इत्यस्य शौनको गृत्समदो पान्पात्त्रिष्टुप् हिरण्य क्षेपे विनियोगः।

ॐ हिरण्यरूपः स हिरण्य संदृगपान्नपात्सेदुहिरण्यवर्णः।
हिरण्ययापात् परियोनें निषद्यांहिरण्यदादंदुत्यन्नंमस्मै॥ *(ऋग्वेद २.३५.१०)*

कहकर कलश में हिरण्य (सिक्का) डालें। या ओषधीरित्यस्या थर्वणोभिषगोषधयोनुष्टुप् ओष्ज्ञधि प्रक्षेपणो विनियोगः।

ॐ याऽओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगंपुरा। मनैनुबभ्रूणामहंशतं धामनि सप्तचं॥ *(ऋग्वेद १०.९७.१)*

कहकर कलश में औषधि डालें।

ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टांकरीषिणीं। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियं॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

कहकर कलश में चन्दन डालें।

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ति परुषःपरुषस्परि। एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥ *(यजुर्वेद-महारायणोपनिषद्-आरण्यक)*

कहकर कलश में दर्वा डालें। प्रवो यज्ञेष्वित्यस्य वसिष्ठो विश्वेदेवास्त्रिष्टुप् पल्लव प्रक्षेपणो विनियोगः।

ॐ प्रवो यज्ञेषु देवयंतो अर्चन्द्यावानमोभिः पृथिवी इषध्यै।
येषां ब्रह्माणयसमानि विप्राविष्वग्वियंतिवनिनो न शाखाः॥ *(ऋग्वेद ७.४३.१)*

कहकर वट, वश्वत्थ, पलाश, जामून एवं आम के वृक्षों के पत्तें से कलश का मुख ढकें। उस पर फल सहित पूर्ण पात्र रखें। युवं वस्त्राणीत्यस्यौचथ्यो दीर्घतमामित्रावरुणौत्रिष्टुप् कुम्भे वस्त्र युग्मविष्टने विनियोगः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ युंव वस्त्राणिपीवसावंसाथेयुवोरच्छिंद्रामंन्तंवो हसर्गाः।
अवांतिरतमनृंतानिविश्वं ऋतेनं मित्रा वरुणा सचेथे॥ (ऋग्वेद १.१५२.१) कहकर कलश को वस्त्रों से लपेटें।

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदानदाः। आयांतु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिंधु कावेरि जलेस्मिन्सन्निधिं कुरु॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय-देवपूजा प्रकरण)

इमं में गंगे इत्यस्य सिंधुक्षित्प्रैयमेधो नद्यो जगति। तीर्थावाहने विनियोगः।

ॐ इमं मे गंगे यमुने सरस्वति शुतुद्रिस्तोमं सचतापरुष्णया।
असिक्न्या मंरुद्वधे वितस्तयार्जीकीये शृणुह्या सुषोमया। (ऋग्वेद १०.७५.५)

कहकर कलश में तीर्थों का आवाहन करें। कलश को कुशाओं से छूकर मन्त्र पाठ करें। आपोहिष्ठेति तिसृणामांबरीषः सिंधुद्वीप आपो गायत्री। नहिते क्षत्रमिति तिसृणामाजीगर्तिःशुनः शेपो वरुणास्त्रिष्टुप्। स्वादिष्ठयेति तिसृणामधुच्छंदाः पावमान सोमो गायत्री सर्वासां जपे विनियोगः।

ॐ आपोहिष्ठा मंयोभुवःस्तानं ऊर्जे दंधातन। महेरणायः चक्षंसे॥
यो वंः शिवतंमोरसस्तस्यं भाजयते ह नंः। उशतीरिव मातरंः।
तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयांय जिन्वंथ। आपों जनयंथा च नः। (ऋग्वेद १०.९.१-२-३)
ॐ नहितेंक्षत्रं नसहोनमन्युं वयंश्चनामीपतयंत आपुः। नेमाऽआपों अनिमिषं चरंतीर्नयेवातंस्य प्रमिनंत्यभ्वं॥
अबुध्नेराजावरुंणोवनस्योर्ध्वं स्तूपंददतेपूतदंक्षः। नीचीनाः स्थुरुपरिंबुन्धएंषामस्मेअन्तर्निहिंताः केतवंः स्युः॥
उरुंहिराजा वरुंणाश्चकार सूर्यायपंथामन्वेंतवाऽउं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपदेपादा प्रतिधा तवेकरुतापवक्ता हृदयाविधश्चित्॥ (ऋग्वेद १.२४.६-७-८)
ॐ स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोमधरया। इन्द्राय पातवे सुतः॥
रक्षोहा विश्वचर्षणिरभियोनिमयोहतं। द्रुणासधस्थमासदत्॥
वरिवोधातमो भवमंहिष्ठो वृत्रहंतमः। पर्षिराधो मघोनां॥ (ऋग्वेद ९-१-१-२-३)

इन मंत्रों से कलश का अभिमंत्रण करें। अभिमंत्रण मन्त्रों का अर्थ मनन करते हुए देवता को छूकर सान्निध्य की कल्पना करने की क्रिया है। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि। स्वागतम् समर्पयामि। पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि। पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि। वस्त्रं समर्पयामि। आभरणं समर्पयामि। गंधं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पाणि समर्पयामि। धूपमाघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि। कदलीफलं निवेदयामि। क्रमुक ताम्बूलं समर्पयामि। मंगल नीराजनं समर्पयामि। मंत्रपुष्पं समर्पयामि। प्रदक्षिण नकस्कारन् समर्पयामि।। सर्वोपचार पूजां समर्पयामि। अनेन कलशस्थापनेन आदित्यादि नवग्रहाः प्रीयंताम्।

पीठ पर नवग्रहों की स्थापना—गुं गुरुभ्यो नमः। गं गणपतये नमः। आधारशक्त्यै नमः मूल प्रकृत्यै नमः। आदि कूर्माय नमः। अनन्ताय नमः। पृथिव्यै नमः। धर्माय नमः। ज्ञानाय नमः। वैराग्याय नमः। ऐश्वर्याय अधर्माय नमः। अज्ञानाय नमः। अवैराग्याय नमः। अनैश्वर्याय नमः। सं सत्वाय नमः। रं रजसे नमः। तं तमसे नमः।। मं मायायै नमः। विं विद्यायै नमः। पं पक्षाय नमः। अं अर्कमण्डलाय नमः। उं सोममण्डलाय नमः। मं वह्निमण्डलाय नमः। अं आत्मने नमः। उं अंतरात्मने नमः। मं परमात्मने नमः।। ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः। पीठपूजां समर्पयामि। (अनुष्ठान पद्धति)

नवग्रह प्रतिमाओं का अग्न्युत्तारण—अग्नि सप्तिमिति सप्तर्चस्य सूक्तस्य सोचिको वैश्वानर स्त्रिष्टुप्। अग्न्युत्तारणे विनियोगः।

ॐ सप्तिंवाजं भरं ददाति वीरं श्रुत्यं कर्मनिष्ठां। रोदसीविचरत्समंजन्नारींवीरकुक्षिं पुरधिं॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ अप्रंसः समिदंस्तु भद्रामही रोदंसी आविंवेश। एकं चोदयत्समत्सुंवृत्राणिंदयते पुरूणिं॥
ॐ हत्यं जरंतः कर्णामावाद्भ्योनिरंदहज्जरूंथं। अत्रिं घर्म उंरुष्यदंतर्नृमेधं प्रजयां सृजत्सं॥
ॐ दाद्रविंणां वीरपेंशा ऋषिं यः सहस्रां सनोतिं। दिविहव्यमातंतान धामांनि विभृंतापुरुत्रा॥
ॐ उक्थैर्ऋषंयोविह्वयंते नरोयामंनि बाधितासंः। वयों अंतरिंक्षे पतंतः सहस्रा परियातिगोनां॥
ॐ विशंईळते मानुषीर्यामनुंषो न हुंषोविजाताः। गांधर्वी पथ्यांमृतस्य गव्यूंतिर्घृत आनिषंत्ता॥
ॐ ब्रह्मं ऋभवंस्ततक्षुर्महामंवोचांमासुवृक्तिं। प्रावंजरितारंयविष्ठ महिद्रविंणामायंजस्व॥
ॐ अग्निः सर्मिं वाजं भरं ददात्यग्नि वीरं श्रुत्यं कर्मनिःष्ठां। अग्नीरोदंसी विचंरत्समंजन्नग्निर्नारीं वीर कुंक्षिं पुरंधिं॥
ॐ अग्नेरप्रंसः समिदंस्तु भद्राग्निर्महीरोदंसी आविंवेश। अग्निरेकं चोदयत्समत्स्वग्निर्वृत्राणिंदयतेपुरूणिं॥
ॐ अग्निर्हत्यं जरंतः कर्णामावाग्निरद्भ्योनिरंदहज्जरूंथं। अग्निरत्रिं धर्म उंरुष्यदुन्तरग्निर्नृमेधं प्रजयां सृजत्सं॥
ॐ अग्निर्द्दाद्रविंणां वीरपेंशा अग्निर्ऋषिंयः सहस्रांसनोतिं। अग्निर्दिविहव्यमातंतानाग्ने धामांनिविभृंता पुरुत्रा॥
ॐ अग्निमुक्थैर्ऋषंयोविह्वयंतेग्निं नरोयामंनि बाधितासंः। अग्निं वयों अंतरिंक्षेपतंतोग्निः सहस्रा परियाति गोनां॥
ॐ अग्निं विशं ईळते मानुषीर्या अग्निं मनुषो नहुंषोविजाताः। अग्निर्गांधर्वी पथ्यामृतस्याग्नेर्गव्यूंतिर्घृत आनिषंत्ता॥
ॐ अग्नये ब्रह्मं ऋभवंस्ततक्षुरग्निं महामंवोचामासुवृक्तिं। अग्ने प्रावंजरितारंयविष्ठाग्नेमहिद्रविंणामायंजस्व॥

(ब्रह्मकर्म समुच्चय-अग्न्युत्तारण विधान,१० मण्डल-८० संपूर्ण सूक्त)

इन अग्न्युत्तारण सूक्तों से प्रतिमा पर सतत जल धारा करने से प्रतिमा की शुद्धि होती है। पूर्वनिर्मित पीठेषु यथास्थान मुखैः ग्रहप्रतिमाः स्थापयित्वा पहले

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बनाये गये ग्रहपीठों में स्थान एवं मुख की दिशा को ध्यान में रखकर प्रतिमाओं की स्थापना करें।

तद्दक्षिणावामपार्श्वयोः अधिदेवता प्रत्यधिदेवता प्रतिमे तदभिमुख्यौ स्थापयेत्। प्रतिमानां असंभवे पुष्पाक्षतादिषु देवता आवाहयेत्। ग्रह देवताओं के दायें बायें ग्रहों की ओर देखते हुए अधिदेवता प्रत्यधिदेवता मूर्तियों की स्थापना करें। प्रतिमाओं के अभाव में पुष्प अक्षतों में उनका आवाहन कर पूजन करें। प्रत्येक ग्रह के आवाहन में उस प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित करें। प्रणवस्य परब्रह्म परमात्मा गायत्री व्यस्त समस्त व्याहृतीनां अत्रि भृगु भरद्वाजप्रजापतयः अग्नि वायु सूर्य प्रजापतयो गाय=युष्णिम् अनुष्टुप् बृहत्यः ग्रहावाहने विनियोगः।

सूर्य देवता आवाहन—कर्णिकायां वर्तुल पीठस्थ गोधूम धान्यस्थ आदित्य प्रतिमायाञ्चादित्यावाहनंकुर्यात्। ॐ पं पद्माय नमः। पीठं संपूज्य। आकृष्णेनेत्यस्य हिरण्यस्तूपः सविता त्रिष्टुप् सूर्यावाहने विनियोगः।

ॐ आकृष्णेन रजसावर्तमानोनिवेशयन्नमृतमर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेन देवो याति भुवनानिपश्यन्॥ *(ऋग्वेद १.३५.२)*

ॐ भूः आदित्यग्रहमावाहयामि। ॐ भुवः आदित्यग्रहमावाहयामि। ॐ स्वः आदित्य ग्रहमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्यग्रहमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। भगवन्नादित्य ग्रहाधिपते काश्यपगोत्रकलिंगदेशेश्वर जपापुष्पोपमांगद्युते द्विभुज पद्माभयहस्त सिंदूरवर्णांबरमाल्यानुलेपन ज्वलन्माणिक्यखचित सर्वा गाभ भास्करतेजोनिधे त्रिलोकप्रकाशकत्रिदेवतामयमूर्ते नमस्ते सन्द्धारुण ध्वजपताकोप शोभितेन सप्ताश्वरथवाहनेन मेरुं प्रदक्षिणीकुर्वन् आगच्छ अग्निरुद्राभ्यां सह पद्म कर्णिकायां ताम्र प्रतिमां प्राङ्मुखीं वर्तुलपीठेऽधितिष्ठपूजार्थं त्वामावा हयामि। कहकर मध्य के कर्णिका में सूर्य देवता का आवाहन करें।

सूर्य के आगे दाहिने ओर अग्नि का आवाहन करें। आदित्य अधिदेवता अगन्यावाहने विनियोगः। अग्निंदूतं मेधातिथिरग्निर्गायत्री अग्न्यावाहने विनियोगः।

ॐ अग्निंदूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसं। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुं॥ *(ऋग्वेद १.१२.१)*

ॐ भूः अधिदेवता अग्निं आवाहयामि। ॐ भुवः अधिदेवता अग्निं आवाहयामि। ॐ स्वः अधिदेवता अग्निं आवाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः अधिदेवता अग्निं आवाहयामि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्थापयामि। पूजयामि। पिंगश्मश्रुकेशं पिंगाक्षित्रितयं अरुणावर्णागं छागस्थं साक्षसुत्रं सप्तार्चिषं शक्तिधरवरदहस्तद्वयं आदित्याधिदेवतं अग्निं आवाहयामि। सूर्य के आगे बायें ओर रुद्र का आवाहन करें। त्र्यंबकं मैत्रावरुणिर्वसिष्ठोरुद्रोनुष्टुप रुद्रावाहने विनियोगः।

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनं। उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्॥ *(ऋग्वेद ७.५९.१२)*

ॐभूरादित्यप्रत्यधिदेवं रुद्रमावाहयामि। ॐभुवदादित्यप्रत्यधिदेवं रुद्रमावाहयामि। ॐस्वरादित्यप्रत्यधिदेवं रुद्रमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वरादित्यप्रत्यधिदेवं रुद्रमावाहयामि। स्थापयामि। पूजायामि। त्रिलोचनोपेतं पञ्चवक्त्रं वृषारूढं कपालशूल खट्वांगधारिणं चन्द्रमौलिं सदाशिवं आदित्यप्रत्यधिदेवं रुद्रमावाहयामि।

नवशक्ति पूजा—ॐदीप्तायै नमः। ॐसूक्ष्मायै नमः। ॐजयायै नमः।। ॐभद्रायै नमः। ॐविभूत्यै नमः। ॐविमलायै नमः। ॐअमोघायै नमः। ॐविद्युतायै नमः। ॐसर्वतोमुख्यै नमः। ॐनमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनंताययोगपीठात्मने नमः। सुवर्णा पीठं कल्पयामि। स्वात्मसंस्थमजंशुद्धं त्वामद्य ग्रहनायक। अरण्यामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥ *(अनुष्ठान पद्धति)*

ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः दिवाकरण प्राणा इह प्राणाः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः दिवाकरस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुः श्रोत्र घ्राण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

ॐ असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नो धेहि हभोगं। ज्योक्पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृळयानः स्वस्ति॥

(ऋग्वेद १०.५९.६)

ॐ पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्त रिक्षम्। पुनर्नः सोमस्तन्वं ददातु पुनः पूषा पथ्यां३या स्वस्तिः॥

(ऋग्वेद १०.५९.७)

सशक्ति सांगसायुधसवाहन सपरिवार श्री भास्कर भगवन् अत्रैवागच्छागच्छ। आवाहयिष्ये। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भव। अवगुण्ठितो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। क्षमस्व। ॐप्रभाकराय विद्महे। दिवाकराय धीमहि। तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्॥ इसका तीन बार जप करते हुए अर्घ्य देवें।

वेदगर्भ ऋषिः सविता देवता गायत्री छन्दः। ॐआ कृष्णेन रजसा हृदयाय नमः। ॐवर्तमानो निवेशयन् शिरसे स्वाहा। ॐअमृतं मर्त्यं च शिखायै वषट्। ॐहिरण्ययेन सविता कवचाय हुम्। ॐरथेन देवो याति नेत्राभ्यां वौषट्। ॐभुवनामि पश्यन् अस्त्राय फट्। ॐभूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः।

ध्यानम्— कालिंगं ग्रहमध्य भागनिलयं प्राचीमुखं वर्तुलं, । रक्तं रक्तविभूषणाध्वजरथच्छत्रश्रियाशेभितम्॥
सप्ताश्वं कमलद्वयान्वितकरं पद्मासनं काश्यपं। मेरोर्दिव्य गिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे भास्करम्॥

"ॐघृणिः सूर्यआदित्यः" इस मूल मंत्र का आठ बार जप करें। ॐलं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। ॐहं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐयं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐरं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐवं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐपं परमात्मने पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— दिवाकरं दीप्तसहस्त्ररश्मिं तेजोमयं जगतः कर्मसाक्षिं। अंशु भानुं सूर्यमाद्यं ग्रहाणां रविंसदा शरणमहं प्रपद्ये॥

(नवग्रह पूजाविधान-सूर्य पूजा प्रकरणम्)

पद्मासनः पद्मकरः पद्मगर्भ समद्युतिः। सप्ताश्वः सप्तरज्जुश्च द्विभुजः 'स्यात् सदा रविः॥ *(स्मृति संग्रह)*

जपा कुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिं। ध्वांतारिं सर्वपापघ्नं प्रणतोस्मि दिवाकरम्॥

ॐआदित्याय नमः। ॐअधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित आदित्य पूजां समर्पयामि।

चन्द्र देवता आवाहन—आग्नेय दले चतुरस्त्रपीठस्य तण्डुलधान्योपरि चन्द्र प्रतिमायां चन्द्र देवता आवाहनं कुर्यात्। पं पद्माय नमः। पीठं संपूज्य।

आप्यायस्व गोतमः सोमो गायत्री सोमावाहने विनियोगः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ आप्यायस्व समेतुते विश्वतः सोमवृष्ण्यं। भावाजस्य संगथे॥ (ऋग्वेद १.९१.१६)

ॐभूः चन्द्राग्रहमावाहयामि। ॐभुवः चन्द्राग्रहमावाहयामि। ॐस्वः चन्द्रग्रहमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः चन्द्र ग्रहमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। भगवान् सोम द्विजाधिपते सुधामयशरीर अत्रिगोत्र यामुनदेशेश्वर गोक्षीरधवलांगकांते द्विभुजगदावरदानांकितकर शुक्लांबर माल्यानुलेपनसर्वाग मुक्तौमौकिकाभरण रमणीय समस्तलोकाप्यायनक देवतास्वाद्यमूर्ते नमस्ते सन्नद्धधवलध्वज पताकोपशोभितेन दशश्वेताश्वरथवाहनेन मेरुं प्रदक्षिणी कुर्वन्नागच्छाद्भिरुमया च सहपद्माग्नेय दल मध्ये स्फाटिक प्रतिमां प्रत्यड्मुखीं चतुरस्त्रपीठेऽधितिष्ठ पूजार्थं त्वामावाहयामि। चन्द्र के आगे दाहिने ओर अपः का आवाहन करें। अप्सुम इत्यस्यांबरीषः सिंधुद्वीप आपो गायत्री।

ॐ अप्सुमेसोमो अब्रवीदंत र्विश्वानि भेषजा। अग्निं च विश्वशंभुवं॥ (ऋग्वेद १.२३.१०)

ॐभूः सोमाधिदेवता अपः आवाहयामि। ॐभुवः सोमाधिदेवता अपः आवाहयामि। ॐस्वः सोमाधिदेवता अपः आवाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः सोमाधिदेवता अपः आवाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। स्त्रीरूपधारिणीः श्वेतवर्णामकरवाहनाः पाशकलश धरिणीर्कुक्ताभरण भूषिताः सोमाधिदेवता अपः अवाहयामि। चन्द्र देवता के आगे बायें ओर गौरी का आवाहन करें। गौरीर्मिमाय दीर्घतमाउमाजगती गौरी आवाहने विनियोगः।

ॐ गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदीद्विपदी सा चतुष्पदी। अष्टापदीनवपदी बभूवुषी सहस्त्राक्षरापरमे व्योमन्॥

(ऋग्वेद १.१६४.४१)

ॐभूः सोमप्रत्यधिदेवतां गौरीं आवाहयामि। ॐभुवः सोमप्रत्यधिदेवतां गौरीं आवाहयामि। ॐस्वः सोमप्रत्यधिदेवतां गौरीं अवाहयामि। ॐभू र्भुवः स्वः

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सोमप्रत्यधिदेवतां गौरीं आवाहयामि। स्थापयामि। पूजायामि। अक्षसूत्र कमल दर्पण कमण्डलुधारिणीं त्रिदशपूजितां सोमप्रत्यधि देवतां गौरीं आवाहयामि।

नव शक्ति पूजा

.ॐनमो भगवते सकलगुणात्म शक्तियुक्ताय अनंत योग पीठात्मे नमः। सुवर्ण पीठ कल्पयामि। स्वत्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्य कुमुदाधिप अरण्यामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः चन्द्र प्राणा इह प्राणाः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः चन्द्र जीव इह स्थितः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः चन्द्रस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुः श्रोत्रध्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

ॐ असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणामिह नोधेहि भोगं।
ज्योक्पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृळयानः स्वस्ति॥
ॐ पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्तरिक्षम्।
पुनर्नः सोमस्तन्वं ददातु पुनः पूषा पथ्यां३ उया स्वस्तिः॥ *(ऋग्वेद १०.५९.६-७)*

सशक्ति सांगसायुधसवाहन सपरिवार श्री चन्द्र भगवान् अत्रैवागच्छागच्छ आवाहयिष्ये। आवाहितो भव संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अवगुण्डितो भव। अमृतीकृतो भ। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। क्षमस्व। ॐअत्रिपुत्राय विद्महे। अमृतोद्भवाय धीमहि। तन्नः सोमः प्रचोदयात्। इसका तीन बार जप करते हुए अर्घ्य देवें।

गौतम ऋषिः सोमो देवता गायत्री छन्दः। ॐआप्यायस्व हृदयाय नमः। ॐसमेतु ते शिरसे स्वाहा। ॐविश्वतः शिखायै वषट्। ॐसोमवृष्णियं कवचाय हुम्।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ संगथे अस्त्राय फट्। ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः।

ध्यानं— **आत्रेयं यमुनाप्रभुं ग्रहगणास्याग्रेय भागस्थितं। श्वेतं श्वेतसुगंधमाल्यवसनं श्वेतांबुजोद्यत् करं।**
श्वेतच्छत्रविभूषणं ध्वजरथच्छत्रश्रिया शोभितं। मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे शीतलम्।

(नवग्रह पूजाविधान-चन्द्रपूजा प्रकरणम्)

ॐ चं चन्द्राय नमः "इति मूल मंत्र का आठ बार जप करें। ॐ लं पृथिप्यात्मने गंध कल्पयामि। ॐ हं आकाशत्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐ वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मने पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— **यः कालहेतोः क्षयवृद्धिमेति यंदेवताः पितरः संपिबन्ति। तं वै वरेण्यं सुरसंघवंद्यं सोमं सदा शरणमहं प्रपद्ये।**
श्वेतः श्वेताम्बरधरो दशश्वः श्वेतभूषणः। गदापाणिर्द्विबाहुश्च स्मर्तव्यो वरदः शशी॥
श्वेतं श्वेतांबरधरं दशाश्वं श्वेतभूषणम्। द्विभंजं साभ्यगद मात्रेयं सामृतं विभुम्॥
दिव्यशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम्। नमामि शशिनं भक्त्या शंभोर्मुकुटभूषणम्॥
ॐ सोमाय नमः। अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित चन्द्र पूजां समर्पयामि। *(नवग्रह पूजाविधान-चन्द्रपूजा प्रकरणम्)*

अंगारक देवता आवाहन—दक्षिणदले त्रिकोणपीठोपरि आढक राशौ रक्त चन्दन प्रतिमायां अंगारकावाहनं कुर्यात् ॐ पं पद्माय नमः। पीठं संपूज्य। अग्निर्मूर्धाविरूपोंगारको गायत्री अंगारकावाहने विनियोगः।

ॐ अग्निर्मूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयं। अपां रेतांसि जिन्वति। *(ऋग्वेद ५.४४.१६)*

ॐ भूः अंगारक ग्रहमावाहयामि। ॐ भुवः अंगारक ग्रहमावाहयामि। ॐ स्वः अंगारक ग्रहमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः अंगारकग्रहमावाहयामि। स्थापयामि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पूजयामि।

भगवन्नंगारक अग्न्याकृते भारद्वाजगोत्र अवंति देशेश्वर ज्वालापुंजोपमांगद्युते चतुर्भुज शक्तिशूलगदाङ्गधारिन् रक्तांबर माल्यानुलेजोपमांगद्युते चतुर्भुज शक्तिशूलगदाखङ्गधरिन् रक्तांबर माल्यानुलेपनप्रवालभूषिताभरण सर्वागदुर्धरालोकदीप्तेनमस्ते सन्नद्धरक्त ध्वज पताकोपशोभितेन रक्तमेषरथवाहनेन मेरुं प्रदक्षिणी कुर्वन्नगच्छ भूमिस्कंदाभ्यां सहपद्म दक्षिणदलमध्ये रक्तचंदन प्रतिमां दक्षिणामुखीं त्रिकोणपीठेऽधितिष्ठ पूजार्थं त्वां आवाहयामि। अंगारक के आगे दाहिने ओर भूमि का आवाहन करें। स्योनापृथिवीत्यस्यमेघातिथिर्भूमिर्गायत्री भूम्यावाहने विनियोगः।

ॐ स्योना पृथिविभवानृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्मसप्रथः। *(ऋग्वेद १.२२.१५)*

ॐभूरंगारकाधिदेवतांभूमिमावाहामि। ॐभुवोंगारकाधिदेवतां भूमिमावाहयामि। ॐस्वरंगारकाधिदेवतां भूमिमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वरंगारकाधिदेवतां भूमिमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। शुक्लवर्णां दिव्याभरणभूषितां चतुर्भुजां सौम्य वपुषं चण्डांशुसदृशां बरां रत्नात्र सस्यपात्रौषधिपात्रपद्मोपेत करां चतुर्दिग्रागपृष्टगतां अंगारकाधिदेवतां भूमिमावाहयामि। अंगारक के आगे बायें ओर स्कन्द का आवाहन करें। कुमारश्चि दित्यस्य गृत्समदः स्कंदस्त्रिष्टुप् स्कंदावाहने विनियोगः।

ॐ कुमार श्चित्पितरं वं दमानं प्रतिनानामरुद्रोपयंतं। भूरेर्दातारं सत्पतिं गृणीषेस्तुतस्त्वं भेषजारास्यस्मे॥ *(ऋग्वेद २.३३.१२)*

ॐभूरंगारकप्रत्यधिदेवतां स्कंदमावाहयामि। ॐभुवोंऽगारक प्रत्यधिदेवतां स्कंदमावाहयमि। ॐस्वरंगारक प्रत्यधिदेवतां स्कंदमावाहयामि। भू भुर्वः स्वरंगारक प्रत्यधिदेवतां स्कंदमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। षष्मुखं शिखण्डक विभूषणं रक्तांबरधरं मयूरयान कुक्कुट घंटा पताका शक्त्युपेतं चक्षुर्भुजं अंगारक प्रत्यधिदेवं स्कंद मावाहयामि।

नवशक्ति पूजा—ॐरोहितायै नमः। ॐज्वालिन्यै नमः। ॐरौद्रयै नमः। ॐतीक्ष्णायै नमः। ॐसूक्ष्मायै नमः। ॐजयायै नमः। ॐक्षुधायै नमः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐसारायै नमः। ॐनिर्मलायै नमः। ॐनमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनन्ताय योग पीठात्मने नमः। सुवर्णा पीठं कल्पयामि। स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्य भूमिनन्दन। अरण्यामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥ ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः अंगारक प्राणा इह प्राणाः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः अंगारक जीव इह स्थितः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः अंगारकस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

ॐ असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नोधेहि भेगं। ज्योक पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृळयानः स्वस्ति।
ॐ पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्तरिक्षम्। पुनर्नः सोमस्तन्वं ददातु पुनः पूषा पथ्यां३या स्वस्तिः॥

(ऋग्वेद १०.५९.६-७)

सशक्ति सांग सयुध सवाहन सपरिवार श्री अंगारक भगवन् अत्रैवागच्छागच्छा। आवाहयिष्ये। आवातो भव। संस्थापितो भव। अमृतीकृतो भव। सन्निरुद्धो भव। अवगुण्ठितो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। क्षमस्व। ॐभूमिपुत्राय विद्महे भारद्वाजाय धीमहि। तन्नः कुजः प्रचोदयात्। इसको तीन बार जपते हुए अर्घ्य देवें। विरूप ऋषि अंगारको देवता गायत्री छन्दः। ॐअग्निर्मूर्धा हृदयाय नमः। ॐदिवः ककुत् शिरसे स्वाहा। ॐपति पृथिव्या शिखायै वषट्। ॐयम् कवचाय हुम्। ॐअपां रेतांसि नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐजिन्वति अस्त्राय फट्। ॐभूर्भुवः स्वरोमिति दिम्बंधः।

ध्यानम्— **विंध्येशं ग्रहदक्षिणाप्रतिमुखं रक्तं त्रिकोणाकृतिं। दोर्भिः स्वीकृत शक्तिशूल सुगदं चारूढमेषाधिपं॥**
भारद्वाजमुपेत रक्तवसनं छत्रश्रियाशोभितं। मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे तं कुजम्॥

(नवग्रह पूजाविधान-अंगारक पूजा प्रकरणम्)

ॐअं अगारकाय नमः। इस मूल मंत्र का आठ बार जप करें। ॐलं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। ॐहं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐयं वाय्वात्मने धूपं

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कल्पयामि। ॐरं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐवं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐपं परमात्मने सर्वोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना—महेश्वरस्यानन स्वेदबिन्दोर्भूमौ जातं रक्तमाल्ल्याम्बराड्यं। सुरश्मिनं लोहिताङ्ग कुमारं अंगारकं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥ रक्त माल्यांबरधरः शक्तिशूल गदाधरः। चतर्भुजो मेषगमो भारद्वाजो धरासुतः॥ रक्तस्रगंबरालेपं गदाशक्त्यसिशूलिनं। चतुर्भजं मेषगमं भारद्वाजं धरासुतम्॥ धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्काञ्चनसन्निभम्। कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम्॥ ॐअंगारकाय नमः। अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित अंगारक पूजां समर्पयामि।

बुध देवता आवाहनम्—ईशान्यदले बाणाकार पीठे मुद्गधान्ये बुध प्रतिमायां बुधावाहनं कुर्यात्। ॐपं पद्माय नमः। पीठं संपूज्य। उद्बुध्यध्वं बुधो बुधस्त्रिष्टुप् बुधग्रहावाहने विनियोगः।

ॐ उद्बुध्यध्वंसमनसः सखायः समग्निमिंध्वं बहवः सनीळाः। दधिक्रामग्निमुषसंञ्चदेवीमिन्द्रावतो वसे निह्वयेवः॥

(ऋग्वेद १०.१०१.१)

ॐभूः बुध ग्रहमावाहयामि। ॐभुवः बुध ग्रहमावाहयामि। ॐस्वः बुध ग्रहमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः बुध ग्रहमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। भगवन्सौम्यसौम्याकृते सर्वज्ञानमय अत्रिगोत्र मगधदेशेश्वर कुंकुमवर्णोपमांगद्युते चतुर्भुज खड्गखेटकगदावरदानांकित पीतांबरमाल्यानुलेपन मरकताभरणालंकृत सर्वाङ्गविबुधपते नमस्ते सन्नद्ध पीतध्वजपताकोपशोभितेन चतुः सिहस्थवाहनेन मेरुं प्रदक्षिणी कुर्वन्नागच्छ विष्णुपुरुषाभ्यां सहैशान दलमध्ये सुवर्णप्रतिमां उदङ्मुखीं बाणाकार पीठेधितिष्ठ पूजार्थ त्वां आवाहयामि। बुध के आगे दाहिने ओर अधिदेवता विष्णु का आवाहन करें। इदं विष्णुर्मेधातिथि र्विष्णुर्गायत्री विष्णवावाहने विनियोगः।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदं। समूहळमस्य पांसुरे॥ *(ऋग्वेद १.२२.१७)*

ॐभूः बुध अधिदेवतां विष्णुं आवाहयामि। ॐभुवः बुध अधिदेवतां विष्णुं आवाहयामि। ॐस्वः बुध अधिदेवतां विष्णुं आवाहयामि। ॐभूभुवः स्वः बुध

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अधिदेवतां विष्णुं आवाहयामि। स्थापयामि पूजयामि। कौमोदकी पद्मशंख चक्रोपेतं चतुर्भुजं सौम्याधिदेवं विष्णुमावाहयामि। बुध के आगे बायें ओर पुरुष का आवाहन करें। सहस्रशीर्षा नारायणः पुरुषोनुष्टुप् पुरुषावाहने विनियोगः।

ॐ सहस्रं शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। सभूमिं विश्वतोवृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम्॥ (ऋग्वेद १०.९०.१)

ॐभूर्बुधप्रत्यधिदेवं पुरुषमावाहयामि। ॐभुवर्बुधप्रत्यधिदेवं पुरुषमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वर्बुधप्रत्यधिदेवं पुरुष्मावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। कौमोद कीपद्मशंखचक्रोपेतं चतुर्भुजं सौम्यप्रत्यधि देवं पुरुषमावाहयामि।

नवशक्ति पूजा— ॐचंद्रिकायै नमः। ॐकौमुद्यै नमः। ॐज्योत्स्नयै नमः। ॐसंध्यायै नमः। ॐविद्यायै नमः। ॐसरस्वत्यै नमः। ॐमेधायै नमः। ॐप्रज्ञायै नमः। ॐप्रभायै नमः। ॐनमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनंताययोगपीठात्मने नमः। सुवर्णपीठं कल्पयामि। स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्येन्दुसुत्तोत्तम। अरण्यामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥ ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः बुध प्राणा इह प्राणाः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः बुध जीव इह स्थितः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः बुधस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुः श्रोत्र घ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ॐ असुनीते पुरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नो धेहि भोगं। ज्योक्पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृळयानः स्वस्ति॥
ॐ पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्तरिक्षम्। पुनर्नः सोमस्तन्वं ददातु पुनः पूषा पथ्यां३या स्वस्तिः॥

(ऋग्वेद १०.५९.६-७)

स शक्ति सांग सायुध सवाहनसपरिवार श्री बुध भगवान् अत्रैवागच्छागच्छ। आवाहयिष्ये। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अवगुण्ठितो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। ॐतारासुतायं विद्महे। सोमपुत्रायं धीमहि। तन्नो बुधः प्रचोदयात्। इसका तीन बार जप

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करते हुए अर्घ्य देवें। सौम्य ऋषिः बुधो देवता त्रिष्टुप छन्दः।

ॐ उद्बुध्यध्वं हृदयाय नमः। ॐ समनसः सखयः शिरसे स्वाहा। ॐ समग्निमिंध्वं बहवः सनीळाः शिखयै वषट्। ॐ दधिक्रामाग्निं कवचाय हुम्। ॐ उषसश्च देवीं नेत्राभ्यां वौषट्। ॐ इन्द्रावतो वसे निह्वयेवः अस्त्राय फट्। ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः।

ध्यानम्— आत्रेयं मगधाधिपं ग्रहगणास्येशानभागस्थितं बाणाकारमुदड़्मुखं कर लसत् तोणीर बाणासनम्।
पीतस्त्रग्वसन द्वयध्वजरथ छत्रश्रिया शोभितं मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे तं बुधम्॥

ॐ बुं बुधाय नमः। इस मन्त्र का आठ बार जप करें। ॐ लं पृथिव्यात्मना गंधं कल्पयामि। ॐ ॐ आकाशात्मना पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मना धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मना दीपं कल्पयामि। ॐ वं अबात्मना नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मना पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— विशुद्धबुद्धिं श्रुतिकालबोधं सत्यावाचं सोमवंशप्रदीपम्। सुवर्चसं छन्दसो विश्वरूपं बुधं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥
पीतमाल्यांबरधरः कर्णिकार समुद्यतिः। खड्गचर्म गदापाणिः सिंहस्थो वरदो बुधः॥
पीतमाल्यांबरधरं कर्णिकार समद्युतिम्। खड्गचर्मगदापाणिमात्रेयं सिंहगं बुधम्॥
प्रियंगुकलिकाभासं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्युणोपेतं नमानि शशिनन्दनम्॥ *(नवग्रह पूजाविधान-बुध पूजा प्रकरणम्)*

ॐ बुधाय नमः। अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित बुध पूजां समर्पयामि।

बृहस्पति देवता आवाहन— उत्तरदले दीर्घ चतुरस्रपीठे चणाकराशिस्थ बृहस्पति प्रतिमायां बृहस्पत्यावाहनं कुर्यात्। ॐ पं पद्माय नमः। पीठं संपूज्य। बृहस्पते अतीत्यस्य गृत्समदो बृहस्पतिस्त्रिटुप् बृहस्पत्यावाहने विनियोगः।

ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऋतप्रजातदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रं॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(ऋग्वेद २.२३.१५)

ॐभूः बृहस्पति ग्रहमावाहयामि। ॐभुवः बृहस्पति ग्रहमावाहयामि। ॐस्वः बृहस्पति ग्रहमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः बृहस्पति ग्रहमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि।

भगवन् बृहस्पे समस्तदेवताचार्य आंगिरस गोत्र सिंधुदेशेश्वर तप्तसुवर्णसदृशांगदीप्ते चतुर्भुज दण्ड कमाण्डल्वक्षसूत्र वरदानांकित पीतांबर माल्यानुलेपन पुष्परागमयाभरणरमणीय सर्वविद्याधिपते नमस्ते सन्द्धपीत ध्वजपताकोपशोभितेन पीताश्वरथवाहनेन मेरुं प्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छेन्द्र ब्रह्मभ्यां सह पद्मोत्तर दलमध्ये सुवर्णप्रतिमामुदङ्मुखीं दीर्घ चतुरस्र पीठेऽधितिष्ठ पूजार्थं त्वामावाहयामि। बृहस्पति के आगे दाहिने ओर इन्द्र का आवाहन करें। इन्द्र श्रेष्ठानीत्यस्यगृत्समदइन्द्रस्त्रिष्टुप् इंद्रावाहने विनियोगः।

ॐ इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे। पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वादमानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम्॥

(ऋग्वेद २.२१.६)

ॐभूः बृहस्पति अधिदेवतां इन्द्रमावाहयामि। ॐभुवः बृहस्पति अधिदेवतां इन्द्रमावाहयामि। ॐस्वः बृहस्पति अधिदेवतां इन्द्रमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः बृहस्पति अधिदेवतां इन्द्रं आवाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। चतुर्दन्तं गजारूढं बज्रांकुशधरं शचीपतिं नानाभ्रणाभूषितं बृहस्पत्यधि देवं इन्दं आवाहयामि। बृहस्पति के आगे बायें ओर ब्रह्मा का आवाहन करें। ब्रह्मणातइत्यस्य विश्वामित्रो ब्रह्मात्रिष्टुप् ब्रह्मावाहने विनियोगः।

ॐ ब्रह्मणाते ब्रह्मयुजा युनज्मि हरी सखाया सधमादा आशू।
स्थिरं रथं सुखमिन्द्राधितिष्ठन्प्रजानन्विद्वाँउपयाहि सोमं॥ (ऋग्वेद ३.३५.४)

नव शक्ति पूजा—ॐधृत्यै नमः। ॐकांत्यै नमः। ॐदयायै नमः। ॐमेधयै नमः। ॐप्रज्ञायै नमः। ॐविद्यायै नमः। ॐयशस्विन्यै नमः। ॐस्थिरायै

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नमः। ॐ सुप्रभायै नमः। ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनंताय योग पीठात्मने नमः। सुवर्णा पीठं कल्पयामि।

स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्य सुरपूजित। अरणयामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरू॥

ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः बृहस्पति प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः बृहस्पति जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः बृहस्पतेः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुः श्रोत्रघ्राण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

ॐ असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणामिह नोधेहि भोगं।
ज्योक्पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृळयानः स्वस्ति। *(ऋग्वेद १०.५९.६)*
ॐ पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्तरिक्षम्॥
पुनर्नः सोमस्मन्वं ददातु पुनः पूषा पथ्यांऽया स्वस्तिः॥ *(ऋग्वेद १०.५९.७)*

सशक्ति साङ्ग सायुधसवाहन सपरिवार श्री बृहस्पति भगवान् अत्रैवागच्छागच्छ। आवाहयिष्ये। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अवगुण्ठितो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। ॐ देवाचार्याय विद्महे। वाचस्पत्याय धीमहि। तन्नो गुरुः प्रचोदयात्। इसका तीन बार जप करते हुए अर्घ्य देवें। ॐ बृहस्पते अतियत् हृदयाय नमः। ॐ अर्यो अर्हाच्छिरसे स्वाहा। ॐ द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु शिखायै वषट्। ॐ यदियच्छवस ऋत कवचाय हुम्। ॐ प्रजात तदस्मासु नेत्राभ्यां वौषट्। ॐ द्रविणं धेहि चित्रं अस्त्राय फट्। ॐ भूर्भुवः सुवरोम् इति दिग्बन्धः।

ध्यानम्—सिंधूनामधिपं ग्रहोत्तरगतं दीर्घं चतुष्कोणगम्, प्राप्तं मण्डलमङ्गिरान्वयभुवं दण्डं दधानं करे। सौवर्णा ध्वजवस्त्र भूषणरथछत्र श्रिया शोभितं, मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे वाक्पतिम्॥ ॐ बृं बृहस्पतये नमः। इस मूल मंत्र का आठ बार जप करें। ॐ लं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। ॐ हं

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐ वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मने पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— बुध्यासमो यस्य न कश्चिदन्यो मतिं देवा उपजीवन्ति यस्य। प्रजापतेरात्मजं धर्मनित्यं गुरुं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥
देवदैत्य गुरुश्चैव पीतः साक्षात् चतुर्भुजः। दण्डी च वरदश्चैव साक्षसूत्रकमण्डलुः॥
आङ्गिरसं देवगुरुं पीतस्त्रग्गन्धवस्त्रकम्। दण्डिनं वरदं पीतं साक्षसूत्रकमण्डलुम्॥
देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्। वन्द्यं च त्रिषु लोकेषु प्रणामामि बृहस्पतिम्॥ *(नवग्रह पूजा विधान-बृहस्पति पूजा प्रकरणम्)*

ॐ बृहस्पतये नमः। अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित बृहस्पति पूजां समर्पयामि।

शुक्र देवता आवाहन— पूर्वदले पञ्चकोण पीठस्थ निष्पावधान्यस्थ शुक्र प्रतिमायां शुक्रावाहनं कुर्यात्। ॐ पं. पद्माय नमः। पीठं संपूज्य। शुक्रंत इत्यस्य भरद्वाजः शुक्रस्त्रिष्टुप् शुक्रावाहने विनियोगः।

ॐ शुक्रंते अन्यद्यजतं ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि।
विश्वाहिमाया अवसिस्वधावो भद्रातेपूषन्निहरातिरस्तु॥ *(ऋग्वेद ६.५८.१)*

ॐ भूः शुक्रग्रहमावाहयामि। ॐ भुवः शुक्रग्रहमावाहयामि। ॐ स्वः शुक्रग्रहमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्रग्रहमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। भगवन् भार्गव समस्य दैत्यगुरो भार्गव गोत्र भोजकट देशेश्वर रजतोज्ज्वलाङ्गकांते चतुर्भुज दण्ड कमण्डल्वक्ष सूत्र वरदानांकित शुक्लांबरमाल्यानुलेपन वज्राभरण भूषित सर्वाङ्गसमस्त नीतिशास्त्र निपुणमते नमस्ते सन्नद्धशुक्लध्वज पताकोपशोभितेन शुक्लाश्व सहितेन रथेन मेरुं प्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छेन्द्राणींद्राभ्यां सह पूर्वदलमध्ये रजतप्रतिमां प्राङ्मुखीं पञ्चकोणपीठेऽधितिष्ठ पूजार्थं त्वां आवाहयामि। कहकर शुक्र का आवाहन करें। शुक्र के आगे दाहिने ओर इंद्राणी

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

का आवाहन करें। इंद्राणीमास्वित्यस्य वृषाकपिरिंद्राणी पंक्तिः इंद्राण्यावाहने विनियोगः।

ॐ इंद्राणीमासुनारिंषुसुभगांमहमंश्रवं। नह्यंस्या अपरंचन जरसामरंतेपतिर्विश्वंस्मादिंद्र उत्तंरः॥ *(ऋग्वेद १०.८६.११)*

ॐभूः शुक्राधिदेवतां इंद्राणीमावाहयामि। ॐभुवः शुक्राधिदेवतां इंद्राणीमावाहयामि। ॐस्वः शुक्रधिदेवतां इंद्राणीमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः शुक्राधिदेवतां इंद्राणीमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। ॐसंतानमंजरीवरदानधर द्विभुजांशुक्राधिदेवतां इंद्राणीं आवाहयामि। शुक्र के आगे बायें ओर इन्द्र का आवाहन करें। इंद्रमिद्देवतातय इत्यस्य मेधातिथिरिंद्रोबृहती इंद्रावाहने विनियोगः।

ॐ इंद्रमिद्देवतांतय इंद्रं प्रयत्यंध्वरे। इंद्रंसमीकेवनिनोंहवामह इंद्रंधनंस्य सातयें। *(ऋग्वेद ८.३.५)*

ॐभूः शुक्र प्रत्यधिदेवतां इन्द्रं आवाहयामि। ॐभुवः शुक्र प्रत्यधिदेवतां इन्द्रं आवाहयामि। ॐस्वः शुक्र प्रत्यधिदेवतां इन्द्रं आवाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः शुक्र प्रत्यधिदेवतां इन्द्रं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। चतुर्दन्तगजारूढं वज्रांकुशधरं शचीपतिं नानाभरणभूषितं भार्गव प्रत्यधिदेवं इन्द्रं आवाहयामि।

नव शक्ति पूजा— ॐशान्तायै नमः। ॐनन्दायै नमः। ॐस्मृत्यै नमः। ॐकांत्यै नमः। ॐलक्ष्म्यै नमः। ॐप्रीत्यै नमः। ॐकलायै नमः। ॐअमलायै नमः। ॐसर्वसंपत्कार्यै नमः। ॐनमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनंताययोगपीठात्मने नमः। सुवर्णपीठं कल्पयामि। स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्यासुरपूजित। अरण्यामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥ ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शुक्र प्राणा इह प्राणाः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शुक्र जीव इह स्थितः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शुक्रस्य सवेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रध्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

ॐ असुंनीते पुनंरस्मासु चक्षुः पुनंः प्राणमिह नों धेहि भोगं।
ज्योक्पंश्येम सूर्यमुच्चरंन्तमनुंमते मृळयांनः स्वस्ति।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्तरिक्षम्।
पुनर्नः सोमस्तनवं ददातु पुनः पूषा पथ्यां ३या स्वस्तिः॥ *(ऋग्वेद १०.५९.६-७)*

सशक्ति साङ्ग सायुध सवाहन सपरिवार श्री शुक्र भगवान् अत्रैवागच्छागच्छ। आवाहयिष्ये। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अवगुण्ठितो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। क्षस्व। ॐदैत्याचार्याय विद्महे विद्यारूपाय धीमहि। तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्॥ इसका तीन बार जप कर अर्घ्य देवें। भारद्वाज ऋषिः शुक्रो देवता त्रिष्टुप् छन्दः। ॐशुक्रं ते अन्यत् हृदयाय नमः। ॐयजतं ते अन्यत् शिरसे स्वाहा। ॐविषुरूपे अहनीद्यौरिवासि शिखायै वषट्। ॐविश्वाहि माया कवचाय हुम्। ॐअवसि स्वधावो भद्राते नेत्राभ्यां वौषट्। ॐपूषन्निह रातिरस्तु अस्त्राय फट्। ॐभूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः।

ध्यानम्—भोजेशं भृगुगोत्रजं ग्रहगणप्राचीन भागस्थितं, पाञ्च श्रोज्वलमण्डलं करयुगे दण्डं च सत्कुंडिकाम्॥
बिभ्राणं सितवस्त्रभूषणरथच्छत्रश्रिया शोभितं, मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे भार्गवम्॥

(नवग्रह पूजा विधान-शुक्र पूजा प्रकरणम्)

ॐ शुं शुक्राय नमः। इस मूलमंत्र का आठ बार जप करें। ॐलं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। ॐहं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐयं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐरं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐवं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐपं परमात्मने पञ्चोपचारपूजां समर्पयामि।

प्रार्थना—वर्षप्रदं चिंतितार्थानुकूलं मौनाद्विशिष्टं विनयोपपन्नम्। तं भार्गवं योग विशुद्धसत्वं शुक्रं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥ शुक्रं शुक्रतनुं श्वेत वस्त्राढ्यं दैत्यमंत्रिणाम्। भार्गवं दण्डवरदं कमण्डल्वक्षसूत्रिणाम्॥ हिमकुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥ ॐशुक्राय नमः अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित शुक्रपूजां समर्पयामि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शनैश्चर देवता आवाहन—मण्डलस्य पश्चिम दले धनुराकारपीठे तिलधान्यस्थ शनैश्चर प्रतिमायां शनैश्चरावाहनं कुर्यात्। शमिग्न रिरिंबिठिः शनैश्चर उष्णिक् शनैश्चरावाहने विनियोगः। ॐ पं पद्माय नमः। पीठं संपूज्य।

शमग्निरग्निभिः करच्छंनंस्तपतु सूर्यः। शंवातोंवात्वरपा अपस्त्रिधः। (ऋग्वेद ८.१८.६)

ॐ भूः शनैश्चर ग्रहमावाहयामि। ॐ भुवः शनैश्चर ग्रहमावाहयामि। ॐ स्वः शनैश्चर ग्रहमावाहयामि। ॐ भू र्भुवः स्वः शनैश्चर ग्रहमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

भगवन् शनैश्चर भास्कर तनय काश्यप गोत्र सौराष्ट्र देशेश्वर कज्जल समानाङ्ग कांते चतुर्भुज चाप-तूणीर-कृपाणाभ्यांकित नीलांबर माल्यानुलेपन नीलरत्न भूषणालंकृतसर्वांग समस्त भुवन भीषणामर्षमूर्ते नमस्ते सन्नद्ध नीलध्वजपताकोपशोभितेन नील गृध्ररथवाहनेन मेरुं प्रदक्षिणी कुर्वन्नागच्छ प्रजापति यमाभ्यां सह पश्चिम दलामध्ये कालायस प्रतिमां प्रत्यङ्मुखीं चापाकर पीठेऽधितिष्ठ पूजार्थ त्वां आवाहयामि। शनैश्चर के आगे दाहिने ओर प्रजापति का आवाहन करें। प्रजापते हिरण्यगर्भः प्रजापतिस्त्रिष्टुप् प्रजापत्यावाहने विनियोगः।

ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानिपरिता बभूव।
यत्कामास्ते जहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्यामपतयो रयीणाम्॥ (ऋग्वेद १०.१२१.१०)

ॐ भूः शनैश्चराधिदेवतां प्रजापतिं आवाहयामि। ॐ भुवः शनैश्चराधिदेवतां प्रजापतिं आवाहयामि। ॐ स्वः शनैश्चराधिदेवतां प्रजापतिं आवाहयामि। ॐ भू भुर्वः स्वः शनैश्चराधिदेवतां प्रजापतिं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। यज्ञोपवीतिनं हंसस्थं एकवक्त्रं अक्षमालास्रुव पुस्तक कमण्डलु सहितं चतुर्भजं शनैश्चराधिदेवं प्रजापतिमावाहयामि। शनैश्चर के आगे बायें ओर यम का आवाहन करें। यमाय सोममित्यस्य समोयमोनुष्टुप् यमावाहने विनियोगः।

ॐ यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हविः। यमंह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः॥ (ऋग्वेद १०.१४.१३)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐभूः शनैश्चर प्रत्यधिदेवतां यमं आवाहयामि। ॐभुवः शनैश्चर प्रत्यधिदेवतां यमं आवाहयामि। ॐस्वः शनैश्चर प्रत्यधिदेवतां यमं आवाहयामि। ॐशनैश्चर प्रत्यधिदेवतां यमं आवाहयामि। ॐभू र्भुवः स्वः शनैश्चर प्रत्यधिदेवतां यमं आवाहयमि, स्थापयामि, पूजयामि। ईशत्पीनं दण्डहस्तं रक्त सदृश पाशधरं कृष्णावर्णा महिषारूढं सर्वा भरण भूषितं शनैश्चर प्रत्यधिदेवतां यमं आवाहयामि।

नव शक्तिपूजा—ॐभद्रायै नमः। ॐतंद्रायै नमः। ॐक्षुधायै नमः। ॐमृत्यवे नमः। ॐजरायै नमः। ॐमायायै नमः। ॐमनोमयै नमः। ॐकामुकायै नमः। ॐवरदायै नमः। ॐनमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनंत योगपीठात्मने नमः। सुवर्णपीठं कल्पयामि। स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्य रविनन्दन। अरण्यामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शनैश्चर प्राणा इह प्राणाः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शनैश्चर जीव इह स्थितः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हो सं हं सः शनैश्चरस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुः श्रोत्र घ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

ॐ असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणामिह नोधेहि भोगं।
ज्योक्पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृळयानः स्वस्ति॥
ॐ पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्तरिक्षम्।
पुनर्नः सोमस्तन्वं ददातु पुनः पूषा पथ्यां ३ या स्वस्तिः॥ *(ऋग्वेद १०.५९.६-७)*

स शक्ति साङ्ग सायुधसवाहन सपरिवार री शनैश्चर भगवन् अत्रैवागच्छागच्छ आवाहयिष्ये। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरूद्धो भव। अवगुण्ठितो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। क्षमस्व। ॐसूर्यपुत्राय विद्महे शनैश्चराय धीमहि। तन्नो मंदः प्रचोदयात्॥ इसका तीन बार जप करते हुए अर्घ्य देवें। शिरिंबिठिः ऋषिः शनैश्चरोदेवता उष्णिक् छन्दः। ॐशमग्नि रग्निर्भिर्हृदयाय नमः। ॐकरच्छिरसे स्वाहा। ॐशन्नस्तपतु शिखायै

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वषट्। ॐ सूर्यः कवचाय हुम्। ॐ शं वातो वात्वरपा नेत्राभ्यां वौषट्। ॐ अपस्त्रिधः अस्त्राय फट्। ॐ भूर्भुवः स्वरोम् इति दिग्बन्धः।

ध्यानम्—आन्ध्रेशं ग्रंहपश्चिमं करलसत्तूणीर बाणासनं, कोदण्डाकृतिमण्डलं घननिभं गृध्रासनं काश्यपिम्॥ नीलच्छत्रविभूषणां ध्वजरथः छत्रश्रिया शोभितं। मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिण करं सेवामहे भानुजम्॥

ॐ शं शनैश्चराय नमः। इस मूल मन्त्र का आठ बार जप करें। ॐ लं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। ॐ हं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐ वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मने पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— इंद्रदीलद्युतिः शूली सरदो गृध्रवाहनः। बाणबाणासनधरः स्मर्तव्योऽर्कसुतः सदा॥
इंद्रनीलनिभं मन्दं काश्यपिं चित्रभूषणाम्। चापबाणधरं चर्मशूलिनं गृध्रवाहनम्॥
शनैश्चरो राशितो राशिमेति शनैर्भोगो गमनं चेष्टितं च। सूर्यात्मजं क्रोधनं सुप्रसन्नं मंदं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥
नीलांजन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्ड संभूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

ॐ शनैश्चराय नमः, अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित शनैश्चर पूजां समर्पयामि।

राहु देवता आवाहनम्—मण्डलस्य नैर्ऋत्यदले शूर्पाकार मण्डले माष धान्यस्थ राहुप्रतिमायां राहु आवाहनं कुर्यात्। पं पद्माय नमः पीठं संपूज्य। कयान इत्यस्य वामदेवो राहुर्गायत्री राहु आवाहने विनियोगः।

ॐ कयानश्चित्र आभुवदूतीसदावृधः सखा। कया शचिष्ठयावृता। *(ऋग्वेद ४.३१.१)*

ॐ भूः राहुग्रहमावाहयामि। ॐ भुवः राहुग्रहमावाहयामि। ॐ स्वः राहुग्रहमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः राहुग्रहमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। भगवान् राहोरविसोम मर्दन सिंहिकानंदन पैठीनसगोत्र बर्बर देशेश्वर कालमेघद्युते व्याघ्रवदन चतुर्भुज खड्गचर्म शूल वरदानांकित कृष्णांबर माल्यानुलेपन

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गोमेदकाभरण भूषित सर्वाङ्गशौर्यनिधे नमस्ते सन्नद्ध कृष्णाध्वजपताकोप शोभितेन कृष्णसिंहरथवाहनेन मेरुं प्रदक्षिणीकुर्वन् आगच्छ सर्पकालाभ्यां सह नैर्ऋतदलमध्ये सीसक प्रतिमां दक्षिणामुखीं शूर्पाकार पीठेधितिष्ठ पूजार्थ त्वां आवाहयामि। राहु के आगे दाहिने ओर सर्वो का आवाहन करें। आयङ्गौः सार्पराज्ञीसर्पागायत्री सर्पावाहने विनियोगः।

ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥ *(ऋग्वेद १०.१८-६.१)*

ॐभूः राहु आधिदेवतां सर्पान् आवाहयामि। ॐभुवः राहु अधिदेवतां सर्पान् आवाहयामि। ॐस्वः राहु अधिदेवतां सर्पान् आवाहयामि। ॐभू भुर्वः स्वः राहु अधिदेवान् सर्पान् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। अक्षसूत्र घटान् कुंडलाकार पुच्छयुक्तानेक भोगां स्त्रिभोगान्भीषणान् राह्वधिदेवताम् सर्पान् आवाहयामि। राहु के आगे बायें ओर मृत्यु का आवाहन करें। परमृत्योसंकुसुकः मृत्यु स्त्रिषुप् मृत्यु आवाहने विनियोगः।

ॐ परमृत्यो अनुपरेहि पंथां यस्ते स्वइतरो देवयानात्।

चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजां रीरिषो मोत वीरान्॥ *(ऋग्वेद १०.१८.१)*

ॐभूः राहु प्रत्यधिदेवतां मृत्युं आवाहयामि। ॐभुवः राहु प्रत्यधिदेवतां मृत्युं आवाहयामि। ॐस्वः राहु प्रत्यधिदेवतां मृत्युं आवाहयामि। ॐभू भुर्वः स्वः राहुप्रत्यधिदेवतां मृत्युं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। करालवदनं नीलाङ्गं भीषणं पाशदण्डधरं सर्पवृश्चिक रोमाणं राहु प्रत्यधिदेवतां मृत्युमावाहयामि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नवशक्ति पूजा— ॐउग्रायै नमः। ॐयमदूत्यै नमः। ॐकराल्यै नमः। ॐविकरालिकायै नमः। ॐधूम्रायै नमः। तीव्रायै नमः। ॐअजितायै नमः। ॐशक्त्यै नमः। ॐक्रूरायै नमः। ॐनमो भगवते सकलगुणात्मशक्ति युक्ताय अनंताय योगपीठात्मने नमः। सुवर्णपीठं कल्पयामि। स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्य सिंहिकासुत। अरण्यामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः राहु प्राणा इह प्राणाः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः राहु जीव इह स्थितः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः राह्वोः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुः श्रोत्र घ्राण प्राणः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

ॐ असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणामिह नो धेहि भोगम्। ज्योक्पश्येम सूर्यमुच्चरन्त मनुमतेमृळयानः स्वस्ति॥
ॐ पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्तरिक्षम्। पुनर्नः सोमस्तन्वं ददातु पुनः पूषा पथ्यां ३या स्वस्तिः॥

(ऋग्वेद १०.५९.६-७)

स शक्ति साङ्ग सायुध सवाहन सपरिवार श्री राहु भगवान् अत्रैवागच्छागच्छ आवाहयिष्ये। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अवगुण्ठितो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। क्षमस्व।

ॐ सैंहिकेयाय विद्महे। तमो मयाय धीमहि। तन्नो राहुः प्रचोदयात्॥

इसका तीन बार जप करते हुए अर्घ्य देवें। कयानोवामदेव ऋषिः राहुर्देवता गायत्री छन्दः ॐकयानश्चित्र हृदयाय नमः। ॐआभुवच्छिरसे स्वाहा। ॐऊती शिखायै वषट्। ॐसदावृधः सखा कवचाय हुम्। ॐकया शचिष्ठया नेत्राभ्यां वौषट्। ॐवृता अस्त्राय फट्। ॐभूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः।

ध्यानम्— **राहुं मध्यमदेशजं च निऋतिस्थाने स्थितं पैठिनं गोत्रं खड्गधरं शूर्प सदृशं शर्दूदरत्नासनम्।**
नीलच्छत्रविभूषणाध्वजरथच्छत्रश्रिया शोभितं मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे तामसम्॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ रां राहवे नमः। इस मूल मंत्र का आठ बार जप करें। ॐ लं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। ॐ हं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐ वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मने पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना—**यो विष्णुनैवामृतं पीयमानः छित्वाशिरो ग्रहभावे नियुक्तः। यश्चन्द्रसूर्याग्रसते पर्वकाले राहुं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥**

करालवदनः खड्गचर्मशूली वरप्रदः। नीलसिंहासनस्थश्च ग्रहरत्नं प्रशस्यते॥

सैंहिकेयं करालास्यं कोणिडनेयं तमोमयम्। खड्गचर्मधरं भोमं नील सिंहासने स्थितम्॥

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसंभूतं राहु च प्रणामाम्यहम्॥

ॐ राहवे नमः, अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित राहु पूजां समर्पयामि। *(ऋग्वेद स्मृति सङ्ग्रह)*

केतु देवता आवाहनम्—मण्डलस्य वायव्यदले ध्वजाकार मण्डले कुलित्थराशौ केतु प्रतिमायां केत्वावाहनं कुर्यात्। ॐ पं पद्माय नमः, पीठं संपूज्य। केतुं कृण्वन्नित्यस्य मधुच्छंदाः केतुर्गायत्री केत्वावाहने विनियोगः।

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥ *(ऋग्वेद १.६.३)*

ॐ भूः केतु ग्रहमावाहयामि। ॐ भुवः केतु ग्रहमावाहयामि। ॐ स्वः केतु ग्रहमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः केतु ग्रहमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

भगवन् केतो कामरूप जैमिनि गोत्र मध्यदेशेश्वर धूम्रवर्णध्वजाकृते द्विभुजगदावरदानांकित चित्रांबरमाल्यानुलेपन वैडूर्यमयाभरणभूषित सर्वाङ्गचित्रशक्ते नमस्ते सन्नद्ध चित्रध्वजपताकोपशोभितेन चित्रकपोतरथवाहनेन मेरुं प्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छ ब्रह्मचित्रगुप्ताभ्यां सह वायव्यदलमध्ये कांस्यप्रतिमां दक्षिणामुखीं ध्वजाकार पद्मे धितिष्ठपूजार्थं त्वां आवाहयामि। केतु के आगे दाहिने ओर ब्रह्मा जी का आवाहन करें। ब्रह्मजज्ञानं वामदेवोब्रह्मात्रिष्टुप् ब्रह्मावाहने विनियोगः।

ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमंपुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः। सबुध्न्या उपमा अस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसंतश्चविवः॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(यजुर्वेद-४ काण्ड-२ प्रश्ने-८ अनुवाक-४ मन्त्र)

ॐभूः केत्वधिदेवतां ब्रह्माणमावाहयामि। ॐभुवः केत्वधिदेवतां ब्रह्माणमावाहयामि। ॐस्वः केत्वधिदेवतां ब्रह्माणमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः केत्वधिदेवतां ब्रह्माणमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। पद्मासनस्थं जटिलं चतुर्मुखं अक्षमालास्रुवपुस्तक कमण्डलुधरं कृष्णाजिनवाससं पार्श्वस्थितहंसं केत्वधिदेवतां ब्रह्माणमावाहयामि। केतु के आगे बायें ओर चित्रगुप्त का आवाहन करें। सचित्रचित्रमित्यस्य भरद्वाजः चित्रगुप्तस्त्रिष्टुप् चित्रगुप्तावाहने विनियोगः।

ॐ सचित्रचित्रं चितयन्तमस्मे चित्रक्षत्रचित्रतमंवयोधां। चन्द्रंरयिंपुरुवीरंबृहंतं चन्द्रंचन्द्राभिर्गृणतेयुवस्व॥ (ऋग्वेद ६.६.७)

ॐभूः केतु प्रत्यधिदेवतां चित्रगुप्तमावाहयामि। ॐभुवः केतु प्रत्यधिदेवतां चित्रगुप्तमावाहयामि। ॐस्वः केतु प्रत्यधिदेवतां चित्रगुप्तमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः केतु प्रत्यधिदेवतां चित्रगुप्तमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। उदीच्यवेषधरं सौम्यदर्शनं लेखनीपत्रोपेतद्विभुजं केतु प्रत्यधिदेवं चित्रगुप्तं आवाहयामि।

नवशक्ति पूजा—ॐनिम्नायै नमः। ॐअभयायै नमः। ॐप्रकीर्णायै नमः। ॐलीनायै नमः। ॐभेदायै नमॐः ॐनटायै नमः। ॐआज्ञयै नमः। ॐप्रतिज्ञायै नमः। ॐमेधायै नमः।

ॐनमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनंताय योगपीठात्मने नमः, सुवर्णपीठं कल्पयामि। स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्य विकृतानन। अरण्यामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः केतु प्राणा इह प्राणः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः केतु जीव इह स्थितः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः केत्वोः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुः श्रोत्रघ्राणप्राणाः। इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

ॐ असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नो धेहि भोगं। ज्योक्पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृळयानः स्वस्ति॥
ॐ पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्तरिक्षम्। पुनर्नः सोमस्तन्वं ददातु पुनः पूषा पथ्यां ३ या स्वस्तिः॥

(ऋग्वेद १०.५९.६-७)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सशक्ति साङ्गसायुधसवाहनसपरिवार श्री केतु भगवन् अत्रैवागच्छागच्छ, आवाहयिष्ये, आवाहितो भव। अवगुण्ठितो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। क्षमस्व।

ॐ ब्रह्मपुत्रायं विद्महे विकृतास्यायं धीमहि। तन्नः केतुः प्रचोदयात्॥

इसका तीन बार जप करते हुए अर्घ्य देवें। मधुच्छन्दा ऋषिः केतुर्देवता गायत्री छन्दः। ॐकेतुं कृण्वन् हृदयाय नमः। ॐअकेतवे शिरसे स्वाहा। ॐपेशोमर्या शिखायै वषट्। ॐअपेशसे कवचाय हुम्। ॐसमुषद्भिः नेत्राभ्यां वौषट्। ॐअजायथाः अस्त्राय फट्। ॐभुर्भूवस्वरोमिति दिग्बन्धः।

ध्यानम्—केतुं बर्बरदेशजं ध्वजसमाकारं विचित्रायुधं। चित्रं जैमिनिगोत्रजं ग्रहभुवो वायव्यभागस्थितम्। चित्रं स्यंदन भूषणाध्वजरथच्छत्रश्रिया शोभितं। मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे तं ध्वजम्। ॐकें केतवे नमः। इस मूल मंत्र का आठ बार जप करें। ॐलं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। ॐहं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐयं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐरं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐवं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मने पञ्चोपचारपूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— ये ब्रह्मपुत्रा ब्रह्मसमानवक्त्रा ब्रह्मोद्भवाः ब्रह्मसमाः कुमाराः।
ब्रह्मोत्तमा वरदा जामदग्न्याः केतून् सदा शरणमहं प्रपद्ये॥
धूम्राद्विबाहवः सर्वे गदिनो विकृताननाः। गृध्रासनगताः नित्यं केतवः स्युर्वरप्रदाः॥
धूम्रान् द्विबाहून् गदिनो विकृतास्यान् शतात्मकान्। गृध्रासनगतान् केतून् वरदान् ब्रह्मणः सुतान्।
पालाश धूम्रसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणामाम्यहम्॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

ॐकेतवे नमः। अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित केतु पूजां समर्पयामि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कर्म साद्गुरय देवता आवाहन

कर्म के सभी गुणों को यजमान को देने वाले देवता। ये कर्म के लोपों को दूरकर पूर्ण फल दिलाते हैं। ये छः है।

शनैवायु प्रदेशे कर्म साद्गुरय देवतां विनायकं आवाहयेत्।

नवग्रह मण्डल के वायव्य दिशा में विनायक का आवाहन करें। सभी देवतावाहन मण्डल के पश्चिम में करें। आतूनइत्यस्य काण्वः कुसीदी विनायको गायत्री क्रतु साद्गुरय देवता विनायकावाहने विनियोगः।

ॐ आतूनं इन्द्रक्षुमंतंचित्रङ्गाभंसङ्गभाय महाहस्ती दक्षिणोन॥ *(ऋग्वेद ८.८१.१)*

ॐभूः क्रतु साद्गुरयदेवतां विनायकं आवाहयामि। ॐभुवः क्रतु साद्गुरयदेवतां विनायकं आवाहयामि। ॐस्वः क्रतु साद्गुरयदेवतां विनायकं आवाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः क्रतु साद्गुरयदेवतां विनायकं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। उनके (विनायक के) दाहिने ओर दुर्गा जी का आवाहन करें। जातवेद से कश्यपो दुर्गात्रिष्टुप् क्रतुसाद्गुरय देवता दुर्गामावाहने विनियोगः।

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणिविश्वा नावेव सिंधुंदुरितात्यग्निः॥

(ऋग्वेद १.९९.१)

ॐभूः क्रतु साद्गुरयदेवतां दुर्गामावाहयामि। ॐभुवः क्रतु साद्गुरयदेवतां दुर्गामावाहयामि। ॐस्वः क्रतु साद्गुरयदेवतां दुर्गामावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः क्रतु साद्गुरयदेवतां दुर्गामावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। शक्तिबाणशूलखड्गचक्र चन्द्रबिम्बखेटकपालपरशु टंकोपेतां दशभुजां सिंहारूढां दुर्गाख्यदैत्यासुहारिणीं दुर्गामावाहयामि। दुर्गा जी के दाहिने ओर क्षेत्रपाल का आवाहन करें। क्षेत्रस्य पतिना वामदेवः क्षेत्रपालोनुष्टुप् क्रतुसाद्गुरय देवता क्षेत्रपालावाहने विनियोगः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ क्षेत्रंस्य पतिना वयं हितेनेवजयामसि। गामश्वंपोषयित्वा सनोमृळातीदृशे॥ (ऋग्वेद ४.५७.१)

ॐभू क्रतु साद्गुरुय देवतां क्षेत्रपालमावाहयामि। ॐभुवः क्रतु साद्गुरुयदेवतां क्षेत्रपालमावाहयामि। ॐस्वः क्रतु साद्गुरुयदेवतां क्षेत्रपालमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः क्रतु साद्गुरुयदेवतां क्षेत्रपालमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। श्यामवर्णं त्रिलोचनं ऊर्ध्वकेशं सुदंष्ट्रं भ्रुकुटि कुटिलाननां नूपुरालंकृतांघ्रिं सर्पमेखलयायुतं सर्पाङ्गमतिक्रुद्धं क्षुद्रघटाबद्ध गुल्फावलंबिनि नृकरोटीमाला धारिणं उरगकौपीनं चंद्रमौलिं दक्षिणहस्तैः शूलवेतालखड्गदुंदुभिन्दधानं वामहस्तैः कपाल घंटाचर्म चापान्दधानं भीमं दिग्वाससं अमित द्युतिं क्षेत्रपालमावाहयामि। क्षेत्रपाल के दाहिने ओर वायु का आवाहन करें। क्राणाशिशुरित्य स्यत्रितोवायुरुष्णिक् क्रतुसाद्गुरुयदेवता वाय्वावाहने विनियोगः।

ॐ क्राणाशिशुर्महीनांहिन्वन्नृतस्य दीधितिं। विश्वापरिप्रियाभुवदधद्वि॥ (ऋग्वेद ९.१०२.१)

ॐभूः क्रतु साद्गुरुयदेवतां वायुमावाहयामि। ॐभुवः क्रतु साद्गुरुयदेवतां वायुमावाहयामि। ॐस्वः क्रतु साद्गुरुयदेवतां वायुमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः क्रतु साद्गुरुयदेवतां वायुमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। धवद्धरिणपृष्ठगतं ध्वजवरदानधारिणं धूम्रवर्णं वायुं आवाहयामि। वायु के दाहिने ओर आकाश का आवाहन करें। आदित्प्रत्नस्य वत्स आकाशो गायत्री आकाशावाहने विनियोगः।

ॐ आदित्प्रत्नस्यरेतसोज्योतिष्पश्यंति वासरं। परोयदिध्यतेदिवा॥ (ऋग्वेद ८.६.३०)

ॐभूः क्रतु सादगुरुयदेवतां आकाशं आवाहयामि। ॐभुवः क्रतु साद्गुरुयदेवतां आकाशं आवाहयामि। ॐस्वः क्रतु साद्गुरुयदेतवां आकाशं आवाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः क्रतु साद्गुरुयदेवतां आकाशं आवाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। नीलोत्पलाभं नीलांबरधारिणं चंद्रार्कोपेतं द्विभुजंषंढं आकाशमावाहयामि। अश्विनावर्ति राहूगणो गौतमोश्विनावुष्णिक् अश्व्यावाहने विनियोगः।

ॐ अश्विनावर्तिरस्मदागोमंदस्राहिरंण्यवत्। अर्वाग्रथं समनसानियच्छतम्॥ (ऋग्वेद १.९२.१६)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐभूः क्रतु साद्गुण्य देवतां अश्विनौ आवाहयामि। ॐभुवः क्रतु साद्गुण्य देवतां अश्विनौ आवाहयामि। ॐस्वः क्रतु साद्गुण्य देवतां अश्विनौ आवाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः क्रतु साद्गुण्य देवतां अश्विनौ आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। प्रत्येकमौषधिपूस्तकोपेत दक्षिणवामहस्तावन्योन्यसंसक्तदेहो एकस्य दक्षिणपार्श्वे अपरस्य वामपार्श्वे रत्नभाण्डवर शुक्लांबरधारि नारीयुग्मोपेतो देवभिषजो अश्विनौ आवाहयामि।

क्रतु संरक्षक देवता—क्रतु संरक्षक देवता आठ हैं। ये यज्ञ का संरक्षण करते हैं। आठ दिशाओं के अधिपति अष्टदिक्पालक क्रतु संरक्षक देवता कहलाते हैं। **प्राग्दलाग्रे** नवग्रह मण्डल के पूर्व दल के अग्र भाग में इन्द्र का आवाहन करें। इंद्रं वो मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री इन्द्रावाहने विनियोगः।

इन्द्रं॑वोवि॒श्वत॒स्परि॒हवा॑महे॒ जने॑भ्यः। अ॒स्माक॑मस्तु॒ केव॑लः॥ *(ऋग्वेद १.७.१०)*

ॐभूः क्रतु संरक्षकदेवतां इन्द्रमावाहयामि। ॐभुवः क्रतु संरक्षकदेवतां इन्द्रमावाहयामि। ॐस्वः क्रतु संरक्षकदेवतां इन्द्रमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः क्रतु संरक्षकदेवतां इन्द्रमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। स्वर्णवर्णां सहस्राक्षं ऐरावतवाहनं वज्रपाणिं शचीप्रियं इन्द्रमावाहयामि।

आग्नेय दलाग्रे—नवग्रह मण्डल के आग्नेय दल के अग्र भाग में अग्नि का आवाहन करें। अग्निं दूतमित्यस्य काण्वोमेधातिथिरग्निर्गायत्री क्रतु संरक्षक देवता अग्न्यावाहने विनियोगः।

ॐ अ॒ग्निं दू॒तं वृ॑णीमहे॒ होता॑रं वि॒श्ववे॑दसम्। अ॒स्य य॒ज्ञस्य॑ सु॒क्रतु॑म्॥ *(ऋग्वेद १.१२.१)*

ॐभूः क्रतु संरक्षकदेवतां अग्निं आवाहयामि। ॐभुवः क्रतु संरक्षकदेवतां अग्निं आवाहयामि। ॐस्वः क्रतु संरक्षकदेवतां अग्निं आवाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः क्रतु संरक्षकदेवतां अग्निं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। रक्तवर्णां साक्षसूत्रं सप्तार्चिषं शक्त्यन्नस्रुक्स्रुवतोमरव्यजन घृतपात्राणि दधानं स्वाहाप्रियं मेषवाहनं अग्निं आवाहयामि।

याम्यदलाग्रे—नवग्रह मण्डल के दक्षिण दल के अग्र भाग में यम का आवाहन करें। यमाय सोमं यमोयमोनुष्टुप् क्रतु संरक्षक देवता यमावाहने

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विनियोगः।

ॐ यमायसोमंसुनुतयमायजुहुता हविः। यमंह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः॥ *(ऋग्वेद १०.१४.१३)*

ॐभूः क्रतु संरक्षकदेवतां यमं आवाहयामि। ॐभुवः क्रतु संरक्षकदेतवतां यमं आवाहयामि। ॐस्वः क्रतु संरक्षकदेवतां यमं आवाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः क्रतु संरक्षकदेवतां यमं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। रक्तवर्णं दण्डधरं महिषवाहनं इळाप्रियं यमं आवाहयामि।

नैर्ऋत्यदलाग्रे—नवग्रह मण्डल के नैऋत्य दल के अग्र भाग में निर्ऋति का आवाहन करें। मोषुणः कण्वो निर्ऋतिर्गायत्री क्रतु संरक्षकदेवता निर्ऋत्यावाहने विनियोगः।

ॐ मोषुणः परापरानिर्ऋतिर्दुर्हणावधीत्। पदीष्टतृष्णयासह॥ *(ऋग्वेद १.३८.६)*

ॐभूः क्रतु संरक्षकदेवतां निर्ऋतिं आवाहयामि। ॐभूवः क्रतु संरक्षकदेवतां निर्ऋतिं आवाहयामि। ॐस्वः क्रतु संरक्षकदेवतां निर्ऋतिं आवाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः क्रतु संरक्षकदेवतां निर्ऋतिं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। नीलवर्णं खड्गचर्मधरं ऊर्ध्वकेशं नरवाहनंकालिकाप्रियं निर्ऋतिमावाहयामि।

पश्चिमदलाग्रे—नवग्रह मण्डल के पश्चिम दल के अग्र भाग में वरुण का आवाहन करें। ॐतत्वायामीत्यस्य शुनःशेपोवरुणस्त्रिष्टुप् क्रतुसंरक्षकदेवता वरुणावाहने विनियोगः।

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्भिः। अहेळमानोवरुणेह बोध्युरुशंसमान आयुः प्रमोषीः॥

(ऋग्वेद १.२४.११)

ॐभूः क्रतु संरक्षकदेवतां वरुणं आवाहयामि। ॐभूवः क्रतु संरक्षकदेवतां वरुणं आवाहयामि। ॐस्वः क्रतु संरक्षकदेवतां निर्ऋतिं आवाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः क्रतु संरक्षक देवतां वरुणं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। रक्तवर्णं नागपाशधरं मकरवाहनं पद्मिनीप्रियं सुवर्ण भूषणं वरुणं आवाहयामि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वायव्यदलाग्रे—नवग्रह मण्डल के वायव्य दलके अग्र भाग में वायु का आवाहन करें। तववायो व्यश्वो वायुर्गायत्री क्रतु संरक्षक देवता वाय्वावाहने विनियोगः।

ॐ तवं वायवृतस्पतेत्वष्टुर्जा मातरद्भुत। अवांस्यावृणीमहे। (ऋग्वेद ८.२६.२१)

ॐभूः क्रतु संरक्षकदेवतां वायुं आवाहयामि। ॐभुवः क्रतु संरक्षकदेवतां वायुं आवाहयामि। ॐस्वः क्रतु संरक्षकदेवतां वायुं आवाहयामि। ॐभू र्भुवः स्वः क्रतु संरक्षकदेवतां वायुं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। श्यामवर्णा हेमदण्डधरं कृष्णमृगवाहनं जगत्प्राणरूपं मोहिनी प्रियं वायुमावाहयामि।

उत्तर दलाग्रे—नवग्रह मण्डल के उत्तर दल के अग्र भाग में कुबेर को आवाहन करें। सोमो धेनुमित्यस्य गौतमः सोमस्त्रिष्टुप् क्रतु संरक्षक देवता कुबेरावाहने विनियोगः।

ॐ सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तमाशुं सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति। सादन्यं विदथ्यं सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै॥

(ऋग्वेद १.९१.२०)

ॐभूः क्रतु संरक्षक देवतां कुबेरं आवाहयामि। ॐभुवः क्रतु संरक्षक देवतां कुबेरं आवाहयामि। ॐस्वः क्रतु संरक्षक देवतां कुबेरं आवाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः क्रतु संरक्षक देवतां कुबेरं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। स्वर्णवर्णा निधीश्वरं कुंतपाणिं आश्ववाहनं चित्रिणीप्रियं कुबेरं आवाहयामि।

ऐशान दलाग्रे—नवग्रह मण्डल के ईशत्य दल के अग्र भाग में ईशान का आवाहन करें। तमीशानमित्यस्य गौतम ईशानो जगती क्रतु संरक्षण देवता ईशानावाहने विनियोगः।

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसेहूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धःस्वस्तये॥ (ऋग्वेद १.८९.५)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐभूः क्रतु संरक्षक देवतां ईशानमावाहयामि। ॐभुवः क्रतु संरक्षक देवतां ईशानमावाहयामि। ॐस्वः क्रतु संरक्षक देवतां ईशानमावाहयामि। ॐभू र्भुवः स्वः क्रतु संरक्षकदेवतां ईशानमावाहयामि। शुद्धस्फटिकवर्णा वरदाभ्य शूलाक्षसूत्रधरं वृषभवाहनं गौरीप्रियं ईशानं आवाहयामि। एवं एकपंचत्वारिंशत् देवता आवाह्य।

इस प्रकार नवग्रह मण्डल में ४१ देवताओं का आवाहन किया गया ग्रह ९+अधिदेवता ९+प्रत्यधिदेवता ९+क्रतु साद्गुण्यदेवता ६+क्रतु संरक्षक देवता ८ = कुल ४१ देवता। आवाहित नवग्रह मण्डलस्थ एकचत्वारिंशत् देवताभ्यः यथाशक्ति कल्पोक्त षोडशोपचार पूजां करिष्ये।

नवग्रहषोडशोपचार पूजन

ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि।

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१)*

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐनवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, आवाहनं समर्पयामि।

ॐ पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥ *(ऋग्वेद १०.९०.२)*

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐनवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, आसनं समर्पयामि।

ॐ एतावानस्य महिमाऽतो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ *(ऋग्वेद १०.९०.३)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवी मुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहा भवत् पुनः। ततो विष्वं व्यक्रामत् साशनानशने अभि॥ (ऋग्वेद १०.९०.४)

ॐ कां सोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।

(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

ॐ तस्माद् विराळजायत विराजो अधिपूरुषः। सजातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः॥ (ऋग्वेद १०.९०.५)

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्ती श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।

तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणो॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् पयः (दूध)—ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियं। भवावाजस्य सङ्गथे। (ऋग्वेद १.९१.१६)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, पयः स्नानं समर्पयामि। दूध से स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुत्तरां दिवम्। हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय॥ (ऋग्वेद १.५०.११)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः। पयः स्नानांते शूद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दधि (दहि)—ॐ दुधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखा कर्त्प्रण आयूंषि तारिषत्॥ (ऋग्वेद ४.३९.६)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, दधि स्नानं समर्पयामि। दहि स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ शुकेषु मे हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि। अथो हारिद्रवेषु मे हरिमाणं निदध्मसि॥ (ऋग्वेद १.५०.१२)

ॐ नवग्रह मंडलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, दधि स्नानांते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

घृत (घी)—ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतं वस्य धाम।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभवक्षि हव्यम्॥ (ऋग्वेद २.३.११)

ॐ नवग्रह मंडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, घृत स्नानं समर्पयामि। घी स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ उदगादयमादित्यो विश्वेन सहसा सह। द्विषन्तं मह्यं रन्धयन् मो अहं द्विषते रधम्॥ (ऋग्वेद १.५०.१२)

ॐ नवग्रह मंडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, घृतस्नानांते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

मधु (शहद)—ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥
ॐ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता॥
ॐ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ (ऋग्वेद १.९०.६-७-८)

ॐ नवग्रहमंडलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, मधु स्नानं समर्पयामि।

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च॥

(ऋग्वेद १.११४.१)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, मधु स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शर्करा (शक्कर)—ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिन्द्राय सुहवीतु नाम्ने।
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमाँ अदाभ्यः॥ *(ऋग्वेद ९.८५.६)*

ॐ नवग्रह मंडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि।

ॐ आकृष्णेन रजसावर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेनाऽदेवो याति भुवनानि पश्यन्॥

(ऋग्वेद १.३५.२)

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वं हसः॥ *(ऋग्वेद १०.९७.१५)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, फलस्नानं समर्पयामि।

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥
यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयते हनः। उशतीरिव मातरः॥
तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ *(ऋग्वेद १०.९.१-२-३)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, फल स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेनाऽऽदेवो याति भुवनानि पश्यन्॥
ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥ *(ऋग्वेद १.९१.१६)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति॥ (ऋग्वेद ८.४४.१६)
ॐ उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिंध्वं बहवः सनीळाः।
दधिक्रामग्निमुषसं च देवीमिंद्रावतोऽवसे निह्वये वः॥ (ऋग्वेद १०.१०१.१)
ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ (ऋग्वेद २.२३.१५)
ॐ शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि।
विश्वा हि माया अवसि स्वधावो भद्रा ते पूषन्निहरातिरस्तु॥ (ऋग्वेद ६.५८.१)
ॐ शमग्निरग्निभिः करच्छंनस्तपतु सूर्यः। शं वातो वात्वरपा अपस्त्रिधः॥ (ऋग्वेद ८.१८.९)
ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कयाशचिष्ठया वृता॥ (ऋग्वेद ४.३१.१)
ॐ केतु कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुष द्भिरजायथाः॥ (ऋग्वेद १.६.३)
ॐ तच्छंय्योरावृणीमहे गातुं यज्ञाय गातुं यज्ञ पतये। दैवी स्वस्तिरस्तु नः। स्वस्तिमानुषेभ्यः।
ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम् शंनो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)
ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ (ऋग्वेद १०.९०.६)
ॐ आदित्यवर्णो तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, शुद्धोदकस्नानं सपर्मयामि। शुद्धोदक स्नान मंत्रों के तीन प्रकार प्रचलित है।

प्रथम क्रम में—९ ग्रह- ९ अधिदेवता-९ प्रत्यधिदेवता ६ कर्म साद्गुण्य देवता, ८ क्रतु संरक्षक देवता कुल मिलाकर ४१ देवताओं का मंत्र पठन करके शुद्धोदक स्नान करना चाहिये। सभी मंत्र आवाहन में है। नवग्रह यागादियों में इसका प्रयोग होता है। जहाँ कलश पूजन के लिए ही एक पण्डित नियुक्त हो वहाँ भी इसे कर सकते हैं।

द्वितीय क्रम में—९ ग्रह+९ अधिदेवता+९ प्रत्यधिदेवता कुलमिलाकर २७ देवताओं का मंत्र पठन करके शुद्धोदक स्नान कराना चाहिये।

तृतीय क्रम में—९ ग्रहों का मंत्र पठन करके शुद्धोदक स्नान कराना चाहिये।

वस्त्रम्— ॐ युवं वस्त्राणि पीवसावसाथे युवोरच्छिद्रा मन्तवो हसर्गाः।
अवातिरतमनृतानि विश्वऋतेन मित्रा वरुणा सचेथे। *(ऋग्वेद १.१५२.१)*
ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥ *(ऋग्वेद १०.९०.७)*
ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापते र्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
ॐ तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशूंस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान् ग्राम्याश्च ये॥ *(ऋग्वेद १०.९०.८)*
ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वा निर्णुद मे गृहात्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि, आचमनं समर्पयामि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आभरणम्—ॐ हिरंण्यरूपः स हिरंण्य सन्दृगपान्नपात् सेदुहिरंण्यवर्णाः। हिरण्ययात् परियोनेर्निषद्यां हिरण्यदा ददत्यन्नमस्मै॥

(ऋग्वेद २.३५.१०)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, आभरणं समर्पयामि।

गन्धम्—ॐ तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतऋचः सामानि जज्ञिरे। छंदांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत॥ (ऋग्वेद १०.९०.९)

ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, गन्धं समर्पयामि।

अक्षतम्—ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उतपुरन्न धृष्णवर्चत॥ (ऋग्वेद ८.६९.८)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि—ॐ आयने ते परायणे दर्वारोहन्तु पुष्पिणीः। हृदाश्च पुण्डरीकाणि समुद्रस्य गृहा इमे॥ (ऋग्वेद १०.१४२.८)

ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावोहजज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजा वयः॥ (ऋग्वेद १०.९०.१०)

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ (ऋग्वेद - पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नाम पूजा

ॐसहस्रकिरणाय नमः। ॐसूर्याय नमः। ॐतपनाय नमः। ॐसवित्रे नमः। ॐरवये नमः। ॐविकर्तनाय नमः। ॐजगच्चक्षुषे नमः। ॐद्युमणाये नमः। ॐतिग्मदीधितये नमः। ॐत्रयीमूर्तये नमः। ॐद्वादशात्मने नमः। ॐब्रह्माविष्णुशिवात्मकाय नमः। ॐआदित्याय नमः। ॐअग्नये नमः। ॐरुद्राय नमः। ॐचन्द्रमसे नमः। ॐअद्भ्यो नमः। ॐगौर्यै नमः। ॐअङ्गारकाय नमः। ॐभूम्यै नमः। ॐस्कन्दाय नमः। ॐबुधाय नमः। ॐविष्णवे नमः। ॐपुरुषाय नमः। ॐबृहस्पतये नमः। ॐइंद्राय नमः। ॐब्रह्मणे नमः। ॐशुक्राय नमः। ॐइंद्राण्यै नमः। ॐइंद्राय नमः। ॐशनैश्चराय नमः। ॐप्रजापतये नमः। ॐयमाय नमः। ॐराहवे नमः। ॐसर्पेभ्यो नमः। ॐमृत्यवे नमः। ॐकेतवे नमः। ॐब्रह्मणे नमः। ॐचित्रगुप्ताय नमः। ॐविनायकाय नमः। ॐदुर्गायै नमः। ॐक्षेत्रपालाय नमः। ॐवायवे नमः। ॐआकाशाय नमः। ॐअश्विभ्यां नमः। ॐइन्द्राय नमः। ॐअग्नये नमः। ॐयमाय नमः। ॐनिर्ऋतये नमः। ॐवरुणाय नमः। ॐवायवे नमः। ॐसोमाय नमः। ॐईशानाय नमः। ॐनवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, नाम पूजां समर्पयामि।

धूपः— **वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥**

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते॥ *(ऋग्वेद १०.९०.११)*

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ *(ऋग्वेद - पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐनवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, धूपं आघ्रापयामि।

दीपं— **साज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्यतिमिरापह॥**

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१२)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ आपः स्त्रजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत व सं मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ *(ऋग्वेद - पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि। धूपदीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यं—नैवेद्य रखने के स्थल पर मण्डल बनायें (चतुरस्र) नैवेद्य को मण्डल पर रखने के बाद मंत्र पढ़ें। विश्वामित्र ऋषिः देवी गायत्री छन्दः, सविता देवता निवेदने विनियोगः। एक बार नैवेद्य पर गायत्री मंत्र से प्रोक्षण करें। सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि इस मंत्र से दिन में एवं **ऋतं त्वा सत्येन परिषिञ्चामि**। इस मंत्र से रात्रि में परिषिञ्चन करें।

यथा संभव नैवेद्यं निरीक्षस्व कहकर प्रार्थना कर **अमृतोपस्तरणमसि** मन्त्र से जल छोड़ें। बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछड़े को घास खिलाते हैं) एवं दाहिने हाथ से निम्न मुद्राओं से देवताओं को नैवेद्य अर्पण करें। मन में कल्पना करें कि भगवान को खिला रहे हैं। प्राणाय स्वाहा। अपानाय स्वाहा। व्यानाय स्वाहा। उदानाय स्वाहा। समानाय स्वाहा। ॐ घृणिः सूर्य आदित्यः-इस मूल मंत्र को आठ बार जप करें।

ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वदुरिन्द्राय सुहवीतु नाम्ने।
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमाँ अदाभ्यः॥ *(ऋग्वेद ९.८५.६)*
ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१३)*
ॐ आद्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ *(ऋग्वेद - पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

यथा सम्भवं नैवेद्यं निवेदयामि। अमृतापिधानमसि। कहकर उत्तरापोशण जल दें। उत्तरापोशनार्थं जलं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गण्डूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ताम्बूलम्—पूगीफलसमायुक्तं नागवल्ल्यादलैर्युतम्। चूर्णं कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ ॐनवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, क्रमुक ताम्बूलं समर्पयामि। ताम्बूल के पश्चात् नीराजन करें।

ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न घृष्ण्वर्चत॥ *(ऋग्वेद ८.६९.८)*

ॐ श्रिये जातः श्रिय आनिरियाय श्रियं वयो जरितृभ्यो दधाति।
श्रियं वसाना अमृतत्वमायन् भवन्ति सत्या समिथा मितद्रौ॥ *(ऋग्वेद ९.९४.४)*

ॐ ध्रुवाद्यौ ध्रुवापृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्॥
ॐ ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ *(ऋग्वेद १०.१७३.४-५)*

ॐनवग्रह मडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, मङ्गल नीराजनं दर्शयामि।

मन्त्र पुष्पः—ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेनाऽऽदेवो याति भुवनानि पश्यन्॥ *(ऋग्वेद १.३५.२)*
ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥ *(ऋग्वेद १.९१.१६)*
ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति। *(ऋग्वेद ८.४४.१६)*
ॐ उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिध्वं बहतः सनीळाः।
दधिक्रामग्निमुषसं च देवीमिन्द्रावतोऽवसे निह्वये वः॥ *(ऋग्वेद १०.१०१.१)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहिचित्रम्॥ (ऋग्वेद २.२३.१५)
ॐ शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद्विषुरूपे अहनीद्यौरिवासि।
विश्वा हि माया अवसि स्वधावो भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु॥ (ऋग्वेद ६.५८.१)
ॐ शमग्निरग्निभिः करच्छन्नस्तपतु सूर्यः। शं वातो वात्वरपा अपस्त्रिधः॥ (ऋग्वेद ८.१५.९)
ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ (ऋग्वेद ४.३१.१)
ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥ (ऋग्वेद १.६.३)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा नमस्कारः—यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे॥

ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम्॥ (ऋग्वेद १०.९०.१५)
ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।

(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, प्रदक्षिणा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्यः—ॐ प्रभाकराय विद्महे दिवाकराय धीमहि। तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्॥ ॐ अत्रिपुत्राय विद्महे अमृतोद्भवाय धीमहि। तन्नः सोमः प्रचोदयात्॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐभूमिपुत्राय विद्महे भारद्वाजाय धीमहि। तन्नः कुजः प्रचोदयात्॥ ॐतारापुत्राय विद्महे सोमपुत्राय धीमहि। तन्नो बुधः प्रचोदयात्॥ ॐदेवाचार्याय विद्महे वाचस्पतये धीमहि। तन्नो गुरुः प्रचोदयात्॥ ॐदैत्याचार्याय विद्महे विद्यारूपाय धीमहि। तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्॥ ॐसूर्यपुत्राय विद्महे शनैश्चराय धीमहि। तन्नो मंदः प्रचोदयात्॥ ॐसैंहिकेयाय विद्महे तमोमयाय धीमहि। तन्नो राहुः प्रचोदयात्॥ ॐब्रह्मपुत्राय विद्महे विकृतास्याय धीमहि। तन्नः केतुः प्रचोदयात्॥ ॐनवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, प्रसन्नार्घ्यं समर्पयामि।

सर्वोपचार पूजनम्—ॐछत्रं समर्पयामि। चामरेण वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। आन्दोळिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्त राजोपचार देवोपचारपूजां समर्पयामि।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

(ऋग्वेद १०.९०.१६)

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥ *(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐनवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारपूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणकारकः। विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु ते रविः॥
रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः। विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु ते विधुः॥
भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत्सदा। वृष्टिकृद्वृष्टिहर्ता च पीडां हरतु ते कुजः॥
उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः। सूर्य प्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु ते बुधः॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देवमन्त्री विशालाक्षः सदालोकहितेरतः। अनेक शिष्य संपूर्णाः पीडां हरतु ते गुरुः॥
दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः। प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीडां हरतु ते भृगुः॥
सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः। मंदचारः प्रसन्नात्म पीडां हरतु ते शनिः॥
महाशिरा महावक्त्रौ दीर्घदंष्ट्रो महाबलः। अतनुश्चोर्ध्व केशश्च पीडां हरतु ते तमः॥
अनेक रूपवर्णैश्च शतशोथ सहस्त्रशः। उत्पातरूपो जगतः पीडां हरतु ते शिखी॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

आरोग्यं पद्मबन्धुर्वितरतु विपुलां संपदं शीतरश्मिः, भूलाभं भूमिपुत्रः सकलगुणयुतां वाग्विभूतिं च सौम्यः। सौभाग्यं देवमन्त्री रिपुभयशमनं भार्गवः शौर्यमार्किः, दीर्घायुस्सैंहिकेयो विपुलतरयशः केतुराचन्द्रतारम्॥ शान्तिरस्तु। शिवं ते अस्तु। ग्रहाः कुर्वन्तु मङ्गलम्। अरिष्टानि प्रणाश्यन्तु। दुरितानि भयानि च। ॐ नवग्रहमण्डलस्थ देवताभ्यो नमः, प्रार्थनां समर्पयामि। अनेन कृत पूजनेन आदित्यादि नवग्रहदेवताः प्रीयन्ताम्॥

यहाँ पर नवग्रह पूजन समाप्त हुआ। मण्डप में कलशों का पूजन भी संपूर्ण हुआ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

अग्निमुख प्रकरण

सृष्टि के आरम्भ में ब्रह्मा जी के मुख से ब्राह्मण एवं अग्नि का प्रादुर्भाव हुआ। इसलिए ब्राह्मणों के लिए अग्नि प्रधान देवता है। अग्नि में देने वाले हविर्भाग समस्त देवताओं को प्राप्त होते हैं। अतः अग्नि मुख से द्रव्यों का देवताओं को अर्पण कर अपने वांच्छित वस्तुओं को अपने लिए एवं राष्ट्र के लिए प्राप्त करते थे। इसलिए अग्नि सिद्धि प्राप्त करते थे। इसके लिए सूर्यकान्त मणि से अग्नि को प्रज्वलित करते थे। जिनके पास यह नहीं था वे अरणी मन्थन विधान से पीपल का नीचे वाला आधार, एवं खदिर की मथनी से मथ कर अग्नि प्रज्वलित करते थे।

दोनों न होने पर आस-पास के श्रोत्रियों के घर से अग्नि लाकर होम में प्रयुक्त करते थे लौकिक अग्नि का उपयोग प्रयोग में नहीं था श्रोत्रीय अग्नि या सूर्यकान्त मणि का अग्नि या अरणी मन्थन की अग्नि से भी षोडश संस्कार करना चाहिये। बड़े यज्ञों में यही विधान अनिवार्य है। यज्ञों के प्रधान देवता के अनुसार वैष्णवाग्नि, शैवाग्नि, गाणपत्याग्नि, दुर्गाग्नि, हरिहराग्नि, शास्ताग्नि, स्कन्दाग्नि, नामक सात अग्नियों में अपने कर्म के लिए आवश्यक अग्नि को सृष्टिकर उसमें यागादि करने से यज्ञ का संपूर्ण फल प्राप्त होता है। अन्यथा अत्यल्प फल मिलता है।

अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यक् आदित्यं उपतिष्ठते। आदित्याज्जायते वृष्टिः वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः॥ *(मनुस्मृति)*

विधि पूर्वक किया गया अग्नि की आहुतियाँ सूर्य को प्राप्त होते हैं। सूर्य से बारिश होती है। बारिश से अन्न (धान्य) एवं उससे प्रजा होते हैं। अर्थात् विधिपूर्वक किये गये यज्ञों से समृद्धि होती है। इस विधान में पूर्वाङ्ग अर्थात् प्रधान होम से पहले करने वाला कर्म एवं उत्तराङ्ग अर्थात् प्रधान होम के बाद करने वाले कर्म को पूर्णतया बताने वाला विधान अग्निमुख कहलाता है।

प्रत्येक वेद का अलग-अलग विधान है। ऋग्वेद में बाष्कल शाकल दो शाखायें हैं। अधिकतर शाकल शाखा के विधान का अनुसरण करते हैं। उसी क्रम

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

से आगे अग्निमुख प्रयोग है। अग्निमुख शुद्ध होने पर ही यज्ञ का फल प्राप्त होता है। लौकिकाग्नि में किये गये हव्य देवताओं को नहीं प्राप्त होते हैं। अतः इसे सावधानी से करना चाहिये।

ऋग्वेद के २१ शाखाओं में २ शाखायें शेष है। यजुर्वेद के १०१ शाखओं में ५ शाखायें उपलब्ध हैं।

सामवेद के १०० शाखओं में ३ शाखयें उपलब्ध हैं। अथर्ववेद मे ९ शाखओं में १ शाखा उपलब्ध है।

लौकिके पावको ह्यग्निः प्रथमः परिकीर्तितः।

लौकिक कार्यों में पावकाग्नि कहलाता है। अग्निस्तु मारुतोनाम गर्भाधाने प्रकीर्तितः। गर्भाधान में मारुत नामक अग्नि कि प्रतिष्ठा होती है।

पुंसवे पवमानस्तु शोभनः शुभकर्मसु।

पुंसवन में पवमान नामक अग्नि एवं शुभकार्यों में शोभन नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

सीमान्ते मंगलोनाम प्रबलो जातकर्मणि। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

सीमान्त संस्कार में मंगल नामक अग्नि एवं जात कर्म संस्कार में प्रबल नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

पार्थिवो नामकरणे प्राशनेन्नस्यवैशुचिः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

नामकरण संस्कार में पार्थिव अग्नि एवं अन्न प्राशन में शुचि नामक अग्नि कि प्रतिष्ठा होती है।

सभ्यनामातु चूडायां व्रतादेशे समुद्भवः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

चूडाकर्म संस्कार में सभ्यनाम अग्नि उपनयन व्रत में समुद्भव नामक अग्नि कि प्रतिष्ठा होती है।

गोदाने सूर्यनामास्यद्विवाहे योजकः स्मृतः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गोदान में सूर्य नामक अग्नि एवं विवाह में योजन नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

आवसथ्ये द्विजो ज्ञेयो वैश्वदेवेतु रुक्मकः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

अतिथि सत्कारादि में प्रयुक्त आवसथ्य में द्विज नामक अग्नि एवं वैश्वदेव पाँच महायज्ञों में एक में रुक्मक नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

प्रायश्चित्ते विटश्चैव पाकयज्ञेषु पावकः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

प्रायश्चिताङ्ग होम में विट नामक अग्नि एवं पाकसंस्थ यज्ञों में ऋसप्त सोमसंस्था, (सप्त हविः संस्था, सप्त पाकसंस्था) इन २१ यज्ञों में पावक नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

देवानां हव्यवाहश्चपितृणां कव्यवाहनः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

सामान्य देवे कार्यो में हव्यवाहन नामक अग्नि एवं पितृयज्ञों में कव्यवाहन नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

शान्तिके वरदः प्रोक्तः पौष्टिके बलवर्धनः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

समस्त शान्तिकर्मो में वरद नामक अग्नि एवं समस्त पौष्टिक कर्मो में बलवर्धन नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती हैं।

पूर्णाहुत्यां मृडोनाम क्रोधोग्निश्चाभिचारिके। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

पूर्णाहुति में मृडनाम अग्नि एवं अभिचार (शत्रु नाशादि) कर्मो में क्रोध नामक अग्निकि प्रतिष्ठा होती हैं।

वश्यार्थे कामदो नाम वनदाहे तु दूषकः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

वशीकरण कर्म में कामद नामक अग्नि एवं वनदाह कर्म में (उदाहरण—खाण्डव दहन) दूषक नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुक्षौ तु जाठरो ज्ञेयः क्रव्यादोमृतदाहने। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

पेठ में जाठर नामक अग्नि एवं मरे हुए को जलाने में क्रव्याद नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

वह्निनामालक्षहोमे कोटिहोमे हुताशनः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

जहाँ लक्ष संख्याक होम होता है वहाँ वह्नि नामक अग्नि, कोटिहोम में हुताशन नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

वृषोत्सर्गेऽध्वरो नाम शुचये ब्राह्मणः स्मृतः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

अपर संस्कार में ग्यारवें दिन करने वाला कर्म में, अथवा अपुत्र व्यक्ति स्वतः जीवित रहते इस कर्म को करते समय अध्वर नामक अग्नि, एवं शुद्धि के लिए करने वाले कर्म में ब्राह्मण नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

समुद्रे वाडवोह्यग्निः क्षये संवर्तकस्तथा। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

समुद्र में वाडव नामक अग्नि एवं प्रलय काल में संवर्तक नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

ब्रह्मावैगार्हयत्पश्च ईश्वरो दक्षिणास्तथा। विष्णुराहवनीयः स्यादग्निहोत्रेत्रयोग्नयः॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

अग्निहोत्र में प्रयुक्त तीन अग्नियों में गार्हपत्य अग्नि में ब्रह्मा नामक अग्नि, दक्षिणाग्नि में ईश्वर नामक अग्नि, आहवनीय अग्नि में विष्णु नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

ज्ञात्वैवमग्निनामानि गृह्यकर्म समारभेत्। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इन अग्नियों के नामों को जानकर ही कर्म करना चाहिये।

इमानिसर्वसंस्कारशांतिकपौष्टिकाद्यनुष्ठानोपयुक्तानि तत्र तत्र योज्यान्यग्निनामानि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऊपर लिखे अग्नि नामों को जानकर उन्हें प्रयोगकर सभी संस्कार, शान्तिक, पौष्टिक आदि अनुष्ठान करने चाहिये।

वैदिक प्रक्रिया से अग्नि प्रज्वलन - तत्र यजमानः कृतनित्यक्रियः शुचिः परिहित धौतवासाः पीठोपविष्टः प्राङ्मुखः वाग्यतो द्विराचम्य दर्भपाणिः प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य ममोपात्त दुरितक्षयद्वारा परमेश्वर प्रीत्यर्थं अमुक कर्म करिष्ये।

सामान्य संस्कारों में ऋत्विग्वरण के बाद एवं विशिष्ठ यज्ञों में मधुपर्क के बाद पूर्वाभिमुख बैठकर दो बार आचमन करें, हाथ में कुश लेकर—

अप्रच्छिन्नाग्रौ अनन्तर्गर्भे प्रादेशमात्रौ कुशौ पवित्रम्।

कुश लगभग १२ अंगुल लम्बे हो जिनका अग्र टूटा न हो, एवं दूसरे कुश किले न हो ऐसे दो कुशों से बनाना चाहिये।

ग्रन्थीकृत पवित्रेण न भुञ्जीयात् न चाचमेत्। न पिबेत् यदि कृत्वैतान्तदातच्छेणितं भवेत्॥
तस्मादग्रथितेनाम्बु पिबेत् भुञ्जीतचाचमेत्। *(अश्वलायन स्मृति)*

ग्रन्थि (गाँठ) युक्त पवित्र पहनकर न खाना चाहिये आचमन भी नहीं करना चाहिये। यदि उसे पहनकर खाने से आचमन करने से वह भेजन एवं जल रक्त समान हो जाता है। इसलिए बिना गाँठ बाँधे हुए कुश से भोजन एवं आचमन करना चाहिये।

हैमेन सर्वदा सर्वान् कुर्यादेवाविचायन्। *(अश्वलायन स्मृति)*

सोने के पवित्र बनाकर सभी कर्म कर सकने हैं। कारण यह पवित्र कभी अपवित्र नहीं होता है। अतः संभव हो तो पवित्र उपयोग में ला सकते हैं। कुशाों को हाथ में लेकर प्राणायाम करें प्राणायाम के बाद संकल्प लेवें।

तदंगहोमं कर्तुं स्थंडिलादि कर्म करिष्ये।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उस उद्देश्य (संकल्प) के अंगभूत होम करने के लिए स्थंडिलादि कर्मो को करुँगा। इनका विवरण आगे है।

स्थंडिलनिर्माण विधान—इति संकल्प्य गोमयादि लिप्तेशुद्धदेशे शुद्धमृदा ऐशान्यारंभमुदक्संस्थं चतुरंगुलोन्तं अंगुलो न्नतं वा चतुर्दिक्षुमिलित्वा द्विसप्तत्यंगुल परिधिकं फलितमष्टादशांगुल विस्तृतं होमानुसारेण तदधिकं वा न तु ततो न्यूनं मध्योन्नतं स्थंडिलं कुर्यात्। गोमय से लेपित शुद्ध भूमि पर, पवित्र मिट्टी से लेपन करना चाहिये या रेत डालना चाहिये।

ईशान्य से प्रारम्भकर उत्तर में समाप्त हो ऐसे चार अंगुल ऊँचा या एक अंगुल ऊँचा चबूतरा पवित्र मिट्टी से या रेत से बनाना चाहिये। उस चबूतरे का संपूर्ण विस्तार ७२ अंगुल एवं एक-एक दिशा में १८ अंगुल होना चाहिये। इससे कम कभी नहीं करना चाहिये। बड़े यागों के अनुसार बड़ा सकते हैं। सामान्य होमों में स्थण्डिल का प्रयोग करते हैं। बड़े होमों में हवन कुण्ड बनाते हैं।

स्थण्डिल के बीच वाला भाग ऊँचा रहना चाहिये।

ऊँचाई १ अंगुल या चार अंगुल, लम्बाई एवं चौढ़ाई

(बाण प्रमाण हस्त प्रमाण या १८ अंगुल)

लिख्यन्तेऽसुरनिर्हृत्यै सिकताः सर्वकर्मसु। चतुरस्त्र चतुर्दिक्षु बाणमात्रं द्विरावृतम्॥
भूमौ भूपुर मुख्यस्य दिक्ष्वश्वत्थ दलाकृतैः। नेच्छन्ति मध्यमावेष्टु मसुरा यज्ञहारिणः॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

सभी कर्मो में असुरनिवारण के लिए चौक वाले चार दिशाओं में बाण के समान लम्बे (१८") स्थण्डिल में रेत का प्रयोग करें। उसके बाहर सफेद रंगोली से दो

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चौक लिखें। चार दिशाओं में अश्वत्थ पत्र लिखें। एवं चार उपदिशाओं में अष्टदल पत्र का निर्माण रंगोली से करें। एवं रंग भरें। इसका चित्र अगले पन्ने में है। यज्ञ को अपहरण करने वाले असुर मण्डल एवं स्थण्डिल के अन्दर प्रवेश करने में समर्थ नहीं होते हैं। अन्यथा वे अन्दर आकर देवभाग का अपहरण करते हैं।

कुण्ड का विवरण अग्निमुख के अन्त में होगा।—

स्थण्डिल शुद्धिः— तद् गोमयेन प्रदक्षिणमुपलिप्य दक्षिणो उदीच्यां द्वे, प्रतीच्यां चतुः, प्राच्यामर्धं इत्यंगुलानित्यक्त्वा दक्षिणोपक्रमां उदक्संस्थां प्रादेशमात्रां एकां लेखां तस्या दक्षिणोत्तरयोः प्रागायते पूर्वरेखया असंसृष्टे प्रादेशसंमिते द्वे लेखे लिखित्वा तयोर्मध्ये परस्परं असंसृष्टाः उदक्संस्थाः प्रागायताः प्रादेश संमिताः तिस्त्रः इति षड्लेखाः यज्ञीय शकलमूलेन दक्षिण हस्तेन उल्लिख्य लेखासु तच्छकलं उदगग्रं निधाय स्थंडिलं अद्भिः अभ्युक्ष्य शकलं भंक्त्वा आग्नेय्यां निरस्य पाणिं प्रक्षाल्य वाग्यतः भवेत्।

स्थण्डिल को पहले गोमय से लेपना चाहिये। स्थण्डिल (वेदी) में दक्षिण में आठ अंगुल, उत्तर में दो अंगुल, पश्चिम में चार अंगुल, पूर्व में आधा अंगुल छोड़कर दक्षिण से प्रारम्भकर उत्तर में समाप्त हो ऐसे १२ अंगुल चौक बनाना चाहिये। फिर बीच में दक्षिण से उत्तर एक रेखा खींचना चाहिये। १२ अंगुल फिर दक्षिण से प्रारम्भ कर एक दक्षिण में एवं एक उत्तर में दो रेखायें पश्चिम से पूर्व की ओर खीचें १२ अंगुल की फिर दक्षिण से प्रारम्भकर दक्षिण में समाप्त होने वाले पश्चिम से पूर्व में समाप्त होने वाले तीन रेखायें। (१२ अंगुल) खीचें। (प्रादेश प्रमाण–लगभग १२ अंगुल) (ब) इसे यज्ञ में प्रयुक्त अश्वत्थादि समित् के अग्रभाग से इन लकीरों को खीचना चाहिये। दाहिने हाथ से लिखें। (रेत पर) खीचने वाले समित् को उसके ऊपर उत्तर उत्तराभिमुख रखें। फिर स्थण्डिल (stage) को जल से अभ्युक्षण करना चाहिये। (अभ्युक्षण मतलब मुष्टि में जल लेकर सिञ्चन करना चाहिये।) फिर उस समित् को (लकीर खीचें) तोडकर आग्नेय दिशा में फेंककर हाथ धो लेना चाहिये।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इन रेखाओं के देवता, उद्देश्य—**तन्मध्ये सिकताकीर्णो लिख्यन्ते यज्ञसिद्धये। यज्ञीय शकलेनैव रेखाः षट् द्वादशांगुलाः॥** *(अश्वलायन स्मृति)*

रेंत से व्याप्त होम वेदी पर यज्ञ सिद्धि के लिए यज्ञ के लिए योग्य समित् से बारह अंगुल प्रमाण वाले ६ रेखायें खींचना चाहिये।

पूर्वा प्रजापते रूपा लिख्यते चोदगायता। दक्षिणा ताररूपा स्यात् सावित्र्याश्चोत्तरा स्मृता॥
मध्ये तिस्त्रः त्रिवेदानां रूपाः प्रागायता मताः। स्मर्तव्या इति तारेखा वैदिकं कर्म कर्तृभिः॥
प्रजापतेः समुत्पन्ना स्ताराद्याः श्रुतयोखिलाः। तेषां तु कर्मनानात्वात् नानात्वमिह संस्मृतम्॥
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च उमालक्ष्मीसरस्वती। षड्रेखा देवताः प्रोक्ता अक्षतांस्तासु निक्षिपेत्॥ *(अश्वलायन स्मृति)*

सबसे पहले दक्षिण से उत्तर की ओर एक १२ अंगुल की रेखा खीचे। यह प्रजापति का रूप है (**अ**)। दक्षिण भाग में पश्चिम से पूर्व की ओर जाने वाले एक १२ अंगुल प्रमाण का रेखा खीचे। यह प्रणव स्वरूप है (**ब**)। उत्तर दिशा में पश्चिम से पूर्व की ओर जाने वाला एक १२ अङ्गुल प्रमाण का रेखा खीचें। यह सावित्री रूप है (**ब**)।

इन दोनों के बीच में तीन रेखायें पश्चिम से पूर्व की ओर खीचें। ये भी १२ अङ्गुल प्रमाण के हों। यह तीन वेदो के स्वरुप है। वैदिक कर्म करने वाले इन तीन रेखाओं को खीचते समय तीन वेदो का स्मरण करना चाहिये। प्रजापति ब्रह्मा से उत्पन्न प्रणवादि सभी श्रुतियाँ अनेक रूप में हैं। अतः ये रेखयें भी अलग-अलग रहना चाहिये। इनका मिलन नहीं होना चाहिये।

पहले खीचें दक्षिण से उत्तर की ओर की रेखा में ब्रह्मा जी को (**अ**) ॐ ब्रह्मणे नमः। **दूसरी बार** खीचें दक्षिण में स्थित पश्चिम से पूर्व की ओर खीचें रेखा में विष्णु जी को (**ब**) ॐ विष्णवे नमः। **तीसरी बार** खींचे उत्तर में स्थित पश्चिम से पूर्व की ओर खींचे रेखा में रुद्र जी को (**ब**) ॐ रुद्राय नमः एवं बीच के तीन रेखाओं में दक्षिण से उत्तर की ओर क्रम से उमा, लक्ष्मी, सरस्वती जी का आवाहन कर पञ्चोपचार या षोडशोपचार से पूजन करना चाहिये।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ उमायै नमः। ॐ लक्ष्म्यै नमः। ॐ सरस्वतत्यै नमः। ॐ ब्रह्मणो नमः। ब्रह्माणं आवाहयामि। ॐ विष्णवे नमः। विष्णुं आवाहयामि। ॐ रुद्राय नमः। रुद्रं आवाहयामि। ॐ उमायै नमः। उमां आवाहयामि। ॐ लक्ष्म्यै नमः। लक्ष्मीं आवाहयामि। ॐ सरस्वत्यै नमः। सरस्वतीं आवाहयामि। ॐ आवाहित देवताभ्यो नमः। ॐ लं पृथिव्यात्मने गन्धं कल्पयामि। ॐ हं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐ वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मने पञ्चोपचारपूजां समर्पयामि। अनेन पूजनेन आवाहित देवताः प्रीयन्ताम्।

अग्नि प्रतिष्ठा विधान—यहाँ तक होम वेदी निर्माण विधि, होम वेदी पर देवताओं का आवाहन पूजन संपन्न हुआ। आगे अग्नि प्रतिष्ठा विधान वर्णित है। ततः तैजसेन असंभवे मृन्मयेन वा पात्रयुग्मेन संपुटीकृत्य सुवासिन्या श्रोत्रियागारात् स्वगृहाद्वा समृद्धं निर्धूमं अग्निं आहृतं स्थंडिलात् आग्नेय्यां निधाय। उसके बाद लोहपात्र में (संभव हो तो ताम्र पात्र में) यदि न हो तो मिट्टी के पात्र में श्रोतियों के घर से या अपने घर से लाकर, धुऐं रहित अंगारों को पात्र में रखकर दूसरे पात्र से ढक्कर लाना चाहिये। लाए हुए अग्निपात्र को स्थण्डिल होमवेदी के आग्नेय दिशा में रखना चाहिये।

एह्यग्नेराहूगणोगोतमोग्निस्त्रिष्टुप् अग्न्याह्वाने विनियोगः। एह्यग्न इहहोता निषीदादब्धः सुपुर एताभवानः॥
अवतांत्वारोदसीविश्वमिन्वेयजामहे सौमनसायं देवान्। *(ऋग्वेद १.७६.२)*

जुष्टोदमूना आत्रेयोवसुश्रुतोग्निस्त्रिष्टुप् अग्निनमस्कारे विनियोगः॥

ॐ जुष्टोदमूनाअतिथिर्दुरोणा इमं नो यज्ञमुपयाहि विद्वान्। विश्वाअग्ने अभियुजो विहत्या शत्रूयतामाभराभोजनानि॥

(ऋग्वेद ५.४.५)

पहले मन्त्र से अग्नि देव को आह्वन करें। एवं दूसरे मंत्र से नमस्कार करें। आच्छादनं दूरीकृत्य फिर ऊपर ढके पात्र को निकालें।

समस्तव्याहृतीनां परमेष्ठीप्रजापतिः प्रजापतिर्बृहती। अग्निप्रतिष्ठापने विनियोगः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ भूर्भुवः स्वः। इति आत्माभिमुख पाणिभ्यां षट्सुलेखासु अमुक नामानमग्निं प्रतिष्ठापयामि इति अग्निं प्रतिष्ठाप्य। ऊपर के मन्त्र कहकर अग्नियुक्त पात्र को अपने सामने हाथों में पकडकर एक बार पदक्षिण कर जो ६ रेखायें है, उन पर कर्माङ्ग देवता नामक अग्नि को प्रतिष्ठापित कर रहा हूँ कहकर रखना चाहिये। रखते समय हाथ कर्तरी शकल में होना चाहिये। कैची जैसे (cross) अग्न्याहरण पात्रयोः अक्षतैः सह उदकमासिच्य इन्धनंप्रोक्ष्य वेणु धमन्या प्रबोधयेत्। अग्नि लायें दोनों पात्रों में अक्षत डालकर जल सींचकर उसे बाहर कर देवें। फिर लकडियों को जल से प्रोक्षण कर बॉस की या लोहे की धमनी फूकनी से फूंककर अग्नि को प्रज्वलित करें। अग्निनाग्निः काण्वोमेधातिथिः अग्निर्गायत्री अग्नि समिन्धने विनियोगः।

ॐ अग्निनाग्निः समिध्यते कविर्गृहपतिर्युवा। हव्यवाड्जुह्वास्यः।

इस मन्त्र से लकड़ी डालना चाहिये।

प्रक्षिपेत् तासु रेखासु वह्नि तारमनुस्मरन्। शुद्धं प्रदक्षिणानीत मनलं शुद्धपात्रगम्॥ १॥
प्राग्घोष्यद् देवताः स्मृत्वा होतातत्रात्मविश्रुतान्। तासामभिमुखत्वा स्वाभ्यात्मं निक्षिपेतच्छुचिं॥ २॥
आयुर्हरति होतुस्तु निक्षिप्तो ज्वलितोनलः। पुनर्नष्टश्च भूमिस्थो मुखेन च विबोधितः॥ ३॥
शुचित्व प्राप्तये प्रोक्ष्य काष्ठानग्नौ विनिक्षिपेत्। ज्वलयित्वानलं सम्यगन्वाधानं समाचरेत्॥ ४॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

ये सभी प्रमाण श्लोक है। इनमें प्रयोग के तात्विक विचार है। न कि प्रयोग। प्रणव का स्मरण करते हुए उन छः रेखाओं पर शुद्ध पात्र में स्थित अग्नि का प्रदक्षिणा क्रम से लाकर रखना चाहिये॥ १॥ फिर यज्ञ करने वाले कर्माङ्ग देवता नामक अग्नि का स्मरण कर अग्नि को अपने अभिमुख करके शुद्ध भाव से छोड़ना चाहिये। अग्नि को जब आगे करते हैं तब अग्नि का दाहिना भाग अपने बायें हाथ की ओर आता हैं इसके निवरण के लिए हाथ को (cross) कैंची जैसे करके दाहिने हाथ से दाहिना भाग एवं बायें हाथ से वामन भाग को पकड़ते हैं। २॥ प्रतिष्ठापित अग्नि अपने आप ही जले तो, या बुझ जाये तो, या मुँह

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

से फूँक मारकर जलाये तो ऋत्विज का आयु हरण होता है। अतः फूँक मारकार लजाये तो ऋत्विज का आयु हरण होता है। अतः फूकनी से जलाना चाहिये या हाथ को आगे कर हाथ पर से फूकनी से जलाना चाहिये या हाथ को आगे कर हाथ पर से फूँक सकते है। मुख की थूक अग्नि में नहीं पड़ना चाहिये॥ ३॥ शुचित्व प्राप्ति के लिए काष्ठों को प्रोक्षण कर अग्नि में डालना चाहिये। स्वयं ही जलाना चाहिये। अग्नि के जलने के बाद अन्वाधान करना चाहिये॥ ४॥

विज्ज्योतिषेति जानो वृषोग्निस्त्रिष्टुप् अग्नि ज्वलने विनियोगः।

ॐ विज्ज्योतिषा बृहता भात्यग्निराविर्विश्वानि कृणुते महित्वा।
प्रादेवीर्मायाः सहते दुरेवाः शिशीते शृंगेरक्षसे विनिक्षे। *(ऋग्वेद ५.२.६)*

इन मन्त्र से अग्नि ज्वलन करना चाहिये।

अग्निमूर्तिध्यान—चत्वारिश्रृंगागोतमो वामदेवोग्निस्त्रिष्ठुप्। अग्निमूर्ति ध्याने विनियोगः।

ॐ चत्वारि शृंगात्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्तासो अस्य। त्रिधाबद्धो वृषभोरोरवीति महोदेवो मर्त्याँआविवेश॥
सप्तहस्तश्चतुः शृंगः सप्तजिह्वो द्विशीर्षकः। त्रिपात्प्रसन्नवदनः सुखासीनः शुचिस्मितः॥
स्वाहांतुदक्षिणोपार्श्वे देवीं वामेस्वधां तथा। बिभ्रद्दक्षिण हस्तैस्तु शक्तिमन्नंस्त्रुचं स्त्रुवं॥
तोमरंव्यजनंवामैर्घृतपात्रं च धारयन्। मेषारूढो जटाबद्धो गौरवर्णो महौजसः।
धूम्रध्वजो लोहिताक्षः सप्तार्चिः सर्वकामदः॥ आत्माभिमुख मासीन एवं रूपो हुताशनः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-अग्निमुख प्रकरण)*

इन मन्त्रों को पढकर ध्यान करें। अग्ने अच्छावदेत्यस्य मन्त्रस्य अग्निस्तापसोग्निरनुष्टुप् अग्नि स्वाभिमुखीकरणे विनियोगः।

ॐ अग्ने अच्छावदेहनः प्रत्यङ्नः सुमना भव। प्रनोयच्छ विशस्पते धनदा असि नस्त्वम्॥ *(ऋग्वेद १०.१४१.१)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ एष हि देवः प्रदिशो नु सर्वाः पूर्वो हि जातस्य उ गर्भे अंतः।
स विजायमानस्य जनिष्यमाणः प्रत्यङ्मुखांस्तिष्ठति विश्वतोमुखः॥ *(यजुर्वेद-आरण्यक-महानारायणोपनिषत्)*

हे अग्ने शाण्डिल्यगोत्र मेषारूढ वैश्वानर प्राङ्मुखः सन् ममाभिमुखो वरदस्सुप्रसन्नो भव। इतना कहकर ध्यसान से सम्मुख करके अन्वाधान करें।

अन्वाधान—अन्वाधानाभिधं कर्म क्रियते सर्वकर्मसु। निमन्त्रणार्थं देवानां होतव्यानां च होतृभिः॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

सभी कर्मों में अन्वाधान कर्म करना चाहिये। ऋत्विज अपने यज्ञ में जिन-जिन देवताओं को आहुतियाँ देते हैं उन्हें पहले बुलाकर सूचित करना चाहिये। यह क्रिया अन्वाधान कहलाता है। आचम्य प्राणानायम्य देशकालौस्मृत्वा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थ एतत् कर्म करिष्ये। आचमन कर (यदि बीच में उठ के बार गये हो तो), प्राणायाम करके देशकालसंकीर्तन पूर्वक संकल्प लें। तत्र देवता परिग्रहार्थं अन्वाधानं करिष्ये। समित् द्वयं आदाय। (दो समितों को हाथ में लेकर) अस्मिन् अन्वाहितेग्नौ जातवेदसमग्निं इध्मेन प्रजापतिं प्रजापतिं चाघारदेवते आज्येन अग्नीषोमौचक्षुषी आज्येन। इन अग्नियों में जातवेदाग्नि को समित् से, आधार देवता प्रजापति एवं प्रजापति को घी से, चक्षुष् अग्नि सोम को घी से होम करना चाहिये। यह पूर्वाङ्ग है। सभी यज्ञों में इतना अन्वाधान होता है। आगे यज्ञों के अनुसार बदलता है।

जैसे सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ—अग्निं वायुं सूर्य प्रजापतिं च आज्यद्रव्येण प्रधान देवतां आदित्यं अधिदेवतामग्निं प्रत्यधिदेवतां रुद्रं अर्क समित् चर्वाज्य द्रव्यैः प्रधान देवतां सोमं अधिदेवतां अपः प्रत्यधिदेवतां गोरीं, पलाशसमित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां अंगारकं अधिदेवतां भूमिं, प्रत्यधिदेवतां स्कन्दं खदिरसमित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां बुधं, अधिदेवतां विष्णुं प्रत्यधिदेवतां पुरुषं अपामार्ग समित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां बृहस्पितिं, अधिदेवतां इन्द्रं, प्रत्यधिदेवतां, ब्रह्माणं पिप्पल समित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां शुक्रं, अधिदेवतां इन्द्राणीं प्रत्यधिदेवतां इन्द्रं, औदुम्बर समित् चर्वाज्यद्रव्यैः प्रधानदेवतां शनिं अधिदेवतां प्रजापतिं प्रत्यधिदेवतां यमं, शमीसमित् चर्वाज्यद्रव्यैः, प्रधान देवतां राहुं अधिदेवतां सर्पान् प्रत्यधिदेवतां मृत्युं, दूर्वा समित्

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां केतुं, अधिदेवतां ब्रह्माणं प्रत्यधिदेवतां चित्रगुप्तं कुशसमित् चर्वाज्य द्रव्यैः प्रधान देवताः अष्टाविंशति संख्यया अधिदेवताः प्रत्यधिदेवताः दशांशसंख्यया विनायकं दुर्गां क्षेत्रपालं वायुं आकाशं अश्विनौ क्रतु साद्गुण्य देवताः प्रधान विंशांश संख्यया इन्द्रं अग्निं यमं निर्ऋतिं वरुणं वायुं कुबेरं ईशानं एताः क्रतुसंरक्षणदेवताः प्रागुक्त समित् चर्वाज्यद्रव्यैः प्रधान विंशांश संख्याया अग्निं वायुं सूर्यं प्रजापतिं च आज्यद्रव्येण, रुद्र सर्वाद्भुत शान्ति होमे प्रधान देवतां सूर्यं अष्टोत्तर शतसंख्यया चरु द्रव्येण,सूर्यं रुद्रधिपतिं रविकिरणं ईश्वरं सर्वौत्पातशमनं अग्निं पृथिवीं महान्तं वायुमन्तरिक्षं महान्तं आदित्यं दिवं महान्तं प्रजापतिं चन्द्रमसं नक्षत्राणि दिशो महान्तं च एताः देवताः आज्य द्रव्येण एकैक संख्यया चरु शेषेणास्विष्टकृतमग्निं इध्मसन्नहनेन रुद्रं अयासमग्निं देवान् विष्णुं अग्निं, वायुं सूर्यं प्रजापतिं च एताः प्रायश्चित्त देवता आज्येन ज्ञाताज्ञात दोष निबर्हणार्थं त्रिवारमग्निं मरुतश्चाज्येन विश्वान् देवान् संस्त्रावेण एताः अङ्गदेवताः प्रधानदेवताः सर्वाः सन्निहिताः सन्तु एवं सांगोपाङ्गेन कर्मणा सद्यो यक्ष्ये।

॥ सर्वाद्भुत शान्ति याग का अन्वाधान समाप्त ॥

शेष यज्ञों के लिए अन्वाधान अन्त में लिखा जायेगा। समस्तव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिः प्रजापतिर्बृहती अन्वाधान समिद्धोमे विनियोगः। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा। प्रजापतय इदं न मम। इतना कहकर हाथ में रखे दो समित् को अग्नि में डालना चाहिये।

अन्वाधान का अर्थ—

१. अग्नि, वायु, सूर्य, प्रजापतियों को एक-एक घी की आहुतियाँ देने चाहिये। मन्त्रों को आगे प्रयोग में लिखा जायेग।
२. प्रधान देवता आदित्य को, अधिदेवता अग्नि को, प्रत्यधि देवता रुद्र को अर्क समित्, चरु एवं घी से आहुतियाँ।
३. प्रधान देवता चन्द्र को अधिदेवता जल, प्रत्यधिदेवता गौरी को पलाश समित्, चरु एवं घी से आहुतियाँ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४. प्रधान देवता अंगारक को, अधिदेवता भूमि को, प्रत्यधि देवता स्कन्द को खदिर समित् चरु एवं घी से आहुतियाँ।

५. प्रधान देवता बुध को, अधिदेवता विष्णु को, प्रत्यधि देवता पुरुष को अपामार्ग समित् चरु एवं घी से आहुतियाँ।

६. प्रधान देवता बृहस्पति को, अधिदेवता इन्द्र को प्रत्यधिदेवता ब्रह्मा को पिप्पल (अश्वत्थ) समित् चरु एवं घी से आहुतियाँ।

७. प्रधान देवता शुक्र को, अधिदेवता इन्द्राणी को, प्रत्यधिदेवता इन्द्र को औदुम्बर समित् चरु एवं घी से आहुतियाँ।

८. प्रधान देवता शनि को, अधिदेवता प्रजापति को, प्रत्यधिदेवता यम को शमी समित् चरु एवं घी से आहुतियाँ।

९. प्रधान देवता राहु को, अधिदेवता सर्पों को प्रत्यधि देतवा मृत्यु को दुर्वा समित् चरु एवं घी से आहुतियाँ,

१०. प्रधान देवता केतु को अधिदेवता ब्रह्मा को प्रत्यधि देवता चित्रगुप्त को कुश समित् चरु एवं घी से आहुतियाँ। प्रधान देवता को २८ आहुतियाँ, अधि देवता प्रत्यधिदेवताओं को उसके दशांश यानि ३-३ आहुतियाँ।

११. विनायक, दुर्गा, क्षेत्रपाल, वायु आकाश एवं अश्विनी देवताओं को जो कि यज्ञ को सद्गुण प्रधान करने वाले हैं उन्हें विंशांश संख्या (प्रधान का १/२० भाग अर्थात् २-२) समित् चरु आज्य की आहुतियाँ।

१२. इन्द्र अग्नि यम निर्ऋति वरुण वायु कुबेर (सोम) ईशान इन अष्टदिक्पालक जो कि यज्ञ के संरक्षक है उन्हें विंशांश संख्या (यानि प्रधान देवता का १/२० भाग अर्थात् २-२) समित् चरु आज्य की आहुतियाँ।

१३. अग्नि वायु सूर्य एवं प्रजापति को एक-एक घी की आहुतियाँ।

१४. सर्वाद्भुत शान्ति याग में प्रधान देवता रुद्र को १०८ आहुतियाँ चरु द्रव्य से,

१५. सूर्यं रूद्राधिपतिं , रविकिरणां, ईश्वर, सर्वोत्पात शमन, इन्हें नाम मन्त्र से एक-एक घी की आहुतियाँ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१६. अग्नि पृथिवी महान्त को, वायु अन्तरिक्ष एवं महान्त को आदित्य, द्यौ एवं महान्त को, प्रजापति, चन्द्रमस्, नक्षत्र दिशाऐं एवं महान्त को इन्हें आगे बताने वाले मन्त्रों से घी की १-१ आहुतियाँ।

१७. बचे हुए चरु से अल्प प्रमाण में-हमेशा देने वाले प्रमाण से कुछ अधिक ग्रास प्रमाण स्विष्टकृत् अग्नि को आहुति देवे।

१८. इध्म १५ समितों का एक समूह उसके बन्धन रस्सी को रुद्र को अहुति देवे। प्रायः इसे कुश से बाँधते है। ३६ कुश हो उन्हे चोटी जैसे गूँथना चाहिये वे १२ अंगुल प्रमाण हो।

इध्म—यज्ञे पञ्चदशेध्मानि तिथि रूपाणि होतृभिः। स्मर्तव्यानि प्रमाणेन चतुर्विंशांङ्गुलानि तु॥ *(आश्वलयन स्मृति)*

यज्ञ में १५ समिधों को जो कि २४ अङ्गुल लगभग १२ '' लम्बे हो उनका समूह इध्म कहलाता है। ये १५ तिथियों के प्रतीक है।

रज्जु—शक्तिर्वामकरे पुंसां वसतीन्दुस्वरूपिणी। शिवो वह्निमयश्चापि विप्राणां दक्षिणेकरे॥ १॥
शक्त्यैवतु दृढीकारः कृतानां कर्मणां भवेत्। सर्वेषामिति यत्तस्माद्रज्जुं तद्वत् समाचरेत्॥ २॥
दक्षोपरि करं वाम करं कृत्वा कृतैर्बुधः। रज्जुं करोति तावच्च तदालम्भ्यक्रियाञ्चरेत्॥ ३॥
उपरिस्थितमाविश्य शक्तिर्वसति शाश्वती। स्त्रियं वा पुरुषं वान्यं विजृंभत्यपि कर्मसु॥ ४॥
कलयामीति कालेन कालरूपानि संस्मरेत्। इध्मानि कर्म सिद्ध्यर्थं कालरूपमिदं जगत्॥ ५॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

मनुष्य के बायें हाथ में चन्द्रकलास्वरूपिणी शक्ति का आवास हैं, ब्राह्मणों के दाहिने हाथ में अग्निस्वरूप शिव वास करते हैं॥ १॥ किये गये कर्मों का दृढीकरण शक्ति से ही होता है। अतः उसी क्रम से रज्जु (रस्सी बनाना चाहिये)॥ २॥ इध्म शिप रूप, रज्जु शक्ति रूप अतः रज्जु आवश्यक है। दाहिने हाथ पर बायें हाथ रखकर रस्सी बनाना चाहिये। इसी से कर्म प्रारम्भ करना चाहिये॥ ३॥ इध्म को बाँधने वाली रज्जु हमेशा ऊपर रहती है। हमेशा शक्ति की

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ही प्रधानता है। उसी से सभी कर्म प्रकाशित होते हैं॥ ४॥ यह जगत् कालरुप है एवं शक्ति कालरूपी है। उनका स्मरण करते हुए कर्म सिद्धि के लिए इध्म एवं रज्जु का निर्माण करना चहिये॥ ५॥ प्रदेशमात्रं षट्त्रिंशत् दर्भान् त्रिसन्धि। रज्जु में १२ अंगुल लम्बे ३६ कुश लेना चाहिये। ३+३+३ को चोटी बाँधे फिर ३+३+३ जोड़कर चोटी बाँधे फिर ३+३+३ जोड़कर चोटी बाँधे तब रज्जु बना।

बर्हिष्—आज्य पात्र (घी के पात्र रखने के लिए आसन)

बर्हिषो बन्धनं पूर्वं मुष्टिमात्रस्य हि स्मृतम्। सर्वौषधि स्वरूपस्य देवानां सुप्रियस्य च॥ १॥
बहूनां संग्रहार्थाय बर्हिषो बन्धनं भवेत्। भूमौ निहितया रज्वा बन्धनं चोदगग्रया॥ २॥
भूमौ सन्निहितान्येव बध्यन्ते दाढ्यसिद्धये। भूमि जातानि सर्वाणि वस्तूनीह विचक्षणैः॥ ३॥
अथ प्रांचंनयेदग्रं रज्वाग्रन्थिमयं तथा। बर्हिर्द्विवारमावृत्या जलंस्पृष्ट्वोदृतं भुवः॥ ४॥
तथा सकृत् समाहृत्य ग्रन्थिं कृत्वेध्ममेव च। निधाय दक्षिणोवह्नेश्शुचावपउपस्मृशेत्॥ ५॥
दुर्गाहत्वाच्च सूक्ष्मत्वात् इध्म ग्रन्थिर्भवेदिह। कालरूपी मनुष्याणा मेकत्वात् सकृदाकृतिः॥ ६॥
ओषधीनां बहुत्वे तु बन्धनं स्यात् द्विरावृतिः। त्रिग्रन्थिः पारवश्यत्वात् शुद्धर्थं स्पर्शनंत्वपाम्॥ ७॥
द्विधा स्यात् बन्धनं तेषां पीडादोषापनुत्तये। अधः स्पृशेत् च रज्वग्रं अधोरेतोमयं नयेत्॥ ८॥
निर्वीर्यत्वं भवेत् तेषां समिधां छेदनादिह। बर्हिषां च तदावीर्यं संसजामीत्यधोनयेत्॥ ९॥
संग्रहः सर्ववस्तूनां दक्षिणो प्रविशिष्यते। तस्मात् संगृह्य निर्बध्य बह्नेः दक्षिणातः क्षिपेत्॥ १०॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

एक मुष्टि मात्र कुश को बर्हिष् के लिए रखना चाहिये। बर्हिष् सर्वौषधि स्वरूप है, यह देवताओं को प्रिय है॥ १॥ अनेक कर्मो के आधारभूत होने के

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कारण बर्हिष को बाँधकर रखना चाहिये। भूमि पर उत्तराभिमुख रखे रज्जु से बर्हिष को बाँधना चाहिये॥ २॥ भूमि पर जो भी वस्तुऐ उपलब्ध हैं उन्हें उपयोग के लिए एवं दृढता प्राप्ति के लिए बाँधकर संग्रह करने की परम्परा है॥ ३॥ बाँधने के बाद बंधा हुआ बर्हिष् का गाँठ वाला भाग पूर्वाभिमुख होना चाहिये। उसे हाथ में लेकर दोबारा घूमाकर बाँधना चाहिये। बाँधने के बाद हाथ धो ले। इस इसे बगल में रखें (दक्षिण में)॥ ४॥ उसी प्रकार इध्म को भी एक बार रज्जु से बाँधकर उसे अग्नि के दक्षिण में शुद्ध भूमि पर रखें। पुनः हाथ धो लें॥ ५॥ इसे पकडने में कठिन होने के कारण एवं इस की सूक्ष्मता के कारण इध्म को बाँधना आवश्क है। इध्म शिवरुप (कालरूप) होने के कारण एक बार ही इसे बाँधना चाहिये॥ ६॥ इध्म एवं औषध अधिक होने पर दो बार घूमाकर तीन गाँठ लगाकर बाँधकर रखना चाहिये। इसे भी बाँधने के बाद हाथ धे लेना चाहिये॥ ७॥ इध्यम एवं औषधियों को पीडा (नष्ट) न हो इसलिए दो प्रकार का बन्धन बताये हैं। रज्जु रेतस्वरूप होने के कारण भूमि पर उसका स्पर्श होना चाहिये॥ ८॥ काटने से समित् निर्विर्य थे, बर्हिषः भी निर्वीर्य थे, रज्जुबन्धन से उनमें वीर्यसञ्चार (शक्ति सञ्चार) होता है। इसलिए रज्जु का भूस्पर्श आवश्यक है॥ ९॥ सभी वस्तुओं का संग्रह दक्षिण दिशा में करना चाहिये। इसलिये सभी वस्तुओं को ठीक तरह से बाँधकर दक्षिण दिशा में रखना चाहिये॥ १०॥ यहाँ तक प्रमाण श्लोक है।

१९. अयसमग्नि को मन्त्रों से एक आहुति घी से प्रायश्चित्त देवता।

२०. देवान्, विष्णु, अग्नि, वायु, सूर्य, प्रजापति इन प्रायश्चित देवताओं को घी से १-१ आहुति देवें।

२१. जानते हुए या अनजाने में हुए दोष परिहार के लिए अग्नि को तीन आहुतियाँ, मरुत् को एक आहुति मन्त्रों से घी से आहुति देवें। शेष घी से विश्वेदेवताओं को एक आहुति देवें।

इस प्रकार अङ्गदेवता एवं प्रधान देवताऐं सभी पास में ही रहें। इस प्रकार अङ्ग उपाङ्ग सहित कर्म से याग करुँगा "मन में प्रतिज्ञा करना चाहिये। यह अन्वाधान देवताओं को यज्ञ से पहले निमन्त्रण देने जैसी प्रक्रिया है। ताकि अपने यज्ञ भागों को लेने के लिए वे उपस्थित रहें। इतना कहकर अन्वाधान

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

समित् जो कि हाथ में रहता है, अग्नि में डाल दें। यहाँ पर सर्वाद्भुत शान्ति याग का अन्वाधान समाप्त आगे इसका प्रयोग है।

परिसमूहन एवं पर्युक्षण विधान—

करेण तोयमादाय प्रागराभ्य प्रदक्षिणाम्। परितो मार्जनं यत् तत् आहुः परिसमूहनम्॥ १॥
होता पूर्वादिदिक्ष्वग्नेः आशाः आलभते त्रिशः। चतुःकृत्व स्पृशेत् चापः कुर्वन् परिसमूहनम्॥ २॥
आशादेव्यः स्थिता वह्नेर्बहिर्यज्ञस्य पालने। इति स्मृत्वा सुरेभ्यस्तु संमानार्थं त्रिशः स्पृशेत्॥ ३॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

हाथ में जल लेकर पूर्वदिशा से प्रारम्भ करके प्रदक्षिणाकार में चारों ओर मार्जन करने की क्रिया परिसमूहन कहलाता है॥ १॥ हवनकर्ता अग्नि से पूर्वादि दिशाओं में तीन बार जल युक्त हाथ से स्पर्श करना चाहिये, चार बार हाथ धो लेना चाहिये। यह परिसमूहन है॥ २॥ दिग्देवताऐं अग्नि के बाहर यज्ञ की रक्षा के लिए खड़े हैं समझकर उन देवताओं को गौरव देने के लिए तीन बार जलयुक्त हाथ से चारों ओर स्पर्श करना चाहिये॥ ३॥

परिसमुह्य परिस्तृणीयात्। तच्चेत्थम्।—उपरोक्त क्रम से परिसमूहन पर परिस्तरण डालना चाहिये। वह इस प्रकार है। अग्न्यायतनाद् अष्टांगुल परिमिते देशे ऐशानीं दिशं आरभ्य प्रदक्षिणं संमतात् सोदकेन पाणिना त्रिः परिमृज्य दशांगुलमिते देशे प्राच्यादिषु पूर्वं उपरिनिहितदर्भैः परिस्तृणीयात्।

स्थण्डिले होम वेदी के आठ अंगुल बाहर ईशान्य दिशा से प्रारम्भकर प्रदक्षिणा क्रम से चारों ओर जलयुक्त हाथ से तीन बार परिमार्जन करें। स्थण्डिले होमवेदी के दस अंगुली बाहर पूर्व से प्रारम्भकर सभी दिशाओं में कुशों को बिछाना चाहिये।

तत्र प्राच्यां प्रतीच्यां च उदगग्रादर्भाः अवाच्यामुदीच्यां च प्रागग्राः पूर्वपश्चिमपरिस्तरणमूलयोरुपरि दक्षिणपरिस्तरणं उत्तरपरिस्तरणंतु तदग्रयोरधस्तात्। पूर्व एवं पश्चिम दिशा में कुशाग्र (कुश का आगे का भाग) उत्तराभिमुख हो, दक्षिण एवं उत्तर दिशा में कुशाग्र पूर्वाभिमुख होना चाहिये। पूर्व एवं पश्चिम दिशा

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

की कुशों के (परिस्तरण) ऊपर दक्षिण का परिस्तरण, एवं पूर्व पश्चिम कुशों के परिस्तरण के नीचे उत्तर का परिस्तरण होना चाहिये। परिस्तरण कुशों के लिए कोई निश्चित संख्या नहीं हैं। अधिक उपलब्ध होने पर अधिक विछावे। कम होने पर चार-चार बिछायें। उतना ही न हो तो तीन-तीन बिछायें।

परिस्तृणात्यासनार्थं आशेशानां त्रिभिस्त्रिभिः। कुशैः प्रागादिदिक्ष्वत्र कृत्वा परिसमूहनम्॥ १॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

आशापालांस्तु शक्रादीनासनेषु समावहेत्। दिक्पालकों के आसन के लिए यह परिस्तरण बिछायें जाते हैं। एक-एक दिशा में तीन कुश डालना चाहिये। उन पर इन्द्रादि दिक्पालकों का आवाहन करना चाहिये।

ततो अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनार्थं उत्तरतश्च पात्रासादनार्थं कांश्चित्प्रागग्रान् दर्भानास्तृणीयात्। *(आश्वलायन स्मृति)*

इसके पश्चात् अग्नि के दक्षिण दिशा में ब्रह्मा के आसन के लिए एवं उत्तर में यज्ञपात्रों को रखने के लिए कुछ कुशाओं को पूर्वाभिमुख बिछाना चाहिये। अग्नेरैशानतस्त्रिरंभसापरिषिच्य उत्तरास्तीर्णेषु दर्भेषु दक्षिणासव्यपाणिभ्यां क्रमेण चरु स्थाली प्रोक्षण्यौ, दर्वी स्रुवौ, प्रणीताज्यपात्रे, इध्माबर्हिषी इति द्वे द्वे पात्रे उदगपवर्ग प्राक्संस्थंयुब्जान्या सादयेत्। अग्नि के चारों ओर फिर से तीन बार ईशान्य से प्रदक्षिणाकार में परिषेचन करें।

परिषेचन का प्रमाण श्लोक—नदीनां पुलिनत्वस्य संसिध्यै यज्ञकर्मणाम्। त्रिशः पर्युक्षणं होता करोत्यद्भिः प्रदक्षिणम्॥

जेसे नदियों को रोकने के लिए तट होता है, उसी प्रकार परिस्तरण भी तट है, जिससे यज्ञ कर्मो की सिद्धि होती है। उन परिस्तरण कुशों के ऊपर तीन बार परिषेचन करें। ईशान्य से ईशान्य प्रदक्षिणाकर में एक बार, पुनः दिशातिक्रमण न करते हुए फिर से दुबारा जल लेकर ईशान्य से ईशान्य तक, तीसरी बार भी ऐसा ही करें।

उत्तर में बिछे कुशाओं के ऊपर दाहिने एवं बायें हाथ से कर्तरि हाथ से (cross hand)

१. चरुथ्थाली एवं प्रोक्षणी पात्र २. दर्वी एवं स्रुवा ३. प्रणीता एवं आज्यपात्र ४. इध्म एवं बर्हिष् इन्हें एक-एक बार उठाकर रखना चाहिये।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

A B C D E F G H

यदि केवल घी का होम हो ता—१. प्रोक्षणी स्रुव, २. प्रणीता एवं आज्यपात्र, ३. इध्म एवं बर्हिष् को एक-एक बार उठाकर रखना याहिये। इन पात्रों को उत्तर दिशा में, पहले दो पात्र पश्चिम में, अगला उससे आगे पूर्व में इसी क्रम से रखना चाहिये। सभी पात्र उत्तर में ही रखें।

H G
F E
D C
B A

कृते पर्युक्षणे तीर्थदेशे पात्राणि सादयेत्। पात्राणां दोषनिर्हृत्यै सादनं यज्ञकर्मसु॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

पर्युक्षण के पश्चात् यज्ञ पात्रों के दोष परिहार के लिए तीर्थ देश में उत्तर दिशा में सोम ईशानयोर्मध्ये पात्रों को रखना चाहिये। पहले सभी को उलटा करके रखें।

स्थालीचरोः प्रोक्षणाभाजनं च दर्वीस्त्रुवौ सादयदर्विहोमे।
पात्रं प्रणीतार्थ मथाज्यपात्रं इध्मः क्रमेण क्रमवित् कुशैश्च॥

चरु होम में—चरुस्थाली, प्रोक्षणी पात्र, दर्वी स्रुव, प्रणीता आज्यपात्र इध्म एवं बर्हिष् को रखना चाहिये।

केवल घी के होम में—प्रोक्षणी स्त्रुवमासाद्य चमसं चाज्यभाजनम्। इध्मा बर्हिरयं प्रोक्तं आज्यहोमेष्वनुक्रमात्॥ *(स्मृति संग्रह)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

घी के होम में प्रोक्षणी सुवाप्रणीता (चमस) आज्य पात्र, इध्म एवं बर्हिष् को रखना चाहिये।

विवरण (पात्रों का)—चरु स्थाली-चावल (होम के लिए) बनाने वाला पात्र, **प्रोक्षण पात्र**-जल सेंचने का पात्र, **दर्वी पात्र**-चरु होम करने वाला कर्ची, **स्रुव**-घी होम करने वाला कर्ची (छोटा), **प्रणीता पात्र**-जल पात्र अन्त तक इसमें जल रहना चाहिये। इसका अन्त में प्रोक्षण में उपयोग होता है।, **आज्य पात्र**-घी रखने वाला बर्तन, **इध्म**-समित् का एक बण्डल, **बर्हिष्**-एक मुष्टि कुशका बण्डल

पात्रों के अभिमानी देवताएँ—आदित्यं स्यात् चरोः पात्रं वायव्या प्रोक्षणी मता। पार्थिवं तु जुहूपात्रं स्रुवमाग्नेयमुच्यते॥ १॥
वारुणं पूर्णपात्रं स्यात् पावमानं घृतस्य च। आग्नेयानीह चेक्ष्मानि सौम्या बर्हिष ईरिताः॥ २॥
अधोभागं समाश्रित्य स्थितानां सुरवैरिणाम्। कुर्यान् रिसनार्थाय न्यषमुखानि क्रमाद् भुवि॥ ३॥
त्रिभिरद्भिरधोभागं पात्राणां प्राक्ष्यहोमकृत्। कृत्वोन्मुखानि च तथा करोति निरसन्बलात्॥ ४॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

चरु पात्र के अभिमानी देवता आदित्य है, प्रोक्षणी पात्र के वायु, दर्वी को भूमि, स्रुवपात्र को अग्नि, प्रणीता पात्र को वरुण, आज्य पात्र को पवमान, इध्म को अग्नि एवं बर्हिष् को सोम अभिमानी देवताऐं हैं॥ १-२॥ पात्रों के नीचे वास करने वाले दैत्यों का निवारण के लिए पहले पात्रों को उलटा करके रखना चाहिये। फिर पात्रों के अधोभाग को तीन बार प्रोक्षण करना चाहिये ताकि वे वहाँ से चले जायें तब सीधा करके सभी पात्रों को रखना चाहिये॥ ३-४॥

यहाँ तक पात्र शोधन प्रक्रिया संपन्न हुआ

ततः प्रोक्षणीपात्रमुत्तानं कृत्वा तत्र अनन्तर्शर्भित साग्र समस्थूल प्रादेश मात्र कुशद्वयरूपे पवित्रे निधाय शुद्धाभिरद्भिः तत् पात्रं पूरयित्वा गंधपुष्पादि निक्षिप्य हस्तयोः अङ्गुष्ठोपकनिष्ठिकाभ्यां उत्तानाभ्यां पाणिभ्यां उदगग्रे पृथक् पवित्रे धृत्वा अपस्त्रिरुत्पूय सर्वाणि पात्राणि प्रोक्ष्य पात्राण्युत्तानानिकृत्वा इध्मं विसृस्य सर्वाणि पात्राणि त्रिः प्रोक्षेत्।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इसके पश्चात् प्रोक्षणीपात्र को सीधा करें। उसमें १२ अंङ्गुल प्रमाणवाले दो अग्रयुक्त (नोक) कुशों को जो कि समान आकार वाले हो उसका पवित्र उस पर रखें (अर्थात् दो कुश रखें)। शुद्ध जल से उस पात्र को भरना चाहिये। गन्ध पुष्प उसमें डालें। आकाश की ओर हथेली युक्त दोनों हाथों के अंङ्गुष्ठ एवं अनामिका अङ्गुलियों में कुशों को अलग-अलग रखकर प्रोक्षणीपात्र के जल को हिलाना चाहिये (शुद्धीकरण के लिए) ऐसे करते समय कुश का अग्र उत्तराभिमुख हो तीन बार इसे हिलाना चाहिये। इस जल से सभी पात्रों का एक बार प्रोक्षण करना चाहिये। फिर उन्हें सीधा करके रखें फिर सभी पात्रों को तीन बार प्रोक्षण करें।

प्रमाण श्लोक—पाक् प्रोक्षिणयां जलं स्त्राव्यं स्वाभ्यात्मं शुचिनाऽहृतम्। अन्तर्धाय पवित्रे द्वे प्रागग्रे तच्च शोधयेत्॥ १॥
द्वादशांगुलविस्तारे पवित्रे जल शुद्धये। भवेतां प्रोक्षणीपात्रे पात्रवत् संस्कृते पुरा॥ २॥
वारुणास्याभिमुख्यत्व सिद्धयेऽध्यात्ममिष्यते। जलस्य स्त्रवणो त्वापो वरुणाभिमुखे स्थिताः॥ ३॥
स पवित्रेण हस्तेण गृह्येत प्रोक्षणीजलं। अधोनीत्वा त्रिशस्तस्याः प्रोक्षयेत् जल शुद्धये॥ ४॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

पहले प्रोक्षणीपात्र में शुद्ध जल को अपने अभिमुख डालना चाहिये। दो कुशों को पूर्वाभिमुख रखकर उस पर से जल छोडें। वे दो कुश १२ अंगुल प्रमाण के होना चाहिये। अपने संमुख करके जल को डालना चाहिये। जल पात्र का मुख डालते हुए अपने ओर होना चाहिये ताकि वरुण देव अपने सामने हो। वरुण देव हमेशा पश्चिमाभिमुख रहते हैं। १-२-३॥ पवित्र को हाथ में लेकर बायें हाथ में प्रोक्षणी पात्र को लेकर तीन बार नीचे से ऊपर हाथ घुमाने से जल शुद्ध होता है। (प्रदक्षिणाकार-जल हाथ में लेवे) उसी पात्र के जल को लेकर घुमाकर फिर उसी में तीन बार छोडना चाहिये॥ १॥

तज्जलैः साधु संप्रोक्ष्यपात्राणयुक्तेन वर्त्मना। अन्तर्धाय पवित्रे द्वे पूर्णपात्रं प्रपूरयेत्॥ १॥
अमृन्मयं भवेद्यज्ञे पूर्णपात्रमिमि स्थितिः। अपार्थिवमकांस्यं चाप्यसीसं चाप्यनायसन्॥ २॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उस प्रोक्षणी पात्र के जल से सभी पात्रों का प्रोक्षण करना चाहिये। उन पवित्रों को पूर्ण पात्र में रखकर जल से भरना चाहिये॥ १॥

पूर्णपात्र—यह पात्र मिट्टी का, कांस्य का एवं लोहे का नहीं होना चाहिये, अर्थात् ताम्र, लकड़ी, चॉदी या सोने का हो सकता है। **पूर्ण पात्र-प्रणीता पात्र कहलाता है।** प्रोक्षणीपात्र से प्रोक्षण करने के बाद, पूर्ण पात्र में कुशों को पवित्र को रखकर उसमें भी जल भरना चाहिये।

ब्रह्मा का वरण (अग्निमुखाङ्ग)—ततो यथोक्त लक्षणं ईशानदिग् अवस्थितं ब्राह्मणं अस्मिन् (सर्वाद्भुत शान्ति याग) कर्मणि ब्रह्माणं त्वामहं वृणे इति तत् पाणिं पाणिना गृहीत्वा वृणुयात्। उसके पश्चात् श्रेष्ठ लक्षणों से युक्त ईशान दिशा में उपविष्ट ब्राह्मण को इस याग कर्म में आपको मैं ब्रह्मा के रूप में वरण करता हूँ। कहकर हाथ पकडकर वरण करें।

ततः ब्रह्मा वृतोस्मि। कर्म करिष्यामि इति उक्त्वा प्राङ्मुखो तीर्थदेशे यज्ञोपवीत्यचाम्य समस्य पाणयङ्गुष्ठो भूत्वा अग्नेणाग्निं दक्षिणपादपुरः सरं परीत्य दक्षिणतः उदङ्मुखः स्थित्वा आसनार्थ दर्भेषु दक्षिणभागस्थं एकं दर्भं अङ्गुष्टानामिकाभ्यां गृहीत्वा "**निरस्तः परावसुः**" "इति नैर्ऋत्यान् निरस्य, अपः स्पृष्ट्वा **इदमहम् अर्वावसोः सदने सीदामि**" इति उदङ्मुख एवं वामोरोरुपरि दक्षिणपादं संस्थाप्य उपविश्य यजमानेन गन्धाक्षतादिभिः अर्चितः सन् "ब्रह्मन् ब्रह्मासि नमस्ते ब्रह्मन् ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणमावाहयामि" यजमानेन आचार्येण वा आवाहितः।

इसके पश्चात् ब्रह्मा मुझे यह स्वीकार है। कहकर पूर्वाभिमुख बैठकर (उत्तर एवं ईशान्य के बीच में) ब्रह्मवस्त्र (उत्तरीय) डालकर, हाथ जोडकर (संकल्प लेते समय जैसे हाथ बंद करते हैं वैसे) अग्नि के आगे प्रदक्षिणाकार में दाहिने पॉव को आगे कर चलकर दक्षिण में उत्तराभिमुख खड़े होकर, अपने आसन के कुशों में दक्षिण की एक कुश को अङ्गुष्ठ एवं अनामिका अङ्गुलियों से खींचकर निरस्तः परावसुः" कहकर नैऋत्य दिशा में फेंकना चाहिये। फिर हाथ धोलें। "इदमहम् अर्वावसोः सदने सीदामि" मन्त्र कहकर उत्तराभिमुख ही बायें जॉघ पर दाहिने पैर को रखकर बैठना चाहिये। फिर यजमान "ब्रह्मन् मन्त्र कहकर गन्ध अक्षतों से ब्रह्मा का पूजन करें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐबृहस्पतिर्ब्रह्मा ब्रह्म सदन आशिष्यते बृहस्पते यज्ञं गोपाय सयज्ञंपाहि सयज्ञपतिं पाहि समांपाहीति जपित्वा सदा यज्ञ मना एव वर्तेत। इसे कहकर ब्रह्म निरन्तर यज्ञ में ही मन लगायें। यहाँ पर ब्रह्मा का वरणादि कार्य संपन्न हुआ।

प्रमाण श्लोक—**प्रपूर्य पूर्णपात्रं च ब्रह्माणमुपवेशयेत्। दक्षिणोग्नेः शुभे पीठे सदृशे धर्मवित्तमम्॥ १॥**
श्रेष्ठा दिक् दक्षिणा प्रोक्ता श्रेष्ठा श्रेष्ठो ब्रह्मा प्रजापतिः॥ २॥
श्रेष्ठायां दक्षिणाशायां प्राकपूर्वोपरयोरपि। परिस्तरणयोरूर्ध्वं वृणीत्वैव तु दक्षिणा॥ ३॥
सर्वेषां पश्चिमत्वात्तु उदीच्यायास्तु पश्चिमम्। परिस्तृणात्यधस्ताच्च परिस्तरणमुत्तरम्॥ ४॥
सर्वकर्म विशेषज्ञो ब्रह्मत्वे ब्राह्मणो भवेत्। न्यूनातिरिक्तभावस्य साक्षित्वे चापि कर्मणः॥ ५॥
अकर्मतन्त्रविन्मूढो ब्रह्मत्वे स्याद्यदिद्विजः क्षयिष्यति हि तत् कर्म वैदिकं नात्र संशयः॥ ६॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

ब्रह्मत्वे ब्राह्मणस्तस्मात् होतुरभ्यधिको भवेत्। कर्म कारण वित् शुद्धः शान्तः कर्मसु लोलुपः॥ १॥ उपरोक्त श्लोकों में ब्रह्मा के स्थान पर बैठने वाले ब्राह्मण की श्रेष्ठता, योग्यता एवं दक्षिण दिशा की प्रधानता का वर्णन है। ततो यजमानः प्रणीतापात्रमग्नेः प्रत्यङ्निधाय तत्र प्रागग्रे पवित्रे निधायोत्पूताभिरद्भिस्तत्पात्रं पूरयित्वा गन्धपुष्पाक्षतान्निक्षिप्य सरस्वतीमावाह्य ॐब्रह्मन्नपः प्रणेष्यामीति पृच्छेत्।

इसके बाद यजमान (आचार्य) प्रणीतापात्रको अग्नि के पश्चिम में रखें, उसके ऊपर पवित्र को रखें, उस में शुद्ध जल को भरें। उसे गन्धपुष्प अक्षताओं से पूजन कर सरस्वती का आवाहन करें एवं "ॐब्रह्मन्नपः प्रणेष्यामि" कहकर जल लेने की अनुमति मांगना चाहिये।

ततो ब्रह्मा उपांशुभूर्भुवः स्वः बृहस्पति प्रसूतः। उच्चैः ॐप्रणय ईत्यनुजानीयात्। कर्ता पूर्णपात्रं मुखसममुद्धृत्य अग्नेरुत्तरतो दर्भेषु निधाय ते पवित्रे गृहीत्वा अन्यैः दर्भैः आच्छादयेत्।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तब ब्रह्मा जी कहते हैं—ॐ भूर्भुवस्वः बृहस्पति प्रसूतः'' इसे उपांशु स्वर में धीरे से कहकर ॐ प्रणाय इसे जोर से अनुमति प्रदान करना चाहिये। तब आचार्य प्रणीतापात्र को नाक के बराबर ऊँचाई तक लाकर उसे उत्तर में कुशों पर रखें। प्रणीता पात्र के ऊपर रखें कुश लेकर उसके स्थान पर दूसरे कुशों को रखना चाहिये।

प्रमाण श्लोक—ब्रह्माणमुपवेश्यैवं करंगृह्य निमन्त्र्यतु। आदरार्थं प्रणीतां तु तीर्थदेशे निधापयेत्॥ १॥
वामपाणौ तु तत् कृत्वा दक्षिणेन पिधायतु। नासिकामात्रमुद्धृत्य कुशोपरि निधापयेत्॥ २॥
सौम्यं पात्रं तु तत् स्मृत्वा जलमाग्नेयमुत्तमम्। सौम्याग्नेयस्वरूपाभ्यां पाणिभ्यां तत्समुद्धरेत्॥ ३॥
प्राणस्थानं भवेद् घ्राणं प्राग् तत् प्राणं विना कृतम्। प्राणस्य सन्निधानार्थं मुद्धरत्येव तत्समम्॥ ४॥
प्रदायालोकयित्वा तु गतप्राणैर्विनाकृतम्। ततस्तत्पात्र मुद्धृत्य तदुक्तविधिनार्पयेत्॥ ५॥
गन्धपुष्पाक्षतैः सम्यगावहेच्चसरस्वतीम्। तीर्थदेशस्य सिद्धयै च ब्रह्मणश्चापि तृप्तये॥ ६॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

ब्रह्मा का हाथ पकड़कर वरण देकर उन्हें बैठाऐं प्रणीतापात्र को आदरपूर्वक उत्तर दिशा में रखना चाहियें॥ १॥ बायें हाथ में प्रणीतापात्र को पकडें। दाहिने हाथ से ढकें। एवं नाम के बराबर रखकर फिर उसे नीचे कुशाओं पर रखना चाहिये॥ २॥ प्रणीता पात्र सोम देवात्मक एवं उसमें विद्यमान जल अग्नि देवता, बायें हाथ सोम देवात्मक एवं दाहिने हाथ अग्निदेवतात्मक अतः सोम एवं अग्नि देवात्मक हाथों से उसे उठाना चाहिये॥ ३॥ उसे नाम तक उठाना चाहिये क्योंकि नाक प्राणस्थान है। उस जल में प्राण नहीं है। अतः जल में प्राण का सञ्चार हो इसलिए नाम के बराबर रखना चाहिये॥ ४॥ उसे नाक के बराबर लाकर पात्र को दोखना चाहिये। नाक के बराबर न ले जाने पर उस जल में प्राण नहीं रहता। अतः निरर्थक हो जाता है॥ ५॥ तीर्थ देश उत्तर दिशा की सिद्धि के लिए एवं ब्रह्मा जी की तृप्ति के लिए गन्ध पुष्प एवं अक्षताओं से सरस्वती को आवाहन करना चाहिये॥ ६॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ते पवित्रे चरुपात्रे निधाय यज्ञस्य प्रधान देवता मन्त्रेण प्रोक्ष्य अग्नौ अधिश्रितय उत्तरे निधाय तत् पवित्रं गृहीत्वा।

प्रणीता पात्र से निकाले हुए पवित्र को चरुपात्र के ऊपर रखकर **यज्ञ के प्रधान देवता मन्त्र से पोक्षण कर अग्नि के ऊपर दिखाकर** उत्तर में रखना चाहिये। फिर उस पवित्र को लेकर,

ततस्ते पवित्रे आज्यपात्रे निधाय तत् पात्रं स्वपुरतः संस्थाप्य तस्मिन् आज्यमासिच्य अग्नेरुत्तरतः स्थितांगारान् भस्मना सह अग्ने रुदक् परिस्तरणात् बहिः निरुह्य तेषु आज्यपात्रम् अधिश्रित्य ज्वलता दर्भोल्मुकेन अवज्वल्य अङ्गुष्ठ पर्व मात्रं प्रक्षालितं दर्भाग्र द्वयं आज्ये प्रक्षिप्य पुनः ज्वलता तेनैव दर्भोल्मुकेन चरुणा सह आज्यंत्रिः पर्यग्निकृत्वा तदुल्मुकमपास्य अपः स्पृष्ट्वा तत्रस्थ मेवाज्यं। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

चरु पात्र से निकाले हुए पवित्र को आज्यपात्र पर रखें। उस पात्र को अपने सामने रखें। उस में घी डालें। अग्नि के उत्तरपरिस्तरण के बाहर रखें। उस पर घी का पात्र रखें एक कुश को जलते हुए उस पर रखें। एक अंगुल प्रमाण धुले हुए दो कुशाग्रों को घी के पात्र में डालें। जलते हुए कुश से चरु पात्र एवं आज्यपात्र को तीन बार प्रदक्षिण करायें फिर उसे वायव्य दिशा में डाल दें। हाथ धो लें। घी के पात्र को खीचते हुए उसे और भी उत्तर में ले जाना चाहिये। अंगारों को वापस होम वेदी में डालें। हाथ धो लें। उस घी को मन्त्रों से उत्पवन करना चाहिये।

उत्पवनं नाम शुद्धीकरणम्। शुद्धीकरण क्रिया को उत्पवन कहते हैं। सवितुष्ट्वाहिरण्यस्तूपः सवितापुर उष्णिक्। आज्यस्योत्पवने विनियोगः।

ॐ सवितुष्ट्वाप्रसवउत्पुनाच्छिद्रेण पवित्रेण वसोः सूर्यस्य रश्मिभिः॥ *(यजुर्वेद)*

इति मन्त्रेण एकश्रुत्या उच्चारितेन एकवारं द्विस्तूष्णीं उत्तानपाणिद्वय अङ्गुष्ठ उपकनिष्ठिकाभ्यां उंतयोरससृष्ट गृहीताभ्यां उत्तानपाणिद्वय अङ्गुष्ठ उपकनिष्ठिकाभ्यां अंतयोरससृष्ट गृहीताभ्यां उदगग्राभ्यां पवित्राभ्यां प्रागुत्पूय

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ते पवित्रे अद्भिः प्रोक्ष्य अग्नौ प्रहरेत्। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इस एक स्वरी मन्त्र को कहते हुए एक बार हथेलियों को उपर किये दोनों हाथों के अंगुष्ठ एवं अनामिका अंगुलियों में पवित्र के दो कुशों को अलग-अलग (परस्पर न मिलें) ऐसे पकड़ना चाहिये। उनका अग्रभाग उत्तर की ओर होना चाहिये। पहले उन्हें पश्चिम से पूर्व की ओर घी में जाकर ऊपर उठायें। फिर दो बाद इसी क्रिया को बिना मन्त्र कहते हुए दोहरायें। फिर उन पवित्र कुशों को जल में प्रोक्षण कर अग्नि में डालना चाहिये।

प्रोक्षणा-उत्तानेन तु हस्तेन कर्तव्यं प्रोक्षणं भवेत्। *(आश्वलायन स्मृति)*

हथेली में जल लेकर उसे सींचना प्रोक्षण कहलाता है।

अवोक्षणं-अवाचीनेन हस्तेन कर्तव्यं स्यादवोक्षणम्॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

जल लेकर हथेली को नीचे करके जल सींचना अवोक्षण कहलता है।

अभ्युक्षण-मुष्टीकृतेन हस्तेन कृतमभ्युक्षणं भवेत्। *(आश्वलायन स्मृति)*

मुट्ठी में जल भरकर हथेली को नीचे करके जल सीचना अभ्युक्षण कहलाता है।

पर्युक्षणं-तिर्यग्भूतेनहस्तेनकृतंपर्युक्षणं तथा। *(आश्वलायन स्मृति)*

हाथ को तिरचा करके चारों ओर सींचना पर्युक्षण कहलाता है। अथाग्नेः पश्चात् परिस्तरणाद् बहिः आत्मनो अग्रतो भूमिं प्रोक्ष्य तत्र बर्हिः सन्नहनीं रज्जुं उदगग्रां प्रसार्य तस्यां बर्हिः प्रागग्रमुदगपवर्ग अविरलं आस्तीर्य तस्मिन् आज्यपात्रं निधाय स्रुवादि संमार्जयेत्।

उसके पश्चात् अग्नि के पश्चिम में परिस्तरण के बाहर अपने आगे भूमि की प्रोक्षण कर वहाँ बर्हिष् को बाँधी-हुई रज्जु (रस्सी) को उत्तराभिमुख खोलकर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रखें। उस बर्हिष् को बाँधी-हुई रज्जु रस्सी को उत्तराभिमुख खोलकर रखें। उस बर्हिष को पूर्वाग्र रखते हुए उत्तर की ओर मोटे-बिछाना चाहिये। (बीच में जगह खाली न रहना चाहिये।) फिर उस बर्हिष पर घी का पात्र रखें।

इसके बाद स्रुवादियों का संस्कार करना चाहिये--**दक्षिणेन हस्तेन स्रुक् स्रुवो गृहीत्वा सव्येन कांश्चिद्दर्भानादाय सहैवाग्नौ प्रताप्य स्रुचं निधाय स्रुवं वामहस्तेगृहीत्वा दक्षिणाहस्तेन स्रुवस्य बिलं दर्भाग्रैः प्रादक्षिण्येन प्रागादि प्रागपवर्गं त्रिः संमृज्य अधस्ताद्दर्भाग्रैः एव अभ्यात्मं बिलपृष्ठं त्रिः संगृज्य ततो दर्भाणां मूलैः दंडस्याधस्ताद् बिलपृष्ठादारभ्य यावदुपरिष्टाद् बिलं तावत् त्रिः संमृज्य अद्भिः प्रोक्ष्य स्रुव निष्टप्याज्य स्थाल्या उत्तरतः स्रुगसंसृष्टं निधाय उदकं स्पृष्ट्वा तैरेव दर्भैः जुहूं च एव मेव संमृज्यद्युत्तरतोश्रुवाधुन्तरो निधाय दर्भानद्भिः क्षालयित्वा अग्नौ अनु प्रहरेत्।** *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

दाहिने हाथ में स्रुक स्रुवो को पकडकर, बाये हाथ में कुछ कुशों को लेकर, दोनों को अग्नि में थोड़ा से गरमायें, स्रुक् को नीचे रखें। स्रुव को बायें हा में लवें, एवं कुशों को दाहिने हाथ में लेवें। कुशाग्र से स्रुवा के जो बिल (खड्डा) है उसे पूर्व से प्रदक्षिणाकार में तीन बार घुमाकर स्वच्छ करें। स्रुव को अपने ओर कर स्रुव के निचले भाग को भी तीन बार कुशाग्र से स्वच्छ करें। इसके पश्चात् कुश के निचले भाग से स्रुव के पीछे बिलपृष्ठ से (गड्डे से) अगले भाग (बिल) तक तीन बार घूमाकर स्वच्छ करना चाहिये। जल से प्रोक्षण करें। आत्यस्थाली के उत्तर में स्पर्श न हो ऐसे रखें। फिर पानी से हाथ धो लें। फिर उन्हीं कुशों को दाहिने हाथ में लेवें। बाये हाथ में स्रुक को लें।

कुशाग्र से सुक् के जो बिल (गड्डा) है उसे पूर्व से प्रदक्षिणा कार में तीन बार घुमाकर स्वच्छ करें। स्रुक् को अपने ओर कर स्रुक् के निचले भाग को भी तीन बार कुशाग्र से स्वच्छ करें। इसके पश्चात् कुश के निचले भाग से स्रुक के पीछे बिलपृष्ठ से (गड्डे) अगले भाग (बिल) तक तीन बार घुमाकर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्वच्छ करना चाहिये। जल से प्रोक्षण करें। आज्यस्थाली के उत्तर में रखे स्रुवा के उत्तर में स्रुक को रखें। फिर उन कुशों को जल से धोकर अग्नि में डाल दें।

यहाँ पर स्रुव एवं स्रुक् का संस्कार पूर्ण हुआ।

चरु शुद्धि—ततः सुश्रुतं स्रुव गृहीतेनाज्येन अभिघार्य उदगुद्वास्य अगन्याज्ययोर्मध्येन नीत्वा आज्यात् दक्षिणतो बर्हिषि सोत्तरमासाद्य पुनरप्यभिधार्य नवाभिधार्य (परिधीन् ऊर्ध्व समिधौ अग्नौ निधाय।) पक्व चरु पात्र में स्थित चरु को घी से अभिघार्य (सिञ्चन) करके उत्तर में रखना चाहिये। अग्नि एवं घी पात्र के बीच में इसे लाना चाहिये। आज्यपात्र के दक्षिण में बर्हिष् पर इसे रखकर घी से अभिघार करना चाहिये। न करने पर भी कोई बाधा नहीं है। (परिधि को तीन ओर रखकर ऊर्ध्व समित् को अग्नि में डालकर।)

प्रमाण श्लोक—रक्षार्थं तन्मुखे दर्भान् निधाय प्राक्स्थिते कृते। पवित्रे चरुपात्रस्थे करोति सुविचक्षणाः॥ १॥
निमन्त्रितानां देवानां प्रागिध्माधानकर्मणि। निर्वापस्तु बहिष्ठानादन्तराह्वानवद्भवेत्॥ २॥
विसृम्भणार्थकं तेषां भीतानामात्मवैरतः। अन्तर्धाय पवित्रेतु चरोः पात्रे तु निर्वपेत्॥ ३॥
व्रीहीन्वा तण्डुलान् वाथ पाकयज्ञेषु मन्त्रकृत्। चतुरश्चतुरो मुष्टीन् निर्वपेत् प्रतिदेवताः॥ ४॥
एका तद्देवतानां स्यात् तत्पत्नीनां परा भवेत्। तत् पुत्राणां भवेदेका तद् भृत्यानां तथा परा॥ ५॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

रक्षा के लिए प्रणीता पात्र के ऊपर जो सम्मुख हो उस पर रखें पवित्र को उठाकर चरु पात्र के ऊपर रखें॥ १॥ इध्माधान (समित् के कट्टा को देने से) पहले आवाहन किये गये देवताओं को अन्वाधान में पवित्र रखकर निर्वाप करना चाहिये। बाहर आये देवताओं को अन्दर बुलाना चाहिये॥ २॥ अपने शत्रु दैत्यों से भत देवताओं के विश्वास के लिए चरुपात्र में पवित्र रखकर निर्वाप करना चाहिये। दैत्य पवित्र से डरते हैं एवं कुशों के पास नहीं आते हैं॥ ३॥ चरु यज्ञ में धान या चावल को चार-चार मुष्टि प्रति देवता के हिसाब से डालना चाहिये। (अल्प प्रमाण में होने पर यह विधि है। अधिक प्रमाण में होने

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पर यह आवश्यक नहीं है) ॥ ४ ॥ एक मुष्टि देवता के लिए, एक उनकी पत्नी के लिए, एक पुत्रों के लिए एवं एक एक सेवकों के लिए मिलाकर चार मुष्टि होती हैं ॥ ५ ॥

चरु पात्र प्रोक्षण प्रमाण श्लोक—**शुद्ध्यर्थं प्रोक्षयेत् तद्वत् प्राग् प्रणीतास्थितैर्जलैः। पूर्ववत् सपवित्रेण दक्षिणेन करेण तु ॥ १ ॥**
चतुर्वारं निर्मिजति तण्डुलान् पात्रगान् शुभान्। स्राव्यपात्रे तु तत्पात्रमग्नौ चर्वां निधापयेत् ॥ २ ॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

तण्डुल (चावल) शुद्धि के लिए प्रणीता जल से दाहिने हाथ में पवित्र रखकर चार बार प्रोक्षण करना चाहिये। चार बार धोना चाहिये ॥ १ ॥ चरुपात्र में स्थित चावलों को पानी मिलाकर पकने के लिए रखना चाहिये ॥ २ ॥

प्रदेशमात्रमुदित मेक्षणं यज्ञियं भवेत्। रक्षार्थं पाकसिद्ध्यै च चरोः पात्रे निधापयेत् ॥ ३ ॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

१२ अंगुल लम्बे यज्ञीय वृक्ष के एक समित् (उदा.) पीपल को पाक सिद्धि एवं रक्षण के लिए चरुपात्र के ऊपर रखना चाहिये ॥ ३ ॥

जलं तत् पूर्णपात्रस्थं तीर्थोदत्वात् चरौ क्षिपेत्। यज्ञीयेन पवित्रेण स्रुगादिभ्यः परेण तत् ॥ ४ ॥
प्रमाण लक्षणैर्युक्तं स्रुव ताम्रदिभिस्तु यत्। यदि यज्ञीय वृक्षाणां पर्णानि स्युः स्रुगादिषु ॥ ५ ॥
चत्वारः क्षीरिणो वृक्षाः द्वौ पलाशौ विकंकतः। खदिरश्च शमी बिल्वौ यज्ञीयास्तरवः स्मृताः ॥ ६ ॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

पूर्ण पात्र में विद्यमान जल तीर्थ स्वरूप होने के कारण चरु में उसी को डालें। यज्ञीय वृक्षों से स्रुक् अदियों को बनाना चाहिये या ताम्र से भी बना सकते हैं। यज्ञीय वृक्षों के पत्ते से भी स्रुक् स्रुवादि बना सकते हैं ॥ ४-५ ॥ दो प्रकार के पलाश, विकंकत, खदिर, शमी एवं बेल (बिल्व) ये यज्ञीय वृक्ष कहलाते हैं। इनमें दूध नहीं होते है। दूध युक्त-पीपल, वट, औदुम्बर, वट का एक भेद प्लक्ष ये चार दूध युक्त यज्ञीय वृक्ष है ॥ ६ ॥ **इन यज्ञीय वृक्षों के पात्र श्रेष्ठ माने जाते हैं।**

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शस्तानीमानि पात्राणि चैतेषां यज्ञ कर्मसु। अश्वत्थोदुम्बरौ श्रेष्ठौ पात्राणां ग्रहणे मतौ॥ ७॥
ऐतेषां च पलाशौ द्वौ खदिरश्चापि शस्यते। शमी चौदुम्बरश्चापि पूर्वालाभे तु शस्यते॥ ८॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

यज्ञीय पात्र निर्माण के लिए अश्वत्थ एवं औदुम्बर की लकड़ी श्रेष्ठ है, दो प्रकार पलाश एवं खदिर भी ठीक है। इनके न मिलने पर शमी एवं औदुम्बर भी ठीक है।

यस्माच्चरुरसंपातात् न बहिः स्यन्दितुं व्रजेत्। स्यन्दने त्वपि संप्रीतिर्नदेवानां भविष्यति॥ ९॥
यदि विष्यन्दते कुर्यात् निष्कृतिं यान्ति ते मुदं। तस्य होमस्य चाद्यन्ते घृतैः स्कन्नाय मन्त्रवत्॥ १०॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

चरु को पकाते समय उबलकर बाहर आकर अग्नि पर नहीं पड़ना चाहिये। गिरने से देवताओं को सन्तोष नहीं होता है। प्रायश्चित्त करने से प्रसन्न होते है। प्रधान आहुति से पहले एवं अन्त में घी की आहुतियाँ देना चाहिये। यदि हुआ तो दो बाद घी की आहुति दे देवें॥ ९-१०॥ यह स्कन्नाहुति कहलाता है।

घी के पात्र के संस्कार का प्रमाण श्लोक—

शन्ते सशब्दे हविषि घृतं गोर्वस्त्र गाळितम्। संस्त्रावयेदाज्यपात्रे सपवित्रे पुरस्थिते॥ १॥
अग्नेः प्रागुत्तरे भागे सांगारं भस्म तत् पृथक्। विभज्य तस्मिन्नंगारे घृतपात्रं विनिक्षिपेत्॥ २॥
पृथक् पाकतव संसिध्यै हविषोऽस्य घृतस्य च। तदग्निना तत् क्रियते त्वशांतत्वाय भस्मवत्॥ ३॥
ज्वालामदृष्ट्वा पक्वस्य पाकस्यार्थोर्ध्वगामिनीं। हविषा नातितृप्तिः स्यात् देवानां होमकर्मणि॥ ४॥
तस्माच्च रक्षासां हत्यै तत्स्थानां च यदृच्छया। होता प्रज्वाल्य दर्भाग्र माज्यस्यैव प्रदर्शयेत्॥ ५॥
हतानां आज्य संस्थानां दर्भाग्राग्नेः प्रभावतः। शुद्धते स्वर्शनादग्रे घृते क्षिपति दर्भयोः॥ ६॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चरु बनने के बाद, गाय के घी को वस्त्र से शोधर करना चाहिये, उस घी को पूर्वाग्र कुशा के ऊपर अपने सम्मुख घी के पात्र में डालें॥ १॥ होमाग्नि के ईशान भाग में भस्म सहित अंगारो को अलग करना चाहिये। उस पर घी के पात्र को रखना चाहिये॥ २॥ हविस् एवं घी अलग होना चाहिये। चरु निर्माण समय में अग्नि ज्वालाये दिखना चाहियें, न दिखने पर देवता प्रसन्न नहीं होत हैं। अथात् धुऐं में नहीं गरम करना चाहिये॥ ४॥ वहाँ विद्यमान राक्षसों के नाश के लिए कुशाग्नि को घी को दिखाना चाहिये॥ ५॥ कुशाग्र कि अग्नि के प्रभाव से नाश हुए राक्षसों के संपर्क से अशुचि घी को पवित्र करने के लिए दो कुशाग्रो को घी में डालना चाहिये॥ ६॥

पर्यग्निकरण प्रमाण श्लोक—दैत्या हविर्मुखा नाम तदाऽऽयास्यन्ति साहसात्। तेषां निरसनार्थाय पर्यग्निकरणं त्रिशः॥ ७॥
सपवित्रं घृतं तीर्थे समुद्वपति तद् बहिः। तदग्निमग्नौ प्रागेतमेकीकुर्यात् सभस्मना॥ ८॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

हविर्मुख नामक दैत्य साहस से वहाँ आते हैं। उनके निराकरण के लिए तीन बार पर्यग्निकरण (कुशाग्नि) करना चाहिये॥ ७॥ पवित्र समेत घी के पात्र को तीर्थ देश में रखना चाहिये। भस्मसहित अंगारों को अग्नि में मिलाना चाहिये॥ ८॥

घी के उत्पवन (शुद्धिकरण) के प्रमाण श्लोक—

रक्षोहाग्नेस्तु शुद्धयर्थं स्पर्शनात् संस्पृशेदपः। तत उत्पवनं कार्यं घृतस्य प्रत्यगुत्तरे॥ १॥
अमेध्य भक्षणान्नित्यं गवामाज्येषु यद्भवेत्। तद्दोषपरिहारार्थं सम्यगुत्पवनं चरेत्॥ २॥
आविशान्त्यपि तावच्च पुनर्दैत्या घृतं स्थितं। क्रूरा यज्ञप्रहर्तारश्चैतास्तेन विनिर्णुदेत्॥ ३॥
सुधाहारा सुराः सर्वे सुधातृप्त्यै घृतस्ययत्। सवितुष्ट्वेति मन्त्रेण त्रिरुत्पवनमिष्यते॥ ४॥
दर्भाभ्यामुदगग्राभ्यां प्राग्वीर्यं विसृजन्निव। साङ्गुष्ठोपकनिष्ठाभ्यां शनैरुत्पवनं चरेत्॥ ५॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

असंस्पृष्टे यथान्योन्यं तथा ग्राह्ये पवित्रके। तयोर्मध्यात् सुधायास्तु मथनादिव संभवः॥ ६॥
अपृथक् संगृहीताभ्यां ताभ्यां प्राक् प्रोक्षणी जलं ग उत्पुनाति विशुद्ध्यर्थं वीर्योत्सिक्ता भवन्ति हि॥ ७॥
तेऽग्रावनुप्रहरति पवित्रे प्रोक्ष्य वारिणा। मथनत्वात् शुचेः शुद्ध्यै दद्यात् चापउपस्पृशेत्॥ ८॥
पृथिव्या अपि ते धर्तुमशक्यत्वात् पवित्रके। अग्नौ क्षिपति ते होता प्रागग्रे तु प्रभावतः॥ ९॥
ततो बर्हिस्समाधाय रज्जुं विसृस्य चात्मनः। पुरतः पश्चिमे भागे तूदगग्रांस्तृणात्यधः॥ १०॥
तेषु बर्हिरुदक्संस्थं प्रागग्रं विकिरेत् ततः। बर्हिष्युत्तरतः पात्रमाज्यस्यापि विनिक्षिपेत्॥ ११॥
अदन्त्येवौघशीर्गावो गव्यस्य च घृतस्य च। एकत्वात् बर्हिषस्तस्मिन् नाज्यपात्रं विनिक्षिपेत्॥ १२॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

राक्षसों से ग्रस्त अग्नि कि शुद्धि के लिए जल को स्पर्श करना चाहिये। अनन्तर नैऋतय में घी का उत्पवन करना चाहिये (शुद्धीकरण)॥ १॥ गायें प्रतिदिन अनेक खाने के अयोग्य वस्तुओं को खाते है। इस दोष परिहार के लिए घी सही तरीखे से उत्पवन (शुद्धीकरण) करना चाहिये॥ २॥ दैत्य पुनः पुनः घी में प्रवेश करते हैं, ये यज्ञ को नाशकरने वाले है एवं क्रूर है इसलिए इनको दूर करना चाहिये॥ ३॥ देवता अमृत पीने वाले है, अमृत पीने के बाद तृप्ति के लिए घी पीते हैं। इस घी को अमृत बनाने के लिए "सवितुष्ट्वा" इस मन्त्र से तीन बार उत्पवन करना चाहिये॥ ४॥ उत्तर की ओर अग्रवाले पवित्र (दो कुशों को) अंगुष्ठ एवं अनामिका अंगुलियों में परस्पर अलग पकडकर पूर्वाभिमुख उन कुशाओं से घी में उत्पवन करना चाहिये। घी में शक्ति सञ्चार की कल्पना करनी चाहिये। उनके बीच में मंथन से ऋदो कुशों से घी को हिलाने से अमृत की उत्पत्ति होती है॥ ५-६॥ प्रोक्षणी जल भी इसी प्रकार पवित्र किया गया है। इस प्रक्रिया से शुद्ध होकर वीर्यवान् बनते हैं॥ ७॥ जल से प्रोक्षणकर उन कुशों को (पवित्र) अग्नि में डालना चाहिये। मंथन करने से जो अशुद्धि हुई उसका परिहार के लिए जल से हाथ धा लें॥ ८॥ इतना अधिक पवित्र (शुद्धीकरण) कार्य करने वाले उन कुशों को (पवित्र) भूमि भी

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सहने में असमर्थ है। अतः उसे भूर्वाभिमुख कर अग्नि में डालना चाहिये॥ ९॥ बर्हिष् को हाथ में लेकर उसका रजजू (रस्सी) को उततराभिमुख रखकर खोले। इसे अपने आग्र यानि पश्चिम दिशा में करें। भूमि पर इसे पसारे॥ १०॥ इन बर्हिष् का अग्र पूर्वाभिमुख हो, इसे दक्षिण से उत्तर की ओर पसारें। उस पर उत्तर में घी का पात्र रखें॥ ११॥ गाये औषधियों को खाते हैं। उन का आहार बर्हिष् (घास) अतः बर्हिष् एवं घी एक ही परिवार के है। अतः बर्हिष् के ऊपर घी का पात्र रखना चाहिये॥ १२॥

स्रुक् स्रुव शुद्धीकरण का प्रमाणश्लोक—

दर्भास्तु वामहस्तेन स्रुक् स्रुवौ दक्षिणेन तु। गृहीत्वा निष्टपत्यग्नौ युगपत् होमकर्मणि॥ १॥
तेषां भूमौ स्थितानां प्रागसुरावेशशंकया। दर्भादीनां तु निस्सृत्यै निष्टपत्येव कर्मकृत्॥ २॥
माययान्तः प्रविष्टानां जुह्वास्तस्याः स्रुवस्य च। असुराणां विनाशार्थं कुशमार्जनमिष्यते॥ ३॥
त्रिःपवित्रस्य तस्याग्रं दर्भाग्रैस्तैः प्रदक्षिणाम्। दर्भमध्यैर्बिलस्याग्रं मूलाद्यन्तं तदाचरेत्॥ ४॥
दर्भमूलैर्बिलादर्वाक् दण्डमूलं तथा त्रिशः। कृत्वा पृष्ठे तदग्रादि मूलान्तं सकृदारभेत्॥ ५॥
दैत्य बाधा समुद्भूत दोष निर्हरणायतु। पुनर्निष्टप्य चाज्येस्मिन् स्रुव होता निधापयेत्॥ ६॥
एवं जुहूँ च संमृज्य यत्स्रुवेण अभिघारितम्॥ ७॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

बायें हाथ में कुशों को पकड़कर दाहिने हाथ में स्रुक्एवं स्रुव को पकडे। एककाल में सभी को अग्नि में तपाना चाहिये॥ १॥ भूमि पर रहने पर असुरों के प्रवेश भय से हाथ में पकड़ना चाहिये। कुशों से एवं स्रुक् स्रुव से असुर निवारण के लिए उन्हें अग्नि में तपपाना चाहिये॥ २॥ स्रुक एवं स्रुव में माया से प्रवेश करने वाले असुरों का निवारण के लिए कुशों से उन्हें शुद्ध करना चाहिये॥ ३॥ स्रुव के अग्र को (बिल) तीन बार कुशों से प्रदक्षिणाकार में शुद्ध

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करना चाहिये। कुशों के मध्य से उपरिभाग को स्वच्छ करें। स्रुव के दण्ड को कुश के मूल से तीन बार स्वच्छ करना चाहिये॥ ४॥ बिल के नीचे से स्रुव के पीछे तक एवं स्रुव के बिल पृष्ट से बिल का अग्रभाग तक तीन बार स्वच्छ करें॥ ५॥ दैत्य बाधा निवारण के लिए पुनः स्रुव को अग्नि मे सेकना चाहिये। घी के पात्र में उस स्रुव को रखें॥ ६॥ स्रुक् का भी इसी प्रकार शुद्धीकरण करना चाहिये। स्रुव के चरु में अभिधर्य घी डालना चाहिये। सुक्र को उत्तर में रखना चाहिये॥ ७॥

चरु संस्कार प्रमाण श्लोकः—करोत्यशब्दे हविषि पक्वोदस्थेऽमृताप्तये। प्राक् कार्यत्वात् स्रुवेणात्र प्राक् संमार्जनमिष्यते॥ १॥

दग्धे मृत्युमपक्वे हृद्रोगमिष्यति ते भयम्॥ २॥

विद्वेषं च विषादं च शशब्देत्ववरोपिते। मथनात् कलहं चापि स्वजनेभ्यः समृच्छति॥ ३॥

तीर्थीकरण संसिद्ध्यै तीर्थदेशे निधास्यति। आरोप्य तस्मिन् हविषि पुनराज्यं प्रसिञ्चति॥ ४॥

ऊर्ध्वं श्येना यथाकाशे विचरन्त्यामिषेच्छया। तथाऽसुरा दुरात्मानः सञ्चरन्ति जिघृक्षया॥ ५॥

आज्याभिघारणं तस्मात् तीर्थस्थे हविषि स्मृतम्। अग्नेराज्यस्य मध्येन नयनं च विशिष्यते॥ ६॥

यदा नीत्वाऽसुरभ्यात् पुनराज्येन सिञ्चति॥ ७॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

चरु के शब्द (पकने का) बन्द होने के बाद उसे उत्तर में रखना चाहिये। स्रुव का कार्य पहले आने के कारण पहले उसका शुद्धीकरण होता है॥ १॥ चरु जल जाने पर मृत्यु, कच्चे रहने पर हृदय रोग होता है॥ २॥ यदि पकते हुए शब्द करते हुए चरु को उतारने पर विहेष एवं विवाद होता है। चरु मथने पर बन्धुओं से कलह होता है। उतारने समय मथन नहीं करना चाहिये॥ ३॥ उतारकर उसे तीर्थदेश में रखना चाहिये। वहाँ रखकर उसमें घी डालना चाहिये॥ ४॥ मांस के लिए जैसे गिद्ध घूमते हैं, सैसे चरु को लेने के लिए राक्षर तैयार रहते हैं। इसलिए तीर्थदेश में स्थित चरु को घी का सिञ्चन करना

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चाहिये। अग्नि एवं आज्यपात्र के बीच से लाकर दक्षिण में चरु पात्र को रखना चाहिये॥ ५-६॥ पुनः एक बार रखने के बाद असुरों के भय से घी का सिञ्च न करना चाहिये॥ ७॥ इस प्राकर तीन बार घी का अभिघार होता है।

परिधि प्रकरण प्रमाण श्लोक—ऊर्ध्वेध्मकानुयाजाश्च त्रयः परिधयः पुरा। इध्मैः सहैव बध्यन्ते प्रागुक्तात्मान एव ते॥ १॥
हुतस्य होष्यमाणस्य हविषः पालनाय च। परितः परिधीयन्ते त्रयः परिधयस्तथा॥ २॥
पश्चिमे वसवो रुद्रा दक्षिणे चोत्तरे स्थिताः। आदित्यास्तु क्रमात्तेवै निधीयन्ते तथा त्रयः॥ ३॥
रौद्रस्याद्दक्षिणास्तस्मात् पश्चिमोपरि दक्षिणाः। करोति मूलं मूलेन चाग्रं मूलोपरि स्थितम्॥ ४॥
आदित्यः पश्चिमाग्राधो मूलं प्रागग्रमिष्यते। उत्तरं पश्चिमत्वात्तु तेषु तांश्च समावहेत्॥ ५॥
मनसा कल्पयेत् पूर्वं प्रजापत्यं विचक्षणाः। दुर्ग्रहत्वात् तत् क्रियते तत् कोणादेव सिद्धयति॥ ६॥
अनुयाजं सरस्वत्यां निधायोर्ध्वेध्माकावुभौ। शृङ्गत्वसिद्धये वह्नेः क्षिपेदुपरि चोच्छ्रितौ॥ ७॥
प्राग्जातौ दक्षिणौ शृंगौ पश्चात् जातौ तदुत्तरौ। प्राग्जातोपरि जातत्वात् उत्तरः परिधिः स्मृतः॥ ८॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

होमवेदी के चारों ओर बिछाने वाला परिधि कहलाता है। ऊर्ध्व समित् दो (ऊपर की ओर उठे हुए) १५ इध्म समित्, अनुयाज समित् एक, तीन परिधि समित्, कुल मिलाकर २१ हुए। इन छः को १५ इध्म के साथ मिलाकर बाँधना चाहिये॥ १॥ पहले किये कर्मों का एवं आगे होने वाले सभी होम कर्मों की रक्षा के लिए तीन परिधि रखना चाहिये॥ २॥ पश्चिम दिशा के परिधि के वसु देवता, दक्षिण दिशा के परिधि के रुद्र देवता, उत्तर दिशा के परिधि के आदित्य देवता है। इन्हें तीन दिशा में रक्षा के लिए रखते हैं॥ ३॥ पश्चिम दिशा के परिधि के मूल पर दक्षिण दिशा के परिधि का मूल रखना चाहिये। पश्चिम दिशा के परिधि के अग्र को उत्तर दिशा के मूल पर रखना चाहिये॥ ४॥ उत्तर दिशा के परिधि का अग्र पूर्वाभिमुख होना चाहिये क्योंकि यह आखरी

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है। उन परिधियों पर वसु रुद्र आदित्यों को आवाहन करना चाहिये॥ ५॥ पूर्व में प्रजापति को मन में कल्पना करनी चाहिये। ब्रह्मा जी का मूर्तिरूप न होने के कारण स्मरण करना चाहिये॥ ६॥ अनुयाज समित् को सरस्वती के पास रखें। प्रणीता पात्र में सरस्वती का आवाहन किये हैं। ऊर्ध्व दो समिधों को वह्नि को शृंगत्व सिद्धि के लिए सींच के रूप में ऊर्ध्वमुख अग्नि पर रखना चाहिये॥ ७॥ अग्नि के दक्षिण के दो सींग पहले आये थे। उत्तर के सींग बाद में आये थे। आद में पैदा होने के कारण उत्तर की सींच श्रेष्ठ है॥ ८॥

आगे प्रयोग विधि है—एकादशाङ्गुलिमिते देशे गंधाक्षतपुष्पैः अग्निं समन्त्रं अर्चयेत्। चत्वारिशृंगा इति मन्त्रेण अग्नौ शृंङ्ग प्रक्षेपणो विनियोगः स्थण्डिल (होम वेदी से) ११ अंगुल बाहर गंध अक्षत पुष्पों से अग्नि को मन्त्रसहित पूजन करें। चत्वारि शृङ्गा इस मन्त्र से अग्नि में शृंग समित् को छोडे। विश्वानि न इति तिसृणां आत्रेयो वसुश्रुतोग्निस्त्रिष्टुप् द्वयोरर्चने अन्त्याया उपस्थाने विनियोगः।

ॐ विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदः। पूर्व में पूजन करें। ॐ सिंधुननावादुरितातिपार्षि॥ आग्नेय में पूजन करें
ॐ अग्ने अत्रिवन्नमसागृणानः॥ दक्षिण में पूजन करें। ॐ अस्माकं बोध्यवितातनूनां॥ नैर्ऋत्य में पूजन करें। *(ऋग्वेद ५.४.९)*
ॐ यस्त्वाहृदाकीरिणामन्यमानः॥ पश्चिम में पूजन करें। ॐ अमर्त्यं मर्त्यो जोहवीमि॥ वायव्य में पूजन करें।
ॐ जातवेदो यशो अस्मासुधेहि॥ उत्तर में पूजन करें। ॐ प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमश्यां॥ ईशान में पूजन करें। *(ऋग्वेद ५.४.१०)*
ॐ यस्मैत्वं सुकृते जातवेदउलोकमग्नेकृणवस्योनं। अश्विनं स पुत्रिणं वीरवन्तं गोमन्तं रयिंनशतेस्वस्ति॥ *(ऋग्वेद ५.४.११)*

यह मन्त्र कहकर उपस्थान (प्रार्थना) करें। **ॐ अग्नये नमः। ॐ जानवेदसे नमः, ॐ हुताशनाय नमः।** इन मन्त्रों से अग्नि का पूजन करें। **ॐ आत्मने नमः, ॐ अन्तरात्मने नमः, ॐ परमात्मने नमः।** इन मन्त्रों से आत्मा का पूजन करें। हाथ धो लें। **ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ वसिष्ठाय नमः। ॐ त्रयीवद्यात्मने नमः।** इन मन्त्रों से ब्रह्मा का पूजन करें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इध्म बन्धन रज्जुं इध्म स्थाने निधाय पाणिना इध्यममादाय मूलमध्याग्रेषु स्रुवेण त्रिरभिधार्य मूल मध्ययो र्मध्यभागे गृहीत्वा। सरज्जुं अनुयाजं प्रणीतायां प्रतिष्ठाप्य इध्म को हाथ में लेवें। उसके रज्जु (रस्सी) को खोलें। रज्जू को अनुयाज समित् के साथ प्रणीता पात्र पर रखना चाहिये। हाथ में लिए इध्यम को मूल, मध्य एवं अग्र में स्रुव से तीन बार घी से अभिधार्य (सिञ्चन) करके, मूल एवं मध्य के बीच में पकड़कर (दाहिने हाथ में)—

अयं ते वामदेवो जातवेदा अग्निस्त्रिष्टुप् इध्म हवने विनियोगः। ॐ अयं तइध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्वचेद्धवर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधयस्वाहा॥ जातवेदसेग्नये इदं न मम। इन मन्त्रों को कहकर इध्यम को अग्नि में डाल देवें। **इध्यम मूलं स्पृष्ट्वा अपः उपस्पृश्य आघारावाघारयेत्।** इध्ममूल को छूकर हाथ धो लें। आघार होम करें।

अग्नि अलंकार इध्यम हवन के प्रमाणश्लोक—

ततोग्नेर्गं धपुष्पाद्यैः बहिरर्चा विधीयते। अमृतत्वस्य संसिद्ध्यै घृतेनेध्माभिघारणम्॥ १॥
समिद्बन्धनरज्जुं च प्रणीतायामुखेक्षिपेत्। होष्यन् सहानुयाजेन क्षिप्तवान्यत्रासुरं भवेत्॥ २॥
प्रसारिताङ्गुलिर्वाम ऊर्ध्वाग्रो हृदये करः। भवेद् होतुर्मण्डनार्थं होतव्यानां दिवौकसां॥ ३॥ *(आश्वलायन स्मृति)*
अयं तं इति मन्त्रेण मन्त्रार्थं संस्मरन हुनेत्। अन्तर्नयेदादरार्थं आस्ये गोर्दन्तशष्पवत्॥ ४॥
उच्छिष्टस्पृष्टितः शुद्ध्यै जलं स्पृशति वै तदा॥ ५॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

फिर अग्नि को गन्ध पुष्पादियों से होम वेदी से बाहर पूजन करना चाहिये। अमृतत्व प्राप्ति के लिए इध्म समित् पर घी से अभिघार (सिञ्चन) करना चाहिये॥ १॥ समित् बाँधने वाले रज्जु (रस्सी) को अनुयाज समित् के साथ प्रणीता पात्र पर रखना चाहिये। अन्यत्र रखने पर वह आसुर हो जाता है॥ २॥ बायें हाथ के सभी अङ्गुलियों को अलग-अलग करके हथेली को हृदय भाग पर रखना चाहिये। देवताओं के सम्मान के लिए हाथ को ऐसे नमस्कार

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रूप में रखते हैं॥ ३॥ अयं त इति मन्त्र के अर्थ को स्मरण करते हुए होम करना चाहिये। गाय के मूँह में जैसे घास देते हैं, वेसै इध्म को हाथ के बीच में रखकर उसे अग्नि में देना चाहिये॥ ४॥ इध्म खिलाने पर उच्छिष्ट होने के कारण हाथ को धो लेवें॥ ५॥

आघार होम

ततः स्रुवेण आज्यं आदाय अग्नेः आयतनस्य वायव्य कोणं आरभ्य आग्नेय कोण पर्यन्तं प्रजापतय इति मनसा स्मरन् स्वाहेति उच्चार्य नैरंतर्येण आज्यधारां अग्नौ इध्मदारूपरि हुत्वा, पुनराज्यं आदाय अग्नेरायतनस्य नैर्ऋतकोणात ऐशानीपर्यन्तं तथैव हुत्वा त्यक्त्वा च, इध्माहुति के बाद स्रुवा से घी लेकर होम वेदी के कोण से (परिधि सन्धि) वायव्य से प्रारंभकर आग्नेय कोण तक प्रजापति को स्मरण करते हुए स्वाहा शब्द को बोलते हुए निरन्तर घी को अग्नि में इध्म के ऊपर डालना चाहिये। **प्रजापतये इदं न मम।** कहकर त्याग करना चाहिये। इसी प्रकार नैर्ऋत्य कोण से (परिधि सन्धि) ईशान कोण पर्यन्त निरन्तर घी की धार डालते हुए प्रजापति को मन में स्मरण कर अग्नि में इध्म के ऊपर डालना चाहिये। **प्रजापतय इदं न मम।** कहकर त्याग करना चाहिये।

आघार होम के प्रमाण—प्रागुत्तरस्य मूलात्तु जातः पश्चिम दक्षिणः। अंशं वित्तस्य हरति पूर्वं ज्येष्ठाद्यथा परः॥ १॥
पितुस्तथा भवेत् तूष्णीं होम आघारयोःक्रमात्। तावुभौ सहजातत्वात् दक्षिणादिक् प्रकीर्तितः॥ २॥
प्राग्दक्षिणास्य मूलात्तु जात उत्तर पश्चिमः। तावुभौ सहजातत्वादुत्तरा दिक् प्रकीर्तिता॥ ३॥
तस्मात् प्राग्जातयोः पश्चाद् घृतधारा प्रदीयते। शृङ्गयोर्वर्धयेद्वह्निं पूर्वं पश्चात् प्रजातयोः॥ ४॥
हविर्मन्त्राच्च यज्ञत्वात् तस्मात् तन्मंत्र इष्यते॥ ५॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

उत्तर दिशा के प्रारम्भ से उत्पन्न होने के कारण श्रेष्ठ होता है। पिता के जायदाद में जैसे बड़े बेटे से छोटा भाग लेता है वैसे ही उत्तर के मल श्रेष्ठ है। अर्थात

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वायव्य से प्रारम्भ करना चाहिये ॥ १ ॥ प्रथम आघार होम वायव्य से आग्नेय पर्यन्त, दूसरा आघर होम नैर्ऋत्य से ईशान्य पर्यन्त करना चाहिये ॥ ३ ॥ श्रेष्ठ होने के कारण पहली घृत धारा वायव्य से करना चाहिये। नैर्ऋत्य बडा होने के कारण उसकी घृतधारा बाद में की जाती है ॥ ४ ॥ यज्ञ में मन्त्र आवश्यक होने के कारण मन में प्रजापति का स्मरण कर दो शृङ्गो को बढाने के लिए आघार होम करते हैं ॥ ५ ॥

चक्षुहोम—ततः स्रुवेणाज्यमादाय अग्नेय स्वाहा इति अग्नेः उत्तर पार्श्वे पूर्व भागे हुत्वा पुनराज्यं सोमय स्वाहा इति अग्नि दक्षिणापार्श्वे तत् समप्रदेशे हुत्वा अघार होम के पश्चात् स्रुवा से घी लेकर "अग्नेय स्वाहा" कहकर अग्नि के उत्तर दिशा के पूर्वभाग में होम करें। फिर स्रुवा में घी लेकर "ॐसोमाय स्वाहा कहकर अग्नि के दक्षिण दिशा के पूर्वभाग में पहले हवन किये भाग के समानान्तर में होम करें।

यहाँ पर अग्निमुख का पूर्वाङ्ग समाप्त

चक्षुहोम के प्रमाण श्लोक—प्रत्यङ्मुखोपविष्टस्य यथा स्यातां विलोचने। ततोत्तरं भवेत् चक्षुः अग्नेः दक्षिणामुत्तरम् ॥ १ ॥
उत्तरं दक्षिणां चापि हूयते प्रोक्त दक्षिणाम्। आज्येनैवोत्तरं पश्चात् इति शास्त्रस्य निर्णयः ॥ २ ॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

अग्नि देव हमारे सम्मुख होने के कारण हमारे विपरीत दिशा में है। उनका दाहिना आँख उत्तर में हैं एवं बायां आँख दक्षिण में है। अतः पहले उत्तर में होम करना चाहिये एवं बाद में दक्षिण में होम करना चाहिये। प्रायः दक्षिण से उत्तर होम होता है। परन्तु यहाँ विपरीत है यह शास्त्र वचन है ॥ १-२ ॥

व्याहृति होमः—समस्त व्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिः प्रजापतिर्बृहती व्याहृतिहोमे विनियोगः। ॐभूः स्वाहा अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा प्रजापतये इदं न मम।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नवग्रह होमः

प्रधान देवता सूर्य होमः—आकृष्णेनेत्यस्य हिरण्यस्तूपः सविता त्रिष्टुप्, प्रधान देवता आदित्य प्रीत्यर्थे अर्कसमित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्य च।
हिरण्ययेन सविता रथेनाऽऽदेवो याति भुवनानि पश्यन् स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.३५.२)*

आदित्यायेदं न मम। २८ बार इस मंत्र से अर्क सहित घी एवं चरु से होम यह संख्या ८ या २८ या १०८ बार कर सकते हैं।

सूर्य अधिदेवता अग्नि होमः—अग्निं दूतमित्यस्य काण्वो मेधातिथिरग्निर्गायत्री आदित्यस्य अधिदेवता अग्निप्रीत्यर्थे अर्कसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् स्वाहा। *(ऋग्वेद १.१२.१)*

ॐ आदित्य अधिदेवतायै अग्नये इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें। (३+३+३=९ आहुति)

सूर्य प्रत्यधिदेवता रुद्र होमः—ॐ कद्रुद्राय इत्यस्य घोरः काण्वो रुद्रो गायत्री आदित्यस्य प्रत्यधिदेवता रुद्र प्रीत्यर्थे अर्कसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ कद्रुद्राय प्रचेतसे मीळ्हुष्टमाय तव्यसे। वोचेम शंतमं हृदे स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.४३.१)*

आदित्य प्रत्यधिदेवता रुद्राय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें। (३ समित् + ३ घी + ३ चरु की आहुतियां = ९ आहुतियाँ)

प्रार्थना – दिवाकरं दीप्त सहस्त्ररश्मिं तेजोमयं जगतः कर्मसाक्षिम्। अंशुं भानुं सूर्यमादिं ग्रहाणां दिवाकरं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

आदित्याय नमः।

प्रधान देवता सोम होमः—आप्यायस्व गौतमः सोमो गायत्री प्रधान देवता चन्द्रप्रीत्यर्थे पलाश समित्, आज्य, चरु होम विनियोगः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे स्वाहा॥ (ऋग्वेद १.९१.१६)

सोमाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से पलाश सहित घी एवं चरु से होम करें।

सोम अधिदेवता अप होमः—अप्सु मे सिन्धद्वीप आपोगायत्री सोमस्य अधिदेवता अप् प्रीत्यर्थे पलाश समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा। अग्निं च विश्वशंभुवं स्वाहा॥ (ऋग्वेद १०.९.६)

सोमाधिदेवतायै अद्भ्य इदं न मम। इस मन्त्र से तीन बार होम करें।

सोम प्रत्यधिदेवता गौरी होम—गौरीर्मीमायेत्यस्य औचत्यपुत्रो दीर्घतमा उमा जगती। सोमस्य प्रत्यधिदेवता गौरी प्रीत्यर्थे पलाशसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी।
अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन् स्वाहा।

सोम प्रत्यधिदेवता गौर्यै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— यः कालहेतोः क्षयवृद्धिमेति यं देवताः पितरश्चापिबन्ति तं वै वरेण्यं ब्रह्मेन्द्रवन्द्यं चन्द्रं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

चन्द्राय नमः।

प्रधान देवता अङ्गारक होमः—अग्निर्मूर्धा विरूपोङ्गारको गायत्री। प्रधान देवता अङ्गारक प्रीत्यर्थे खदिरसमित आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति स्वाहा। (ऋग्वेद ८.४४.१६)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अङ्गारकाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र में खदिर समित्, घी एवं चरु से होम करें।

अङ्गारक अधिदेवता भूमि होमः—स्योना पृथिवीत्यस्य मेधातिथिः पृथिवी गायत्री। अङ्गारकस्य अधिदेवता भूमि प्रीत्यर्थे खदिरसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ स्योना पृथिवि भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथः स्वाहा। *(ऋग्वेद १.२२.१५)*

अङ्गारकाधिदेवतायै भूम्यै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

अङ्गारक प्रत्यधिदेवता स्कन्द होमः—कुमारं माता स्कन्दः स्कन्दस्त्रिष्टुप्। अङ्गारकस्य प्रत्यधिदेवता स्कन्द प्रीत्यर्थे खदिर समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ कुमारं माता युवतिः समुब्धं गुहा बिभर्ति न ददाति पित्रे
अनीकमस्य न मिनज्जनासः पुरः पश्यन्ति निहितमरतौ स्वाहा। *(ऋग्वेद ५.२.१)*

अङ्गारक प्रत्यधिदेवतायै स्कन्दाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— महेश्वरस्याननस्वेदबिन्दोर्भूमौ जातं रक्तमालांबराढ्यं। सुरश्मिणां लोहिताङ्गं कुमारमङ्गारकं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

अङ्गारकाय नमः।

प्रधान देवता बुध होमः—उद्बुध्यध्वं बुधो बुधस्त्रिष्टुप्, प्रधान देवता बुध प्रीत्यर्थे अपामार्ग समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिंध्वं बहवः सनीळा।
दधिक्रमग्निमुषसं च देवीमिन्द्रावतोऽवसे निह्वये वः स्वाहा। *(ऋग्वेद १०.१०१.१)*

बुधाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से अपामार्ग समित्, घी एवं चरु से होम करें।

बुध अधिदेवता विष्णु होमः—इदं विष्णुर्मेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री, बुधस्य अधिदेवता विष्णु प्रीत्यर्थे अपामार्ग समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूळहमस्य पांसुरे स्वाहा। *(ऋग्वेद १.२२.१७)*

बुधाधिदेवतायै विष्णवे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

बुध प्रत्यधिदेवता पुरुष होमः—सहस्रशीर्षा नारायणः पुरुषोऽनुष्टुप्, बुध प्रत्यधिदेवता पुरुष प्रीत्यर्थे अपामार्ग समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् स्वाहा। *(ऋग्वेद १०.९०.१)*

बुध प्रत्यधिदेवता पुरुषाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रौ महाद्युतिः। सूर्य प्रियकरो विद्यान् पीडां दहतु मे बुधः॥ ॐबुधाय नमः।

प्रधान देवता बृहस्पति होमः—बृहस्पते गृत्समदो बृहस्पतिस्त्रिष्टुप्, प्रधान देवता बृहस्पति प्रीत्यर्थे पिप्ल समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् स्वाहा॥ *(ऋग्वेद २.२३.१५)*

बृहस्पतये इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से पिप्ल समित्, घी एवं चरु से होम करें।

बृहस्पति अधिदेवता इन्द्र होमः—इन्द्र श्रेष्ठानि गृत्समद इन्द्रस्त्रिष्टुप्, बृहस्पतेरधिदेवता इन्द्रप्रीत्यर्थे पिप्पल समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे।
पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वादमानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम् स्वाहा। *(ऋग्वेद २.२१.६)*

बृहस्पत्यधिदेवतायै इन्द्राय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बृहस्पति प्रत्यधिदेवता ब्रह्मा होमः—ब्रह्मणाते विश्वामित्रो ब्रह्मा त्रिष्टुप्, बृहस्पति प्रत्यधिदेवता ब्रह्म प्रीत्यर्थे पिप्लसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ ब्रह्मणा ते ब्रह्मयुजा युनज्मि हरी सखाया सधमादा आशू।
स्थिरं रथं सुखमिन्द्राधितिष्ठन् प्रजानन् विद्वाँ उपयाहि सोमम् स्वाहा। *(ऋग्वेद ३.३५.४)*

बृहस्पति प्रत्यधिदेवतायै ब्रह्मणे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बर होम करें।

प्रार्थना— बुध्यात्मनो यस्य न कश्चिदन्यो मतिं देवा उपजीवंति यस्य। प्रजापते रात्मजं धर्मनिष्ठं गुरुं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ गुरुवे नमः।

प्रधान देवता शुक्र होमः—शुक्रं ते भारद्वाजः शुक्रस्त्रिष्टुप्, प्रधान देवता शुक्र प्रीत्यर्थे औदुम्बर समित्, आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि।
विश्वा हि माया अवसि स्वधावो भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु स्वाहा। *(ऋग्वेद ६.५८.१)*

शुक्राय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से औदुम्बर समित्, घी एवं चरु से हाम करें।

शुक्र अधिदेवता इन्द्राणी होमः—इन्द्राणी वृषाकपिरिंद्राणी पंक्तिः, शुक्रस्य अधिदेवता इन्द्राणी प्रीत्यर्थे औदुम्बर समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ इंद्राणीमासु नारिषु सुभगामहमश्रवम्। नह्यस्या अपरं चन जरसा मरते पतिर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः स्वाहा।

(ऋग्वेद १०.८६.११)

ॐ शुक्र अधिदेवतायै इन्द्राण्यै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शुक्र प्रत्यधिदेवता इन्द्र होमः—इन्द्रं वो मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री, शुक्रप्रत्यधिदेवता इन्द्र प्रीन्यर्थे औदुम्बर समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ इंद्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.७.१०)*

ॐ शुक्र प्रत्यधिदेवतायै इन्द्राय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— वर्षप्रदं चिन्तितार्थानुकूलं मौनाद्विशिष्टं सुनयोमपन्नम्। तं भार्गवं योगविशुद्धसत्वं शुक्रं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ शुक्राय नमः।

प्रधान देवता शनैश्चर होमः—शमग्निरित्यस्य इरिंबिठिः शनैश्चर उष्णिक्, प्रधान देवता शनैश्चर प्रीत्यर्थे शमी समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ शमग्निरग्निभिः करच्छंनस्तपतु सूर्यः। शं वातो वात्वरपा अपस्त्रिधः स्वाहा। *(ऋग्वेद ८.१८.६)*

शनैश्चराय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से शमी समित्, घी एवं चरु से होम करें।

शनैश्चर अधिदेवता प्रजापति होमः—प्रजापते हिरण्यगर्भः प्रजापतिस्त्रिष्टुप्, शनैश्चरस्य अधिदेवता प्रजापतिप्रीत्यर्थे शमी समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १०.१२१.१०)*

शनैश्चरस्य अधिदेवता प्रजापतये इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

शनैश्चर प्रत्यधिदेवता यम होमः—यमाय हसोमं यमो यमोनुष्टुप्, शनैश्चरस्य प्रत्यधि देवता यम प्रीत्यर्थे शमीसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हविः। यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः स्वाहा। *(ऋग्वेद १०.१४.१३)*

शनैश्चर प्रत्यधिदेवतायै यमाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रार्थना— शनैश्चरो राशितो राशिमेति शनैर्भोगो गमनं चेष्टितं च। सूर्यात्मजं क्रोधनं सुप्रसन्नं शनैश्चरं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ शनैश्चराय नमः।

प्रधान देवता राहु होम—कयानो वामदेवो राहुर्गायत्री प्रधान देवता राहु प्रीत्यर्थे दूर्वासमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कयाशचिष्ठया वृता स्वाहा राहवे इदं न मम॥ *(ऋग्वेद ४.३१.१)*

२८ बार इस मंत्र से दूर्वा समित्, घी एवं चरु से होम करें।

राहु अधिदेवता सर्प होमः—आयं गौः सार्पराज्ञीः सर्पा गायत्री। राहु अधिदेवता सर्प प्रीत्यर्थे दूर्वा समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयंत्स्वः स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १०.१८९.१)*

राहु अधिदेवतायै सर्पेभ्यः इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

राहु प्रत्यधिदेवता मृत्यु होमः—परं मृत्युः संकुसिको मृत्युस्त्रिष्टुप्। राहु प्रत्यधिदेवता मृत्यु प्रीत्यर्थे दूर्वा समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ परं मृत्यो अनुपरेहि पंथां यस्ते स्व इतरो देव यानात्।
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजां रीरिषो मोत वीरान् स्वाहा। *(ऋग्वेद १०.१८.१)*

राहु प्रत्यधिदेवतायै मृत्यवे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— यो विष्णुनैवामृतं भोक्ष्यमाणः छित्वाशिरो ग्रहभावे नियुक्तः। यश्चन्द्रसूर्यौ ग्रसते पर्व काले राहुं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ राहवे नमः।

प्रधान देवता केतु होमः—केतुं कृण्वन्नत्यिस्य मंत्रस्य मधुच्छन्दाः केतुर्गायत्री प्रधान देवता केतु प्रीत्यर्थे कुश समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.६.३)*

केतवे इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से कुश समित्, घी एवं चरु से होम करें।

केतु अधिदेवता ब्रह्म होमः—ब्रह्मजज्ञानमिति नकुलो ब्रह्मा त्रिष्टुप्, केत्वधिदेवता ब्रह्मप्रीत्यर्थे कुश समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः।
स बुध्नियां उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः स्वाहा॥ *(यजुर्वेद-४ काण्ड-२ प्रश्न-८ अनुवाक-४ मन्त्र)*

केतु अधिदेवताब्रह्मणो इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

केतु प्रत्यधिदेवता चित्रगुप्त होम—स चित्र चित्रं भारद्वाजश्चित्रगुप्तस्त्रिष्टुप्। केतु प्रत्यधिदेवता चित्रगुप्तप्रीत्यर्थे कुश समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ स चित्र चित्रं चितयन्तमस्मे चित्रक्षत्र चित्रतमं वयोधाम्।
चन्द्रं रयिं पुरुवीरं बृहंतं चन्द्रचन्द्राभिर्गृणते युवस्व स्वाहा॥ *(ऋग्वेद ६.६.७)*

केतु प्रत्यधिदेवतायै चित्रगुप्ताय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना—हे ब्रह्मपुत्रा ब्रह्मसमानवक्त्राः ब्रह्मोद्भवाः ब्रह्मसमाः कुमाराः।
ब्रह्मोत्तमा वरदा जामदग्न्याः केतून् सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ केतवे नमः। यहाँ पर नवग्रह होम संपन्न हुआ। आगे छः कर्म साद्गुण्य देवता होम होगा।

कर्म साद्गुण्य देवता विनायक होमः-१—आतून इत्यस्य काण्वः कुसीदी विनायको गायत्री क्रतु साद्गुण्यदेवता विनायक प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ आतूनं इन्द्रक्षुमन्तं चित्रं ग्राभं सङ्गभाय महाहस्ती दक्षिणोन स्वाहा। (ऋग्वेद ८.८१.१)

कर्म सादगुरुयदेवतायै विनायकाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुरुयदेवता दुर्गा होमः-२—जातवेद से कश्यपो दुर्गा त्रिष्टुप् क्रतुसाद्गुरुयदेवता दुर्गा प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेवसिंधुं दुरितात्यग्निः स्वाहा॥ (ऋग्वेद १.९९.१)

क्रतु साद्गुरुय देवतायै दुर्गायै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुरुयदेवता क्षेत्रपाल होमः-३—क्षेत्रस्य पतिना वामदेवः क्षेत्रपालोनुष्टुप् चरु होमे विनियोगः।

ॐ क्षेत्रस्य पतिना वयं हितेनेवजयामसि। गामश्वं पोषयित्वा सनोमृळातीदृशे स्वाहा। (ऋग्वेद ४.५७.१)

क्रतु साद्गुरुय देवतायै क्षेत्रपालाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुरुय देवता वायु होमः-४—क्राणाशिशुरित्यस्यत्रियोवायुरुष्णिक् क्रतु साद्गुरुय देवता वायु प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ क्राणाशिशुर्महीनांहिन्वन्नृतस्यदीधितिं। विश्वापरिप्रिया भुवदधद्वि ता स्वाहा॥ (ऋग्वेद ९.१०२.१)

क्रतु साद्गुरुय देवतायै वायवे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुरुय देवता आकाश होमः-५—आदित्यप्रत्नस्य वत्स आकाशो गायत्री क्रतु साद्गुरुय देवता आकाश प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ आदित् प्रत्नस्यरेतसो ज्योतिष्पश्यंति वासुरं। परोयदिध्यतेदिवा स्वाहा॥ (ऋग्वेद ८.६.३०)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्रतु साद्गुरयदेवतायै आकाशाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुरय देवता अश्विनी देवता होमः-६—अश्विनावर्ति राहूगणो गोतमोश्विनावुष्णिक् अश्वि प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अश्विनावर्तिरस्मदागोमद्दस्राहिरण्यवत्। अर्वाग्रथं समनसानियच्छतं स्वाहा॥ (ऋग्वेद १.९२.१६)

क्रतु साद्गुरय देवतायै अश्विभ्यां इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता इन्द्र होमः—इन्द्रं वो मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री क्रतु संरक्षक देवता इन्द्र प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः स्वाहा॥ (ऋग्वेद १.७.१०)

क्रतु संरक्षक देवतायै इन्द्राय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता अग्नि होमः—अग्निं दूतमित्यस्य काण्वो मेधातिथिरग्निर्गायत्री क्रतु संरक्षक देवता अग्नि प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् स्वाहा॥ (ऋग्वेद १.१२.१)

क्रतु संरक्षक देवतौ अग्नय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता यम होमः—यमाय सोमं यमोयमोनुष्टुप् क्रतु संरक्षक देवता यम प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ यमाय सोमं सुनुतयमायजुहुता हविः। यमंहयज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः स्वाहा॥ (ऋग्वेद १०.१४.१३)

क्रतु संरक्षक देवतायै यमाय इदं न मम। इस मंत्र को दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता निर्ऋति होमः—मोषुणः काण्वो निर्ऋतिर्गायत्री क्रतु संरक्षक देवता निर्ऋति प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ मोषुणः परापरानिर्ऋतिर्दुर्हणावधीत्। पदीष्ट तृष्णयासह स्वाहा॥ (ऋग्वेद १.३८.६)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्रतु संरक्षक देवतायै निर्ऋतये इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता वरुण होमः—तत्वायामीत्यस्य शुनः शेपोवरुणास्त्रिष्टुप् क्रतु संरक्षक देवता वरुण प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ तत्वा॑यामि॒ ब्रह्म॑णा॒ वन्द॑मान॒स्तदाशा॑स्ते॒यज॑मानो ह॒विर्भिः।
अहे॑ळमानो वरुणे॒ह बो॒ध्युरु॑शंस॒मान॒ आयुः॒ प्रमो॑षीः॒ स्वाहा॑॥ (ऋग्वेद १.२४.११)

क्रतु संरक्षक देवतायै वरुणाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता वायु होमः—तव वायो व्यश्वोवायुर्गायत्री क्रतु संरक्षक देवता वायु प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ तव॑ वायवृतस्पते॒त्वष्टु॑र्जामातरद्भुत। अवा॑स्यावृ॑णीमहे॒ स्वाहा॑॥ (ऋग्वेद ८.२६.२१)

क्रतु संरक्षक देवतायै वायवे इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता सोम होम—सोमो धेनुमित्यस्य गौतमः सोमस्त्रिष्टुप् क्रतु संरक्षक देवता सोम प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ सोमो॑ धे॒नुं सोमो॒ अर्व॑न्तमा॒शुं सोमो॑ वी॒रं क॑र्म॒रयं॑ ददाति।
सा॒दन्यं॑ विद॒थ्यं॑ स॒भेयं॑ पितृ॒श्रव॑णं॒ यो ददा॑शदस्मै॒ स्वाहा॑॥ (ऋग्वेद १.९१.२०)

क्रतु संरक्षक देवतायै सोमाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता ईशान होमः—तमीशानमित्यस्य गौतम ईशानो जगती क्रतु संरक्षक देवता ईशान प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ तमीशा॑नं॒ जग॑तस्त॒स्थुष॒स्पतिं॑ धियं जि॒न्वमव॑से हूमहे व॒यम्।
पूषा नो॒ यथा॒ वेद॑सा॒मसद॑वृधे रक्षि॒ता पा॒युरद॑ब्धः स्व॒स्तये॒ स्वाहा॑॥ (ऋग्वेद १.८९.५)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्रतु संरक्षक देवतायै ईशानाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें। यहाँ पर क्रतु संरक्षक देवता होम संपन्न हुआ।

व्याहृति होमः—व्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिः बृहती व्याहृति होमे विनियोगः। ॐ भूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐ भुवः स्वाहा,वायवे इदं न मम। ॐ स्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। इन मत्रों से एक बार होम करें।

प्रधान देवता सूर्य होमः—बरमहाँ असीत्यस्य सूर्यःप्रगाथो बृहती सूर्य प्रीत्यर्थे आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ बरमहाँ असि सूर्य बळादित्य महाँ असि। महस्ते सतो महिमा पनस्यते ऽद्धा देव महाँ असि स्वाहा॥ (ऋग्वेद ८.१०१.११) आ.गृ.सूत्रम्

ॐ सूर्याय स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐ रुद्राधिपतये स्वाहा, रुद्राधिपतय इदं न मम। ॐ रवि किरणाय स्वाहा, रविकिरणाय इदं न मम। ॐ ईश्वराय स्वाहा, ईश्वराय इदं न मम। ॐ सर्वोत्पातशमनाय स्वाहा, सवोत्पातशमनाय इदं न मम। प्रधान देवता के होम के बाद इन पाँच मंत्रों से घी की आहूति एक-एक बार देवें।

ॐ भूरग्नये च पृथिव्यै च महते च स्वाहा अग्नये पृथिव्यै महते च इदं न मम।
ॐ भुवो वायवेचान्तरिक्षाय च महते च स्वाहा। वायवेऽन्तरिक्षाय महते च इदं न मम।
ॐ सुवरादित्याय य दिवे च महते च स्वाहा। आदित्याय दिवे महते च इदं न मम।
ॐ भुर्भुवः सुवश्चन्द्रमसे च नक्षत्रेभ्योदिग्भ्यश्च महते च स्वाहा। *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषद्-आरण्यक)*

चन्द्रमसे नक्षत्रेभ्यो दिग्भ्यो महते च इदं न मम। इन चार मंत्रों से भी घी की आहुतियाँ एक-एक बार देवें। **ॐ भूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐ भुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐ स्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम।**

स्विष्टकृत् होमः—दर्व्यामुपस्तीर्य हविर्भागस्योत्तरार्धतः सकृत् अवदाय अवत्तंतु द्विः अभिघार्य। स्रुवा से दर्वी में (स्रुक्) घी डालकर, चरु के उत्तर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भाग से चरु को निकालकर (हाथ से) दर्वी में रखें। फिर स्रुवा से उप पर दो बार घी डालें। आगे कहने वाले मंत्र को कहते हुए होम कुण्ड में ईशान्य दिशा में डालें। यदस्येति हिरण्यगर्भोग्निः स्विष्टकृद्घृतिः स्विष्टकृत् होमे विनियोगः।

ॐ यदस्य कर्मणोत्यरीरिचं यद्वान्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत्स्विष्टकृद्विद्वान्त्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे॥
अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्धयः स्वाहा॥ *(श्रौत मन्त्र)*

इन दो मंत्रों को कहकर अग्नि के ईशान्य भाग में होम करें। स्विष्टकृतेऽग्नय इदं न मम।

इध्म बंधन रज्जुं विस्रस्य

पहले जिस रस्सी (कुशा निर्मित) से इध्यम बाँधे थे उस रस्सी को खोलकर उसे—ॐ रुद्राय पशुपतये स्वाहा, रुद्राय पशुपतये इदं न मम। कहकर होम करें। **प्रायश्चित आज्याहुतीः सप्त जुहुयात्।** प्रायश्चित सात घी की आहुतियाँ देवें। अयाश्चेतिविमदोया अग्निः पंक्तिः प्रायश्चित्याज्य होमे विनियोगः।

ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तीश्चसत्यमित्वमया असि। अयासावयसाकतो यासन्हव्यमूहिषेयानोधेहि भेषजं स्वाहा॥

(यजुर्वेद-आरण्यक)

अग्नेय इदं न मम। अतो देवाः काण्वोमेधातिथिर्देवा गायत्री प्रायश्चिताज्यहोमे विनियोगः।

ॐ अतोदेवा अवंतु नो यतोविष्णुर्विचक्रमे। पृथिव्याः सप्त धामभिः स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.२२.१६)*

देवेभ्य इदं न मम। इदं विष्णुः काण्वोमेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री प्रायश्चित्ताज्यहोमे विनियोगः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदं। समूळहमस्यपांसुरे स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.२२.१७)*

विष्णवे इदं न मम। व्यस्त समस्त व्याहृतीनां विश्वामित्र जमदग्निर्भरद्वाज प्रजापतय ऋषयः, अग्निवायुसूर्यप्राजापतयो देवताः गाय त्र्युष्णिगनुष्टुबृहत्यश्छंदांसि। प्रायश्चित्ताज्य होमे विनियोगः। ॐभूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। यहाँ पर यजमान के द्वारा करने वाला प्रायश्चित होम संपन्न हुआ। यज्ञ के पूजन होम में अनेक प्रकार के लोप संभव है। अतः उनके निवारण के लिए प्रायश्चित्त होम आवश्यक है। यजमान के प्रायश्चित होम से भी बचे हुए लोप दोषों के निवारण के लिए ब्रह्म प्रायश्चित विधान है। ब्रह्मा के स्थान पर यदि कुश हो तो स्वयं आचार्य ही ब्रह्म प्रायश्चित होम करें।

ब्रह्म प्रायश्चित्त होमः

ब्रह्मा के स्थान पर बैठे पं. जी के द्वारा यज्ञ में सपन्न लोप दोषों की निवृत्ति के लिए ब्रह्मा जी प्रायश्चित होम करते हैं।

ततो ब्रह्मा कर्तारं परीत्याग्नर्वायव्यदेशे तिष्ठन् एता एव सप्त आज्याहुतीर्जुहुयात्।

उसके बाद ब्रह्मा जी यजमान के पीठे से जाकर अग्नि के वायव्य दिशा में खडे होकर पूर्वोक्त सात मंत्रों से आहुति देवें। ब्रह्म प्रायश्चित्याज्यहोमे विनियोगः।

ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तीश्चसत्यमित्वमया असि।
अयासावयसाकृतो यासन्हव्यमूहिषेयानो धेहि भेषजम् स्वाहा॥ *(यजुर्वेद-आरण्यक)*

अग्नेय इदं न मम। इस पंक्ति को यजमान या अचार्य कहें।

ॐ अतो देवा अवंतु नो यतोविष्णुर्विचक्रमे। पृथिव्याः सप्त धामभिः स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.२२.१६)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देवेभ्य इदं न मम (इस पंक्ति को आचार्य पढ़ें।)

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदं। समूळहमस्य पांसुरे स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.२२.१७)*

विष्णव इदं न मम। (आचार्य इस पंक्ति को कहें) ॐभूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। स्वाहा तक ब्रह्मा जी कहते है। इदं न मम वाला भाग यजमान व आचार्य को ही कहना हैं, त्याग को ब्रह्मा नहीं करना चाहिये। इदं न मम त्याग कहलाता है। ततो ब्रह्मा यथा आगतं तथैव स्वस्थाने उपविशेत्। ब्रह्मा जी जिस प्रकार आये थे उसी प्रकार जाकर अपने आसन पर बैठें। अनाज्ञातमिति मंत्रद्वयस्य हिरण्यगर्भोग्निरनुष्टुप्, ज्ञाताज्ञातदोष निबर्हणार्थं प्रायश्चित्ताज्य होमे विनियोगः।

ॐ अनाज्ञातं यदाज्ञातं यज्ञस्य क्रियतेमिथु। अग्नेतदस्य कल्पयत्वं हिवेत्थयथातथं स्वाहा॥ *(यजुर्वेद-आरण्यक)*

अग्नये इदं न मम।

ॐ पुरुषसंमितो यज्ञोयज्ञः पुरुषसंमितः। अग्नेतदस्य कल्पयत्वं हिवेत्थयथातथं स्वाहा॥ *(यजुर्वेद-आरण्यक)*

यत्पाकत्रेत्याप्त्यस्त्रितोग्निस्त्रिष्टुप्। प्रायश्चिताज्य होमे विनियोगः।

ॐ यत्पाकत्रामनसादीनदक्षानयज्ञस्य मन्वतेमर्त्यासः।
अग्निष्टद्धोता क्रतुविद्विजानन्यजिष्ठो देवाँऋतुशोयजाति स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १०.२.५)*

अग्नय इदं न मम। ॐयद्वोदेवा अभितपामरुत स्त्रिष्टुप्। मंत्र तंत्र विपर्यासादि निमित्तक प्रायश्चिताज्य होमे विनियोगः।

ॐ यद्वोदेवा अतिपातयानि वाचाचप्रयुतीदेवहेळनं।
अरायो अस्माँ अभिदुच्छुनायतेन्यत्रास्मन्मरुतस्तन्निधेतनस्वाहा॥ *(यजुर्वेद-आरण्यक)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मरुद्भ्य इदं न मम। ततः स्कन्न भिन्नाद्यनियत निमित्ते सति वक्ष्यमाण प्रकारेण तत् प्रतिपदोक्त जप होमान् कुर्यात्। इसके बाद गिरने वाले, टूटने वाले सभी दोष जिनका वर्णन संभव नहीं है, उनके प्रायश्चित के लिए आगे कहने वाले जप एवं होम करें।

ॐभूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। यहाँ पर प्रायश्चित होम समाप्त हुआ। प्रारम्भ दिन से अन्तिम दिन तक यह होम कार्य एक जैसा है।

सूर्य सर्वाद्भुत होमस्य सर्व फलावाप्त्यर्थं साङ्गतासिद्ध्यर्थं च यावच्छक्ति ध्यानावाहनादि षोडशोपचार पूजां करिष्ये। होम कुण्ड में आचार्य एवं कलश वेदि में प्रधानाचार्य एक साथ पूजन करें। प्रधान देवता सूर्य मंत्रों से।

षोडशोपचार पूजनम् (कुण्ड में)

ध्यान —कालिंगं ग्रहमध्य भागनिलयं प्राचीमुखं वर्तुलं, । रक्तं रक्तविभूषणाध्वजरथच्छत्रश्रियाशेभितम् ॥
सप्ताश्वं कमलद्वयान्वितकरं पद्मासनं काश्यपं। मेरोर्दिव्य गिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे भास्करम् ॥ ॐ घृणिः सूर्यआदित्यः।

आवाहन-ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतोवृत्वात्यं तिष्ठद् दशांगुलम् ॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१)*

ॐ हिरण्यवर्णा हरिणीं सुवर्णरजत स्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीसूर्याय नमः। आवाहयामि। **आवाहनं** समर्पयामि।

आसनम्—ॐ पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेना तिरोह ति ॥ *(ऋग्वेद १०.९०.२)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। आसनं समर्पयामि।

पाद्यम्— ॐ एतावानस्य महिमाऽतो ज्यायाँश्च पुरुषः। पादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ (ऋग्वेद १०.९०.३)
ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय मम:। पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं— ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः। ततो विश्वं व्यक्रामत् साशनानशने अभि॥ (ऋग्वेद १०.९०.४)
ॐ कां सोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहो पह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—ॐ तस्माद्विराळजायत विराजो अधिपूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथोपुरः। (ऋग्वेद १०.९०.५)
ॐ चंद्रां प्रभासां यशसा ज्वलंतीं श्रियं लोके देवजुष्टा मुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणो॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् (दूध)— ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियं। भवावाजस्य संगथे। (ऋग्वेद १०.९१.१६)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। पयः स्नानं समर्पयामि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शुद्ध जल—ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवेनातिं भवे भवस्वमाम् भवोद्भवाय नमः॥

(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत् आरण्यक)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि

दहि— ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखा कर्त्प्रण आयूंषितारिषत्॥ (ऋग्वेद ४.३९.६)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। दधि स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमश्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमःकलविकरणाय नमोबलाय नमो बलप्रमथनाय नमस्सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः। (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्मयामि।

घी— ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतं वस्य धामं।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभवक्षि हव्यम्॥ (ऋग्वेद २.३.११) ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। घृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोर तरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

मधु (शहद)—ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरंति सिंधवः। माध्वीर्नः संत्वोषधीः॥ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवंतु नः॥ (ऋग्वेद १.९०.६) ॐ सपरिवाराय

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्रीसूर्याय नमः। मधु स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)*

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्पयामि।

शर्करा (शक्कर)—ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिंद्राय सुहवीतु नाम्ने।
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमाँ अदाभ्यः॥ *(ऋग्वेद ९.८५.६)*

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शर्करा स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जन—ॐ ईशानस्सर्वं विद्यानामीश्वरस्सर्वं भूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽ
धिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोऽम्॥ *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)*

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

फल— ॐ याः फलिनी र्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वं हसः॥ *(ऋग्वेद १०.९७.१५)*

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। फल स्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक—ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तानऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥ यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयते हनः।
उशतीरिव मातरः॥ तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः। *(ऋग्वेद १०.९.१-२-३)*
ॐ कद्रुद्राय प्रचेतसे मीळहुष्टमाय तव्यसे। वोचेम शंतमं हृदे॥ *(ऋग्वेद १.४३.१)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ यथा॑ नो॒ अदि॑तिः॒ कर॒त्पश्वे॑ नृभ्यो॒ यथा॒ गवे॑। यथा॑ तो॒काय॑ रु॒द्रिय॑म्॥ (ऋग्वेद १.४३.२)

ॐ यथा॑ नो मि॒त्रो वरु॑णो॒ यथा॑ रु॒द्रश्चिके॑तति। यथा॒ विश्वे॑ स॒जोष॑सः।

ॐ गा॒थप॑तिं मे॒धप॑तिं रु॒द्रं जला॑षभेषजम्। तच्छं॒ योः सुम्नमी॑महे॥

ॐ यः शु॒क्र इ॑व॒ सूर्यो॑ हिर॑ण्यमिव॒ रोच॑ते। श्रेष्ठो॑ दे॒वानां॒ वसुः॑।

ॐ शं नः॑ कर॒त्यर्वे॑ ते सु॒गं मे॒षाय॑ मे॒ष्ये॑। नृभ्यो॒ नारि॑भ्यो॒ गवे॑॥

ॐ अ॒स्मे सोम॒ श्रिय॒मधि॒ नि धे॑हि श॒तस्य॑ नृ॒णाम्। महि॒श्रव॑स्तुवि॒नृम्णा॑म्॥

ॐ मान॑ः सोमपरि॒बाधो॒ मारा॑तयो जुहुरंत। आ न॑ इंदो॒ वाजे॑ भज॥

ॐ यास्ते॑ प्र॒जा अ॒मृत॑स्य॒ पर॑स्मि॒न्धाम॑न्नृ॒तस्य॑। मू॒र्धा नाभा॑ सोमवेन आ॒ भूष॑ंतीः सोम वेदः॥ (ऋग्वेद १.४३.३-४-५-६-७-८-९)

ॐ नमः॒ सोमा॑य च रु॒द्राय॑ च॒ नम॑स्ताम्राय॑ चारु॒णाय॑ च॒ नमः॑ शं॒गाय॑ च पशु॒पत॑ये च॒ नम॑ उ॒ग्राय॑ च भी॒माय॑ च॒ नमो॑ अग्रेव॒धाय॑ च दूरेव॒धाय॑ च॒ नमो॑ ह॒न्त्रे च॒ हनी॑यसे च॒ नमो॑ वृ॒क्षेभ्यो॒ हरि॑केशेभ्यो॒ नम॑स्ता॒राय॒ नमः॑ श॒म्भवे॑ च मयो॒भवे॑ च॒ नमः॑ शंक॒राय॑ च मयस्क॒राय॑ च॒ नमः॑ शि॒वाय॑ च शि॒वत॑राय च॒ न॒म॒ स्तीर्थ्या॑यच॒ कूल्या॑य च॒ नमः॑ पा॒र्याय॑ चावा॒र्याय॑ च॒ नमः॑ प्र॒तर॑णाय चो॒त्तर॑णाय च॒ नम॑ आता॒र्याय॑ चाला॒द्याय॑ च॒ नम॒शष्प्याय च॒ फेन्या॑य च॒ नमः॑सिक॒त्याय॑ च प्रवा॒ह्याय॑ च। (यजुर्वेद-४ काण्ड-५ प्रश्ने-८ अनुवाक)

ॐ तच्छं॒योरावृ॑णीमहे। गा॒तुं य॒ज्ञाय॑। गातुं य॒ज्ञ प॑तये। दैवीः॑ स्व॒स्तिर॑स्तु नः। स्व॒स्तिर्मानु॑षेभ्यः।
ऊ॒र्ध्वं जि॑गातु भेष॒जम्। शं नो॑ अस्तु द्वि॒पदे॑। शं चतु॑ष्पदे। ॐ शांतिः शांतिः। शांतिः॥ (यजुर्वेद-आरण्यक)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसंतो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ (ऋग्वेद १०.९०.६)
ॐ आदित्यवर्णो तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदंतु मायांतरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः। (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

वस्त्र— ॐ युवं वस्त्राणि पीवसावसाथे युवोरच्छिद्रा मंतवो हसर्गाः।
अवातिरममनृतानि विश्व ऋतेन मित्रा वरुणा सचेथे॥ (ऋग्वेद १.१५२.१)
ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजंत साध्या ऋषयश्च ये॥ (ऋग्वेद १०.९०.७)
ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥

(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतं—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशूंस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान् ग्राम्याश्च ये॥ (ऋग्वेद १०.९०.८)
ॐ क्षुत् पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आभरण—ॐ हिरण्यरूपः स हिरण्य संदृगपान्नपात् सेदु हिरण्यवर्णः। हिरण्ययात् परियोनें निषद्यां हिरण्यदा ददत्यन्नमस्मै॥

(ऋग्वेद २.३५.१०)

ॐसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। आभरणं समर्पयामि।

गन्ध— **ॐ गंधं द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥** (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्य जुस्तस्मादजायत॥ (ऋग्वेद १०.९०.९)

ॐसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। गन्धं समर्पयामि।

अक्षत—ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उतपुरंन्न धृष्णवर्चत॥ (ऋग्वेद ८.६९.८)

ॐसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि—ॐ आयने ते परायणे दूर्वारोहंतु पुष्पिणीः। ह्रदाश्च पुण्डरीकाणि समुद्रस्य गृहा इमे॥ (ऋग्वेद १०.१४२.८)

ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावोहजज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजावयः॥ (ऋग्वेद १०.९०.१०)

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। पुष्पाणि समर्पयामि।

प्रथमावरण पूजनम्—ॐहृदयाय नमः। आग्नेय दिशि। ॐशिरसे स्वाहा नमः। ऐशान्यां दिशि। ॐशिखायै वषट् नमः। नैर्ऋत्यां दिशि। ॐकवचाय हुम् नमः। वायव्यां दिशि। ॐनेत्रत्रयाय वौषट् नमः। अग्रे ॐअस्त्राय फट् नमः। आग्नेयादि कोणेषु पूजयेत् (अनुष्ठान पद्धति)। पूजन करे।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्वितीयावरण पूजनम्—ॐ इन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्णाय वज्रहस्ताय ऐरावत वाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवारायश्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ अग्नये तेजोधिपतये पिंगलवर्णाय शाक्ति हस्ताय मेष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय स वाहनाय स परिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नमः। ॐ यमाय प्रेताधिपतये कृष्णावर्णाय दण्ड हस्ताय महिष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नमः। ॐ निर्ऋतये रक्षोधिपतये रक्तवर्णाय खड्ग हस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नमः। ॐ वरुणाय जलाधितये कुंदवर्णाय पाशहस्ताय मकरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सूर्यमूति पार्षदाय नमः। ॐ वायवे प्राणाधिपतये धूम्रवर्णाय अंकुश हस्ताय हरिणावाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ सोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्णाय गदा हस्ताय अश्व वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नमः। ॐ ईशानाय विद्याधिपतये स्फटिकवर्णाय त्रिशूल हस्ताय वृषभ वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ अनंताय नागाधिपतये क्षीरवर्णाय चक्रहस्ताय गरुड वाहनाय स शक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षद्राय नमः। नैर्ऋत्यं एवं पश्चिम दिशा के बीच में अनन्त का पूजन करें। ॐ ब्रह्मणो लोकाधिपतये कंजवर्णाय पाशहस्ताय हंसवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्तिपार्षदाय नमः। पूर्व एवं ईशान दिशा के बीच में ब्रह्मा जी का पूजन करें। *(अनुष्ठान पद्धति)*

तृतीयावरणपूजनम्—ॐ वज्राय नमः। (पूर्व में) ॐ शक्त्यै नमः। (आग्नेय में) ॐ दण्डाय नमः। (दक्षिण में) ॐ खड्गाय नमः। (नैर्ऋत्य) ॐ पाशाय नमः। (पश्चिम में) ॐ अंकुशाय नमः। (वायव्य में) ॐ गदायै नमः। (उत्तर में) ॐ त्रिशूलाय नमः। (ईशान में) ॐ चक्राय न मः। (पश्चिम नैर्ऋत्य के बीच में) ॐ पद्माय नमः। (पूर्व ईशान के बीच में) *(अनुष्ठान पद्धति)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूर्य अष्टोत्तर शतनाम पूजा

ॐ अरुणाय नमः। ॐ शरण्याय नमः। ॐ करुणारस सिन्धवे नमः। ॐ असमान बलाय नमः। ॐ आर्तरक्षकाय नमः। ॐ आदित्याय नमः। ॐ आदिभूताय नमः। ॐ अखिलागमवेदिनेनमः। ॐ अच्युतायनमः। ॐ अखिलज्ञायनमः। ॐ अनन्तायनमः। ॐ इनायनमः। ॐ विश्वरूपायनमः। ॐ इज्यायनमः। ॐ इन्द्रायनमः। ॐ भानवेनमः। ॐ इन्दिरामन्दिरायनमः। ॐ आप्तायनमः। ॐ वन्दनीयायनमः। ॐ ईशायनमः। ॐ सुप्रसन्नायनमः ॐ सुशीलायनमः ॐ सुवर्चसे नमः ॐ वसुप्रदायनमः । ॐ वसवेनमः। ॐ वासुदेवायनमः। ॐ उज्जवलायनमः। ॐ उग्ररूपायनमः। ॐ ऊर्ध्वगायनमः। ॐ विवस्वतेनमः। ॐ उद्यत्किरणजालयनमः। ॐ हृषिकेशायनमः। ॐ ऊर्जस्वलायनमः। ॐ वीरायनमः। ॐ निर्जरायनमः। ॐ जयाय नमः। ॐ ऊरुद्वयभावरूपयुक्तसारथये नमः। ॐ रुग्घन्त्रे नमः। ॐ ऋक्षचक्रचराय नमः। ॐ ऋजुस्वभावचित्ताय नमः। ॐ नित्यस्तुत्याय नमः। ॐ ऋकारमातृकावर्णरूपाय नमः। ॐ उज्जवलतेजसे नमः। ॐ ऋक्षायधिनाथाय नमः। ॐ मित्रायनमः। ॐ पुष्काराक्षाय नमः। ॐ लुप्तदन्ताय नमः। ॐ शान्ताय नमः। ॐ कान्तिदाय नमः। ॐ धनाय नमः। ॐ कनत्कनकभूषाय नमः। ॐ खद्योताय नमः। ॐ लूनिताखिलदैत्याय नमः। ॐ सत्यानन्द स्वरूपिणे नमः। ॐ अपवर्गप्रदाय नमः। ॐ आर्तशरण्याय नमः। ॐ एकाकिने नमः। ॐ भगवते नमः। ॐ सृष्टिस्थित्यन्तकारिणे नमः। ॐ गुणात्मने नमः। ॐ घृणिभृते नमः। ॐ बृहते नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ ऐश्वर्यदाय नमः। ॐ शर्वाय नमः। ॐ हरिदश्वाय नमः। ॐ शौरये नमः। ॐ दशदिक्सम्प्रकशाय नमः। ॐ भक्तवश्याय नमः। ॐ ओजस्कराय नमः। ॐ जयिने नमः। ॐ जगदानन्दहेतवे नमः। ॐ जन्ममृत युजराव्याधिवर्जिताय नमः। ॐ औन्नत्यापदसञ्चरथस्थाय नमः। ॐ असुरारये नमः। ॐ कमनीकराय नमः। ॐ अब्जवल्लभाय नमः। ॐ अन्तर्बहिःप्रकाशाय नमः। ॐ अचिन्त्याय नमः। ॐ आत्मरूपिणे नमः। ॐ अच्युताय नमः। ॐ अपरेशाय नमः। ॐ परस्मै नमः। ॐ ज्योतिषे नमः। ॐ अहस्कराय नमः। ॐ रवये नमः ॐ हरये नमः। ॐ परमात्मने नमः। ॐ तरुणाय नमः। ॐ वरेण्याय नमः। ॐ ग्रहाणांपतये नमः। ॐ भास्कराय नमः। ॐ आदिमध्यान्तरहिताय नमः। ॐ सौख्यप्रदायनमः। ॐ सकलजगतांपतये नमः। ॐ सूर्याय नमः। ॐ कवये नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ परेशाय नमः। ॐ तेजोरूपाय नमः। ॐ ह्रीं

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिरण्यगर्भाय नमः। ॐ ऐं इष्टार्थदाय नमः। ॐ आशुप्रपन्नाय नमः। ॐ श्रीमते नमः। ॐ श्रेयसे नमः। ॐ भक्तकोटिसौख्यप्रदायिने नमः। ॐ निखिलागमवेद्याय नमः। ॐ नित्यानन्दाय नमः। अष्टोत्तर शतनाम पूजां समर्पयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

धूपम्—ॐ वनस्पति रसोत्पन्नो गंधाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते॥ *(ऋग्वेद १०.९०.११)*

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। धूपं आघ्रापयामि।

दीपम्— **आज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मंगलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह॥** *(स्मृति संग्रह)*

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासी बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१२)*

ॐ आपः सृजंतु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। दीपं दर्शयामि। धूप दीपानंतरं आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यम्—देवस्याग्रे स्थलं संशोध्य गोमयेन मण्डलं कृत्वा तत्र शुद्धं पात्रं न्यस्य अभिघार्य निर्मलं हवि तदुपरि न्यस्य आज्येन द्रवीभूतं कृत्वा "ॐ भू र्भुवः स्वः इति गायत्र्या च प्रोक्ष्य वायु बीजं जप्त्वा निवेद्यान्नं संशोध्य इक्षिणहस्ते अग्निबीजं विलिख्य तेन हस्तेन संदह्यवामहस्ते अमृतबीजं विलिख्य तेत हस्तेन हविराप्लाव्य मूलमंत्रमष्टवारं संजप्य मंत्रामृतमयं संकल्प्य सुरभिमुद्रां बध्वा अमृतमयं भावयित्वा मल धातु रसांशं विभज्य देवस्य निवेद्य ग्रहणोच्छां कुर्यात्।

(अनुष्ठान पद्धति)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

"सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि" इत्यनेन

परिषिच्य हस्ताभ्यां पुष्पैः "देवस्य जिह्वार्चीरुचि निवेद्ये निपात्य निवेदयामि भवते जुषाणेदं हविर्विभो" इति वामहस्तेन ग्रासमुद्रा प्रदर्श्य दक्षिण हस्तेन प्राणादि मुद्राः प्रदर्शयेत्। अन्नात् मलांशं धात्वंशं च परित्यज्य रसांशं देवस्य वदनार्चिषि समर्पयेत्। वं अबात्मने इति नैवेद्य मुद्रां प्रदर्शयेत्।

नैवेद्य सारं रससमर्पणात् जातं सुधांशं देवे समर्प्य अंललिमुद्रां बध्वा नैवेद्यसार रससमर्पित जातामृतमय सुधांशुना पुनः पुनः वर्धितं देवं हृन्मूर्ति देवं ध्यायन् स्व स्व मूलमन्त्रं यथा शक्ति जप्त्वा।

कलश के आगे स्थल शुद्धिकर गोमय से शुद्धिकर चतुरस्त्र मण्डल को बनाकर उस पर शुद्ध पात्र को रखें। पात्र में थोडा सा घी डालें। उस पात्र में निर्मल हविस् (नैवेद्य पदार्थ को) को घी पर रखें उस हविस् को घी से भिगोयें। गायत्री मंत्र से नैवेद्य का प्रोक्षण करें। यंयं यं" इस वायु बीज को जपकर हविस् को शुद्ध करें। दाहिने हाथ में (रं) अग्नि बीज को लिखकर उस अग्नि से हविस् में विद्यमान कश्मलों को लजायें। (कल्पना करें) बायें हाथ में अमृत बीज (वं) को लिखकर उस हाथ से हविस् को शुद्ध करें। धोने की कल्पना करें। ॐ घृणिः सूर्य आदित्यः। इस मन्त्र का आठ बार जप करें। हविस् को मत्रमय एवं अमृतमय होने की कल्पना करें। सुरभि मुद्रा से अमृतमय हुआ है मानकर मलांश, धातु अंश एवं रसांश को अलग-अलग करने की कल्पना करें। देवता को नैवेद्य ग्रहण करने की इच्छा उत्पन्न करनी चाहिये। "सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि" इससे परिषिञ्चन करें। दोनों हाथों में पुष्प लेकर देवता का जीभ नैवेद्य तक पहुँचने का चिन्तन करें। "निवेदयामि भवते जुषाण हविर्विभो" कहकर नैवेद्य स्वीकार करने की प्रार्थना करते हुए बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछडे को घास देते हैं) को दिखाकर दाहिने हाथ से—

प्राणाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ कनिष्ठिका मिलाकर, **अपानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर, **व्यानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर, **उदानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर, **समानाय स्वाहा**। सभी अङ्गुलियों को लिकर। अन्न से मलांश एवं धातु के अंश को अलग कर केवल रसांश को

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अर्पित करने की कल्पना करें।

''वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि'' कहकर नैवेद्य मुद्रा का प्रदर्शन करें। अंगुष्ट एवं अनामिका मिलाने से नैवेद्य मुद्रा। नैवेद्य का सार जो रसांश था उसका भी सार अमृत का जो अंश है उसे देवता को समर्पित कर, हाथ जोडकर, नैवेद्य के सार अमृत से भगवान् को बढते हुए मानकर उसे हृदय में स्थित मानकर यथाशक्ति ॐ घृणिः सूर्य आदित्यः।'' इस मूल मंत्र का जप करें।

ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिंद्राय सुहवीतुनाम्ने।
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमां अदाभ्यः॥ *(ऋग्वेद ९.८५.६)*
ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१३)*
ॐ आर्दां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

यथा संभव नैवेद्यं निवेदयामि। **अमृतापिधानमसि** कहकर उत्तरापोशन देवें। हस्ताप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गण्डूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूल—पूगीफल समायुक्तं नागवल्या दलैर्युतं। चूर्णं कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ *(स्मृति संग्रह-देवपूजा)*

ॐ सपरिवार श्री सूर्याय नमः। क्रमुक तांबूलं समर्पयामि।

नीराजन (आरति)—ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधा सो अर्चत। अर्चतु पुत्रका उत पुरं न धृष्णवर्चत। *(ऋग्वेद ८.६९.८)*

ॐ ध्रुवाद्यौ ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ ध्रुवं ते राजा वरूणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ (ऋग्वेद १०.१७३.४)

ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। मंगल नीराजनंसमर्पयामि।

मंत्रपुष्प— ॐ सहस्त्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्वशंभुवम्। विश्वं नारायणं देवमक्षरं परमं पदम्॥
विश्वतः परमान्नित्यं विश्वं नारायणं हरिम्। विश्वमेवेदं पुरुषस्तद्विश्व मुपजीवति॥
पतिं विश्वस्यात्मेश्वरं .. शाश्वतं... शिवमच्युतम्। नारायणं महाज्ञेयं विश्वात्मानं परायणम्॥
नारायणा परोज्योतिरात्मा नारायणः परः। नारायणा परं ब्रह्म तत्वं नारायणः परः॥
नारायणा परो ध्याता ध्यानं नारायणः परः। यच्च किंचिज्जगत्सर्वं दृश्यते श्रूयतेऽपि वा॥
अन्तर्बहिश्च तत्सर्वं व्याप्य नारायणास्थितः। अनंतमव्ययं कविं.. समुद्रेऽन्तं विश्वशंभुवम्॥
पद्मकोश प्रतीकाशं... हृदयं चाप्यधो मुखम्। अधोनिष्ट्या वितस्यांते नाभ्यामुपरि तिष्ठति॥
ज्वालमालाकुलं भाति विश्वस्यायतनं महम्। संतत् .. शिलाभिस्तु लंबत्याकोश सन्निभम्॥
तस्यांते सुषिरं.. सूक्ष्मं तस्मिन्सर्वं प्रतिष्ठितम्। तस्य मध्ये महानग्निर्विश्वार्चिर्विश्वतो मुखः॥
सोऽग्रभुग्वि भजंतिष्ठन्नहारमजरः कविः। तिर्यगूर्ध्वमधश्शायी रश्मयं स्तस्य संतता॥
संतापयति स्वं देहमापादतलमस्तकः। तस्य मध्ये वह्निशिखा अणीयोर्ध्वा व्यवस्थितः॥
नीलतोयदमध्यस्थाद्विद्युल्लेखेव भास्वरा। नीवारशूकवत्तन्वी पीताभास्वत्यणूपमा॥
तस्या शिखाया मध्ये परमात्मा व्यवस्थितः। स ब्रह्म स शिवःस हरिस्सें द्रस्सोक्षरः परमः स्वराट्॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ बरामहाँ असि सूर्य बळादित्य महाँ असि। महस्ते सतो महिमा पनस्यते ऽद्धा देव महाँ असि॥ (ऋग्वेद ८.१०१.११) आ.गृ.सूत्रम्

ॐ नाभ्या आसीदंतरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्। (ऋग्वेद-१०.९०.१४)

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा नमस्कार—यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे॥ (देवपूजा-स्मृति संग्रह)

ॐ सप्तास्यां सन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुं॥ (ऋग्वेद १०.९०.१५)

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।

यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावोदास्योऽश्वान् विंदेयं पुरुषानहम्॥ (ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। प्रदक्षिणा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्य—ॐ प्रभाकराय विद्महे दिवाकराय धीमहि। तन्नो सूर्यः प्रचोदयात्॥ इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यम् (कहकर तीन बार पुष्पमिश्रित जल छोडें।)

सर्वोपचार पूजनम्—ॐ छत्रं समर्पयामि। चामरेण वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। आंदोळिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्य राजोपचार देवोपचार पूजां समर्पयामि।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ (ऋग्वेद १०.९०.१६)

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥ (ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। सवोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— कालिंगं ग्रहमध्य भागनिलयं प्राचीमुखं वर्तुलं, । रक्तं रक्तविभूषणाध्वजरथच्छत्रश्रियाशेभितम् ॥
सप्ताश्वं कमलद्वयान्वितकरं पद्मासनं काश्यपं। मेरोर्दिव्य गिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे भास्करम् ॥
ॐ कायेन वाचा मनसे न्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि ॥ *(पौराणिकम्)*
ॐ ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना ॥ *(श्री भगवद्गीते)*

ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। अनेन पूजनेन सपरिवारः श्री सूर्यः प्रीयताम्।

पूर्णाहुति—प्रतिदिन संक्षेप में पूर्णाहुति करनी चाहिये अन्तिम दिन विशेष रूप से करनी चाहिये।

प्रतिदिन वाला पूर्णाहुति—स्रुचि स्रुवेण द्वादशवारं आज्यं गृहीत्वा तस्यां स्रुवं ऊर्ध्वबिलं निधाय पुनरधो बिलं निक्षिप्य स्रुवाग्रे कुसुमाक्षतान् निधाय सव्य पाणिना स्रुकूस्रुवमूले धृत्वा दक्षिणपाणिना स्रुक्स्रुवं शंखमुद्रया गृहीत्वातिष्ठन् समपाद ऋजुकायः स्रुवाग्रे न्यास्त दृष्टिः प्रसन्नात्मना। स्रुवा से स्रुक में १२ बार घी डाले। स्रुक् के ऊपर स्रुवा को ऊपर मुख करके रखें, फिर उसे उल्टा करके स्रुक् के ऊपर रखें। स्रुवा के अग्रभाग में पुष्प एवं अक्षतों से पूजन करें। बायें हाथ से स्रुक् एवं स्रुवा के मूल को पकडकर, दाहिने हाथ से शंखमुद्रा से स्रुक एवं स्रुवा को पकडकर, सीधे खडे रहकर स्रुवा के अग्रभाग को देखते हुए प्रसन्न मन से पूर्णाहुति होम करें। धामं ते वामदेव आपो जगती पूर्णाहुति होमेविनियोगः।

ॐ धामँ ते विश्वं भुवनमधिश्रितमंतः समुद्रे हृद्यं१तरायुषि।
अपाम नीं के समिथेयआभृतरतमंश्याम मधुमंततंतऊर्मिं स्वाहा ॥ *(ऋग्वेद ४.५८.११)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कहकर पूर्णाहुति डालें। अद्भ्य इदं न मम। विज्योतिषेत्यस्य जारोवृशोग्निस्त्रिष्टुप्। पूर्णाहुति शेषाज्य होमे विनियोगः।

ॐ विज्योतिषाबृहता भात्यग्निराविर्विश्वानिकृणुते महित्वा।
प्रादेवीर्मायाः सहते दुरेवाः शिशीते शृङ्गे रक्षसे विनिक्षे स्वाहा॥ *(ऋग्वेद ५.२.६)*

इतना कहकर स्रुक् में शेष घी का होम करें। अग्नये इदं न मम। कहकर हाथ जोडें। विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। विश्वेभ्यः देवेभ्य इदं न मम। स्रुक् स्रुवा में शेष बचे घी का भी होम करें। यह संस्राव कहलता है। अथावभृथस्थानीयं पूर्णपात्रजलेन मार्जनं कुर्यात्। अवभृथस्नान के जगह (बदले) पूर्णपात्र जल से मार्जन करें। पूर्वसादितं पूर्णपात्रं आस्तीर्णे बर्हिषि दक्षिणपाणिना निधाय तत्र गङ्गादि पुण्यनदीः स्मरन् दक्षिण पाणिना स्पृशन्। उत्तर में स्थापित प्रणीतापात्र के जल से अवभृथस्नान के बदले में आगे बिछाये बर्हिषि (कुशाओं) के ऊपर रखकर दाहिने हाथ से उसे छूते हुए गङ्गादि पुण्यनदियों का स्मरण करते हुए मंत्र पाठ करें।

ॐ पूर्णमसि पूर्णं मे भूयाः सुपूर्णमसि सुपूर्णं मे भूयाः सदसि सन्मेभूयाः
सर्वमसिसर्वं मे भूयाः। अक्षितिरसि मामेक्षेष्ठाः॥ *(यजुर्वेद)*

इति जपित्वा कुशाग्रैः प्रागादि पञ्चदिक्षुजलं मंत्रैः यथालिङ्गं सिञ्चेत्। आगे कहे जाने वाले मंत्रों से कहे जाने वाले दिशाओं में कुश के अग्र भाग से जल प्रोक्षण करें।

प्राच्यां दिशि देवा ऋत्विजो मार्जयन्ताम्। दक्षिणस्यां दिशि मासाः पितरो मार्जयन्ताम्। अप उपस्पृस। (हाथ धो लें)
प्रतीच्यां दिशि ग्रहाः पशवो मार्जयन्ताम्। उदीच्यां दिश्यापः ओषधयोवनस्पतयो मार्जयन्ताम्।
ऊर्ध्वायां दिशि यज्ञः संवत्सरः प्रजापतिर्मार्जयताम्। *(यजुर्वेद)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इति एकश्रुत्या पठन् प्रतिदिशं सिक्त्वा कुशाग्रैः स्वशिरसि मार्जयेत्। उपरोक्त मंत्रों को कहते हुए उन दिशाओं के सिञ्चन के साथ अपने पर भी सिञ्चन करें। आपो अस्मानित्यस्य देवश्रवा आपस्त्रिष्टुप्। मार्जने विनियोगः।

ॐ आपो॑ अस्मान्मा॒तरः॑ शुंधयंतु घृ॒तेन॑नोघृत॒प्वः॑ पुनंतु। विश्वं॑ हिरि॒प्रंप्र॒वहं॑तिदे॒वीरुदिदा॑भ्यः॒ शुचि॒रापू॒तएं॑मि॥

(ऋग्वेद १०.१७.१०)

इदमापः सिंधुद्वीप आपोनुष्टुप्। मार्जने विनियोगः।

ॐ इ॒दमा॑पः॒ प्रव॑हत॒यत्किं॑च॒दुरि॒तं मयि॑। यद्वा॒हम॑भि दु॒द्रोह॒य द्वा॑शे॒ पउ॒तानृ॑तं॥ (ऋग्वेद १०.९.८)

सु॒मि॒त्र्यान॒ आप॒ ओष॑धयः सन्तु। इत्येतैर्मंत्रांते मार्जनं कृत्वा। उपरोक्त मंत्रों से मार्जन करें॥

दु॒र्मि॒त्र्यास्तस्मैसंतु॒ योऽस्मा॒न्द्वेष्टि॒यं चव॒यं द्वि॒ष्मः। (यजुर्वेद-आरण्यक)

इति निर्ऋति देशे कुशाग्रैः अपः सिञ्चेत्। उपरोक्त मंत्र को कहकर नैऋत्य में कुशाग्रभाग से जल प्रोक्षण करें। ततो ब्रह्मा यजमान वामपार्श्वेस्थित पत्न्यंजलौ तदभावे पूर्णपात्रस्थं जलं यजमान पव स्व वामपाणावुत्ताने बर्हिर्निधाय तत्र दक्षिणपाणिना पूर्णपात्रं आदाय जलं प्रत्यङ्मुखं निषिच्य। इसके बाद ब्रह्मा यजमान के बायें पार्श्व में स्थित पत्नी के अंजली में स्थित पूर्णपात्र के जल से दोनों का प्रोक्षण करें। यदि यजमान अकेला हो तो बायें हाथ में बर्हिष् (कुशा) रखकर दाहिने हाथ में पूर्णपात्र पकडकर बायें हाथ में स्थित कुशपर जल छोडें एवं उस जल को पश्चिम की ओर हाथ से गिरायें (स्वाभिमुख)

ॐ माहंप्र॒जां परा॑सिच॒यान॑ः स॒यावरी॒स्थन॑। स॒मु॒द्रेवो॑निनयानि॒स्वंपाथो॑ अपी॒थ॥ (श्रौत मन्त्र)

उपरोक्त मत्र कहते हुए पाप नाश के लिए नीचे गिरे जल को समुद्र में गया मानकर हाथ में बचे शेष जल से अपना प्रोक्षण करें। ततः कर्ता अग्नेः वायव्ये स्थितः संस्थाजपेन उपतिष्ठेत। इसके बाद यजमान अग्नि के वायव्य दिशा में खड़े होकर संस्था जप जो कि आगे बताया जा रहा है, उससे हाथ जोडकर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अग्नि की प्रार्थना करें। अग्नेत्वं न इति चतसृणां गौपायना लौपायनावाबंधुः सुबंधुः श्रुतबंधुर्विप्रबंधुश्च एकैकर्चा ऋषयः। अग्निर्देवता। द्विपदाविराट्छंदः। अग्न्युपस्थाने विनियोगः।

ॐ अग्नेत्वंनो अंतमउतत्राता शिवो भवावरूथ्यः। वसुरग्निर्वसुश्रवा अच्छानक्षिद्युमत्तमंरयिंदाः॥ (ऋग्वेद ५.२४.१-२)

सनोबोधिश्रुधीहवं मुरुष्याणो अघायतः समस्मात्। तंत्वांशोचिष्ठदीदिवः सुम्नायनूनमीमहेसखिभ्यः॥ (ऋग्वेद ५.२४.३-४)

ॐ चंमे स्वरश्च मे यज्ञोपतेनमश्च। यत्तेन्यूनं तस्मैत उपयत्तेतिरिक्तं तस्मै ते नमः॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

अग्नये नमः। ॐ स्वस्ति। श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं श्रियंबलं। आयुष्यं तेज आरोग्यं देहि मे हव्यवाहन॥ मानस्तोक इत्यस्य कुत्सोरुद्रोजगती। विभूति ग्रहणे विनियोगः।

ॐ मानस्तोके तनये मान आयौ मानो गोषुमानो अश्वेषुरीरिषः।
वीरान्मानोरुद्र भामितोवधीर्ह विष्मंतः सदुमित्वा हवामहे॥ (ऋग्वेद १.११४.८)

इति स्रुव बिलपृष्ठेनैशानीगतां विभूतिं गृहीत्वा। उपरोक्त मंत्र पाठ करते हुए स्रुवा के बिल के पिछले हिस्से के ईशान भाग से भस्म (होम करें) को निकालें। ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे। (ललाटे में भस्म लगायें) ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं इति कंठे। (कण्ठ में भस्म लगायें) ॐ अगस्त्यस्य त्र्यायुषं इति नाभौ। (नाभि में भस्म लगायें) ॐ यद्देवानां त्र्यायुषमिति दक्षिणास्कंधे (दाहिने भुजा में भस्म) ॐ तन्मे अस्तु त्र्यायुषं इति वाम स्कंधे (बाये कंधे पर) ॐ सर्वमस्तु शतायुषं इति शिरसि धारयेत् (सिर से भस्म लगायें) ततः परिस्तरणानि विसृज्य अग्निं परिसमूह्य परिषियुक्ष्य। अग्नि का परिसमूहन एवं परिषिञ्चन करें। इसके बाद जिस प्रकार से डाले थे उसी प्रकार पूर्व से उन परिस्तरणों को अग्नि में डाल दें (विसर्जन) हाथों में जल लेकर पूर्वदिशा से प्रारम्भ करके प्रदक्षिणाकार में चारों ओर मार्जन करने की क्रिया परिसमूहन कहलाता है। पहले हाथ धो लें फिर जलयुक्त हाथ से पूर्वादि दिशाओं को स्पर्श करना चाहिये। पुनः हाथ धोकर इसी क्रिया दो बार और करना चाहिये। यह क्रिया परिसमूहन कहलाता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अग्नेरैशानतस्त्रिरंभसा परिषेचनं। हाथ में जल लेकर ईशान्य से ईशान्य तक तीन बर जल से परिषिञ्चन करें। विश्वानिन इति तिसृणामात्रेयो वसुश्रुतोग्निस्त्रिष्टुप् द्वोरर्चने अंत्यायाउपस्थाने विनियोगः।

ॐ विश्वानिनो दुर्गहा जातवेदः। (पूर्व में पुष्पाक्षत से अग्निदेव का पूजन करें), **ॐ सिन्धुं ननावादुरितातिपर्षि।** (आग्नेय में पूजन करें), **ॐ अग्ने अत्रिवन्नमसागृणानः।** (दक्षिण में पूजन करें), **ॐ अस्माकं बोध्यवितातनूनां।** (नैर्ऋत्य में पूजन करें), **ॐ यस्त्वाहृदाकीरिणामन्यमानः।** (पश्चिम में पूजन करें) *(ऋग्वेद ५.४.६-१०-११)*, **ॐ अमर्त्य मर्त्योजोहवीमि।** (वायव्य में पूजन करें), **ॐ जातवेदोयशो अस्मासुधेहि।** (उत्तर में पूजन करें), **ॐ प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमश्यां।** (ईशान्य में पूजन करें), **ॐ यस्मैत्वं सुकृते जातवेद उलोकमग्नेकृणवस्योनं। अश्विनं सपुत्रिणंवीरवंतं गोमंतं रयिंनशते स्वस्ति॥** *(ऋग्वेद ५.४.१०-११)* इन मंत्रों को कहकर पूजन एवं नमस्कार करें।

ब्रह्मा को एवं ऋत्विजों को दक्षिणा देवें।

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो होमक्रियादिषु। न्यूनं संपूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥ ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥ अनेन सग्रहमख सूर्यः सर्वाद्भुतशान्ति होमकर्मणा सपरिवारः भगवान् सूर्य नारायण प्रीयताम्। यागमध्ये मंत्रतंत्र विपर्यासादि सर्वदोष परिहारार्थं नामत्रय जपं करिष्ये। ॐअच्युताय नमः। ॐअनंताय नमः। ॐगोविन्दाय नमः। ॐहराय नमः। ॐमृडाय नमः। ॐशंभवे नमः। इति जपेत्। कर्म के अन्त में पवित्र का विसर्जन करके दो बार आचमन करें। ॐतत् सत्॥ यहाँ पर मध्याह्न तक का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

मध्याह्न य सांयकाल का कार्यक्रम—यह प्रारम्भ दिन से अन्तिम दिन के पहले दिन तक समान है। जप का विवरण अगले पन्ने (भाग) में है। आचम्य प्राणानायम्य उद्दिष्ट मंत्रजपं कुर्यात्। आचमन करके प्राणायाम करें। फिर उद्देशित मंत्रों का जप संपन्न करें। जप मंत्रों का संपूर्ण विवरण अगले भाग में है।

सर्वाद्भुत शान्ति भाग में—**जप के मन्त्र—महाशान्ति सूक्त—शन्नइन्द्राग्नि सूक्त—प्रधान सूर्य मन्त्र जप—नवग्रह जप**

द्वितीय दिन द्वितीय प्रहर सम्पन्न

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तृतीय / चतुर्थ / पञ्चम दिन प्रथम प्रहर

देह शुद्धि—येभ्यो मातेत्यस्य गयःप्लात ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। जगतीछन्दः। एवापित्रेत्यस्य वामदेव ऋषिः। बृहस्पतिर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। मनुष्य गन्ध निवारणे विनियोगः।

ॐ येभ्यो मातामधुमत् पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः।

उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनुमदास्वस्तये॥ *(ऋक्वेद १०.६३.३)*

ॐ एवापित्रे विश्वदेवाय वृष्णे यज्ञैर्विधेम नमसा हविर्भिः।

बृहस्पते सुप्रजा वीरवन्तो वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥ *(ऋक्वेद ४.५०.६)*

आचमन मन्त्र—ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।) अथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुराणेभ्यो नमः। अग्नये नमः। वायवे नमः। प्राणाय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै नमः। अन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारणम्—पवित्रन्त इत्यनयोः आङ्गीरसः पवित्र ऋषिः। पवमानः सोमो देवता। जगतीछन्दः। पवित्राभिमंत्रणे, धारणे विनियोगः।

ॐ पवित्रन्ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः।
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुतेशृता सइद्वहन्तस्तत् समाशत॥ *(ऋग्वेद ९.८३.१)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ तपोंष्पवित्रं विततं दिवस्पदे शोचंन्तो अस्य तन्तवो व्यंस्थिरन्।
अवंन्त्यस्य पवीतारं माशवों दिवस्पृष्ठमधिंतिष्ठन्ति चेतंसा॥ *(ऋग्वेद ९.८३.२)*

ॐभूर्भुवः स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये आसन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।)

प्राणायाम—प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्राणायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्संवितुर्वरेंण्यं भर्गो देवस्यं धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्वरोम्। *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

करन्यासः ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ तर्जनीभ्यां नमः। ॐ मध्यमाभ्यां नमः। ॐ अनामिकाभ्यां नमः। ॐ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

अङ्गन्यास-हृदयादिन्यास ॐ हृदयाय नमः। ॐ शिरसे स्वाहा। ॐ शिखायै वषट्। ॐ कवचाय हुम्। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अस्त्राय फट्

ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः

आसन शुद्धि—ॐ स्योना पृथिवि भवानृक्षरा निवेशंनी। यच्छा नः शर्म सप्रथः।' *(१५ मन्त्र-२२ सूक्त-प्रथम मण्डल)* इस मन्त्र से जल प्रोक्षण करने से भूमि शुद्ध होती है।

शिखाबन्धनम्—

ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणित भक्षणे। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुण्डे ह्यपराजिते॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

(इस मन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महा संकल्प

ॐ स्वस्ति श्री समस्तजगदुत्पत्तिस्थितिलयकारणस्य रक्षा-शिक्षा-विचक्षणस्य प्रणतपारिजातस्य अशेषपराक्रमस्य श्रीमदनन्तवीर्यस्यादि नारायणस्य अचिन्त्यापरिमितिशक्त्या ध्रियमाणानां महाजलौघमध्ये परिभ्रमताम् अनेक कोटि ब्रह्माण्डानाम् एकतमे अव्यक्त- महादहंकार - पृथिव्यप्तेजो वाय्वाकाशाद्याव रणैरावृते अस्मिन् महति ब्रह्माण्डखण्डे आधारशक्तिश्रीमदादि- वाराह-दंष्ट्राग्र- विराजिते कूर्मानन्त- वासुकि-तक्षक-कुलिक - कर्कोटक -पद्म - महापद्म - शंखाद्यष्टमहानागैर्ध्रियमाणे ऐरावत-पुण्डरीक-वामन-कुमुद-अञ्जन-पुष्पदन्त-सार्वभौम-सुप्रतीकाष्टदिग्गजोपरिप्रतिष्ठितानाम् अतल-वितल-सुतल-तलातल-रसातल-महातल-पाताल-लोकनामुपरिभागे भुवर्लोक-स्वर्लोक-महर्लोक -जनोलोक - तपोलोक - सत्यलोकाख्य षड्लोकानामधोभागे भूर्लोके चक्रवाल शैल - महावलयनागमध्यवर्तिनो महाकाल महाफणि राजशेषस्य सहस्रफणामणिमण्डल मण्डिते दिग्दन्तिशुण्डादण्डोद्दण्डितेअमरावत्यशोकवती भोगवती - सिद्धवती- गान्धर्ववती - काशी- काञ्ची - अवन्ती अलकावती यशोवतीतिपुण्यपुरीप्रतिष्ठिते लोकालोकाचलवलयिते लवणेक्षु- सुरा सर्पि - दधिक्षीरोदकार्णवपरिवृते जम्बू-प्लक्ष-कुश-क्रौञ्च - शाक शाल्मलिपुष्कराख्यसप्तद्वीपयुते इन्द्र-कांस्य-ताम्र-गभस्ति-नाग-सौम्य-गन्धर्व-चारणभारतेतिनव-खण्डमण्डिते सुवर्णगिरिकार्णिकोपेत महासरोरुहाकार पञ्चाशत् कोटि योजनविस्तीर्णभूमण्डले अयोध्या मथुरा-माया-काशी-काञ्ची-अवन्तिकापुरी द्वारा वतीतिमोक्षदायिकसप्तपुरीप्रतिष्ठिते सुमेरु निषधत्रिकूट-रजतकूटाम्रकूट-चित्रकूट-हिमवद्विन्ध्याचलानां महापर्वत प्रतिष्ठिते हरिवर्ष किंपुरुषयोश्च दक्षिणे नवसहस्रयोजन विस्तीर्णे मलयाचल-सह्याचल विन्ध्याचलानामुत्तरे स्वर्णप्रस्थ-चण्डप्रस्थ-चान्द्र-सूक्तावान्तक-रमणक महारमणक-पाञ्चजन्य-सिंहल लंङ्केति-नवखण्डमण्डिते गंगा-भागीरथी-गोदावरी- क्षिप्रा-यमुना- सरस्वती-नर्मदा-ताप्ती-चन्द्रभागा-कावेरी-पयोष्णी-कृष्णावेणी-भीमरथी-तुंगभद्रा-ताम्रपर्णी- विशालाक्षी- चर्मण्वती-वेत्रवती- कौशिकी-गण्डकी- विश्वामित्रीसरयूकरतोया- ब्रह्मानन्दामहीत्यनेक पुण्यनदी विराजिते भारतवर्षे भरतखण्डे जम्बूद्वीपे कूर्मभूमौ साम्बवती कुरुक्षेत्रादि समभूमौ आर्यावर्तान्तरगते ब्रह्मावर्तैकदेशे गंगायमुनयोर्मध्यभागे योजनव्यापिविस्तीर्णेक्षेत्रे,ज्ञानयुगप्रवर्तकानां महर्षि

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महेशयोगिवर्याणां परमाराध्यगुरुदेवै : अनन्तश्रीविभूषितैः ज्योतिष्पीठाधीश्वरैः जगद्गुरु श्री मच्छङ्कराचार्य ब्रह्मानन्दसरस्वतीमहाभागैः सम्पादितशतमखकोटि होम महायज्ञपावितायां भूमौ..... सकलजगत्स्रष्टुः परार्धद्वय जीविनो ब्रह्मणः द्वितीये परार्धे एकपञ्चाशत्तमे वर्षे प्रथम मासे प्रथम पक्षे प्रथम दिवसे अह्नस्तृतीये यामे तृतीये मुहूर्ते रथन्तरादिद्वात्रिंशत्कल्पानांमध्ये अष्टमे श्वेतवाराहकल्पे स्वायंभुवादि मन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृत त्रेताद्वापरकलिसंज्ञकानां चतुर्णां युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमपादे प्रभवादि षष्ठि सम्वत्सराणां मध्ये..... .....संवत्सरे.....अयने.....ऋतौ .....मासे .....पक्षे ..... तिथौ ..... वासरे ..... नक्षत्रे ..... योगे ..... करणे .....राशि स्थिते श्रीसूर्ये ..... राशि स्थिते श्रीचन्द्रे..... राशि स्थिते श्रीकुजे..... राशि स्थिते श्रीबुधे ..... राशि स्थिते श्रीदेवगुरौ ..... राशि स्थिते श्रीशुक्रे..... राशि स्थिते श्रीशनौ..... राशि स्थिते श्रीराहौ..... राशि स्थिते श्रीकेतौ.....एवं गुण विशेषण विशिष्टायां पुण्यायाम् महापुण्य शुभ तिथौ.....

गुरू प्रार्थना —

नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः॥ *(श्रृङ्गेरी मठीय आचार्य प्रार्थनम्)*

श्री गुरु परमगुरु परमेष्ठी गुरु सद्गुरु पादुकाभ्यो नमो नमः।

भूतोच्चाटन मन्त्र—

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुविसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारः ते गच्छन्तु शिवाज्ञया॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्। सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्रमहाकाय कल्पान्ते दहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इति भैरवं नमस्कृत्य। (इन मन्त्रों से भूतोच्चाटन कर भैरव जी से यज्ञ रक्षा की प्रार्थना करते हैं।)

गणपति प्रार्थना—गणानान्त्वा इति मन्त्रस्य गृत्समदऋषिः। गणपतिर्देवता। जगती छन्दः। गणपति प्रार्थने विनियोगः।

ॐ गणानान्त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमं।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन्नूतिभिः सीदसादनम्॥ *(ऋग्वेद २.२३.१)*

(इन मन्त्रों से गणपति प्रार्थना कर पुष्पाक्षत छोड़ना चाहिये।)

त्रिवाक्येण पुण्याह वाचन—

ॐ भद्रं कर्णेभिःशृणुयामदेवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमदेवहितं यदायुः। *(ऋग्वेद १.८९.८)*
ॐ द्रविणोदा द्रविणसस्तुरस्य द्रविणोदाः सनरस्य प्रयसत्।
द्रविणोदावीरवतीमिषंनोद्रविणोदारासतेदीर्घमायुः॥ *(ऋग्वेद १.९६.८)*
ॐ सवितापश्चातात्सवितापुरस्तात्सवितोत्तरात्तात्सविता धरात्तात्।
सवितानः सुवतु सर्वतातिं सवितानोरासतां दीर्घमायुः॥ *(ऋग्वेद १०.३६.१४)*
ॐ नवो नवो भवति जायमानोह्नांकेतुरुषसामेत्यग्रम्।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भागं देवेभ्यो विदधात्यायन्प्रचन्द्रमांस्तिरते दीर्घमायुः ॥ (ऋग्वेद १०.८५.१९)

ॐ उच्चादिवि दक्षिणावंतो अस्थुर्येअश्वदाः सहतेसूर्येण। हिरण्यदा अमृतत्वं भजंतेवासोदाः सोमप्रतिरन्त आयुः ॥

(ऋग्वेद ६.६५.६)

ॐ आपउंदंतु जीव सें दीर्घायुत्वाय वर्चसे। सस्त्वांहृदा कीरिणामन्यमानो मर्त्यं मर्त्योजोहवीमि ॥

(यजुर्वेद १ काण्ड-२ प्रश्न-१ अनुवाक-१ मन्त्र)

ॐ जातवेदोयशो अस्मासु धेहि प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमश्याम्। यस्मैत्वं सुकृते जातवेद उलोकमग्ने कृणावस्योनम्। अश्विनं सपुत्रिणं वीरवंतं गोमंतंरयिंनशते स्वस्ति। संत्वा सिञ्चामि यजुषा प्रजामायुर्धनं च ॥

(यजुर्वेद १ काण्ड-६ प्रश्न-१ अनुवाक-१ मन्त्र)

ॐ उद्गातेवशकुनेसामगायसि ब्रह्मपुत्र इव सवनेषु शंससि।
वृषेव वाजीशिशुमतीरपीत्या सर्वतोनः शकुनेभद्रमावद विश्वतोनः शकुनेपुण्य मावद ॥ (ऋग्वेद २.४२.२)
याज्ययायजतिप्रत्तिर्वैयाज्यापुण्यैवलक्ष्मीः पुण्यामेवतल्लक्ष्मीं संभावयति पुण्यां लक्ष्मीं संस्कुरुते ॥
यत्पुण्यं नक्षत्रं। तद्वट्कुर्वी तोपव्युषं। यदावैसूर्य उदेति। अथ नक्षत्रंनैति। यावंति तत्र सूर्यो गच्छेत्।
यत्र जघन्यं पश्येत्। तावंतिकुर्वीतयत्कारीस्यात्। पुण्याह एव कुरुते। तानि वा एतानि यमनक्षत्राणि।
यान्येव देवनक्षत्राणि। तेषु कुर्वीत यत्कारीस्यात्। पुण्याह एव कुरुते। (यजुर्वेद - ब्राह्मण)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्यकरिष्यमाणासूर्याद्भुतशान्त्याख्यायकर्मणः पुण्याहं भवंतो ब्रुवंत्विति त्रिर्वदेत्।

(यजमान अपने सकुटुम्ब प्रणाम करते हुए आज संपन्न होने वाले कर्म के लिए पुण्याह की याचना करते हुए तीन बार कहते हैं। जिसका प्रत्युत्तर ब्राह्मण तीन बार देते हैं।)

१. ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुण्याहम्। २. ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुण्याहम्। ३. ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुण्याहम्।

ॐ स्वस्तये वायुमुपब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः।
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्या सो भवन्तु नः॥ *(ऋग्वेद ५.५१.१२)*
आदित्य उदयनीयः पथ्यैवेतः स्वस्त्याप्रयंतिपश्यांस्वस्तिमभ्युद्यंतिस्वस्त्येवेतः प्रयंतिस्वस्त्युद्यंति स्वस्त्युद्यंति॥ *(स्मृति संग्रह)*
ॐ स्वस्तिन इन्द्रोवृद्धश्रवाःस्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिःस्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।

(ऋग्वेद १.८८.६)

ॐ अष्टौ देवा वसवः सोम्यासः॥ चतस्रोदेवीरम्रजराश्रविष्ठाः। ते यज्ञं पांतु रजसः परस्तात्। संवत्सरीणममृतं स्वस्ति।

(यजुर्वेद - ब्राह्मण)

इसके बाद नीचे लिखा वाक्य का तीन बार यजमान कहें। एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्यकरिष्यमाणासर्याद्भुतशान्त्याख्याय कर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मण कहते हैं)—ॐ आयुष्मते स्वत्ति। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बाद पुनः पहले जैसे उत्तर कलश से जल नीचे रखे बड़े पात्र में थोड़ा-थोड़ा कर गिराते हुए मंत्रपाठ करें।

ॐ ऋध्यामस्तोमं सनुयामवाजमानो मंत्रं सरथे होपयांतं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यशोनपक्कं मधुगोष्वंतराभूतांशों अश्विनोः कामंमप्राः ॥ (ऋग्वेद १०.१०६.११)
सर्वामृद्धिमृध्नुयामितितं वैतेजसैवपुरस्तात् पर्यभवच्छन्दोभिर्मध्यतोक्षरै
रुपरिष्टाद्गायत्र्या सर्वतो द्वादशाहंपरिभूयसर्वामृद्धिमार्ध्नोत्सर्वामृद्धिमृध्नोति य एवं वेद ॥
ऋध्यास्मंहव्यैर्नमंसोपसद्यं ॥ मित्रं देवं मित्रधेयंनो अस्तु ॥ अनूराधान् हविषांवर्धयंतः ।
शतंजीवेमशरदः सवीराः । त्रीणि-त्रीणि वै देवानांमृद्धानि ।
त्रीणिच्छन्दांः सित्रीणि सवंनानि त्रयं इमे लोकाः । ऋध्यामेवतद्वीर्यं एषु लोकेषु प्रतिंतिष्ठति ॥ (यजुर्वेद - ब्राह्मण)

इसके बाद पुनः नीचे लिखे वाक्यों को तीन बार यजमान कहें। एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्य करिष्य माणासूर्याद्भुतशान्त्याख्याय अस्य कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

(ब्राह्मण कहते हैं)—ॐ ऋध्यतां। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बाद मन्त्र पाठ करते हुए उत्तरकलश से नीचे रखे पात्र में जल छोड़ना चाहिये।

ॐ श्रिये जातः श्रियऽआनिरियाय श्रियंवयोंजरितृभ्योंदधाति।
श्रियं वसांना अमृतत्वमांयन् भवंतिसत्यासंमिथामितद्रौं ॥ (ऋग्वेद ९.९४.४)
श्रिय एवैनं तच्छ्रियामादधाति संततमृचा वषट् कृत्यं संतत्यैसंधीयते प्रजया पशुभिर्यएवं वेद।
यस्मिन्ब्रह्माभ्यजंय त्सर्वंमेतत् ॥ अमुञ्चंलोकमिद्मूंचसर्वं ॥ तन्नो नक्षंत्रमभिजिद्विजित्यं ॥
श्रियं दधात्वहंणीयमानं ॥ अहं बुध्निय मंत्रंमे गोपाय। यमृषंयस्त्रयीविदाविदुः ॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऋचः सामानि यजूँषि। सा हि श्रीरमृतासतां। *(यजुर्वेद - ब्राह्मण)*

इसके बाद पुनः नीचे लिखे वाक्यों को तीन बार यजमान कहें एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्य करिष्यमाण सूर्याद्भुतशान्त्याख्याय कर्मणः श्रीरस्त्विति भवंतो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मण कहते हैं)—ॐ अस्तु श्रीः। इन वाक्यों को तीन बार कहना चाहियें। वर्षशतं परि पूर्णमस्तु। गोत्राभिवृद्धिरस्तु। कर्माङ्ग देवता प्रीयताम्। (ब्राह्मण आशीर्वाद देते हैं—सौ साल पूर्ण हो। आप की वंश वृद्धि हो। कर्माङ्ग देवता आप पर प्रसन्न हो।)

ॐ शुक्रेभिरंगैरजं आततन्वान् क्रतुं पुनानः कविभिः पवित्रैः।
शोचिर्वसानः पर्यायुरपां श्रियोमिमीते बृहतीरनूनाः॥ *(ऋग्वेद ३.१.५)*
तदप्येषः श्लोकोभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे॥ आविक्षितस्य कामप्रेः विश्वेदेवाः सभासद इति॥

पुण्याह वाचन फल समृद्धिरस्तु—पुण्याहे कर्माङ्ग देवता प्रीयन्ताम्।

मातृका पूजनम्—पान सुपारी दक्षिणा के ऊपर कूर्च (कुश से बना) रखकर उसमें मातृका आवाहन करके उनमें मातृका पूजन करना चाहिये। नान्दी मण्डल के आगे मातृका पूजन करना चाहिये।

ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा। वाराही तथेन्द्राणी चामुण्डाः सप्तमातरः॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

सात मातृकायें।

गौरीपद्मा शचीमेधासावित्रीविजयाजया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धृतिः पुष्टिस्तथातुष्टिरात्मनः कुलदेवताः (गौर्यादि षोडश मातृकायें)। ब्राह्म्यादि सप्त मातृः गौर्यादि षोडश मातृः आवाहयामि। विनायकं आवाहयामि। दुर्गा आवाहयामि। क्षेत्रपालं आवाहयामि। गणपतिं आवाहयामि। मातृस्वसारं आवाहयामि। पितृस्वसारं आवाहयामि। एताभ्यो देवताभ्यो नमः। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। इनका षोडशोपचार पूजन करना याहिये। **उदाहरण**—आवाहित देवताभ्यो नमः। आसनं समर्पयामि आदि। षोडशोपचार पूजन संक्षेप में करें। (गणेश पूजन में है।)

अन्त में पुष्पांजलि मन्त्र—ॐ गौरीर्मिमाय सलिलानितक्षत्येकपदीद्विपदी सा चतुष्पदी।
अष्टापदी नवपदीबभूवुषी सहस्राक्षरापरमेव्योमन्॥ *(ऋग्वेद १.१६४.४१)*

ॐ भूर्भुवः स्वः आवाहित देवताभ्यो नमः। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि।

तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने शं योरस्मभ्यमिदमस्तुशस्तं। अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठां नमोदिवे बृहते सादनाय॥ *(ऋग्वेद ५.४७.७)*

गृहावै प्रतिष्ठासूक्तंतत्प्रतिष्ठि ततमयावाचाशंस्तव्यं तस्माद्यद्यपिदूर इव पशूँल्लभते गृहानेवैनानाजिगमिषति गृहाहिपशूनां प्रतिष्ठाप्रतिष्ठा। इन मन्त्रों को पढकर पुष्पाक्षत चढ़ायें।

मातृका पूजन समाप्तम्

आवाहित देवनान्दी पूजन—देवनान्दी में मातृका पूजन आवश्यक नहीं है। यज्ञ,(अतिरुद्र, सहस्रचण्डी) रथोत्सव आदि सार्वजनिक आचरणों में देवनान्दी ही करना चाहिये। **क्रतुदक्षावुत्सवे तु।** इस वाक्य से क्रतु एवं दक्ष नामक विश्वेदेव देवता हैं। देवनान्दी में पितृदेवता चार है। अमूर्त्य।

१. अग्निष्वात्ता, २. बर्हिषदः, ३. आज्यपाः, ४. सोमपाः

संकल्प—देशकालौ संकीर्त्य करिष्यमाण कर्माङ्ग भूतं नान्दीसमाराधनं करिष्ये। पहले दो मण्डल बनायें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दत्वातण्डुलपूर्णपात्रयुगले संकल्प्य भुक्तिं तयोः।
ताम्बूलादि सुदक्षिणान्तिकमनुज्ञातः समुद्वाहयेत्॥ *(लक्षण संहिता)*

दो पात्रों में चावल, काजू किशमिश, फल, दाल, आदि दो मण्डलों पर रखें।

ॐ आनो॑ भ॒द्राः क्रत॑वो यंतु॒विश्वतोद॑ब्धसो॒ अप॑रीता स उ॒द्भिदः॑।
दे॒वानो॒ यथा॒सद॒मिद्वृधे असन्न प्रा॑युवोरक्षि॒तारो॑ दि॒वे दि॑वे। *(ऋग्वेद १.८९.१)*

ॐ क्रतुदक्षसंज्ञका विश्वेदेदेवाः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवस्वः इयं च वृद्धिः। इससे दुर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। अग्निष्वात्ताः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोड़ें।

बर्हिषदः पितृगणाः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। **आज्यपाः पितृगणाः**—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दुर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। **सोमपाः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें।

ॐ क्रतुदक्ष संज्ञका विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचार कल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें।**ॐ अग्निष्वात्ताः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदं आसनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। **बर्हिषदः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। **आज्यपाः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, अक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें।

सोमपाः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, अक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। ॐभूर्भुवः स्वः सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि कहकर मण्डल पर रखे दोनों पात्रों को परिषेचन कर दक्षिणादिशा के पात्र को ''इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यः'' उत्तरदिशा के पात्र को ''इदं नान्दीमुख पितृभ्यः'' कहकर दान संकल्प कर ब्राह्मणों को दे देवें।

क्रतुदक्षसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। **अग्निष्वात्ताः पितृगणाः** नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोडकर नीचे रखना चाहिये। **बर्हिषदः पितृगणाः** नान्दीमुखाः गुग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं दमनामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। **आज्यपाः पितृगणाः** नान्दीमुखा युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोडकर नीचे रखना चाहिये।

सोमपाः पितृगणाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणा पर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। आगे लिखे मन्त्रों से खड़े होकर उपस्थान करें।

ॐ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभिदेवाँऽइयक्षते। *(ऋग्वेद ९.११.१)*

ॐ अभिते मधुना पयोथर्वाणो अशिश्रयुः। देवं देवाय देवयु। *(ऋग्वेद ९.११.२)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ स नः पवस्व शंगवे शंजनायशमर्वते। शंराजन्नोषधीभ्यः। *(ऋग्वेद ९.११.३)*

ॐ बभ्रवेनु स्वतवसेरुणायं दिविस्पृशे। सोमाय गाथमर्चत॥ *(ऋग्वेद ९.११.४)*

ॐ हस्तच्युतेभिरद्रिभिः सुतं सोमं पुनीतन। मधावाधावता मधु॥ *(ऋग्वेद ९.११.५)*

ॐ अक्षन्नमीं मदन्तह्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती यो जान्विन्द्र ते हरी॥ *(ऋग्वेद १.८२.२)*

ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्यन्यो विश्वाजातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयोरयीणाम्॥

(ऋग्वेद १०.१२१.१०)

कृतस्य देवनान्दी समाराधनस्य प्रतिठाफलसिद्ध्यर्थं द्राक्षामलक निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृये। कहकर हाथ में दक्षिणा लेकर उस पर जल छोडकर नीचे रख दें।

प्रार्थना—अग्निष्वात्वा बर्हिषदः आज्यपाः सोमपास्तथा। एते भवन्तु मे प्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम्॥ कहकर जल छोड़ें। **अनेन नान्दीसमाराधनेन नान्दीमुखदेवताः प्रीयंताम्। आचम्य**—मंगल तिलक रकें। **विसर्जन**—यज्ञ के अन्तिम दिन विसर्जन करें।

ॐ इळामग्नेपुरुदंसंसनिंगोः शश्वत्तमं हवमानायसाध। स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सातेसुमतिर्भूत्वस्मे॥ *(ऋग्वेद ३.१५.७)*

ॐ इळामुपह्वयते पशवो वा इळापशूनेवतदुपह्वयते। पशून्यजमानेदधाति दधाति॥ *(ऋग्वेद ब्राह्मण)*

यथाचारं हिरण्येन भाण्डवादनं। मन्त्र कहते हुए सिक्के से थाली के निचले भाग में शब्द करना चाहिये। (घण्टा वादन के बदले)

१. सर्वाद्भुत शान्ति याग के लिए-१—आचाय, एक कुण्ड में १-ब्रह्मा, ईशान्य में १-कलश पूजन, होमाङ्ग पूजन दक्षिण में १-इतर पूजन, पश्चिम में १-तर्पण के लिए, परिचारक (कर्मचारी) १-एक ब्राह्मण-कुल ५ पंण्डित रहने पर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१५ परिडत से संपन्न कर्म में—२-१५ परिडत कर्म में (एक कुराड में), २-१५ परिडत से संपन्न याग में—१ आचार्य, १ ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण पूजन, १-परिचारक ब्राह्मण, ९-ऋत्विज होम के लिए

३-५५ परिडत से संपन्न याग में—१- आचार्य (५ कुराड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण के लिए, १-परिचारक ब्राह्मण, ४५-ऋत्विज होम के लिए, ४-अग्निमुख जानकार उप आचार्य (९×५)

४-१०० परिडत से संपन्न या में—१-आचार्य (९ कुराड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण के लिए, ५-परिचारक ब्राह्मण, ८१-ऋत्विज होम के लिए, ९-अग्निमुख जानकार उपआचार्य (९×९), इसी अनुपात में अधिक संख्या में कर सकते हैं।

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उपप्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्रप्राशूर्भवा सचा॥ *(ऋग्वेद १.४०.१)*

ॐ अभ्यारमिद द्रयो निषिक्तं पुष्करे मधु। अवतस्य विसर्जने॥ *(ऋग्वेद ८.७२.११)*

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मत्कृताम्। इष्टकामार्थसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

(इन मन्त्रों से आवाहित देवताओं को उठाना चाहिये।)

देवनान्दी समाप्त

ब्राह्मण वन्दन— **ॐ नमो महद्भ्यो नमो अर्भकेभ्यो नमो युवभ्यो नम आशिनेभ्यः।**

यजाम देवान् यदि शक्नवाममाज्यायसः शंसमा वृक्षि देवाः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः॥ *(ऋग्वेद २७.१३)*

इस मन्त्र से ब्राह्मण पूजा करें। "करिष्यमाण कर्मणः आरम्भमुहूर्तः सुमुहुर्तो अस्तु इति अनुगृण्हन्तु"। यजमान पूछते है॥ "सुमुहूर्तमस्तु"।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सर्वतोभद्र मण्डल में देवता पूजनम्—मध्ये ब्रह्माणं, (मध्य में ब्रह्मा का आवाहन करें।) ब्रह्मजज्ञानं वामदेवो ब्रह्मात्रिष्टुप् ब्राह्मावाहने विनियोगः।

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः।
सबुध्नियां उपमाअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविवः॥ *(यजुर्वेद ४ काण्ड-२ प्रश्न-८ अनुवाक-४ मन्त्र)*

ॐभूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणमावाहयामि। भो ब्रह्मन् इहागच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **उत्तरे सोमं**—(उत्तर में सोम का आवाहन करें।) आप्यायस्व गोतमः सोमोगायत्री सोमावाहने विनियोगः।

ॐ आप्यायस्व समेतुते विश्वतःसोमवृष्णियं। भवावाजस्यसङ्गथे॥ *(ऋग्वेद १.९१.१६)*

ॐभूर्भुवः स्वः सोमय नमः। सोमं आवाहयामि। भो सोम इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **ईशान्यं ईशानं**—(ईशान्य दिशा में ईशन का आवाहन करें।) अभित्वा शुनः शेप ईशानो गायत्री ईशानावाहने विनियोगः।

ॐ अभित्वा देव सवितरीशानं वार्याणां। सदावन्भागमीमहे॥ *(ऋग्वेद १.२४.३)*

ॐभूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः। ईशानमावाहयामि। भो ईशान इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजा गृहाण वरदो भव। **पूर्वे इन्द्रं**—(पूर्व में इन्द्र का आवाहन करें।) इन्द्र वो मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री इन्द्रावाहने विनियोगः।

ॐ इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः॥ *(ऋग्वेद १.७.१०)*

ॐभूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि। भो इन्द्र इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव॥ **आग्नेयामग्निं**—(आग्नेय दिशा में अग्नि का आवाहन

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करें।) अग्निं दूतं मेधातिथिरग्निर्गायत्री अग्न्यावाहने विनियोगः।

ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्व वेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुं॥ *(ऋग्वेद १.१२.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः। अग्नेय नमः। अग्निमावाहयामि। भो अग्ने इहा गच्छ इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरणो भव। **दक्षिणे यमं**—(दक्षिण दिशा में यम का आवाहन करें।) यमाय सोमं यमोयमोनुष्टुप् यमावाहने विनियोगः।

ॐ यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हविः। यमंह यज्ञो गच्छत्यग्नि दूतो अरंकृतः॥ *(ऋग्वेद १०.१४.१३)*

ॐभूर्भुवः स्वः यमाय नमः। यममावाहयामि। भो यम इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **नैऋत्यां निर्ऋतिं**—(नैऋत्य दिशा में निर्ऋति को।) मोषुणाः करवो निर्ऋतिर्गायत्री निर्ऋत्या वाहने विनियोगः॥

ॐ मोषुणाः परापरा निर्ऋतिर्दुर्हणावधीत्। पदीष्टतृष्णयासह॥ *(ऋग्वेद १.३८.६)*

ॐभूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिमावाहयामि। भो निर्ऋति इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहाण। वरदो भव। **पश्चिमे वरुणं**—(पश्चिम दिशा में वरुण का आवाहन करें।) तत्वायामि शुनःशेपो वरुणास्त्रिष्टुप् वरुणावाहने विनियोगः।

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशं समान आयुः प्रमोषीः॥ *(ऋग्वेद १.२४.११)*

ॐभूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। वरुणमावाहयामि। भो वरुण इहागच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **वायव्यां वायुं**—(वायव्य दिशा में वायु का आवाहन करें।) वायोशतं वामदेवो वायुरनुष्टुप् वाय्वावाहने विनियोगः।

ॐ वायोशतं हरीणां युवस्व पोष्याणां। उतवाते सहस्त्रिणो रथआयातुपाजसा। *(ऋग्वेद ४.४८.५)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः। वायुमावाहयामि। भो वायो इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहाण। वरदो भव। **वायुसोममध्ये अष्टवसून्**—वायु एवं सोम के बीच में अष्ठ वसुओं को (वायव्य एवं उत्तर के बीच में) ज्मया अत्र वसिष्ठो वसवस्त्रिष्टुप् व स्वावाहने विनियोगः।

ॐ ज्मया अत्र वसवो रन्तदेवाउरावन्तरिक्षे मर्जयन्त शुभ्राः।
आर्वाक्पथ उरुज्रयः कृणुध्वं श्रोतादूतस्यजग्मुषोनो अस्य॥ *(ऋग्वेद ७.३९.३)*

ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो नमः। अष्टवसून् आवाहयामि। भो अष्टवसवः इहा गच्छ। इह तिष्ठतः। पूजां गृहाण। वरदो भवत। **सोमेशानयोर्मध्ये एकादशमरुद्रान्**—(सोमन एवं ईशान के बीच में एकादश रुद्रों का आवाहन करें।) (उत्तर एवं ईशान के बीच में) आरुद्रा सः श्यावाश्व एकादश रुद्रो जगती। एकादशरुद्रावाहने विनियोगः।

ॐ आरुद्रासइन्द्रवन्तः सजोषसो हिरण्यरथाः सुवितायगंतन।
इयं वो अस्मत्प्रतिहर्यतेमतितृष्णाजेन दिवउत्साउदन्यवे। *(ऋग्वेद ५.५७.१)*

ॐ भूर्भुवः स्वः एकादशरुद्रेभ्यो नमः। एकादश रुद्रानावाहयामि। भो एकादशरुद्राः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृषीत। वरदा भवत। **ईशानेन्द्रयोर्मध्ये द्वादशादित्यान्**—(ईशान्य एवं पूर्व के बीच में द्वादशादित्यों का आवाहन करें।) त्यांनुमत्स्योमान्योवा द्वादशादित्यागायत्री द्वादशादित्या-वाहने विनियोगः।

ॐ त्यांनुक्षत्रियाँ अवं आदित्यान्याचिषामहे। सुमृळीकाँअभिष्टये॥ *(यजुर्वेद-२ काण्ड-१ प्रश्न-११ अनुवाक-१८ मन्त्र)*

ॐ भूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः। द्वादशादित्यानावाहयामि। भो द्वादशादित्याः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृह्णीत। वरदो भवत। **इन्द्राग्निमध्ये अश्विनौ**—(पूर्वा एवं आग्नेय के बीच में अश्विनी देवताओं को आवाहन करें।) अश्विनावर्तिर्गोतमोश्विनावुष्णिक् अश्व्यावाहने विनियोगः।

ॐ अश्विनावर्तिरस्मदागोमद्दस्राहिरण्यवत्। अर्वाग्रथंसमनसानियच्छतं॥ *(ऋग्वेद १.९२.१६)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐभूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः। अश्विनौ आवाहयामि। भो अश्विनौ इहा गच्छतं। इह तिष्ठतं पूजां गृषीतं। वरदौ भवतं। **अग्नियम मध्ये विश्वेदेवान् सपैतृकान्**—(आग्नेय एवं दक्षिण के बीच में पितृसाहित विश्वेदेवों का आवाहन करें।) ओमासोमधुच्छंदाविश्वेदेवा गायत्री। विश्वेदेवावाहने विनियोगः।

ॐ ओमासश्चर्षणीधृतो विश्वेदेवा स आगत। दाश्वांसो दाशुषः सुतं॥ (ऋग्वेद १.३.७)

ॐभूर्भुवः स्वः विश्वेभ्योदेवेभ्यो नमः विश्वान् देवान् आवाहयामि। भो विश्वेदेवाः इहा गच्छत। इह तिष्ठंत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **यम निर्ऋतिमध्ये सप्तयक्षान्**—(दक्षिण एवं नैर्ऋत्य के बीच में सप्त यक्षों का आवाहन करें।) अभित्यं वामदेवः सप्तयक्षा अष्टी। सप्तयक्षावहने विनियोगः।

ॐ अभित्यं देवं..सविताराम्रोरयोः कविक्रतुर्चामि सत्यसवस..रत्नधामभिप्रियंमतिमूर्ध्वा यस्यामतिर्भा अदिद्युतत्सवीमनिहिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपासुवः॥ (यजुर्वेद-१ काण्ड-२ प्रश्न-६ अनुवाक)

ॐभूर्भुवः स्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः सप्तयक्षान् आवाहयामि। भो सप्तयक्षाः इहा गच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **निर्ऋति वरुण मध्ये भूतनागान्**—(नैर्ऋत्य एवं पश्चिम के बीच में भुतगण एवं नागों का आवाहन करें।) आयङ्गो सार्पराज्ञी सर्पा गायत्री। सर्पावाहने विनियोगः।

आयं गौः पृश्निरक्रमीद सदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥ (ऋग्वेद १०.१८९.१)

ॐभूर्भुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः। सर्पान् आवाहयामि। भो सर्पाः इहागच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **वरुणवायुमध्ये गंधर्वाप्सरसः**—(पश्चिम एवं वायव्य के बीच में गन्धर्व एवं अप्सराओं का आवाहन करें।) अप्सरसामृष्यशृङ्गोगंधर्वाप्सरसोनुष्टुप्। गन्धर्व अप्सरावाहने विनियोगः।

ॐ अप्सरसां गन्धर्वाणां मृगाणां चरणेचरन्। केशीकेतस्य विद्वान्त्सखास्वादुर्मदिन्तमः॥ (ऋग्वेद १.१६३.६)

ॐभूर्भुवः स्वः गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः। गन्धर्वाप्सरस आवाहयामि। भो गन्धवाप्सरसः इहा गच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत।

ब्रह्म सोममध्ये स्कन्दं नन्दीश्वरं शूलं महाकालं च

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(मध्ये में स्थित ब्रह्मा एवं सोम (उत्तर) के मध्य में स्कन्द नन्दीश्वर शूल एवं महाकाल का आवाहन करें।) यदक्रंदो दीर्घतमास्कंदस्त्रिष्टुप्। स्कंदावाहने विनियोगः।

ॐ यदक्रंदः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुतवा पुरीषात्।
श्येनस्यपक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महिजातंते अर्वन्॥ *(ऋग्वेद १.१६३.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः। स्कन्दमावाहयामि। भो स्कन्द इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव। ऋषभमृषभो नन्दीश्वरोनुष्टुप्। **नन्दीश्वरावाहने विनियोगः।**

ॐ ऋषभं मासमानानां सपत्नानां विषासहिं। हंतारं शत्रूणां कृधि विराजं गोपतिं गवां॥ *(ऋग्वेद १०.१६६.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः नन्दीश्वराय नमः नन्दीश्वरं आवाहयामि। भो नंदीश्वर इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव। कद्रुद्राय घौरः कराव: शूलो गायत्री शूलावाहने विनियोगः।

ॐ कद्रुद्राय प्रचेतसेमीह्लुष्टमायतव्यसे। वोचेमशतंमंहदे॥ *(ऋग्वेद १.४३.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः शूलायनमः शूलमावाहयामि। भो शूल इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव। कुमारं माता कुमारी महाकालस्त्रिष्टुप्। **महाकालावाहने विनियोगः।**

ॐ कुमारं मातायुवतिः समुब्धङ्गुहाबिभर्ति न ददातिपित्रे।
अनीकमस्य नमिनज्जनासः पुरः पश्यंति निहितमरतौ॥ *(ऋग्वेद ५.२.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः महाकालाय नमः। महाकालमावाहयामि। भो महाकाल इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूहां गृहाण। वरदो भव। **ब्रह्मेशानमध्ये दक्षं**—(बीच में विद्यमान ब्रह्मा एवं ईशान्य दिशा के बीच में दक्ष का आवाहन करें।) अदतिर्बृहस्पतिर्दक्षोनुष्टुप्। दक्षावाहने विनियोगः।

ॐ अदितिर्ह्यजनिष्टदक्षयादुहितातव। तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबंधवः॥ *(ऋग्वेद १०.७२.५)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐभूर्भुवः स्वः दक्षाय नमः। दक्षमावाहयामि। भो दक्ष इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव। ब्रह्मेन्द्रमध्ये दुर्गां विष्णुं च (ब्रह्मा एवं इन्द्र के बीच में अर्थात् बीच में स्थित ब्रह्मा एवं पूर्व के बीच में दुर्गा एवं विष्णु का आवाहन करें।) तामग्निवर्णां सौभरिदुर्गात्रिष्टुप्। दुर्गावाहने विनियोगः।

ॐ तामग्निवर्णां तपसाज्वलंतीं वैरोचनीं कर्मफलेषुजुष्टां।

दुर्गां देवीं शरणमहंप्रपद्ये सुतरसितरसे नमः॥ *(यजुर्वेद-दुर्गासूक्त)*

ॐभूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः। दुर्गां आवाहयामि। भो दुर्गे इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदा भव। इदं विष्णुर्मेधातिथिर्विष्णुगायत्री। विष्णवावाहने विनियोगः।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदं। समूह्लमस्य पांसुरे॥ *(ऋग्वेद १.२२.१७)*

ॐभूर्भुवः स्वः विष्णावेनमः। विष्णुं आवाहयामि। भो विष्णो इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहाण। वरदो भव। ग्रह्माग्नि मध्ये स्वधां (बीच में स्थित ब्रह्मा एवं आग्नेय दिशा के बीच में स्वधा को) उदीरतां शंखः स्वधा त्रिष्टुप्। स्वधावाहने विनियोगः।

ॐ उदीरता मवरउत्परासउन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुंय ईयुरवृकाऽऋतज्ञास्तेनोवंतु पितरो हवेषु॥

(ऋग्वेद १०.१५.१)

ॐभूर्भुवः वः स्वधायै नमः। स्वधामावाहयामि। भो स्वधे इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदा भव। **ब्रह्म यममध्ये मृत्युरोगान्**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं दक्षिण दिशा के बीच में मृत्यु एवं रोगों का आवाहन करें।) परं मृत्यो संकुसुकोमृत्युरोगास्त्रिष्टुप्। मृत्युरोगावाहने विनियोगः।

ॐ परं मृत्यो अनुपरेहिपंथांयस्तेस्व इतरोदेवयानात्। चक्षुष्मते शृण्वतेतें ब्रवीमिमानः प्रजारीरिषोमोत वीरान्॥

(ऋग्वेद १०.१८.१)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ भूर्भुवः स्वः मृत्युरोगेभ्यो नमः। मृत्यरोगान् आवाहयामि। भो मृत्युरोगाः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृषीत। वरदा भवत। ब्रह्म निर्ऋतिमध्ये गणापतिं (बीच में स्थित ब्रह्मा एवं नैऋत्य दिशा के बीच में गणापति का आवाहन करें।) गणानान्त्वा शौनकोगृत्समदो गणापतिर्जगती। गणापत्या वाहने विनियोगः।

ॐ गणानांत्वागणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमं।
ज्येष्ठराजंब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन्नूतिभिः सीदसादनं॥ *(ऋग्वेद २.२३.१)*

ॐ भूर्भुवः स्वः गणापतये नमः। गणपतिमावाहयामि। भो गणपति इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **ब्रह्मवरुणमध्ये अपः**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं पश्चिम दिशा के बीच में जल का आवाहन करें।) शंनोदेवीः सिंधुद्वीप आपो गायत्री। अप् आवाहने विनियोगः।

ॐ शंनोदेवीरभिष्टय आपो भवंतु पीतये। शंयोरभिस्त्रवंतु नः॥ *(ऋग्वेद १०.९.४)*

ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः। अपः आवाहयामि। भो आपः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **ब्रह्मवायुमध्ये मरुतः**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं वायव्य दिशा के बीच में मरुत् का आवाहन करें।) मरुतोयस्यगोतमो मरुतो गायत्री। मरुदावाहने विनियोगः

ॐ मरुतोयस्य हि क्षयेपाथा दिवोविमहसः। स सुगोपातमोजनः *(ऋग्वेद १.८६.१)*

ॐ भूर्भुवः स्वः मरुद्भ्यो नमः। मरुतः आवाहयामि। भो मरुतः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृहणीत। वरदा भवत। ब्रह्मणः पादमूले कर्णिकाधः पृथिवीं (बीच में स्थित ब्रह्मा जी के नीचे पादमूल में पृथिवी का आवाहन करें।) स्योना पृथिवी मेधातिथिर्भूमिर्गायत्री। भूम्यावाहने विनियोगः।

ॐ स्योना पृथिवि भवानृक्षरानिवेशनी। यच्छानः शर्म सप्रथः॥ *(ऋग्वेद १.२२.१५)*

ॐ भूर्भुवः स्वः भूम्यै नमः। भूमिं आवाहयामि। भो भूमे इहा गच्छा। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदा भव। **तत्रैव गङ्गादिसर्वनद्यः**—(उसी स्थान पर अर्थात पृथिवी पर ही गङ्गादि सभी नदियों का आवाहन करें।) इमं मे गङ्गे सिंधुक्षित्प्रैयमेधानद्यो जगती। गङ्गादिनद्यावाहने विनियोगः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ इमं मे गङ्गेयमुनेसरस्वतिशुतुद्रिस्तोमं सचतापरुष्णया। असिक्न्यामं रुद्वधेवितस्तया जींकीयेशृणुह्या सुषोमया॥

(ऋग्वेद १०.७५.५)

ॐभूर्भुवः स्वः गङ्गादि नदीभ्यो नमः। गङ्गादि नदीः आवाहयामि। भो गङ्गादिनद्यः इहागच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृहणीतां। वरदा भवत। तत्रैव सप्तसागराः। (वहीं पर सात सागरों का आवाहन करें।) धाम्नो धाम्नो वामदेवः सप्तसागरा ऋष्टी। सप्त सागरावाहने विनियोगः।

ॐ धाम्नो धाम्नो राजन्नितो वरुणानोमुञ्च। यदापो अध्न्या इति वरुणोतिशपामहेततो वरुणानोमुञ्च।
मयिवापोमोषधीहिं सीरतो विश्वव्यचा भूस्त्वेतो वरुणानो मुञ्च॥ *(यजुर्वेद-१ काण्ड-३ प्रश्न-११ अनुवाक-१५ मन्त्र)*

ॐभूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः। सप्तसागरान् आवाहयामि। भो सप्तसागराः इहागच्छत। इह तिष्ठतः। पूहां गृहणीत। वरदा भवत। तदुपरि मेरवे नमः। मेरुं आवाहयामि। (उसके ऊपर मेरु पर्वत का आवाहन करें।) (भूमि पर) सोमसमीपे गदायै नमः। गदां आवाहयामि। (सोम के पास (उत्तर) गदा का आवाहन करें।) ईशान समीपेत्रिशूलाय नमः। त्रिशूलं आवाहयामि।। (ईशान के पास ईशान में त्रिशूल का आवाहन करें।) इन्द्रसमीपे वज्राय नमः। वज्रं आवाहयामि। (इन्द्र के पास पूर्व में वज्र का आवाहन करें।) अग्नि समीपे शक्तये नमः। शक्तिं आवाहयामि। (अग्नि के पास आग्नेय में शक्ति का आवाहन करें।) यम समीपे दण्डाय नमः। दण्ड आवाहयामि। (यम के पास दक्षिण में दण्ड का आवाहन करें।) निर्ऋति समीपे खड्गय नमः। खड्गमावाहयामि। (निर्ऋति के पास नैऋत्य के खड्ग का आवाहन करें।) वरुण समीपे पाशाय नमः। पाशं आवाहयामि। (वरुण के पास पश्चिम में पाश का आवाहन करें।) वायु समीपे अंकुशाय नमः। अंकुशं आवाहयामि। (वायु के पास वायव्य दिशा में अंकुश का आवाहन करें।)

तद्वाहये उत्तरादि क्रमेण (मण्डल के बाहर) गौतमाय नमः। गौतमं आवाहयामि। (उत्तर में गौतम जी का आवाहन करें।) भारद्वाजाय नमः। भरद्वाजं आवाहयामि। (ईशान में भरद्वाज जी का आवाहन करें।) विश्वामित्राय नमः। विश्वामित्रं आवाहयामि। (पूर्व में विश्वामित्र जी का आवाहन करें।) कश्यपाय

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नमः। कश्यपं आवाहयामि। (आग्नेय में अश्यप जी का आवाहन करें।) जमदग्नये नमः। जमदग्निं आवाहयामि। (दक्षिण में जमदग्नि जी का आवाहन करें।) वसिष्ठाय नमः। वसिष्ठं आवाहयामि। (नैर्ऋत्य में वसिष्ठ जी का आवाहन करें।) अत्रये नमः। अत्रिं आवाहयामि। (पश्चिम में अत्रि जी का आवाहन करें।) अरुंधत्यै नमः। अरुंधतीं आवाहयामि। (वायव्ये में अरुंधति जी का आवाहन करें।) ततः पूर्वादि क्रमेण मातृः। (पूर्वादि क्रम से मण्डल के बाहर मातृगणों का आवाहन करें।) ऐंद्र्यै नमः। ऐन्द्रीं आवाहयामि। (पूर्व में ऐन्द्री का आवाहन करें।) कौमार्यै नमः। कौमारीं आवाहयामि। (आग्नेय में कौमारी का आवाहन करें।) ब्राह्मै नमः। ब्राह्मीं आवाहयामि। (दक्षिण में ब्राह्मी का आवाहन करें।) वाराह्यै नमः। वाराहीं आवाहयामि। (नैर्ऋत्य में वाराही का आवाहन करें।) चामुण्डायै नमः। चामुण्डां आवाहयामि। (पश्चिम में चामुण्डा का आवाहन करें।) वैष्णव्यै नमः वैष्णवीं आवाहयामि। (वायव्य में वैष्णवी का आवाहन करें।) वैनायक्यै नमः वैनायकीं आवाहयामि। (ईशान्य में वैनायकी का आवाहन करें।) इति सर्वतो भद्र देवताः। (यहाँ पर सर्वतोभद्रमण्डल में विद्यमान सभी देवताओं का आवाहन संपन्न हुआ।)

ॐ तदस्तु मित्रावरुणा तदग्नेशंयोरस्मभ्यमिदमस्तु शस्तं। अशीमहि गाधमुतप्रतिष्ठां नमो दिवे बृहते सादनाय॥

(ऋग्वेद ५.४७.७)

गृहावै प्रतिष्ठासूक्तं तत् प्रतिष्ठिततमया वाचाशंस्तव्यं तस्माद्यद्यपिदूर इव पशूँलभते गृहानेवै नानाजिगमिषति गृहाहिपशूनां प्रतिष्ठा प्रतिष्ठा॥

ॐ नर्यप्रजां मे गोपाय॥ अमृतत्वाय जीव से॥ जातां जनिष्यमाणां च॥ अमृते सत्वे प्रतिष्ठितां॥ *(यजुर्वेद-ब्राह्मण)*

एताः ब्रह्मादि देवताः सुप्रतिष्ठिताः सन्तु। (इन मन्त्रों को कहकर आवाहित ब्रह्मादि देवताओं का प्रतिष्ठा करें।)

ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः। सुबुध्नियां उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चविवः॥ *(यजुर्वेद-४ काण्ड-२ प्रश्न-८ अनुवाक-४ मन्त्र)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनेन मंत्रेण पूजयेत्। (इस मन्त्र से पूजन करें।) ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। स्वागतं समर्पयामी। पादारविन्दयोःपाद्यं पाद्यं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ आपो॒हिष्ठा मयो॒भुवः तानं ऊ॒र्जे द॑धातन। म॒हेरणा॑य चक्ष॑से॥
यो वः॑ शि॒वतमो॒रस॒स्तस्य॑ भाजयते॒ हनः॑। उ॒श॒तीरि॑व मा॒तरः॑॥
तस्मा॒ अरं॑गमामवो॒ यस्य॒ क्षया॑य॒ जिन्व॑थ। आपो॑ज॒नय॑था च नः॥ *(ऋग्वेद १०.६.१)*

स्नानं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। स्नानाङ्ग आचमनं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ यु॒वं वस्त्रा॑णि पीव॒सा व॑साथे यु॒वोरच्छि॑द्रा॒मन्त॑वोह॒सगाः॑। अवातिरत॒मनृ॑तानि॒ विश्वं॑ ऋ॒तेन॑ मित्रा वरुणा॒ यचेथे॥

(ऋग्वेद १.१५२.१)

वस्त्रयुग्मं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ यज्ञो॑पवी॒तं पर॑मं पवि॒त्रं प्र॒जाप॑ते॒र्यत् स॒हजं॑ पु॒रस्ता॑त्। आ॒युष्य॒मग्र्यं॒ प्रति॑मुंच शु॒भ्रं यज्ञो॑पवी॒तं बल॑मस्तु॒ तेजः॑॥

(ऋग्वेद)

यज्ञोपवीतं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ हिर॑ण्यरूपः॒ स हिर॑ण्य संदृग॒पान्नपा॒त् सेदु हिर॑ण्यवर्णाः। हि॒रण्ययात्॒ परि॒योनेर्नि॒षद्या॑हिरण्य॒ दाद॑दत्य॒न्नमस्मै॥

(ऋग्वेद २.३५.१०)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आभारणं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ गन्धं द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीं। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

गन्धं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उतपुरन्न धृष्णवर्चत॥ (ऋग्वेद ८.६९.८)

अक्षतान् समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ आयने ते परायणे दूर्वारोहन्तु पुष्पिणीः। ह्रदाश्च पुण्डरीकाणि समुद्रस्य गृहा इमे। पुष्पाणि समर्पयामि।

(ऋग्वेद १०.१४२.८)

नाम पूजां करिष्ये—ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ सोमाय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नेय नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ अष्टवसुभ्यो नमः। ॐ एकादश रुद्रेभ्यो नमः। ॐ द्वादशादित्येभ्यो नमः। ॐ अश्विभ्यां नमः। ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सप्तयक्षेभ्यो नमः। ॐ भूतनागेभ्यो नमः। ॐ गंधर्वाप्सरोभ्यो नमः। ॐ स्कन्दाय नमः। ॐ नन्दीश्वराय नमः। ॐ शूलाय नमः। ॐ महाकालाय नमः। ॐ दुर्गायै नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ स्वधायै नमः। ॐ मृत्युरोगेभ्यो नमः। ॐ गणपतये नमः। ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ मरुद्भ्यो नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ गङ्गादि सर्वनदीभ्यो नमः। ॐ सप्त सागरेभ्यो नमः। ॐ मेरवे नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्तये नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अंकुशाय नमः। ॐ गौतमाय नमः। ॐ भरद्वाजाय नमः। ॐ विश्वामित्राय नमः। ॐ कश्यपाय नमः। ॐ जमदग्नये नमः। ॐ वसिष्ठाय नमः। ॐ अत्रये नमः। ॐ अरुन्धत्यै नमः। ॐ ऐन्द्र्यै नमः। ॐ कौमार्यै नमः। ॐ ब्राह्मै नमः। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ वैनायक्यै नमः। (देवताओं के ५७ समूह।) नाम पूजां समर्पयामि। (ये सभी देवता सर्वतो भद्र मण्डल से आवाहित हैं।) ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढयः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥ धूपं आघ्रापयामि। *(प्रयोगरत्नाकर)*

ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

आज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

दीपं दर्शयामि धूपदीपानन्तरं आचमनं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। (नैवेद्य को गायत्री मन्त्र से प्रोक्षण करें नैवेद्य मण्डल पर रखें। **सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि।** इस मन्त्र से परिषिञ्चन करें।) **अमृतोपस्तरणमसि** कहकर जल छोड़ें। ॐ प्राणाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं कनिष्ठिका मिलाकर) ॐ अपानाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर) ॐ व्यानाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर) ॐ उदानाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर) ॐ समानाय स्वाहा (सभी अङ्गुलियों को मिलाकर) ॐ देवेभ्यः स्वाहा नैवेद्यं निवेदयामि। **अमृतापिधानमसि** कहकर जल छोड़ें। नैवेद्यं विसर्जयामि। हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। गण्डूषं समर्पयामि। पुनराचमनं समर्पयामि। (कहकर जल छोड़ें) ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

पूगीफल समायुक्तं नागवल्ल्यादलैर्युतम्। चूर्णा कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यतां। क्रमुक ताम्बूलं समर्पयामि। *(देवपूजा)*

ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ अर्चंत प्रार्चंत प्रियमेधा सो अर्चंत। अर्चन्तु पुत्र का उत पुरं न धृष्णवर्चत। *(ऋग्वेद ८.६९.८)*

ॐ ध्रुवाद्यौ ध्रुवापृथिवीध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्॥

ॐ ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ *(ऋग्वेद १०.१७३.५)*

मङ्गलनीराजनं समर्पयामि। नीराजनान्ते परिमल पत्र पुष्पाणि समर्पयामि। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। प्रदक्षिणां समर्पयामि। नमस्कारान् समर्पयामि।

देवाराधनमण्डलं सुरगणावासं सदामङ्गलं। कुर्तुः दर्शनमात्रतः शुभकरं तत् पञ्च भूतात्मकं॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अर्णाद्यक्षरसंयुतं भयहरं तद् याग पुण्यार्जितं। नानामन्त्रमयं समस्त फलदं ध्यायेन्मनोनन्दनं॥
अरिष्टानि बहून्यस्मिन् दुष्कृतानि शतानि च। मण्डलानि निरीक्षन्ते यथा युद्धेषु कातराः॥ (अनुष्ठान पद्धति)

(युद्ध भूमि में कायर जैसे देखते ही भीत हो जाते हैं, वैसे ही मण्डल को देखते ही सभी अरिष्ट दूर हो जाते हैं।) **अनया पूजया ब्रह्मादि मण्डल देवताः प्रीयन्तां** यहाँ पर सर्वतोभद्र मण्डल पूजन संपन्न हुआ।

प्रधान देवता सूर्य षोडशोपचार पूजन

ध्यान — कालिंगं ग्रहमध्य भागनिलयं प्राचीमुखं वर्तुलं,। रक्तं रक्तविभूषणाध्वजरथच्छत्रश्रियाशेभितम्॥ सप्ताश्वं कमलद्वयान्वितकरं पद्मासनं काश्यपं। मेरोर्दिव्य गिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे भास्करम्॥ ॐ घृणिः सूर्यआदित्यः।

आवाहन-ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतोवृत्वात्यं तिष्ठद् दशांगुलम्॥ (ऋग्वेद १०.९०.१)
ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजत स्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीसूर्याय नमः। आवाहयामि। आवाहनं समर्पयामि।

आसनम्—ॐ पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेना तिरोहं ति॥ (ऋग्वेद १०.९०.२)
ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। आसनं समर्पयामि।

पाद्यम्— ॐ एतावानस्य महिमाऽतो ज्यायाँश्च पुरुषः। पादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ (ऋग्वेद १०.९०.३)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं— ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः। ततो विश्वं व्यक्रामत् साशनानशने अभि॥ (ऋग्वेद १०.९०.४)

ॐ कां सोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।

पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहो पह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—ॐ तस्माद्विराळजायत विराजो अधिपूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथोपुरः। (ऋग्वेद १०.९०.५)

ॐ चंद्रां प्रभासां यशसा ज्वलंतीं श्रियं लोके देवजुष्टा मुदाराम्।

तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणो॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् (दूध)— ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियं। भवावाजस्य संगथे। (ऋग्वेद १०.९१.१६)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। पयः स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवेनातिं भवे भवस्वमाम् भवोद्भवाय नमः॥

(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत् आरण्यक)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि

दहि— ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनोमुखा करत्प्रण आयूंषितारिषत्॥ (ऋग्वेद ४.३९.६)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। दधि स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमश्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमःकलविकरणाय नमोबलाय नमो बलप्रमथनाय नमस्सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः। (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्मयामि।

घी— ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्ययोनिर्घृते श्रितो घृतं वस्य धाम।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभवक्षि हव्यम्॥ (ऋग्वेद २.३.११) ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। घृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोर तरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

मधु (शहद)—ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरंति सिंधवः। माध्वीर्नः संत्वोषधीः॥ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवंतु नः॥ (ऋग्वेद १.९०.६) ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। मधु स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्पयामि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शर्करा (शक्कर)—ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिंद्राय सुहवीतु नाम्ने।
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमाँ अदाभ्यः॥ (ऋग्वेद ९.८५.६)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शर्करा स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जन—ॐ ईशानस्सर्वं विद्यानामीश्वरस्सर्वं भूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोऽम्॥ (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

फल— ॐ याः फलिनी र्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वं हसः॥ (ऋग्वेद १०.९७.१५)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। फल स्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक—ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तानऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥ यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयते हनः।
उशतीरिव मातरः॥ तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः। (ऋग्वेद १०.९.१-२-३)
ॐ कद्रुद्राय प्रचेतसे मीळ्हुष्टमाय तव्यसे। वोचेम शंतमं हृदे॥ (ऋग्वेद १.४३.१)
ॐ यथा नो अदितिः करत्पश्वे नृभ्यो यथा गवे। यथा तोकाय रुद्रियम्॥ (ऋग्वेद १.४३.२)
ॐ यथा नो मित्रो वरुणो यथा रुद्रश्चिकेतति। यथा विश्वे सजोषसः।
ॐ गाथपतिं मेधपतिं रुद्रं जलाषभेषजम्। तच्छं योः सुम्नमीमहे॥
ॐ यः शुक्र इव सूर्यो हिरण्यमिव रोचते। श्रेष्ठो देवानां वसुः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ शं नः करत्यर्वं ते सुगं मेषाय मेष्यें। नृभ्यो नारिभ्यो गवें॥
ॐ अस्मे सोम श्रियमधि नि धेंहि शतस्यं नृणाम्। महिश्रवंस्तुविनृम्णाम्॥
ॐ मानः सोमपरिबाधो मारातयो जुहुरंत। आ नं इंदो वाजें भज॥
ॐ यास्तें प्रजा अमृतस्य परंस्मिन्धामन्नृतस्यं। मूर्धा नाभां सोमवेन आ भूषंतीः सोम वेदः॥ *(ऋग्वेद १.४३.३-४-५-६-७-८-९)*

ॐ नमः सोमाय च रुद्रायं च नमंस्ताम्रायं चारुणायं च नमः शंगायं च पशुपतंये च नमं उग्रायं च भीमायं च नमों अग्रेवधायं च दूरेवधायं च नमों हन्त्रे च हनींयसे च नमों वृक्षेभ्यो हरिंकेशेभ्यो नमंस्ताराय नमः शंभवें च मयोभवें च नमः शंकरायं च मयस्करायं च नमः शिवायं च शिवतंराय च नम स्तीर्थ्यायच कूल्यांय च नमः पार्यांय चावार्यायं च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमं आतार्यांय चालाद्यांय च नमशष्प्याय च फेन्यांय च नमःसिकत्यांय च प्रवाह्यांय च। *(यजुर्वेद-४ काण्ड-५ प्रश्ने-८ अनुवाक)*

ॐ तच्छंयोरावृणीमहे। गातुं यज्ञायं। गातुं यज्ञ पंतये। दैवीः स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिर्मानुंषेभ्यः।
ऊर्ध्वं जिंगातु भेषजम्। शं नों अस्तु द्विपदें। शं चतुंष्पदे। ॐ शांतिः शांतिः। शांतिः॥ *(यजुर्वेद-आरण्यक)*
ॐ यत्पुरुषेण हविषां देवा यज्ञमतन्वत। वसंतो अंस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ *(ऋग्वेद १०.९०.६)*
ॐ आदित्यवर्णो तपसोऽधिंजातो वनस्पतिस्तवं वृक्षोऽथं बिल्वः।
तस्य फलांनि तपसा नुंदंतु मायांतरा याश्चं बाह्या अलक्ष्मीः। *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वस्त्र— ॐ युवं वस्त्राणि पीवसावसाथे युवोरच्छिद्रा मंतवो हसर्गाः।
अवातिरममनृतानि विश्वं ऋतेन मित्रा वरुणा सचेथे॥ (ऋग्वेद १.१५२.१)
ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजंत साध्या ऋषयश्च ये॥ (ऋग्वेद १०.९०.७)
ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥

(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतं—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरास्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशूंस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान् ग्राम्याश्च ये॥ (ऋग्वेद १०.९०.८)
ॐ क्षुत् पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

आभरण—ॐ हिरण्यरूपः स हिरण्य संदृगपान्नपात् सेदु हिरण्यवर्णः। हिरण्ययात् परियोनेर्निषद्या हिरण्यदा ददत्यन्नमस्मै॥

(ऋग्वेद २.३५.१०)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। आभरणं समर्पयामि।

गन्ध— ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्य जुस्तस्मादजायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०.९)*

ॐसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। गन्धं समर्पयामि।

अक्षत—ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उतपुरंन्न धृष्णवर्चत॥ *(ऋग्वेद ८.६९.८)*

ॐसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि—ॐ आयने ते परायणे दूर्वारोहंतु पुष्पिणीः। ह्रदाश्च पुण्डरीकाणि समुद्रस्य गृहा इमे॥ *(ऋग्वेद १०.१४२.८)*

ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावोहजज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजावयः॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१०)*

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। पुष्पाणि समर्पयामि।

प्रथमावरण पूजनम्—ॐहृदयाय नमः। आग्नेय दिशि। ॐशिरसे स्वाहा नमः। ऐशान्यां दिशि। ॐशिखायै वषट् नमः। नैर्ऋत्यां दिशि। ॐकवचाय हुम् नमः। वायव्यां दिशि। ॐनेत्रत्रयाय वौषट् नमः। अग्रे ॐअस्त्राय फट् नमः। आग्नेयादि कोणेषु पूजयेत् *(अनुष्ठान पद्धति)*। पूजन करे।

द्वितीयावरण पूजनम्—ॐइन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्णाय वज्रहस्ताय ऐरावत वाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवारायश्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐअग्नये तेजोधिपतये पिंगलवर्णाय शाक्ति हस्ताय मेष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय स वाहनाय स परिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नमः। ॐयमाय प्रेताधिपतये कृष्णावर्णाय दण्ड हस्ताय महिष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नमः। ॐनिर्ऋतये रक्षोधिपतये रक्तवर्णाय खड्ग हस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नमः। ॐवरुणाय जलाधितये कुंदवर्णाय पाशहस्ताय मकरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सूर्यमूति पार्षदाय नमः। ॐवायवे

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्राणाधिपतये धूम्रवर्णाय अंकुश हस्ताय हरिणवाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐसोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्णाय गदा हस्ताय अश्व वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नमः। ॐईशानाय विद्याधिपतये स्फटिकवर्णाय त्रिशूल हस्ताय वृषभ वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐअनंताय नागाधिपतये क्षीरवर्णाय चक्रहस्ताय गरुड वाहनाय स शक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। नैर्ऋत्यं एवं पश्चिम दिशा के बीच में अनन्त का पूजन करें। ॐब्रह्मणो लोकाधिपतये कंजवर्णाय पाशहस्ताय हंसवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्तिपार्षदाय नमः। पूर्व एवं ईशान दिशा के बीच में ब्रह्मा जी का पूजन करें। *(अनुष्ठान पद्धति)*

तृतीयावरणपूजनम्—ॐवज्राय नमः। (पूर्व में) ॐशक्त्यै नमः। (आग्नेय में) ॐदण्डाय नमः। (दक्षिण में) ॐखड्गाय नमः। (नैर्ऋत्य) ॐपाशाय नमः। (पश्चिम में) ॐअंकुशाय नमः। (वायव्य में) ॐगदायै नमः। (उत्तर में) ॐत्रिशूलाय नमः। (ईशान में) ॐचक्राय न मः। (पश्चिम नैर्ऋत्य के बीच में) ॐपद्माय नमः। (पूर्व ईशान के बीच में) *(अनुष्ठान पद्धति)*

सूर्य अष्टोत्तर शतनाम पूजा

ॐअरुणाय नमः। ॐशरणाय नमः। ॐकरुणारस सिन्धवे नमः। ॐअसमान बलाय नमः। ॐआर्तरक्षकाय नमः। ॐआदित्याय नमः। ॐआदिभूताय नमः। ॐ अखिलागमवेदिनेनमः। ॐ अच्युतायनमः। ॐ अखिलज्ञायनमः। ॐअनन्तायनमः। ॐइनायनमः। ॐविश्वरूपायनमः। ॐइज्यायनमः। ॐइन्द्रायनमः। ॐ भानवेनमः। ॐइन्दिरामन्दिरायनमः। ॐ आप्तायनमः। ॐ वन्दनीयायनमः। ॐईशायनमः। ॐ सुप्रसन्नायनमः ॐ सुशीलायनमः ॐ सुवर्चसे नमः ॐवसुप्रदायनमः। ॐवसवेनमः। ॐवासुदेवायनमः। ॐउज्जवलायनमः। ॐउग्ररूपायनमः। ॐऊर्ध्वगायनमः। ॐविवस्वतेनमः। ॐउद्यत्किरणजालयनमः। ॐहृषिकेशायनमः। ॐऊर्जस्वलायनमः। ॐवीरायनमः। ॐनिर्जरायनमः। ॐजयाय नमः। ॐ ऊरुद्वयभावरूपयुक्तसारथये नमः। ॐरुग्घन्त्रे

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नमः। ॐ ऋक्षचक्रचराय नमः। ॐ ऋजुस्वभावचित्ताय नमः। ॐ नित्यस्तुत्याय नमः। ॐ ऋकारमातृकावर्णरूपाय नमः। ॐ उज्जवलतेजसे नमः। ॐ ऋक्षायधिनाथाय नमः। ॐ मित्रायनमः। ॐ पुष्काराक्षाय नमः। ॐ लुप्तदन्ताय नमः। ॐ शान्ताय नमः। ॐ कान्तिदाय नमः। ॐ धनाय नमः। ॐ कनत्कनकभूषाय नमः। ॐ खद्योताय नमः। ॐ लूनिताखिलदैत्याय नमः। ॐ सत्यानन्द स्वरूपिणे नमः। ॐ अपवर्गप्रदाय नमः। ॐ आर्तशरणाय नमः। ॐ एकाकिने नमः। ॐ भगवते नमः। ॐ सृष्टिस्थित्यन्तकारिणे नमः। ॐ गुणात्मने नमः। ॐ घृणिभृते नमः। ॐ बृहते नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ ऐश्वर्यदाय नमः। ॐ शर्वाय नमः। ॐ हरिदश्वाय नमः। ॐ शौरये नमः। ॐ दशदिक्सम्प्रकशाय नमः। ॐ भक्तवश्याय नमः। ॐ ओजस्कराय नमः। ॐ जयिने नमः। ॐ जगदानन्दहेतवे नमः। ॐ जन्ममृत युजराव्याधिवर्जिताय नमः। ॐ औन्नत्यापदसञ्चरथस्थाय नमः। ॐ असुरारये नमः। ॐ कमनीकराय नमः। ॐ अब्जवल्लभाय नमः। ॐ अन्तर्बहिःप्रकाशाय नमः। ॐ अचिन्त्याय नमः। ॐ आत्मरूपिणे नमः। ॐ अच्युताय नमः। ॐ अपरेशाय नमः। ॐ परस्मै नमः। ॐ ज्योतिषे नमः। ॐ अहस्कराय नमः। ॐ रवये नमः ॐ हरये नमः। ॐ परमात्मने नमः। ॐ तरुणाय नमः। ॐ वरेण्याय नमः। ॐ ग्रहाणांपतये नमः। ॐ भास्कराय नमः। ॐ आदिमध्यान्तरहिताय नमः। ॐ सौख्यप्रदायनमः। ॐ सकलजगतांपतये नमः। ॐ सूर्याय नमः। ॐ कवये नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ परेशाय नमः। ॐ तेजोरूपाय नमः। ॐ ह्रीं हिरण्यगर्भाय नमः। ॐ ऐं इष्टार्थदाय नमः। ॐ आशुप्रपन्नाय नमः। ॐ श्रीमते नमः। ॐ श्रेयसे नमः। ॐ भक्तकोटिसौख्यप्रदायिने नमः। ॐ निखिलागमवेद्याय नमः। ॐ नित्यानन्दाय नमः। अष्टोत्तर शतनाम पूजां समर्पयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

धूपम्—ॐ वनस्पति रसोत्पन्नो गंधाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते॥ *(ऋग्वेद १०.९०.११)*

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। धूपं आघ्रापयामि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दीपम्— आज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मंगलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह॥ *(स्मृति संग्रह)*

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासी बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१२)*

ॐ आपः सृजंतु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। दीपं दर्शयामि। धूप दीपानंतरं आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यम्—देवस्याग्रे स्थलं संशोध्य गोमयेन मण्डलं कृत्वा तत्र शुद्धं पात्रं न्यस्य अभिघार्य निर्मलं हवि तदुपरि न्यस्य आज्येन द्रवीभूतं कृत्वा "ॐ भू र्भुवः स्वः इति गायत्र्या च प्रोक्ष्य वायु बीजं जप्त्वा निवेद्यान्नं संशोध्य इक्षिणहस्ते अग्निबीजं विलिख्य तेन हस्तेन संदह्यवामहस्ते अमृतबीजं विलिख्य तेत हस्तेन हविराप्लाव्य मूलमंत्रमष्टवारं संजप्य मंत्रामृतमयं संकल्प्य सुरभिमुद्रां बध्वा अमृतमयं भावयित्वा मल धातु रसांशं विभज्य देवस्य निवेद्य ग्रहणोच्छां कुर्यात्।

(अनुष्ठान पद्धति)

"सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि" इत्यनेन

परिषिच्य हस्ताभ्यां पुष्पैः "देवस्य जिह्वार्चीरुचि निवेद्ये निपात्य निवेदयामि भवते जुषाणेदं हविर्विभो" इति वामहस्तेन ग्रासमुद्रा प्रदर्श्य दक्षिण हस्तेन प्राणादि मुद्राः प्रदर्शयेत्। अन्नात् मलांशं धात्वंशं च परित्यज्य रसांशं देवस्य वदनार्चिषि समर्पयेत्। वं अबात्मने इति नैवेद्य मुद्रां प्रदर्शयेत्।

नैवेद्य सारं रससमर्पणात् जातं सुधांशं देवे समर्प्य अंललिमुद्रां बध्वा नैवेद्यसार रससमर्पित जातामृतमय सुधांशुना पुनः पुनः वर्धितं देवं हृन्मूर्ति देवं ध्यायन् स्व स्व मूलमन्त्रं यथा शक्ति जप्त्वा।

कलश के आगे स्थल शुद्धिकर गोमय से शुद्धिकर चतुरस्त्र मण्डल को बनाकर उस पर शुद्ध पात्र को रखें। पात्र में थोडा सा घी डालें। उस पात्र में निर्मल

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हविस् (नैवेद्य पदार्थ को) को घी पर रखें उस हविस् को घी से भिगोयें। गायत्री मंत्र से नैवेद्य का प्रोक्षण करें। यंयं यं'' इस वायु बीज को जपकर हविस् को शुद्ध करें। दाहिने हाथ में (रं) अग्नि बीज को लिखकर उस अग्नि से हविस् में विद्यमान कश्मलों को लजायें। (कल्पना करें) बायें हाथ में अमृत बीज (वं) को लिखकर उस हाथ से हविस् को शुद्ध करें। धोने की कल्पना करें। ॐ घृणिः सूर्य आदित्यः। इस मन्त्र का आठ बार जप करें। हविस् को मत्रमय एवं अमृतमय होने की कल्पना करें। सुरभि मुद्रा से अमृतमय हुआ है मानकर मलांश, धातु अंश एवं रसांश को अलग-अलग करने की कल्पना करें।

देवता को नैवेद्य ग्रहण करने की इच्छा उत्पन्न करनी चाहिये। ''सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि'' इससे परिषिञ्चन करें। दोनों हाथों में पुष्प लेकर देवता का जीभ नैवेद्य तक पहुँचने का चिन्तन करें। ''निवेदयामि भवते जुषाण हविर्विभो'' कहकर नैवेद्य स्वीकार करने की प्रार्थना करते हुए बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछडे को घास देते हैं) को दिखाकर दाहिने हाथ से—

प्राणाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ कनिष्ठिका मिलाकर, **अपानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर, **व्यानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर, **उदानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर, **समानाय स्वाहा**। सभी अङ्गुलियों को लिकर। अन्न से मलांश एवं धातु के अंश को अलग कर केवल रसांश को अर्पित करने की कल्पना करें।

''वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि'' कहकर नैवेद्य मुद्रा का प्रदर्शन करें। अंगुष्ट एवं अनामिका मिलाने से नैवेद्य मुद्रा। नैवेद्य का सार जो रसांश था उसका भी सार अमृत का जो अंश है उसे देवता को समर्पित कर, हाथ जोडकर, नैवेद्य के सार अमृत से भगवान् को बढते हुए मानकर उसे हृदय में स्थित मानकर यथाशक्ति ॐ घृणिः सूर्य आदित्यः।'' इस मूल मंत्र का जप करें।

ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिन्द्राय सुहवीतुनाम्ने।
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमां अदाभ्यः॥ *(ऋग्वेद ९.८५.६)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत॥ (ऋग्वेद १०.९०.१३)
ॐ आर्दां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

यथा संभव नैवेद्यं निवेदयामि। **अमृतापिधानमसि** कहकर उत्तरापोशन देवें। हस्तप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गण्डूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूल—पूगीफल समायुक्तं नागवल्या दलैर्युतं। चूर्णं कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ (स्मृति संग्रह-देवपूजा)

ॐ सपरिवार श्री सूर्याय नमः। क्रमुक तांबूलं समर्पयामि।

नीराजन (आरति)—ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधा सो अर्चत। अर्चतु पुत्रका उत पुरं न धृष्णवर्चत। (ऋग्वेद ८.६९.८)
ॐ ध्रुवाद्यौ र्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्॥
ॐ ध्रुवं ते राजा वरूणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ (ऋग्वेद १०.१७३.४)

ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। मंगल नीराजनंसमर्पयामि।

मंत्रपुष्प—ॐ सहस्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्वशंभुवम्। विश्वं नारायणं देवमक्षरं परमं पदम्॥
विश्वतः परमान्नित्यं विश्वं नारायणं हरिम्। विश्वमेवेदं पुरुषस्तद्विश्व मुपजीवति॥
पतिं विश्वस्यात्मेश्वरं .. शाश्वतं... शिवमच्युतम्। नारायणं महाज्ञेयं विश्वात्मानं परायणम्॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नारायणा परोज्योतिरात्मा नारायणः परः। नारायणा परं ब्रह्म तत्वं नारायणः परः॥
नारायणा परो ध्याता ध्यानं नारायणः परः। यच्च किंचिज्जगत्सर्वं दृश्यते श्रूयतेऽपि वा॥
अन्तर्बहिश्च तत्सर्वं व्याप्य नारायणास्थितः। अनंतमव्ययं कविं.. समुद्रेऽन्तं विश्वशंभुवम्॥
पद्मकोश प्रतीकाशं... हृदयं चाप्यधो मुखम्। अधोनिष्ट्या वितस्यांते नाभ्यामुपरि तिष्ठति॥
ज्वालमालाकुलं भाति विश्वस्यायतनं महम्। संतत् .. शिलाभिस्तु लंबत्याकोश सन्निभम्॥
तस्यांते सुषिरं.. सूक्ष्मं तस्मिंन्सर्वं प्रतिष्ठितम्। तस्य मध्ये महानग्निर्विश्वार्चिर्विश्वतो मुखः॥
सोऽग्रभुग्वि भजंतिष्ठन्नहारमजरः कविः। तिर्यगूर्ध्वमधश्शायी रश्मयं स्तस्य संतता॥
संतापयति स्वं देहमापादतलमस्तकः। तस्य मध्ये वह्निशिखा अणीयोर्ध्वा व्यवस्थितः॥
नीलतोयदमध्यस्थाद्विद्युल्लेखेव भास्वरा। नीवारशूकवत्तन्वी पीताभास्वत्यणूपमा॥
तस्यां शिखाया मध्ये परमात्मा व्यवस्थितः। स ब्रह्म स शिवःस हरिस्सें द्रस्सोक्षरः परमः स्वराट्॥

ॐ बलमहाँ असि सूर्य बळादित्य महाँ असि। महस्ते सतो महिमा पनस्यते ऽद्धा देव महाँ असि॥ (ऋग्वेद ८.१०१.११) आ.गृ.सूत्रम्

ॐ नाभ्या आसीदंतरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्। *(ऋग्वेद-१०.९०.१४)*

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिण नमस्कार—यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानि च। तानि तानि प्रणाश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥ *(देवपूजा-स्मृति संग्रह)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ सप्तास्यां सन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुं॥ (ऋग्वेद १०.९०.१५)

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।

यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावोदास्योऽश्वान् विंदेयं पुरुषानहम्॥ (ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। प्रदक्षिण नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्य—ॐ प्रभाकराय विद्महे दिवाकराय धीमहि। तन्नो सूर्यः प्रचोदयात्॥ इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यम् (कहकर तीन बार पुष्पमिश्रित जल छोडें।)

सर्वोपचार पूजनम्—ॐ छत्रं समर्पयामि। चामरेण वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। आंदोळिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्य राजोपचार देवोपचार पूजां समर्पयामि।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ (ऋग्वेद १०.९०.१६)

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥ (ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। सवोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— कालिंगं ग्रहमध्य भागनिलयं प्राचीमुखं वर्तुलं, । रक्तं रक्तविभूषणाध्वजरथच्छत्रश्रियाशेभितम्॥

सप्ताश्वं कमलद्वयान्वितकरं पद्मासनं काश्यपं। मेरोर्दिव्य गिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे भास्करम्॥

ॐ कायेन वाचा मनसे न्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।

करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥ (पौराणिकम्)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥ (श्री भगवद्गीते)

ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। अनेन पूजनेन सपरिवारः श्री सूर्यः प्रीयताम्।

नवग्रहषोडशोपचार पूजन

ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि।

ॐ स॒हस्र॑शीर्षा॒ पुरु॑षः स॒हस्रा॒क्षः स॒हस्र॑पात्। स भूमिं॑ वि॒श्वतो॑ वृ॒त्वाऽत्य॑तिष्ठद्दशाङ्गु॒लम्॥ (ऋग्वेद १०.९०.१)

ॐ हिर॑ण्य वर्णां॒ हरि॑णीं सु॒वर्ण॑रज॒तस्र॑जाम्। च॒न्द्रां हि॒रण्म॑यीं ल॒क्ष्मीं जात॑वेदो म॒ आ व॑ह॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, आवाहनं समर्पयामि।

ॐ पुरु॑ष ए॒वेदं सर्वं॒ यद्भू॒तं यच्च॒ भव्य॑म्। उ॒तामृ॑त॒त्वस्येशा॑नो॒ यदन्ने॑नाति॒रोह॑ति॥ (ऋग्वेद १०.९०.२)

ॐ तां म॒ आव॑ह जातवेदो ल॒क्ष्मीमन॑पगा॒मिनी॑म्। यस्यां॒ हिर॑ण्यं वि॒न्देयं॒ गाम॑श्वं॒ पुरु॑षान॒हम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, आसनं समर्पयामि।

ॐ ए॒तावा॑नस्य महि॒माऽतो॒ ज्यायाँ॑श्च॒ पूरु॑षः। पादो॑ऽस्य॒ विश्वा॑भूतानि॑ त्रि॒पाद॑स्या॒मृतं॑ दि॒वि॥ (ऋग्वेद १०.९०.३)

ॐ अ॒श्वपूर्वां॑ र॑थम॒ध्यां ह॒स्तिना॑द प्र॒मोदि॑नीम्। श्रियं॑ दे॒वी मुप॑ह्वये॒ श्रीर्मा॑ दे॒वी जु॑षताम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहा भवत् पुनः। ततो विष्वं व्यक्रामत् साशनानशने अभि॥ (ऋग्वेद १०.९०.४)

ॐ कां सोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।

(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

ॐ तस्माद् विराळजायत विराजो अधिपूरुषः। सजातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः॥ (ऋग्वेद १०.९०.५)

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्ती श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।

तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् पयः (दूध)—ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियं। भवावाजस्य सङ्गथे। (ऋग्वेद १.९१.१६)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, पयः स्नानं समर्पयामि। दूध से स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुत्तरां दिवम्। हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय॥ (ऋग्वेद १.५०.११)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः। पयः स्नानांते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

दधि (दहि)—ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखा करत्प्रण आयूंषि तारिषत्॥ (ऋग्वेद ४.३९.६)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, दधि स्नानं समर्पयामि। दहि स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ शुकेषु मे हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि। अथो हारिद्रवेषु मे हरिमाणं निदध्मसि॥ (ऋग्वेद १.५०.१२)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ नवग्रह मंडलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, दधि स्नानांते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

घृत (घी)—ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतं वस्य धाम।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभवक्षि हव्यम्॥ (ऋग्वेद २.३.११)

ॐ नवग्रह मंडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, घृत स्नानं समर्पयामि। घी स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ उदगादयमादित्यो विश्वेन सहसा सह। द्विषन्तं मह्यं रन्धयन् मो अहं द्विषते रधम्॥ (ऋग्वेद १.५०.१२)

ॐ नवग्रह मंडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, घृतस्नानांते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

मधु (शहद)—ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥
ॐ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता॥
ॐ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ (ऋग्वेद १.९०.६-७-८)

ॐ नवग्रहमंडलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, मधु स्नानं समर्पयामि।

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च॥
(ऋग्वेद १.११४.१)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, मधु स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शर्करा (शक्कर)—ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिन्द्राय सुहवीतु नाम्ने।
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमाँ अदाभ्यः॥ (ऋग्वेद ९.८५.६)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ नवग्रह मंडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि।

ॐ आकृष्णेन रजसावर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेनाऽदेवो याति भुवनानि पश्यन्॥ (ऋग्वेद १.३५.२)

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वं हसः॥ (ऋग्वेद १०.९७.१५)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, फलस्नानं समर्पयामि।

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥
यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयते हनः। उशतीरिव मातरः॥
तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ (ऋग्वेद १०.९.१-२-३)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, फल स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेनाऽऽदेवो याति भुवनानि पश्यन्॥
ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥ (ऋग्वेद १.९१.१६)
ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति॥ (ऋग्वेद ८.४४.१६)
ॐ उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिंध्वं बहवः सनीळाः।
दधिक्रामग्निमुषसं च देवीमिंद्रावतोऽवसे निह्वये वः॥ (ऋग्वेद १०.१०१.१)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ (ऋग्वेद २.२३.१५)
ॐ शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि।
विश्वा हि माया अवसि स्वधावो भद्रा ते पूषन्निहरातिरस्तु॥ (ऋग्वेद ६.५८.१)
ॐ शमग्निरग्निभिः करच्छंनस्तपतु सूर्यः। शं वातो वात्वरपा अपस्त्रिधः॥ (ऋग्वेद ८.१८.६)
ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कयाशचिष्ठया वृता॥ (ऋग्वेद ४.३१.१)
ॐ केतु कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुष द्भिरजायथाः॥ (ऋग्वेद १.६.३)
ॐ तच्छंय्योरावृणीमहे गातुं यज्ञाय गातुं यज्ञ पतये। दैवी स्वस्तिरस्तु नः। स्वस्तिमानुषेभ्यः।
ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम् शंनो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)
ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ (ऋग्वेद १०.६०.६)
ॐ आदित्यवर्णो तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, शुद्धोदकस्नानं सपर्मयामि। शुद्धोदक स्नान मंत्रों के तीन प्रकार प्रचलित है।

प्रथम क्रम में—९ ग्रह- ९ अधिदेवता-९ प्रत्यधिदेवता ६ कर्म साद्गुण्य देवता, ८ क्रतु संरक्षक देवता कुल मिलाकर ४१ देवताओं का मंत्र पठन करके शुद्धोदक स्नान करना चाहिये। सभी मंत्र आवाहन में है। नवग्रह यागादियों में इसका प्रयोग होता है। जहाँ कलश पूजन के लिए ही एक पण्डित नियुक्त

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हो वहाँ भी इसे कर सकते हैं।

द्वितीय क्रम में—९ ग्रह+९ अधिदेवता+९ प्रत्यधिदेवता कुलमिलाकर २७ देवताओं का मंत्र पठन करके शुद्धोदक स्नान कराना चाहिये।

तृतीय क्रम में—९ ग्रहों का मंत्र पठन करके शुद्धोदक स्नान कराना चाहिये।

वस्त्रम्— **ॐ युवं वस्त्राणि पीवसावसाथे युवोरच्छिद्रा मन्तवो हसर्गाः।**
अवातिरतमनृतानि विश्वऋतेन मित्रा वरुणा सचेथे। *(ऋग्वेद १.१५२.१)*
ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥ *(ऋग्वेद १०.९०.७)*
ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्—**ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापते र्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥**
ॐ तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशून्स्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान् ग्राम्याश्च ये॥ *(ऋग्वेद १०.९०.८)*
ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वा न्निर्णुद मे गृहात्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि, आचमनं समर्पयामि।

आभरणम्—**ॐ हिरण्यरूपः स हिरण्य सन्दृगपान्नपात् सेदु हिरण्यवर्णः। हिरण्ययात् परियोनेर्निषद्या हिरण्यदा ददत्यन्नमस्मै॥**

(ऋग्वेद २.३५.१०)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, आभरणं समर्पयामि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गन्धम्—ॐ तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतऋचः सामानि जज्ञिरे। छंदांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत॥ (ऋग्वेद १०.९०.९)
ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐनवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, गन्धं समर्पयामि।

अक्षतम्—ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उतपुरन्न धृष्णवर्चत॥ (ऋग्वेद ८.६९.८)

ॐनवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि—ॐ आयने ते परायणे दूर्वारोहन्तु पुष्पिणीः। हृदाश्च पुण्डरीकाणि समुद्रस्य गृहा इमे॥ (ऋग्वेद १०.१४२.८)
ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावोहजज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजा वयः॥ (ऋग्वेद १०.९०.१०)
ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ (ऋग्वेद - पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐनवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।

नाम पूजा

ॐसहस्रकिरणाय नमः। ॐसूर्याय नमः। ॐतपनाय नमः। ॐसवित्रे नमः। ॐरवये नमः। ॐविकर्तनाय नमः। ॐजगच्चक्षुषे नमः। ॐद्युमणाये नमः। ॐतिग्मदीधितये नमः। ॐत्रयीमूर्तये नमः। ॐद्वादशात्मने नमः। ॐब्रह्माविष्णुशिवात्मकाय नमः। ॐआदित्याय नमः। ॐअग्नये नमः। ॐरुद्राय नमः। ॐचन्द्रमसे नमः। ॐअद्भ्यो नमः। ॐगौर्यै नमः। ॐअङ्गारकाय नमः। ॐभूम्यै नमः। ॐस्कन्दाय नमः। ॐबुधाय नमः। ॐविष्णवे नमः। ॐपुरुषाय नमः। ॐबृहस्पतये नमः। ॐइंद्राय नमः। ॐब्रह्मणे नमः। ॐशुक्राय नमः। ॐइंद्राण्यै नमः। ॐइंद्राय नमः। ॐशनैश्चराय नमः। ॐप्रजापतये नमः। ॐयमाय

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नमः। ॐराहवे नमः। ॐसर्पेभ्यो नमः। ॐमृत्यवे नमः। ॐकेतवे नमः। ॐब्रह्मणे नमः। ॐचित्रगुप्ताय नमः। ॐविनायकाय नमः। ॐदुर्गायै नमः। ॐक्षेत्रपालाय नमः। ॐवायवे नमः। ॐआकाशाय नमः। ॐअश्विभ्यां नमः। ॐइन्द्राय नमः। ॐअग्नये नमः। ॐयमाय नमः। ॐनिर्ऋतये नमः। ॐवरुणाय नमः। ॐवायवे नमः। ॐसोमाय नमः। ॐईशानाय नमः। ॐनवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, नाम पूजां समर्पयामि।

धूपः— **वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥**

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते॥ *(ऋग्वेद १०.९०.११)*

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ *(ऋग्वेद - पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐनवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, धूपं आघ्रापयामि।

दीपं— **साज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्यतिमिरापह॥**

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१२)*

ॐ आपः स्रजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत व स मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ *(ऋग्वेद - पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐनवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि। धूपदीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यं—नैवेद्य रखने के स्थल पर मण्डल बनायें (चतुरस्र) नैवेद्य को मण्डल पर रखने के बाद मंत्र पढ़ें। विश्वामित्र ऋषिः देवी गायत्री छन्दः, सविता देवता निवेदने विनियोगः। एक बार नैवेद्य पर गायत्री मंत्र से प्रोक्षण करें। सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि इस मंत्र से दिन में एवं **ऋतं त्वा सत्येन परिषिञ्चामि**। इस मंत्र से रात्रि में परिषिञ्चन करें।

यथा संभव नैवेद्यं निरीक्षस्व कहकर प्रार्थना कर **अमृतोपस्तरणमसि** मन्त्र से जल छोड़ें। बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछड़े को घास खिलाते हैं) एवं

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दाहिने हाथ से निम्न मुद्राओं से देवताओं को नैवेद्य अर्पण करें। मन में कल्पना करें कि भगवान को खिला रहे हैं। प्राणाय स्वाहा। अपानाय स्वाहा। व्यानाय स्वाहा। उदानाय स्वाहा। समानाय स्वाहा। ॐ घृणिः सूर्य आदित्यः-इस मूल मंत्र को आठ बार जप करें।

ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वदुरिन्द्राय सुहवीतु नाम्ने।
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमाँ अदाभ्यः॥ *(ऋग्वेद ९.८५.६)*
ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१३)*
ॐ आद्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ *(ऋग्वेद - पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

यथा सम्भवं नैवेद्यं निवेदयामि। अमृतापिधानमसि। कहकर उत्तरापोशण जल दें। उत्तरापोशनार्थं जलं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गण्डूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूलम्—पूगीफलसमायुक्तं नागवल्ल्यादलैर्युतम्। चूर्णं कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, क्रमुक ताम्बूलं समर्पयामि। ताम्बूल के पश्चात् नीराजन करें।

ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न घृष्णवर्चत॥ *(ऋग्वेद ८.६९.८)*
ॐ श्रिये जातः श्रिय आनिरियाय श्रियं वयो जरितृभ्यो दधाति।
श्रियं वसाना अमृतत्वमायन् भवन्ति सत्या समिथा मितद्रौ॥ *(ऋग्वेद ९.९४.४)*
ॐ ध्रुवाद्यौ ध्रुवापृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्॥
ॐ ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ *(ऋग्वेद १०.१७३.४-५)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐनवग्रह मडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, मङ्गल नीराजनं दर्शयामि।

मन्त्र पुष्पः—ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेनाऽऽदेवो याति भुवनानि पश्यन्॥ (ऋग्वेद १.३५.२)
ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥ (ऋग्वेद १.९१.१६)
ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति। (ऋग्वेद ८.४४.१६)
ॐ उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिध्वं बहतः सनीळाः।
दधिक्रामग्निमुषसं च देवीमिन्द्रावतोऽवसे निह्वये वः॥ (ऋग्वेद १०.१०१.१)
ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहिचित्रम्॥ (ऋग्वेद २.२३.१५)
ॐ शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि।
विश्वा हि माया अवसि स्वधावो भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु॥ (ऋग्वेद ६.५८.१)
ॐ शमग्निरग्निभिः करच्छन्नस्तपतु सूर्यः। शं वातो वात्वरपा अपस्त्रिधः॥ (ऋग्वेद ८.१५.९)
ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ (ऋग्वेद ४.३१.१)
ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥ (ऋग्वेद १.६.३)

ॐनवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रदक्षिणा नमस्कारः—यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे॥

ॐ सप्तास्यां सन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम्॥ (ऋग्वेद १०.९०.१५)

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।

(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, प्रदक्षिणा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्यः—ॐ प्रभाकराय विद्महे दिवाकराय धीमहि। तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्॥ ॐ अत्रिपुत्राय विद्महे अमृतोद्भवाय धीमहि। तन्नः सोमः प्रचोदयात्॥ ॐ भूमिपुत्राय विद्महे भारद्वाजाय धीमहि। तन्नः कुजः प्रचोदयात्॥ ॐ तारापुत्राय विद्महे सोमपुत्राय धीमहि। तन्नो बुधः प्रचोदयात्॥ ॐ देवाचार्याय विद्महे वाचस्पतये धीमहि। तन्नो गुरुः प्रचोदयात्॥ ॐ दैत्याचार्याय विद्महे विद्यारूपाय धीमहि। तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्॥ ॐ सूर्यपुत्राय विद्महे शनैश्चराय धीमहि। तन्नो मंदः प्रचोदयात्॥ ॐ सैंहिकेयाय विद्महे तमोमयाय धीमहि। तन्नो राहुः प्रचोदयात्॥ ॐ ब्रह्मपुत्राय विद्महे विकृतास्याय धीमहि। तन्नः केतुः प्रचोदयात्॥ ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, प्रसन्नार्घ्यं समर्पयामि।

सर्वोपचार पूजनम्—ॐ छत्रं समर्पयामि। चामरेण वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। आन्दोळिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्त राजोपचार देवोपचारपूजां समर्पयामि।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

(ऋग्वेद १०.९०.१६)

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥ (ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐनवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारपूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— **ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणाकारकः। विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु ते रविः॥**
रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः। विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु ते विधुः॥
भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत्सदा। वृष्टिकृद्वृष्टिहर्ता च पीडां हरतु ते कुजः॥
उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः। सूर्य प्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु ते बुधः॥
देवमन्त्री विशालाक्षः सदालोकहितेरतः। अनेक शिष्य संपूर्णाः पीडां हरतु ते गुरुः॥
दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः। प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीडां हरतु ते भृगुः॥
सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः। मंदचारः प्रसन्नात्म पीडां हरतु ते शनिः॥
महाशिरा महावक्त्रौ दीर्घदंष्ट्रो महाबलः। अतनुश्चोर्ध्व केशश्च पीडां हरतु ते तमः॥
अनेक रूपवर्णैश्च शतशोथ सहस्त्रशः। उत्पातरूपो जगतः पीडां हरतु ते शिखी॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

आरोग्यं पद्मबन्धुर्वितरतु विपुलां संपदं शीतरश्मिः, भूलाभं भूमिपुत्रः सकलगुणायुतां वाग्विभूतिं च सौम्यः। सौभाग्यं देवमन्त्री रिपुभयशमनं भार्गवः शौर्यमार्किः, दीर्घायुस्सैंहिकेयो विपुलतरयशः केतुराचन्द्रतारम्॥ शान्तिरस्तु। शिवं ते अस्तु। ग्रहाः कुर्वन्तु मङ्गलम्। अरिष्टानि प्रणाश्यन्तु। दुरितानि भयानि च। ॐनवग्रहमण्डलस्थ देवताभ्यो नमः, प्रार्थनां समर्पयामि। **अनेन कृत पूजनेन आदित्यादि नवग्रहदेवताः प्रीयन्ताम्॥**

यहाँ पर नवग्रह पूजन समाप्त हुआ। मण्डप में कलशों का पूजन भी संपूर्ण हुआ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तृतीय / चतुर्थ / पञ्चम दिन द्वितीय प्रहर

देह शुद्धि—येभ्यो मातेत्यस्य गयःप्लात ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। जगतीछन्दः। एवापित्रेत्यस्य वामदेव ऋषिः। बृहस्पतिर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। मनुष्य गन्ध निवारणे विनियोगः।

ॐ येभ्यो मातामधुमत् पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः।

उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनुमदास्वस्तये॥ *(ऋक्वेद १०.६३.३)*

ॐ एवापित्रे विश्वदेवाय वृष्णे यज्ञैर्विधेम नमसा हविर्भिः।

बृहस्पते सुप्रजा वीरवन्तो वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥ *(ऋक्वेद ४.५०.६)*

आचमन मन्त्र—ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।)

अथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुराणेभ्यो नमः। अग्नये नमः। वायवे नमः। प्राणाय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै नमः। अन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारणम्—पवित्रन्त इत्यनयोः आङ्गीरसः पवित्र ऋषिः। पवमानः सोमो देवता। जगतीछन्दः। पवित्राभिमंत्रणे, धारणे विनियोगः।

ॐ पवित्रन्ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऋतंसतनूर्न तदामो अंश्नुतेश्रृता सइद्वहंन्तस्तत् समांशत ॥ (ऋग्वेद ९.८३.१)
ॐ तपोंष्पवित्रं वितंतं दिवस्पदे शोचंन्तो अस्य तन्तवो व्यंस्थिरन्।
अवंन्त्यस्य पवीतारं माशवों दिवस्पृष्ठमधिंतिष्ठन्ति चेतंसा ॥ (ऋग्वेद ९.८३.२)

ॐ भूर्भुवः स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये आसन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।)

प्राणायाम—प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्राणायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्सवितुर्वरेंण्यं भर्गो देवस्यं धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्वरोम्। (ऋग्वेद ३.६२.१०)

(रेखङ्कित मन्त्र को तीन बार कुम्भक में जप करना चाहिये।)

आसन शुद्धि—ॐ स्योना पृथिवि भवानृक्षरा निवेशंनी। यच्छा नः शर्म सप्रथः।' (१५ मन्त्र-२२ सूक्त-प्रथम मण्डल) इस मन्त्र से जल प्रोक्षण करने से भूमि शुद्ध होती है।

शिखाबन्धनम्—

ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणित भक्षणे। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुण्डे ह्यपराजिते॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

(इस मन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

महा संकल्प —.....

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गुरू प्रार्थना —

नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः॥ *(श्रृङ्गेरी मठीय आचार्य प्रार्थनम्)*

श्री गुरु परमगुरु परमेष्ठी गुरु सद्गुरु पादुकाभ्यो नमो नमः।

हवन कुण्ड में

स्थंडिल शुद्धिः—तद् गोमयेन प्रदक्षिणामुपलिप्य दक्षिणो उदीच्यां द्वे, प्रतीच्यां चतुः, प्राच्यामर्धं इत्यंगुलानित्यक्त्वा दक्षिणोपक्रमां उदक्संस्थां प्रादेशमात्रां एकां लेखां तस्या दक्षिणोत्तरयोः प्रागायते पूर्वरेखया असंसृष्टे प्रादेशसंमिते द्वे लेखे लिखित्वा तयोर्मध्ये परस्परं असंसृष्टाः उदक्संस्थाः प्रागायताः प्रादेश संमिताः तिस्रः इति षड्लेखाः यज्ञीय शकलमूलेन दक्षिण हस्तेन उल्लिख्य लेखासु तच्छकलं उदगग्रं निधाय स्तंडिलं अद्भिः अभ्युक्ष्य शकलं भंक्त्वा आग्नेय्यां निरस्य पाणिं प्रक्षाल्य वाग्यतः भवेत्।

स्थण्डिल को पहले गोमय से लेपना चाहिये। स्थण्डिल (वेदी) में दक्षिण में आठ अंगुल, उत्तर में दो अंगुल, पश्चिम में चार अंगुल, पूर्व में आधा अंगुल छोड़कर दक्षिण से प्रारम्भकर उत्तर में समाप्त हो ऐसे १२ अंगुल चौक बनाना चाहिये। फिर बीच में दक्षिण से उत्तर एक रेखा खींचना चाहिये। १२ अंगुल फिर दक्षिण से प्रारम्भ कर एक दक्षिण में एवं एक उत्तर में दो रेखायें पश्चिम से पूर्व की ओर खीचें १२ अंगुल बी फिर दक्षिण से प्रारम्भकर दक्षिण में समाप्त होने वाले पश्चिम से पूर्व में समाप्त होने वाले तीन रेखायें। (१२ अंगुल) खीचें। (प्रादेश प्रमाण-लगभग १२ अंगुल) (ब) इसे यज्ञ में प्रयुक्त अश्वत्थादि समित् के अग्रभाग से इन लकीरों को खीचना चाहिये। दाहिने हाथ से लिखें। (रेत पर) खीचने वाले समित् को उसके ऊपर उत्तर उत्तराभिमुख

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रखें। फिर स्थण्डिल (stage) को जल से अभ्युक्षण करना चाहिये। (अभ्युक्षण मतलब मुष्टि में जल लेकर सिञ्चन करना चाहिये।) फिर उस समित् को (लकीर खीचें) तोडकर आग्नेय दिशा में फेंककर हाथ धो लेना चाहिये।

अग्नि प्रतिष्ठा—यहाँ तक होम वेदी निर्माण विधि, होम वेदी पर देवताओं का आवाहन पूजन संपन्न हुआ। आगे अग्नि प्रतिष्ठा विधान वर्णित है। ततः तैजसेन असंभवे मृन्मयेन वा पात्रयुग्मेन संपुटीकृत्य सुवासिन्या श्रोत्रियागारात् स्वगृहाद्वा समृद्धं निर्धूमं अग्निं आहृतं स्थंडिलात् आग्नेय्यां निधाय। उसके बाद लोहपात्र में (संभव हो तो ताम्र पात्र में) यदि न हो तो मिट्टी के पात्र में श्रोतियों के घर से या अपने घर से लाकर, धुऐं रहित अंगारों को पात्र में रखकर दूसरे पात्र से ढक्कर लाना चाहिये। लाए हुए अग्निपात्र को स्थण्डिल होमवेदी के आग्नेय दिशा में रखना चाहिये।

एह्यग्नेराहूराणोगोतमोग्निस्त्रिष्टुप् अग्न्याह्वाने विनियोगः। एह्यग्न इहहोता निषीदादब्धः सुपुर एतोभवानः॥
अवतांत्वारोदसीविश्वमिन्वेयजामहे सौमनसाय देवान्। *(ऋग्वेद १.७६.२)*

जुष्टोदमूना आत्रेयोवसुश्रुतोग्निस्त्रिष्टुप् अग्निनमस्कारे विनियोगः॥

ॐ जुष्टोदमूनाअतिथिर्दुरोण इमं नो यज्ञमुपयाहि विद्वान्। विश्वाअग्ने अभियुजो विहत्या शत्रूयतामाभराभोजनानि॥

(ऋग्वेद ५.४.५)

पहले मन्त्र से अग्नि देव को आह्वन करें। एवं दूसरे मंत्र से नमस्कार करें। **आच्छादनं दूरीकृत्य** फिर ऊपर ढके पात्र को निकालें।

समस्तव्याहृतीनां परमेष्ठीप्रजापतिः प्रजापतिर्बृहती। अग्निप्रतिष्ठापने विनियोगः।

ॐभूर्भुवः स्वः। इति आत्माभिमुख पाणिभ्यां षट्सुलेखासु अमुक नामानमग्निं प्रतिष्ठापयामि इति अग्निं प्रतिष्ठाप्य। ऊपर के मन्त्र कहकर अग्नियुक्त पात्र को अपने सामने हाथों में पकडकर एक बार पदक्षिणा कर जो ६ रेखायें है, उन पर कर्माङ्ग देवता नामक अग्नि को प्रतिष्ठापित कर रहा हूँ कहकर रखना

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चाहिये। रखते समय हाथ कर्तरी शकल में होना चाहिये। कैची जैसे (cross) अग्न्याहरण पात्रयोः अक्षतैः सह उदकमासिच्य इन्धनंप्रोक्ष्य वेणु धमन्या प्रबोधयेत्। अग्नि लायें दोनों पात्रों में अक्षत डालकर जल सींचकर उसे बाहर कर देवें। फिर लकडियों को जल से प्रोक्षण कर बॉस की या लोहे की धमनी फूकनी से फूंककर अग्नि को प्रज्वलित करें। अग्निनाग्निः काण्वोमेधातिथिः अग्निर्गायत्री अग्नि समिन्धने विनियोगः।

ॐ अग्निनाग्निः समिध्यते कविर्गृहपतिर्युवा। हव्यवाड्जुह्वास्यः।

विज्ज्योतिषेति जानो वृषोग्निस्त्रिष्टुप् अग्नि ज्वलने विनियोगः।

ॐ विज्ज्योतिषा बृहता भात्यग्निराविर्विश्वानि कृणुते महित्वा।
प्रादेवीर्मायाः सहते दुरेवाः शिशीते शृंगेरक्षसे विनिक्षे। *(ऋग्वेद ५.२.६)*

इन मन्त्र से अग्नि ज्वलन करना चाहिये।

अग्निमूर्तिध्यान—चत्वारिश्रृंगागोतमो वामदेवोग्निस्त्रिष्ठप्। अग्निमूर्ति ध्याने विनियोगः।

ॐ चत्वारि श्रृंगात्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्तासो अस्य। त्रिधाबद्धो वृषभोरोरवीति महोदेवो मर्त्याँआविवेश॥
सप्तहस्तश्चतुः श्रृंगः सप्तजिह्वो द्विशीर्षकः। त्रिपात्प्रसन्नवदनः सुखासीनः सुचिस्मितः॥
स्वाहांतुदक्षिणोपार्श्वे देवीं वामेस्वधां तथा। बिभ्रद्दक्षिण हस्तैस्तु शक्तिमन्नंस्त्रुचं स्त्रुवं॥
तोमरंव्यजनंवामैर्घृतपात्रं च धारयन्। मेषारूढो जटाबद्धो गौरवर्णो महौजसः।
धूम्रध्वजो लोहिताक्षः सप्तार्चिः सर्वकामदः॥ आत्माभिमुख मासीन एवं रूपो हुताशनः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-अग्निमुख प्रकरण)*

इन मन्त्रों को पढकर ध्यान करें। अग्ने अच्छावदेत्यस्य मन्त्रस्य अग्निस्तापसोग्निरनुष्टुप् अग्नि स्वाभिमुखीकरणे विनियोगः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ अग्ने अच्छावदेहनः प्रत्यङ्नः सुमना भव। प्रनोयच्छ विशस्पते धनदा असि नस्त्वम्॥ (ऋग्वेद १०.१४१.१)
ॐ एष हि देवः प्रदिशो नु सर्वाः पूर्वो हि जातस्य उ गर्भे अंतः।
स विजायमानस्य जनिष्यमाणः प्रत्यङ्मुखास्तिष्ठति विश्वतोमुखः॥ (यजुर्वेद-आरण्यक-महानारायणोपनिषत्)

हे अग्ने शाण्डिल्यगोत्र मेषारूढ वैश्वानर प्राङ्मुखः सन् ममाभिमुखो वरदस्सुप्रसन्नो भव। इतना कहकर ध्यसान से सम्मुख करके अन्वाधान करें।

अन्वाधान—अन्वाधानाभिधं कर्म क्रियते सर्वकर्मसु। निमन्त्रणार्थं देवानां होतव्यानां च होतृभिः॥ (आश्वलायन स्मृति)

सभी कर्मों में अन्वाधान कर्म करना चाहिये। ऋत्विज अपने यज्ञ में जिन-जिन देवताओं को आहुतियाँ देते हैं उन्हें पहले बुलाकर सूचित करना चाहिये। यह क्रिया अन्वाधान कहलाता है। **आचम्य प्राणानायम्य देशकालौस्मृत्वा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं एतत् कर्म करिष्ये।** आचमन कर (यदि बीच में उठ के बार गये हो तो), प्राणायाम करके देशकालसंकीर्तन पूर्वक संकल्प लें। **तत्र देवता परिग्रहार्थं अन्वाधानं करिष्ये।** समित् द्वयं आदाय। (दो समितों को हाथ में लेकर) अस्मिन् अन्वाहितेग्नौ जातवेदसमग्निं इध्मेन प्रजापतिं प्रजापतिं चाघारदेवते आज्येन अग्नीषोमौचक्षुषी आज्येन। इन अग्नियों में जातवेदाग्नि को समित् से, आधार देवता प्रजापति एवं प्रजापति को घी से, चक्षुष् अग्नि सोम को घी से होम करना चाहिये। यह पूर्वाङ्ग है। सभी यज्ञों में इतना अन्वाधान होता है। आगे यज्ञों के अनुसार बदलता है।

जैसे सर्वाद्भुत शान्ति याग—अग्निं वायुं सूर्य प्रजापतिं च आज्यद्रव्येण प्रधान देवतां आदित्यं अधिदेवतामग्निं प्रत्यधिदेवतां रुद्रं अर्क समित् चर्वाज्य द्रव्यैः प्रधान देवतां सोमं अधिदेवतां अपः प्रत्यधिदेवतां गोरीं, पलाशसमित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां अंगारकं अधिदेवतां भूमिं, प्रत्यधिदेवतां स्कन्दं खदिरसमित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां बुधं, अधिदेवतां विष्णुं प्रत्यधिदेवतां पुरुषं अपामार्ग समित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां बृहस्पितिं, अधिदेवतां इन्द्रं, प्रत्यधिदेवतां, ब्रह्माणं पिप्पल समित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां शुक्रं, अधिदेवतां इन्द्राणीं प्रत्यधिदेवतां इन्द्रं, औदुम्बर समित् चर्वाज्यद्रव्यैः

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रधानदेवतां शनिं अधिदेवतां प्रजापतिं प्रत्यधिदेवतां यमं, शमीसमित् चर्वाज्यद्रव्यैः, प्रधान देवतां राहुं अधिदेवतां सर्पान् प्रत्यधिदेवतां मृत्युं, दूर्वा समित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां केतुं, अधिदेवतां ब्रह्माणं प्रत्यधिदेवतां चित्रगुप्तं कुशसमित् चर्वाज्य द्रव्यैः प्रधान देवताः अष्टाविंशति संख्यया अधिदेवताः प्रत्यधिदेवताः दशांशसंख्यया विनायकं दुर्गां क्षेत्रपालं वायुं आकाशं अश्विनौ क्रतु साद्गुण्य देवताः प्रधान विंशांश संख्यया इन्द्रं अग्निं यमं निर्ऋतिं वरुणं वायुं कुबेरं ईशानं एताः क्रतुसंरक्षणदेवताः प्रागुक्त समित् चर्वाज्यद्रव्यैः प्रधान विंशांश संख्याया अग्निं वायुं सूर्यं प्रजापतिं च आज्यद्रव्येण, सर्वाद्भुत शान्ति होमे प्रधान देवतां सूर्यं अष्टोत्तर शतसंख्यया चरु द्रव्येण, सूर्यं रुद्राधिपतिं रविकिरणां ईश्वरं सर्वोत्पातशमनं अग्निं पृथिवीं महान्तं वायुमन्तरिक्षं महान्तं आदित्यं दिवं महान्तं प्रजापतिं चन्द्रमसं नक्षत्राणि दिशो महान्तं च एताः देवताः आज्य द्रव्येण एकैक संख्यया चरु शेषेणास्विष्टकृतमग्निं इध्मसन्नहनेन रुद्रं अयासमग्निं देवान् विष्णुं अग्निं, वायुं सूर्यं प्रजापतिं च एताः प्रायश्चित्त देवता आज्येन ज्ञाताज्ञात दोष निबर्हणार्थं त्रिवारमग्निं मरुतश्चाज्येन विश्वान् देवान् संस्रावेण एताः अङ्गदेवताः प्रधानदेवताः सर्वाः सन्निहिताः सन्तु एवं सांगोपाङ्गेन कर्मणा सद्यो यक्ष्ये।

॥ सर्वाद्भुत शान्ति याग का अन्वाधान समाप्त ॥

परिसमूहन एवं पर्युक्षण—उपरोक्त क्रम से परिसमूहन पर परिस्तरण डालना चाहिये। वह इस प्रकार है। अग्न्यायतनाद् अष्टांगुल परिमिते देशे ऐशानीं दिशं आरम्य प्रदक्षिणं संमतात् सोदकेन पाणिना त्रिः परिमृज्य दशांगुलमिते देशे प्राच्यादिषु पूर्वं उपरिनिहितदर्भैः परिस्तृणीयात्।

स्थण्डिले होम वेदी के आठ अंगुल बाहर ईशान्य दिशा से प्रारम्भकर प्रदक्षिणा क्रम से चारों ओर जलयुक्त हाथ से तीन बार परिमार्जन करें। स्थण्डिले होमवेदी के दस अंगुली बाहर पूर्व से प्रारम्भकर सभी दिशाओं में कुशों को बिछाना चाहिये।

तत्र प्राच्यां प्रतीच्यां च उदगग्रादर्भाः अवाच्यामुदीच्यां च प्रागग्राः पूर्वपश्चिमपरिस्तरणमूलयोरुपरि दक्षिणपरिस्तरणं उत्तरपरिस्तरणंतु तदग्रयोरधस्तात्। पूर्व एवं पश्चिम दिशा में कुशाग्र (कुश का आगे का भाग) उत्तराभिमुख हो, दक्षिण एवं उत्तर दिशा में कुशाग्र पूर्वाभिमुख होना चाहिये। पूर्व एवं पश्चिम दिशा

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

की कुशों के (परिस्तरण) ऊपर दक्षिण का परिस्तरण, एवं पूर्व पश्चिम कुशों के परिस्तरण के नीचे उत्तर का परिस्तरण होना चाहिये। परिस्तरण कुशों के लिए कोई निश्चित संख्या नहीं हैं। अधिक उपलब्ध होने पर अधिक विछावे। कम होने पर चार-चार बिछायें। उतना ही न हो तो तीन-तीन बिछायें।

परिस्तृणात्यासनार्थं आशेशानां त्रिभिस्त्रिभिः। कुशैः प्रागादिदिक्ष्वत्र कृत्वा परिसमूहनम्॥ १॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

आशापालांस्तु शक्रादीनासनेषु समावहेत्। दिक्पालकों के आसन के लिए यह परिस्तरण बिछायें जाते हैं। एक-एक दिशा में तीन कुश डालना चाहिये। उन पर इन्द्रादि दिक्पालकों का आवाहन करना चाहिये।

ततो अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनार्थं उत्तरतश्च पात्रासादनार्थं कांश्चित्प्रागग्रान् दर्भानास्तृणीयात्। *(आश्वलायन स्मृति)*

इसके पश्चात् अग्नि के दक्षिण दिशा में ब्रह्मा के आसन के लिए एवं उत्तर में यज्ञपात्रों को रखने के लिए कुछ कुशाओं को पूर्वाभिमुख बिछाना चाहिये। अग्नेरैशानतस्त्रिरंभसापरिषिच्य उत्तरास्तीर्णेषु दर्भेषु दक्षिणसव्यपाणिभ्यां क्रमेण चरु स्थाली प्रोक्षणयौ, दर्वी स्रुवौ, प्रणीताज्यपात्रे, इध्माबर्हिषी इति द्वे द्वे पात्रे उदगपवर्ग प्राक्संस्थंयुब्जान्या सादयेत्। अग्नि के चारों ओर फिर से तीन बार ईशान्य से प्रदक्षिणाकार में परिषेचन करें।

ब्रह्मा का आवाहन् (अग्निमुखाङ्ग)—ततो यथोक्त लक्षणां ईशानदिग् अवस्थितं ब्राह्मणं अस्मिन् (सर्वाद्भुत शान्ति याग) कर्मणि ब्रह्माणं त्वामहं वृणे इति तत् पाणिं पाणिना गृहीत्वा वृणुयात्। उसके पश्चात् श्रेष्ठ लक्षणों से युक्त ईशान दिशा में उपविष्ट ब्राह्मण को इस याग कर्म में आपको मैं ब्रह्मा के रूप में वरण करता हूँ। कहकर हाथ पकडकर वरण करें।

ततः ब्रह्मा वृतोस्मि। कर्म करिष्यामि इति उक्त्वा प्राङ्मुखो तीर्थदेशे यज्ञोपवीत्यचाम्य समस्य पाणयङ्गुष्ठो भूत्वा अग्नेणाग्निं दक्षिणपादपुरः सरं परीत्य दक्षिणतः उदङ्मुखः स्थित्वा आसनार्थ दर्भेषु दक्षिणभागस्थं एकं दर्भं अङ्गुष्टानामिकाभ्यां गृहीत्वा ''**निरस्तः परावसुः**'' ''इति नैर्ऋत्यान् निरस्य, अपः स्पृष्ट्वा **इदमहम् अर्वावसोः सदने सीदामि**'' इति उदङ्मुख एवं वामोरोरुपरि दक्षिणपादं संस्थाप्य उपविश्य यजमानेन गन्धाक्षतादिभिः अर्चितः सन् ''ब्रह्मन्

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ब्रह्मासि नमस्ते ब्रह्मन् ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणमावाहयामि'' यजमानेन आचार्येण वा आवाहितः।

इसके पश्चात् ब्रह्मा मुझे यह स्वीकार है। कहकर पूर्वाभिमुख बैठकर (उत्तर एवं ईशान्य के बीच में) ब्रह्मवस्त्र (उत्तरीय) डालकर, हाथ जोडकर (संकल्प लेते समय जैसे हाथ बंद करते हैं वैसे) अग्नि के आगे प्रदक्षिणाकार में दाहिने पॉव को आगे कर चलकर दक्षिण में उत्तराभिमुख खड़े होकर, अपने आसन के कुशों में दक्षिण की एक कुश को अङ्गुष्ठ एवं अनामिका अङ्गुलियों से खींचकर निरस्तः परावसुः'' कहकर नैऋत्य दिशा में फेंकना चाहिये। फिर हाथ धोलें। ''इदमहम् अर्वावसोः सदने सीदामि'' मन्त्र कहकर उत्तराभिमुख ही बायें जॉघ पर दाहिने पैर को रखकर बैठना चाहिये। फिर यजमान ''ब्रह्मन् मन्त्र कहकर गन्ध अक्षतों से ब्रह्मा का पूजन करें।

ॐ बृहस्पतिर्ब्रह्मा ब्रह्म सदन आशिष्यते बृहस्पते यज्ञं गोपाय सयज्ञंपाहि सयज्ञपतिं पाहि समांपाहीति जपित्वा सदा यज्ञ मना एव वर्तेत। इसे कहकर ब्रह्म निरन्तर यज्ञ में ही मन लगायें। यहाँ पर ब्रह्मा का वरणादि कार्य संपन्न हुआ।

उत्पवनं नाम शुद्धीकरणम्— शुद्धीकरण क्रिया को उत्पवन कहते हैं। सवितुष्ट्वाहिरण्यस्तूपः सवितापुर उष्णिक्। आज्यस्योत्पवने विनियोगः।

ॐ सवितुष्ट्वाप्रसवउत्पुनाच्छिद्रेण पवित्रेण वसोः सूर्यस्य रश्मिभिः॥ *(यजुर्वेद)*

इति मन्त्रेण एकश्रुत्या उच्चारितेन एकवारं द्विस्तूष्णीं उत्तानपाणिद्वय अङ्गुष्ठ उपकनिष्ठिकाभ्यां उंतयोरससृष्ट गृहीताभ्यां उत्तानपाणिद्वय अङ्गुष्ठ उपकनिष्ठिकाभ्यां अंतयोरससृष्ट गृहीताभ्यां उदगग्राभ्यां पवित्राभ्यां प्रागुत्पूय ते पवित्रे अद्भिः प्रोक्ष्य अग्नौ प्रहरेत्। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इस एक स्वरी मन्त्र को कहते हुए एक बार हथेलियों को उपर किये दोनों हाथों के अंगुष्ठ एवं अनामिका अंगुलियों में पवित्र के दो कुशों को अलग-अलग

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(परस्पर न मिलें) ऐसे पकड़ना चाहिये। उनका अग्रभाग उत्तर की ओर होना चाहिये। पहले उन्हें पश्चिम से पूर्व की ओर घी में जाकर ऊपर उठायें। फिर दो बाद इसी क्रिया को बिना मन्त्र कहते हुए दोहरायें। फिर उन पवित्र कुशों को जल में प्रोक्षण कर अग्नि में डालना चाहिये।

अथाग्नेः पश्चात् परिस्तरणाद् बहिः आत्मनो अग्रतो भूमिं प्रोक्ष्य तत्र बर्हिः सन्नहनीं रज्जुं उदगग्रां प्रसार्य तस्यां बर्हिः प्रागग्रमुदगपवर्गं अविरलं आस्तीर्य तस्मिन् आज्यपात्रं निधाय स्रुवादि संमार्जयेत्।

उसके पश्चात् अग्नि के पश्चिम में परिस्तरण के बाहर अपने आगे भूमि की प्रोक्षण कर वहाँ बर्हिष् को बाँधी-हुई रज्जु (रस्सी) को उत्तराभिमुख खोलकर रखें। उस बर्हिष् को बाँधी-हुई रज्जु रस्सी को उत्तराभिमुख खोलकर रखें। उस बर्हिष को पूर्वाग्र रखते हुए उत्तर की ओर मोटे-बिछाना चाहिये। (बीच में जगह खाली न रहना चाहिये।) फिर उस बर्हिष पर घी का पात्र रखें।

स्रुवादि संस्कार—दक्षिणेन हस्तेन स्रुक् स्रुवो गृहीत्वा सव्येन कांश्चिद्दर्भानादाय सहैवाग्नौ प्रताप्य स्रुचं निधाय स्रुवं वामहस्तेगृहीत्वा दक्षिणाहस्तेन स्रुवस्य बिलं दर्भाग्रैः प्रादक्षिण्येन प्रागादि प्रागपवर्गं त्रिः संमृज्य अधस्ताद्दर्भाग्रैः एव अभ्यात्मं बिलपृष्ठं त्रिः संगृज्य ततो दर्भाणां मूलैः दंडस्याधस्ताद् बिलपृष्ठादारभ्य यावदुपरिष्टाद् बिलं तावत् त्रिः संमृज्य अद्भिः प्रोक्ष्य स्रुव निष्टप्याज्य स्थाल्या उत्तरतः स्रुगसंसृष्टं निधाय उदकं स्पृष्ट्वा तैरेव दर्भैः जुहूं च एव मेव संमृज्यद्युत्तरतोश्रुवाधुन्तरो निधाय दर्भानद्भिः क्षालयित्वा अग्नौ अनु प्रहरेत्। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

पर्युक्षणं-तिर्यग्भूतेनहस्तेनकृतंपर्युक्षणं तथा। *(आश्वलायन स्मृति)*

हाथ को तिरचा करके चारों ओर सींचना पर्युक्षण कहलाता है। अथाग्नेः पश्चात् परिस्तरणाद् बहिः आत्मनो अग्रतो भूमिं प्रोक्ष्य तत्र बर्हिः सन्नहनीं रज्जुं

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उदगग्रां प्रसार्य तस्यां बर्हिः प्रागग्रमुदगपवर्ग अविरलं आस्तीर्य तस्मिन् आज्यपात्रं निधाय स्रुवादि संमार्जयेत्।

उसके पश्चात् अग्नि के पश्चिम में परिस्तरण के बाहर अपने आगे भूमि की प्रोक्षण कर वहाँ बर्हिष् को बाँधी-हुई रज्जु (रस्सी) को उत्तराभिमुख खोलकर रखें। उस बर्हिष् को बाँधी-हुई रज्जु रस्सी को उत्तराभिमुख खोलकर रखें। उस बर्हिष को पूर्वाग्र रखते हुए उत्तर की ओर मोटे-बिछाना चाहिये। (बीच में जगह खाली न रहना चाहिये।) फिर उस बर्हिष पर घी का पात्र रखें।

चरु शुद्धि—ततः सुश्रृतं स्रुव गृहीतेनाज्येन अभिघार्य उदगुद्वास्य अगन्याज्ययोर्मध्येन नीत्वा आज्यात् दक्षिणातो बर्हिषि सोत्तरमासाद्य पुनरप्यभिधार्य नवाभिधार्य (परिधीन् ऊर्ध्व समिधौ अग्नौ निधाय।) पक्व चरु पात्र में स्थित चरु को घी से अभिघार्य (सिञ्चन) करके उत्तर में रखना चाहिये। अग्नि एवं घी पात्र के बीच में इसे लाना चाहिये। आज्यपात्र के दक्षिण में बर्हिष् पर इसे रखकर घी से अभिघार करना चाहिये। न करने पर भी कोई बाधा नहीं है।

अग्नि उपस्थानम्—विश्वानि न इति तिसृणां आत्रेयो वसुश्रुतोग्निस्त्रिष्टुप् द्वयोरर्चने अन्त्याया उपस्थाने विनियोगः।

ॐ विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदः। पूर्व में पूजन करें। ॐ सिंधुननावादुरितातिपर्षि॥ आग्नेय में पूजन करें
ॐ अग्ने अत्रिवन्नमसागृणानः॥ दक्षिण में पूजन करें। ॐ अस्माकं बोध्यवितातनूनां॥ नैर्ऋत्य में पूजन करें। *(ऋग्वेद ५.४.९)*
ॐ यस्त्वाहृदाकीरिणामन्यमानः॥ पश्चिम में पूजन करें। ॐ अमर्त्यं मर्त्यो जोहवीमि॥ वायव्य में पूजन करें।
ॐ जातवेदो यशो अस्मासुधेहि॥ उत्तर में पूजन करें। ॐ प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमश्यां॥ ईशान में पूजन करें। *(ऋग्वेद ५.४.१०)*
ॐ यस्मैत्वं सुकृते जातवेदउलोकमग्नेकृणवस्योनं। अश्विनं स पुत्रिणं वीरवन्तं गोमन्तं रयिंनशतेस्वस्ति॥ *(ऋग्वेद ५.४.११)*

यह मन्त्र कहकर उपस्थान (प्रार्थना) करें। **ॐ अग्नये नमः। ॐ जानवेदसे नमः, ॐ हुताशनाय नमः।** इन मन्त्रों से अग्नि का पूजन करें। **ॐ आत्मने नमः, ॐ अन्तरात्मने नमः, ॐ परमात्मने नमः।** इन मन्त्रों से आत्मा का पूजन करें। हाथ धो लें। **ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ वसिष्ठाय नमः। ॐ त्रयीवद्यात्मने**

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नमः। इन मन्त्रों से ब्रह्मा का पूजन करें।

इध्म बन्धन रज्जुं इध्म स्थाने निधाय पाणिना इध्ममादाय मूलमध्याग्रेषु स्रुवेण त्रिरभिधार्य मूल मध्ययो र्मध्यभागे गृहीत्वा। सरज्जुं अनुयाजं प्रणीतायां प्रतिष्ठाप्य इध्म को हाथ में लेवें। उसके रज्जु (रस्सी) को खोलें। रज्जू को अनुयाज समित् के साथ प्रणीता पात्र पर रखना चाहिये। हाथ में लिए इध्यम को मूल, मध्य एवं अग्र में स्रुव से तीन बार घी से अभिधार्य (सिञ्चचन) करके, मूल एवं मध्य के बीच में पकड़कर (दाहिने हाथ में)—

अयं ते वामदेवो जातवेदा अग्निस्त्रिष्टुप् इश्म हवने विनियोगः। ॐ अयं तइध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्वचेद्धवर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधयस्वाहा॥ जातवेदसेग्नये इदं न मम। इन मन्त्रों को कहकर इध्यम को अग्नि में डाल देवें। **इध्म मूलं स्पृष्ट्वा अपः उपस्पृश्य आघारावाघारयेत्।** इध्ममूल को छूकर हाथ धो लें। आघार होम करें।

आघार होम

वायव्य कोणादारभ्य आग्नेय कोण पर्यन्तं प्रजापतये स्वाहा। (मनसा स्मरन्) नैर्ऋत्यकोणादारभ्य ऐशानी कोणपर्यन्तं प्रजापतये स्वाहा। प्रजापतय इदं न मम

अग्नेरुत्तरतः अग्नये स्वाहा। अग्नय इदं न मम। दक्षिणतः सोमाय स्वाहा। सोमाय इदं न मम।

व्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिः प्रजापतिर्बृहती व्याहृतिहोमे विनियोगः। ॐभूः स्वाहा अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा प्रजापतये इदं न मम।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नवग्रह होमः

प्रधान देवता सूर्य होमः—आकृष्णेनेत्यस्य हिरण्यस्तूपः सविता त्रिष्टुप्, प्रधान देवता आदित्य प्रीत्यर्थे अर्कसमित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्य च।
हिरण्ययेन सविता रथेनाऽऽदेवो याति भुवनानि पश्यन् स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.३५.२)*

आदित्यायेदं न मम। २८ बार इस मंत्र से अर्क सहित घी एवं चरु से होम यह संख्या ८ या २८ या १०८ बार कर सकते हैं।

सूर्य अधिदेवता अग्नि होमः—अग्निं दूतमित्यस्य काण्वो मेधातिथिरग्निर्गायत्री आदित्यस्य अधिदेवता अग्निप्रीत्यर्थे अर्कसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् स्वाहा। *(ऋग्वेद १.१२.१)*

ॐ आदित्य अधिदेवतायै अग्नये इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें। (३+३+३=९ आहुति)

सूर्य प्रत्यधिदेवता रुद्र होमः—ॐ कद्रुद्राय इत्यस्य घोरः काण्वो रुद्रो गायत्री आदित्यस्य प्रत्यधिदेवता रुद्र प्रीत्यर्थे अर्कसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ कद्रुद्राय प्रचेतसे मीळ्हुष्टमाय तव्यसे। वोचेम शंतमं हृदे स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.४३.१)*

आदित्य प्रत्यधिदेवता रुद्राय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें। (३ समित् + ३ घी + ३ चरु की आहुतियां = ९ आहुतियाँ)

प्रार्थना – दिवाकरं दीप्त सहस्त्ररश्मिं तेजोमयं जगतः कर्मसाक्षिम्। अंशुं भानुं सूर्यमादिं ग्रहाणां दिवाकरं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

आदित्याय नमः।

प्रधान देवता सोम होमः—आप्यायस्व गौतमः सोमो गायत्री प्रधान देवता चन्द्रप्रीत्यर्थे पलाश समित्, आज्य, चरु होम विनियोगः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे स्वाहा॥ (ऋग्वेद १.९१.१६)

सोमाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से पलाश सहित घी एवं चरु से होम करें।

सोम अधिदेवता अप होमः—अप्सु मे सिन्धद्वीप आपोगायत्री सोमस्य अधिदेवता अप् प्रीत्यर्थे पलाश समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा। अग्निं च विश्वशंभुवं स्वाहा॥ (ऋग्वेद १०.९.६)

सोमाधिदेवतायै अद्भ्य इदं न मम। इस मन्त्र से तीन बार होम करें।

सोम प्रत्यधिदेवता गौरी होम—गौरीर्मिमायेत्यस्य औचत्यपुत्रो दीर्घतमा उमा जगती। सोमस्य प्रत्यधिदेवता गौरी प्रीत्यर्थे पलाशसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी।
अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन् स्वाहा।

सोम प्रत्यधिदेवता गौर्यै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— यः कालहेतोः क्षयवृद्धिमेति यं देवताः पितरश्चापिबन्ति तं वै वरेण्यं ब्रह्मेन्द्रवन्द्यं चन्द्रं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

चन्द्राय नमः।

प्रधान देवता अङ्गारक होमः—अग्निर्मूर्धा विरूपोङ्गारको गायत्री। प्रधान देवता अङ्गारक प्रीत्यर्थे खदिरसमित आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति स्वाहा। (ऋग्वेद ८.४४.१६)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अङ्गारकाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र में खदिर समित्, घी एवं चरु से होम करें।

अङ्गारक अधिदेवता भूमि होमः—स्योना पृथिवीत्यस्य मेधातिथिः पृथिवी गायत्री। अङ्गारकस्य अधिदेवता भूमि प्रीत्यर्थे खदिरसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ स्योना पृथिवि भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथः स्वाहा। *(ऋग्वेद १.२२.१५)*

अङ्गारकाधिदेवतायै भूम्यै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

अङ्गारक प्रत्यधिदेवता स्कन्द होमः—कुमारं माता स्कन्दः स्कन्दस्त्रिष्टुप्। अङ्गारकस्य प्रत्यधिदेवता स्कन्द प्रीत्यर्थे खदिर समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ कुमारं माता युवतिः समुब्धं गुहा बिभर्ति न ददाति पित्रे
अनीकमस्य न मिनज्जनासः पुरः पश्यन्ति निहितमरतौ स्वाहा। *(ऋग्वेद ५.२.१)*

अङ्गारक प्रत्यधिदेवतायै स्कन्दाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— महेश्वरस्याननस्वेदबिन्दोर्भूमौ जातं रक्तमालांबराढ्यं। सुरश्मिणां लोहिताङ्गं कुमारमङ्गारकं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

अङ्गारकाय नमः।

प्रधान देवता बुध होमः—उद्बुध्यध्वं बुधो बुधस्त्रिष्टुप्, प्रधान देवता बुध प्रीत्यर्थे अपामार्ग समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिंध्वं बहवः सनीळा।
दधिक्रमग्निमुषसं च देवीमिन्द्रावतोऽवसे निह्वये वः स्वाहा। *(ऋग्वेद १०.१०१.१)*

बुधाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से अपामार्ग समित्, घी एवं चरु से होम करें।

बुध अधिदेवता विष्णु होमः—इदं विष्णुर्मेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री, बुधस्य अधिदेवता विष्णु प्रीत्यर्थे अपामार्ग समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूळहमस्य पांसुरे स्वाहा। *(ऋग्वेद १.२२.१७)*

बुधाधिदेवतायै विष्णवे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

बुध प्रत्यधिदेवता पुरुष होमः—सहस्रशीर्षा नारायणः पुरुषोऽनुष्टुप्, बुध प्रत्यधिदेवता पुरुष प्रीत्यर्थे अपामार्ग समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् स्वाहा। *(ऋग्वेद १०.९०.१)*

बुध प्रत्यधिदेवता पुरुषाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रौ महाद्युतिः। सूर्य प्रियकरो विद्वान् पीडां दहतु मे बुधः॥ ॐबुधाय नमः।

प्रधान देवता बृहस्पति होमः—बृहस्पते गृत्समदो बृहस्पतिस्त्रिष्टुप्, प्रधान देवता बृहस्पति प्रीत्यर्थे पिप्ल समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् स्वाहा॥ *(ऋग्वेद २.२३.१५)*

बृहस्पतये इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से पिप्ल समित्, घी एवं चरु से होम करें।

बृहस्पति अधिदेवता इन्द्र होमः—इन्द्र श्रेष्ठानि गृत्समद इन्द्रस्त्रिष्टुप्, बृहस्पतेरधिदेवता इन्द्रप्रीत्यर्थे पिप्पल समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे।
पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वादमानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम् स्वाहा। *(ऋग्वेद २.२१.६)*

बृहस्पत्यधिदेवतायै इन्द्राय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बृहस्पति प्रत्यधिदेवता ब्रह्मा होमः—ब्रह्मणाते विश्वामित्रो ब्रह्मा त्रिष्टुप्, बृहस्पति प्रत्यधिदेवता ब्रह्म प्रीत्यर्थे पिप्लसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ ब्रह्मणा ते ब्रह्मयुजा युनज्मि हरी सखाया सधमाद आशू।
स्थिरं रथं सुखमिन्द्राधितिष्ठन् प्रजानन् विद्वाँ उपयाहि सोमम् स्वाहा। *(ऋग्वेद ३.३५.४)*

बृहस्पति प्रत्यधिदेवतायै ब्रह्मणो इदं न मम। इस मंत्र से तीन बर होम करें।

प्रार्थना— बुध्यात्मनो यस्य न कश्चिदन्यो मतिं देवा उपजीवंति यस्य। प्रजापते रात्मजं धर्मनिष्ठं गुरुं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ गुरुवे नमः।

प्रधान देवता शुक्र होमः—शुक्रं ते भारद्वाजः शुक्रस्त्रिष्टुप्, प्रधान देवता शुक्र प्रीत्यर्थे औदुम्बर समित्, आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि।
विश्वा हि माया अवसि स्वधावो भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु स्वाहा। *(ऋग्वेद ६.५८.१)*

शुक्राय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से औदुम्बर समित्, घी एवं चरु से हाम करें।

शुक्र अधिदेवता इन्द्राणी होमः—इन्द्राणी वृषाकपिरिंद्राणी पंक्तिः, शुक्रस्य अधिदेवता इन्द्राणी प्रीत्यर्थे औदुम्बर समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ इंद्राणीमासु नारिषु सुभगामहमश्रवम्। नह्यस्या अपरं चन जरसा मरते पतिर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः स्वाहा।

(ऋग्वेद १०.८६.११)

ॐ शुक्र अधिदेवतायै इन्द्राण्यै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

शुक्र प्रत्यधिदेवता इन्द्र होमः—इन्द्रं वो मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री, शुक्रप्रत्यधिदेवता इन्द्र प्रीन्यर्थे औदुम्बर समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ इंद्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः स्वाहा॥ (ऋग्वेद १.७.१०)

ॐ शुक्र प्रत्यधिदेवतायै इन्द्राय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— वर्षप्रदं चिन्तितार्थानुकूलं मौनाद्विशिष्टं सुनयोमपन्नम्। तं भार्गवं योगविशुद्धसत्वं शुक्रं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ शुक्राय नमः।

प्रधान देवता शनैश्चर होमः—शमग्निरित्यस्य इरिंबिठिः शनैश्चर उष्णिक्, प्रधान देवता शनैश्चर प्रीत्यर्थे शमी समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ शमग्निरग्निभिः करच्छंनस्तपतु सूर्यः। शं वातो वात्वरपा अपस्त्रिधः स्वाहा। (ऋग्वेद ८.१८.६)

शनैश्चराय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से शमी समित्, घी एवं चरु से होम करें।

शनैश्चर अधिदेवता प्रजापति होमः—प्रजापते हिरण्यगर्भः प्रजापतिस्त्रिष्टुप्, शनैश्चरस्य अधिदेवता प्रजापतिप्रीत्यर्थे शमी समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा॥ (ऋग्वेद १०.१२१.१०)

शनैश्चरस्य अधिदेवता प्रजापतये इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

शनैश्चर प्रत्यधिदेवता यम होमः—यमाय हसोमं यमो यमोनुष्टुप्, शनैश्चरस्य प्रत्यधि देवता यम प्रीत्यर्थे शमीसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हविः। यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः स्वाहा। (ऋग्वेद १०.१४.१३)

शनैश्चर प्रत्यधिदेवतायै यमाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रार्थना— शनैश्चरो राशितो राशिमेति शनैर्भोगो गमनं चेष्टितं च। सूर्यात्मजं क्रोधनं सुप्रसन्नं शनैश्चरं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ शनैश्चराय नमः।

प्रधान देवता राहु होम—कयानो वामदेवो राहुर्गायत्री प्रधान देवता राहु प्रीत्यर्थे दूर्वासमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कयाशचिष्ठया वृता स्वाहा राहवे इदं न मम॥ *(ऋग्वेद ४.३१.१)*

२८ बार इस मंत्र से दूर्वा समित्, घी एवं चरु से होम करें।

राहु अधिदेवता सर्प होमः—आयं गौः सार्पराज्ञीः सर्पा गायत्री। राहु अधिदेवता सर्प प्रीत्यर्थे दूर्वा समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयंत्स्वः १ स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १०.१८९.१)*

राहु अधिदेवतायै सर्पेभ्यः इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

राहु प्रत्यधिदेवता मृत्यु होमः—परं मृत्युः संकुसिको मृत्युस्त्रिष्टुप्। राहु प्रत्यधिदेवता मृत्यु प्रीत्यर्थे दूर्वा समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ परं मृत्यो अनुपरेहि पंथां यस्ते स्व इतरो देव यानात्।
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजां रीरिषो मोत वीरान् स्वाहा। *(ऋग्वेद १०.१८.१)*

राहु प्रत्यधिदेवतायै मृत्यवे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— यो विष्णुनैवामृतं भोक्ष्यमाणः छित्वाशिरो ग्रहभावे नियुक्तः। यश्चन्द्रसूर्यौ ग्रसते पर्व काले राहुं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ राहवे नमः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रधान देवता केतु होमः—केतुं कृण्वन्नत्यिस्य मंत्रस्य मधुच्छन्दाः केतुर्गायत्री प्रधान देवता केतु प्रीत्यर्थे कुश समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.६.३)*

केतवे इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से कुश समित्, घी एवं चरु से होम करें।

केतु अधिदेवता ब्रह्म होमः—ब्रह्मजज्ञानमिति नकुलो ब्रह्मा त्रिष्टुप्, केत्वधिदेवता ब्रह्मप्रीत्यर्थे कुश समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः।
स बुध्नियां उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः स्वाहा॥ *(यजुर्वेद-४ काण्ड-२ प्रश्न-८ अनुवाक-४ मन्त्र)*

केतु अधिदेवताब्रह्मणो इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

केतु प्रत्यधिदेवता चित्रगुप्त होम—स चित्र चित्रं भारद्वाजश्चित्रगुप्तस्त्रिष्टुप्। केतु प्रत्यधिदेवता चित्रगुप्तप्रीत्यर्थे कुश समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ स चित्र चित्रं चितयन्तमस्मे चित्रक्षत्र चित्रतमं वयोधाम्।
चन्द्रं रयिं पुरुवीरं बृहंतं चन्द्रचन्द्राभिर्गृणते युवस्व स्वाहा॥ *(ऋग्वेद ६.६.७)*

केतु प्रत्यधिदेवतायै चित्रगुप्ताय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना—हे ब्रह्मपुत्रा ब्रह्मसमानवक्त्राः ब्रह्मोद्भवाः ब्रह्मसमाः कुमाराः।
ब्रह्मोत्तमा वरदा जामदग्न्याः केतून् सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐकेतवे नमः। यहाँ पर नवग्रह होम संपन्न हुआ। आगे छः कर्म साद्गुण्य देवता होम होगा।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कर्म साद्गुण्य देवता होमः

कर्म साद्गुण्य देवता विनायक होमः-१—आतून इत्यस्य काण्वः कुसीदी विनायको गायत्री क्रतु साद्गुण्यदेवता विनायक प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ आतूनं इन्द्रक्षुमन्तं चित्रं ग्राभं सङ्गभाय महाहस्ती दक्षिणोन स्वाहा। *(ऋग्वेद ८.८१.१)*

कर्म साद्गुण्यदेवतायै विनायकाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्यदेवता दुर्गा होमः-२—जातवेद से कश्यपो दुर्गा त्रिष्टुप् क्रतुसाद्गुण्यदेवता दुर्गा प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.९९.१)*

क्रतु साद्गुण्य देवतायै दुर्गायै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्यदेवता क्षेत्रपाल होमः-३—क्षेत्रस्य पतिना वामदेवः क्षेत्रपालोनुष्टुप् चरु होमे विनियोगः।

ॐ क्षेत्रस्य पतिना वयं हितेनेवजयामसि। गामश्वं पोषयित्वा सनोमृळातीदृशे स्वाहा। *(ऋग्वेद ४.५७.१)*

क्रतु साद्गुण्य देवतायै क्षेत्रपालाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्य देवता वायु होमः-४—क्राणाशिशुरित्यस्यत्रियोवायुरुष्णिक् क्रतु साद्गुण्य देवता वायु प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ क्राणाशिशुर्महीनांहिन्वन्नृतस्यदीधितिं। विश्वापरिप्रिया भुवदधद्वि ता स्वाहा॥ *(ऋग्वेद ९.१०२.१)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्रतु साद्गुण्य देवतायै वायवे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्य देवता आकाश होमः-५—आदित्यप्रत्नस्य वत्स आकाशो गायत्री क्रतु साद्गुण्य देवता आकाश प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ आदित् प्रत्नस्यरेतसो ज्योतिष्पश्यंति वासरं। परोयदिध्यतेदिवा स्वाहा॥ *(ऋग्वेद ८.६.३०)*

क्रतु साद्गुण्यदेवतायै आकाशाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्य देवता अश्विनी देवता होमः-६—अश्विनावर्ति राहूगणो गोतमोश्विनावुष्णिक् अश्वि प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अश्विनावर्तिरस्मदागोमद्दस्राहिरण्यवत्। अर्वाग्रथं समनसानियच्छतं स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.९२.१६)*

क्रतु साद्गुण्य देवतायै अश्विभ्यां इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता होमः

क्रतु संरक्षक देवता इन्द्र होमः—इन्द्रं वो मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री क्रतु संरक्षक देवता इन्द्र प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.७.१०)*

क्रतु संरक्षक देवतायै इन्द्राय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता अग्नि होमः—अग्निं दूतमित्यस्य काण्वो मेधातिथिरग्निर्गायत्री क्रतु संरक्षक देवता अग्नि प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.१२.१)*

क्रतु संरक्षक देवतौ अग्नय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता यम होमः—यमाय सोमं यमोयमोनुष्टुप् क्रतु संरक्षक देवता यम प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ यमाय सोमं सुनुतयमायजुहुता हविः। यमंहयज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः स्वाहा॥ (ऋग्वेद १०.१४.१३)

क्रतु संरक्षक देवतायै यमाय इदं न मम। इस मंत्र को दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता निर्ऋति होमः—मोषुणः काण्वो निर्ऋतिर्गायत्री क्रतु संरक्षक देवता निर्ऋति प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ मोषुणः परापरानिर्ऋतिर्दुर्हणावधीत्। पदीष्ट तृष्णयासह स्वाहा॥ (ऋग्वेद १.३८.६)

क्रतु संरक्षक देवतायै निर्ऋतये इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता वरुण होमः—तत्वायामीत्यस्य शुनः शेपोवरुणस्त्रिष्टुप् क्रतु संरक्षक देवता वरुण प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्तेयजमानो हविर्भिः।
अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंसमान आयुः प्रमोषीः स्वाहा॥ (ऋग्वेद १.२४.११)

क्रतु संरक्षक देवतायै वरुणाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता वायु होमः—तव वायो व्यश्वोवायुर्गायत्री क्रतु संरक्षक देवता वायु प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ तव वायवृतस्पतेत्वष्टुर्जामातरद्भुत। अवास्यावृणीमहे स्वाहा॥ (ऋग्वेद ८.२६.२१)

क्रतु संरक्षक देवतायै वायवे इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता सोम होम—सोमो धेनुमित्यस्य गौतमः सोमस्त्रिष्टुप् क्रतु संरक्षक देवता सोम प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तमाशुं सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सादुन्यं विदथ्यं सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै स्वाहा॥ (ऋग्वेद १.९१.२०)

क्रतु संरक्षक देवतायै सोमाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता ईशान होमः—तमीशानमित्यस्य गौतम ईशानो जगती क्रतु संरक्षक देवता ईशान प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये स्वाहा॥ (ऋग्वेद १.८९.५)

क्रतु संरक्षक देवतायै ईशानाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें। यहाँ पर क्रतु संरक्षक देवता होम संपन्न हुआ।

व्याहृति होमः—व्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिः बृहती व्याहृति होमे विनियोगः। ॐभूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा,वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। इन मत्रों से एक बार होम करें।

प्रधान देवता सूर्य होमः

प्रधान देवता सूर्य होमः—बरमहाँ असीत्यस्य सूर्यःप्रगाथो बृहती सूर्य प्रीत्यर्थे आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ बरमहाँ असि सूर्य बळादित्य महाँ असि। महस्ते सतो महिमा पनस्यतेऽद्धा देव महाँ असि स्वाहा॥ (ऋग्वेद ८.१०१.११) आ.गृ.सूत्रम्

ॐ सूर्याय स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐरुद्राधिपतये स्वाहा, रुद्राधिपतय इदं न मम। ॐरवि किरणाय स्वाहा, रविकिरणाय इदं न मम। ॐ ईश्वराय स्वाहा, ईश्वराय इदं न मम। ॐसर्वोत्पातशमनाय स्वाहा, सर्वोत्पातशमनाय इदं न मम। प्रधान देवता के होम के बाद इन पाँच मंत्रों से घी की आहूति एक-एक बार देवें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ भूरग्नयें च पृथिव्यै चं महते च स्वाहा अग्नये पृथिव्यै महते च इदं न मम।
ॐ भुवों वायवेंचान्तरिक्षाय च महते च स्वाहा। वायवेऽन्तरिक्षाय महते च इदं न मम।
ॐ सुवंरादित्यायं य दिवे चं महते च स्वाहा। आदित्याय दिवे महते च इदं न मम।
ॐ भुर्भूवः सुवंश्चन्द्रमंसे च नक्षंत्रेभ्योदिग्भ्यश्चं महते च स्वाहा। *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषद्-आरण्यक)*

चन्द्रमसे नक्षत्रेभ्यो दिग्भ्यो महते च इदं न मम। इन चार मंत्रों से भी घी की आहुतियाँ एक-एक बार देवें। **ॐ भूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐ भुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐ स्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम।**

स्विष्टकृत् होमः—दर्व्यामुपस्तीर्य हविर्भागस्योत्तरार्धतः सकृत् अवदाय अवत्तंतु द्विः अभिघार्य। स्रुवा से दर्वी में (स्रुक्) घी डालकर, चरु के उत्तर भाग से चरु को निकालकर (हाथ से) दर्वी में रखें। फिर स्रुवा से उप पर दो बार घी डालें। आगे कहने वाले मंत्र को कहते हुए होम कुण्ड में ईशान्य दिशा में डालें। यदस्येति हिरण्यगर्भोग्निः स्विष्टकृद्घृतिः स्विष्टकृत् होमे विनियोगः।

ॐ यदंस्य कर्मणोत्यरींरिचंयद्वान्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत्स्विष्टकृद्विद्वान्त्सर्वं स्विष्टंसुहुतं करोतु मे॥
अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्धयः स्वाहा॥ *(श्रौत मन्त्र)*

इन दो मंत्रों को कहकर अग्नि के ईशान्य भाग में होम करें। स्विष्टकृतेऽग्नय इदं न मम।

इध्म बंधन रज्जुं विस्रस्य

पहले जिस रस्सी (कुशा निर्मित) से इध्यम बाँधे थे उस रस्सी को खोलकर उसे—ॐ रुद्राय पशुपतये स्वाहा, रुद्राय पशुपतये इदं न मम। कहकर होम करें। **प्रायश्चित आज्याहुतीः सप्त जुहुयात्।** प्रायश्चित सात घी की आहुतियाँ देवें। अयाश्चेतिविमदोया अग्निः पंक्तिः प्रायश्चित्याज्य होमे विनियोगः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ अयांश्चाग्नेस्यनभिशस्तीश्चसत्यमित्वमया असि।

अयासावयसाकतो यासन्हव्यमूहिषेयानोधेहि भेषजं स्वाहा॥ *(यजुर्वेद-आरण्यक)*

अग्नेय इदं न मम। अतो देवाः काण्वोमेधातिथिर्देवा गायत्री प्रायश्चिताज्यहोमे विनियोगः।

ॐ अतोदेवा अवंतु नो यतोविष्णुर्विचक्रमे। पृथिव्याः सप्त धामभिः स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.२२.१६)*

देवेभ्य इदं न मम। इदं विष्णुः काण्वोमेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री प्रायश्चित्ताज्यहोमे विनियोगः।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदं। समूळहमस्यपांसुरे स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.२२.१७)*

विष्णवे इदं न मम। व्यस्त समस्त व्याहृतीनां विश्वामित्र जमदग्निर्भरद्वाज प्रजापतय ऋषयः, अग्निवायुसूर्यप्राजापतयो देवताः गाय त्र्युष्णिगनुष्टुबृहत्यश्छंदांसि। प्रायश्चित्ताज्य होमे विनियोगः। ॐभूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। यहाँ पर यजमान के द्वारा करने वाला प्रायश्चित होम संपन्न हुआ। यज्ञ के पूजन होम में अनेक प्रकार के लोप संभव है। अतः उनके निवारण के लिए प्रायश्चित्त होम आवश्यक है। यजमान के प्रायश्चित होम से भी बचे हुए लोप दोषों के निवारण के लिए ब्रह्म प्रायश्चित विधान है। ब्रह्मा के स्थान पर यदि कुश हो तो स्वयं आचार्य ही ब्रह्म प्रायश्चित होम करें।

ब्रह्म प्रायश्चित्त होमः

ब्रह्मा के स्थान पर बैठे पं. जी के द्वारा यज्ञ में सपन्न लोप दोषों की निवृत्ति के लिए ब्रह्मा जी प्रायश्चित होम करते हैं।

ततो ब्रह्मा कर्तारं परीत्याग्नर्वायव्यदेशे तिष्ठन् एता एव सप्त आज्याहुतीर्जुहुयात्।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उसके बाद ब्रह्मा जी यजमान के पीठे से जाकर अग्नि के वायव्य दिशा में खडे होकर पूर्वोक्त सात मंत्रों से आहुति देवें। ब्रह्म प्रायश्चित्याज्यहोमे विनियोगः।

ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तीश्चसत्यमित्वमया असि।
अयासावयसाकृतो यासन्हव्यमूहिषेयानो धेहि भेषजम् स्वाहा॥ *(यजुर्वेद-आरण्यक)*

अग्नेय इदं न मम। इस पंक्ति को यजमान या अचार्य कहें।

ॐ अतो देवा अवंतु नो यतोविष्णुर्विचक्रमे। पृथिव्याः सप्त धामभिः स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.२२.१६)*

देवेभ्य इदं न मम (इस पंक्ति को आचार्य पढ़ें।)

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदं। समूळहमस्य पांसुरे स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.२२.१७)*

विष्णव इदं न मम। (आचार्य इस पंक्ति को कहें) ॐभूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। स्वाहा तक ब्रह्मा जी कहते है। इदं न मम वाला भाग यजमान व आचार्य को ही कहना हैं, त्याग को ब्रह्मा नहीं करना चाहिये। इदं न मम त्याग कहलाता है। ततो ब्रह्मा यथा आगतं तथैव स्वस्थाने उपविशेत्। ब्रह्मा जी जिस प्रकार आये थे उसी प्रकार जाकर अपने आसन पर बैठें। अनाज्ञातमिति मंत्रद्वयस्य हिरण्यगर्भोग्निरनुष्टुप्, ज्ञाताज्ञातदोष निबर्हणार्थं प्रायश्चित्ताज्य होमे विनियोगः।

ॐ अनाज्ञातं यदाज्ञातं यज्ञस्य क्रियतेमिथु। अग्नेतदस्य कल्पयत्वं हिवेत्थंयथातथं स्वाहा॥ *(यजुर्वेद-आरण्यक)*

अग्नये इदं न मम।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ पुरुषसंमितो यज्ञोयज्ञः पुरुषसंमितः। अग्रेतदस्य कल्पयत्वं हिवेत्थंयथातथं स्वाहा॥ (यजुर्वेद-आरण्यक)

यत्पाकत्रेत्याप्त्यस्त्रितोग्निस्त्रिष्टुप्। प्रायश्चिताज्य होमे विनियोगः।

ॐ यत्पाकत्रामनसादीनदक्षानयज्ञस्य मन्वतेमर्त्यासः।
अग्निष्टद्धोता क्रतुविद्विजानन्यजिष्ठो देवाँऋतुशोयजाति स्वाहा॥ (ऋग्वेद १०.२.५)

अग्नय इदं न मम। ॐयद्वोदेवा अभितपामरुत स्त्रिष्टुप्। मंत्र तंत्र विपर्यासादि निमित्तक प्रायश्चिताज्य होमे विनियोगः।

ॐ यद्वोदेवा अतिपातयानि वाचाचप्रयुतीदेवहेळनं।
अरायो अस्माँ अभिदुच्छुनायतेन्यत्रास्मन्मरुतस्तन्निधेतनस्वाहा॥ (यजुर्वेद-आरण्यक)

मरुद्भ्य इदं न मम। ततः स्कन्न भिन्नाद्यनियत निमित्ते सति वक्ष्यमाण प्रकारेण तत् प्रतिपदोक्त जप होमान् कुर्यात्। इसके बाद गिरने वाले, टूटने वाले सभी दोष जिनका वर्णन संभव नहीं है, उनके प्रायश्चित के लिए आगे कहने वाले जप एवं होम करें।

ॐभूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। यहाँ पर प्रायश्चित होम समाप्त हुआ। प्रारम्भ दिन से अन्तिम दिन तक यह होम कार्य एक जैसा है।

सूर्य सर्वाद्भुत होमस्य सर्वं फलावाप्त्यर्थं साङ्गतासिद्ध्यर्थं च यावच्छक्ति ध्यानावाहनादि षोडशोपचार पूजां करिष्ये। होम कुण्ड में आचार्य एवं कलश वेदि में प्रधानाचार्य एक साथ पूजन करें। प्रधान देवता सूर्य मंत्रों से।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

षोडशोपचार पूजनम् (कुण्ड में)

यान —कालिंगं ग्रहमध्य भागनिलयं प्राचीमुखं वर्तुलं, । रक्तं रक्तविभूषणाध्वजरथच्छत्रश्रियाशेभितम् ॥
सप्ताश्वं कमलद्वयान्वितकरं पद्मासनं काश्यपं। मेरोर्दिव्य गिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे भास्करम् ॥ ॐ घृणिः सूर्यआदित्यः।

आवाहन-ॐ स॒हस्र॑शीर्षा॒ पुरु॑षः स॒हस्रा॒क्षः स॒हस्र॑पात्। स भूमिं॑ वि॒श्वतो॑वृ॒त्वात्य॑ तिष्ठद् दशांगु॒लम् ॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१)*

ॐ हिर॑ण्यवर्णा॒ हरि॑णीं सु॒वर्ण॑रज॒त स्र॑जाम्। च॒न्द्रां हि॒रण्म॑यीं ल॒क्ष्मीं जात॑वेदो म॒ आव॑ह ॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीसूर्याय नमः। आवाहयामि। आवाहनं समर्पयामि।

आसनम्—ॐ पुरु॑ष ए॒वेदं सर्वं॒ यद्भूतं॒ यच्च॒ भव्य॑म्। उ॒तामृ॑त॒त्वस्येशा॑नो॒ यदन्ने॑ना ति॒रोह॑ति ॥ *(ऋग्वेद १०.९०.२)*

ॐ तां म॒ आव॑ह जातवेदो ल॒क्ष्मीमन॑पगा॒मिनी॑म्। यस्यां॒ हिर॑ण्यं वि॒न्देयं॒ गामश्वं॒ पुरु॑षान॒हम् ॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। आसनं समर्पयामि।

पाद्यम्— ॐ ए॒तावा॑नस्य महिमाऽतो॒ ज्यायाँ॑श्च पुरु॑षः। पादो॑ऽस्य॒ विश्वा॑भूतानि॑ त्रि॒पाद॑स्या॒मृतं॑ दि॒वि ॥ *(ऋग्वेद १०.९०.३)*

ॐ अ॒श्वपू॒र्वां र॑थम॒ध्यां हस्तिना॑द प्र॒मोदिनीम्। श्रियं॑ दे॒वीमुप॑ह्वये॒ श्रीर्मा॑ दे॒वी जु॑षताम् ॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐसपरिवाराय श्रीसूर्याय मम:। पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं— ॐ त्रि॒पादू॒र्ध्व उदै॒त् पुरु॑षः॒ पादो॑ ऽस्ये॒हा भ॑वत्पुनः। ततो॒ विश्वं॒ व्य॑क्रामत् साशनानशने अभि ॥ *(ऋग्वेद १०.९०.४)*

ॐ कां सो॒स्मि॒तां हिर॑ण्य प्रा॒कारा॑मा॒र्द्रां ज्वल॑न्तीं तृ॒प्तां त॒र्पय॑न्तीम्।
प॒द्मे॒स्थितां प॒द्मव॑र्णां॒ तामि॒हो प॑ह्वये॒ श्रिय॑म् ॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)* ॐसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आचमनम्—ॐ तस्माद्विराळजायत विराजो अधिपूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथोपुरः। (ऋग्वेद १०.९०.५)

ॐ चंद्रां प्रभासां यशसा ज्वलंतीं श्रियं लोके देवजुष्टा मुदाराम्।
तां पद्मिनींमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणो॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् (दूध)— ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियं। भवावाजस्य संगथे। (ऋग्वेद १०.९१.१६)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। पयः स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवेनातिं भवे भवस्वमाम् भवोद्भवाय नमः॥

(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत् आरण्यक)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि

दहि— ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखा करत्प्रण आयूंषितारिषत्॥ (ऋग्वेद ४.३९.६)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। दधि स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमश्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमःकलविकरणाय
नमोबलाय नमो बलप्रमथनाय नमस्सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः। (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्मयामि।

घी— ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्ययोनिर्घृते श्रितो घृतं वस्य धाम।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभवक्षि हव्यम्॥ (ऋग्वेद २.३.११) ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। घृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरं तरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

मधु (शहद)—ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरंति सिंधवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवंतु नः॥ (ऋग्वेद १.९०.६) ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। मधु स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्पयामि।

शर्करा (शक्कर)—ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिंद्राय सुहवीतु नाम्ने। स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमाँ अदाभ्यः॥ (ऋग्वेद ९.८५.६)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शर्करा स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जन—ॐ ईशानस्सर्वविद्यानामीश्वरस्सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोऽम्॥ (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

फल— ॐ याः फलिनी र्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वं हसः॥ (ऋग्वेद १०.९७.१५)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। फल स्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक—ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तानऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥ यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयते हनः। उशतीरिव मातरः॥ तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः। (ऋग्वेद १०.९.१-२-३)

ॐ कद्रुद्राय प्रचेतसे मीळहुष्टमाय तव्यसे। वोचेम शंतमं हृदे॥ (ऋग्वेद १.४३.१)

ॐ यथा नो अदितिः करत्पश्वे नृभ्यो यथा गवे। यथा तोकाय रुद्रियम्॥ (ऋग्वेद १.४३.२)

ॐ यथा नो मित्रो वरुणो यथा रुद्रश्चिकेतति। यथा विश्वे सजोषसः।

ॐ गाथपतिं मेधपतिं रुद्रं जलाषभेषजम्। तच्छं योः सुम्नमीमहे॥

ॐ यः शुक्र इव सूर्यो हिरण्यमिव रोचते। श्रेष्ठो देवानां वसुः।

ॐ शं नः करत्यर्वते सुगं मेषाय मेष्ये। नृभ्यो नारिभ्यो गवे॥

ॐ अस्मे सोम श्रियमधि नि धेहि शतस्य नृणाम्। महिश्रवस्तुविनृम्णाम्॥

ॐ मानः सोमपरिबाधो मारातयो जुहुरत। आ न इंदो वाजे भज॥

ॐ यास्ते प्रजा अमृतस्य परस्मिन्धामन्नृतस्य। मूर्धा नाभा सोमवेन आ भूषंतीः सोम वेदः॥ (ऋग्वेद १.४३.३-४-५-६-७-८-९)

ॐ नमः सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च नमः शंगाय च पशुपतये च नम उग्राय च भीमाय च नमो

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अग्रेवधाय च दूरेवधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय नमः शंभवे च मयोभवे च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च नम स्तीर्थ्यायच कूल्याय च नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नम आतार्याय चालाद्याय च नमशष्प्याय च फेन्याय च नमःसिकत्याय च प्रवाह्याय च। (यजुर्वेद-४ काण्ड-५ प्रश्ने-८ अनुवाक)

ॐ तच्छंयोरावृणीमहे। गातुं यज्ञाय। गातुं यज्ञ पतये। दैवीः स्वस्तिरस्तु नः। स्वस्तिर्मानुषेभ्यः।
ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम्। शं नो अस्तु द्विपदे। शं चतुष्पदे। ॐ शांतिः शांतिः। शांतिः॥ (यजुर्वेद-आरण्यक)
ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसंतो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ (ऋग्वेद १०.९०.६)
ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदंतु मायांतरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः। (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

वस्त्र— ॐ युवं वस्त्राणि पीवसावसाथे युवोरच्छिद्रा मंतवो हसर्गाः।
अवातिरममनृतानि विश्वं ऋतेन मित्रा वरुणा सचेथे॥ (ऋग्वेद १.१५२.१)
ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजंत साध्या ऋषयश्च ये॥ (ऋग्वेद १०.९०.७)
ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥

(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतं—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरास्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशूंस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान् ग्राम्याश्च ये॥ (ऋग्वेद १०.९०.८)

ॐ क्षुत् पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

आभरण—ॐ हिरण्यरूपः स हिरण्य संदृगपान्नपात् सेदु हिरण्यवर्णः। हिरण्ययात् परियोनेर्निषद्या हिरण्यदा ददत्यन्नमस्मै॥

(ऋग्वेद २.३५.१०)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। आभरणं समर्पयामि।

गन्ध— ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्य जुस्तस्मादजायत॥ (ऋग्वेद १०.९०.९)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। गन्धं समर्पयामि।

अक्षत—ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उतपुरं न धृष्णवर्चत॥ (ऋग्वेद ८.६९.८)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि—ॐ आयने ते परायणे दूर्वारोहंतु पुष्पिणीः। हृदाश्च पुण्डरीकाणि समुद्रस्य गृहा इमे॥ (ऋग्वेद १०.१४२.८)

ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावोहजज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजावयः॥ (ऋग्वेद १०.९०.१०)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By SiddhantaeGangotri Gyaan Kosha

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। पुष्पाणि समर्पयामि।

प्रथमावरण पूजनम्—ॐ हृदयाय नमः। आग्नेय दिशि। ॐ शिरसे स्वाहा नमः। ऐशान्यां दिशि। ॐ शिखायै वषट् नमः। नैर्ऋत्यां दिशि। ॐ कवचाय हुम् नमः। वायव्यां दिशि। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् नमः। अग्रे ॐ अस्त्राय फट् नमः। आग्नेयादि कोणेषु पूजयेत् *(अनुष्ठान पद्धति)*। पूजन करे।

द्वितीयावरण पूजनम्—ॐ इन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्णाय वज्रहस्ताय ऐरावत वाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवारायश्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ अग्नये तेजोधिपतये पिंगलवर्णाय शाक्ति हस्ताय मेष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय स वाहनाय स परिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नमः। ॐ यमाय प्रेताधिपतये कृष्णवर्णाय दण्ड हस्ताय महिष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नमः। ॐ निर्ऋतये रक्षोधिपतये रक्तवर्णाय खड्ग हस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नमः। ॐ वरुणाय जलाधितये कुंदवर्णाय पाशहस्ताय मकरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सूर्यमूति पार्षदाय नमः। ॐ वायवे प्राणाधिपतये धूम्रवर्णाय अंकुश हस्ताय हरिणवाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ सोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्णाय गदा हस्ताय अश्व वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नमः। ॐ ईशानाय विद्याधिपतये स्फटिकवर्णाय त्रिशूल हस्ताय वृषभ वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ अनंताय नागाधिपतये क्षीरवर्णाय चक्रहस्ताय गरुड वाहनाय स शक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। नैर्ऋत्यं एवं पश्चिम दिशा के बीच में अनन्त का पूजन करें। ॐ ब्रह्मणे लोकाधिपतये कंजवर्णाय पाशहस्ताय हंसवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्तिपार्षदाय नमः। पूर्व एवं ईशान दिशा के बीच में ब्रह्मा जी का पूजन करें। *(अनुष्ठान पद्धति)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तृतीयावरणपूजनम्—ॐ वज्राय नमः। (पूर्व में) ॐ शक्त्यै नमः। (आग्नेय में) ॐ दण्डाय नमः। (दक्षिण में) ॐ खड्गाय नमः। (नैर्ऋत्य) ॐ पाशाय नमः। (पश्चिम में) ॐ अंकुशाय नमः। (वायव्य में) ॐ गदायै नमः। (उत्तर में) ॐ त्रिशूलाय नमः। (ईशान में) ॐ चक्राय न मः। (पश्चिम नैर्ऋत्य के बीच में) ॐ पद्माय नमः। (पूर्व ईशान के बीच में) *(अनुष्ठान पद्धति)*

सूर्य अष्टोत्तर शतनाम पूजा

ॐ अरुणाय नमः। ॐ शरणाय नमः। ॐ करुणारस सिन्धवे नमः। ॐ असमान बलाय नमः। ॐ आर्तरक्षकाय नमः। ॐ आदित्याय नमः। ॐ आदिभूताय नमः। ॐ अखिलागमवेदिनेनमः। ॐ अच्युतायनमः। ॐ अखिलज्ञायनमः। ॐ अनन्तायनमः। ॐ इनायनमः। ॐ विश्वरूपायनमः। ॐ इज्यायनमः। ॐ इन्द्रायनमः। ॐ भानवेनमः। ॐ इन्दिरामन्दिरायनमः। ॐ आप्तायनमः। ॐ वन्दनीयायनमः। ॐ ईशायनमः। ॐ सुप्रसन्नायनमः ॐ सुशीलायनमः ॐ सुवर्चसे नमः ॐ वसुप्रदायनमः । ॐ वसवेनमः। ॐ वासुदेवायनमः। ॐ उज्जवलायनमः। ॐ उग्ररूपायनमः। ॐ ऊर्ध्वगायनमः। ॐ विवस्वतेनमः। ॐ उद्यत्किरणजालयनमः। ॐ हृषिकेशायनमः। ॐ ऊर्जस्वलायनमः। ॐ वीरायनमः। ॐ निर्जरायनमः। ॐ जयाय नमः। ॐ ऊरुद्वयभावरूपयुक्तसारथये नमः। ॐ रुग्घन्त्रे नमः। ॐ ऋक्षचक्रचराय नमः। ॐ ऋजुस्वभावचित्ताय नमः। ॐ नित्यस्तुत्याय नमः। ॐ ऋकारमातृकावर्णरूपाय नमः। ॐ उज्जवलतेजसे नमः। ॐ ऋक्षायधिनाथाय नमः। ॐ मित्रायनमः। ॐ पुष्काराक्षाय नमः। ॐ लुप्तदन्ताय नमः। ॐ शान्ताय नमः। ॐ कान्तिदाय नमः। ॐ धनाय नमः। ॐ कनत्कनकभूषाय नमः। ॐ खद्योताय नमः। ॐ लूनिताखिलदैत्याय नमः। ॐ सत्यानन्द स्वरूपिणे नमः। ॐ अपवर्गप्रदाय नमः। ॐ आर्तशरणाय नमः। ॐ एकाकिने नमः। ॐ भगवते नमः। ॐ सृष्टिस्थित्यन्तकारिणे नमः। ॐ गुणात्मने नमः। ॐ घृणिभृते नमः। ॐ बृहते नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ ऐश्वर्यदाय नमः। ॐ शर्वाय नमः। ॐ हरिदश्वाय नमः। ॐ शौरये नमः। ॐ दशदिक्सम्प्रकशाय नमः। ॐ भक्तवश्याय नमः। ॐ ओजस्कराय नमः। ॐ जयिने नमः। ॐ जगदानन्दहेतवे नमः। ॐ जन्ममृत युजराव्याधिवर्जिताय नमः। ॐ औन्नत्यापदसञ्चरथस्थाय नमः। ॐ असुरारये नमः। ॐ कमनीकराय नमः। ॐ अब्जवल्लभाय नमः। ॐ अन्तर्बहिःप्रकाशाय

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नमः। ॐ अचिन्त्याय नमः। ॐ आत्मरूपिणे नमः। ॐ अच्युताय नमः। ॐ अपरेशाय नमः। ॐ परस्मै नमः। ॐ ज्योतिषे नमः। ॐ अहस्कराय नमः। ॐ रवये नमः ॐ हरये नमः। ॐ परमात्मने नमः। ॐ तरुणाय नमः। ॐ वरेण्याय नमः। ॐ ग्रहाणांपतये नमः। ॐ भास्कराय नमः। ॐ आदिमध्यान्तरहिताय नमः। ॐ सौख्यप्रदायनमः। ॐ सकलजगतांपतये नमः। ॐ सूर्याय नमः। ॐ कवये नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ परेशाय नमः। ॐ तेजोरूपाय नमः। ॐ ह्रीं हिरण्यगर्भाय नमः। ॐ ऐं इष्टार्थदाय नमः। ॐ आशुप्रपन्नाय नमः। ॐ श्रीमते नमः। ॐ श्रेयसे नमः। ॐ भक्तकोटिसौख्यप्रदायिने नमः। ॐ निखिलागमवेद्याय नमः। ॐ नित्यानन्दाय नमः। अष्टोत्तर शतनाम पूजां समर्पयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

धूपम्—ॐ वनस्पति रसोत्पन्नो गंधाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते॥ *(ऋग्वेद १०.९०.११)*

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। धूपं आघ्रापयामि।

दीपम्— **आज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मंगलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह॥** *(स्मृति संग्रह)*

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासी बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१२)*

ॐ आपः सृजंतु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। दीपं दर्शयामि। धूप दीपानंतरं आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यम्—देवस्याग्रे स्थलं संशोध्य गोमयेन मण्डलं कृत्वा तत्र शुद्धं पात्रं न्यस्य अभिघार्य निर्मलं हवि तदुपरि न्यस्य आज्येन द्रवीभूतं कृत्वा "ॐ भू र्भुवः स्वः इति गायत्र्या च प्रोक्ष्य वायु बीजं जप्त्वा निवेद्यान्नं संशोध्य इक्षिणहस्ते

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अग्निबीजं विलिख्य तेन हस्तेन संदह्यवामहस्ते अमृतबीजं विलिख्य तेत हस्तेन हविराप्लाव्य मूलमंत्रमष्टवारं संजप्य मंत्रामृतमयं संकल्प्य सुरभिमुद्रां बध्वा अमृतमयं भावयित्वा मल धातु रसांशं विभज्य देवस्य निवेद्य ग्रहणोच्छां कुर्यात्।

(अनुष्ठान पद्धति)

"सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि" इत्यनेन

परिषिच्य हस्ताभ्यां पुष्पैः "देवस्य जिह्वार्चीरुचि निवेद्ये निपात्य निवेदयामि भवते जुषाणेदं हविर्विभो" इति वामहस्तेन ग्रासमुद्रा प्रदर्श्य दक्षिण हस्तेन प्राणादि मुद्राः प्रदर्शयेत्। अन्नात् मलांशं धात्वंशं च परित्यज्य रसांशं देवस्य वदनार्चिषि समर्पयेत्। वं अबात्मने इति नैवेद्य मुद्रां प्रदर्शयेत्।

नैवेद्य सारं रससमर्पणात् जातं सुधांशं देवे समर्प्य अंललिमुद्रां बध्वा नैवेद्यसार रससमर्पित जातामृतमय सुधांशुना पुनः पुनः वर्धितं देवं हृन्मूर्ति देवं ध्यायन् स्व स्व मूलमन्त्रं यथा शक्ति जप्त्वा।

कलश के आगे स्थल शुद्धिकर गोमय से शुद्धिकर चतुरस्त्र मण्डल को बनाकर उस पर शुद्ध पात्र को रखें। पात्र में थोडा सा घी डालें। उस पात्र में निर्मल हविस् (नैवेद्य पदार्थ को) को घी पर रखें उस हविस् को घी से भिगोयें। गायत्री मंत्र से नैवेद्य का प्रोक्षण करें। यंयं यं" इस वायु बीज को जपकर हविस् को शुद्ध करें। दाहिने हाथ में (रं) अग्नि बीज को लिखकर उस अग्नि से हविस् में विद्यमान कश्मलों को लजायें। (कल्पना करें) बायें हाथ में अमृत बीज (वं) को लिखकर उस हाथ से हविस् को शुद्ध करें। धोने की कल्पना करें। ॐ घृणिः सूर्य आदित्यः। इस मन्त्र का आठ बार जप करें। हविस् को मत्रमय एवं अमृतमय होने की कल्पना करें। सुरभि मुद्रा से अमृतमय हुआ है मानकर मलांश, धातु अंश एवं रसांश को अलग-अलग करने की कल्पना करें। देवता को नैवेद्य ग्रहण करने की इच्छा उत्पन्न करनी चाहिये। "सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि" इससे परिषिञ्चन करें। दोनों हाथों में पुष्प लेकर देवता का जीभ नैवेद्य तक पहुँचने का चिन्तन करें। "निवेदयामि भवते जुषाण हविर्विभो" कहकर नैवेद्य स्वीकार करने की प्रार्थना करते हुए बायें हाथ से ग्रास मुद्रा

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(जैसे बछडे को घास देते हैं) को दिखाकर दाहिने हाथ से—

प्राणाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ कनिष्ठिका मिलाकर, **अपानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर, **व्यानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर, **उदानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर, **समानाय स्वाहा**। सभी अङ्गुलियों को लिकर। अन्न से मलांश एवं धातु के अंश को अलग कर केवल रसांश को अर्पित करने की कल्पना करें।

"वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि" कहकर नैवेद्य मुद्रा का प्रदर्शन करें। अंगुष्ट एवं अनामिका मिलाने से नैवेद्य मुद्रा। नैवेद्य का सार जो रसांश था उसका भी सार अमृत का जो अंश है उसे देवता को समर्पित कर, हाथ जोडकर, नैवेद्य के सार अमृत से भगवान् को बढते हुए मानकर उसे हृदय में स्थित मानकर यथाशक्ति ॐ घृणिः सूर्य आदित्यः।" इस मूल मंत्र का जप करें।

ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिन्द्राय सुहवीतुनाम्ने।
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमां अदाभ्यः॥ *(ऋग्वेद ९.८५.६)*
ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१३)*
ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

यथा संभव नैवेद्यं निवेदयामि। **अमृतापिधानमसि** कहकर उत्तरापोशन देवें। हस्ताप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गण्डूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूल—पूगीफल समायुक्तं नागवल्या दलैर्युतं। चूर्णा कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ *(स्मृति संग्रह-देवपूजा)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ सपरिवार श्री सूर्याय नमः। क्रमुक तांबूलं समर्पयामि।

नीराजन (आरति)—ॐ अर्चंत प्रार्चंत प्रियमेधा सो अर्चंत। अर्चंतु पुत्रका उत पुरं न धृष्णवर्चंत। (ऋग्वेद ८.६९.८)

ॐ ध्रुवाद्यौ र्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्॥

ॐ ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ (ऋग्वेद १०.१७३.४)

ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। मंगल नीराजनंसमर्पयामि।

मंत्रपुष्प—ॐ सहस्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्वशंभुवम्। विश्वं नारायणं देवमक्षरं परमं पदम्॥

विश्वतः परमान्नित्यं विश्वं नारायणं हरिम्। विश्वमेवेदं पुरुषस्तद्विश्व मुपजीवति॥

पतिं विश्वस्यात्मेश्वरं .. शाश्वतं... शिवमच्युतम्। नारायणं महाज्ञेयं विश्वात्मानं परायणम्॥

नारायण परोज्योतिरात्मा नारायणः परः। नारायण परं ब्रह्म तत्वं नारायणः परः॥

नारायण परो ध्याता ध्यानं नारायणः परः। यच्च किंचिज्जगत्सर्वं दृश्यते श्रूयतेऽपि वा॥

अन्तर्बहिश्च तत्सर्वं व्याप्य नारायणस्थितः। अनंतमव्ययं कविं.. समुद्रेऽन्तं विश्वशंभुवम्॥

पद्मकोश प्रतीकाशं... हृदयं चाप्यधो मुखम्। अधोनिष्ट्या वितस्यांते नाभ्यामुपरि तिष्ठति॥

ज्वालमालाकुलं भाति विश्वस्यायतनं महम्। संतत् .. शिलाभिस्तु लंबत्याकोश सन्निभम्॥

तस्यांते सुषिरं.. सूक्ष्मं तस्मिन्सर्वं प्रतिष्ठितम्। तस्य मध्ये महानग्निर्विश्वार्चिर्विश्वतो मुखः॥

सोऽग्रभुग्वि भजंतिष्ठन्नहारमजरः कविः। तिर्यगूर्ध्वमधश्शायी रश्मयं स्तस्य संतता॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संतापयंति स्वं देहमापादतलमस्तकः। तस्य मध्ये वह्निशिखा अणीयोर्ध्वा व्यवस्थितः॥
नीलतोयदमध्यस्थाद्विद्युल्लेखेव भास्वरा। नीवारशूकवत्तन्वी पीताभास्वत्यणूपमा॥
तस्यां शिखाया मध्ये परमात्मा व्यवस्थितः। स ब्रह्म स शिवःस हरिस्सें द्रस्सोक्षरः परमः स्वराट्॥
ॐ बरमहाँ असि सूर्य बळादित्य महाँ असि। महस्ते सतो महिमा पनस्यते ऽद्धा देव महाँ असि॥ (ऋग्वेद ८.१०१.११) आ.गृ.सूत्रम्
ॐ नाभ्या आसीदंतरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्। (ऋग्वेद-१०.९०.१४)
ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥
(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा नमस्कार—यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे॥ (देवपूजा-स्मृति संग्रह)
ॐ सप्तास्यां सन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबंध्नन् पुरुषं पशुं॥ (ऋग्वेद १०.९०.१५)
ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावोदास्योऽश्वान् विंदेयं पुरुषानहम्॥ (ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। प्रदक्षिणा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्य—ॐ प्रभाकराय विद्महे दिवाकराय धीमहि। तन्नो सूर्यः प्रचोदयात्॥ इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यम् (कहकर तीन बार पुष्पमिश्रित जल छोडें।)

सर्वोपचार पूजनम्—ॐ छत्रं समर्पयामि। चामरेण वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। आंदोळिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्य राजोपचार देवोपचार पूजां समर्पयामि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ (ऋग्वेद १०.९०.१६)
ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥ (ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। सवोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— कालिंगं ग्रहमध्य भागनिलयं प्राचीमुखं वर्तुलं, । रक्तं रक्तविभूषणाध्वजरथच्छत्रश्रियाशेभितम्॥
सप्ताश्वं कमलद्वयान्वितकरं पद्मासनं काश्यपं। मेरोर्दिव्य गिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे भास्करम्॥
ॐ कायेन वाचा मनसे न्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥ (पौराणिकम्)
ॐ ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥ (श्री भगवद्गीते)

ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। अनेन पूजनेन सपरिवारः श्री सूर्यः प्रीयताम्।

पूर्णाहुति—प्रतिदिन संक्षेप में पूर्णाहुति करनी चाहिये अन्तिम दिन विशेष रूप से करनी चाहिये।

प्रतिदिन वाला पूर्णाहुति—स्रुचि स्रुवेण द्वादशवारं आज्यं गृहीत्वा तस्यां स्रुवं ऊर्ध्वबिलं निधाय पुनरधो बिलं निक्षिप्य स्रुवाग्रे कुसुमाक्षतान् निधाय सव्य पाणिना स्रुकूस्रुवमूले धृत्वा दक्षिणपाणिना स्रुक्स्रुवं शंखमुद्रया गृहीत्वातिष्ठन् समपाद ऋजुकायः स्रुवाग्रे न्यास्त दृष्टिः प्रसन्नात्मना। स्रुवा से स्रुक में १२ बार घी डाले। स्रुक् के ऊपर स्रुवा को ऊपर मुख करके रखें, फिर उसे उल्टा करके स्रुक् के ऊपर रखें। स्रुवा के अग्रभाग में पुष्प एवं अक्षतों से पूजन करें। बायें हाथ से स्रुक् एवं स्रुवा के मूल को पकडकर, दाहिने हाथ से शंखमुद्रा से स्रुक एवं स्रुवा को पकडकर, सीधे खडे रहकर स्रुवा के अग्रभाग

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

को देखते हुए प्रसन्न मन से पूर्णाहुति होम करें। धामं ते वामदेव आपो जगती पूर्णाहुति होमेविनियोगः।

ॐ धामं ते विश्वं भुवनमधिश्रितमंतः समुद्रे हृद्यंतरायुषि।
अपाम नीं के समिथेयआभृतरतमंश्याम मधुमंततऊर्मिं स्वाहा॥ *(ऋग्वेद ४.५८.११)*

कहकर पूर्णाहुति डालें। अद्भ्य इदं न मम। विज्योतिषेत्यस्य जारोवृशोग्निस्त्रिष्टुप्। पूर्णाहुति शेषाज्य होमे विनियोगः।

ॐ विज्योतिषाबृहता भात्यग्निराविर्विश्वानिकृणुते महित्वा।
प्रादेवीर्मायाः सहते दुरेवाः शिशीते शृङ्गे रक्षसे विनिक्षे स्वाहा॥ *(ऋग्वेद ५.२.६)*

इतना कहकर स्रुक् में शेष घी का होम करें। अग्नये इदं न मम। कहकर हाथ जोडें। विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। विश्वेभ्यः देवेभ्य इदं न मम। स्रुक् स्रुवा में शेष बचे घी का भी होम करें। यह संस्राव कहलता है। अथावभृथस्थानीयं पूर्णपात्रजलेन मार्जनं कुर्यात्। अवभृथस्नान के जगह (बदले) पूर्णपात्र जल से मार्जन करें। पूर्वसादितं पूर्णपात्रं आस्तीर्णे बर्हिषि दक्षिणपाणिना निधाय तत्र गङ्गादि पुण्यनदीः स्मरन् दक्षिण पाणिना स्पृशन्। उत्तर में स्थापित प्रणीतापात्र के जल से अवभृथस्नान के बदले में आगे बिछाये बर्हिषि (कुशाओं) के ऊपर रखकर दाहिने हाथ से उसे छूते हुए गङ्गादि पुण्यनदियों का स्मरण करते हुए मंत्र पाठ करें।

ॐ पूर्णमसि पूर्णं मे भूयाः सुपूर्णमसि सुपूर्णं मे भूयाः सदसि सन्मेभूयाः
सर्वमसिसर्वं मे भूयाः। अक्षितिरसि मामेक्षेष्ठाः॥ *(यजुर्वेद)*

इति जपित्वा कुशाग्रैः प्रागादि पञ्चदिक्षुजलं मंत्रैः यथालिङ्गं सिञ्चेत्। आगे कहे जाने वाले मंत्रों से कहे जाने वाले दिशाओं में कुश के अग्र भाग से जल प्रोक्षण करें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्राच्यां दिशि देवा ऋत्विजो मार्जयन्ताम्। दक्षिणस्यां दिशि मासाः पितरो मार्जयन्ताम्। अप उपस्पृस। (हाथ धो लें)
प्रतीच्यां दिशि ग्रहाः पशवो मार्जयन्ताम्। उदीच्यां दिश्यापः ओषधयोवनस्पतयो मार्जयन्ताम्।
ऊर्ध्वायां दिशि यज्ञः संवत्सरः प्रजापतिर्मार्जयताम्। *(यजुर्वेद)*

इति एकश्रुत्या पठन् प्रतिदिशं सिक्त्वा कुशाग्रैः स्वशिरसि मार्जयेत्। उपरोक्त मंत्रों को कहते हुए उन दिशाओं के सिञ्चन के साथ अपने पर भी सिञ्चन करें। आपो अस्मानित्यस्य देवश्रवा आपस्त्रिष्टुप्। मार्जने विनियोगः।

ॐ आपो अस्मान्मातरः शुंधयंतु घृतेननोघृतप्वः पुनंतु। विश्वं हिरिप्रंप्रवहंतिदेवीरुदिदाभ्यः शुचिरापूतएमि॥

(ऋग्वेद १०.१७.१०)

इदमापः सिंधुद्वीप आपोनुष्टुप्। मार्जने विनियोगः।

ॐ इदमापः प्रवहतयत्किंञ्चदुरितं मयि। यद्वाहमभि दुद्रोहय द्वांशे पउतानृतं॥ *(ऋग्वेद १०.९.८)*

सुमित्र्यान आप ओषधयः सन्तु। इत्येतैर्मंत्रांते मार्जनं कृत्वा। उपरोक्त मंत्रों से मार्जन करें॥

दुर्मित्र्यास्तस्मैसंतु योस्मान्द्वेष्टियं चवयं द्विष्मः। *(यजुर्वेद-आरण्यक)*

इति निर्ऋति देशे कुशाग्रैः अपः सिञ्चेत्। उपरोक्त मंत्र को कहकर नैऋत्य में कुशाग्रभाग से जल प्रोक्षण करें। ततो ब्रह्मा यजमान वामपार्श्वेस्थित पत्न्यंजलौ तदभावे पूर्णपात्रस्थं जलं यजमान पव स्व वामपाणावुत्ताने बर्हिर्निधाय तत्र दक्षिणपाणिना पूर्णपात्रं आदाय जलं प्रत्यङ्मुखं निषिच्य। इसके बाद ब्रह्मा यजमान के बायें पार्श्व में स्थित पत्नी के अंजली में स्थित पूर्णपात्र के जल से दोनों का प्रोक्षण करें। यदि यजमान अकेला हो तो बायें हाथ में बर्हिष्

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(कुशा) रखकर दाहिने हाथ में पूर्णपात्र पकडकर बायें हाथ में स्थित कुशपर जल छोडें एवं उस जल को पश्चिम की ओर हाथ से गिरायें (स्वाभिमुख)

ॐ माहंप्रजां परांसिचंयानंः सयावंरीस्थनं। समुद्रेवोंनिनयानिस्वंपाथोंअपीथ॥ *(श्रौत मन्त्र)*

उपरोक्त मत्र कहते हुए पाप नाश के लिए नीचे गिरे जल को समुद्र में गया मानकर हाथ में बचे शेष जल से अपना प्रोक्षण करें। ततः कर्ता अग्नेः वायव्ये स्थितः संस्थाजपेन उपतिष्ठेत। इसके बाद यजमान अग्नि के वायव्य दिशा में खड़े होकर संस्था जप जो कि आगे बताया जा रहा है, उससे हाथ जोडकर अग्नि की प्रार्थना करें। अग्नेत्वं न इति चतसृणां गौपायना लौपायनावाबंधुः सुबंधुः श्रुतबंधुर्विप्रबंधुश्च एकैकर्चा ऋषयः। अग्निर्देवता। द्विपदाविराट्छंदः। अग्न्युपस्थाने विनियोगः।

ॐ अग्नेत्वंनो अंतंमउतत्राता शिवो भंवावरूथ्यंः। वसुरग्निर्वसुंश्रवा अच्छांनक्षिद्युमत्तंमंरयिंदांः॥ *(ऋग्वेद ५.२४.१-२)*

सनोंबोधिश्रुधीहवं मुरुष्याणों अघायतः संमस्मात्। तंत्वांशोचिष्ठदीदिवः सुम्नायंनूनमींमहेसखिंभ्यः॥ *(ऋग्वेद ५.२४.३-४)*

ॐ चंमे स्वरंश्च मे यज्ञोपंतेनमंश्च। यत्तेंन्यूनं तस्मैंत उपंयत्तेतिरिक्तं तस्मैं ते नमंः॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

अग्नये नमः। ॐस्वस्ति। श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं श्रियंबलं। आयुष्यं तेज आरोग्यं देहि मे हव्यवाहन॥ मानस्तोक इत्यस्य कुत्सोरुद्रोजगती। विभूति ग्रहणे विनियोगः।

ॐ मानंस्तोके तनंये मानं आयौ मानो गोषुमानो अश्वेंषुरीरिषः।
वीरान्मानोंरुद्र भामितोवंधीर्ह विष्मंतः सदमित्वां हवामहे॥ *(ऋग्वेद १.११४.८)*

इति स्रुव बिलपृष्ठेनैशानीगतां विभूतिं गृहीत्वा। उपरोक्त मंत्र पाठ करते हुए स्रुवा के बिल के पिछले हिस्से के ईशान भाग से भस्म (होम करें) को निकालें। ॐत्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे। (ललाटे में भस्म लगायें) ॐकश्यपस्य त्र्यायुषं इति कंठे। (कण्ठ में भस्म लगायें) ॐअगस्त्यस्य त्र्यायुषं

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इति नाभौ। (नाभि में भस्म लगायें) ॐ यद्देवानां त्र्यायुषमिति दक्षिणास्कंधे (दाहिने भुजा में भस्म) ॐ तन्मे अस्तु त्र्यायुषं इति वाम स्कंधे (बाये कंधे पर) ॐ सर्वमस्तु शतायुषं इति शिरसि धारयेत् (सिर से भस्म लगायें) ततः परिस्तरणानि विसृज्य अग्निं परिसमूह्य परिषियुक्ष्य।

अग्नि का परिसमूहन एवं परिषिञ्चन करें। इसके बाद जिस प्रकार से डाले थे उसी प्रकार पूर्व से उन परिस्तरणों को अग्नि में डाल दें (विसर्जन) हाथों में जल लेकर पूर्वदिशा से प्रारम्भ करके प्रदक्षिणाकार में चारों ओर मार्जन करने की क्रिया परिसमूहन कहलाता है। पहले हाथ धो लें फिर जलयुक्त हाथ से पूर्वादि दिशाओं को स्पर्श करना चाहिये। पुनः हाथ धोकर इसी क्रिया दो बार और करना चाहिये। यह क्रिया परिसमूहन कहलाता है। अग्नेरैशानतस्त्रिरंभसा परिषेचनं। हाथ में जल लेकर ईशान्य से ईशान्य तक तीन बर जल से परिषिञ्चन करें। विश्वानिन इति तिसृणामात्रेयो वसुश्रुतोग्निस्त्रिष्टुप् द्वोरर्चने अंत्यायाउपस्थाने विनियोगः।

ॐ विश्वानिनो दुर्गहा जातवेदः। (पूर्व में पुष्पाक्षत से अग्निदेव का पूजन करें),

ॐ सिन्धुं ननावादुरितातिपर्षि। (आग्नेय में पूजन करें),

ॐ अग्ने अत्रिवन्नमसागृणानः। (दक्षिण में पूजन करें),

ॐ अस्माकं बोध्यविता तनूनां। (नैर्ऋत्य में पूजन करें),

ॐ यस्त्वाहृदाकीरिणामन्यमानः। (पश्चिम में पूजन करें) *(ऋग्वेद ५.४.६-१०-११)*,

ॐ अमर्त्य मर्त्योजोहवीमि। (वायव्य में पूजन करें),

ॐ जातवेदोयशो अस्मासुधेहि। (उत्तर में पूजन करें),

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमश्यां। (ईशान्य में पूजन करें),

ॐ यस्मैत्वं सुकृते जातवेद उलोकमग्नेकृणवस्योनं। अश्विनं सपुत्रिणंवीरवंतं गोमंतं रयिंनशते स्वस्ति॥ *(ऋग्वेद ५.४.१०-११)*

इन मंत्रों को कहकर पूजन एवं नमस्कार करें।

ब्रह्मा को एवं ऋत्विजों को दक्षिणा देवें। यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो होमक्रियादिषु। न्यूनं संपूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥ ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥ अनेन सग्रहमख सूर्यः सर्वाद्भुतशान्ति होमकर्मणा सपरिवारः भगवान् सूर्य नारायण प्रीयताम्। यागमध्ये मंत्रतंत्र विपर्यासादि सर्वदोष परिहारार्थं नामत्रय जपं करिष्ये। ॐ अच्युताय नमः। ॐ अनंताय नमः। ॐ गोविन्दाय नमः। ॐ हराय नमः। ॐ मृडाय नमः। ॐ शंभवे नमः। इति जपेत्। कर्म के अन्त में पवित्र का विसर्जन करके दो बार आचमन करें। ॐ तत् सत्॥ यहाँ पर मध्याह्न तक का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

मध्याह्न य सांयकाल का कार्यक्रम—यह प्रारम्भ दिन से अन्तिम दिन के पहले दिन तक समान है। जप का विवरण अगले पन्ने (भाग) में है। आचम्य प्राणानायम्य उद्दिष्ट मंत्रजपं कुर्यात्। आचमन करके प्राणायाम करें। फिर उद्देशित मंत्रों का जप संपन्न करें। जप मंत्रों का संपूर्ण विवरण अगले भाग में है। सर्वाद्भुत शान्ति भाग में—**जप के मन्त्र—महाशान्ति सूक्त—शन्नइन्द्राग्नि सूक्त—प्रधान सूर्य मन्त्र जप—नवग्रह जप**

तृतीय / चतुर्थ / पञ्चम दिन द्वितीय प्रहर सम्पन्न

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

षष्ठ दिन प्रथम प्रहर

देह शुद्धि—येभ्यो मातेत्यस्य गयःप्लात ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। जगतीछन्दः। एवापित्रेत्यस्य वामदेव ऋषिः। बृहस्पतिर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। मनुष्य गन्ध निवारणे विनियोगः।

ॐ येभ्यो मातामधुमत् पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः।

उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनुमदास्वस्तये॥ *(ऋक्वेद १०.६३.३)*

ॐ एवापित्रे विश्वदेवाय वृष्णो यज्ञैर्विधेम नमसा हविर्भिः।

बृहस्पते सुप्रजा वीरवन्तो वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥ *(ऋक्वेद ४.५०.६)*

आचमन मन्त्र—ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।)

अथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुराणेभ्यो नमः। अग्नये नमः। वायवे नमः। प्राणाय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै नमः। अन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारणम्—पवित्रन्त इत्यनयोः आङ्गीरसः पवित्र ऋषिः। पवमानः सोमो देवता। जगतीछन्दः। पवित्राभिमंत्रणे, धारणे विनियोगः।

ॐ पवित्रन्ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः।
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुतेशृतास इद्वहन्तस्तत् समाशत॥ *(ऋग्वेद ९.८३.१)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदे शोचन्तो अस्य तन्तवो व्यस्थिरन्।
अवन्त्यस्य पवीतारं माशवो दिवस्पृष्ठमधितिष्ठन्ति चेतसा॥ *(ऋग्वेद ९.८३.२)*

ॐ भूर्भुवः स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये आसन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।)

प्राणायाम—प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्राणायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्वरोम्। *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

करन्यासः। ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ तर्जनीभ्यां नमः। ॐ मध्यमाभ्यां नम। ॐ अनामिकाभ्यां नमः। ॐ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

अङ्गन्यास-हृदयादिन्यास। ॐ हृदयाय नमः। ॐ शिरसे स्वाहा। ॐ शिखायै वषट्। ॐ कवचाय हुम्। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अस्त्राय फट् ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः।

आसन शुद्धि—ॐ स्योना पृथिवि भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथः।' *(१५ मन्त्र-२२ सूक्त-प्रथम मण्डल)* इस मन्त्र से जल प्रोक्षण करने से भूमि शुद्ध होती है।

शिखाबन्धनम्—

ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणित भक्षणे। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुण्डे ह्यपराजिते॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

(इस मन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महा संकल्प

ॐ स्वस्ति श्री समस्तजगदुत्पत्तिस्थितिलयकारणस्य रक्षा-शिक्षा-विचक्षणस्य प्रणतपारिजातस्य अशेषपराक्रमस्य श्रीमदनन्तवीर्यस्यादि नारायणस्य अचिन्त्यापरिमितिशक्त्या ध्रियमाणानां महाजलौघमध्ये परिभ्रमताम् अनेक कोटि ब्रह्माण्डानाम् एकतमे अव्यक्त- महादहंकार - पृथिव्यप्तेजो वाय्वाकाशाद्याव रणैरावृते अस्मिन् महति ब्रह्माण्डखण्डे आधारशक्तिश्रीमदादि- वाराह-दंष्ट्राग्र- विराजिते कूर्मानन्त- वासुकि-तक्षक-कुलिक - कर्कोटक -पद्म - महापद्म - शंखाद्यष्टमहानागैर्ध्रियमाणे ऐरावत-पुण्डरीक-वामन-कुमुद-अञ्जन-पुष्पदन्त-सार्वभौम-सुप्रतीकाष्टदिग्गजोपरिप्रतिष्ठितानाम् अतल-वितल-सुतल-तलातल-रसातल-महातल-पाताल-लोकनामुपरिभागे भुवर्लोक-स्वर्लोक-महर्लोक -जनोलोक - तपोलोक - सत्यलोकाख्य षड्लोकानामधोभागे भूर्लोके चक्रवाल शैल - महावलयनागमध्यवर्तिनो महाकाल महाफणि राजशेषस्य सहस्रफणामणिमण्डल मण्डिते दिग्दन्तिशुण्डादण्डोद्दण्डितेअमरावत्यशोकवती भोगवती - सिद्धवती- गान्धर्ववती - काशी- काञ्ची - अवन्ती अलकावती यशोवतीतिपुण्यपुरीप्रतिष्ठिते लोकालोकाचलवलयिते लवणेक्षु- सुरा सर्पि - दधिक्षीरोदकार्णवपरिवृते जम्बू-प्लक्ष-कुश-क्रौञ्च - शाक शाल्मलिपुष्कराख्यसप्तद्वीपयुते इन्द्र-कांस्य-ताम्र-गभस्ति-नाग-सौम्य-गन्धर्व-चारणभारतेतिनव-खण्डमण्डिते सुवर्णगिरिकार्णिकोपेत महासरोरुहाकार पञ्चाशत् कोटि योजनविस्तीर्णभूमण्डले अयोध्या मथुरा-माया-काशी-काञ्ची-अवन्तिकापुरी द्वारा वतीतिमोक्षदायिकसप्तपुरीप्रतिष्ठिते सुमेरु निषधत्रिकूट-रजतकूटाम्रकूट-चित्रकूट-हिमवद्विन्ध्याचलानां महापर्वत प्रतिष्ठिते हरिवर्ष किंपुरुषयोश्च दक्षिणे नवसहस्रयोजन विस्तीर्णे मलयाचल-सह्याचल विन्ध्याचलानामुत्तरे स्वर्णप्रस्थ-चण्डप्रस्थ-चान्द्र-सूक्तावान्तक-रमणाक महारमणाक-पाञ्चजन्य-सिंहल लंङ्केति-नवखण्डमण्डिते गंगा-भागीरथी-गोदावरी- क्षिप्रा-यमुना- सरस्वती-नर्मदा-ताप्ती-चन्द्रभागा-कावेरी-पयोष्णी-कृष्णावेणी-भीमरथी-तुंगभद्रा-ताम्रपर्णी- विशालाक्षी- चर्मण्वती-वेत्रवती- कौशिकी-गण्डकी- विश्वामित्रीसरयूकरतोया- ब्रह्मानन्दामहीत्यनेक पुण्यनदी विराजिते भारतवर्षे भरतखण्डे जम्बूद्वीपे कूर्मभूमौ साम्बवती कुरुक्षेत्रादि समभूमौ आर्यावर्तान्तरगते ब्रह्मावर्तैकदेशे गंगायमुनयोर्मध्यभागे योजनव्यापिविस्तीर्णेक्षेत्रे,ज्ञानयुगप्रवर्तकानां महर्षि

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महेशयोगिवर्याणां परमाराध्यगुरुदेवै : अनन्तश्रीविभूषितैः ज्योतिष्पीठाधीश्वरैः जगद्गुरु श्री मच्छङ्कराचार्य ब्रह्मानन्दसरस्वतीमहाभागैः सम्पादितशतमखकोटि होम महायज्ञपावितायां भूमौ..... सकलजगत्स्रष्टुः परार्धद्वय जीविनो ब्रह्मणः द्वितीये परार्धे एकपञ्चाशत्तमे वर्षे प्रथम मासे प्रथम पक्षे प्रथम दिवसे अह्नस्तृतीये यामे तृतीये मुहूर्ते रथन्तरादिद्वात्रिंशत्कल्पानांमध्ये अष्टमे श्वेतवाराहकल्पे स्वायंभुवादि मन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृत त्रेताद्वापरकलिसंज्ञकानां चतुर्णां युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमपादे प्रभवादि षष्ठि सम्वत्सराणां मध्ये..... .....संवत्सरे.....अयने.....ऋतौ .....मासे .....पक्षे ..... तिथौ ..... वासरे ..... नक्षत्रे ..... योगे ..... करणे .....राशि स्थिते श्रीसूर्ये ..... राशि स्थिते श्रीचन्द्रे..... राशि स्थिते श्रीकुजे..... राशि स्थिते श्रीबुधे ..... राशि स्थिते श्रीदेवगुरौ ..... राशि स्थिते श्रीशुक्रे..... राशि स्थिते श्रीशनौ..... राशि स्थिते श्रीराहौ..... राशि स्थिते श्रीकेतौ.....एवं गुण विशेषण विशिष्टायां पुण्यायाम् महापुण्य शुभ तिथौ.....

गुरू प्रार्थना —

नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः॥ *(श्रृङ्गेरी मठीय आचार्य प्रार्थनम्)*

श्री गुरु परमगुरु परमेष्ठी गुरु सद्गुरु पादुकाभ्यो नमो नमः। हम लोग ब्रह्मानन्दं गुरु तं नमानि। गुरु परम्परा को भी बोल सकते हैं। कर सकते हैं। हरौ रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन॥ ईश्वर के रुष्ट होने पर गुरुजी रक्षा करते हैं एवं गुरुजी के कुपित होने पर कोई भी रक्षक नहीं है।

भूतोच्चाटन मन्त्र—

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुविसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारः ते गच्छन्तु शिवाज्ञया॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*

ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्। सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्रमहाकाय कल्पान्ते दहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इति भैरवं नमस्कृत्य। (इन मन्त्रों से भूतोच्चाटन कर भैरव जी से यज्ञ रक्षा की प्रार्थना करते हैं।)

गणपति प्रार्थना—गणानान्त्वा इति मन्त्रस्य गृत्समदऋषिः। गणपतिर्देवता। जगती छन्दः। गणपति प्रार्थने विनियोगः।

ॐ गणानान्त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमं।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन्नूतिभिः सीदसादनम्॥ *(ऋग्वेद २.२३.१)*

(इन मन्त्रों से गणपति प्रार्थना कर पुष्पाक्षत छोड़ना चाहिये।)

त्रिवाक्येण पुण्याह वाचन—

ॐ भद्रं कर्णेभिःशृणुयामदेवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमदेवहितं यदायुः। *(ऋग्वेद १.८९.८)*

ॐ द्रविणोदा द्रविणसस्तुरस्य द्रविणोदाः सनरस्य प्रयंसत्।
द्रविणोदावीरवतीमिषंनोद्रविणोदारासतेदीर्घमायुः॥ *(ऋग्वेद १.९६.८)*

ॐ सवितापश्चातात्सवितापुरस्तात्सवितोत्तरात्तात्सविता धरात्तात्।
सवितानः सुवतु सर्वतातिं सवितानोरासतां दीर्घमायुः॥ *(ऋग्वेद १०.३६.१४)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ नवो नवो भवति जायमानोह्नांकेतुरुषसामेत्यग्रम्।
भागं देवेभ्यो विदधात्यायन्प्रचन्द्रमास्तिरते दीर्घमायुः॥ (ऋग्वेद १०.८५.१९)

ॐ उच्चादिवि दक्षिणावंतो अस्थुर्येअश्वदाः सहतेसूर्येण। हिरण्यदा अमृतत्वं भजंतेवासोदाः सोमप्रतिरन्त आयुः॥

(ऋग्वेद ६.६५.६)

ॐ आपउंदंतु जीव से दीर्घायुत्वाय वर्चसे। सस्त्वाहृदा कीरिणामन्यमानो मर्त्यं मर्त्योजोहवीमि॥

(यजुर्वेद १ काण्ड-२ प्रश्न-१ अनुवाक-१ मन्त्र)

ॐ जातवेदोयशो अस्मासु धेहि प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमश्याम्। यस्मैत्वं सुकृते जातवेद उलोकमग्ने कृणावस्योनम्।
अश्विनं सपुत्रिणं वीरवंतं गोमंतंरयिंनशते स्वस्ति। संत्वा सिञ्चामि यजुषा प्रजामायुर्धनं च॥

(यजुर्वेद १ काण्ड-६ प्रश्न-१ अनुवाक-१ मन्त्र)

ॐ उद्गातेवशकुनेसामगायसि ब्रह्मपुत्र इव सवनेषु शंससि।
वृषेव वाजीशिशुमतीरपीत्या सर्वतोनः शकुनेभद्रमावद विश्वतोनः शकुनेपुण्य मावद॥ (ऋग्वेद २.४२.२)
याज्ययायजतिप्रत्तिर्वैयाज्यापुण्यैवलक्ष्मीः पुण्यामेवतल्लक्ष्मीं संभावयति पुण्यां लक्ष्मीं संस्कुरुते॥
यत्पुण्यं नक्षत्रं। तद्वट्कुर्वी तोपव्युषं। यदावैसूर्य उदेति। अथ नक्षत्रंनैति। यावंति तत्र सूर्यो गच्छेत्।
यत्र जघन्यं पश्येत्। तावंतिकुर्वीतयत्कारीस्यात्। पुण्याह एव कुरुते। तानि वा एतानि यमनक्षत्राणि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यान्येव देवनक्षत्राणि। तेषु कुर्वीत यत्कारीस्यात्। पुण्याह एव कुरुते। *(यजुर्वेद - ब्राह्मण)*

सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्यकरिष्यमाणासूर्याद्भुतशान्त्याख्याय कर्मणः पुण्याहं भवंतो ब्रुवंत्विति त्रिर्वदेत्।

(यजमान अपने सकुटुम्ब प्रणाम करते हुए आज संपन्न होने वाले कर्म के लिए पुण्याह की याचना करते हुए तीन बार कहते हैं। जिसका प्रत्युत्तर ब्राह्मण तीन बार देते हैं।)

१. ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुण्याहम्। २. ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुण्याहम्। ३. ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुण्याहम्।

ॐ स्वस्तये वायुमुपब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः।
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्या सो भवन्तु नः॥ *(ऋग्वेद ५.५१.१२)*
आदित्य उदयनीयः पथ्यैवेतः स्वस्त्याप्रयंतिपश्यांस्वस्तिमभ्युद्यंतिस्वस्त्येवेतः प्रयंतिस्वस्त्युद्यंति स्वस्त्युद्यंति॥ *(स्मृति संग्रह)*
ॐ स्वस्तिन इन्द्रोवृद्धश्रवाःस्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिःस्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।

(ऋग्वेद १.८८.६)

ॐ अष्टौ देवा वसवः सोम्यासः॥ चतस्रोदेवीरजराश्रविष्ठाः। ते यज्ञं पांतु रजसः परस्तात्। संवत्सरीणममृतं स्वस्ति।

(यजुर्वेद - ब्राह्मण)

इसके बाद नीचे लिखा वाक्य का तीन बार यजमान कहें। एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्यकरिष्यमाणासूर्याद्भुतशान्त्याख्याय कर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मण कहते हैं)—ॐ आयुष्मते स्वत्ति। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बाद पुनः पहले जैसे उत्तर कलश से जल नीचे रखे बड़े पात्र में थोड़ा-थोड़ा कर गिराते हुए मंत्रपाठ करें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ ऋध्यामस्तोमं सनुयामवाजमानो मंत्रं सरथे होपयांतं।
यशोनपक्कं मधुगोष्वंतराभूतांशो अश्विनोः कामंमप्राः॥ (ऋग्वेद १०.१०६.११)
सर्वामृद्धिमृध्नुयामितितं वैतेजसैवपुरस्तात् पर्यभवच्छन्दोभिर्मध्यतोक्षरै
रुपरिष्टाद्गायत्र्या सर्वतो द्वादशाहंपरिभूयसर्वामृद्धिमार्ध्नोत्सर्वामृद्धिमृध्नोति य एवं वेद॥
ऋध्यास्महव्यैर्नमसोपसद्य॥ मित्रं देवं मित्रधेयंनो अस्तु॥ अनूराधान् हविषावर्धयंतः।
शतंजीवेमशरदः सवीराः। त्रीणि-त्रीणि वै देवानामृद्धानि।
त्रीणिच्छन्दाः सित्रीणि सवनानि त्रयं इमे लोकाः। ऋध्यामेवतद्वीर्यं एषु लोकेषु प्रतितिष्ठति॥ (यजुर्वेद - ब्राह्मण)

इसके बाद पुनः नीचे लिखे वाक्यों को तीन बार यजमान कहें। एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। सर्वेषां महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्य करिष्य माणसूर्याद्भुतशान्त्याख्याय कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

(ब्राह्मण कहते हैं)—ॐ ऋध्यतां। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बाद मन्त्र पाठ करते हुए उत्तरकलश से नीचे रखे पात्र में जल छोड़ना चाहिये।

ॐ श्रिये जातः श्रियऽआनिरियाय श्रियंवयोजरितृभ्योदधाति।
श्रियं वसाना अमृतत्वमायन् भवंतिसत्यासमिथामितद्रौ॥ (ऋग्वेद ६.६४.४)
श्रिय एवैनं तच्छ्रियामादधाति संततमृचा वषट् कृत्यं संतत्यैसंधीयते प्रजया पशुभिर्यएवं वेद।
यस्मिन्ब्रह्माभ्यजय त्सर्वंमेतत्॥ अमुञ्चलोकमिद्मूचसर्वं॥ तन्नो नक्षत्रमभिजिद्विजित्यं॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्रियं दधात्वहणीयमानं ॥ अहं बुध्निय मंत्रमे गोपाय। यमृषयस्त्रयीविदाविदुः ॥
ऋचः सामानि यजूंषि। सा हि श्रीरमृतासतां। *(यजुर्वेद - ब्राह्मण)*

इसके बाद पुनः नीचे लिखे वाक्यों को तीन बार यजमान कहें एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। सर्वेषां महाजनानामस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्य करिष्यमाण सूर्याद्भुतशान्त्याख्याय कर्मणः श्रीरस्त्विति भवंतो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मण कहते हैं)—ॐ अस्तु श्रीः। इन वाक्यों को तीन बार कहना चाहियें। वर्षशतं परि पूर्णमस्तु। गोत्राभिवृद्धिरस्तु। कर्माङ्ग देवता प्रीयताम्। (ब्राह्मण आशीर्वाद देते हैं—सौ साल पूर्ण हो। आप की वंश वृद्धि हो। कर्माङ्ग देवता आप पर प्रसन्न हो।)

ॐ शुक्रेभिरंगैरजं आततन्वान् क्रतुं पुनानः कविभिः पवित्रैः।
शोचिर्वसानः पर्यायुरपां श्रियोमिमीते बृहतीरनूनाः ॥ *(ऋग्वेद ३.१.५)*
तदप्येषः श्लोकोभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे ॥ आविक्षितस्य कामप्रेः विश्वेदेवाः सभासद इति ॥

पुण्याह वाचन फल समृद्धिरस्तु—पुण्याहे कर्माङ्ग देवता प्रीयन्ताम्।

मातृका पूजनम्—पान सुपारी दक्षिणा के ऊपर कूर्च (कुश से बना) रखकर उसमें मातृका आवाहन करके उनमें मातृका पूजन करना चाहिये। नान्दी मण्डल के आगे मातृका पूजन करना चाहिये।

ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा। वाराही तथेन्द्राणी चामुण्डाः सप्तमातरः ॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

सात मातृकायें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गौरीपद्मा शचीमेधासावित्रीविजयाजया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

धृतिः पुष्टिस्तथातुष्टिरात्मनः कुलदेवताः (गौर्यादि षोडश मातृकायें)। ब्राह्म्यादि सप्त मातृः गौर्यादि षोडश मातृः आवाहयामि। विनायकं आवाहयामि। दुर्गा आवाहयामि। क्षेत्रपालं आवाहयामि। गणपतिं आवाहयामि। मातृस्वसारं आवाहयामि। पितृस्वसारं आवाहयामि। एताभ्यो देवताभ्यो नमः। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। इनका षोडशोपचार पूजन करना याहिये। **उदाहरण**—आवाहित देवताभ्यो नमः। आसनं समर्पयामि आदि। षोडशोपचार पूजन संक्षेप में करें। (गणेश पूजन में है।)

अन्त में पुष्पांजलि मन्त्र—ॐ गौरीर्मिमाय सलिलानितक्षत्येकपदीद्विपदी सा चतुष्पदी।

अष्टापदी नवपदीबभूवुषी सहस्राक्षरापरमेव्योमन्॥ *(ऋग्वेद १.१६४.४१)*

ॐ भूर्भुवः स्वः आवाहित देवताभ्यो नमः। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि।

तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने शं योरस्मभ्यमिदमस्तुशस्तं। अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठां नमोदिवे बृहते सादनाय॥ *(ऋग्वेद ५.४७.७)*

गृहावै प्रतिष्ठासूक्तंतत्प्रतिष्ठि ततमयावाचाशंस्तव्यं तस्माद्यद्यपिदूर इव पशूँल्लभते गृहानेवैनानाजिगमिषति गृहाहिपशूनां प्रतिष्ठाप्रतिष्ठा। इन मन्त्रों को पढकर पुष्पाक्षत चढ़ायें।

मातृका पूजन समाप्तम्

आवाहित देवनान्दी पूजन—देवनान्दी में मातृका पूजन आवश्यक नहीं है। यज्ञ,(अतिरुद्र, सहस्रचण्डी) रथोत्सव आदि सार्वजनिक आचरणों में देवनान्दी ही करना चाहिये। **क्रतुदक्षावुत्सवे तु।** इस वाक्य से क्रतु एवं दक्ष नामक विश्वेदेव देवता हैं। देवनान्दी में पितृदेवता चार है। अमूर्त्य।

१. अग्निष्वात्ता, २. बर्हिषदः, ३. आज्यपाः, ४. सोमपाः

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संकल्प—देशकालौ संकीर्त्य करिष्यमाण कर्माङ्ग भूतं नान्दीसमाराधनं करिष्ये। पहले दो मण्डल बनायें।

दत्वातण्डुलपूर्णपात्रयुगले संकल्प्य भुक्तिं तयोः।
ताम्बूलादि सुदक्षिणान्तिकमनुज्ञातः समुद्वाहयेत्॥ *(लक्षण संहिता)*

दो पात्रों में चावल, काजू किशमिश, फल, दाल, आदि दो मण्डलों पर रखें।

ॐ आनो भद्राः क्रतवो यंतुविश्वतोदब्धसो अपरीता स उद्भिदः।
देवानो यथासदमिद्वृधे असन्न प्रायुवोरक्षितारो दिवे दिवे। *(ऋग्वेद १.८९.१)*

ॐ क्रतुदक्षसंज्ञका विश्वेदेवाः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवस्वः इयं च वृद्धिः। इससे दुर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। अग्निष्वात्ताः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोड़ें।

बर्हिषदः पितृगणाः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। **आज्यपाः पितृगणाः**—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दुर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। **सोमपाः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें।

ॐ क्रतुदक्ष संज्ञका विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचार कल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। *गन्ध अक्षत पुष्प दूर्वा* हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। **ॐ अग्निष्वात्ताः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदं आसनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। **बर्हिषदः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। **आज्यपाः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, अक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें।

सोमपाः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भूवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, अक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। ॐभूर्भुवः स्वः सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि कहकर मण्डल पर रखे दोनों पात्रों को परिषेचन कर दक्षिणादिशा के पात्र को "इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यः" उत्तरदिशा के पात्र को "इदं नान्दीमुख पितृभ्यः" कहकर दान संकल्प कर ब्राह्मणों को दे देवें।

क्रतुदक्षसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। **अग्निष्वात्ताः पितृगणाः** नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोडकर नीचे रखना चाहिये। **बर्हिषदः पितृगणाः** नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं दमनामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। **आज्यपाः पितृगणाः** नान्दीमुखा युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोडकर नीचे रखना चाहिये।

सोमपाः पितृगणाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणा पर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। आगे लिखे मन्त्रों से खड़े होकर उपस्थान करें।

ॐ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभिदेवाँऽइयक्षते। *(ऋग्वेद ९.११.१)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ अभिते मधुना पयोथर्वाणो अशिश्रयुः। देवं देवाय देवयु। (ऋग्वेद ९.११.२)
ॐ स नः पवस्व शंगवे शंजनायशमर्वते। शंराजन्नोषधीभ्यः। (ऋग्वेद ९.११.३)
ॐ बभ्रवेनु स्वतवसेरुणाय दिविस्पृशे। सोमाय गाथमर्चत॥ (ऋग्वेद ९.११.४)
ॐ हस्तच्युतेभिरद्रिभिः सुतं सोमं पुनीतन। मधावाधावता मधु॥ (ऋग्वेद ९.११.५)
ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती यो जान्विन्द्र ते हरी॥ (ऋग्वेद १.८२.२)
ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्यन्यो विश्वाजातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयोरयीणाम्॥

(ऋग्वेद १०.१२१.१०)

कृतस्य देवनान्दी समाराधनस्य प्रतिठाफलसिद्ध्यर्थं द्राक्षामलक निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृये। कहकर हाथ में दक्षिणा लेकर उस पर जल छोडकर नीचे रख दें।

प्रार्थना—अग्निष्वात्वा बर्हिषदः आज्यपाः सोमपास्तथा। एते भवन्तु मे प्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम्॥ कहकर जल छोड़ें। अनेन नान्दीसमाराधनेन नान्दीमुखदेवताः प्रीयंताम्। **आचम्य**—मंगल तिलक रकें। **विसर्जन**—यज्ञ के अन्तिम दिन विसर्जन करें।

ॐ इळामग्नेपुरुदंसंसनिंगोः शंश्वत्तमं हवमानायसाध। स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सातेसुमतिर्भूत्वस्मे॥ (ऋग्वेद ३.१५.७)
ॐ इळामुपह्वयते पशवो वा इळापशूनेवतदुपह्वयते। पशून्यजमानेदधाति दधाति॥ (ऋग्वेद ब्राह्मण)

यथाचारं हिरण्येन भाण्डवादनं। मन्त्र कहते हुए सिक्के से थाली के निचले भाग में शब्द करना चाहिये। (घण्टा वादन के बदले)

१. सर्वाद्भुत शान्ति याग के लिए-१—आचाय, एक कुण्ड में १-ब्रह्मा, ईशान्य में १-कलश पूजन, होमाङ्ग पूजन दक्षिण में १-इतर पूजन, पश्चिम में

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१-तर्पण के लिए, परिचारक (कर्मचारी) १-एक ब्राह्मण-कुल ५ पंडित रहने पर

१५ पण्डित से संपन्न कर्म में—२-१५ पण्डित कर्म में (एक कुण्ड में), २-१५ पण्डित से संपन्न याग में—१ आचार्य, १ ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण पूजन, १-परिचारक ब्राह्मण, ९-ऋत्विज होम के लिए

३-५५ पण्डित से संपन्न याग में—१- आचार्य (५ कुण्ड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण के लिए, १-परिचारक ब्राह्मण, ४५-ऋत्विज होम के लिए, ४-अग्निमुख जानकार उप आचार्य (९×५)

४-१०० पण्डित से संपन्न या में—१-आचार्य (९ कुण्ड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण के लिए, ५-परिचारक ब्राह्मण, ८१-ऋत्विज होम के लिए, ९-अग्निमुख जानकार उपआचार्य (९×९), इसी अनुपात में अधिक संख्या में कर सकते हैं।

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उपप्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्रप्राशूर्भवा सचा॥ *(ऋग्वेद १.४०.१)*

ॐ अभ्यारमिद द्रयो निषिक्तं पुष्करे मधु। अवतस्य विसर्जने॥ *(ऋग्वेद ८.७२.११)*

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मत्कृताम्। इष्टकामार्थसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

(इन मन्त्रों से आवाहित देवताओं को उठाना चाहिये।)

देवनान्दी समाप्त

ब्राह्मण वन्दन— **ॐ नमो महद्भ्यो नमो अर्भकेभ्यो नमो युवभ्यो नम आशिनेभ्यः।**

यजाम देवान् यदि शक्नवाममाज्यायसः शंसमा वृक्षि देवाः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः॥ *(ऋग्वेद २७.१३)*

इस मन्त्र से ब्राह्मण पूजा करें। "करिष्यमाण कर्मणः आरम्भमुहूर्तः सुमुहुर्तो अस्तु इति अनुगृणहन्तु"। यजमान पूछते है॥ "सुमुहूर्तमस्तु"।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सर्वतोभद्र मण्डल में देवता पूजनम्—**मध्ये ब्रह्माणं,** (मध्य में ब्रह्मा का आवाहन करें।) ब्रह्मजज्ञानं वामदेवो ब्रह्मात्रिष्टुप् ब्राह्मावाहने विनियोगः।

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः।
सबुध्नियां उपमाअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविवः॥ *(यजुर्वेद ४ काण्ड-२ प्रश्न-८ अनुवाक-४ मन्त्र)*

ॐभूर्भुवः स्वः ब्रह्मणो नमः। ब्रह्माणमावाहयामि। भो ब्रह्मन् इहागच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **उत्तरे सोमं**—(उत्तर में सोम का आवाहन करें।) आप्यायस्व गोतमः सोमोगायत्री सोमावाहने विनियोगः।

ॐ आप्यायस्व समेतुते विश्वतःसोमवृष्णियं। भवावाजस्यसङ्गथे॥ *(ऋग्वेद १.९१.१६)*

ॐभूर्भुवः स्वः सोमय नमः। सोमं आवाहयामि। भो सोम इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **ईशान्यं ईशानं**—(ईशान्य दिशा में ईशन का आवाहन करें।) अभित्वा शुनः शेप ईशानो गायत्री ईशानावाहने विनियोगः।

ॐ अभित्वा देव सवितरीशानं वार्याणां। सदावन्भागमीमहे॥ *(ऋग्वेद १.२४.३)*

ॐभूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः। ईशानमावाहयामि। भो ईशान इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजा गृहाण वरदो भव। **पूर्वे इन्द्रं**—(पूर्व में इन्द्र का आवाहन करें।) इन्द्र वो मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री इन्द्रावाहने विनियोगः।

ॐ इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः॥ *(ऋग्वेद १.७.१०)*

ॐभूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि। भो इन्द्र इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव॥ **आग्नेयामग्निं**—*(आग्नेय दिशा में अग्नि का आवाहन*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करें।) अग्निं दूतं मेधातिथिरग्निर्गायत्री अग्न्यावाहने विनियोगः।

ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्व वेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुं॥ *(ऋग्वेद १.१२.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः। अग्नेय नमः। अग्निमावाहयामि। भो अग्ने इहा गच्छ इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरणो भव। **दक्षिणे यमं**—(दक्षिण दिशा में यम का आवाहन करें।) यमाय सोमं यमोयमोनुष्टुप् यमावाहने विनियोगः।

ॐ यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हविः। यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्नि दूतो अरंकृतः॥ *(ऋग्वेद १०.१४.१३)*

ॐभूर्भुवः स्वः यमाय नमः। यममावाहयामि। भो यम इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव (नैऋत्य दिशा में निर्ऋति को।) मोषुणः कण्वो निर्ऋतिर्गायत्री निर्ऋत्या वाहने विनियोगः॥

ॐ मोषुणः परापरा निर्ऋतिर्दुर्हणावधीत्। पदीष्टतृष्णयासह॥ *(ऋग्वेद १.३८.६)*

ॐभूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिमावाहयामि। भो निऋति इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहाण। वरदो भव। **पश्चिमे वरुणं**—(पश्चिम दिशा में वरुण का आवाहन करें।) तत्वायामि शुनःशेपो वरुणस्त्रिष्टुप् वरुणावाहने विनियोगः।

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशं समान आयुः प्रमोषीः॥ *(ऋग्वेद १.२४.११)*

ॐभूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। वरुणमावाहयामि। भो वरुण इहागच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **वायव्यां वायुं**—(वायव्य दिशा में वायु का आवाहन करें।) वायोशतं वामदेवो वायुरनुष्टुप् वाय्वावाहने विनियोगः।

ॐ वायोशतं हरीणां युवस्व पोष्याणां। उतवाते सहस्त्रिणो रथआयातुपाजसा। *(ऋग्वेद ४.४८.५)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐभूर्भुवः स्वः वायवे नमः। वायुमावाहयामि। भो वायो इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहाण। वरदो भव। **वायुसोममध्ये अष्टवसून्**—वायु एवं सोम के बीच में अष्ठ वसुओं को (वायव्य एवं उत्तर के बीच में) ज्मया अत्र वसिष्ठो वसवस्त्रिष्टुप् व स्वावाहने विनियोगः।

ॐ ज्मया अत्र वसवो रन्तदेवाउरावन्तरिक्षे मर्जयन्त शुभ्राः।
आर्वाक्पथ उरुज्रयः कृणुध्वं श्रोतादूतस्यजगमुर्षोनो अस्य॥ *(ऋग्वेद ७.३९.३)*

ॐभूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो नमः। अष्टवसून् आवाहयामि। भो अष्टवसवः इहा गच्छ। इह तिष्ठतः। पूजां गृहाण। वरदो भवत। **सोमेशानयोर्मध्ये एकादशमरुद्रान्**—(सोमन एवं ईशान के बीच में एकादश रुद्रों का आवाहन करें।) (उत्तर एवं ईशान के बीच में) आरुद्रा सः श्यावाश्व एकादश रुद्रो जगती। एकादशरुद्रावाहने विनियोगः।

ॐ आरुद्रासइन्द्रवन्तः सजोषसो हिरण्यरथाः सुवितायगंतन।
इयं वो अस्मत्प्रतिहर्यतेमतितृष्णाजेन दिवउत्साउदन्यवे। *(ऋग्वेद ५.५७.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः एकादशरुद्रेभ्यो नमः। एकादश रुद्रानावाहयामि। भो एकादशरुद्राः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृषीत। वरदा भवत। **ईशानेन्द्रयोर्मध्ये द्वादशादित्यान्**—(ईशान्य एवं पूर्व के बीच में द्वादशादित्यों का आवाहन करें।) त्यांनुमत्स्योमान्योवा द्वादशादित्यागायत्री द्वादशादित्या-वाहने विनियोगः।

ॐ त्यांनुक्षत्रियाँ अवं आदित्यान्याचिषामहे। सुमृळीकाँअभिष्टये॥ *(यजुर्वेद-२ काण्ड-१ प्रश्न-११ अनुवाक-१८ मन्त्र)*

ॐभूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः। द्वादशादित्यानावाहयामि। भो द्वादशादित्याः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृह्णीत। वरदो भवत। **इन्द्राग्निमध्ये अश्विनौ**—(पूर्वा एवं आग्नेय के बीच में अश्विनी देवताओं को आवाहन करें।) अश्विनावर्तिर्गोतमोश्विनावुष्णिक् अश्व्यावाहने विनियोगः।

ॐ अश्विनावर्तिरस्मदागोमद्दस्राहिरण्यवत्। अर्वाग्रथंसमनसानियच्छतं॥ *(ऋग्वेद १.९२.१६)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐभूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः। अश्विनौ आवाहयामि। भो अश्विनौ इहा गच्छतं। इह तिष्ठतं पूजां गृषीतं। वरदौ भवतं। **अग्नियम मध्ये विश्वेदेवान् सपैतृकान्**—(आग्नेय एवं दक्षिण के बीच में पितृसाहित विश्वेदेवों का आवाहन करें।) ओमासोमधुच्छंदाविश्वेदेवा गायत्री। विश्वेदेवावाहने विनियोगः।

ॐ ओमासश्चर्षणीधृतोविश्वेदेवा स आगत। दाश्वांसोदाशुषः सुतं॥ *(ऋग्वेद १.३.७)*

ॐभूर्भुवः स्वः विश्वेभ्योदेवेभ्यो नमः विश्वान् देवान् आवाहयामि। भो विश्वेदेवाः इहा गच्छत। इह तिष्ठंत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **यम निर्ऋतिमध्ये सप्तयक्षान्**—(दक्षिण एवं नैर्ऋत्य के बीच में सप्त यक्षों का आवाहन करें।) अभित्यं वामदेवः सप्तयक्षा अष्टी। सप्तयक्षावहने विनियोगः।

ॐ अभित्यं देवं..सविताराम्रोरयोः कविक्रतुर्चामि सत्यसवस..रत्नधामभिप्रियंमतिमूर्ध्वा यस्यामतिर्भा अदिद्युतत्सवीमनिहिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपासुवः॥ *(यजुर्वेद-१ काण्ड-२ प्रश्न-६ अनुवाक)*

ॐभूर्भुवः स्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः सप्तयक्षान् आवाहयामि। भो सप्तयक्षाः इहा गच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **निर्ऋति वरुण मध्ये भूतनागान्**—(नैर्ऋत्य एवं पश्चिम के बीच में भुतगण एवं नागों का आवाहन करें।) आयङ्गो सार्पराज्ञी सर्पा गायत्री। सर्पावाहने विनियोगः।

आयं गौः पृश्निरक्रमीद सदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥ *(ऋग्वेद १०.१८९.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः। सर्पान् आवाहयामि। भो सर्पाः इहागच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **वरुणवायुमध्ये गंधर्वाप्सरसः**—(पश्चिम एवं वायव्य के बीच में गन्धर्व एवं अप्सराओं का आवाहन करें।) अप्सरसामृष्यशृङ्गोगंधर्वाप्सरसोनुष्टुप्। गन्धर्व अप्सरावाहने विनियोगः।

ॐ अप्सरसां गन्धर्वाणां मृगाणां चरणेचरन्। केशीकेतस्य विद्वान्त्सखास्वादुर्मदिन्तमः॥ *(ऋग्वेद १.१६३.६)*

ॐभूर्भुवः स्वः गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः। गन्धर्वाप्सरस आवाहयामि। भो गन्धवाप्सरसः इहा गच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत।

ब्रह्म सोममध्ये स्कन्दं नन्दीश्वरं शूलं महाकालं च

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(मध्ये में स्थित ब्रह्मा एवं सोम (उत्तर) के मध्य में स्कन्द नन्दीश्वर शूल एवं महाकाल का आवाहन करें।) यदक्रंदो दीर्घतमास्कंदस्त्रिष्टुप्। स्कंदावाहने विनियोगः।

ॐ यदक्रंदः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुतवा पुरीषात्।
श्येनस्यपक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महिजातंते अर्वन्॥ (ऋग्वेद १.१६३.१)

ॐभूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः। स्कन्दमावाहयामि। भो स्कन्द इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव। ऋषभमृषभो नन्दीश्वरोनुष्टुप्। नन्दीश्वरावाहने विनियोगः।

ॐ ऋषभं मासमानानां सपत्नानां विषासहिं। हंतारं शत्रूणां कृधि विराजं गोपतिं गवाँ॥ (ऋग्वेद १०.१६६.१)

ॐभूर्भुवः स्वः नन्दीश्वराय नमः नन्दीश्वरं आवाहयामि। भो नंदीश्वर इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव। कद्रुद्राय घोरः कण्वः शूलो गायत्री शूलावाहने विनियोगः।

ॐ कद्रुद्राय प्रचेतसेमीह्ळुष्टमायतव्यसे। वोचेमशंतमंहृदे॥ (ऋग्वेद १.४३.१)

ॐभूर्भुवः स्वः शूलायनमः शूलमावाहयामि। भो शूल इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव। कुमारं माता कुमारी महाकालस्त्रिष्टुप्। **महाकालावाहने विनियोगः।**

ॐ कुमारं मातायुवतिः समुब्धद्गुहाबिभर्ति न ददातिपित्रे।
अनीकमस्य नमिनज्जनासः पुरः पश्यंति निहितमरतौ॥ (ऋग्वेद ५.२.१)

ॐभूर्भुवः स्वः महाकालाय नमः। महाकालमावाहयामि। भो महाकाल इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूहां गृहाण। वरदो भव। **ब्रह्मेशानमध्ये दक्षं**—(बीच में विद्यमान ब्रह्मा एवं ईशान्य दिशा के बीच में दक्ष का आवाहन करें।) अदतिर्बृहस्पतिर्दक्षोनुष्टुप्। दक्षावाहने विनियोगः।

ॐ अदितिर्ह्यजनिष्टदक्षयादुहितातव। तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबंधवः॥ (ऋग्वेद १०.७२.५)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐभूर्भुवः स्वः दक्षाय नमः। दक्षमावाहयामि। भो दक्ष इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव। ब्रह्मेन्द्रमध्ये दुर्गां विष्णुं च (ब्रह्मा एवं इन्द्र के बीच में अर्थात् बीच में स्थित ब्रह्मा एवं पूर्व के बीच में दुर्गा एवं विष्णु का आवाहन करें।) तामग्निवर्णां सौभरिदुर्गात्रिष्टुप्। दुर्गावाहने विनियोगः।

ॐ तामग्निवर्णां तपसाज्वलंतीं वैरोचनीं कर्मफलेषुजुष्टां।

दुर्गां देवीं शरणमहंप्रपद्ये सुतरसितरसे नमः॥ *(यजुर्वेद-दुर्गासूक्त)*

ॐभूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः। दुर्गां आवाहयामि। भो दुर्गे इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदा भव। इदं विष्णुर्मेधातिथिर्विष्णुगायत्री। विष्णवावाहने विनियोगः।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदं। समूह्लमस्य पांसुरे॥ *(ऋग्वेद १.२२.१७)*

ॐभूर्भुवः स्वः विष्णवेनमः। विष्णुं आवाहयामि। भो विष्णो इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहाण। वरदो भव। ग्रह्माग्नि मध्ये स्वधां (बीच में स्थित ब्रह्मा एवं आग्नेय दिशा के बीच में स्वधा को) उदीरतां शंखः स्वधा त्रिष्टुप्। स्वधावाहने विनियोगः।

ॐ उदीरता मवरउत्परासउन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुंय ईयुरवृकाऽऋतज्ञास्तेनोवंतु पितरो हवेषु॥

(ऋग्वेद १०.१५.१)

ॐभूर्भुवः वः स्वधायै नमः। स्वधामावाहयामि। भो स्वधे इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदा भव। **ब्रह्म यममध्ये मृत्युरोगान्**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं दक्षिण दिशा के बीच में मृत्यु एवं रोगों का आवाहन करें।) परं मृत्यो संकुसुकोमृत्युरोगास्त्रिष्टुप्। मृत्युरोगावाहने विनियोगः।

ॐ परं मृत्यो अनुपरेहिपंथांयस्तेस्व इतरोदेवयानात्। चक्षुष्मते शृणवतेतें ब्रवीमिमानः प्रजारींरिषोमोत वीरान्॥

(ऋग्वेद १०.१८.१)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐभूर्भुवः स्वः मृत्युरोगेभ्यो नमः। मृत्यरोगान् आवाहयामि। भो मृत्युरोगाः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृषीत। वरदा भवत। ब्रह्म निर्ऋतिमध्ये गणपतिं (बीच में स्थित ब्रह्मा एवं नैऋत्य दिशा के बीच में गणपति का आवाहन करें।) गणानान्त्वा शौनकोगृत्समदो गणपतिर्जगती। गणपत्या वाहने विनियोगः।

ॐ गणानांत्वागणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमं।
ज्येष्ठराजंब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन्नूतिभिः सीदसादनं॥ *(ऋग्वेद २.२३.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः गणपतये नमः। गणपतिमावाहयामि। भो गणपति इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **ब्रह्मवरुणमध्ये अपः**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं पश्चिम दिशा के बीच में जल का आवाहन करें।) शंनोदेवीः सिंधुद्वीप आपो गायत्री। अप् आवाहने विनियोगः।

ॐ शंनोदेवीरभिष्टय आपो भवंतु पीतये। शंयोरभिस्रवंतु नः॥ *(ऋग्वेद १०.९.४)*

ॐभूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः। अपः आवाहयामि। भो आपः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **ब्रह्मवायुमध्ये मरुतः**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं वायव्य दिशा के बीच में मरुत् का आवाहन करें।) मरुतोयस्यगोतमो मरुतो गायत्री। मरुदावाहने विनियोगः

ॐ मरुतोयस्य हि क्षयेपाथा दिवोविमहसः। स सुगोपातमोजनः *(ऋग्वेद १.८६.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः मरुद्भ्यो नमः। मरुतः आवाहयामि। भो मरुतः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृहणीत। वरदा भवत। ब्रह्मणः पादमूले कर्णिकाधः पृथिवीं (बीच में स्थित ब्रह्मा जी के नीचे पादमूल में पृथिवी का आवाहन करें।) स्योना पृथिवी मेधातिथिर्भूमिर्गायत्री। भूम्यावाहने विनियोगः।

ॐ स्योना पृथिवि भवानृक्षरानिवेशनी। यच्छानः शर्म सप्रथः॥ *(ऋग्वेद १.२२.१५)*

ॐभूर्भुवः स्वः भूम्यै नमः। भूमिं आवाहयामि। भो भूमे इहा गच्छा। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदा भव। **तत्रैव गङ्गादिसर्वनद्यः**—(उसी स्थान पर अर्थात पृथिवी पर ही गङ्गादि सभी नदियों का आवाहन करें।) इमं मे गङ्गे सिंधुक्षित्प्रैयमेधानद्यो जगती। गङ्गादिनद्यावाहने विनियोगः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ इमं मे गङ्गेयमुनेसरस्वतिशुतुद्रिस्तोमं सचतापरुष्णया। असिक्न्यामं रुद्वृधेवितस्तया जींकीयेशृणुह्या सुषोमया॥

(ऋग्वेद १०.७५.५)

ॐभूर्भुवः स्वः गङ्गादि नदीभ्यो नमः। गङ्गादि नदीः आवाहयामि। भो गङ्गादिनद्यः इहागच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृहणीतां। वरदा भवत। तत्रैव सप्तसागराः। (वहीं पर सात सागरों का आवाहन करें।) धाम्नो धाम्नो वामदेवः सप्तसागरा ऋष्टी। सप्त सागरावाहने विनियोगः।

ॐ धाम्नो धाम्नो राजन्नितो वरुणानोमुञ्च। यदापो अध्न्या इति वरुणोतिशपामहेततो वरुणानोमुञ्च।
मयिवापोमोषधीहिं सीरतो विश्वव्यंचा भूस्त्वेतो वरुणानो मुञ्च॥ *(यजुर्वेद-१ काण्ड-३ प्रश्न-११ अनुवाक-१५ मन्त्र)*

ॐभूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः। सप्तसागरान् आवाहयामि। भो सप्तसागराः इहागच्छत। इह तिष्ठतः। पूहां गृहणीत। वरदा भवत। तदुपरि मेरवे नमः। मेरुं आवाहयामि। (उसके ऊपर मेरु पर्वत का आवाहन करें।) (भूमि पर) सोमसमीपे गदायै नमः। गदां आवाहयामि। (सोम के पास (उत्तर) गदा का आवाहन करें।) ईशान समीपेत्रिशूलाय नमः। त्रिशूलं आवाहयामि।। (ईशान के पास ईशान में त्रिशूल का आवाहन करें।) इन्द्रसमीपे वज्राय नमः। वज्रं आवाहयामि। (इन्द्र के पास पूर्व में वज्र का आवाहन करें।) अग्नि समीपे शक्तये नमः। शक्तिं आवाहयामि। (अग्नि के पास आग्नेय में शक्ति का आवाहन करें।) यम समीपे दण्डाय नमः। दण्ड आवाहयामि। (यम के पास दक्षिण में दण्ड का आवाहन करें।) निर्ऋति समीपे खड्गय नमः। खड्गमावाहयामि। (निर्ऋति के पास नैऋत्य के खड्ग का आवाहन करें।) वरुण समीपे पाशाय नमः। पाशं आवाहयामि। (वरुण के पास पश्चिम में पाश का आवाहन करें।) वायु समीपे अंकुशाय नमः। अंकुशं आवाहयामि। (वायु के पास वायव्य दिशा में अंकुश का आवाहन करें।)

तद्वाहये उत्तरादि क्रमेण (मण्डल के बाहर) गौतमाय नमः। गौतमं आवाहयामि। (उत्तर में गौतम जी का आवाहन करें।) भारद्वाजाय नमः। भरद्वाजं आवाहयामि। (ईशान में भरद्वाज जी का आवाहन करें।) विश्वामित्राय नमः। विश्वामित्रं आवाहयामि। (पूर्व में विश्वामित्र जी का आवाहन करें।) कश्यपाय

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नमः। कश्यपं आवाहयामि। (आग्नेय में अश्यप जी का आवाहन करें।) जमदग्नये नमः। जमदग्निं आवाहयामि। (दक्षिण में जमदग्नि जी का आवाहन करें।) वसिष्ठाय नमः। वसिष्ठं आवाहयामि। (नैर्ऋत्य में वसिष्ठ जी का आवाहन करें।) अत्रये नमः। अत्रिं आवाहयामि। (पश्चिम में अत्रि जी का आवाहन करें।) अरुंधत्यै नमः। अरुंधतीं आवाहयामि। (वायव्ये में अरुंधति जी का आवाहन करें।) ततः पूर्वादि क्रमेण मातृः। (पूर्वादि क्रम से मण्डल के बाहर मातृगणों का आवाहन करें।) ऐंद्र्यै नमः। ऐन्द्रीं आवाहयामि। (पूर्व में ऐन्द्री का आवाहन करें।) कौमार्यै नमः। कौमारीं आवाहयामि। (आग्नेय में कौमारी का आवाहन करें।) ब्राह्म्यै नमः। ब्राह्मीं आवाहयामि। (दक्षिण में ब्राह्मी का आवाहन करें।) वाराह्यै नमः। वाराहीं आवाहयामि। (नैर्ऋत्य में वाराही का आवाहन करें।) चामुण्डायै नमः। चामुण्डां आवाहयामि। (पश्चिम में चामुण्डा का आवाहन करें।) वैष्णव्यै नमः वैष्णवीं आवाहयामि। (वायव्य में वैष्णवी का आवाहन करें।) वैनायक्यै नमः वैनायकीं आवाहयामि। (ईशान्य में वैनायकी का आवाहन करें।) इति सर्वतो भद्र देवताः। (यहाँ पर सर्वतोभद्रमण्डल में विद्यमान सभी देवताओं का आवाहन संपन्न हुआ।)

ॐ तदस्तु मित्रावरुणा तदग्नेशंयोरस्मभ्यमिदमस्तु शस्तं। अशीमहि गाधमुतप्रतिष्ठां नमो दिवे बृहते सादनाय॥

(ऋग्वेद ५.४७.७)

गृहावै प्रतिष्ठासूक्तं तत् प्रतिष्ठिततमया वाचाशंस्तव्यं तस्माद्यद्यपिदूर इव पशूँलभते गृहानेवै नानाजिगमिषति गृहाहिपशूनां प्रतिष्ठा प्रतिष्ठा॥

ॐ नर्यप्रजां मे गोपाय॥ अमृतत्वाय जीव से॥ जातां जनिष्यमाणां च॥ अमृते सत्वे प्रतिष्ठितां॥ *(यजुर्वेद-ब्राह्मण)*

एताः ब्रह्मादि देवताः सुप्रतिष्ठिताः सन्तु। (इन मन्त्रों को कहकर आवाहित ब्रह्मादि देवताओं का प्रतिष्ठा करें।)

ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः। सुबुध्नियां उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चविवः॥ *(यजुर्वेद-४ काण्ड-२ प्रश्न-८ अनुवाक-४ मन्त्र)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनेन मंत्रेण पूजयेत्। (इस मन्त्र से पूजन करें।) ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। स्वागतं समर्पयामी। पादारविन्दयोःपाद्यं पाद्यं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ आपो॒हिष्ठा मयो॒भुवः तानं ऊ॒र्जे द॑धातन। म॒हेरणा॑य चक्ष॑से॥
यो वः॑ शि॒वत॑मो॒रस॒स्तस्य॑ भाजयते॒ हनः॑। उ॒श॒तीरि॑व मा॒तरः॑॥
तस्मा॒ अरं॑गमामवो॒ यस्य॒ क्षया॑य॒ जिन्व॑थ। आपो॑ज॒नय॑था च नः॥ *(ऋग्वेद १०.६.१)*

स्नानं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। स्नानाङ्ग आचमनं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ युवं वस्त्रा॑णि पीव॒सा व॑साथे युवोरच्छिद्रा॒मन्त॑वोह॒सगीः॑। अवातिरत॒मनृ॑तानि॒ विश्व॑ ऋ॒तेन॑ मित्रा वरुणा यचेथे॥

(ऋग्वेद १.१५२.१)

वस्त्रयुग्मं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ यज्ञो॑पवी॒तं पर॑मं पवि॒त्रं प्र॒जाप॑ते॒र्यत् स॒हजं॑ पु॒रस्ता॑त्। आ॒यु॑ष्य॒मग्र्यं॒ प्रति॑मुंच शु॒भ्रं यज्ञो॑पवी॒तं बल॑मस्तु॒ तेजः॑॥

(ऋग्वेद)

यज्ञोपवीतं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ हिर॑ण्यरूपः॒ स हिर॑ण्य संदृग॒पान्नपा॒त् सेदु हिर॑ण्यवर्णाः। हि॒रण्यया॒त् परि॒योनेर्नि॒षद्याहिरण्य॒ दाद॑दृ॒त्यन्नमस्मै॥

(ऋग्वेद २.३५.१०)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आभारणं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ गन्धं द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीं। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

गन्धं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उतपुरन्न धृष्णवर्चत॥ *(ऋग्वेद ८.६९.८)*

अक्षतान् समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ आयने ते परायणे दूर्वारोहन्तु पुष्पिणीः। हृदाश्च पुण्डरीकाणि समुद्रस्य गृहा इमे। पुष्पाणि समर्पयामि।

(ऋग्वेद १०.१४२.८)

नाम पूजां करिष्ये—ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ सोमाय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नेय नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ अष्टवसुभ्यो नमः। ॐ एकादश रुद्रेभ्यो नमः। ॐ द्वादशादित्येभ्यो नमः। ॐ अश्विभ्यां नमः। ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सप्तयक्षेभ्यो नमः। ॐ भूतनागेभ्यो नमः। ॐ गंधर्वाप्सरोभ्यो नमः। ॐ स्कन्दाय नमः। ॐ नन्दीश्वराय नमः। ॐ शूलाय नमः। ॐ महाकालाय नमः। ॐ दुर्गायै नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ स्वधायै नमः। ॐ मृत्युरोगेभ्यो नमः। ॐ गणपतये नमः। ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ मरुद्भ्यो नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ गङ्गादि सर्वनदीभ्यो नमः। ॐ सप्त सागरेभ्यो नमः। ॐ मेरवे नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्तये नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अंकुशाय नमः। ॐ गौतमाय नमः। ॐ भरद्वाजाय नमः। ॐ विश्वामित्राय नमः। ॐ कश्यपाय नमः। ॐ जमदग्नये नमः। ॐ वसिष्ठाय नमः। ॐ अत्रये नमः। ॐ अरुन्धत्यै नमः। ॐ ऐन्द्र्यै नमः। ॐ कौमायै नमः। ॐ ब्राह्मै नमः। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ वैनायक्यै नमः। (देवताओं के ५७ समूह।) नाम पूजां समर्पयामि। (ये सभी देवता सर्वतो भद्र मण्डल से आवाहित हैं।) ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढयः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥ धूपं आघ्रापयामि। *(प्रयोगरत्नाकर)*

ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

आज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

दीपं दर्शयामि धूपदीपानन्तरं आचमनं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। (नैवेद्य को गायत्री मन्त्र से प्रोक्षण करें नैवेद्य मण्डल पर रखें। **सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि।** इस मन्त्र से परिषिञ्चन करें।) **अमृतोपस्तरणमसि** कहकर जल छोड़ें। ॐप्राणाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं कनिष्ठिका मिलाकर) ॐअपानाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर) ॐव्यानाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर) ॐउदानाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर) ॐसमानाय स्वाहा (सभी अङ्गुलियों को मिलाकर) ॐदेवेभ्यः स्वाहा नैवेद्यं निवेदयामि। **अमृतापिधानमसि** कहकर जल छोड़ें। नैवेद्यं विसर्जयामि। हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। गण्डूषं समर्पयामि। पुनराचमनं समर्पयामि। (कहकर जल छोड़ें) ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

पूगीफल समायुक्तं नागवल्ल्यादलैर्युतम्। चूर्ण कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यतां। क्रमुक ताम्बूलं समर्पयामि।

(देवपूजा)

ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधा सो अर्चत। अर्चन्तु पुत्र का उत पुरं न धृष्णवर्चत। *(ऋग्वेद ८.६९.८)*
ॐ ध्रुवाद्यौ ध्रुवापृथिवीध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्॥
ॐ ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ *(ऋग्वेद १०.१७३.५)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मङ्गलनीराजनं समर्पयामि। नीराजनान्ते परिमल पत्र पुष्पाणि समर्पयामि। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। प्रदक्षिणां समर्पयामि। नमस्कारान् समर्पयामि।

देवाराधनमण्डलं सुरगणावासं सदामङ्गलं। कुर्तुः दर्शनमात्रतः शुभकरं तत् पञ्च भूतात्मकं॥
अर्णाद्यक्षरसंयुतं भयहरं तद् याग पुण्यार्जितं। नानामन्त्रमयं समस्त फलदं ध्यायेन्मनोनन्दनं॥
अरिष्टानि बहून्यस्मिन् दुष्कृतानि शतानि च। मण्डलानि निरीक्षन्ते यथा युद्धेषु कातराः॥ *(अनुष्ठान पद्धति)*

(युद्ध भूमि में कायर जैसे देखते ही भीत हो जाते हैं, वैसे ही मण्डल को देखते ही सभी अरिष्ट दूर हो जाते हैं।) **अनया पूजया ब्रह्मादि मण्डल देवताः प्रीयन्तां** यहाँ पर सर्वतोभद्र मण्डल पूजन संपन्न हुआ।

प्रधान देवता सूर्य षोडशोपचार पूजन

ध्यान — कालिंगं ग्रहमध्य भागनिलयं प्राचीमुखं वर्तुलं,। रक्तं रक्तविभूषणाध्वजरथच्छत्रश्रियाशेभितम्॥
सप्ताश्वं कमलद्वयान्वितकरं पद्मासनं काश्यपं। मेरोर्दिव्य गिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे भास्करम्॥ ॐ घृणिः सूर्यआदित्यः।

आवाहन-ॐ सहस्रंशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतोवृत्वात्यं तिष्ठद् दशांगुलम्॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१)*

ॐ हिरंण्यवर्णा हरिणीं सुवर्णरजत स्रंजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवंह॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीसूर्याय नमः। आवाहयामि। **आवाहनं** समर्पयामि।

आसनम्—ॐ पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यंच्च भव्यंम्। उतामृतत्वस्येशांनो यदन्नेंना तिरोहं ति॥ *(ऋग्वेद १०.९०.२)*

ॐ तां म आवंह जातवेदो लक्ष्मीमनंपगामिनींम्। यस्यां हिरंण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। आसनं समर्पयामि।

पाद्यम्— ॐ एतावानस्य महिमाऽतो ज्यायाँश्च पुरुषः। पादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ (ऋग्वेद १०.९०.३)

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं— ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः। ततो विश्वं व्यक्रामत् साशनानशने अभि॥ (ऋग्वेद १०.९०.४)

ॐ कां सोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।

पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहो पह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—ॐ तस्माद्विराळजायत विराजो अधिपूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथोपुरः। (ऋग्वेद १०.९०.५)

ॐ चंद्रां प्रभासां यशसा ज्वलंतीं श्रियं लोके देवजुष्टा मुदाराम्।

तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणो॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् (दूध)— ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियं। भवावाजस्य संगथे। (ऋग्वेद १०.९१.१६)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। पयः स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवेनातिं भवे भवस्वमाम् भवोद्भवाय नमः॥

(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत् आरण्यक)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि

दहि— ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखा करत्प्रण आयूंषि तारिषत्॥ (ऋग्वेद ४.३९.६)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। दधि स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमश्श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमःकलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमस्सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः। (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

घी— ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतं वस्य धाम।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभवक्षि हव्यम्॥ (ऋग्वेद २.३.११) ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। घृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोर तरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

मधु (शहद)—ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरंति सिंधवः। माध्वीर्नः संत्वोषधीः॥ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवंतु नः॥ (ऋग्वेद १.९०.६) ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। मधु स्नानं समर्पयामि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शुद्ध जल—ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)*

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्पयामि।

शर्करा (शक्कर)—ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिंद्राय सुहवीतु नाम्ने।
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमाँ अदाभ्यः॥ *(ऋग्वेद ९.८५.६)*

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शर्करा स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जन—ॐ ईशानस्सर्वं विद्यानामीश्वरस्सर्वं भूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽ
धिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोऽम्॥ *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)*

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

फल— ॐ याः फलिनी र्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वं हसः॥ *(ऋग्वेद १०.९७.१५)*

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। फल स्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक—ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तानऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥ यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयते हनः।
उशतीरिव मातरः॥ तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः। *(ऋग्वेद १०.९.१-२-३)*
ॐ कद्रुद्राय प्रचेतसे मीळहुष्टमाय तव्यसे। वोचेम शंतमं हृदे॥ *(ऋग्वेद १.४३.१)*
ॐ यथा नो अदितिः करत्पश्वे नृभ्यो यथा गवे। यथा तोकाय रुद्रियम्॥ *(ऋग्वेद १.४३.२)*
ॐ यथा नो मित्रो वरुणो यथा रुद्रश्चिकेतति। यथा विश्वे सजोषसः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ गा॒थप॑तिं मे॒धप॑तिं रु॒द्रं जला॑षभेषजम्। तच्छं॒ योः सुम्नमी॑महे॥
ॐ यः शु॒क्र इ॑व॒ सूर्यो॒ हिर॑ण्यमिव॒ रोच॑ते। श्रेष्ठो॑ दे॒वानां॒ वसुः॑।
ॐ शं नः॑ कर॒त्यर्व॑ते॒ सुगं॑ मे॒षाय॑ मे॒ष्ये॑। नृभ्यो॒ नारि॑भ्यो॒ गवे॑॥
ॐ अ॒स्मे सोम॒ श्रिय॒मधि॒ नि धे॑हि श॒तस्य॑ नृ॒णाम्। महि॒ श्रव॑स्तुविनृ॒म्णाम्॥
ॐ मान॑ः सोमपरि॒बाधो॒ मारा॑तयो जुहुरंत। आ न॑ इंदो॒ वाजे॑ भज॥
ॐ यास्ते॑ प्र॒जा अ॒मृत॑स्य॒ पर॑स्मिन्धाम॑न्नृ॒तस्य॑। मूर्धा नाभा॑ सोमवेन आ॒ भूष॑ंतीः सोम वेदः॥ (ऋग्वेद १.४३.३-४-५-६-७-८-९)

ॐ नम॒ः सोमा॑य च रु॒द्राय॑ च॒ नम॑स्ताम्राय॑ चारु॒णाय॑ च॒ नमः॑ शं॒गाय॑ च पशु॒पत॑ये च॒ नम॑ उ॒ग्राय॑ च भी॒माय॑ च॒ नमो॑ अग्रेव॒धाय॑ च दूरेव॒धाय॑ च॒ नमो॑ ह॒न्त्रे च॒ हनी॑यसे च॒ नमो॑ वृ॒क्षेभ्यो॒ हरि॑केशेभ्यो॒ नम॑स्ता॒राय॒ नमः॑ शं॒भवे॑ च मयो॒भवे॑ च॒ नमः॑ शंक॒राय॑ च मयस्क॒राय॑ च॒ नमः॑ शि॒वाय॑ च शि॒वत॑राय च॒ न॒म॒ स्तीर्थ्या॑यच॒ कूल्या॑य च॒ नमः॑ पा॒र्याय॑ चावा॒र्याय॑ च॒ नमः॑ प्र॒तर॑णाय चो॒त्तर॑णाय च॒ नम॑ आता॒र्याय॑ चाला॒द्याय॑ च॒ नम॒शष्प्याय च॒ फेन्या॑य च॒ नमः॑सिक॒त्याय॑ च प्रवा॒ह्याय॑ च। (यजुर्वेद-४ काण्ड-५ प्रश्ने-८ अनुवाक)

ॐ तच्छं॒योरावृ॑णीमहे। गा॒तुं य॒ज्ञाय॑। गा॒तुं य॒ज्ञ प॑तये। दैवीः॑ स्व॒स्तिर॑स्तु नः। स्व॒स्तिर्मानु॑षेभ्यः।
ऊ॒र्ध्वं जि॑गातु भेष॒जम्। शं नो॑ अस्तु द्वि॒पदे॑। शं चतु॑ष्पदे। ॐ शांतिः शांतिः। शांतिः॥ (यजुर्वेद-आरण्यक)
ॐ यत्पुरु॑षेण हविषा॑ देवा य॒ज्ञमत॑न्वत। व॒स॒ंतो अ॑स्यासी॒दाज्यं॑ ग्री॒ष्म इध्मः॑ श॒रद्धविः॑॥ (ऋग्वेद १०.९०.६)
ॐ आ॒दि॒त्यवर्णो॒ तप॒सोऽधि॑जा॒तो वन॒स्पति॒स्तव॑ वृ॒क्षोऽथ॑ बि॒ल्वः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तस्य फलानि तपसा नुदंतु मायांतरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः। (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

वस्त्र— ॐ युवं वस्त्राणि पीवसावसाथे युवोरच्छिद्रा मंतवो हसर्गाः।
अवातिरममनृतानि विश्वं ऋतेन मित्रा वरुणा सचेथे॥ (ऋग्वेद १.१५२.१)
ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजंत साध्या ऋषयश्च ये॥ (ऋग्वेद १०.९०.७)
ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥

(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतं—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरास्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशूंस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान् ग्राम्याश्च ये॥ (ऋग्वेद १०.९०.८)
ॐ क्षुत् पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

आभरण—ॐ हिरण्यरूपः स हिरण्य संदृगपान्नपात् सेदु हिरण्यवर्णः। हिरण्ययात् परियोनेर्निषद्या हिरण्यदा ददत्यन्नमस्मै॥

(ऋग्वेद २.३५.१०)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। आभरणं समर्पयामि।

गन्ध— ॐ गंधं द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्य जुस्तस्मादजायत॥ (ऋग्वेद १०.९०.९)

ॐसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। गन्धं समर्पयामि।

अक्षत—ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उतपुरंन्न धृष्णवर्चत॥ (ऋग्वेद ८.६९.८)

ॐसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि—ॐ आयने ते परायणे दूर्वारोहंतु पुष्पिणीः। ह्रदाश्च पुण्डरीकाणि समुद्रस्य गृहा इमे॥ (ऋग्वेद १०.१४२.८)

ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावोहजज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजावयः॥ (ऋग्वेद १०.९०.१०)

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐसपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। पुष्पाणि समर्पयामि।

प्रथमावरण पूजनम्—ॐहृदयाय नमः। आग्नेय दिशि। ॐशिरसे स्वाहा नमः। ऐशान्यां दिशि। ॐशिखायै वषट् नमः। नैर्ऋत्यां दिशि। ॐकवचाय हुम् नमः। वायव्यां दिशि। ॐनेत्रत्रयाय वौषट् नमः। अग्रे ॐअस्त्राय फट् नमः। आग्नेयादि कोणेषु पूजयेत् (अनुष्ठान पद्धति)। पूजन करे।

द्वितीयावरण पूजनम्—ॐइन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्णाय वज्रहस्ताय ऐरावत वाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवारायश्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐअग्नये तेजोधिपतये पिंगलवर्णाय शाक्ति हस्ताय मेष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय स वाहनाय स परिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नमः। ॐयमाय प्रेताधिपतये कृष्णावर्णाय दण्ड हस्ताय महिष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूति

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पार्षदाय नमः। ॐ निर्ऋतये रक्षोधिपतये रक्तवर्णाय खड्ग हस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नमः। ॐ वरुणाय जलाधितये कुंदवर्णाय पाशहस्ताय मकरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सूर्यमूति पार्षदाय नमः। ॐ वायवे प्राणाधिपतये धूम्रवर्णाय अंकुश हस्ताय हरिणवाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ सोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्णाय गदा हस्ताय अश्व वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नमः। ॐ ईशानाय विद्याधिपतये स्फटिकवर्णाय त्रिशूल हस्ताय वृषभ वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ अनंताय नागाधिपतये क्षीरवर्णाय चक्रहस्ताय गरुड वाहनाय स शक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। नैर्ऋत्यं एवं पश्चिम दिशा के बीच में अनन्त का पूजन करें। ॐ ब्रह्मणो लोकाधिपतये कंजवर्णाय पाशहस्ताय हंसवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्तिपार्षदाय नमः। पूर्व एवं ईशान दिशा के बीच में ब्रह्मा जी का पूजन करें। *(अनुष्ठान पद्धति)*

तृतीयावरणपूजनम्—ॐ वज्राय नमः। (पूर्व में) ॐ शक्त्यै नमः। (आग्नेय में) ॐ दण्डाय नमः। (दक्षिण में) ॐ खड्गाय नमः। (नैर्ऋत्य) ॐ पाशाय नमः। (पश्चिम में) ॐ अंकुशाय नमः। (वायव्य में) ॐ गदायै नमः। (उत्तर में) ॐ त्रिशूलाय नमः। (ईशान में) ॐ चक्राय न मः। (पश्चिम नैर्ऋत्य के बीच में) ॐ पद्माय नमः। (पूर्व ईशान के बीच में) *(अनुष्ठान पद्धति)*

सूर्य अष्टोत्तर शतनाम पूजा

ॐ अरुणाय नमः। ॐ शरण्याय नमः। ॐ करुणारस सिन्धवे नमः। ॐ असमान बलाय नमः। ॐ आर्तरक्षकाय नमः। ॐ आदित्याय नमः। ॐ आदिभूताय नमः। ॐ अखिलागमवेदिनेनमः। ॐ अच्युतायनमः। ॐ अखिलज्ञायनमः। ॐ अनन्तायनमः। ॐ इनायनमः। ॐ विश्वरूपायनमः। ॐ इज्यायनमः। ॐ इन्द्रायनमः। ॐ भानवेनमः। ॐ इन्दिरामन्दिरायनमः। ॐ आप्तायनमः। ॐ वन्दनीयायनमः। ॐ ईशायनमः। ॐ सुप्रसन्नायनमः ॐ सुशीलायनमः ॐ सुवर्चसे नमः

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐवसुप्रदायनमः । ॐवसवेनमः। ॐवासुदेवायनमः। ॐउज्जवलायनमः। ॐउग्ररूपायनमः। ॐऊर्ध्वगायनमः। ॐविवस्वतेनमः। ॐउद्यत्किरणजालयनमः। ॐहृषिकेशायनमः। ॐऊर्जस्वलायनमः। ॐवीरायनमः। ॐनिर्जरायनमः। ॐजयाय नमः। ॐ ऊरुद्वभावरूपयुक्तसारथये नमः। ॐरुग्घन्त्रे नमः। ॐऋक्षचक्रचराय नमः। ॐऋजुस्वभावचित्ताय नमः। ॐनित्यस्तुत्याय नमः। ॐऋकारमातृकावर्णरूपाय नमः। ॐउज्जवलतेजसे नमः। ॐऋक्षायधिनाथाय नमः। ॐमित्रायनमः। ॐपुष्काराक्षाय नमः। ॐ लुप्तदन्ताय नमः। ॐशान्ताय नमः। ॐकान्तिदाय नमः। ॐधनाय नमः। ॐकनत्कनकभूषाय नमः। ॐ खद्योताय नमः। ॐलूनिताखिलदैत्याय नमः। ॐसत्यानन्द स्वरूपिणे नमः। ॐअपवर्गप्रदाय नमः। ॐआर्तशरण्याय नमः। ॐएकाकिने नमः। ॐभगवते नमः। ॐ सृष्टिस्थित्यन्तकारिणे नमः। ॐगुणात्मने नमः। ॐघृणिभृते नमः। ॐबृहते नमः। ॐब्रह्मणे नमः। ॐऐश्वर्यदाय नमः। ॐशर्वाय नमः। ॐहरिदश्वाय नमः। ॐशौरये नमः। ॐदशदिक्सम्प्रकशाय नमः। ॐभक्तवश्याय नमः। ॐओजस्कराय नमः। ॐजयिने नमः। ॐजगदानन्दहेतवे नमः। ॐजन्ममृत युजराव्याधिवर्जिताय नमः। ॐऔन्नत्यापदसञ्चरथस्थाय नमः। ॐअसुरारये नमः। ॐकमनीकराय नमः। ॐअब्जवल्लभाय नमः। ॐ अन्तर्बहिःप्रकाशाय नमः। ॐ अचिन्त्याय नमः। ॐआत्मरूपिणे नमः। ॐ अच्युताय नमः। ॐ अपरेशाय नमः। ॐपरस्मै नमः। ॐज्योतिषे नमः। ॐअहस्कराय नमः। ॐरवये नमः ॐहरये नमः। ॐपरमात्मने नमः। ॐतरुणाय नमः। ॐवरेण्याय नमः। ॐग्रहाणांपतये नमः। ॐभास्कराय नमः। ॐआदिमध्यान्तरहिताय नमः। ॐ सौख्यप्रदायनमः। ॐ सकलजगतांपतये नमः। ॐसूर्याय नमः। ॐकवये नमः। ॐनारायणाय नमः। ॐपरेशाय नमः। ॐतेजोरूपाय नमः। ॐह्रीं हिरण्यगर्भाय नमः। ॐ ऐं इष्टार्थदाय नमः। ॐआशुप्रपन्नाय नमः। ॐश्रीमते नमः। ॐश्रेयसे नमः। ॐभक्तकोटिसौख्यप्रदायिने नमः। ॐनिखिलागमवेद्याय नमः। ॐनित्यानन्दाय नमः। अष्टोत्तर शतनाम पूजां समर्पयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

धूपम्—ॐवनस्पति रसोत्पन्नो गंधाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते॥ *(ऋग्वेद १०.९०.११)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। धूपं आघ्रापयामि।

दीपम्— आज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मंगलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह॥ *(स्मृति संग्रह)*

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासी बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१२)*

ॐ आपः सृजंतु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। दीपं दर्शयामि। धूप दीपानंतरं आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यम्—देवस्याग्रे स्थलं संशोध्य गोमयेन मण्डलं कृत्वा तत्र शुद्धं पात्रं न्यस्य अभिघार्य निर्मलं हवि तदुपरि न्यस्य आज्येन द्रवीभूतं कृत्वा "ॐ भू र्भुवः स्वः इति गायत्र्या च प्रोक्ष्य वायु बीजं जप्त्वा निवेद्यान्नं संशोध्य इक्षिणहस्ते अग्निबीजं विलिख्य तेन हस्तेन संदह्यवामहस्ते अमृतबीजं विलिख्य तेत हस्तेन हविराप्लाव्य मूलमंत्रमष्टवारं संजप्य मंत्रामृतमयं संकल्प्य सुरभिमुद्रां बध्वा अमृतमयं भावयित्वा मल धातु रसांशं विभज्य देवस्य निवेद्य ग्रहणोच्छां कुर्यात्।

(अनुष्ठान पद्धति)

"सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि" इत्यनेन

परिषिच्य हस्ताभ्यां पुष्पैः "देवस्य जिह्वार्चीरुचि निवेद्ये निपात्य निवेदयामि भवते जुषाणेदं हविर्विभो" इति वामहस्तेन ग्रासमुद्रा प्रदर्श्य दक्षिण हस्तेन प्राणादि मुद्राः प्रदर्शयेत्। अन्नात् मलांशं धात्वंशं च परित्यज्य रसांशं देवस्य वदनार्चिषि समर्पयेत्। वं अबात्मने इति नैवेद्य मुद्रां प्रदर्शयेत्।

नैवेद्य सारं रससमर्पणात् जातं सुधांशं देवे समर्प्य अंललिमुद्रां बध्वा नैवेद्यसार रससमर्पित जातामृतमय सुधांशुना पुनः पुनः वर्धितं देवं हृन्मूर्ति देवं ध्यायन्

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्व स्व मूलमन्त्रं यथा शक्ति जप्त्वा।

कलश के आगे स्थल शुद्धिकर गोमय से शुद्धिकर चतुरस्त्र मण्डल को बनाकर उस पर शुद्ध पात्र को रखें। पात्र में थोडा सा घी डालें। उस पात्र में निर्मल हविस् (नैवेद्य पदार्थ को) को घी पर रखें उस हविस् को घी से भिगोयें। गायत्री मंत्र से नैवेद्य का प्रोक्षण करें। यंयं यं'' इस वायु बीज को जपकर हविस् को शुद्ध करें। दाहिने हाथ में (रं) अग्नि बीज को लिखकर उस अग्नि से हविस् में विद्यमान कश्मलों को लजायें। (कल्पना करें) बायें हाथ में अमृत बीज (वं) को लिखकर उस हाथ से हविस् को शुद्ध करें। धोने की कल्पना करें। ॐ घृणिः सूर्य आदित्यः। इस मन्त्र का आठ बार जप करें। हविस् को मत्रमय एवं अमृतमय होने की कल्पना करें। सुरभि मुद्रा से अमृतमय हुआ है मानकर मलांश, धातु अंश एवं रसांश को अलग-अलग करने की कल्पना करें।

देवता को नैवेद्य ग्रहण करने की इच्छा उत्पन्न करनी चाहिये। ''सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि'' इससे परिषिञ्चन करें। दोनों हाथों में पुष्प लेकर देवता का जीभ नैवेद्य तक पहुँचने का चिन्तन करें। ''निवेदयामि भवते जुषाण हविर्विभो'' कहकर नैवेद्य स्वीकार करने की प्रार्थना करते हुए बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछडे को घास देते हैं) को दिखाकर दाहिने हाथ से—

प्राणाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ कनिष्ठिका मिलाकर, **अपानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर, **व्यानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर, **उदानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर, **समानाय स्वाहा**। सभी अङ्गुलियों को लिकर। अन्न से मलांश एवं धातु के अंश को अलग कर केवल रसांश को अर्पित करने की कल्पना करें।

''वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि'' कहकर नैवेद्य मुद्रा का प्रदर्शन करें। अंगुष्ट एवं अनामिका मिलाने से नैवेद्य मुद्रा। नैवेद्य का सार जो रसांश था उसका भी सार अमृत का जो अंश है उसे देवता को समर्पित कर, हाथ जोडकर, नैवेद्य के सार अमृत से भगवान् को बढते हुए मानकर उसे हृदय में स्थित मानकर यथाशक्ति ॐ घृणिः सूर्य आदित्यः।'' इस मूल मंत्र का जप करें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिंद्राय सुहवीतुनाम्ने।
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमां अदाभ्यः॥ (ऋग्वेद ९.८५.६)
ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत॥ (ऋग्वेद १०.९०.१३)
ॐ आर्दां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

यथा संभव नैवेद्यं निवेदयामि। **अमृतापिधानमसि** कहकर उत्तरापोशन देवें। हस्ताप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गण्डूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूल—पूगीफल समायुक्तं नागवल्या दलैर्युतं। चूर्णा कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ (स्मृति संग्रह-देवपूजा)

ॐ सपरिवार श्री सूर्याय नमः। क्रमुक तांबूलं समर्पयामि।

नीराजन (आरति)—ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधा सो अर्चत। अर्चतु पुत्रका उत पुरं न धृष्णवर्चत। (ऋग्वेद ८.६९.८)
ॐ ध्रुवाद्यौ र्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्॥
ॐ ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ (ऋग्वेद १०.१७३.४)

ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। मंगल नीराजनंसमर्पयामि।

मंत्रपुष्प—ॐ सहस्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्वशंभुवम्। विश्वं नारायणं देवमक्षरं परमं पदम्॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विश्वतः परमान्नित्यं विश्वं नारायणं हरिम्। विश्वमेवेदं पुरुषस्तद्विश्व मुपजीवति॥
पतिं विश्वस्यात्मेश्वरं .. शाश्वतं... शिवमच्युतम्। नारायणं महाज्ञेयं विश्वात्मानं परायणम्॥
नारायण परोज्योतिरात्मा नारायणः परः। नारायण परं ब्रह्म तत्वं नारायणः परः॥
नारायण परो ध्याता ध्यानं नारायणः परः। यच्च किंचिज्जगत्सर्वं दृश्यते श्रूयतेऽपि वा॥
अन्तर्बहिश्च तत्सर्वं व्याप्य नारायणस्थितः। अनन्तमव्ययं कविं.. समुद्रेऽन्तं विश्वशंभुवम्॥
पद्मकोश प्रतीकाशं... हृदयं चाप्यधो मुखम्। अधोनिष्ट्या वितस्यान्ते नाभ्यामुपरि तिष्ठति॥
ज्वालामालाकुलं भाति विश्वस्यायतनं महत्। संतत्... शिखाभिस्तु लंबत्याकोश सन्निभम्॥
तस्यांते सुषिरं.. सूक्ष्मं तस्मिन्सर्वं प्रतिष्ठितम्। तस्य मध्ये महानग्निर्विश्वार्चिर्विश्वतो मुखः॥
सोऽग्रभुग्वि भजंतिष्ठन्नहारमजरः कविः। तिर्यगूर्ध्वमधश्शायी रश्मय स्तस्य संतता॥
संतापयति स्वं देहमापादतलमस्तकः। तस्य मध्ये वह्निशिखा अणीयोर्ध्वा व्यवस्थितः॥
नीलतोयदमध्यस्थाद्विद्युल्लेखेव भास्वरा। नीवारशूकवत्तन्वी पीताभास्वत्यणूपमा॥
तस्यां शिखाया मध्ये परमात्मा व्यवस्थितः। स ब्रह्म स शिवःस हरिस्सेंद्रस्सोक्षरः परमः स्वराट्॥

ॐ बरमहाँ असि सूर्य बळादित्य महाँ असि। महस्ते सतो महिमा पनस्यते ऽद्धा देव महाँ असि॥ (ऋग्वेद ८.१०१.११) आ.गृ.सूत्रम्

ॐ नाभ्या आसीदंतरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्। (ऋग्वेद-१०.९०.१४)

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिण नमस्कार—यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानि च। तानि तानि प्रणाश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥ (देवपूजा-स्मृति संग्रह)

ॐ सप्तास्यां सन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुं॥ (ऋग्वेद १०.९०.१५)

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।

यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावोदास्योऽश्वान् विंदेयं पुरुषानहम्॥ (ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। प्रदक्षिण नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्य—ॐ प्रभाकराय विद्महे दिवाकराय धीमहि। तन्नो सूर्यः प्रचोदयात्॥ इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यम् (कहकर तीन बार पुष्पमिश्रित जल छोडें।)

सर्वोपचार पूजनम्—ॐ छत्रं समर्पयामि। चामरेण वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। आंदोळिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्य राजोपचार देवोपचार पूजां समर्पयामि।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ (ऋग्वेद १०.९०.१६)

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥ (ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। सवोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— कालिंगं ग्रहमध्य भागनिलयं प्राचीमुखं वर्तुलं, । रक्तं रक्तविभूषणाध्वजरथच्छत्रश्रियाशेभितम्॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सप्ताश्वं कमलद्वयान्वितकरं पद्मासनं काश्यपं। मेरोर्दिव्य गिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे भास्करम्॥
ॐ कायेन वाचा मनसे न्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥ (पौराणिकम्)
ॐ ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥ (श्री भगवद्गीते)

ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। अनेन पूजनेन सपरिवारः श्री सूर्यः प्रीयताम्।

नवग्रहषोडशोपचार पूजन

ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि।

ॐ स॒हस्र॑शीर्षा॒ पुरु॑षः स॒हस्रा॒क्षः स॒हस्र॑पात्। स भूमिं॑ वि॒श्वतो॑ वृ॒त्वाऽत्य॑तिष्ठद्दशाङ्गु॒लम्॥ (ऋग्वेद १०.९०.१)
ॐ हिर॑ण्य वर्णां॒ हरि॑णीं सु॒वर्ण॑रज॒तस्र॑जाम्। च॒न्द्रां हिरण्म॑यीं ल॒क्ष्मीं जात॑वेदो म॒ आ व॑ह॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, आवाहनं समर्पयामि।

ॐ पुरु॑ष ए॒वेदं सर्वं॒ यद्भू॒तं यच्च॒ भव्य॑म्। उ॒तामृ॑त॒त्वस्येशा॑नो॒ यदन्ने॑नाति॒रोह॑ति॥ (ऋग्वेद १०.९०.२)
ॐ तां म॒ आव॑ह जातवेदो ल॒क्ष्मीमन॑पगा॒मिनी॑म्। यस्यां॒ हिर॑ण्यं वि॒न्देयं॒ गाम॑श्वं॒ पुरु॑षान॒हम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, आसनं समर्पयामि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ एतावानस्य महिमाऽतो ज्योयाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ (ऋग्वेद १०.९०.३)
ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवी मुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहा भवत् पुनः। ततो विष्वं व्यक्रामत् साशनानशने अभि॥ (ऋग्वेद १०.९०.४)
ॐ कां सोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।

(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

ॐ तस्माद् विराळजायत विराजो अधिपूरुषः। सजातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः॥ (ऋग्वेद १०.९०.५)
ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्ती श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणो॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् पयः (दूध)—ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियं। भवावाजस्य सङ्गथे। (ऋग्वेद १.९१.१६)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, पयः स्नानं समर्पयामि। दूध से स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुत्तरां दिवम्। हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय॥ (ऋग्वेद १.५०.११)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः। पयः स्नानांते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

दधि (दहि)—ॐ दुधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखा कर्त्प्रण आयूंषि तारिषत्॥ (ऋग्वेद ४.३९.६)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, दधि स्नानं समर्पयामि। दहि स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ शुकेषु मे हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि। अथो हारिद्रवेषु मे हरिमाणं निदध्मसि॥ (ऋग्वेद १.५०.१२)

ॐ नवग्रह मंडलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, दधि स्नानांते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

घृत (घी)—ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतं वस्य धाम।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभवक्षि हव्यम्॥ (ऋग्वेद २.३.११)

ॐ नवग्रह मंडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, घृत स्नानं समर्पयामि। घी स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ उदगादयमादित्यो विश्वेन सहसा सह। द्विषन्तं मह्यं रन्धयन् मो अहं द्विषते रधम्॥ (ऋग्वेद १.५०.१२)

ॐ नवग्रह मंडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, घृतस्नानांते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

मधु (शहद)—ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥
ॐ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता॥
ॐ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ (ऋग्वेद १.९०.६-७-८)

ॐ नवग्रहमंडलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, मधु स्नानं समर्पयामि।

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(ऋग्वेद १.११४.१)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, मधु स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शर्करा (शक्कर)—ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिन्द्राय सुहवीतु नाम्ने।
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमाँ अदाभ्यः॥ (ऋग्वेद ९.८५.६)

ॐ नवग्रह मंडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि।

ॐ आकृष्णेन रजसावर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेनाऽदेवो याति भुवनानि पश्यन्॥

(ऋग्वेद १.३५.२)

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वं हसः॥ (ऋग्वेद १०.९७.१५)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, फलस्नानं समर्पयामि।

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥
यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥
तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ (ऋग्वेद १०.९.१-२-३)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, फल स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेनाऽऽदेवो याति भुवनानि पश्यन्॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥ (ऋग्वेद १.९१.१६)

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति॥ (ऋग्वेद ८.४४.१६)

ॐ उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिंध्वं बहवः सनीळाः।

दधिक्रामग्निमुषसं च देवीमिंद्रावतोऽवसे निह्वये वः॥ (ऋग्वेद १०.१०१.१)

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।

यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ (ऋग्वेद २.२३.१५)

ॐ शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि।

विश्वा हि माया अवसि स्वधावो भद्रा ते पूषन्निहरातिरस्तु॥ (ऋग्वेद ६.५८.१)

ॐ शमग्निरग्निभिः करच्छंनस्तपतु सूर्यः। शं वातो वात्वरपा अपस्त्रिधः॥ (ऋग्वेद ८.१८.९)

ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कयाशचिष्ठया वृता॥ (ऋग्वेद ४.३१.१)

ॐ केतु कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुष द्भिरजायथाः॥ (ऋग्वेद १.६.३)

ॐ तच्छंय्योरावृणीमहे गातुं यज्ञाय गातुं यज्ञ पतये। दैवी स्वस्तिरस्तु नः। स्वस्तिमानुषेभ्यः।

ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम् शंनो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ (ऋग्वेद १०.९०.६)

ॐ आदित्यवर्णो तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तवं वृक्षोऽथ बिल्वः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, शुद्धोदकस्नानं सपर्मयामि। शुद्धोदक स्नान मंत्रों के तीन प्रकार प्रचलित है।

प्रथम क्रम में—९ ग्रह- ९ अधिदेवता-९ प्रत्यधिदेवता ६ कर्म साद्गुण्य देवता, ८ क्रतु संरक्षक देवता कुल मिलाकर ४१ देवताओं का मंत्र पठन करके शुद्धोदक स्नान करना चाहिये। सभी मंत्र आवाहन में है। नवग्रह यागादियों में इसका प्रयोग होता है। जहाँ कलश पूजन के लिए ही एक पण्डित नियुक्त हो वहाँ भी इसे कर सकते हैं।

द्वितीय क्रम में—९ ग्रह+९ अधिदेवता+९ प्रत्यधिदेवता कुलमिलाकर २७ देवताओं का मंत्र पठन करके शुद्धोदक स्नान कराना चाहिये।

तृतीय क्रम में—९ ग्रहों का मंत्र पठन करके शुद्धोदक स्नान कराना चाहिये।

वस्त्रम्— **ॐ युवं वस्त्राणि पीवसावसाथे युवोरच्छिद्रा मन्तवो हसर्गाः।**
अवातिरतमनृतानि विश्वऋतेन मित्रा वरुणा सचेथे। *(ऋग्वेद १.१५२.१)*
ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥ *(ऋग्वेद १०.९०.७)*
ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्—**ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापते र्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥**
ॐ तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशून्स्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान् ग्राम्याश्च ये॥ *(ऋग्वेद १०.९०.८)*
ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वा निर्णुद मे गृहात्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि, आचमनं समर्पयामि।

आभरणम्—ॐ हिरण्यरूपः स हिरण्य सन्दृगुपान्नपात् सेदुहिरण्यवर्णाः। हिरण्ययात् परियोनेर्निषद्या हिरण्यदा ददत्यन्नमस्मै॥

(ऋग्वेद २.३५.१०)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, आभरणं समर्पयामि।

गन्धम्—ॐ तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतऋचः सामानि जज्ञिरे। छंदांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत॥ (ऋग्वेद १०.९०.९)

ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, गन्धं समर्पयामि।

अक्षतम्—ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उतपुरन्न धृष्णवर्चत॥ (ऋग्वेद ८.६९.८)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि—ॐ आयने ते परायणे दर्वारोहन्तु पुष्पिणीः। हृदाश्च पुण्डरीकाणि समुद्रस्य गृहा इमे॥ (ऋग्वेद १०.१४२.८)

ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावोहजज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजा वयः॥ (ऋग्वेद १०.९०.१०)

ॐ मनसः कामनाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ (ऋग्वेद - पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नाम पूजा

ॐसहस्रकिरणाय नमः। ॐसूर्याय नमः। ॐतपनाय नमः। ॐसवित्रे नमः। ॐरवये नमः। ॐविकर्तनाय नमः। ॐजगच्चक्षुषे नमः। ॐद्युमणाये नमः। ॐतिग्मदीधितये नमः। ॐत्रयीमूर्तये नमः। ॐद्वादशात्मने नमः। ॐब्रह्माविष्णुशिवात्मकाय नमः। ॐआदित्याय नमः। ॐअग्नये नमः। ॐरुद्राय नमः। ॐचन्द्रमसे नमः। ॐअद्भ्यो नमः। ॐगौर्यै नमः। ॐअङ्गारकाय नमः। ॐभूम्यै नमः। ॐस्कन्दाय नमः। ॐबुधाय नमः। ॐविष्णवे नमः। ॐपुरुषाय नमः। ॐबृहस्पतये नमः। ॐइंद्राय नमः। ॐब्रह्मणो नमः। ॐशुक्राय नमः। ॐइंद्राणयै नमः। ॐइंद्राय नमः। ॐशनैश्चराय नमः। ॐप्रजापतये नमः। ॐयमाय नमः। ॐराहवे नमः। ॐसर्पेभ्यो नमः। ॐमृत्यवे नमः। ॐकेतवे नमः। ॐब्रह्मणो नमः। ॐचित्रगुप्ताय नमः। ॐविनायकाय नमः। ॐदुर्गायै नमः। ॐक्षेत्रपालाय नमः। ॐवायवे नमः। ॐआकाशाय नमः। ॐअश्विभ्यां नमः। ॐइन्द्राय नमः। ॐअग्नये नमः। ॐयमाय नमः। ॐनिर्ऋतये नमः। ॐवरुणाय नमः। ॐवायवे नमः। ॐसोमाय नमः। ॐईशानाय नमः। ॐनवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, नाम पूजां समर्पयामि।

धूपः— **वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥**
ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते॥ *(ऋग्वेद १०.९०.११)*
ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ *(ऋग्वेद - पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐनवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, धूपं आघ्रापयामि।

दीपं— **साज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्यतिमिरापह॥**
ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१२)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ आपः स्त्रजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत व सं मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ *(ऋग्वेद - पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि। धूपदीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यं—नैवेद्य रखने के स्थल पर मण्डल बनायें (चतुरस्त्र) नैवेद्य को मण्डल पर रखने के बाद मंत्र पढ़ें। विश्वामित्र ऋषिः देवी गायत्री छन्दः, सविता देवता निवेदने विनियोगः। एक बार नैवेद्य पर गायत्री मंत्र से प्रोक्षण करें। सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि इस मंत्र से दिन में एवं **ऋतं त्वा सत्येन परिषिञ्चामि**। इस मंत्र से रात्रि में परिषिञ्चन करें।

यथा संभव नैवेद्यं निरीक्षस्व कहकर प्रार्थना कर **अमृतोपस्तरणमसि** मन्त्र से जल छोड़ें। बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछड़े को घास खिलाते हैं) एवं दाहिने हाथ से निम्न मुद्राओं से देवताओं को नैवेद्य अर्पण करें। मन में कल्पना करें कि भगवान को खिला रहे हैं। प्राणाय स्वाहा। अपानाय स्वाहा। व्यानाय स्वाहा। उदानाय स्वाहा। समानाय स्वाहा। ॐ घृणिः सूर्य आदित्यः-इस मूल मंत्र को आठ बार जप करें।

ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वदुरिन्द्राय सुहवीतु नाम्ने।
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमाँ अदाभ्यः॥ *(ऋग्वेद ९.८५.६)*
ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१३)*
ॐ आद्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ *(ऋग्वेद - पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

यथा सम्भवं नैवेद्यं निवेदयामि। अमृतापिधानमसि। कहकर उत्तरापोशण जल दें। उत्तरापोशनार्थं जलं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गण्डूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूलम्—पूगीफलसमायुक्तं नागवल्ल्यादलैर्युतम्। चूर्णा कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देवताभ्यो नमः, क्रमुक ताम्बूलं समर्पयामि। ताम्बूल के पश्चात् नीराजन करें।

ॐ अर्चंत प्रार्चंत प्रियमेधासो अर्चंत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न घृष्णवर्चत॥ (ऋग्वेद ८.६९.८)
ॐ श्रिये जातः श्रिय आनिरियाय श्रियं वयो जरितृभ्यो दधाति।
श्रियं वसाना अमृतत्वमायन् भवन्ति सत्या समिथा मितद्रौ॥ (ऋग्वेद ९.९४.४)
ॐ ध्रुवाद्यौ ध्रुवापृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्॥
ॐ ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ (ऋग्वेद १०.१७३.४-५)

ॐ नवग्रह मडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, मङ्गल नीराजनं दर्शयामि।

मन्त्र पुष्पः—ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेनाऽऽदेवो याति भुवनानि पश्यन्॥ (ऋग्वेद १.३५.२)
ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥ (ऋग्वेद १.९१.१६)
ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति। (ऋग्वेद ८.४४.१६)
ॐ उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिंध्वं बहवः सनीळाः।
दधिक्रामग्निमुषसं च देवीमिन्द्रावतोऽवसे निह्वये वः॥ (ऋग्वेद १०.१०१.१)
ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहिचित्रम्॥ (ऋग्वेद २.२३.१५)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ शुक्रं तें अन्यद्यजतं तें अन्यद्विषुरूपे अहनीद्यौरिवासि।
विश्वा हि माया अवसि स्वधावो भद्रा तें पूषन्निह रातिरस्तु॥ (ऋग्वेद ६.५८.१)
ॐ शमग्निरग्निभिः करच्छनंस्तपतु सूर्यः। शं वातो वात्वरपा अपस्त्रिधः॥ (ऋग्वेद ८.१५.६)
ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ (ऋग्वेद ४.३१.१)
ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥ (ऋग्वेद १.६.३)

ॐनवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा नमस्कारः—यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे॥

ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम्॥ (ऋग्वेद १०.९०.१५)
ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।

(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐनवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, प्रदक्षिणा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्यः—ॐप्रभाकराय विद्महे दिवाकराय धीमहि। तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्॥ ॐअत्रिपुत्राय विद्महे अमृतोद्भवाय धीमहि। तन्नः सोमः प्रचोदयात्॥ ॐभूमिपुत्राय विद्महे भारद्वाजाय धीमहि। तन्नः कुजः प्रचोदयात्॥ ॐतारापुत्राय विद्महे सोमपुत्राय धीमहि। तन्नो बुधः प्रचोदयात्॥ ॐदेवाचार्याय विद्महे वाचस्पतये धीमहि। तन्नो गुरुः प्रचोदयात्॥ ॐदैत्याचार्याय विद्महे विद्यारूपाय धीमहि। तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्॥ ॐसूर्यपुत्राय विद्महे शनैश्चराय धीमहि। तन्नो मंदः प्रचोदयात्॥ ॐसैंहिकेयाय विद्महे तमोमयाय धीमहि। तन्नो राहुः प्रचोदयात्॥ ॐब्रह्मपुत्राय विद्महे विकृतास्याय धीमहि। तन्नः केतुः प्रचोदयात्॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐनवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, प्रसन्नार्घ्यं समर्पयामि।

सर्वोपचार पूजनम्—ॐछत्रं समर्पयामि। चामरेण वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। आन्दोळिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्त राजोपचार देवोपचारपूजां समर्पयामि।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

(ऋग्वेद १०.९०.१६)

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥ *(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐनवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारपूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— **ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणकारकः। विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु ते रविः॥**
रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः। विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु ते विधुः॥
भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत्सदा। वृष्टिकृद्वृष्टिहर्ता च पीडां हरतु ते कुजः॥
उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः। सूर्य प्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु ते बुधः॥
देवमन्त्री विशालाक्षः सदालोकहितेरतः। अनेक शिष्य संपूर्णाः पीडां हरतु ते गुरुः॥
दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः। प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीडां हरतु ते भृगुः॥
सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः। मंदचारः प्रसन्नात्म पीडां हरतु ते शनिः॥
महाशिरा महावक्त्रौ दीर्घदंष्ट्रो महाबलः। अतनुश्चोर्ध्व केशश्च पीडां हरतु ते तमः॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनेक रूपवर्णैश्च शतशोथ सहस्त्रशः। उत्पातरूपो जगतः पीडां हरतु ते शिखी॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

आरोग्यं पद्मबन्धुर्वितरतु विपुलां संपदं शीतरश्मिः, भूलाभं भूमिपुत्रः सकलगुणयुतां वाग्विभूतिं च सौम्यः। सौभाग्यं देवमन्त्री रिपुभयशमनं भार्गवः शौर्यमार्किः, दीर्घायुस्सैंहिकेयो विपुलतरयशः केतुराचन्द्रतारम्॥ शान्तिरस्तु। शिवं ते अस्तु। ग्रहाः कुर्वन्तु मङ्गलम्। अरिष्टानि प्रणाश्यन्तु। दुरितानि भयानि च। ॐनवग्रहमण्डलस्थ देवताभ्यो नमः, प्रार्थनां समर्पयामि। अनेन कृत पूजनेन आदित्यादि नवग्रहदेवताः प्रीयन्ताम्॥

यहाँ पर नवग्रह पूजन समाप्त हुआ। मण्डप में कलशों का पूजन भी संपूर्ण हुआ।

षष्ठ दिन द्वितीय प्रहर

देह शुद्धि—येभ्यो मातेत्यस्य गयःप्लात ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। जगतीछन्दः। एवापित्रेत्यस्य वामदेव ऋषिः। बृहस्पतिर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। मनुष्य गन्ध निवारणे विनियोगः।

ॐ येभ्यो मातामधुमत् पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः।

उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनुमदास्वस्तये॥ *(ऋक्वेद १०.६३.३)*

ॐ एवापित्रे विश्वदेवाय वृष्णे यज्ञैर्विधेम नमसा हविर्भिः।

बृहस्पते सुप्रजा वीरवन्तो वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥ *(ऋक्वेद ४.५०.६)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आचमन मन्त्र—ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।)

अथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुराणेभ्यो नमः। अग्नये नमः। वायवे नमः। प्राणाय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै नमः। अन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारणम्—पवित्रन्त इत्यनयोः आङ्गीरसः पवित्र ऋषिः। पवमानः सोमो देवता। जगतीछन्दः। पवित्राभिमंत्रणे, धारणे विनियोगः।

ॐ पवित्रंन्ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः।
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुतेशृता सइद्वहन्तस्तत् समाशत॥ *(ऋग्वेद ९.८३.१)*
ॐ तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदे शोचन्तो अस्य तन्तवो व्यस्थिरन्।
अवन्त्यस्य पवीतारं माशवो दिवस्पृष्ठमधितिष्ठन्ति चेतसा॥ *(ऋग्वेद ९.८३.२)*

ॐ भूर्भुवः स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये आसन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।)

प्राणायाम—प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्राणायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्वरोम्। *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

(रेखङ्कित मन्त्र को तीन बार कुम्भक में जप करना चाहिये।)

आसन शुद्धि—**ॐ स्योना पृथिवि भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथः।'** *(१५ मन्त्र-२२ सूक्त-प्रथम मण्डल)* इस मन्त्र से जल प्रोक्षण करने से भूमि शुद्ध होती है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शिखाबन्धनम्—

ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणित भक्षणे। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुण्डे ह्यपराजिते॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

(इस मन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

महा संकल्प —.....

गुरू प्रार्थना —

नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः॥ *(श्रृङ्गेरी मठीय आचार्य प्रार्थनम्)*

श्री गुरु परमगुरु परमेष्ठी गुरु सद्गुरु पादुकाभ्यो नमो नमः।

हवन कुण्ड में

स्थंडिल शुद्धिः—तद् गोमयेन प्रदक्षिणामुपलिप्य दक्षिणे उदीच्यां द्वे, प्रतीच्यां चतुः, प्राच्यामर्धं इत्यंगुलानित्यक्त्वा दक्षिणोपक्रमां उदक्संस्थां प्रादेशमात्रां एकां लेखां तस्या दक्षिणोत्तरयोः प्रागायते पूर्वरेखया असंसृष्टे प्रादेशसंमिते द्वे लेखे लिखित्वा तयोर्मध्ये परस्परं असंसृष्टाः उदक्संस्थाः प्रागायताः प्रादेश संमिताः तिस्त्रः इति षड्लेखाः यज्ञीय शकलमूलेन दक्षिण हस्तेन उल्लिख्य लेखासु तच्छकलं उदगग्रं निधाय स्तंडिलं अद्भिः अभ्युक्ष्य शकलं भंक्त्वा आग्नेय्यां निरस्य पाणिं प्रक्षाल्य वाग्यतः भवेत्।

स्थण्डिल को पहले गोमय से लेपना चाहिये। स्थण्डिल (वेदी) में दक्षिण में आठ अंगुल, उत्तर में दो अंगुल, पश्चिम में चार अंगुल, पूर्व में आधा अंगुल

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

छोड़कर दक्षिण से प्रारम्भकर उत्तर में समाप्त हो ऐसे १२ अंगुल चौक बनाना चाहिये। फिर बीच में दक्षिण से उत्तर एक रेखा खींचना चाहिये। १२ अंगुल फिर दक्षिण से प्रारम्भ कर एक दक्षिण में एवं एक उत्तर में दो रेखायें पश्चिम से पूर्व की ओर खीचें १२ अंगुल बी फिर दक्षिण से प्रारम्भकर दक्षिण में समाप्त होने वाले पश्चिम से पूर्व में समाप्त होने वाले तीन रेखायें। (१२ अंगुल) खीचें। (प्रादेश प्रमाण-लगभग १२ अंगुल) (ब) इसे यज्ञ में प्रयुक्त अश्वत्थादि समित् के अग्रभाग से इन लकीरों को खीचना चाहिये। दाहिने हाथ से लिखें। (रेत पर) खीचने वाले समित् को उसके ऊपर उत्तर उत्तराभिमुख रखें। फिर स्थण्डिल (stage) को जल से अभ्युक्षण करना चाहिये। (अभ्युक्षण मतलब मुष्टि में जल लेकर सिञ्चन करना चाहिये।) फिर उस समित् को (लकीर खीचें) तोडकर आग्नेय दिशा में फेंककर हाथ धो लेना चाहिये।

अग्नि प्रतिष्ठा—यहाँ तक होम वेदी निर्माण विधि, होम वेदी पर देवताओं का आवाहन पूजन संपन्न हुआ। आगे अग्नि प्रतिष्ठा विधान वर्णित है। ततः तैजसेन असंभवे मृन्मयेन वा पात्रयुग्मेन संपुटीकृत्य सुवासिन्या श्रोत्रियागारात् स्वगृहाद्वा समृद्धं निर्धूमं अग्निं आहृतं स्थंडिलात् आग्नेय्यां निधाय। उसके बाद लोहपात्र में (संभव हो तो ताम्र पात्र में) यदि न हो तो मिट्टी के पात्र में श्रोतियों के घर से या अपने घर से लाकर, धुऐं रहित अंगारों को पात्र में रखकर दूसरे पात्र से ढक्कर लाना चाहिये। लाए हुए अग्निपात्र को स्थण्डिल होमवेदी के आग्नेय दिशा में रखना चाहिये।

एह्यग्नेराहूगणोगोतमोग्निस्त्रिष्टुप् अग्न्याह्वाने विनियोगः। एह्यग्न इहहोता निषीदादब्धः सुपुर एताभवानः॥
अवतांत्वारोदसीविश्वमिन्वेयजामहे सौमनसायं देवान्। *(ऋग्वेद १.७६.२)*

जुष्टोदमूना आत्रेयोवसुश्रुतोग्निस्त्रिष्टुप् अग्निनमस्कारे विनियोगः॥

ॐ जुष्टोदमूनाअतिथिर्दुरोण इमं नो यज्ञमुपयाहि विद्वान्। विश्वाअग्ने अभियुजो विहत्या शत्रूयतामाभराभोजनानि॥

(ऋग्वेद ५.४.५)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पहले मन्त्र से अग्नि देव को आह्वन करें। एवं दूसरे मंत्र से नमस्कार करें। **आच्छादनं दूरीकृत्य** फिर ऊपर ढके पात्र को निकालें।

समस्तव्याहृतीनां परमेष्ठीप्रजापतिः प्रजापतिर्बृहती। अग्निप्रतिष्ठापने विनियोगः।

ॐ भूर्भुवः स्वः। इति आत्माभिमुख पाणिभ्यां षट्सुलेखासु अमुक नामानमग्निं प्रतिष्ठापयामि इति अग्निं प्रतिष्ठाप्य। ऊपर के मन्त्र कहकर अग्नियुक्त पात्र को अपने सामने हाथों में पकडकर एक बार पदक्षिणा कर जो ६ रेखायें है, उन पर कर्माङ्ग देवता नामक अग्नि को प्रतिष्ठापित कर रहा हूँ कहकर रखना चाहिये। रखते समय हाथ कर्तरी शकल में होना चाहिये। कैची जैसे (cross) अग्न्याहरण पात्रयोः अक्षतैः सह उदकमासिच्य इन्धनंप्रोक्ष्य वेणु धमन्या प्रबोधयेत्। अग्नि लायें दोनों पात्रों में अक्षत डालकर जल सींचकर उसे बाहर कर देवें। फिर लकडियों को जल से प्रोक्षण कर बॉस की या लोहे की धमनी फूकनी से फूंककर अग्नि को प्रज्वलित करें। अग्निनाग्निः काण्वोमेधातिथिः अग्निर्गायत्री अग्नि समिन्धने विनियोगः।

ॐ अग्निनाग्निः समिध्यते कविर्गृहपतिर्युवा। हव्यवाड्जुह्वास्यः।

विज्ज्योतिषेति जानो वृषोग्निस्त्रिष्टुप् अग्नि ज्वलने विनियोगः।

ॐ विज्ज्योतिषा बृहता भात्यग्निराविर्विश्वानि कृणुते महित्वा।
प्रादेवीर्मायाः सहते दुरेवाः शिशीते शृंगेरक्षसे विनिक्षे। *(ऋग्वेद ५.२.६)*

इन मन्त्र से अग्नि ज्वलन करना चाहिये।

अग्निमूर्तिध्यान—चत्वारिश्रृंगागोतमो वामदेवोग्निस्त्रिष्ठप्। अग्निमूर्ति ध्याने विनियोगः।

ॐ चत्वारि शृंगात्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्तासो अस्य। त्रिधाबद्धो वृषभोरोरवीति महोदेवो मर्त्याँआविवेश॥
सप्तहस्तश्चतुः शृंगः सप्तजिह्वो द्विशीर्षकः। त्रिपात्प्रसन्नवदनः सुखासीनः सुचिस्मितः॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्वाहांतुदक्षिणोपार्श्वे देवीं वामेस्वधां तथा। बिभ्रद्दक्षिणा हस्तैस्तु शक्तिमन्नंस्त्रुचं स्त्रुवं॥
तोमरंव्यजनंवामैर्घृतपात्रं च धारयन्। मेषारूढो जटाबद्धो गौरवर्णो महौजसः।
धूम्रध्वजो लोहिताक्षः सप्तार्चिः सर्वकामदः॥ आत्माभिमुख मासीन एवं रूपो हुताशनः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-अग्निमुख प्रकरण)*

इन मन्त्रों को पढकर ध्यान करें। अग्ने अच्छावदेत्यस्य मन्त्रस्य अग्निस्तापसोग्निरनुष्टुप् अग्नि स्वाभिमुखीकरणो विनियोगः।

ॐ अग्ने अच्छा॑वदे॒हनः॑ प्र॒त्यङ्ग॑नः॑ सु॒मना॑ भव। प्रनो॑यच्छ विशस्पते धन॒दा अ॑सि न॒स्त्वम्॥ *(ऋग्वेद १०.१४१.१)*
ॐ एष हि दे॒वः प्र॒दिशो नु॒ सर्वा॒ः पूर्वो॑ हि जा॒तस्य॒ उ॒ गर्भे॑ अ॒ंतः।
स वि॒जाय॑मानस्य जनि॒ष्यमा॑णाः प्र॒त्यङ्मुखा॑स्तिष्ठति वि॒श्वतो॑मुखः॥ *(यजुर्वेद-आरण्यक-महानारायणोपनिषत्)*

हे अग्ने शाण्डिल्यगोत्र मेषारूढ वैश्वानर प्राङ्मुखः सन् ममाभिमुखो वरदस्सुप्रसन्नो भव। इतना कहकर ध्यसान से सम्मुख करके अन्वाधान करें।

अन्वाधान—अन्वाधानाभिधं कर्म क्रियते सर्वकर्मसु। निमन्त्रणार्थं देवानां होतव्यानां च होतृभिः॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

सभी कर्मों में अन्वाधान कर्म करना चाहिये। ऋत्विज अपने यज्ञ में जिन-जिन देवताओं को आहुतियाँ देते हैं उन्हें पहले बुलाकर सूचित करना चाहिये। यह क्रिया अन्वाधान कहलाता है। **आचम्य प्राणानायम्य देशकालौस्मृत्वा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थ एतत् कर्म करिष्ये।** आचमन कर (यदि बीच में उठ के बार गये हो तो), प्राणायाम करके देशकालसंकीर्तन पूर्वक संकल्प लें। **तत्र देवता परिग्रहार्थं अन्वाधानं करिष्ये।** समित् द्वयं आदाय। (दो समितों को हाथ में लेकर) अस्मिन् अन्वाहितेग्नौ जातवेदसमग्निं इध्मेन प्रजापतिं प्रजापतिं चाघारदेवते आज्येन अग्नीषोमौचक्षुषी आज्येन। इन अग्नियों में जातवेदाग्नि को समित् से, आधार देवता प्रजापति एवं प्रजापति को घी से, चक्षुष् अग्नि सोम को घी से होम करना चाहिये। यह पूर्वाङ्ग है। सभी यज्ञों में इतना अन्वाधान होता है। आगे यज्ञों के अनुसार बदलता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जैसे सर्वाद्भुत शान्ति याग—अग्निं वायुं सूर्य प्रजापतिं च आज्यद्रव्येण प्रधान देवतां आदित्यं अधिदेवतामग्निं प्रत्यधिदेवतां रुद्रं अर्क समित् चर्वाज्य द्रव्यैः प्रधान देवतां सोमं अधिदेवतां अपः प्रत्यधिदेवतां गोरीं, पलाशसमित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां अंगारकं अधिदेवतां भूमिं, प्रत्यधिदेवतां स्कन्दं खदिरसमित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां बुधं, अधिदेवतां विष्णुं प्रत्यधिदेवतां पुरुषं अपामार्ग समित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां बृहस्पितिं, अधिदेवतां इन्द्रं, प्रत्यधिदेवतां, ब्रह्माणं पिप्पल समित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां शुक्रं, अधिदेवतां इन्द्राणीं प्रत्यधिदेवतां इन्द्रं, औदुम्बर समित् चर्वाज्यद्रव्यैः प्रधानदेवतां शनिं अधिदेवतां प्रजापतिं प्रत्यधिदेवतां यमं, शमीसमित् चर्वाज्यद्रव्यैः, प्रधान देवतां राहुं अधिदेवतां सर्पान् प्रत्यधिदेवतां मृत्युं, दूर्वा समित् चर्वाज्य द्रव्यैः, प्रधान देवतां केतुं, अधिदेवतां ब्रह्माणं प्रत्यधिदेवतां चित्रगुप्तं कुशसमित् चर्वाज्य द्रव्यैः प्रधान देवताः अष्टाविंशति संख्यया अधिदेवताः प्रत्यधिदेवताः दशांशसंख्यया विनायकं दुर्गां क्षेत्रपालं वायुं आकाशं अश्विनौ क्रतु साद्गुण्य देवताः प्रधान विंशांश संख्यया इन्द्रं अग्निं यमं निर्ऋतिं वरुणं वायुं कुबेरं ईशानं एताः क्रतुसंरक्षणदेवताः प्रागुक्त समित् चर्वाज्यद्रव्यैः प्रधान विंशांश संख्याया अग्निं वायुं सूर्यं प्रजापतिं च आज्यद्रव्येण, सर्वाद्भुत शान्ति होमे प्रधान देवतां सूर्यं अष्टोत्तर शतसंख्यया चरु द्रव्येण, सूर्यं रुद्राधिपतिं रविकिरणां ईश्वरं सर्वोत्पातशमनं अग्निं पृथिवीं महान्तं वायुमन्तरिक्षं महान्तं आदित्यं दिवं महान्तं प्रजापतिं चन्द्रमसं नक्षत्राणि दिशो महान्तं च एताः देवताः आज्य द्रव्येण एकैक संख्यया चरु शेषेणास्विष्टकृतमग्निं इध्मसन्नहनेन रुद्रं अयासमग्निं देवान् विष्णुं अग्निं, वायुं सूर्यं प्रजापतिं च एताः प्रायश्चित्त देवता आज्येन ज्ञाताज्ञात दोष निबर्हणार्थं त्रिवारमग्निं मरुतश्चाज्येन विश्वान् देवान् संस्रावेण एताः अङ्गदेवताः प्रधानदेवताः सर्वाः सन्निहिताः सन्तु एवं सांगोपाङ्गेन कर्मणा सद्यो यक्ष्ये।

॥ सर्वाद्भुत शान्ति याग का अन्वाधान समाप्त ॥

परिसमूहन एवं पर्युक्षण—उपरोक्त क्रम से परिसमूहन पर परिस्तरण डालना चाहिये। वह इस प्रकार है। *अग्न्यायतनाद् अष्टांगुल परिमिते* देशे ऐशानीं दिशं आरभ्य प्रदक्षिणं संमतात् सोदकेन पाणिना त्रिः परिमृज्य दशांगुलमिते देशे प्राच्यादिषु पूर्वं उपरिनिहितदर्भैः परिस्तृणीयात्।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्थण्डिले होम वेदी के आठ अंगुल बाहर ईशान्य दिशा से प्रारम्भकर प्रदक्षिणा क्रम से चारों ओर जलयुक्त हाथ से तीन बार परिमार्जन करें। स्थण्डिले होमवेदी के दस अंगुली बाहर पूर्व से प्रारम्भकर सभी दिशाओं में कुशों को बिछाना चाहिये।

तत्र प्राच्यां प्रतीच्यां च उदगग्रादर्भाः अवाच्यामुदीच्यां च प्रागग्राः पूर्वपश्चिमपरिस्तरणामूलयोरुपरि दक्षिणपरिस्तरणं उत्तरपरिस्तरणंतु तदग्रयोरधस्तात्। पूर्व एवं पश्चिम दिशा में कुशाग्र (कुश का आगे का भाग) उत्तराभिमुख हो, दक्षिण एवं उत्तर दिशा में कुशाग्र पूर्वाभिमुख होना चाहिये। पूर्व एवं पश्चिम दिशा की कुशों के (परिस्तरण) ऊपर दक्षिण का परिस्तरण, एवं पूर्व पश्चिम कुशों के परिस्तरण के नीचे उत्तर का परिस्तरण होना चाहिये। परिस्तरण कुशों के लिए कोई निश्चित संख्या नहीं हैं। अधिक उपलब्ध होने पर अधिक विछावे। कम होने पर चार-चार बिछायें। उतना ही न हो तो तीन-तीन बिछायें।

परिस्तृणात्यासनार्थं आशेशानां त्रिभिस्त्रिभिः। कुशैः प्रागादिदिक्ष्वत्र कृत्वा परिसमूहनम्॥ १॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

आशापालांस्तु शक्रादीनासनेषु समावहेत्। दिक्पालकों के आसन के लिए यह परिस्तरण बिछायें जाते हैं। एक-एक दिशा में तीन कुश डालना चाहिये। उन पर इन्द्रादि दिक्पालकों का आवाहन करना चाहिये।

ततो अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनार्थं उत्तरतश्च पात्रासादनार्थं कांश्चित्प्रागग्रान् दर्भानास्तृणीयात्। *(आश्वलायन स्मृति)*

इसके पश्चात् अग्नि के दक्षिण दिशा में ब्रह्मा के आसन के लिए एवं उत्तर में यज्ञपात्रों को रखने के लिए कुछ कुशाओं को पूर्वाभिमुख बिछाना चाहिये। अग्नेरैशानतस्त्रिरंभसापरिषिच्य उत्तरास्तीर्णेषु दर्भेषु दक्षिणसव्यपाणिभ्यां क्रमेण चरु स्थाली प्रोक्षण्यौ, दर्वी स्रुवौ, प्रणीताज्यपात्रे, इध्माबर्हिषी इति द्वे द्वे पात्रे उदगपवर्ग प्राक्संस्थंयुब्जान्या सादयेत्। अग्नि के चारों ओर फिर से तीन बार ईशान्य से प्रदक्षिणाकार में परिषेचन करें।

ब्रह्मा का आवाहन् (अग्निमुखाङ्ग)—ततो यथोक्त लक्षणं ईशानदिग् अवस्थितं ब्राह्मणं अस्मिन् (सर्वाद्भुत शान्ति याग) कर्मणि ब्रह्माणं त्वामहं वृणे इति तत् पाणिं पाणिना गृहीत्वा वृणुयात्। उसके पश्चात् श्रेष्ठ लक्षणों से युक्त ईशान दिशा में उपविष्ट ब्राह्मण को इस याग कर्म में आपको मैं

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ब्रह्मा के रूप में वरण करता हूँ। कहकर हाथ पकडकर वरण करें।

ततः ब्रह्मा वृतोस्मि। कर्म करिष्यामि इति उक्त्वा प्राङ्मुखो तीर्थदेशे यज्ञोपवीत्यचाम्य समस्य पाणयङ्गुष्ठो भूत्वा अग्रेणाग्निं दक्षिणपादपुरः सरं परीत्य दक्षिणतः उदङ्मुखः स्थित्वा आसनार्थ दर्भेषु दक्षिणभागस्थं एकं दर्भं अङ्गुष्टानामिकाभ्यां गृहीत्वा **''निरस्तः परावसुः''** ''इति नैर्ऋत्यान् निरस्य, अपः स्पृष्ट्वा **इदमहम् अर्वावसोः सदने सीदामि''** इति उदङ्मुख एवं वामोरोरुपरि दक्षिणपादं संस्थाप्य उपविश्य यजमानेन गन्धाक्षतादिभिः अर्चितः सन् ''ब्रह्मन् ब्रह्मासि नमस्ते ब्रह्मन् ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणमावाहयामि'' यजमानेन आचार्येण वा आवाहितः।

इसके पश्चात् ब्रह्मा मुझे यह स्वीकार है। कहकर पूर्वाभिमुख बैठकर (उत्तर एवं ईशान्य के बीच में) ब्रह्मवस्त्र (उत्तरीय) डालकर, हाथ जोडकर (संकल्प लेते समय जैसे हाथ बंद करते हैं वैसे) अग्नि के आगे प्रदक्षिणाकार में दाहिने पॉव को आगे कर चलकर दक्षिण में उत्तराभिमुख खड़े होकर, अपने आसन के कुशों में दक्षिण की एक कुश को अङ्गुष्ठ एवं अनामिका अङ्गुलियों से खींचकर निरस्तः परावसुः'' कहकर नैऋत्य दिशा में फेंकना चाहिये। फिर हाथ धोलें। ''इदमहम् अर्वावसोः सदने सीदामि'' मन्त्र कहकर उत्तराभिमुख ही बायें जॉघ पर दाहिने पैर को रखकर बैठना चाहिये। फिर यजमान ''ब्रह्मन् मन्त्र कहकर गन्ध अक्षतों से ब्रह्मा का पूजन करें।

ॐ बृहस्पतिर्ब्रह्मा ब्रह्म सदन आशिष्यते बृहस्पते यज्ञं गोपाय सयज्ञंपाहि सयज्ञपतिं पाहि समांपाहीति जपित्वा सदा यज्ञ मना एव वर्तेत। इसे कहकर ब्रह्म निरन्तर यज्ञ में ही मन लगायें। यहाँ पर ब्रह्मा का वरणादि कार्य संपन्न हुआ।

उत्पवनं नाम शुद्धीकरणम्— शुद्धीकरण क्रिया को उत्पवन कहते हैं। सवितुष्टाहिरण्यस्तूपः सवितापुर उष्णिक्। आज्यस्योत्पवने विनियोगः।

ॐ सवितुष्ट्वाप्रसवउत्पुनाच्छिद्रेण पवित्रेण वसोः सूर्यस्य रश्मिभिः॥ *(यजुर्वेद)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इति मन्त्रेण एकश्रुत्या उच्चारितेन एकवारं द्विस्तूष्णीं उत्तानपाणिद्वय अङ्गुष्ठ उपकनिष्ठिकाभ्यां उंतयोरससृष्ट गृहीताभ्यां उत्तानपाणिद्वय अङ्गुष्ठ उपकनिष्ठिकाभ्यां अंतयोरससृष्ट गृहीताभ्यां उदगग्राभ्यां पवित्राभ्यां प्रागुत्पूय ते पवित्रे अद्भिः प्रोक्ष्य अग्नौ प्रहरेत्। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इस एक स्वरी मन्त्र को कहते हुए एक बार हथेलियों को उपर किये दोनों हाथों के अंगुष्ठ एवं अनामिका अंगुलियों में पवित्र के दो कुशों को अलग-अलग (परस्पर न मिलें) ऐसे पकड़ना चाहिये। उनका अग्रभाग उत्तर की ओर होना चाहिये। पहले उन्हें पश्चिम से पूर्व की ओर घी में जाकर ऊपर उठायें। फिर दो बाद इसी क्रिया को बिना मन्त्र कहते हुए दोहरायें। फिर उन पवित्र कुशों को जल में प्रोक्षण कर अग्नि में डालना चाहिये।

अथाग्नेः पश्चात् परिस्तरणाद् बहिः आत्मनो अग्रतो भूमिं प्रोक्ष्य तत्र बर्हिः सन्नहनीं रज्जुं उदगग्रां प्रसार्य तस्यां बर्हिः प्रागग्रमुदगपवर्ग अविरलं आस्तीर्य तस्मिन् आज्यपात्रं निधाय स्रुवादि संमार्जयेत्।

उसके पश्चात् अग्नि के पश्चिम में परिस्तरण के बाहर अपने आगे भूमि की प्रोक्षण कर वहाँ बर्हिष् को बाँधी-हुई रज्जु (रस्सी) को उत्तराभिमुख खोलकर रखें। उस बर्हिष् को बाँधी-हुई रज्जु रस्सी को उत्तराभिमुख खोलकर रखें। उस बर्हिष को पूर्वाग्र रखते हुए उत्तर की ओर मोटे-बिछाना चाहिये। (बीच में जगह खाली न रहना चाहिये।) फिर उस बर्हिष पर घी का पात्र रखें।

स्रुवादि संस्कार—दक्षिणेन हस्तेन स्रुक् स्रुवो गृहीत्वा सव्येन कांश्चिद्दर्भानादाय सहैवाग्नौ प्रताप्य स्रुचं निधाय स्रुवं वामहस्तेगृहीत्वा दक्षिणहस्तेन स्रुवस्य बिलं दर्भाग्रैः प्रादक्षिण्येन प्रागादि प्रागपवर्गं त्रिः संमृज्य अधस्ताद्दर्भाग्रैः एव अभ्यात्मं बिलपृष्ठं त्रिः संगृज्य ततो दर्भाणां मूलैः दंडस्याधस्ताद् बिलपृष्ठादारभ्य यावदुपरिष्टाद् बिलं तावत्

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्रिः संमृज्य अद्भिः प्रोक्ष्य स्रुव निष्टप्याज्य स्थाल्या उत्तरतः स्रुगसंसृष्टं निधाय उदकं स्पृष्ट्वा तैरेव दर्भैः जुहूं च एव मेव संमृज्यद्युत्तरतोश्रुवाधुन्तरो निधाय दर्भानद्भिः क्षालयित्वा अग्नौ अनु प्रहरेत्। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

पर्युक्षणां-तिर्यग्भूतेनहस्तेनकृतंपर्युक्षणं तथा। *(आश्वलायन स्मृति)*

हाथ को तिरचा करके चारों ओर सींचना पर्युक्षण कहलाता है। अथाग्नेः पश्चात् परिस्तरणाद् बहिः आत्मनो अग्रतो भूमिं प्रोक्ष्य तत्र बर्हिः सन्नहनीं रज्जुं उदगग्रां प्रसार्य तस्यां बर्हिः प्रागग्रमुदगपवर्ग अविरलं आस्तीर्य तस्मिन् आज्यपात्रं निधाय स्रुवादि संमार्जयेत्।

उसके पश्चात् अग्नि के पश्चिम में परिस्तरण के बाहर अपने आगे भूमि की प्रोक्षण कर वहाँ बर्हिष् को बाँधी-हुई रज्जु (रस्सी) को उत्तराभिमुख खोलकर रखें। उस बर्हिष् को बाँधी-हुई रज्जु रस्सी को उत्तराभिमुख खोलकर रखें। उस बर्हिष को पूर्वाग्र रखते हुए उत्तर की ओर मोटे-बिछाना चाहिये। (बीच में जगह खाली न रहना चाहिये।) फिर उस बर्हिष पर घी का पात्र रखें।

चरु शुद्धि—ततः सुश्रृतं स्रुव गृहीतेनाज्येन अभिघार्य उदगुद्वास्य अगन्याज्ययोर्मध्येन नीत्वा आज्यात् दक्षिणातो बर्हिषि सोत्तरमासाद्य पुनरप्यभिधार्य नवाभिधार्य (परिधीन् ऊर्ध्व समिधौ अग्नौ निधाय।) पक्व चरु पात्र में स्थित चरु को घी से अभिघार्य (सिञ्चन) करके उत्तर में रखना चाहिये। अग्नि एवं घी पात्र के बीच में इसे लाना चाहिये। आज्यपात्र के दक्षिण में बर्हिष् पर इसे रखकर घी से अभिघार करना चाहिये। न करने पर भी कोई बाधा नहीं है।

अग्नि उपस्थानम्—विश्वानि न इति तिसृणां आत्रेयो वसुश्रुतोग्निस्त्रिष्टुप् द्वयोरर्चने अन्त्याया उपस्थाने विनियोगः।

ॐ विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदः। पूर्व में पूजन करें। ॐ सिंधुननावादुरितातिपर्षि॥ आग्नेय में पूजन करें

ॐ अग्ने अत्रिवन्नमसागृणानः॥ दक्षिण में पूजन करें। ॐ अस्माकं बोध्यवितातनूनां॥ नैर्ऋत्य में पूजन करें। *(ऋग्वेद ५.४.६)*

ॐ यस्त्वाहृदाकीरिणामन्यमानः॥ पश्चिम में पूजन करें। ॐ अमर्त्य मर्त्यो जोहवीमि॥ वायव्य में पूजन करें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ जातवेदो यशो अस्मासु धेहि॥ उत्तर में पूजन करें। ॐ प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमश्यां॥ ईशान में पूजन करें। *(ऋग्वेद ५.४.१०)*

ॐ यस्मै त्वं सुकृते जातवेदउलोकमग्ने कृणवः स्योनं। अश्विनं स पुत्रिणं वीरवन्तं गोमन्तं रयिं नशते स्वस्ति॥ *(ऋग्वेद ५.४.११)*

यह मन्त्र कहकर उपस्थान (प्रार्थना) करें। **ॐ अग्नये नमः। ॐ जानवेदसे नमः, ॐ हुताशनाय नमः।** इन मन्त्रों से अग्नि का पूजन करें। **ॐ आत्मने नमः, ॐ अन्तरात्मने नमः, ॐ परमात्मने नमः।** इन मन्त्रों से आत्मा का पूजन करें। हाथ धो लें। **ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ वसिष्ठाय नमः। ॐ त्रयीवद्यात्मने नमः।** इन मन्त्रों से ब्रह्मा का पूजन करें।

इध्म बन्धन रज्जुं इध्म स्थाने निधाय पाणिना इध्ममादाय मूलमध्याग्रेषु स्रुवेण त्रिरभिधार्य मूल मध्ययो र्मध्यभागे गृहीत्वा। सरज्जुं अनुयाजं प्रणीतायां प्रतिष्ठाप्य इध्म को हाथ में लेवें। उसके रज्जु (रस्सी) को खोलें। रज्जू को अनुयाज समित् के साथ प्रणीता पात्र पर रखना चाहिये। हाथ में लिए इध्यम को मूल, मध्य एवं अग्र में स्रुव से तीन बार घी से अभिधार्य (सिञ्चचन) करके, मूल एवं मध्य के बीच में पकड़कर (दाहिने हाथ में)—

अयं ते वामदेवो जातवेदा अग्निस्त्रिष्टुप् इश्म हवने विनियोगः। ॐ अयं तइध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्वचेद्धवर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधयस्वाहा॥ जातवेदसेग्नये इदं न मम। इन मन्त्रों को कहकर इध्यम को अग्नि में डाल देवें। **इध्म मूलं स्पृष्ट्वा अपः उपस्पृश्य आघारावाघारयेत्।** इध्ममूल को छूकर हाथ धो लें। आघार होम करें।

आघार होम

वायव्य कोणादारभ्य आग्नेय कोण पर्यन्तं प्रजापतये स्वाहा। (मनसा स्मरन्) नैर्ऋत्यकोणादारभ्य ऐशानी कोणपर्यन्तं प्रजापतये स्वाहा। प्रजापतय इदं न मम अग्नेरुत्तरतः अग्नये स्वाहा। अग्नय इदं न मम। दक्षिणतः सोमाय स्वाहा। सोमाय इदं न मम।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

व्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिः प्रजापतिर्बृहती व्याहृतिहोमे विनियोगः। ॐभूः स्वाहा अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा प्रजापतये इदं न मम।

नवग्रह होमः

प्रधान देवता सूर्य होमः—आकृष्णेनेत्यस्य हिरण्यस्तूपः सविता त्रिष्टुप्, प्रधान देवता आदित्य प्रीत्यर्थे अर्कसमित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्य च।
हिरण्ययेन सविता रथेनाऽऽदेवो याति भुवनानि पश्यन् स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.३५.२)*

आदित्यायेदं न मम। २८ बार इस मंत्र से अर्क सहित घी एवं चरु से होम यह संख्या ८ या २८ या १०८ बार कर सकते हैं।

सूर्य अधिदेवता अग्नि होमः—अग्निं दूतमित्यस्य काण्वो मेधातिथिरग्निर्गायत्री आदित्यस्य अधिदेवता अग्निप्रीत्यर्थे अर्कसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् स्वाहा। *(ऋग्वेद १.१२.१)*

ॐआदित्य अधिदेवतायै अग्नये इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें। (३+३+३=९ आहुति)

सूर्य प्रत्यधिदेवता रुद्र होमः—ॐकद्रुद्राय इत्यस्य घोरः काण्वो रुद्रो गायत्री आदित्यस्य प्रत्यधिदेवता रुद्र प्रीत्यर्थे अर्कसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ कद्रुद्राय प्रचेतसे मीळ्हुष्टमाय तव्यसे। वोचेम शंतमं हृदे स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.४३.१)*

आदित्य प्रत्यधिदेवता रुद्राय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें। (३ समित् + ३ घी + ३ चरु की आहुतियां = ९ आहुतियाँ)

प्रार्थना – दिवाकरं दीप्त सहस्त्ररश्मिं तेजोमयं जगतः कर्मसाक्षिम्। अंशुं भानुं सूर्यमादिं ग्रहाणां दिवाकरं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आदित्याय नमः।

प्रधान देवता सोम होमः—आप्यायस्व गौतमः सोमो गायत्री प्रधान देवता चन्द्रप्रीत्यर्थे पलाश समित्, आज्य, चरु होम विनियोगः।

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.९१.१६)*

सोमाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से पलाश सहित घी एवं चरु से होम करें।

सोम अधिदेवता अप होमः—अप्सु मे सिन्धद्वीप आपोगायत्री सोमस्य अधिदेवता अप् प्रीत्यर्थे पलाश समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा। अग्निं च विश्वशंभुवं स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १०.९.६)*

सोमाधिदेवतायै अद्भ्य इदं न मम। इस मन्त्र से तीन बार होम करें।

सोम प्रत्यधिदेवता गौरी होम—गौरीर्मीमायेत्यस्य औचत्यपुत्रो दीर्घतमा उमा जगती। सोमस्य प्रत्यधिदेवता गौरी प्रीत्यर्थे पलाशसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी।
अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन् स्वाहा।

सोम प्रत्यधिदेवता गौर्यै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— यः कालहेतोः क्षयवृद्धिमेति यं देवताः पितरश्चापिबन्ति तं वै वरेण्यं ब्रह्मेन्द्रवन्द्यं चन्द्रं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

चन्द्राय नमः।

प्रधान देवता अङ्गारक होमः—अग्निर्मूर्धा विरूपोङ्गारको गायत्री। प्रधान देवता अङ्गारक प्रीत्यर्थे खदिरसमित आज्य चरु होमे विनियोगः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति स्वाहा। *(ऋग्वेद ८.४४.१६)*

अङ्गारकाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र में खदिर समित्, घी एवं चरु से होम करें।

अङ्गारक अधिदेवता भूमि होमः—स्योना पृथिवीत्यस्य मेधातिथिः पृथिवी गायत्री। अङ्गारकस्य अधिदेवता भूमि प्रीत्यर्थे खदिरसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ स्योना पृथिवि भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथः स्वाहा। *(ऋग्वेद १.२२.१५)*

अङ्गारकाधिदेवतायै भूम्यै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

अङ्गारक प्रत्यधिदेवता स्कन्द होमः—कुमारं माता स्कन्दः स्कन्दस्त्रिष्टुप्। अङ्गारकस्य प्रत्यधिदेवता स्कन्द प्रीत्यर्थे खदिर समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ कुमारं माता युवतिः समुब्धं गुहा बिभर्ति न ददाति पित्रे
अनीकमस्य न मिनज्जनासः पुरः पश्यन्ति निहितमरतौ स्वाहा। *(ऋग्वेद ५.२.१)*

अङ्गारक प्रत्यधिदेवतायै स्कन्दाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— महेश्वरस्याननस्वेदबिन्दोर्भूमौ जातं रक्तमालांबराढ्यं। सुरश्मिणां लोहिताङ्गं कुमारमङ्गारकं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

अङ्गारकाय नमः।

प्रधान देवता बुध होमः—उद्बुध्यध्वं बुधो बुधस्त्रिष्टुप्, प्रधान देवता बुध प्रीत्यर्थे अपामार्ग समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिंध्वं बहवः सनीळा।
दधिक्रमग्निमुषसं च देवीमिन्द्रावतोऽवसे निह्वये वः स्वाहा। *(ऋग्वेद १०.१०१.१)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बुधाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से अपामार्ग समित्, घी एवं चरु से होम करें।

बुध अधिदेवता विष्णु होमः—इदं विष्णुर्मेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री, बुधस्य अधिदेवता विष्णु प्रीत्यर्थे अपामार्ग समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूळहमस्य पांसुरे स्वाहा। *(ऋग्वेद १.२२.१७)*

बुधाधिदेवतायै विष्णवे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

बुध प्रत्यधिदेवता पुरुष होमः—सहस्रशीर्षा नारायणः पुरुषोऽनुष्टुप्, बुध प्रत्यधिदेवता पुरुष प्रीत्यर्थे अपामार्ग समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् स्वाहा। *(ऋग्वेद १०.९०.१)*

बुध प्रत्यधिदेवता पुरुषाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रौ महाद्युतिः। सूर्य प्रियकरो विद्यान् पीडां दहतु मे बुधः॥ ॐ बुधाय नमः।

प्रधान देवता बृहस्पति होमः—बृहस्पते गृत्समदो बृहस्पतिस्त्रिष्टुप्, प्रधान देवता बृहस्पति प्रीत्यर्थे पिप्ल समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् स्वाहा॥ *(ऋग्वेद २.२३.१५)*

बृहस्पतये इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से पिप्ल समित्, घी एवं चरु से होम करें।

बृहस्पति अधिदेवता इन्द्र होमः—इन्द्र श्रेष्ठानि गृत्समद इन्द्रस्त्रिष्टुप्, बृहस्पतेरधिदेवता इन्द्रप्रीत्यर्थे पिप्पल समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे।
पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वादमानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम् स्वाहा। *(ऋग्वेद २.२१.६)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बृहस्पत्यधिदेवतायै इन्द्राय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

बृहस्पति प्रत्यधिदेवता ब्रह्मा होमः—ब्रह्मणाते विश्वामित्रो ब्रह्मा त्रिष्टुप्, बृहस्पति प्रत्यधिदेवता ब्रह्म प्रीत्यर्थे पिप्लसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ ब्रह्मणा ते ब्रह्मयुजा युनज्मि हरी सखाया सधमादा आशू।
स्थिरं रथं सुखमिन्द्राधितिष्ठन् प्रजानन् विद्वाँ उपयाहि सोमम् स्वाहा। (ऋग्वेद ३.३५.४)

बृहस्पति प्रत्यधिदेवतायै ब्रह्मणे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बर होम करें।

प्रार्थना— बुध्यात्मनो यस्य न कश्चिदन्यो मतिं देवा उपजीवंति यस्य। प्रजापते रात्मजं धर्मनिष्ठं गुरुं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ गुरुवे नमः।

प्रधान देवता शुक्र होमः—शुक्रं ते भारद्वाजः शुक्रस्त्रिष्टुप्, प्रधान देवता शुक्र प्रीत्यर्थे औदुम्बर समित्, आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि।
विश्वा हि माया अवसि स्वधावो भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु स्वाहा। (ऋग्वेद ६.५८.१)

शुक्राय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से औदुम्बर समित्, घी एवं चरु से हाम करें।

शुक्र अधिदेवता इन्द्राणी होमः—इन्द्राणी वृषाकपिरिंद्राणी पंक्तिः, शुक्रस्य अधिदेवता इन्द्राणी प्रीत्यर्थे औदुम्बर समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ इंद्राणीमासु नारिषु सुभगामहमश्रवम्। नह्यस्या अपरं चन जरसा मरते पतिर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः स्वाहा।

(ऋग्वेद १०.८६.११)

ॐ शुक्र अधिदेवतायै इन्द्राण्यै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शुक्र प्रत्यधिदेवता इन्द्र होमः—इन्द्रं वो मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री, शुक्रप्रत्यधिदेवता इन्द्र प्रीन्यर्थे औदुम्बर समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ इंद्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.७.१०)*

ॐ शुक्र प्रत्यधिदेवतायै इन्द्राय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— **वर्षप्रदं चिन्तितार्थानुकूलं मौनाद्विशिष्टं सुनयोमपन्नम्। तं भार्गवं योगविशुद्धसत्वं शुक्रं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥**

ॐ शुक्राय नमः।

प्रधान देवता शनैश्चर होमः—शमग्निरित्यस्य इरिंबिठिः शनैश्चर उष्णिक्, प्रधान देवता शनैश्चर प्रीत्यर्थे शमी समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ शमग्निरग्निभिः करच्छंनस्तपतु सूर्यः। शं वातो वात्वरपा अपस्त्रिधः स्वाहा। *(ऋग्वेद ८.१८.६)*

शनैश्चराय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से शमी समित्, घी एवं चरु से होम करें।

शनैश्चर अधिदेवता प्रजापति होमः—प्रजापते हिरण्यगर्भः प्रजापतिस्त्रिष्टुप्, शनैश्चरस्य अधिदेवता प्रजापतिप्रीत्यर्थे शमी समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १०.१२१.१०)*

शनैश्चरस्य अधिदेवता प्रजापतये इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

शनैश्चर प्रत्यधिदेवता यम होमः—यमाय हसोमं यमो यमोनुष्टुप्, शनैश्चरस्य प्रत्यधि देवता यम प्रीत्यर्थे शमीसमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हविः। यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः स्वाहा। *(ऋग्वेद १०.१४.१३)*

शनैश्चर प्रत्यधिदेवतायै यमाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रार्थना— शनैश्चरो राशितो राशिमेति शनैर्भोगो गमनं चेष्टितं च। सूर्यात्मजं क्रोधनं सुप्रसन्नं शनैश्चरं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ शनैश्चराय नमः।

प्रधान देवता राहु होम—कयानो वामदेवो राहुर्गायत्री प्रधान देवता राहु प्रीत्यर्थे दूर्वासमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कयाशचिष्ठया वृता स्वाहा राहवे इदं न मम॥ *(ऋग्वेद ४.३१.१)*

२८ बार इस मंत्र से दूर्वा समित्, घी एवं चरु से होम करें।

राहु अधिदेवता सर्प होमः—आयं गौः सार्पराज्ञीः सर्पा गायत्री। राहु अधिदेवता सर्प प्रीत्यर्थे दूर्वा समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयंत्स्वः स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १०.१८९.१)*

राहु अधिदेवतायै सर्पेभ्यः इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

राहु प्रत्यधिदेवता मृत्यु होमः—परं मृत्युः संकुसिको मृत्युस्त्रिष्टुप्। राहु प्रत्यधिदेवता मृत्यु प्रीत्यर्थे दूर्वा समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ परं मृत्यो अनुपरेहि पंथां यस्ते स्व इतरो देव यानात्।
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजां रीरिषो मोत वीरान् स्वाहा। *(ऋग्वेद १०.१८.१)*

राहु प्रत्यधिदेवतायै मृत्यवे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना— यो विष्णुनैवामृतं भोक्ष्यमाणः छित्वाशिरो ग्रहभावे नियुक्तः। यश्चन्द्रसूर्यौ ग्रसते पर्व काले राहुं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ राहवे नमः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रधान देवता केतु होमः—केतुं कृण्वन्नत्यिस्य मंत्रस्य मधुच्छन्दाः केतुर्गायत्री प्रधान देवता केतु प्रीत्यर्थे कुश समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.६.३)*

केतवे इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से कुश समित्, घी एवं चरु से होम करें।

केतु अधिदेवता ब्रह्म होमः—ब्रह्मजज्ञानमिति नकुलो ब्रह्मा त्रिष्टुप्, केत्वधिदेवता ब्रह्मप्रीत्यर्थे कुश समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः।
स बुध्नियां उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः स्वाहा॥ *(यजुर्वेद-४ काण्ड-२ प्रश्न-८ अनुवाक-४ मन्त्र)*

केतु अधिदेवताब्रह्मणो इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

केतु प्रत्यधिदेवता चित्रगुप्त होम—स चित्र चित्रं भारद्वाजश्चित्रगुप्तस्त्रिष्टुप्। केतु प्रत्यधिदेवता चित्रगुप्तप्रीत्यर्थे कुश समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ स चित्र चित्रं चितयन्तमस्मे चित्रक्षत्र चित्रतमं वयोधाम्।
चन्द्रं रयिं पुरुवीरं बृहंतं चन्द्रचन्द्राभिर्गृणते युवस्व स्वाहा॥ *(ऋग्वेद ६.६.७)*

केतु प्रत्यधिदेवतायै चित्रगुप्ताय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

प्रार्थना—हे ब्रह्मपुत्रा ब्रह्मसमानवक्त्राः ब्रह्मोद्भवाः ब्रह्मसमाः कुमाराः।
ब्रह्मोत्तमा वरदा जामदग्न्याः केतून् सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ केतवे नमः। यहाँ पर नवग्रह होम संपन्न हुआ। आगे छः कर्म साद्गुण्य देवता होम होगा।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कर्म साद्गुण्य देवता होमः

कर्म साद्गुण्य देवता विनायक होमः-१—आतून इत्यस्य काण्वः कुसीदी विनायको गायत्री क्रतु साद्गुण्यदेवता विनायक प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ आतूनं इन्द्रक्षुमन्तं चित्रं ग्राभं सङ्गभाय महाहस्ती दक्षिणोन स्वाहा। *(ऋग्वेद ८.८१.१)*

कर्म सादगुण्यदेवतायै विनायकाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्यदेवता दुर्गा होमः-२—जातवेद से कश्यपो दुर्गा त्रिष्टुप् क्रतुसाद्गुण्यदेवता दुर्गा प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.९९.१)*

क्रतु साद्गुण्य देवतायै दुर्गायै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्यदेवता क्षेत्रपाल होमः-३—क्षेत्रस्य पतिना वामदेवः क्षेत्रपालोनुष्टुप् चरु होमे विनियोगः।

ॐ क्षेत्रस्य पतिना वयं हितेनेवजयामसि। गामश्वं पोषयित्वा सनोमृळातीदृशे स्वाहा। *(ऋग्वेद ४.५७.१)*

क्रतु साद्गुण्य देवतायै क्षेत्रपालाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्य देवता वायु होमः-४—क्रांणाशिशुरित्यस्यत्रियोवायुरुष्णिक् क्रतु साद्गुण्य देवता वायु प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ क्राणाशिशुर्महीनांहिन्वन्नृतस्यदीधितिं। विश्वापरिप्रिया भुवदधद्विता स्वाहा॥ *(ऋग्वेद ९.१०२.१)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्रतु साद्गुण्य देवतायै वायवे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्य देवता आकाश होमः-५—आदित्यप्रत्नस्य वत्स आकाशो गायत्री क्रतु साद्गुण्य देवता आकाश प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ आदित् प्रत्नस्यरेतसो ज्योतिष्पश्यंति वासरं। परोयदिध्यतेदिवा स्वाहा॥ *(ऋग्वेद ८.६.३०)*

क्रतु साद्गुण्यदेवतायै आकाशाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्य देवता अश्विनी देवता होमः-६—अश्विनावर्ति राहूगणो गोतमोश्विनावुष्णिक् अश्वि प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अश्विनावर्तिरस्मदागोमद्दस्राहिरण्यवत्। अर्वाग्रथं समनसानियच्छतं स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.९२.१६)*

क्रतु साद्गुण्य देवतायै अश्विभ्यां इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता होमः

क्रतु संरक्षक देवता इन्द्र होमः—इन्द्रं वो मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री क्रतु संरक्षक देवता इन्द्र प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.७.१०)*

क्रतु संरक्षक देवतायै इन्द्राय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता अग्नि होमः—अग्निं दूतमित्यस्य काण्वो मेधातिथिरग्निर्गायत्री क्रतु संरक्षक देवता अग्नि प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.१२.१)*

क्रतु संरक्षक देवतौ अग्नय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता यम होमः—यमाय सोमं यमोयमोनुष्टुप् क्रतु संरक्षक देवता यम प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ यमाय सोमं सुनुतयमायजुहुता हविः। यमंहयज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः स्वाहा॥ (ऋग्वेद १०.१४.१३)

क्रतु संरक्षक देवतायै यमाय इदं न मम। इस मंत्र को दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता निर्ऋति होमः—मोषुणः काण्वो निर्ऋतिर्गायत्री क्रतु संरक्षक देवता निर्ऋति प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ मोषुणः परापरानिर्ऋतिर्दुर्हणावधीत्। पदीष्ट तृष्णयासह स्वाहा॥ (ऋग्वेद १.३८.६)

क्रतु संरक्षक देवतायै निर्ऋतये इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता वरुण होमः—तत्वायामीत्यस्य शुनः शेपोवरुणस्त्रिष्टुप् क्रतु संरक्षक देवता वरुण प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्तेयजमानो हविर्भिः।
अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंसमान आयुः प्रमोषीः स्वाहा॥ (ऋग्वेद १.२४.११)

क्रतु संरक्षक देवतायै वरुणाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता वायु होमः—तव वायो व्यश्वोवायुर्गायत्री क्रतु संरक्षक देवता वायु प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ तव वायवृतस्पतेत्वष्टुर्जामातरद्भुत। अवास्यावृणीमहे स्वाहा॥ (ऋग्वेद ८.२६.२१)

क्रतु संरक्षक देवतायै वायवे इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता सोम होम—सोमो धेनुमित्यस्य गौतमः सोमस्त्रिष्टुप् क्रतु संरक्षक देवता सोम प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तमाशुं सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सादुन्यं विदथ्यं सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै स्वाहा॥ (ऋग्वेद १.६१.२०)

क्रतु संरक्षक देवतायै सोमाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता ईशान होमः—तमीशानमित्यस्य गौतम ईशानो जगती क्रतु संरक्षक देवता ईशान प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये स्वाहा॥ (ऋग्वेद १.८९.५)

क्रतु संरक्षक देवतायै ईशानाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें। यहाँ पर क्रतु संरक्षक देवता होम संपन्न हुआ।

व्याहृति होमः—व्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिः बृहती व्याहृति होमे विनियोगः। ॐभूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा,वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। इन मत्रों से एक बार होम करें।

प्रधान देवता सूर्य होमः

प्रधान देवता सूर्य होमः—बरमहाँ असीत्यस्य सूर्यःप्रगाथो बृहती सूर्य प्रीत्यर्थे आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ बरमहाँ असि सूर्य बळादित्य महाँ असि। महस्ते सतो महिमा पनस्यतेऽद्धा देव महाँ असि स्वाहा॥ (ऋग्वेद ८.१०१.११) आ.गृ.सूत्रम्

ॐ सूर्याय स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐरुद्राधिपतये स्वाहा, रुद्राधिपतय इदं न मम। ॐरवि किरणाय स्वाहा, रविकिरणाय इदं न मम। ॐ ईश्वराय स्वाहा, ईश्वराय इदं न मम। ॐसर्वोत्पातशमनाय स्वाहा, सर्वोत्पातशमनाय इदं न मम। प्रधान देवता के होम के बाद इन पाँच मंत्रों से घी की आहूति एक-एक बार देवें॥

ॐ भूरग्नये च पृथिव्यै च महते च स्वाहा अग्नये पृथिव्यै महते च इदं न मम।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ भुवो वायवेचान्तरिक्षाय च महते च स्वाहा। वायवेऽन्तरिक्षाय महते च इदं न मम।
ॐ सुवरादित्याय य दिवे च महते च स्वाहा। आदित्याय दिवे महते च इदं न मम।
ॐ भुर्भुवः सुवश्चन्द्रमसे च नक्षत्रेभ्योदिग्भ्यश्च महते च स्वाहा। *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषद्-आरण्यक)*

चन्द्रमसे नक्षत्रेभ्यो दिग्भ्यो महते च इदं न मम। इन चार मंत्रों से भी घी की आहुतियाँ एक-एक बार देवें। ॐ भूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐ भुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐ स्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम।

स्विष्टकृत् होमः—दर्व्यामुपस्तीर्य हविर्भागस्योत्तरार्धतः सकृत् अवदाय अवत्तंतु द्विः अभिघार्य। स्रुवा से दर्वी में (स्रुक्) घी डालकर, चरु के उत्तर भाग से चरु को निकालकर (हाथ से) दर्वी में रखें। फिर स्रुवा से उप पर दो बार घी डालें। आगे कहने वाले मंत्र को कहते हुए होम कुण्ड में ईशान्य दिशा में डालें। यदस्येति हिरण्यगर्भोग्निः स्विष्टकृद्घृतिः स्विष्टकृत् होमे विनियोगः।

ॐ यदस्य कर्मणोत्यरीरिचंयद्वान्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत्स्विष्टकृद्विद्वान्त्सर्वं स्विष्टंसुहुतं करोतु मे॥
अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्धयः स्वाहा॥ *(श्रौत मन्त्र)*

इन दो मंत्रों को कहकर अग्नि के ईशान्य भाग में होम करें। स्विष्टकृतेऽग्नय इदं न मम।

इध्म बंधन रज्जुं विस्रस्य

पहले जिस रस्सी (कुशा निर्मित) से इध्यम बाँधे थे उस रस्सी को खोलकर उसे—ॐ रुद्राय पशुपतये स्वाहा, रुद्राय पशुपतये इदं न मम। कहकर होम करें। **प्रायश्चित आज्याहुतीः सप्त जुहुयात्।** प्रायश्चित सात घी की आहुतियाँ देवें। अयाश्चेतिविमदोया अग्निः पंक्तिः प्रायश्चित्याज्य होमे विनियोगः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तीश्चसत्यमित्वमया असि त्रयासावयसाकतो यासन्हव्यमूहिषेयानोधेहि भेषजं स्वाहा॥ *(यजुर्वेद-आरण्यक)*

अग्नेय इदं न मम। अतो देवाः काण्वोमेधातिथिर्देवा गायत्री प्रायश्चिताज्यहोमे विनियोगः।

ॐ अतोदेवा अवंतु नो यतोविष्णुर्विचक्रमे। पृथिव्याः सप्त धामभिः स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.२२.१६)*

देवेभ्य इदं न मम। इदं विष्णुः काण्वोमेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री प्रायश्चित्ताज्यहोमे विनियोगः।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदं। समूळहमस्यपांसुरे स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.२२.१७)*

विष्णवे इदं न मम। व्यस्त समस्त व्याहृतीनां विश्वामित्र जमदग्निर्भरद्वाज प्रजापतय ऋषयः, अग्निवायुसूर्यप्राजापतयो देवताः गाय त्र्युष्णिगनुष्टुबृहत्यश्छंदांसि। प्रायश्चित्ताज्य होमे विनियोगः। ॐभूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। यहाँ पर यजमान के द्वारा करने वाला प्रायश्चित होम संपन्न हुआ। यज्ञ के पूजन होम में अनेक प्रकार के लोप संभव है। अतः उनके निवारण के लिए प्रायश्चित्त होम आवश्यक है। यजमान के प्रायश्चित होम से भी बचे हुए लोप दोषों के निवारण के लिए ब्रह्म प्रायश्चित विधान है। ब्रह्मा के स्थान पर यदि कुश हो तो स्वयं आचार्य ही ब्रह्म प्रायश्चित होम करें।

ब्रह्म प्रायश्चित्त होमः

ब्रह्मा के स्थान पर बैठे पं. जी के द्वारा यज्ञ में सपन्न लोप दोषों की निवृत्ति के लिए ब्रह्मा जी प्रायश्चित होम करते हैं।

ततो ब्रह्मा कर्तारं परीत्याग्नर्वायव्यदेशे तिष्ठन् एता एव सप्त आज्याहुतीर्जुहुयात्।

उसके बाद ब्रह्मा जी यजमान के पीठे से जाकर अग्नि के वायव्य दिशा में खडे होकर पूर्वोक्त सात मंत्रों से आहुति देवें। ब्रह्म प्रायश्चित्याज्यहोमे विनियोगः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तीश्चसत्यमित्वमया असि।
अयासावयसाकृतो यासन्हव्यमूहिषेयानो धेहि भेषजम् स्वाहा॥ *(यजुर्वेद-आरण्यक)*

अग्नेय इदं न मम। इस पंक्ति को यजमान या आचार्य कहें।

ॐ अतो देवा अवंतु नो यतोविष्णुर्विचक्रमे। पृथिव्याः सप्त धामभिः स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.२२.१६)*

देवेभ्य इदं न मम (इस पंक्ति को आचार्य पढ़ें।)

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदं। समूळहमस्य पांसुरे स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १.२२.१७)*

विष्णव इदं न मम। (आचार्य इस पंक्ति को कहें) ॐभूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। स्वाहा तक ब्रह्मा जी कहते है। इदं न मम वाला भाग यजमान व आचार्य को ही कहना हैं, त्याग को ब्रह्मा नहीं करना चाहिये। इदं न मम त्याग कहलाता है। ततो ब्रह्मा यथा आगतं तथैव स्वस्थाने उपविशेत्। ब्रह्मा जी जिस प्रकार आये थे उसी प्रकार जाकर अपने आसन पर बैठें। अनाज्ञातमिति मंत्रद्वयस्य हिरण्यगर्भोग्निरनुष्टुप्, ज्ञाताज्ञातदोष निबर्हणार्थं प्रायश्चित्ताज्य होमे विनियोगः।

ॐ अनाज्ञातं यदाज्ञातं यज्ञस्य क्रियतेमिथु। अग्नेतदस्य कल्पयत्वं हिवेत्थंयथातथं स्वाहा॥ *(यजुर्वेद-आरण्यक)*

अग्नये इदं न मम।

ॐ पुरुषसंमितो यज्ञोयज्ञः पुरुषसंमितः। अग्नेतदस्य कल्पयत्वं हिवेत्थंयथातथं स्वाहा॥ *(यजुर्वेद-आरण्यक)*

यत्पाकत्रेत्याप्त्यस्त्रितोग्निस्त्रिष्टुप्। प्रायश्चिताज्य होमे विनियोगः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ यत्पाकत्रामनसादीनदक्षानयज्ञस्य मन्वतेमर्त्यासः।
अग्निष्टद्धोता क्रतुविद्विजानन्यजिष्ठो देवाँऋतुशोयजाति स्वाहा॥ (ऋग्वेद १०.२.५)

अग्नय इदं न मम। ॐयद्वोदेवा अभितपामरुत स्त्रिष्टुप्। मंत्र तंत्र विपर्यासादि निमित्तक प्रायश्चिताज्य होमे विनियोगः।

ॐ यद्वोदेवा अतिपातयानि वाचाचप्रयुतीदेवहेळनं।
अरायो अस्माँ अभिदुच्छुनायतेन्यत्रास्मन्मरुतस्तन्निधेतनस्वाहा॥ (यजुर्वेद-आरण्यक)

मरुद्भ्य इदं न मम। ततः स्कन्न भिन्नाद्यनियत निमित्ते सति वक्ष्यमाण प्रकारेण तत् प्रतिपदोक्त जप होमान् कुर्यात्। इसके बाद गिरने वाले, टूटने वाले सभी दोष जिनका वर्णन संभव नहीं है, उनके प्रायश्चित के लिए आगे कहने वाले जप एवं होम करें।

ॐभूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा, वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। यहाँ पर प्रायश्चित होम समाप्त हुआ। प्रारम्भ दिन से अन्तिम दिन तक यह होम कार्य एक जैसा है।

रुद्र सर्वाद्भुत होमस्या सर्व फलावाप्त्यर्थं साङ्गतासिद्ध्यर्थं च यावच्छक्ति ध्यानावाहनादि षोडशोपचार पूजां करिष्ये। होम कुण्ड में आचार्य एवं कलश वेदि में प्रधानाचार्य एक साथ पूजन करें। प्रधान देवता रुद्र मंत्रों से।

षोडशोपचार पूजनम् (कुण्ड में)

यान —कालिंगं ग्रहमध्य भागनिलयं प्राचीमुखं वर्तुलं, । रक्तं रक्तविभूषणाध्वजरथच्छत्रश्रियाशेभितम्॥
सप्ताश्वं कमलद्वयान्वितकरं पद्मासनं काश्यपं। मेरोर्दिव्य गिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे भास्करम्॥ ॐ घृणिः सूर्यआदित्यः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आवाहन-ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतोवृत्वात्यं तिष्ठद् दशांगुलम्॥ (ऋग्वेद १०.९०.१)
ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजत स्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्रीसूर्याय नमः। आवाहयामि। आवाहनं समर्पयामि।

आसनम्—ॐ पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेना तिरोहति॥ (ऋग्वेद १०.९०.२)
ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। आसनं समर्पयामि।

पाद्यम्— ॐ एतावानस्य महिमाऽतो ज्यायाँश्च पुरुषः। पादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ (ऋग्वेद १०.९०.३)
ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय मम:। पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं— ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः। ततो विश्वं व्यक्रामत् साशनानशने अभि॥ (ऋग्वेद १०.९०.४)
ॐ कां सोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहो पह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—ॐ तस्माद्विराळजायत विराजो अधिपूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथोपुरः। (ऋग्वेद १०.९०.५)
ॐ चंद्रां प्रभासां यशसा ज्वलंतीं श्रियं लोके देवजुष्टा मुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणो॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् (दूध)— ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियं। भवावाजस्य संगथे। *(ऋग्वेद १०.९१.१६)*

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। पयः स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवेनातिं भवे भवस्वमाम् भवोद्भवाय नमः॥

(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत् आरण्यक)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि

दहि— ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखा करत्प्रण आयूंषितारिषत्॥ *(ऋग्वेद ४.३९.६)*

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। दधि स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमश्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमःकलविकरणाय नमोबलाय नमो बलप्रमथनाय नमस्सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः। *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)*

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्मयामि।

घी— ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्ययोनिर्घृते श्रितो घृतं वस्य धामं।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभवक्षि हव्यम्॥ *(ऋग्वेद २.३.११)* ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। घृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोर तरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

मधु (शहद)—ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरंति सिंधवः। माध्वीर्नः संत्वोषधीः॥ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवंतु नः॥ (ऋग्वेद १.९०.६) ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। मधु स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्पयामि।

शर्करा (शक्कर)—ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिंद्राय सुहवीतु नाम्ने। स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमाँ अदाभ्यः॥ (ऋग्वेद ९.८५.६)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शर्करा स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जन—ॐ ईशानस्सर्वविद्यानामीश्वरस्सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोऽम्॥ (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

फल— ॐ याः फलिनी र्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वं हसः॥ (ऋग्वेद १०.९७.१५)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। फल स्नानं समर्पयामि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शुद्धोदक—ॐ आपो॒हिष्ठा मयो॒भुव॒स्तानऊ॒र्जे द॑धातन। म॒हेरणा॑य॒ चक्ष॑से॥ यो वः॑ शि॒वतमोरस॒स्तस्य॑ भाजयते॒ हनः॑। उ॒श॒तीरिव मा॒तरः॑॥ तस्मा॒ अरं॑गमाम वो॒ यस्य॒ क्षया॑य॒ जिन्व॑थ। आपो॑ ज॒नय॑था च नः। (ऋग्वेद १०.९.१-२-३)

ॐ कद्रु॒द्राय॒ प्रचे॑तसे मी॒ळ्हुष्ट॑माय॒ तव्य॑से। वो॒चेम॒ शंत॑मं हृ॒दे॥ (ऋग्वेद १.४३.१)

ॐ यथा॑ नो॒ अदि॑तिः॒ कर॒त्पश्वे॒ नृभ्यो॒ यथा॒ गवे॑। यथा॑ तो॒काय॑ रु॒द्रिय॑म्॥ (ऋग्वेद १.४३.२)

ॐ यथा॑ नो मि॒त्रो वरु॑णो॒ यथा॑ रु॒द्रश्चिके॑तति। यथा॒ विश्वे॑ स॒जोष॑सः।

ॐ गा॒थप॑तिं मे॒धप॑तिं रु॒द्रं जला॑षभेषजम्। तच्छं॒ योः सु॒म्नमी॑महे॥

ॐ यः शु॒क्र इ॑व॒ सूर्यो॒ हिर॑ण्यमिव॒ रोच॑ते। श्रेष्ठो॑ दे॒वानां॒ वसुः॑।

ॐ शं नः॑ कर॒त्यर्वं॑ ते सु॒गं मे॒षाय॑ मे॒ष्यै। नृभ्यो॒ नारि॑भ्यो॒ गवे॑॥

ॐ अ॒स्मे सोम॒ श्रिय॒मधि॒ नि धे॑हि श॒तस्य॑ नृ॒णाम्। महि॒श्रव॑स्तुविनृ॒म्णाम्॥

ॐ मान॑ः सोमपरि॒बाधो॒ मारा॑तयो जुहुरंत। आ न॑ इंदो॒ वाजे॑ भज॥

ॐ यास्ते॑ प्र॒जा अ॒मृत॑स्य॒ पर॑स्मि॒न्धाम॑न्नृ॒तस्य॑। मू॒र्धा नाभा॑ सोमवेन आ॒ भूष॑ंतीः सोम वेदः॥ (ऋग्वेद १.४३.३-४-५-६-७-८-९)

ॐ नम॒ः सोमा॑य च रु॒द्राय॑ च॒ नम॑स्ताम्राय॑ चारु॒णाय॑ च॒ नमः॑ शं॒गाय॑ च पशु॒पत॑ये च॒ नम॑ उ॒ग्राय॑ च भी॒माय॑ च॒ नमो॑ अग्रेव॒धाय॑ च दूरेव॒धाय॑ च॒ नमो॑ हन्त्रे च॒ हनी॑यसे च॒ नमो॑ वृ॒क्षेभ्यो॒ हरि॑केशेभ्यो॒ नम॑स्ता॒राय॒ नमः॑ श॒म्भवे॑ च मयो॒भवे॑ च॒ नमः॑ शंक॒राय॑ च मयस्क॒राय॑ च॒ नमः॑ शि॒वाय॑ च शि॒वत॑राय च॒ न॒म॒ स्तीर्थ्या॑यच॒ कूल्या॑य च॒ नमः॑ पा॒र्याय॑ चावा॒र्याय॑ च॒ नमः॑ प्र॒तर॑णाय चो॒त्तर॑णाय च॒ नम॑ आता॒र्याय॑ चाला॒द्याय॑ च॒ नम॒शष्प्याय च॒ फेन्याय॑ च॒ नमः॑सिक॒त्याय॑ च प्रवा॒ह्याय॑

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

च। (यजुर्वेद-४ काण्ड-५ प्रश्ने-८ अनुवाक)

ॐ तच्छंयोरावृणीमहे। गातुं यज्ञायं। गातुं यज्ञ पंतये। दैवीः स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिर्मानुंषेभ्यः।
ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम्। शं नों अस्तु द्विपदें। शं चतुंष्पदे। ॐ शांतिः शांतिः। शांतिः॥ (यजुर्वेद-आरण्यक)
ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसंतो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ (ऋग्वेद १०.९०.६)
ॐ आदित्यवर्णो तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तवं वृक्षोऽथं बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदंतु मायांतरा याश्चं बाह्या अलक्ष्मीः। (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

वस्त्र— ॐ युवं वस्त्राणि पीवसावसाथे युवोरच्छिद्रा मंतवो हसर्गाः।
अवातिरममनृतानि विश्वं ऋतेनं मित्रा वरुणा सचेथे॥ (ऋग्वेद १.१५२.१)
ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेनं देवा अयजंत साध्या ऋषयश्च ये॥ (ऋग्वेद १०.९०.७)
ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मिं राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥

(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतं—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरास्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशून्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान् ग्राम्याश्च ये॥ (ऋग्वेद १०.९०.८)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ क्षुत् पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

आभरण—ॐ हिरण्यरूपः स हिरण्य संदृगपान्नपात् सेदु हिरण्यवर्णः। हिरण्ययात् परियोनेर्निषद्या हिरण्यदा ददत्यन्नमस्मै॥

(ऋग्वेद २.३५.१०)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। आभरणं समर्पयामि।

गन्ध— ॐ गंधं द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)
ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्य जुस्तस्मादजायत॥ (ऋग्वेद १०.९०.९)
ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। गन्धं समर्पयामि।

अक्षत—ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उतपुरंन्न धृष्णवर्चत॥ (ऋग्वेद ८.९९.८)

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि—ॐ आयने ते परायणे दूर्वारोहंतु पुष्पिणीः। ह्रदाश्च पुण्डरीकाणि समुद्रस्य गृहा इमे॥ (ऋग्वेद १०.१४२.८)
ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावोहजज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजावयः॥ (ऋग्वेद १०.९०.१०)
ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ सपरिवाराय श्रीसूर्याय नमः। पुष्पाणि समर्पयामि।

प्रथमावरण पूजनम्—ॐ हृदयाय नमः। आग्नेय दिशि। ॐ शिरसे स्वाहा नमः। ऐशान्यां दिशि। ॐ शिखायै वषट् नमः। नैर्ऋत्यां दिशि। ॐ कवचाय हुम् नमः। वायव्यां दिशि। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् नमः। अग्रे ॐ अस्त्राय फट् नमः। आग्नेयादि कोणेषु पूजयेत् *(अनुष्ठान पद्धति)*। पूजन करे।

द्वितीयावरण पूजनम्—ॐ इन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्णाय वज्रहस्ताय ऐरावत वाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवारायश्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ अग्नये तेजोधिपतये पिंगलवर्णाय शाक्ति हस्ताय मेष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय स वाहनाय स परिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नमः। ॐ यमाय प्रेताधिपतये कृष्णावर्णाय दण्ड हस्ताय महिष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नमः। ॐ निर्ऋतये रक्षोधिपतये रक्तवर्णाय खड्ग हस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नमः। ॐ वरुणाय जलाधितये कुंदवर्णाय पाशहस्ताय मकरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सूर्यमूति पार्षदाय नमः। ॐ वायवे प्राणाधिपतये धूम्रवर्णाय अंकुश हस्ताय हरिणवाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ सोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्णाय गदा हस्ताय अश्व वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूति पार्षदाय नमः। ॐ ईशानाय विद्याधिपतये स्फटिकवर्णाय त्रिशूल हस्ताय वृषभ वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ अनंताय नागाधिपतये क्षीरवर्णाय चक्रहस्ताय गरुड वाहनाय स शक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्ति पार्षदाय नमः। नैर्ऋत्यं एवं पश्चिम दिशा के बीच में अनन्त का पूजन करें। ॐ ब्रह्मणो लोकाधिपतये कंजवर्णाय पाशहस्ताय हंसवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री सूर्यमूर्तिपार्षदाय नमः। पूर्व एवं ईशान दिशा के बीच में ब्रह्मा जी का पूजन करें। *(अनुष्ठान पद्धति)*

तृतीयावरणपूजनम्—ॐ वज्राय नमः। (पूर्व में) ॐ शक्त्यै नमः। (आग्नेय में) ॐ दण्डाय नमः। (दक्षिण में) ॐ खड्गाय नमः। (नैर्ऋत्य) ॐ पाशाय

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नमः। (पश्चिम में) ॐ अंकुशाय नमः। (वायव्य में) ॐ गदायै नमः। (उत्तर में) ॐ त्रिशूलाय नमः। (ईशान में) ॐ चक्राय न मः। (पश्चिम नैर्ऋत्य के बीच में) ॐ पद्माय नमः। (पूर्व ईशान के बीच में) *(अनुष्ठान पद्धति)*

सूर्य अष्टोत्तर शतनाम पूजा

ॐ अरुणाय नमः। ॐ शरण्याय नमः। ॐ करुणारस सिन्धवे नमः। ॐ असमान बलाय नमः। ॐ आर्तरक्षकाय नमः। ॐ आदित्याय नमः। ॐ आदिभूताय नमः। ॐ अखिलागमवेदिनेनमः। ॐ अच्युतायनमः। ॐ अखिलज्ञायनमः। ॐ अनन्तायनमः। ॐ इनायनमः। ॐ विश्वरूपायनमः। ॐ इज्यायनमः। ॐ इन्द्रायनमः। ॐ भानवेनमः। ॐ इन्दिरामन्दिरायनमः। ॐ आप्तायनमः। ॐ वन्दनीयायनमः। ॐ ईशायनमः। ॐ सुप्रसन्नायनमः ॐ सुशीलायनमः ॐ सुवर्चसे नमः ॐ वसुप्रदायनमः । ॐ वसवेनमः। ॐ वासुदेवायनमः। ॐ उज्जवलायनमः। ॐ उग्ररूपायनमः। ॐ ऊर्ध्वगायनमः। ॐ विवस्वतेनमः। ॐ उद्यत्किरणाजालयनमः। ॐ हृषिकेशायनमः। ॐ ऊर्जस्वलायनमः। ॐ वीरायनमः। ॐ निर्जरायनमः। ॐ जयाय नमः। ॐ ऊरुद्वभावरूपयुक्तसारथये नमः। ॐ रुग्घन्त्रे नमः। ॐ ऋक्षचक्रचराय नमः। ॐ ऋजुस्वभावचित्ताय नमः। ॐ नित्यस्तुत्याय नमः। ॐ ऋकारमातृकावर्णरूपाय नमः। ॐ उज्जवलतेजसे नमः। ॐ ऋक्षायधिनाथाय नमः। ॐ मित्रायनमः। ॐ पुष्काराक्षाय नमः। ॐ लुप्तदन्ताय नमः। ॐ शान्ताय नमः। ॐ कान्तिदाय नमः। ॐ धनाय नमः। ॐ कनत्कनकभूषाय नमः। ॐ खद्योताय नमः। ॐ लूनिताखिलदैत्याय नमः। ॐ सत्यानन्द स्वरूपिणे नमः। ॐ अपवर्गप्रदाय नमः। ॐ आर्तशरण्याय नमः। ॐ एकाकिने नमः। ॐ भगवते नमः। ॐ सृष्टिस्थित्यन्तकारिणे नमः। ॐ गुणात्मने नमः। ॐ घृणिभृते नमः। ॐ बृहते नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ ऐश्वर्यदाय नमः। ॐ शर्वाय नमः। ॐ हरिदश्वाय नमः। ॐ शौरये नमः। ॐ दशदिक्सम्प्रकशाय नमः। ॐ भक्तवश्याय नमः। ॐ ओजस्कराय नमः। ॐ जयिने नमः। ॐ जगदानन्दहेतवे नमः। ॐ जन्ममृत युजराव्याधिवर्जिताय नमः। ॐ औन्नत्यापदसञ्चरथस्थाय नमः। ॐ असुरारये नमः। ॐ कमनीकराय नमः। ॐ अब्जवल्लभाय नमः। ॐ अन्तर्बहिःप्रकाशाय नमः। ॐ अचिन्त्याय नमः। ॐ आत्मरूपिणे नमः। ॐ अच्युताय नमः। ॐ अपरेशाय नमः। ॐ परस्मै नमः। ॐ ज्योतिषे नमः। ॐ अहस्कराय नमः। ॐ रवये

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नमः ॐहरये नमः। ॐपरमात्मने नमः। ॐतरुणाय नमः। ॐवरेण्याय नमः। ॐग्रहाणांपतये नमः। ॐभास्कराय नमः। ॐआदिमध्यान्तरहिताय नमः। ॐ सौख्यप्रदायनमः। ॐ सकलजगतांपतये नमः। ॐसूर्याय नमः। ॐकवये नमः। ॐनारायणाय नमः। ॐपरेशाय नमः। ॐतेजोरूपाय नमः। ॐह्रीं हिरण्यगर्भाय नमः। ॐ ऐं इष्टार्थदाय नमः। ॐआशुप्रपन्नाय नमः। ॐश्रीमते नमः। ॐश्रेयसे नमः। ॐभक्तकोटिसौख्यप्रदायिने नमः। ॐनिखिलागमवेद्याय नमः। ॐनित्यानन्दाय नमः। अष्टोत्तर शतनाम पूजां समर्पयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

धूपम्—ॐवनस्पति रसोत्पन्नो गंधाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते॥ *(ऋग्वेद १०.९०.११)*

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐसपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। धूपं आघ्रापयामि।

दीपम्— **आज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मंगलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह॥** *(स्मृति संग्रह)*

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासी बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१२)*

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐसपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। दीपं दर्शयामि। धूप दीपानंतरं आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यम्—देवस्याग्रे स्थलं संशोध्य गोमयेन मण्डलं कृत्वा तत्र शुद्धं पात्रं न्यस्य अभिघार्य निर्मलं हवि तदुपरि न्यस्य आज्येन द्रवीभूतं कृत्वा "ॐ भू र्भुवः स्वः इति गायत्र्या च प्रोक्ष्य वायु बीजं जप्त्वा निवेद्यान्नं संशोध्य इक्षिणाहस्ते अग्निबीजं विलिख्य तेन हस्तेन संदह्यवामहस्ते अमृतबीजं विलिख्य तेत हस्तेन हविराप्लाव्य मूलमंत्रमष्टवारं संजप्य

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मंत्रामृतमयं संकल्प्य सुरभिमुद्रां बध्वा अमृतमयं भावयित्वा मल धातु रसांशं विभज्य देवस्य निवेद्य ग्रहणोच्छां कुर्यात्।

(अनुष्ठान पद्धति)

"सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि" इत्यनेन

परिषिच्य हस्ताभ्यां पुष्पैः "देवस्य जिह्वार्चीरुचि निवेद्ये निपात्य निवेदयामि भवते जुषाणेदं हविर्विभो" इति वामहस्तेन ग्रासमुद्रा प्रदर्श्य दक्षिण हस्तेन प्राणादि मुद्राः प्रदर्शयेत्। अन्नात् मलांशं धात्वंशं च परित्यज्य रसांशं देवस्य वदनार्चिषि समर्पयेत्। वं अबात्मने इति नैवेद्य मुद्रां प्रदर्शयेत्।

नैवेद्य सारं रससमर्पणात् जातं सुधांशं देवे समर्प्य अंललिमुद्रां बध्वा नैवेद्यसार रससमर्पित जातामृतमय सुधांशुना पुनः पुनः वर्धितं देवं हृन्मूर्ति देवं ध्यायन् स्व स्व मूलमन्त्रं यथा शक्ति जप्त्वा।

कलश के आगे स्थल शुद्धिकर गोमय से शुद्धिकर चतुरस्त्र मण्डल को बनाकर उस पर शुद्ध पात्र को रखें। पात्र में थोडा सा घी डालें। उस पात्र में निर्मल हविस् (नैवेद्य पदार्थ को) को घी पर रखें उस हविस् को घी से भिगोयें। गायत्री मंत्र से नैवेद्य का प्रोक्षण करें। यंयं यं" इस वायु बीज को जपकर हविस् को शुद्ध करें। दाहिने हाथ में (रं) अग्नि बीज को लिखकर उस अग्नि से हविस् में विद्यमान कश्मलों को लजायें। (कल्पना करें) बायें हाथ में अमृत बीज (वं) को लिखकर उस हाथ से हविस् को शुद्ध करें। धोने की कल्पना करें। ॐ घृणिः सूर्य आदित्यः। इस मन्त्र का आठ बार जप करें। हविस् को मत्रमय एवं अमृतमय होने की कल्पना करें। सुरभि मुद्रा से अमृतमय हुआ है मानकर मलांश, धातु अंश एवं रसांश को अलग-अलग करने की कल्पना करें। देवता को नैवेद्य ग्रहण करने की इच्छा उत्पन्न करनी चाहिये। "सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि" इससे परिषिञ्चन करें। दोनों हाथों में पुष्प लेकर देवता का जीभ नैवेद्य तक पहुँचने का चिन्तन करें। "निवेदयामि भवते जुषाण हविर्विभो" कहकर नैवेद्य स्वीकार करने की प्रार्थना करते हुए बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछडे को घास देते हैं) को दिखाकर दाहिने हाथ से—

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्राणाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ कनिष्ठिका मिलाकर, **अपानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर, **व्यानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर, **उदानाय स्वाहा**-अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर, **समानाय स्वाहा**। सभी अङ्गुलियों को लिकर। अन्न से मलांश एवं धातु के अंश को अलग कर केवल रसांश को अर्पित करने की कल्पना करें।

''वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि'' कहकर नैवेद्य मुद्रा का प्रदर्शन करें। अंगुष्ट एवं अनामिका मिलाने से नैवेद्य मुद्रा। नैवेद्य का सार जो रसांश था उसका भी सार अमृत का जो अंश है उसे देवता को समर्पित कर, हाथ जोडकर, नैवेद्य के सार अमृत से भगवान् को बढते हुए मानकर उसे हृदय में स्थित मानकर यथाशक्ति ॐ घृणिः सूर्य आदित्यः।'' इस मूल मंत्र का जप करें।

ॐ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिन्द्राय सुहवीतुनाम्ने।
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमां अदाभ्यः॥ *(ऋग्वेद ९.८५.६)*
ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत॥ *(ऋग्वेद १०.९०.१३)*
ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

यथा संभव नैवेद्यं निवेदयामि। **अमृतापिधानमसि** कहकर उत्तरापोशन देवें। हस्ताप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गण्डूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूल—पूगीफल समायुक्तं नागवल्या दलैर्युतं। चूर्णं कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ *(स्मृति संग्रह-देवपूजा)*

ॐ सपरिवार श्री सूर्याय नमः। क्रमुक तांबूलं समर्पयामि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नीराजन (आरति)—ॐ अर्चंत प्रार्चंत प्रियमेधा सो अर्चंत। अर्चंतु पुत्रका उत पुरं न धृष्णवर्चत। (ऋग्वेद ८.६९.८)

ॐ ध्रुवाद्यौ ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्॥

ॐ ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ (ऋग्वेद १०.१७३.४)

ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। मंगल नीराजनंसमर्पयामि।

मंत्रपुष्प—ॐ सहस्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्वशंभुवम्। विश्वं नारायणं देवमक्षरं परमं पदम्॥

विश्वतः परमान्नित्यं विश्वं नारायणं हरिम्। विश्वमेवेदं पुरुषस्तद्विश्व मुपजीवति॥

पतिं विश्वस्यात्मेश्वरं .. शाश्वतं... शिवमच्युतम्। नारायणं महाज्ञेयं विश्वात्मानं परायणम्॥

नारायण परोज्योतिरात्मा नारायणः परः। नारायण परं ब्रह्म तत्वं नारायणः परः॥

नारायण परो ध्याता ध्यानं नारायणः परः। यच्च किंचिज्जगत्सर्वं दृश्यते श्रूयतेऽपि वा॥

अन्तर्बहिश्च तत्सर्वं व्याप्य नारायणस्थितः। अनंतमव्ययं कविं.. समुद्रेऽन्तं विश्वशंभुवम्॥

पद्मकोश प्रतीकाशं... हृदयं चाप्यधो मुखम्। अधोनिष्ट्या वितस्यांते नाभ्यामुपरि तिष्ठति॥

ज्वालमालाकुलं भाति विश्वस्यायतनं महम्। संतत् .. शिलाभिस्तु लंबत्याकोश सन्निभम्॥

तस्यांते सुषिरं.. सूक्ष्मं तस्मिन्सर्वं प्रतिष्ठितम्। तस्य मध्ये महानग्निर्विश्वार्चिर्विश्वतो मुखः॥

सोऽग्रभुग्वि भजंतिष्ठन्नहारमजरः कविः। तिर्यगूर्ध्वमधश्शायी रश्मय स्तस्य संतता॥

संतापयति स्वं देहमापादतलमस्तकः। तस्य मध्ये वह्निशिखा अणीयोर्ध्वा व्यवस्थितः॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नीलतोयदमध्यस्थाद्विद्युल्लेखेव भास्वरा। नीवारशूकवत्तन्वी पीताभास्वत्यणूपमा॥
तस्यां शिखाया मध्ये परमात्मा व्यवस्थितः। स ब्रह्म स शिवः स हरिस्सेंद्रस्सोक्षरः परमः स्वराट्॥

ॐ बरमहाँ असि सूर्य बळादित्य महाँ असि। महस्ते सतो महिमा पनस्यते ऽद्धा देव महाँ असि॥ (ऋग्वेद ८.१०१.११) आ.गृ.सूत्रम्

ॐ नाभ्या आसीदंतरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्। (ऋग्वेद-१०.९०.१४)

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा नमस्कार—यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे॥ (देवपूजा-स्मृति संग्रह)

ॐ सप्तास्यां सन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुं॥ (ऋग्वेद १०.९०.१५)

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावोदास्योऽश्वान् विंदेयं पुरुषानहम्॥ (ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। प्रदक्षिणा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्य—ॐ प्रभाकराय विद्महे दिवाकराय धीमहि। तन्नो सूर्यः प्रचोदयात्॥ इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यम् (कहकर तीन बार पुष्पमिश्रित जल छोडें।)

सर्वोपचार पूजनम्—ॐ छत्रं समर्पयामि। चामरेण वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। आंदोळिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्य राजोपचार देवोपचार पूजां समर्पयामि।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ (ऋग्वेद १०.९०.१६)

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥ (ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। सवोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— कालिंगं ग्रहमध्य भागनिलयं प्राचीमुखं वर्तुलं, । रक्तं रक्तविभूषणाध्वजरथच्छत्रश्रियाशेभितम् ॥
सप्ताश्वं कमलद्वयान्वितकरं पद्मासनं काश्यपं। मेरोर्दिव्य गिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे भास्करम् ॥
ॐ कायेन वाचा मनसे न्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि ॥ (पौराणिकम्)
ॐ ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना ॥ (श्री भगवद्गीते)

ॐ सपरिवाराय श्री सूर्याय नमः। अनेन पूजनेन सपरिवारः श्री सूर्यः प्रीयताम्।

बलि प्रदान विधान—पूजन के बाद बलि प्रदान करें। यजमानः प्रतिबलिं संकल्प्य साक्षतजलं त्यजेत्। यजमान प्रत्येकबलि का संकल्प कहकर अक्षत सहित जल छोडें। अग्न्यायतनस्य समंतात् दिक्षु माषभक्त कूष्माण्ड बलीन् दिक् पालेभ्यो दद्यात्। यज्ञ शाला के चारों अडद चावल कद्दू के बलि को दिक् पालकों को देना चाहिये। प्रत्येक बलि में दीप लजायें। १. पूर्व में चन्द्र को बलि प्रदान करें। त्रातारमिन्द्रङ्गर्गइन्द्रस्त्रिष्टुप् इन्द्रप्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रंहवे हवे सुहवं शूरमिन्द्रं।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥ (ऋग्वेद ६.४७.११)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इंद्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्तकूष्माण्ड बलिर्नमम। भो इन्द्र दिशं रक्ष बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेनबलिदानेनइन्द्रःप्रीयताम्। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये। २. आग्नेय दिश में अग्नि को बलिप्रदान करें। अग्निंदूतंमेधातिथिरग्निगौयत्री अग्निप्रीत्यर्थे बलिप्रदाने विनियोगः।

ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्॥ *(ऋग्वेद १.१२.१)*

अग्नये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्माण्ड बलिर्नमम। भो अग्ने दिशं रक्ष बलिं क्षुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेनबलिदानेनअग्निःप्रीयताम इति पुष्पाक्षतजलानि आग्नेयाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को आग्नेयाभिमुख छोडना चाहिये।

३. दक्षण दिशा में यम को बलिप्रदान करें। यमाय सोमं यमोयमोनुष्टुप् यमप्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हविः। यमंह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः॥ *(ऋग्वेद १०.१४.१३)*

यमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्ति काय एष माषभक्तकूष्माण्ड बलिर्नमम। भो यम दिशं रक्ष बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेनबलिदानेनयमःप्रीयताम। इति पुष्पाक्षतजलानि दक्षिणाभिमुखस्त्जेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को दक्षिणाभिमुख छोडना चाहिये। ४. नैऋत्य दिशा में निऋति को बलिप्रदान करें। मोषुणः कण्वो निर्ऋतिर्गायत्री निर्ऋतिप्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ मोषुणः परापरा निर्ऋतिर्दुर्हणावधीत्। पदीष्टतृष्णया सह॥ *(ऋग्वेद १.३८.६)*

निर्ऋतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्माण्ड बलिर्नमम। भो निऋते दिशां रक्ष बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेनबलिदानेननिर्ऋतिःप्रीयताम। इति पुष्पाक्षत जलानि नैऋत्याभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जल नैऋत्याभिमुख छोडना चाहिये। ५. पश्चिम दिशा में वरुण को बलिप्रदान करें। तत्वायामि शुनः शेपो वरुणस्त्रिष्टुप् वरुणप्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ तत्वा॑यामि॒ ब्रह्म॑णा॒वन्द॑मान॒स्तदाशा॑स्ते॒ यज॑मानोह॒विर्भिः। अहे॑ळमानो वरुणे॒हबो॒ध्युरु॑शंस॒मान॒ आयुः॒ प्रमो॑षीः॥

(ऋग्वेद १.२४.११)

वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्माण्ड बलिर्नमम। भो वरुण दिशं रक्ष बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेनबलिदानेनवरूणःप्रीयताम। इति पुष्पाक्षतजलानि पश्चिमाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पश्चिमाभिमुख छोडना चाहिये। ६. वायव्य दिशा में वायु को बलिप्रदान करें। तववायोव्यश्वोवायुर्गायत्री वायुप्रीत्यर्थे बलिप्रदाने विनियोगः।

ॐ तव॑वायवृतस्पते॒त्वष्टु॑र्जामातरद्भुत। अवां॒स्या वृ॑णीमहे॥ *(ऋग्वेद ८.२६.२१)*

वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्माण्ड बलिर्नमम। भो वायो दिशं रक्ष बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य ायुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेनबलिदानेनवायुःप्रीयताम। इति पुष्पाक्षतजलानि वायव्याभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को वायव्याभिमुख छोडना चाहिये। ७. उत्तर दिशा में सोम को बलिप्रदान करें। सोमोधेनुं गोतमः सोमस्त्रिष्टुप् सोमप्रीत्यर्थे बलिप्रदाने विनियोगः।

ॐ सोमो॑ धे॒नुं सोमो॒ अर्व॑न्तमा॒शुं सोमो॑ वी॒रं क॑र्म॒रयं॑ ददाति।
सा॒दन्यं॑ विदथ्यं॑ स॒भेयं॑ पितृ॒श्रवणं॑ यो ददा॑शदस्मै॥ *(ऋग्वेद १.९१.२०)*

सोमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्माण्ड बलिर्नमम। भो सोम दिशं रक्ष बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेनबलिदानेनसोमःप्रीयताम। इति पुष्पाक्षतजलानि उत्तराभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को उत्तराभिमुख छोडना चाहिये। ८. ईशान्य दिशा में ईशान को बलिप्रदान करें। तमीशानमित्यस्य गौतम ईशानो जगती ईशान प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसेहूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ *(ऋग्वेद १.८९.५)*

ईशानाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्माण्ड बलिर्नमम। भो ईशान दिशं रक्ष बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेकर्ता शंतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेनबलिदानेनइशानःप्रीयताम इति पुष्पाक्षतजलानि ऐशान्यभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जे ईशान्याभिमुख छोडना चाहिये। ९. इन्द्रेशानयोर्मध्ये ब्रह्म बलिदान पूर्व एवं ईशान्य दिशा के बीच में ब्रह्मा का बलिदान करें। ब्रह्मजज्ञानं नकुलो ब्रह्मा त्रिष्टुप् ब्रह्मप्रीत्यर्थेबलिदाने विनियोगः।

ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनआवः।
स बुध्न्या उपमा अस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविवः॥ *(यजुर्वेद-४ काण्ड-२ प्रश्न-८ अनुवाक-४ मन्त्र)*

ब्रह्मणे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्माण्ड बलिर्नमम। भो ब्रह्मान् दिशं रक्ष बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पश्चिमाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पश्चिमाभिमुख छोडना चाहिये। १०. पश्चिम एवं नैऋत्य के बीच में अनन्त को बलिप्रदान करें। आयङ्गौः सार्पराज्ञी अनन्तो गायत्री अनन्त प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥ *(ऋग्वेद १०.१८९.१)*

अनन्ताय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्माण्ड बलिर्नमम। भो अनन्त दिशं रक्ष बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख होकर छोडना चाहिये।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नवग्रह बलि—१. पूर्व में अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित सूर्य को बलिदान करें। आकृष्णेन हिरण्यस्तूपः सविता त्रिष्टुप् अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित आदित्य प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवशयन्नमृतं मर्त्यंच।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ *(ऋग्वेद १.३५.२)*

आदित्याय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय अधिदेवता अग्नि प्रत्यधिदेवता रुद्रसहिताय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो आदित्य बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजनानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये। २. आग्नेय में अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित सोम को बलिदान करें। आप्यायस्व गोतमः सोमो गायत्री अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित सोम प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यं। भवावाजस्य सङ्गथे। *(ऋग्वेद १.९१.१६)*

सोमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायधाय सशक्तिकाय अधिदेवता अप प्रत्यधिदेवता गौरीसहिताय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो सोम बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये। ३. दक्षिण में अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित अङ्गारक को बलिदान करें। अग्निर्मूर्धाविरूपोंगारको गायत्री अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित अङ्गारक प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ अग्निमूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयं। अपां रेतांसि जिन्वति॥ *(ऋग्वेद ८.४४.१६)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अङ्गारकाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय अधिदेवता भूमि प्रत्यधिदेवतात स्कन्दसहिताइमंसदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिंसमर्पयामि। इदं न मम। भो अङ्गारक बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि उत्तराभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को उत्तराभिमुख छोडना चाहिये। ४. ईशान्य में अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित बुध को बलिदान करें। उद्बुध्यध्वंबुधोबुधस्त्रिष्टुप् अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित बुध प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ उद्बुधध्वंसमनसः सखायः समग्निमिंध्वं बहवः सनीळाः।
दधिक्रामग्निमुषसं च देवीमिन्द्रावतो वसे निह्वयेवः॥ *(ऋग्वेद १०.१०१.१)*

बुधाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय अधिदेवता विष्णु प्रत्यधिदेवता पुरुष सहिताय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो बुध बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि दक्षिणाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को दक्षिणाभिमुख छोडना चाहिये। ५. उत्तर में अधदेवता प्रत्यधिदेवता सहित बृहस्पति को बलिदान करें 7 बृहस्पते अतीत्यस्य गृत्समदो बृहस्पतिस्त्रिष्टुप् अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित बृहस्पति प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋत प्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रं॥ *(ऋग्वेद २.२३.१५)*

बृहस्पते साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय अधिदेवता इन्द्र प्रत्यधिदेवता ब्रह्मसहिताय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो बृहस्पते बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकार्त शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि दक्षिणाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को दक्षिणाभिमुख छोडना चाहिये। ६. पूर्व में अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित शुक्र को बलिदान करें। शुक्रंत इत्यस्य भरद्वाजः

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शुक्रस्त्रिष्टुप् अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित शुक्र प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ शुक्रंते अन्यद्यजतंते अन्यद्विषुरूपे अहनीद्यौरिवासि।
विश्वाहिमाया अवसिस्वधावो भद्रातेपूषन्निहरातिरस्तु॥ (ऋग्वेद ६.५८.१)

शुक्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय अधिदेवता इन्द्राणी प्रत्यधिदेवता इन्द्र सहिताय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो शुक्र बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पश्चिमाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पश्चिमाभिमुख छोडना चाहिये। ७. पश्चिम में अधिदेवता प्रयिधिदेवता सहित शनैश्चर को बलिदान करें। शमग्निरिरिंबिठिः शनैश्चर उष्णिक् अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित शनैश्चर प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ शमग्निरिग्निभिः करच्छन्नंस्तपतु सूर्यः। शंवातोवात्वरपा अपस्त्रिधः॥ (ऋग्वेद ८.१८.६)

शनैश्चराय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय अधिदेवता प्रजापति प्रत्यधिदेवता यमसहिताय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो शनैश्चर बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य क्सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये। ८. नैर्ऋत्य दिशा में अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित राहु को बलिदान करें। कयान इत्यस्य वामदेवोराहुर्गायत्री अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित राहु प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठयावृता॥ (ऋग्वेद ४.३१.१)

राहवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय अधिदेवता सर्प प्रत्यधिदेवता मृत्यु सहिताय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो राहो बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पश्चिमाभिमुखस्त्यजेत्। इतना

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कहकर फूल अक्षत जल को पश्चिमाभिमुख छोडना चाहिये। ९. वायव्य दिशा में अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित केतु को बलिदान करें। केतुं कृण्वन्नित्यस्य मधुच्छन्दाः केतुर्गायत्री अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित केतु प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥ (ऋग्वेद १.६.३)

केतवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय अधिदेवता ब्रह्म प्रत्यधिदेवता चित्रगुप्त सहिताय इमं सदीपमाषभक्त कूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो केतो बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि उत्तराभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को उत्तराभिमुख छोडना चाहिये।

कर्म सद्गुरुय देवता बलिदान—१. पश्चिम दिशा में गणपति को बलिदान करें। आतून इत्यस्य काण्वः कुसीदी विनायको गायत्री गणपति प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभं सं गृभाय। महाहस्ती दक्षिणेन॥ (ऋग्वेद ८.८१.१)

विनायकाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो विनायक साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो विनायक बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये। २. पश्चिम दिशा में दुर्गा को बलिदान करें। जातवेदसे कश्यपो दुर्गास्त्रिष्टुप् दुर्गाप्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिंधु दुरितात्यग्निः॥

(ऋग्वेद १.९९.१)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दुर्गायै साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न ममम। भो दुर्गे बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्त्री क्षेमकर्त्री शांतिकपुष्टिकर्त्री वरदा भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये। ६ कर्म साद्गुण्य देवताओं का बलिदान पश्चिम दिशा में करना चाहिये। उत्तर से दिक्षण की ओर बडना चाहिये। ३. पश्चिम दिश में क्षेत्रपाल को बलिदान करें। क्षेत्रस्य वामदेवः क्षेत्रपालोनुष्टुप् क्षेत्रपालप्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ क्षेत्रस्य पतिना वयं हितेनेवजयामसि। गामश्वं पोषयित्वा सनोमृळातीदृशे॥ *(ऋग्वेद ४.५७.१)*

क्षेत्रपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो क्षेत्रपाल बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजनानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये। ४. पश्चिम दिशा में वायु को बलिदान करें। क्राणा शिशुरित्यस्य त्रितोवायुरुष्णिक् वायुप्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ क्राणा शिशुर्महीनां हिन्वन्नृतस्य दीधितिम्। विश्वा परिप्रिया भुवदधद्वीता॥ *(ऋग्वेद ९.१०२.१)*

वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो वायो बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये। ५. पश्चिम दिशा में आकाश को बलिदान करें। आदित्य प्रत्नस्यवत्स आकाशो गायत्री आकाश प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ आदित्य प्रत्नस्यरेतसोज्योतिष्पश्यंति वासरं। परोयदिध्यते दिवा॥ *(ऋग्वेद ८.६.३०)*

आकाशाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो आकाश बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

छोडना चाहिये। ६. पश्चिम दिशा में अश्विनी देवताओं को बलिदान करें। अश्विनावर्ति राहूगणो गोतमोश्विनावुष्णिक् अश्व्यावाहने विनियोगः।

ॐ अश्विनंनावर्तिरस्मदागोमंद्दस्रा हिरंण्यवत्। अर्वाग्रथं समंनसा नियंच्छतं॥ *(ऋग्वेद १.६२.१६)*

अश्विभ्यां साङ्गाभ्यां सपरिवाराभ्यां सायुधाभ्यां सशक्तिकायभ्यां इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो अश्विनौ बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्तारौ क्षेमकर्तारौ शांतिकर्तारौ पुष्टिकर्तारौ वरदौ भवताम्। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये।

सपरिवार प्रधान देवता सूर्य बलिदान—प्रधान देवता सूर्य एवं उनके परिवार की पाँच बलियाँ उत्तर में करें।

१. ॐ रुद्राधिपतये नमः। रुद्राधिपतिं इमं सदीप माष भक्त कूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो रुद्राधिपते बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर पुष्प अक्षत एवं जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये।

२. ॐ रविकिरणाय नमः। रविकिरणाय इमं सदीप माष भक्त कूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो रविकिरण बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर पुष्प अक्षत एवं जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये।

३. ॐ ईश्वराय नमः। ईश्वराय इमं सदीप माष भक्त कूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो ईश्वर बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर पुष्प अक्षत एवं जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये।

४. ॐ सर्वोत्पातशमनाय नमः। सर्वोत्पातशमनाय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्ड बलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो सर्वोत्पातशमन बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर पुष्पा अक्षत एवं जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये। ५. बरमहाँ असीत्यस्य सूर्यःप्रगाथो बृहती सूर्य प्रीत्यर्थे बलि प्रदाने विनियोगः।

ॐ बरम॒हाँ अ॑सि सूर्य॒ बळ॑दित्य म॒हाँ अ॑सि। म॒हस्ते॑ स॒तो म॑हि॒मा प॑नस्यते॒ ऽद्धा दे॑व म॒हाँ अ॑सि॥ (ऋग्वेद ८.१०१.११) आ.गृ.सूत्रम्

ॐसूर्याय नमः।सूर्याय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीप माष भक्त कूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो सूर्य इमं बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर पुष्प अक्षत एवं जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये।

कूष्माण्ड बलिदान

यज्ञशालात् बहिः ऐशान्यदिग्भागे कूष्माण्डे सूर्यं क्षेत्रपालं च आवाहयेत्। पञ्चोपचार पूजां च कुर्यात्। यज्ञ शाला के बाहर ईशान्य दिशा में कद्दू में सूर्य एवं क्षेत्रपाल का आवाहन कर पूजन करें। ॐलं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। ॐहं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐयं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐरं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐबं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐपं परमात्मने पञ्चोपचारपूजां समर्पयामि। ॐसूर्याय नमः। ॐक्षेत्रपालाय नमः। सूर्याय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीप कूष्माण्ड बलिं समर्पयामि। क्षेत्रपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीप कूष्माण्ड बलिं समर्पयामि।

भो सूर्य बलिं भुंक्ष्व ममयजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। भो क्षेत्रपाल बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिमर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। ॐघृणिःसूर्य आदित्यः हुं फट् कहकर कूष्माण्ड को प्रदक्षिणाकार में घुमाकर पटक देवें। उस बलि को इतरों के द्वारा स्वच्छ करने के बार **''शांता पृथिवी शिवमन्तरिक्षं द्यौर्नोदेव्यभयंनो अस्तु।**

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शिवादिशः प्रदिशउद्दिशोन आपो विद्युतः परिपांतु सर्वतः शांति शांति शांति। *(ऋग्वेद १० मण्डलस्यान्ते)*

इस मंत्र से भूमि प्रोक्षण कर यजमान एवं आचार्य हाथ पैर धोकर आचमन कर लेवें।

पूर्णाहुति होम से पहले पूर्ण फल होम—याः फलिनीरित्यस्य आथर्वणो भिषगोषधयः अनुष्टुप् पूर्णफल होमे विनियोगः।

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिं प्रसूतास्तानो मुंचन्त्वं हसः स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १०.९७.१५)*

ओषधिभ्यः इदं न मम। कहकर पूर्णफल का होम करें। इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेद् जन्मनि जन्मनि। एतद् होम संपूर्ण फलावाप्त्यर्थ महाव्याहृति भिर्होष्ये।

ॐ भूरग्नये च पृथिव्यै च महते च स्वाहा। अग्नये पृथिव्यै महते च इदं न मम।
ॐ भुवो वायवे चान्तरिक्षाय च महते च स्वाहा। वायवेऽन्तरिक्षाय महते च इदं न मम।
ॐ सुवरादित्याय च दिवे च महते च स्वाहा। आदित्याय दिवे महते च इदं न मम।
ॐ भूर्भुवः स्वश्चन्द्रमसे च नक्षत्रेभ्योदिग्भ्यश्च महते च स्वाहा। चन्द्रम से नक्षत्रेभ्यो दिग्भ्यो महते च इदं न मम।

(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषद्)

इन चार मंत्रों से घी की आहुतियाँ देवें। ॐभूः स्वाहा। अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा। वायव इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा। सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा। प्रजापतये इदं न मम।

पूर्णाहुति होम संकल्प—हाथ में पुष्पाक्षत जल लेकर संकल्प करें। **सर्वकर्म प्रपूरणीं भद्र द्रव्यदां पूर्णाहुतिं होष्ये।** स्रुचि द्वादशगृहीतमाज्यं तस्यां गंधपुष्पाक्षतालंकृताग्रं स्रुवं अधो बिलं निधाय स्रुक् स्रुवं शंखमुद्राय गृहीत्वा ऊर्ध्वस्तिष्ठन्। स्रुवा से स्रुक् में १२ बार घी डालकर उस पर नीचे बिल वाला

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गंधपुष्प एवं अक्षता से लङ्कृत स्रुव को रखें। दोनों को शंखमुद्रा से पकडकर खडे होंवे। मंत्र पाठ करें। घी की धारा गिरते रहना चाहिये। मूर्धानं भरद्वाजो ग्निवैश्वानरस्त्रिष्टुप् पूर्णाहुतौ विनियोगः।

ॐ मूर्धानंदिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्।
कविं सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा॥ *(ऋग्वेद ६.७.१)*

अग्नये वैश्वानराय इदंनमम। पुनस्त्वाग्निर्वसुरुद्रादित्यास्त्रिष्टुप् पूर्णाहुतौ विनियोगः।

ॐ पुनस्त्वादित्यारुद्रावसवः समिंधतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः।
घृतेन त्वंतन्वो वर्धयस्वसत्याः संतु यजमानस्य कामाः स्वाहा॥ *(यजुर्वेद- ४ काण्ड-२ प्रश्न-३ अनुवाक)*

वसुरुद्रादित्येभ्यः इदं न मम। पूर्णादर्वि विश्वेदेवाः शतक्रतुरनुष्टुप् पूर्णाहुतौ विनियोगः।

ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेवविक्रीणावहा इषमूर्जंशतक्रतो स्वाहा॥ *(यजुर्वेद- १ काण्ड-८ प्रश्न-४ अनुवाक-२ मन्त्र)*

शतक्रतव इदं न मम। सप्तते अग्नेसप्तवानग्निर्जगती पूर्णाहुतौ विनियोगः।

ॐ सप्ततें अग्नेसमिधः सप्तजिह्वाः सप्तऋषयः सप्तधामप्रियाणि।
सप्तहोत्राः सप्तधात्वा यजंति सप्तयोनीरापृणस्वाघृतेन स्वाहा॥ *(यजुर्वेद- १ काण्ड-५ प्रश्न-२ अनुवाक)*

सप्तवतेग्नय इदं न मम। समुद्रा दूर्मिरिति एकादशर्चस्य गौतमो वामदेव आपस्त्रिष्टुप् अन्त्या जगती पूर्णाहुतौ विनियोगः।

ॐ समुद्रादूर्मि र्मधुमाँ उदारदुपांशुना समंमृतत्वमानट्। घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः॥
वयं नाम प्रब्रवामाघृतस्याऽस्मिन् यज्ञे धारयामानमोभिः। उपब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुः शृङ्गोऽवमीद् गौर एतत्॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य। त्रिधा बद्धो वृषभो रौरवीति महो देवो मर्त्याँआविवेश॥
त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं गविं देवासो घृतमन्वं विन्दन्। इन्द्र एकं सूर्य एकं जजान वेनादेकं स्वधया निष्टतक्षुः॥
एता अर्षन्ति हृद्यात् समुद्राच्छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे। घृतस्य धारा अभिचाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम्॥
सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेना अन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः। एते अर्षन्त्यूर्मयो घृतस्य मृगा इव क्षिपणोरीषमाणाः॥
सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः॥
अभिप्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्य१ स्मयमानासो अग्निम्।
घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः॥
कन्या इव वहतुमेतवा उ अञ्ज्यञ्जाना अभिचाकशीमि।यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा अभितत् पवन्ते॥
अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त। इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत् पवन्ते॥
धामन् ते विश्वं भुवनमधि श्रितमन्तः समुद्रे हृद्य१न्तरायुषि।
अपामनीके समिथे य आभृतस्तमश्याममधुमन्तं त ऊर्मिम् स्वाहा। (ऋग्वेद ४.५८ सम्पूर्ण सूक्त) अद्भ्यः इदं न मम।

ॐ स्वाहाग्नये वरुणाय स्वाहेन्द्राय मरुद्भ्यः। स्वाहा देवेभ्यो हविः॥ (ऋग्वेद ५.५.११)
आयाह्यग्ने समिधानो अर्वाङिन्द्रेण देवैः सरथं तुरेभिः। बर्हिर्न आस्तामदितिः सुपुत्रा स्वाहा देवा अमृता मादयन्ताम्।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(ऋग्वेद ३.४.११)

इति पठन् यवपरिमितां धारां संततां स्रुगग्रेण सशेषं हुत्वा। उपरोक्त मंत्रों को कहते हुए धान के बराबर मोटे घी की धारा से निरन्तर स्रुक् के अग्रभाग से होम करें। थोडा सा स्रुक् में बचे रहे।

पूर्णाहुति शेष होम—विज्योतिषेत्यस्य जारोवृशोग्निस्त्रिष्टुप् पूर्णाहुति शेषाज्य होमे विनियोगः।

ॐ विज्योतिषा बृहताभात्यग्निराविर्विश्वानिकृणुते महित्वा।
प्रादेवीर्मायाः सहते दुरेवाः शिशीते शृङ्गेरक्षसे विनिक्षे स्वाहा॥ (ऋग्वेद ५.२.६)

अग्नय इदं न मम। कहकर त्याग करें। ॐविश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। विश्वेभ्यो देवेभ्य इदं न मम। कहकर संस्राव (शेष बचे घी का) होम कर त्याग करें।

वसोर्धारा—बडे यज्ञों में वसोर्धारा करना चाहिये। परिशिष्ट प्रकरण में इसे विस्तार से लिखा जायेगा। निरन्तर घी की धारा गिरते रहना चाहिये। इसमें प्रयुक्त मंत्रों का क्रम निम्नलिखित है।

१. चमकानुवाक—११ अनुवाक (मंत्र), २. अग्निमीळे—६ ऋक् (मंत्र), ३. विष्णोर्नुकं—६ ऋक् (मंत्र), ४. आतेपितः—१५ ऋक् (मंत्र), ५. स्वाधिष्ठया—१० ऋक् (मंत्र), ६. वसोर्धारां अनुवाक—१ अनुवाक (आधा पेज का मंत्र)

यहाँ पर होम का पूर्णाहुति मार्जन विधान प्रकरण संपन्न हुआ। अथावभृथ स्थानीयं पूर्णपात्र जलेन मार्जनं कुर्यात। इसके बाद अवभृथ स्नान के स्थल पर पूर्ण पात्र जल से मार्जन करना चाहिये। पूर्वासादितं पूर्णपात्रं आस्तीर्णो दक्षिण पाणिना निधाय तत्रगङ्गादि पुण्यनीः स्मरन् दक्षिणपाणिना स्पृशन्। पहले स्थापित पूर्णपात्र को बिछाये गये बर्हिष् (कुशों) के ऊपर दाहिने हाथ से रखें दाहिने हाथ से छूकर वहाँ पर गङ्गादि पूण्यनदियों का स्मरण करें। पूर्णमसिपूर्णा मे भूयाः सुपूर्णमसि सुपूर्णा मे भूयाः। सदसिसन्मेभूयाः सर्वमसि सर्व में भूयाः॥ अक्षितिरसिमामेक्षेष्ठाः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपरोक्त मंत्रों को पूर्णपात्र छूकर पाठ करं। कुशाग्रैः प्रागादि पञ्चदिक्षुजलं मंत्रैः यथालिङ्गं सिञ्चेत्। कुशा के अग्र भाग से पूर्वादि पाञ्च दिशाओं में प्रोक्षण करें। (पूर्व में) प्राच्यां दिशि देवा ऋत्विजो मार्जयन्ताम्। दक्षिणस्यां दिशि मासाः पितरो मार्जयन्ताम्। अप उपस्पृश्य। हाथ धो लेवें। (पश्चिम में) प्रतीच्यां दिशि ग्रहाः पशवो मार्जयन्तां। (उत्तर में) उदीच्यां दिशि आप ओषधिवनस्पतयो मार्जयन्ताम। (ऊपर में) ऊर्ध्वायां दिशि ज्ञः संवत्सरः प्रजापतिर्मार्जयताम्।

ब्रह्मा चार्य या यजमान के द्वारा मार्जन—आपो अस्मानित्यस्य देवश्रवा आपस्त्रिष्प् मार्जने विनियोगः।

ॐ आपो॑ अ॒स्मान्मा॒तरः॑ शुंधयंतुंघृतेनंनोघृ॒तप्वः॑ पुनंतु। विश्वं॑ हिरि॒प्रंप॒वहँति देवीरुदिदाभ्यः॒ शुचि॒रापू॒तएँमि॥

(ऋग्वेद १०.१७.१०)

इदमापः सिंधुद्वीप आपोनुष्टुप् मार्जने विनियोगः।

ॐ इदमापः प्रवहतयत्किंचंदुरितं मयि। चद्वाहमभिदुद्रोहयद्वाशेपउतानृतं। (ऋग्वेद १०.९.८)

सुमित्र्यान आप ओषधयः सन्तु। इतना कहकर मार्जन करें।

दुर्मित्र्यास्तस्मै संतु योंस्मान्द्वेष्टियञ्चवयंद्विष्मः। (यजुर्वेद-आरण्यक)

इतना कहकर नैर्ऋत्य देश में कुशाग्र से जल छोडें। ततो ब्रह्मा यजमान वामपार्श्वे स्थित जल्यंजलौ तदभावे यजमानस्य अंजलौ पूर्णपात्रस्थं जलं आदाय जलं प्रत्यङमुखं निषिच्य। इसके बाद ब्रह्मा यजमान के अंजली में स्थित पूर्णपात्र के जल से प्रोक्षण करें।

ॐ माहं प्रजां परासिञ्चयानंः सयावंरीस्थनं। समुद्रेवों निनयानि स्वंपाथें अपीथ। (श्रौत मन्त्र)

उंत्र को कहते हुए पापनाश के लिए नीचे गिरे जल को समुद्र में गया मानकर हाथ में बचे शेष जल से अपना प्रोक्षण करें। ततः कर्ता अग्नेः वायव्ये स्थितः संस्थाजपेन उपतिष्ठते। इसके बाद यजमान अग्नि के वायव्य दिशा में खडे होकर संस्था जप जो कि आगे बताया जा रहा है उसके हाथ जोडकर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अग्नि की प्रार्थना करें। अग्नेत्वं न इति चतसृणां गौपायना लौपायनावा बंधुः सुबुन्धः श्रुतबंधुर्विप्रबन्धुश्च एकैकर्चा ऋषयः अग्निर्देवता द्विपदाविराट् छन्दः। अग्न्युपस्थाने विनियोगः।

ॐ अग्नेत्वं नो अंतमउतत्राता शिवोभवावरूथ्यः। वसुरग्निर्वसुश्रवा अच्छानक्षिद्युमत्तमंरयिंदाः॥
सनो बोधिश्रुधीहवं मरुष्याणो अघयतः समस्मात्। तंत्वा शोचिष्ठदीदिवः सुम्नायनूनमीं महेसखिभ्यः॥

(ऋग्वेद ५.२४.१-२-३-४)

ॐ चमे स्वरश्च मे यज्ञोपचतेनमश्च। यत्तेन्यूनं तस्मैत उपयत्तेतिरिक्तं तस्मै ते नमः। अग्नये नमः। ॐ स्वस्ति। *(अग्निमुख)*

श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं श्रियं बलं। आयुष्यं तेज आरोग्यं देहि मे हव्यवाहन॥ श्री यज्ञेश्वराय नमः।

कलश जल मार्जन विधान—कलश जलेन मार्जनं करिष्ये। तदङ्गत्वेन पुनः पूजां करिष्ये। आवाहित देवताभ्यो नमः। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि। स्वागतम्। पादारविन्दयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोः अर्घ्यं अर्घ्यं समर्पयामि। मुखे आचमनीयं समर्पयामि। स्नानं समर्पयामि। वस्त्रं समर्पयामि। उपवीतं समर्पयामि। आभरणं समर्पयामि। गन्धं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पाणि समर्पयामि। धूपमाघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि। अमृतोपहारं निवेदयामि। क्रमुकताम्बुलं समर्पयामि। नीरजनं समर्पयामि। मंत्रपुष्पं समर्पयामि। प्रदक्षिणा नमस्कारान् समर्पयामि। प्रसन्नार्घ्यं समर्पयामि। सर्वोपचारपूजां समर्पयामि। कलशों का पूजन करें।

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उपप्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशूर्भवा सचा॥ *(ऋग्वेद १.४०.१)*
अभ्यार मिदद्रयो निषिक्तं पुष्करे मधो अवतस्य विसर्जने। *(ऋग्वेद ८.७२.११)*

आवाहित देवताभ्यो नमः। यथा स्नानं उद्वासयामि। कहकर आवाहितदेवताओं का अक्षत डालकर विसर्जन करें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ मण्डप ईशाने ग्रहवेद्याः प्रागुदीच्यां शुचौ देशे संमृष्टे पञ्चरंगैः स्वस्तिकं कृत्वा चतुष्पदं दीर्घचतुरस्त्रं सोत्तरच्छदं पीठं निधाय तत्र उदगग्रान् आमूलान् हरितदर्भानास्वीर्य तत्र यजमानं परिहित नववस्त्रं पाडमुखमुपवेश्य आचार्यः ऋत्विग्भिः सह मङ्गलवाद्यैः अभिषेक कुम्भोदकं पात्रान्तरे आदाय प्रत्यडमुखः तिष्ठन् स पलाशया औदुंबर्यार्द्रशाख्या सहिरण्य पवित्रया स कुश दूर्वा पल्लवया हस्तमन्तर्धाय उदक पृषद्भिरब्लिङ्गाभिः वारुणीभिः पावमानीभिः अन्यामिः च शान्ति पवित्र लिङ्गभिः ग्रहाभिषेकमन्त्रैः (सुरास्त्वा मिति) इमा आपः शिवतमा इति त्रि ऋचेन देवस्त्वेति च यजुषा भूर्भुवः स्वः इति व्याहृतिभिः। अभिषिञ्चेत्। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

मण्डप के ईशान्य में ग्रहवेदी के ईशान्य में पवित्र देश में शुद्धीकृत भूमि पर पाँच रंगों से स्वस्तिक लिखें। चार पाँव वाला चौकार पीठ पर ऊपर वस्त्र बिछाकर उस पर हरे कुशाओं को उत्तर की ओर अग्र हो ऐसे बिछाना चाहिये। यजमान नवीन वस्त्रों को पहनकर उस पर पूर्वाभिमुख होकर बैठें। ऋत्विजों के साथ आचार्य मङ्गलवाद्यों को सुनते हुए कलशों के जल को एक अलग पात्र में निकाल लेवें। फिर पश्चिमाभिमुख खडे होकर पलाश, उदुम्बर, हिरण्यपवित्र कुश दूर्वा पल्लव इन सब का एक गुच्छे को हाथ में पकडकर जल के बिन्दुओं को जो कि वरुण देवता के प्रतीक है उन्हें वरुण देवताक मन्त्रों से, पवमान मन्त्रों से, इतर शान्ति मत्रन्, पवित्र मन्त्र, ग्रह मंत्र इमा आपः आदि तीन मंत्र देवस्यत्वा इस यजुर्वेद मंत्र से एवं व्याहृति मंत्रों का पाठ करते हुए अभिषेक (प्रोक्षणाण) करना चाहिये। आपोहिष्ठेति नवर्चस्य सूक्तस्य आम्बरीष सिन्धु द्वीप आपो गायत्री पञ्चमी वर्धमान सप्तमी प्रतिष्ठा अन्त्ये द्वे अनुष्टुबौ मार्जने विनियोगः।

ॐ आपो॒ हिष्ठा मयो॒ भुव॒स्तान॑ ऊ॒र्जे द॑धातन। म॒हेरणा॑य॒ चक्ष॑से॥
यो वः॑ शि॒वतमो॒ रस॒स्तस्य॑ भाजयते॒ हनः॑ उ॒श्तीरि॑व मा॒तरः॑॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तस्मा॒ अरं॑गमामवो॒ यस्य॒ क्षया॑य॒ जिन्व॑थ। आपो॑ ज॒नय॑था च नः॥
शं नो॑ दे॒वीर॒भिष्ट॑य आपो॑ भवन्तु पी॒तये॑। शं यो र॒भिस्र॑वन्तु नः॥
ईशा॑ना॒ वार्या॑णां॒ क्षय॑न्तीश्चर्षणी॒नाम्। अ॒पो या॑चामि भेष॒जम्॥
अ॒प्सु मे॒ सोमो॑ अब्रवीद॒न्तर्विश्वा॑नि भेष॒जा। अ॒ग्निं च॑ वि॒श्वशं॑भुवम्॥
आपः॑ पृणी॒त भे॑ष॒जं वरू॑थं त॒न्वे३॑मम॑। ज्योक्च सूर्यं॑ दृ॒शे॥
इदमा॑पः॒ प्र॑वहत॒ यत् किं च॑ दुरि॒तं मयि॑। यद्वाहम॑भि॒दुद्रोह॒ यद्वा॑ शे॒प उ॒तानृ॑तम्॥
आपो॑ अ॒द्यान्व॑चारिषं॒ रसे॑न॒ समग॑स्महि। पय॑स्वानग्न॒ आ ग॑हि तं मा॒ सं सृ॑ज॒ वर्च॑सा॥ (ऋग्वेद १०.९.१ से ९ तक)

तत्वायामीति तिसृणां आजीगर्तिः शुनः शेपः सकृत्रिको वैश्वामित्रो देवरातो वरुणा स्त्रिष्टुप् मार्जने विनियोगः।

ॐ तत्वा॑यामि ब्रह्म॑णा वंद॑मान॒स्त दाशा॑स्ते॒यज॑मानो ह॒विर्भिः॑। अहे॑ळमानो वरुणे॒ह बो॒ध्युरु॑शंस॒मान॒ आयुः॒ प्रमो॑षीः॥
तदिन्न॑क्तं॒ तद्दिवा॒मह्य॑माहु॒ स्तद॒यंकेतो॑ हृद आ॒विच॑ष्टे। शुन॒ःशेपो॒ यमह्व॑द्ब॒ भीतस्त्रिष्वा॑दि॒त्यन्द्रुप॒देषु॑ब॒द्धः।
अवै॑नं॒ राजा॒वरु॑णः ससृ॒ज्याद्वि॒द्वाँ अद॑ब्धो॒ विमु॑ मोक्तु॒ पाशा॑न्। (ऋग्वेद १.२४.११-१२-१३)

स्वाधिष्ठ येतितिसृणां वैश्वामित्रोमधुच्छन्दाः पवमान सोमो गायत्री मार्जने विनियोगः।

ॐ स्वादि॑ष्ठया॒ मदि॑ष्ठया॒ पव॑स्व सोम॒ धार॑या। इन्द्रा॑य॒ पात॑वे सु॒तः॥
र॒क्षो॒हा वि॒श्वच॑र्षणिर॒भि योनि॒मयो॑हतम्। द्रुणा॑ स॒धस्थ॒ मास॑दत्॥
व॒रि॒वो॒धातमो भव॒ मंहि॑ष्ठो वृत्र॒हन्त॑मः। पर्षि॒ राधो॑ म॒घोनाम्॥ (ऋग्वेद ९.१.१-२-३)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शं न इन्द्राग्नीति पञ्चदशर्चस्य सूक्तस्य मैत्रा वरुणिर्वसिष्ठः वामदेवः त्रिष्टुप् मार्जने विनियोगः।

ॐ शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रा वरुणा रातहव्या।
शमिन्द्रासो मा सुविताय शं योः शं न इन्द्रा पूषणा वाजसातौ॥
शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरंधिः शमु सन्तु रायः।
शं नः सत्यस्य सुयमस्य शं सः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु॥
शं नो धाता शमुधर्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः।
शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु॥
शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणा वश्विना शम्।
शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः॥
शं नो द्यावा पृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु।
शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः॥
शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः।
शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टा ग्नाभिरिह शृणोतु॥
शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमुसन्तु यज्ञाः।
शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु।
शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः॥
शं नो अदिति र्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः।
शं नो विष्णुः शमुपूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः॥
शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः।
शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजायाः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शंभुः॥
शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु।
शमभिषाचः शमु रातिषाचे शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः॥
शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः।
शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु॥
शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः१शं समुद्रः।
शं नो अपां नपात् पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा॥
आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्तेदं ब्रह्म क्रियमाणं नवीयः।
शृण्वन्तु नो दिव्याः पार्थिवासो गोजाता उत ये यज्ञियासः॥
ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ (ऋग्वेद ७.३५.१ से १५)

सर्वादभुत् शान्तियाग में इस शमग्नि सूक्त का अधिक महत्व है। अतः। १५ मंत्रों से मार्जन करना चाहिए। शेष योगों में ३ या १५ मंत्रों से समयानुसार करना चाहिए। पवित्रंत इति तिसृणामाङ्गीरसः पवित्रः पवमान सोमो जगती मार्जने विनियोगः।

ॐ पवित्रन्ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः।
अतप्ततनूर्नतदामो अश्नुतेशृतासइद्वहन्तस्तत्समाशत ॥
तपोष्पवित्रंविततं दिवस्पदेशोचन्तो अस्यतंतवोव्यं स्थिरन्।
अवन्त्यस्य पवीतारमाशवोदिवस्पृष्ठ मधितिष्ठति चेतसा ॥
अरूरुचदुषसः पृश्निरग्रिय उक्षा विभर्ति भुवनानि वाजयुः।
मायाविनोममिरे अस्यमाययानृचक्षसः पितरोगर्भमादधुः ॥ (ऋग्वेद ९.८३.१-२-३)

अथ ग्रहमंत्राः—

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेनाऽऽदेवोयाति भुवनानि पश्यन् ॥ (ऋग्वेद १.३५.२)
ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियम्। भवा वाजस्य सङ्गथे ॥ (ऋग्वेद १.९१.१६)
ॐ अग्निमूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति ॥ (ऋग्वेद ८.४४.१६)
ॐ उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिंध्वं बहवः सनीळाः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दुधि्क्रामग्निमुषसं च देवीमिन्द्रावतोऽवसे निह्वये वः॥ (ऋग्वेद १०.१०१.१)
ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुं मज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ (ऋग्वेद २.२३.१५)
ॐ शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि।
विश्वा हि माया अवसि स्वधावो भद्रा ते पूषन्निहरातिरस्तु॥ (ऋग्वेद ६.५८.१)
ॐ शमग्निरग्निभिः करच्छंनस्तपतु सूर्यः। शं वातो वात्वरपा अपस्त्रिधः॥ (ऋग्वेद ८.१८.६)
ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदावृधःसखा। कयाशचिष्ठया वृता॥ (ऋग्वेद ४.३१.१)
ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥ (ऋग्वेद १.६.३)
ॐ ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणाकारकः। विषमस्थान संभूतां पीडां हरतु ते रविः॥
रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः। विषमस्थान संभूतां पीडां हरतु ते विधुः॥
भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत्सदा। वृष्टिकृद्वृष्टिहर्ता च पीडां हरतु ते कुजः॥
उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः। सूर्यप्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु ते बुधः॥
देवमंत्री विशालाक्षः सदालोकहितेरतः। अनेक शिष्यसंपूर्णाः पीडां हरतु ते गुरुः॥
दैत्यमंत्री गुरुस्तेषां प्राणदश्चमहामतिः। प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीडां हरतु ते भृगुः॥
सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः। मंदचारः प्रसन्नात्मना पीडां हरतु ते शनिः॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महाशिरामहावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः अतनुश्चोर्ध्व केशश्च पीडां हरतु ते तमः ॥
अनेक रूप वर्णैश्च शताशोथ सहस्त्रक्षः। उत्पातरूपो जगतः पीडां हरतु ते शिखी ॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

यहाँ पर नवग्रह मार्जन मन्त्र पूर्ण हुए। अब देव मंत्रों से मार्जन करें।

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्म विष्णु महेश्वराः। वासुदेवो जगन्नाथस्तथा संकर्षगणो विभुः ॥
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवंतु विजयायते। आखण्डलोग्नि र्भगवान् यमोवैनिर्ऋतिस्तथा ॥
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः। ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पांतु ते सदा ॥
कीर्तिलक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रियामतिः। बुद्धिर्लज्जावपुःशान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः ॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः। आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीव सितार्कजाः ॥
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः। देवदानवगंधर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः ॥
ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च। देवपत्न्यो द्रुमानागादैत्याश्चाप्सरसां गणाः ॥
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च। औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये ॥
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदानदाः। एतेत्वामभिषिञ्चंतु सर्वकामार्थ सिद्धये ॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

श्री सूक्त से मार्जन करें। हिरण्यावर्णामिति पञ्चदशर्चस्य सूक्तस्य आनन्द कर्दम चिक्लीतेंदिरासुता ऋषयः श्रीरग्नि श्चेत्युभे देवते आद्यास्तिस्त्रो अनुष्टुभः चतुर्थी प्रस्तार पंक्तिः पञ्चमी षष्ठयौ त्रिष्टुभौ ततोष्टावनुष्टुभोंत्या प्रस्तार पंक्तिः मार्जने विनियोगः।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्री र्मा देवी जुषताम्॥
कां सोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्॥
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव जुष्टामुदाराम्। तां पद्मनीमीं शरणंऽ प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥
आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मा या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥
कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

इमा आप इति तिसृणां ऐतरेय आपो अनुष्टुप् जगत्यनुष्टुभः मार्जने विनियोगः।

इमा आपः शिवतमा इमाः सर्वस्य भेषजीः। इमा राष्ट्रस्य वर्धनीरिमाराष्ट्रभृतोमृताः॥
याभिरिन्द्रमभ्य षिञ्चत्प्रजापतिः सोमं राजानं वरुणं यमं मनुं।
ताभिरद्भिरभिषिञ्चामित्वामहं राज्ञां त्वमधि राजौ भवेह।
महांतं त्वामहीनां सम्राजंचर्षणीनां देवी जनित्र्यजीजनद्भद्राजनित्र्यजीजनत्॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

अरिष्टनेमिः तार्क्ष्यः तार्क्ष्यः त्रिष्टुप् मार्जने विनियोगः।

ॐ त्यमूषु वाजिनं देवजूतं सहावानं तरुतारं रथानाम्। अरिष्टनेमिं पृतनाजमाशुं स्वस्तये तार्क्ष्यमिहा हुवे॥
इन्द्रस्येव रातिमाजोहुवानाः स्वस्तये नावमिवा रुहेम। उर्वी न पृथ्वी बहुले गभीरे मावामेतौ मा परेतौ रिषाम॥
सद्यश्चिद्यः शवसा पञ्च कृष्टीः सूर्य इव ज्योतिषापस्ततान। सहस्रशाः शतसा अस्य रंहिर्नस्मा वरन्ते युवतिं न शर्याम्॥

(ऋग्वेद १०.१७८.१-२-३)

देवस्यत्वेत्यस्यै तरेयः सविताश्विनो पूषाच यजुः मार्जने विनियोगः।

ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यामग्ने स्तेजसा सूर्यस्य वर्चसेन्द्रस्येंद्रियेणाभि
षिञ्चामि। बलाय श्रियै यशसे न्नाद्याय भूर्भुवः स्वः। अमृताभिषेकोस्तु शांतिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु। (यजुर्वेद-१ काण्ड-१ प्रश्न-४ अनुवाक)
ॐ तच्छंयोरावृणीमहे गातुं यज्ञाय गातुं यज्ञपतये। दैवीं स्वस्तिरस्तु नः स्वस्तिर्मानुषेभ्यः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऊर्ध्व जिगातु भेषजं शं नो अस्तु द्विपदेशं चतुष्पदे॥ *(ऋग्वेद दशममण्डलस्य परिशिष्टम्)* ॐ शान्तिः शान्तिः शन्तिः

मार्जन विधान संपूर्ण—ततो यमजानः अभिषेक वस्त्रं आचार्याय दत्वा श्वेताम्बरं श्वेतचन्दनं श्वेतपुष्पाणि च धृत्वा अभिषेक शालातो अग्नि समीपं आगत्य आचम्य तीर्थ प्राशनं कुर्यात्। इसके पश्चात् अभिषेक के वस्त्र को आचार्य को देकर नूतन सफेद वस्त्र, सफेद चन्दन एवं सफेद फूलमाला धारण कर अभिषेक स्थल से अग्नि के पास जाकर आचमन करें एवं तीर्थ प्राशन करें।

आप इद्वाउ भेषजीरापो अमीवचातनीः। आपः सर्वस्य भेषजी स्तास्ते कृणवन्तु भेषजम्॥ *(ऋग्वेद १०.१३७.६)*
आपो वै भेषजं भेषजमेवास्मै करोति। सर्वमायुरेति॥ *(श्रुतिः)*

कहकर तीर्थ प्राशन करें। पुनः आचमन करें। **प्रधान कलश एवं उपकलश, नवग्रह धान्य एवं अन्य वस्तुओं का दान, गोदान**

प्रधान कलश दान—सवस्त्र प्रतिमं कुम्भं प्राप्तारिष्टनिवृत्तये। तुभ्यं दास्यामि विप्रेन्द्र यथोक्तफलदोभव॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

सदक्षिणाकं सवस्त्र प्रधान कलश दानं सूर्य प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

उप कलशदान—सवस्त्र प्रतिमं कुम्भं प्राप्तारिष्ट निवृत्तये। तुभ्यं दास्यामि विप्रेन्द्र यथोक्त फलदोभव॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

सदक्षिणाकं सवस्त्र उपकलशदानं आवाहित देवता प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं प्रददे। दत्तं न मम न मम।

सूर्य प्रीत्यर्थे गोधूम धान्य दान—गोधूमाः सर्वजन्तूनां बलपुष्टिविवर्धकाः। यस्मादेषां प्रदानेन स मे सूर्यः प्रसीदतु॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

स दक्षिणाकं गोधूम दानं आदित्य प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं स्त्रप्रददे। दत्तं न मम न मम।

चन्द्र प्रीतये तण्डुल दानम्—तण्डुलं वैश्वदेवत्यं पाकेनान्नं प्रयच्छति। यस्मादस्य प्रदानेन स मे चन्द्रः प्रसीदतु॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स दक्षिणाकं तण्डुलदानं चन्द्र प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

अङ्गारक प्रीतये गुडाढक दानम्—आढकाः सर्वजन्तूनां बलपुष्टिविवर्धकाः। यस्मोदेशषां प्रदानेन स मे भौमः प्रसीदतु॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)* स दक्षिणाकं गुडाढक दानं अङ्गारक प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न।

बुध प्रीतये मुद्गदानम्—मुद्गबीजानि वै यस्मात् प्रियाणि परमेष्ठिनः। यस्मादेषां प्रदानेन स मे सौम्यः प्रसीदतु॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

स दक्षिणाकं मुद्गदानं बुध प्रीतिं कागयमानः तुभ्यमहं संप्रददे दत्तं न मम न मम।

बृहस्पति प्रीतये चणाकदानम्—गोवर्धनाचलोद्धार समये हरिभक्षिताः। यस्मादेषां प्रदानेन स मे जीवः प्रसीदतु॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*स दक्षिणचणाकदानं बृहस्पति प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

शुक्र प्रीतये निष्पावदानम्—विष्पावाः सर्वजन्तूनां बल पुष्टिविवर्धकाः। यस्मादेषां प्रदानने स मे शुक्रः प्रसीदतु॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

स दक्षिणाकं निष्पावदानं शुक्र प्रीतिं कामयामानः तुभ्यमहंसंप्रददते। दत्त न मम न मम।

शनैश्चर प्रीतये तिलदानम्—तिलाः कश्यपसंभूताः तिलाः पापहराः शुभाः। तिलदान प्रदानेन स मे मन्दः प्रसीदतु॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

स दक्षिणाकं तिलदानं शनैश्चर प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

राहु प्रीतये माषदानम्—यस्मान्मधुवधे काले विष्णोर्देहसमुद्भवाः। यस्मादेषां प्रदानेन स मे राहुः प्रसीदतु॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

स दक्षिणाकं माषदानं राहु प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दततं न मम न मम।

केतु प्रीतये कुलित्थ दानम्—अग्निगर्भोद्भवाः सौम्याः केतु प्रियकराः सदा। कुलित्थाः सर्व पापघ्नाः अतः शान्तिं प्रयच्छ

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मे ॥

(स्मृति सङ्ग्रह)

स दक्षिणाकं कुलित्थदानं केतु प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

गोदान—गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश। यस्मादस्याः प्रदानेन स म देवः प्रसीदतु॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

स दक्षिणाकं गोदानं प्रधान देवता रुद्रः प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम

हिरण्य दान—(आवाहित सभी देवताओं के प्रसन्नाता के लिए)

हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेम बीजं विभावसोः। अनन्त पुण्य फलदं अतः शान्तिं प्रयच्छमे॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

स दक्षिणाकं हिरण्यदानं आवाहितानां देवानां प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे दत्तं न मम न मम। आगे लिखने वाले दान ऐच्छिक है।

सूर्य के लिए—यज्ञस्य प्रतिष्ठासिद्ध्यर्थ श्रीसूर्य प्रीत्यर्थ इमां कपिलां अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे आचार्याय सदक्षिणां संप्रददे।

कपिले सर्वदेवानां पूजनीयासिरोहिणी। तीर्थ देवमयी यस्मादतः शान्तिं प्रयच्छमे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)* दत्तं न मम न मम।

सोमाय शङ्खम्—पुण्यस्त्वं शंख पुण्यानां मंगलानां च मगलम्। विष्णुनाविधृतोनित्यमतः शान्तिं प्रयच्छमे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

सदक्षिणाकं शंखदानं सोमप्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

भौमाय वृषम्—धर्मस्त्वं वृषरूपेण जगदानन्दकारकः। अष्टमूर्ते रधिष्ठान मतः पाहि सनातन॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

स दखिणाकं वृषदानं भौमप्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बुधाय हिरण्यम्—हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजंविभावसोः। अनन्तपुण्यफलदं अतः शान्तिं प्रयच्छमे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

स दक्षिणाकं हिरण्यदानं बुध प्रीतिं कामयमानः तुश्यमहं संप्रददे। दततं न मम न मम।

गुरवे पीतवस्त्रम्—पीतवस्त्रयुगं यस्मा द्वासुदेवस्यवल्लभं। प्रदानस्तस्य वै विष्णोस्ततः शान्तिं प्रयच्छमे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

स दक्षिणाकं पीतवस्त्रदानं बृहस्पति प्रीतिं कामयमानः तूभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

शुक्राय अश्वम्—विष्णुस्त्वमश्वरूपेण यस्मादमृतसंभवः। चन्द्रार्क वाहनं नित्यमतः शान्तिं प्रयच्छमे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

स दक्षिणाकं अश्वदानं शुक्र प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं स्त्रप्रददे। दन्तं न मम न मम।

शनये कृष्णां गाम्—यस्मात्वं पृथिवी कृष्णा धेनुः केशव संनिभा। सर्वपापहरानित्यं अतः शान्तिं प्रयच्छमे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

स दक्षिणाकं कृष्णां गां शनैश्चर प्रीतिं कामय मानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

राहवे लोहम्—यस्मादायसकर्माणि त्वदधीनानि सर्वदा। लाङ्गलान्यायुधादीनि तस्माच्छन्तिं प्रयच्छमे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

स दक्षिणाकं लोह दानं राहु प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

केतवे छाङ्गम्—यस्मात्वं छागयज्ञानां अङ्गत्वेन व्यवस्थितः। यानं विभवसोर्नित्यमतः शान्तिं प्रयच्छमे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

स दक्षिणाकं छाग दानं केतु प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम। ततः कर्ता अग्नेः वायव्ये स्थितः। संस्थाजपेन उपतिष्ठेत। इसके बाद यजमान अग्नि के वायव्य दिशा में खड़ें होकर संस्था जप जो बताया जा रहा है उससे हाथ जोडकर अग्नि की प्रार्थना करें। अग्नेत्वं न इति चतसृणां गौपायना लौपायना वा बन्धुः सुबन्धुः श्रुतबंधु विप्रबन्धुश्च एकैकर्चा ऋषयः। अग्निर्देवता द्विपदाविराट् छन्दः। अग्न्युपस्थाने विनियोगः।

ॐ अग्नेत्वंनो अंतमउतत्राता शिवोभवावरूथ्यः। वसुरग्निर्वसुश्रवा अच्छानक्षिद्युमत्तमंरयिंदाः॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सनों बोधिश्रुधीहवंमुरुष्याणों अघायतः संमस्मात्। तंत्वांशोचिष्ठदीतिदवः सुम्नायनूनमीं महेसखिंभ्यः॥
ॐ चंमे स्वरश्चमे यज्ञोपंचतेनमंश्च। यन्तेंन्यूनं तस्मैंत उपंयत्तेतिरिक्तं तस्मैं ते नमंः॥ *(ऋग्वेद ५.२४.१-२-३-४)*

अग्नये नमः। ॐ स्वसित। श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं श्रियं बलं। आयुष्यं तेज आरोग्यं देहि मे हव्यवाहन॥ मानस्तोक इत्यस्य कुत्सोरुद्रोजगती। विभूति ग्रहणे विनियोगः।

ॐ मानंस्तोके तनये मानं आयौ मानो गोषुमानो अश्वेंषुरीरिषः।
वीरान्मानोंरुद्रभामितो वंधीर्ह विष्मंन्तः सदुमित्वां हवामहे॥ *(ऋग्वेद १.११४.८)*

इति स्रुव बिलपृष्ठैनैशानीगतां विभूतिं गृहीत्वा। उपरोक्त मंत्र का पाठ करेत हुए स्रुवा के बिल के पिछले हिस्से के ईशान भाग से भस्म (होम का) को निकालें। **ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे** (ललाट में भस्म लगायें) **ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं इति कण्ठे** में भस्म लगायें) **ॐ कश्यपस्यस्य त्र्यायुषं इति नाभौ** (नाभि में भस्म लगायें) **ॐ यद्देवानां त्र्यायुषमिति दक्षिणास्कन्धे** (दाहिने भुजा में भस्म लगायें) **ॐ तन्मे अस्तु त्र्यायुषं इति वामस्कन्धे** (बायें भुजा पर भस्म लगायें) *(यजुर्वेद ब्राह्मण)* ततः अग्निं परिसमुह्य पर्युक्ष्य परिस्तरणानि विसृज्य।

अग्नि का परिसमूहन एवं पर्युक्षण करें। इसके बाद जिस प्रकार से डाले थे उसी प्रकार पूर्व से उन परिस्तरणी को अग्नि में डाल दें (विर्जन)। हाथों में जल लेकर पूर्वदिश से प्रारम्भ करके प्रदक्षिणाकार में चारों ओर मार्जन करने की क्रिया परिसमूहन कहलाता है। पहले हाथ धो लें फिर जलयुक्त हाथ से पूर्वादि दिशाओं को स्पर्श करना चाहिये। पुनः हाथ धोकर इसी क्रिया को दो बार और करना चाहिये यह क्रिया परिसमूहन कहलाता है। अग्नरैशानतस्त्रिरंभसा परिषेचनं। हाथ में जल लेकर ईशान्य से ईशान्य तक तीन बार जल से परिषिञ्चन करें।

अग्नि पूजन—विश्वामित्र इति तिसृणामात्रेयो वसुश्रुतोग्निस्त्रिष्टुप् द्वयोरर्चने अन्त्याया उपस्थाने विनियोगः।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ विश्वानि॒ो दुर्गहा जातवेदः। (पूर्व में पुष्पाक्षत से अग्निदेव का पूजन करें) **ॐ सिन्धुंनना॒वादु॑रि॒तातिप॑र्षि।** (आग्नेय में पूजन करें) **ॐ अग्ने॑ अत्रि॒वन्नम॑सागृणा॒नः।** (दक्षिण में पूजन करें) **ॐ अ॒स्माकं॑ बोध्यवि॒तात॒नूना॑।** (नैर्ऋत्य पूजन करें) **ॐ यस्त्वा॑हृ॒दाकी॒रिण॒मन्यमानः।** (पश्चिम में पूजन करें) **ॐ अम॑र्त्यं॒ मर्त्यो॒जोह॑वीमि।** (वायव्य में पूजन करें) **ॐ जात॑वेदो॒यशो॑ अ॒स्मासु॑धेहि** (उत्तर में पूजन करें) **ॐ प्र॒जाभि॑रग्ने अमृत॒त्वम॑श्यां।** (ईशान्य में पूजन करें) **ॐ यस्मै॒त्वं सु॒कृते॑ जातवेद उलो॒कम॑ग्ने कृ॒णव॑स्यो॒नं। अ॒श्विनं॒ सपु॒त्रिणं॑ वी॒रव॑न्तं॒ गोम॑तं र॒यिंन॑शते स्व॒स्ति॥** *(ऋग्वेद ५.४.६.१०.११)*

इन मंत्रों को कहकर पूजन एवं नमस्कार करें। (घी में छाया देखकर दान देने का मंत्र)

रू॒पं रू॑पं॒ प्रति॑रूपो बभूव॒ तद॑स्य रू॒पं प्रति॒चक्ष॑णाय।
इन्द्रो॑ मा॒यामिः॑ पुरु॒रूप॑ ईयते यु॒क्ता ह्य॑स्य॒ हर॑यः श॒तादश॑। *(ऋग्वेद ६.४७.१८)*

कामधेनु समुद्भूतं सर्वक्रतुषुसं स्थितं। देवानामाज्यमाहारः अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥ सदक्षिणाकं आज्यदानं सूर्यः प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संपददे। दत्तं न मम न मम। अनेन अवेक्ष्याज्य दानेन सूर्यः सुप्रीतो अस्तु इति अनु गृह्णन्तु। तथास्तु। आचरित याग संपूर्ण फलावाप्तिरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु। तथास्तु। पुनः पूजां करिष्ये। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि। स्वागतम् समर्पयामि। पादयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोः अर्घ्यं अर्घ्यं समर्पयामि। मुखे आचमनं समर्पयामि। स्नानं समर्पयामि। वस्त्रं समर्पयामि।

उपवीतं समर्पयामि। आभ्रणं समर्पयामि। गंधं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पाणि समर्पयामि। धूपमाघ्रा पयामि। दीपं दर्शयामि। हुतशिष्ट आज्योपहारं निवेदयामि। क्रमुकताम्बूलं समर्पयामि। मङ्गल नीराजनं समर्पयामि। मंत्रपुष्पं समर्पयामि। प्रदक्षिण नमस्कारान् समर्पयामि। प्रत्नार्घ्यं समर्पयामि। सवोपचारपूजां समर्पयामि। ब्रह्मा आचार्य एवं ऋत्विजों को दक्षिणा देवें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेम बीजं विभावसोः। अनन्त पुण्य फलदं अतः शान्तिं प्रयच्छमे॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*॥ आचरित याग संपूर्ण फलावाप्त्यर्थं यथांशं दक्षिणां प्रतिपादयामि। संपूर्ण फलावाप्तिरस्तु।

अग्नि विसर्जन—गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर। यत्र ब्रह्मदयो देवाः तत्र गच्छ हुताशन॥ *(उद्वासनं सङ्ग्रह)* कहकर पुष्पाक्षत डालकर अग्नि का विर्सजन करें। ग्रहपीठ सहित शेष सामग्रियों को आचार्य को दान दे देवें।

ब्रह्मार्पण विधान—यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो होम क्रियादिषु। न्यूनं संपूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥ *(सङ्ग्रह)*

ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥ *(भगवद्गीता)*

अनेन सग्रहमख सूर्य सर्वाद्भुत शान्ति होम कर्मणा सपरिवारः भगवान् सूर्यः नारायण प्रीयताम्। यागमध्ये मंत्रतन्त्रविपर्यासादि सर्वदोष परिहारार्थं नामत्रय जपं करिष्ये। ॐ अच्युताय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ गोविन्दाय नमः। ॐ हराय नमः। ॐ मृडाय नमः। ॐ शंभवे नमः। इति जपेत्। कर्म के अन्तें पवित्र का विर्जन करके दो बार आचमन करें। ॐ तत् सत्। यथाशक्ति ब्राह्मण सुवासिनी भोजन करवायें।

सूर्य सर्वाद्भुत शान्तियाग संपन्न हुआ।

षष्ठ दिन द्वितीय प्रहर सम्पन्न

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परिशिष्ट

सूर्य सर्वाद्भुत शान्ति याग के भेद—शास्त्रों में अनेक प्रकार के सर्वाद्भुत वर्णित है। कुछ आचार्यो ने उन्हें ८ वर्गो में विभक्त किया है। प्रत्येक वर्ग में उत्पात या अद्भुतों का वर्णन हैं। उनके देवताओं का वर्णन भी है। वर्तमान में ५२८ पृष्ठों का जो सर्वाद्भुत शान्ति याग का प्रयोग प्रेषित है, वह इन ८ में एक है। सभी में प्रयोग विधन यही रहेगा। प्रधान देवता एवं उनके नाम बदलते हैं।

१-प्रथम प्रकार (राजकीय उत्पात शमन)—

पुरुषः पुत्रदारं वा धनधान्यमथापि वा। निमित्तैर्यैर्विनश्येत शांन्तिं तत्र निबोधत॥ १॥
इन्द्रायुधं भवेद्रात्रौ दृश्यते यस्य कस्यचित्। दर्वी करे वा भिद्येत मणिः कुम्भस्तथैव च॥ २॥
छत्रं शय्यासनं चैव अन्यद्वापि स्वयं क्वचित्। स्त्री हन्याच्च स्त्रियं वापि गौरवघ्रेदुलूखलम्॥ ३॥
श्वा बिद्गामनड्वाहं कलिः संपद्यते कुले। गजवाजिनो म्रियन्ते विवादो राजकीयकः॥ ४॥
कुटुम्बमशुभं सर्वमैन्द्रयेतानि निर्दिशेत्। शाम्यन्ति येन सर्वाणि निर्वपेत् पयया चरुम्॥ ५॥
समावाय घृतं तत्र आहुतिं पुहुयादिम्। इन्द्रमिद्देवतातये स्थालीपाकस्य होमयेत्॥ ६॥
इन्द्रः शचीपतिः शक्रो वज्रपाणिः सुरेश्वरः। सर्वाद्भुतानां शमनो महाव्याहृतयस्तथा॥ ७॥
हुत स्विष्टकृतं चैव चरुतन्त्रं समापयेत्। विमुक्तोत्पातदोषस्तु जीवेत्तु शरदः शतम्॥ ८॥

नोटः-परिशिष्ट पूरा सर्वाद्भुत सार सङ्ग्रह से लिया गया है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विभिन्न कारणों से जब कोई व्यक्ति पुत्र, पत्नी, धन, धान्य आदि वस्तुओं को खो देता है॥ १ ॥ जब रात्रि में इन्द्रधनुष दिखाई दें, होम करने वाले स्रुक् एवं स्रुव भिन्न हो तो, रत्न एवं पूजा के कलश भग्न हो तब॥ २ ॥ राजछत्र, सोने वाला पलङ्ग, बैठने वाला आसन आदि अकारण यदि टूट जाय, स्त्री द्वारा स्त्री की हत्या होने पर, गाय घर के अन्दर आकर उलूखल को सूंघे तो॥ ३ ॥ कुत्तो के द्वारा साण्ड के भत होने पर, वंश में झगड़ा होने पर, विना कारण हाथी एवं घोडें मृत हो, राजकीय विवाद हो॥ ४ ॥ कुटुम्ब में अशुभ हो उपरोक्त सभी उपद्रवों के शमनकर्ता इन्द्र हैं। उसके लिए दूध से बनाया गया चरु से होम करना चाहिये। उससे उपरोक्त उपद्रवों की शान्ति होती है। ५५ ॥ दूध में बने चरु में घी डालें। "इन्द्र भिद्देवतातये" इस मंत्र से होम करं॥ ६ ॥ यह याग विशेषतः राजकीय घर्षण, एवं विवाद से जब देश को कष्ट हो तब करना चाहिये। विधान सभी पूर्वोक्त ही हैं। वहाँ पर प्रधान देवता रुद्रः है यहाँ पर प्रधान देवता इन्द्र है। अत्यल्प परिवर्तनों के साथ इस याग को संपन्न कर सकते हैं। जिस प्रकार रुद्रः के पाँच नाम मंत्र थे। उसी प्रकार इस विधान में, शचीपति, शक्र, वज्रपाणि एवं सुरेश्वेर नाम मंत्र हैं। इसके साथ सर्वाद्भुत शमन नाम मंत्र भी लेवें। महाव्याहतियों से आज्य होम करें॥ ७ ॥

स्विष्टकृत् होम करके याग को पूर्ण करना चाहिये। इससे उत्पात दोष निवारण होकर प्रजा १०० साल तक जीवित रहते हैं।

२-द्वितीय प्रकार (जल सम्बन्धी उत्पात शमन)—

उद्दीपिका गृहे यस्य वल्मीका मधु जालकम्। अब्जानां मणिके शब्दे तैलं स्थीयत एव वा॥ १ ॥
अशुभा विकृतिर्दध्नां दुग्धानां वा यदा भवेत्। अकस्माच्च प्ररोहेयुर्बीजानि कृमयस्तथा॥ २ ॥
कार्यो वरुणायागस्तु वारुणीविधिपूर्वकः। उदुत्तमं प्रधानं स्यात्पञ्चाज्याहुतयस्तथा॥ ३ ॥
वरुणः पाशपाणिश्च यादसां पतिरेव च। शेषं तु पूर्ववच्चैव चरुतन्त्रं समापयेत्॥ ४ ॥
हुत्वा स्विष्टकृतं चैव चरुतन्त्रं समापयेत्। विमुक्तोत्पातदोषस्तु जीवेत्तु शरदः शतम्॥ ५ ॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

घरों में अनावश्यक उद्दीपन हो, घर में वल्मीक बनें तो, घर में शहद की मक्खी छत्ता बनाये तो, शंख अपने आप शब्द करें तो, तेल न बहे तो॥ १॥ अकारण दूध एवं दहि में विकार उत्पन्न हो तो, अकाल में अपने आप बीजों से अंकुर निकले तो, घर मे कृमियों का उत्पत्ति हो तो॥ २॥ ये सब वरुण सम्बन्धी उत्पातों के पूर्व सूचनायें हैं। ऐसे स्थिति में वरुण याग को विधिपूर्वक संपन्न करें। "उदुत्तमं" मंत्र से चरु होम करें। पाँचच आज्याहुतियाँ नाम मंत्र से देवें॥ ३॥ पाँच नाम मंत्र वरुण, पाशपाणि, यादसांपति, प्रचेता, सर्वाद्भुतशमन है। प्रयोग विधान पूर्ववत् है। चरु होम करें॥ ४॥ इस याग से उत्पातों का शमन होकर सौ साल तक जीवित रहते हैं॥ ५॥

३-तृतीय विधान (मृत्यु सम्बन्धी उत्पात निवारण)—

गृहे यस्य पतेद्गृध्र उलेको वा कथञ्चन। कपोतः प्रविशेच्चैव जीवा वारण्यसंभवाः॥ १॥
धुर्यौ च पततो युक्तौ गोस्त्रीजन्म च वैकृतम्। जायन्ते यमलान्येव घोरः स्वप्नश्च दृश्यते॥ २॥
अभिद्रवन्ति रक्षांसि यत्र चैव कुमारकान्। उन्निद्रकोतिनिद्रो वा अत्यल्पमतिभोजनम्॥ ३॥
आलस्यं चैव मेतेषां देवता यम उच्यते। नाके सुपर्णा इत्येतत्स्थालीपाकस्य होमयेत्॥ ४॥
यमः प्रतपतिश्चैव दण्डपाणिस्तथेश्वरः। शमनः सर्वाद्भुतानां महाव्याहृतयस्तथा॥ ५॥
हुत्वा स्विष्टकृतं चैव चरुतन्त्रं समापयेत्। विमुक्तेत्पात दोषस्तु जीवेत्तु शरदः शतम्॥ ६॥

घर में गीध, उल्लू, कबूतर, एवं जङ्गली जानवर आयें तो॥ १॥ गाडी में बंधे दोनों बैल एक साथ गिरें तो, विकार गाय एवं स्त्री पैदा हो तो, बार-बार जुडवें पैदा हो तो, बुरे स्पप्न आयें तो॥ २॥ बच्चे भयभीत हो तो (बालग्रहादि से),वेग विना नींद के या अत्यधिक नींद से युक्त हो, अत्यल्प भोजन या अत्यधिक भोजन करें तो॥ ३॥ अधकता हो तो, उपरोक्त सभी उत्पात मृत्यु संबन्धी हैं, अतः इनके प्रधान देवता यम है। नाके सुपर्णा इस मंत्र से चरु होम

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करें। विधान पूर्ववत् है॥ ४॥ पाँच नाम मंत्र यम, प्रतपति, दण्डपाणि ईश्वर एवं सर्वाद्भुत शमन है। महा व्याहृतियों से आज्य होम करें॥ ५॥ स्विष्टकृत् होम करके याग को पूर्ण करना चाहिये। इससे उत्पात शमन होकर सौ साल तक जीवित रहते हैं।

४-चतुर्थ प्रकार (अग्नि संबंधी उत्पात निवारण)—

अनग्निरुत्थितो यस्य धूमो वापि गृहे क्वचित्। आमं वा ज्वलते मांसं भवेयुर्विस्फुलिङ्गकाः॥ १॥
छत्रध्वजपताकाश्च ज्वलन्ते तोरणानि च। आसनं चैव शय्या च वस्त्राणि कुसुमानि च॥ २॥
हस्त्यश्वानां च पुच्छानि वर्षत्यङ्गारवर्षणम्। अकाले च दिशं दाहमोषधीनां च पाचनम्॥ ३॥
हस्तिन्यश्चैव माद्यन्ते अग्निरूपं तदद्भुतम्। अग्निं दूतं वृणीमहे स्थालीपाकस्य होमयेत्॥ ४॥
अग्निर्हिरण्यपतिश्च अर्चिष्पाणिस्तथेश्वरः। शमनः सर्वाद्भुतानाम् महाव्याहृतयस्तथा॥ ५॥
हुत्वा स्विष्टकृतं चैव चरुतन्त्रं समापयेत्। विमुक्तोत्पातदोषस्तु जीवेत्तु शरदः शतम्॥ ६॥

अग्नि के विना हि जब घर में धुआँ उठें, बिना पकाये ही कच्चा मांस पक जाय, अग्नि में अधिक चिञ्चारियाँ निकालें॥ १॥ छत्र, ध्वज, पताका, तोरण, बैठने वाला आसन, बिस्तर, वस्त्र एवं फूल अपने आप जल जायें तो॥ २॥ हाथी एवं घाडां के पूँछ जल उटें, आकाश सं अङ्गारों की वर्षा हो, अकाल में दिशाओं में ज्वालायें उत्पन्न हो, औषधि सस्य समय से पहले पक जायें तो॥ ३॥ हथिनियों को मदजल स्राव हो, ये सब अग्नि के अद्भुत रूप हैं। अग्निं दूतं वृणीमहे इस मंत्र से चरु होम करें। विधान पूर्ववत् है॥ ४॥ पाँच नाम मंत्र अग्नि, हिरण्यपति, अर्चिष्पाणि, ईश्वर एवं सर्वाद्भुतशमन है। महाव्या से आज्य होम करें॥ ५॥ स्विष्ट होम करके या को पूर्ण करना च इससे अग्नि सम्बन्धी उत्पाश्त शमन होकर प्रजा सौ साल तक जीवित रहते हैं।

५-पञ्चम प्रकार (आर्थि उत्पात शम)—(इस संपूर्ण ग्रन्थ में इसी प्रकार का प्रयोग है)

सुवर्णं रजतं वज्रं वैडूर्यं मौक्तिकानि च। प्रवालवस्त्रनाशश्च भिक्षाणां च विपर्ययः॥ १॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आरम्भाश्च विपद्यन्ते न सिद्धिः कर्मणामपि। चरुर्वैश्रवणास्तत्र अभित्यं देवमृक्स्मृता॥ २॥
वैश्रवणो यक्षपतिरर्थपाणिस्तथेश्वरः। शमनः सर्वाद्भुतानां महाव्याहृतयस्तथा॥ ३॥
हुत्वा स्विष्टकृतं चैव चरुतन्त्रं समापयेत्। विमुक्तोत्पातदोषस्तु जीवेत्तु शरदः शतम्॥ ४॥

जब आर्थिक समृद्धि के संकेत सोना, चाँदी, वज्र, वैडूर्य, मोती, प्रवाल एवं वस्त्रों का नाश होता है। दुर्भिक्ष (अकाल) हो जाता है॥ १॥ प्रारम्भ किये गये कर्म विपत्ति में फंस जाते हैं, किये गये कर्मो का फल नहीं मिलता है ऐसी स्थिति में अभित्यं देव इस मंत्र से वैश्रवण प्रीति के लिए चरु होम करना चाहिये॥ २॥ पाँच नाम मंत्र वैश्रवण, सक्षपति (यक्षाधिपति), अर्थपाणि (हिरण्यपाणि) ईश्वर एवं सर्वाद्भुत शमन हैं। महाव्याहृतियों से आज्य होम करें॥ ३॥ स्विष्ट होम करके याग को पूर्ण करना चाहिये। इससे कुबेर देवता प्रसन्न होकर अर्थविषयक उत्पातों का निवारण कर प्रजा सौ साल तक जीवित रहते हैं।

६-छटा प्रकार (युद्ध विषयक उत्पात निवारण)—

अथ यस्य स्वनक्षत्रे उल्का निर्घात एव वा। राहुर्ग्रसति चन्द्रार्कौ कबन्धं दर्पणो भवेत्॥ १॥
पतेत्स्वयं वा मुसलं देवता वा कथञ्चन। उन्मीलते चैव यदा तथा चापि निमीलते॥ २॥
प्रछिद्यते च यदि वा तथा वापि प्रकम्पते। प्रयातो वापि दृश्येत प्रतिस्त्रोतो नदी वहेत्॥ ३॥
विमले नैवार्कछाया प्रतीपा वापि दृश्यते। परिवेषस्त्वनभ्रेषु दृश्यते चन्द्र सूर्ययोः॥ ४॥
कोशात्खड्गा निर्गिरन्ते तूणाच्चैव तु सायकाः। अनाहतानि वाद्यन्ते नदन्ते शब्दमातुरम्॥ ५॥
चरुणा वैष्णावेनैषां यागः कर्तव्य एव तु। इदं विष्णुः प्रधान स्यात्पञ्चाज्याहुतयस्तथा॥ ६॥
सर्वभूतपतिर्विष्णुश्चक्रपाणिस्तथेश्वरः। शमनः सर्वाद्भुतानां महाव्याहृतयस्तथा॥ ७॥
हुत्वा स्विष्टकृतं चैव चरुतन्त्रं समापयेत्। विमुक्तोत्पातदोषस्तु जीवेत्तु शरदः शतम्॥ ८॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जिनके जन्म नक्षत्र में उल्कापात हो, राहुग्रस्त सूर्य ग्रहण या चन्द्रग्रहण हो, दर्पण में देखने पर सि न दिखें॥ १॥ दिवार आदि के सहारे खड़े किये मूसल स्वयं गिरे, देवता प्रतिमा स्वयं गिरे, देखने पर आँख खोलते हुए या बंद करते जैसे भास हो॥ २॥ देवता प्रतिमा का कोई भाग अपने आप खण्डित हो जाय या काँपने लगे, प्रतिमा चलायमान दिखे, नदी ऊपर की ओर (उल्टी) बहने लगे॥ ३॥ आकाश निर्मल रहने पर भी सूर्य की छाया न दिखें, या विपरीत दिखाई दें, बादल के बिना भी सूर्य एवं चन्द्र की मण्डल दिखाई पडें॥ ४॥ म्यान से तलवार अपने आप बाहर निकले, तुणीर से बाण अपने आप बाहर ', वाद्य बिना बजायें ही शब्द करने लगे, मन को आतंकित करने वाले शब्द सुनाई पडें॥ ५॥ ऐसी स्थितियाँ शुद्ध निमित्तका कहलाते हैं। ऐसी स्थिति में चरु होम से विष्णुयाग संपन्न करना चाहिये। इदं विष्णु इस मंत्र से प्रधान चरु होम करें। पाँच आज्याहुतियाँ देवें॥ ६॥ पाँच नाम मंत्र सर्वभूतपति, विष्णु, चक्रपाणि, ईश्वर, सर्वाद्भुत शमन है। महाव्याहृतियों से आज्य होम करें॥ ७॥ स्विष्टकृत् होम करके याग को पूर्ण करना चाहिये। इससे भगवान् विष्णु प्रसन्न होकर उत्पातों का निवारण कर प्रजा सौ साल तक जीवित रहते हैं।

७-सप्तम प्रकार (वायु सम्बन्धी उत्पात निवारण)—

अतिवातो यत्र भवेद्रूपं वा यत्र वैकृतम्। खरकरभमहिषा वराहा व्याघ्रसिंहकाः॥
गृध्राश्च तथा योमायुः कृकलासा वदन्ति च। मांसं पेशं च रुधिरं पांसुवृष्टिस्तथैव च॥
वायुरूपमिदं सर्वमद्भुतंपरिकीर्तितम्। वात आ वातु भेषजं वायवा यहि दर्शतेति स्थाली पाकस्य होमयेत्॥
वायुर्महान्नभपतिर्वज्रपाणिस्तथेश्वरः। शमनः सर्वाद्भुतानां महाव्याहृतयस्तथा॥
हुत्वा स्विष्टकृतं चैव चरुतन्त्रं समापयेत्। विमुक्तोत्पातदोषस्तु जीवेत्तु शरदः शतम्॥

जब आँधी आये, प्रजा जनों का मुख विकृत हो जाय, गधा, हाथी, बैंस, सुअर, बाघ, शेर, गीध, सियार जङ्गली चिपकली आदि चिल्लाने लगे तो, आकाश से मांस रक्त एवं धूली की वर्षा हो॥ १-२॥ यह सब वायु सम्बन्धी उत्पात कहताले हैं, युद्ध के पूर्व में भी यह उत्पात दिखाई पडते हैं। इनके निवारण के

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लिए वात आ वातु भेषजं एवं वायवा याहि दर्शत इन मंत्रों से चरु होम करें। पाँच आजयाहुतियाँ देवें॥ ३॥ पाँच नाम मंत्र वायु महान्, नभपति, वज्रपाणि ईश्वर एवं सर्वाद्भुत शमन है। महाव्याहृतियों से आज्य होम करें॥ ४॥ स्विष्टकृत होम करके याग को पूर्ण करना चाहिये। इससे भगवान् वायु प्रसन्न हाकर उत्पातों का निवारण कर तक जीवित रहते हैं।

८-अष्टम प्रकार—

अथ चेदन्यशाखासु कर्ताभवति वेदवित्। पज्त्वा स ऋग्यजुः साम्नां शतमात्रं समाहितः॥
गायत्र्यष्टशतं जप्त्वा यजमानः समाहितः। वाचयेत्तमुपाध्यायं वस्त्रेण कनकेन वा॥
दृष्टं चैवाद्भुतं यस्मिन् तच्चापि प्रतिपादयेत्। एतास्तु दक्षिणाः सर्वाः शक्तियुक्तो न हापयेत्॥
यजमानस्तत् सुतो वा यः स्वयं कर्तुमर्हति। ब्राह्मणाय विशेषेण दद्यात्तां दक्षिणां शुभाम्॥
जप्त्वाथर्वशिरश्चैव ब्राह्मणान् स्वस्ति वाचयेत्। शक्त्याथ भोजनं चैव कुर्याद्विप्रेषु पूजनम्॥
एतदेवं समाख्यातं अद्भुतानां विशोधनम्। चतुर्णामपि वर्णानां यः कुर्याच्छ्रद्धयान्वितः॥
मरणं न भवेत्तस्य न दुःखं न दरिद्रता। सिद्ध्यन्ति सर्वकार्याणि धर्मे चास्य मतिर्भवेत्॥
एतत्पुण्यं पवित्रं च देवतायागपूजनम्। सर्वशान्तिकरं चैव प्रतिपुरुषं निबोधत॥

यह सामान्य व्यक्तियों के द्वारा करने वाला उत्पात निवारण विधान एवं फलश्रुति है। उपरोक्त यागों को व्यक्ति के लिए, परिवार के लिए, राज्य के लिए, राष्ट्र के लिए एवं समस्त विश्व के लिए भी कर सकते हैं।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय ★ करौंदी, कटनी (म.प्र.) ★
क्र. 567

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

MAHARISHI MAHESH YOGI VEDIC VISHWAVIDYALYA
Karaundi, Umariapan, Distt- Katni (M.P.)
CENTRAL LIBRARY

DUE DATE SILIP

Acc.No.	Due Date	Acc. No.	Due Date

Call No..... Acc No. 467

1. Please return this book by the last date stamped above over due charges will be payable beyond the date.
2. Please check to see this book is not damaged before you borrow it.
3. You may be asked to pay for books returned in a damaged condition.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.